PAIA-SADDA-MAHANNAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT HINDI DICTIONARY

with Sanskrit equivalents, quotations

AND

complete references.

Vol. II.

BY

PANDIT HARGOVIND DAS T. SETH, Nyaya-Vyakarana-tirtha,

Lecturer in Prakrit, Calcutta University.

CALCUTTA.

FIRST EDITION

[All rights reserved]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

संकेत-सूची ।

अ	=	अव्यय ।
अक	=	अकर्मक धातु ।
(अप)	=	अपभ्रंश भाषा ।
(अप्रे)	=	अप्रेल-टिप्पि ।
उभ	=	उभयकर्मक तथा अकर्मक ।
कर्म	=	कर्मणि-वाच्य ।
कृह	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त ।
क्रि	=	क्रियाद ।
क्रिवि	=	क्रिया-विशेषण ।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त ।
(कृ)	=	कृदन्तबोधकी भाषा ।
कि	=	किंवित्त्व ।
[दे]	=	देशी-शब्द ।
न	=	नपुंसकलिंग ।
पु	=	पुंलिंग ।
पुन	=	पुंलिंग तथा नपुंसकलिंग ।
पुस्त्री	=	पुंलिंग तथा स्त्रीलिंग ।
(पै)	=	पैशाची भाषा ।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक क्रियारूप ।
ब	=	बहुवचन ।
भूह	=	भविष्यत्कृदन्त ।
भवि	=	भविष्यत्काल ।
भूप्र	=	भूतप्रत्यय ।
भूकृ	=	भूत-कृदन्त ।
(म)	=	मराठी भाषा ।
वह	=	वर्तमान कृदन्त ।
वि	=	विशेषण ।
(शौ)	=	शौरसेनी भाषा ।
स	=	सर्वनाम ।
संकृ	=	संबन्धक कृदन्त ।
सक	=	सकर्मक धातु ।
स्त्री	=	स्त्रीलिंग ।
स्त्रीन	=	स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिंग ।
हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त ।

प्रमाण-ग्रन्थों (रेफरन्सेज़) के संकेतों का विवरण।

—:•:—

संकेत।	ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिए गए हैं वह।
अंग	= अंगचूलिआ	हस्तलिखित।	...	
अंत	= अंतगडदसाओ	* १ रोयल एसियाटिक सोसाईटी, लंडन, १६०७	...	
		२ आगमोदय-समिति, बंबई, १६२०	...	पत्र
अन्यु	= अन्युप्पसमग्गं ...	वेंकटेश्वर विलास प्रेस, मद्रास, १८७२ .	...	गाथा
अभि	= अभिप्पसत्तियत्र ...	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १६७८	...	गाथा
अणु	= अणुओगदारसुत्त .	राय धनपतिसिंहजी बहादुर, कलकत्ता, संवत् १६३६	...	
अनु	= अणुत्तरोववाइयदसा	* १ रोयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १६०७	...	
		२ आगमोदय-समिति, बंबई, १६२०	...	पत्र
अभि	= अभिज्ञानशाकुन्तल	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १६१६ ...	...	पृष्ठ
अरि	= अरिहारक	त्रिवेन्द्र संस्कृत सिरिज।	...	"
आउ	= आउरपच्चक्खाणपयन्नो	१ जैन धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १६६६		गाथा
		२ शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १६६२ ..		"
आक	= १ आवश्यकक्रिया .	हस्तलिखित		
	२ आवश्यक-एटवालुंगन्	डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपज़िग, १८६७ .		पृष्ठ
आचा	= आचारांग सूत्र .	* १ इवन्यु, शत्रि-संपादित, लाइपज़िग, १६१०		
		२ आगमोदय-समिति, बंबई, १६१६ ..		श्रुतस्कन्ध, अध्य०
		३ प्रो. खजीभाई देवराज संपादित, राजकोट, १६०६		"
आचानि	= आचारङ्ग-निर्युक्ति	आगमोदय-समिति, बंबई, १६१६ . ..		"
आच्	= आवश्यकचूर्णि ...	हस्तलिखित		अध्ययन
आनि	= आवश्यकनिर्युक्ति .	१ यशोविजय-जैन-ग्रन्थमाला, बनारस। २ हस्तलिखित।		
आप	= आराधनाप्रकरण .	शा. बालाभाई ककलभाई, अमदावाद, संवत् १६६२ . .		गाथा
आरा	= आराधनासार ...	माणिकचन्द-दिगंबर-जैन-ग्रन्थमाला, संवत् १६७३...		"
आव	= आवश्यकसूत्र .	हस्तलिखित		
आवम	= " मलयगिरिटीका	" ...		
इंदि	= इन्द्रियपराजयशतक	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १६६८ . .		गाथा
इक	= दि कोम्मेंटारी देर् इदेर्	* डॉ. इवन्यु किर्फेल्-कृत, लाइपज़िग, १६२० ...		

* ऐसी निशानी वाले संस्करणों में अकारादि क्रम से शब्द-सूची लगी हुई है, इसलिये ऐसे संस्करणों के पृष्ठ आदि के अंकों का उल्लेख प्रस्तुत कोश में नहीं किया गया है, क्योंकि पाठक उस शब्द-सूची से ही अभिलषित शब्द के स्थल को तुरन्त पा सकते हैं। जहाँ किसी विशेष प्रयोजन से अंक देने की आवश्यकता प्रतीत भी हुई है, वहाँ पर उसी ग्रन्थ की पद्धति के अनुसार अंक दिए गए हैं, जिससे विद्वान् को अभीष्ट स्थल ढूंढने में विशेष सुविधा हो।

	•	

संकेत। ग्रन्थ का नाम।	संस्करण आदि।		जिसके अंक दिये गए हैं वह।
भक्ता = भक्तामरस्तोत्र	हस्तलिखित		अधिकार
भग = भगवत्स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८ ..	...	गाथा
भवि = भविष्यत्कथासंग्रह	राय धनपतिसिंह बहादुर, कलकत्ता, १८४२	...	"
मा = +मानतुंगशास्त्री	* १ डॉ. ए. वेबर्-संपादित, लाइपज़िग, १८८१		"
	२ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९११	...	"
मु = मुनिसुव्रतकाव्य	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	"
मुख = मुखबोधवृत्ति	अंबालाल गोकर्णदास, बम्बई, १९१२	...	"
मुभा = मुक्तावलीभाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९९२	...	"
मुव = मुक्तावलिव्याख्यान	अंबालाल गोकर्णदास, बम्बई, १९१२	...	"
मोप = मोक्षोपाय	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९९५	...	"
या = यात्रास्वस्त्यादि	१ जैन धर्म-प्रचारक-सभा, भावनगर, संवत् १९९९	...	"
	२ शा. बालाभाई कल्याणभाई, अमदावाद, संवत् १९९२	...	"
यश = यशस्तिलक	* एशियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १८८०	...	
यो = योगशास्त्र	हस्तलिखित ...	...	पादुक
रत्न = रत्नाकर	जिनेन्द्र-संस्कृत-सिरिज़	...	पृष्ठ
रो = रोहिणीव्रत कथा	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९९२	...	गाथा
ल = लघुशांतिस्तव	देवचंद लालभाई पु० फंड, बम्बई, १९२०	...	वज्रस्कार
लघ = लघीयस्त्रय स्ववृत्ति	जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतनाम, प्रथमावृत्ति	...	गाथा
वा = वादिराज	आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, संवत् १९७८		"
वीत = वीतरागस्तव	हस्तलिखित ...	...	
वीर = वीरजिनस्तवन	देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१६	...	प्रतिमा
वीरा = वीरानुशासनालंकार	अंबालाल गोकर्णदास, बम्बई, १९११	...	गाथा
श = शब्दानुशासन	हस्तलिखित ...	...	पादुक
टि = ; टिप्पण (पादटिप्पण)	...	...	
टी = † टीका	...	...	
सह = सहस्रनाम	आत्मानंद-सभा, भावनगर, १९१८-१९२०	...	श्लोक

+ मानतुंग वाले संस्करण का नाम "भक्तामर स्तव हल्ल" है और बम्बई वाले का "मानतुंगशास्त्री"। ग्रन्थ एक ही है, परन्तु बम्बई वाले संस्करण में मूल गाथाओं के विषय में आठ ४०० गाथाएँ छपी है और लाइपज़िग वाले में छपी संख्या है ४४०। इस ४०० तक की गाथाएँ दोनों संस्करणों में एक-सी हैं, परन्तु गाथाओं के क्रम में कहीं कहीं दो चार संख्या का फरक-फेर है। ४०० के बाद का और ४०० के भीतर भी जहाँ गाथांक के अनन्तर 'अ' दिया है वह संख्या केवल लाइपज़िग के ही संस्करण की है।

; चिह्नवाले संस्करणों के जो पाठान्तर हमें उपलब्ध मालूम पड़े हैं उन्हें भी इस कोष में स्थान दिया गया है और अन्त के साथ ही साथ दिये हैं जिससे उस शब्द को उसी स्थान के लिये काम में लाया जा सके।

† चिह्न से अन्यत्र में ग्रन्थ-संकेत और स्थान निर्देश के अनन्तर 'टी' शब्द दिया है वहाँ उस ग्रन्थ के उसी स्थान की टीका के उल्लेख से अभिप्राय है।

[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

संस्करण आदि ।

१ हस्तलिखित

१ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १६१६ ...
हस्तलिखित
" .. ...
जैन धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति ...
हस्तलिखित .. ...
आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १६७४ ...
त्रिभोवन-संस्कृत-सिरिज
हस्तलिखित ...
भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १६११ ...
सा. बालाभाई कहनभाई, अमदावाद, संवत् १६६१ ...
१ जैन ज्ञान-प्रसारक मंडल, बम्बई, १६११ ...
१ आत्मानन्द-जैन पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १६११ ..
राय धनपतसिंह बाहादुर, बनारस, संवत् १६४० ...
आगमोदय समिति, बम्बई, १६१६ ...
भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १६६१ ...
" संवत् १६३४ ..
आत्मानन्द जैन-सभा, भावनगर, संवत् १६७४ ..
• बी. बी. एण्ड कंपनी, भावनगर, संवत् १६७१ ..
बी. आर. सिंघवी, १६००
• एशियाटिक मागाइनी, बंगाल, कलकत्ता, १६०१ ..
हस्तलिखित ..
जैन-धर्मोदय मंडल, सोनगढ, १६११ ...
त्रिभोवन-संस्कृत-सिरिज ...
निर्णयसागर प्रेस, बम्बई १६१० ...
त्रिभोवन-संस्कृत-सिरिज ...
• पंडित मुनिसिंह, लाहोर, १६१० ..
• डा. हर्मन् जाकोबी, बर्लिन, १८१८ .
• मंडल हर्षचन्द्र भाभाणी, कलकत्ता, १६११ ...
• सेठ मणुभाई बखतचंद, अमदावाद, संवत् १६१८ ..
जैन हितेच्छु-ज्ञानभंडार फंड, कलकत्ता, १६१६ ...
त्रिभोवन-संस्कृत-सिरिज
हस्तलिखित
• १ जिनागमोदय सभा, बम्बई, संवत् १६७४
• आत्मानंद सभा, भावनगर

पद = पंचसंग्रह

पंचसं = पंचसंग्रह
पंचा = पंचाशक
पंचा = पंचाशकवृत्ति
पंचा = पंचाशकचूर्णि
पंचि = पंचसंग्रहस्वोपज्ञवृत्ति
पंच = पंचाध्यायी
पंचा = पंचास्तिकाय
पंचा = पंचास्तिकायवृत्ति
पंचा = पंचास्तिकायतात्पर्यवृत्ति
पंडि = पंडितप्रबोध

पक्ष = पक्षाख्यान
पक्ष = पक्षाख्यानवृत्ति
पक्ष = पक्षाख्यान भाष्य
पा = पाक्षिकसूत्र
पा = पाक्षिकसूत्रवृत्ति
पाक्ष = पाक्षिकसूत्रवृत्तौ पार्श्वनाथचरित्रान्तर्गतौ
पाच = पाइअसद्दमहण्णवो
पि = पिण्डविशुद्धि
पिंड = पिंडनिर्युक्ति
पिंड = पिंडविशुद्धि
पुरु = पुरुषार्थसिद्ध्युपाय
प्रा = प्राकृतव्याकरण
प्रक = प्रकरणरत्नाकर
प्रक = प्रकरणरत्नाकर
प्रक = प्रकरणरत्नाकर
प्रक = प्रकरणरत्नाकर
प्रक = प्रकरणरत्नाकर
प्रक = प्रकरणरत्नाकर
प्रक = प्रकरणरत्नाकर
प्रक = प्रकरणरत्नाकर
प्रक = प्रकरणरत्नाकर

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

संकेत । ग्रन्थका नाम ।

बृ	= बृहत्संहिता
स	= समराइच्चकहा
सं	= संवेगरङ्गशाला
सप्ति	= सप्तिशतक
संग	= सूत्रकृतांगवृत्ति
सत्र	= सांख्यतत्त्वभाष्य
सांच	= शान्तिनाथचरित (देवेन्द्रसूरि-कृत)
सांस्तो	= सांख्यस्तोत्र
संथा	= संथारगपइन्नो
सदि	= सटिसयपयरण
सन	= सनत्कुमारचरित
सम	= समरादित्यसंक्षेप
समा	= समवायांगसूत्र
सम्म	= सम्मतिसूत्र
सम्य	= सम्यक्त्वप्रकरण टीकागत
सर्ष	= सप्ततिकाप्रकरणस्वोपज्ञभाष्य
सिन	= सिद्धसेनदिवाकर-स्तवन
सुज	= सूर्यप्रज्ञप्ति
सुद	= सुदर्शनचरित
सुर	= सुरसुंदरीचरित
सूय	= सूयगडांगसूत्र
सृद	= सृष्टिवादकथा
से	= सेतुबन्ध
स्वप	= स्वप्नप्रकरण
हे	= हेमचन्द्रकृत-व्याकरण
हेउ	= हेमचन्द्रकृत-उणादिगण

संस्करण आदि ।

* बम्बई संस्कृत एन्ड् प्राकृत सिरिज़, १९१६
एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०८-१३
विठ्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अमदावाद, १९२०
१ हस्तलिखित ...
२ संस्कृत प्रेस डिपोज़िटरी, कलकत्ता, १८८६
१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६८
२ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, संवत् १९७३
हस्तलिखित
,, ...
१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११
२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मण्डल, आगरा, १९२१
१ हस्तलिखित ..
२ जैन धर्म प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६
स्व-संपादित, बनारस, १९१७ ...
* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, १९२१
जैन धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९७६
आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८
जैन धर्म- सारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६५
भवानलाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३
जौहरी चुन्नीलाल पन्नालाल, बम्बई, १९१६
स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८
आगमोदय समिति, बम्बई, १९१६ ...
स्व-संपादित, बनारस, १९१८-१६ ...
जैन विविध-साहित्य शास्त्र-माला, बनारस, १९१६
१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९३६
२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१७
देवचन्द लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२
निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९६ ...
जिनेन्द्र-संस्कृत सिरिज़ ...
* १ डॉ. आर्. पिशेल्-संपादित, १८७७
२ बम्बई संस्कृत-सिरिज़, १९००
निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९०१

—•—•—•—

क

क पु [क] १ प्राकृत वर्णमाला का प्रथम व्यञ्जनवर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है; (प्राप्र; प्रला) । २ ब्रह्मा; (हे १, २८) । ३ किसी हुए पद्य का स्वीकार, "कवि कहे मे पद्य" (भाषा) । ४ स ध्वनी, उष्म; (ल १९९); ५ सुख, (सुर १६,५८) । देखो अ=क ।

का देखो किम्; (गउड, महा) ।

कइ वि स [कवि] किसका "न मंदि ' कइणि कोलाहे" (भग) । 'अ वि [क] कवियश, कवीपन, "मेल्लसि जाव तुमं, किअं कइत्तणं सिद्धेसु" (पउम ३४,३७) । 'अत्थ वि [°पथ] कवियश,कवीपन, (हे १,२५०) । 'इ म [°जिन्] कवीश्वर, (उप पृ ३) । 'त्थ वि [°थ] कितनाओं, कौन संख्या का ? ; (सिरि ६१७) । 'वइय, °वय, °वाह वि [°पय] कवीश्वर ; (पउम ८१, १८ ; उवा ; पट् ; कुमा ; हे १,२५०) । 'वि म [°अपि] कवीश्वर ; (कप्प, महा) । 'विह वि [°विध] किसके प्रकार का; (भग) ।

कइ म [कदा] कब, किस समय ? "कइआ इस मालवो धम्मायं वंद गु उज्जयंते ?" (मा ८०३) ।

कइ पु [कपि] बन्दर, वानर; (पाअ) । 'दीव पु [°द्वीप] द्वीप-विशेष, वानर-द्वीप; (पउम ४४,१६) । 'द्धय, °धय पु [°ध्वज] १ वानर-द्वीप के एक राजा का नाम; (पउम ६,८३) । २ अर्जुन ; (हे २, ६०) । 'हिमित्र न [हसित] १ स्वच्छ आकाश में अचानक बीजली का दर्शन ; २ वानर के समान विकृत मुँह का हसना ; (भग ३,६) ।

इ देखो कवि = कवि ; (गउड ; सुर १, २७) । 'अर (अर) पु [कवि] श्रेष्ठ कवि; (सिंग) । 'आ स्त्री [°त्व] कवित्व, कवित्व; (पट्) । 'राय पु [राज] १ श्रेष्ठ कवि; (सिंग) । २ "गउडवहो" नामक प्राकृत काव्य के कर्ता वाक्पतिराज-नामक कवि ; "अत्थि कइराओ वक्पइराओ त्ति पयडवो" (गउड ७६७) ।

इअ पु [क्रयिक] खरीदने वाला, ग्राहक ; "किणंतो इअमो होइ, विक्किणंतो य वाणिओ" (उप ३६, १४) ।

इअंक) पु [दे] निकर, समूह ; (हे २, १३) ।
इअंकसइ)

इअय न [कैतव] कपट, छल ; (कुमा; प्राप्र) ।

काआ म [कदा] कब, किस समय ? . (स १३८ कुमा) ।

काइअल्ल वि [दे] धीमा, मन्द , (हे १, २१) ।

काइंद पु [कविन्द्र] श्रेष्ठ कवि , (गउड) ।

काइकच्चु स्त्री [कायिकच्चु] शरीर-विशेष, केवीच ; (स ६३७) ।

काइगी स्त्री [कैकयी] राजा दशरथ की एक रानी , (पउम ६६, २१) ।

काइच्च पु [कवित्य] १ फल-विशेष, कैथ का पेड़ , २ फल-विशेष, कैथ, कैथ ; (सुर ६ ४१) ।

काइम वि [कतम] बहुत में से कौन सा ? (हे १, ४८ ; सा ११६) ।

काइया (अप) म [कदा] कब, किस समय ? (भवि) ।

काइर पु [कदर] फल-विशेष ; "अं काइरकरीरकविट्ठ इत्यादीनां दर्शनम्वि" (श्रा १६) ।

काइरव न [कैरव] कमल, इन्दीवर ; (हे १, १६२) ।

काइरविणी स्त्री [कैरविणी] कुमुदिनी, कमलिनी; (कुमा) ।

काइलास पु [कैलास, श] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत विशेष ; (पम ; पउम ६, ४३ ; कुमा) । २ मेरु पर्वत ; (निय १३) । ३ देव-विशेष, एक नाग-राज ; (जीव ३) । °सय पु [°शय] महादेव, शिव ; (कुमा) । देखो कैलास ।

काइलासा स्त्री [कैलासा, °शा] देव-विशेष की एक राजधानी ; (जीव ३) ।

काइल्लयइल्ल पुं [दे] स्वच्छन्द-चारी बैल; (दे २, २६)।

काइविया स्त्री [दे] वस्त्र-विशेष, पोछना, पोंछनी , (णाया १, १ टी—पत्र ४३) ।

काइस (अप) वि [कीदृश] कैसा ; (कुमा) ।

काईया (अप) देखो काइआ; (सुपा ११६) ।

काईयय देखो काइयय; (पउम २८, १८) ।

काईस पु [कवीश] श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि ; (सिंग) ।

काईसर पु [कवीश्वर] उत्तम कवि ; (रंभा) ।

काउ पु [कतु] बक ; (कप्पू) ।

काउ (अप) म [कुतः] कहां से ; (हे ४, ४१६) ।

काउअ वि [दे] १ प्रधान, मुख्य ; २ चिन्ह निशान ; (दे २, ५६) ।

काउच्छेअय पु [कौक्षेयक] पेट पर बाँधी हुई तलवार ; (हे १, १६२ ; षट्) ।

कउड न [दे. ककुद] दग्धा कउह = कउर ; (पइ)।

कउरअ } पु [कौरव] १ कुरु देश का राजा ; २ पुंभी
कउरव } कुरु वंश में उत्पन्न, ३ वि कुरु (देश या वंश) से सबन्ध रखने वाला , ४ कुरु देश में उत्पन्न , (प्राप्र , नाट , हे १, १६२)।

कउल न [दे] १ करीष, गोइठा का चूर्ण , (द २, ७)।

कउल न [कौल] तान्त्रिक मत का प्रवर्तक ग्रन्थ, कौलोपनिषद् वगैर.। २ वि शक्ति का उपासक। ३ तान्त्रिक मत को जानने वाला, ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी। ५ देवता-विशेष ,

" विगसिज्जतमहापमुदसणसमणपरोप्परारद्धा।
गज्झे च्चिय गधउडि कुणति तुह कउलणारीओ "
(गउड)।

कउलव देखो कउरव, (चंड)।

कउसल न [कौशल] कुशलता, दक्षता, हुशियारी , (हे १, १६२ ; प्राप्र)।

कउह न [दे] नित्य, सदा, हमेशा , (दे २, ५)।

कउह पुन [ककुद] १ बैल के कंधे का कुब्बड , २ सफेद छत्र वगैर राज-चिह्न ; ३ पर्वत का अग्रभाग, टोंच , (हे १, ११६)। ४ वि प्रधान, मुख्य ,

" कलगिभियमहुरतनोतलनलवंसकउहाभिरामेसु।
सद्देसु रज्जमाणा, रमतो साइदियवसट्टा "
(णाया १, १७)।

देखो ककुद।

कउहा स्त्री [ककुभ्] १ दिशा , (कुमा)। २ शोभा, कान्ति , ३ चम्पा के पुष्पों की माला , ४ इस नाम की एक रागिणी , ५ शास्त्र , ६ विकीर्ण केश , (हे १, ११)।

कए } अ [एते] वास्ते, निमित्त, लिए , "तेण सो तस्स
कएण } कए, सद्दो सणाउलेणगएसु " (कुम्मा १६ ,
कएणं } कुमा)। " अवगणइ मज्जिरगेण कएण कामी वदइ
चाटु " (गा ४७२)।

" लज्जा धना मंत्त च सद्धिं अजसपामणा दिण्णा।
जम्म कएण पियसहि ! सो चेम जणो जणा जाओ "
(गा ५२६)।

कओ अ [कुत्र] कहाँ से ? (आचा , उत्त, स्वप्न २६)।

कओ अ [कुत्र] किस तरह , " कओऽहं गंतव्वं ?"
(गाथा १, १४)।

कयोल्ल देखो कयोल्ल , (मे ३, ४६)।

कंइ अ [दे] किसमें ; " कइ पंइ सिक्खिउ ए गइ
(विक्र १०२)।

कंक पु [कङ्क] १ पक्षि-विशेष ; (पण्ण १, १, ४)। २ एक प्रकार का मजबूत और तीक्ष्ण लोहा , (उप १०३१ टी)। 'पत्त न ['पत्र] बाण-वि एक प्रकार का बाण, जो उड़ता है , (वेणी १०२ मुद्रा २०७)। 'लोह पुन ['लोह] एक प्रकार का लोहा, (उप ६ ३१ (उप १०३१ टी)। पत्त देखो 'पत्त, (नाट)।

कंकइ पु [कङ्कति] वृक्ष-विशेष, नागबला-नामक ओषधि, (उप १०३१ टी)।

कंकड पु [कङ्कट] वर्म, कवच , " रामो चावे सरवरइ दि देतो " (पउम ४८, २१ ; औप)।

कंकडइय वि [कङ्कटिन] कवच वाला, वर्मित ; (पण्ण १, ३)।

ककडुअ } पु [काङ्कटुक] दुर्भेद्य मांस, उदर की
कंकडुग } जाति, जो कभी पकता ही नहीं , "कंकडुओ माउा, सिद्धि न उवेइ जम्म वाहाग " (वज्जा ३)।

कंकण न [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष, कँक (आ २८, गा ६६)।

कंकति पु [कङ्कति] ग्राम-विशेष , (राज)।

कंकतिज्ज पुंभी [काङ्कतीय] माधराज वंश में उत्पन्न, (गज)।

कंकय पु [कङ्कत] १ नागबला-नामक ओषधि। २ म की एक जाति। ३ पुंश्री कङ्कत, कपड़ा सँवारने का उपकरण (सुय १, ४)।

कंकलास पु [कृकलास] करोंट, साँप की एक जाति, (पाम)।

कंकाल न [कङ्काल] चमडी और मांस रहित अस्थि-पंजर " कंकालवेसाए " (आ १६) , " अह नरकंकालहत्थ मंकुसे भीसणमसाणे " (वज्जा १० , दे २, ५३)।

कंकावंस पु [कङ्कावंश] वनस्पति-विशेष, (पण्ण १)।

कंकिल्लि देखो कंकेल्लि , (मुद्रा ५२६ ; कुमा)।

कंकेलि पु [कङ्केलि] अशोक वृक्ष , (दे २, १८)।

कक्कैल्लि पुं [दे. कक्कोल्लि] क्षयरोग-युक्त ; (दे २. १३; सा ४०४ ; सुपा १४०; २६३ ; कुप्र) ।

कक्कोड न [दे. कर्कोट] १ कर्कोट-विशेष, कर्कोटक, एक प्रकार की ककड़ी, जो वर्षा में ही होती है, (दे २. ७ ; पव) । २ पुं. एक नागराज ; ३ मेरु के एक कूटि ; (दे १, २६ ; पउ) ।

कक्कोल पुं [कक्कोल] १ कङ्कोल, शीतल-चीनी के फल का एक भेद ; २ न. उस फल का फल ; " सव्वसुगंधदव्वेहिं संजोगे " (दस १०३१ टी) । देखो कक्कोल ।

कक्ख पुं [काक्ष्] काख, बाँह । कक्ख : (दे ४, १६२ ; पउ) ।

कक्खड न [काक्षट] लोध देखो । (वर्ग २) ।

कक्खा स्त्री [काक्षा] १ घास, झाड़ियाँ ; (सूत्र १, १४) । २ झाड़ी, वृद्धि ; (सूत्र १) । ३ ग्राम धर्म की घास अथवा उसकी आकृति का स्वर्णमय या रत्नमय अलंकार ; (पि) । मोहणिज्ज न [मोहनीय] कर्म-विशेष ; (सम १) ।

कक्खि वि [काक्षिन्] काखवाला ; (आचा ; सूत्र ; सुर १३, २४३) ।

कक्खिम वि [काक्षिम] १ अभिलाषि । २ काक्षा-युक्त, घास वाला ; (दस ; सम) ।

कक्खिर वि [काक्षिर] काखवाला, अभिलाषी ; (सा ११२ ; सुपा ४३७) ।

कक्खी स्त्री [दे] वस्त्री-विशेष, कँचली ; (पव १) ।

कंखु अव्य [काङ्क्षु] १ धातु-विशेष, काँक्ष ; (हे ४, १) । २ वस्त्री-विशेष ; (पव १) ।

कंखुलिया स्त्री [दे. काङ्क्षुलिका] जिन-मन्दिर की एक बड़ी अलमारी, जिन-मन्दिर में या उसके आसपास लघु या बड़ी पेटी का प्रकार; (वर्ग २) ।

कंचण पुं [काञ्चन] १ वृक्ष-विशेष ; २ स्वर्ण-रत्नमय एक प्रकार ; (दस ११८ टी) । ३ न. सुवर्ण, सोना ; (प्रभ) । उर न [पुर] कश्मीर देश का एक प्राचीन नगर; (राज) । कूड न [कूट] १ सौवर्णमय-रत्नमय वैडूर्यमय पर्वत का एक शिखर ; (ठा ७) । २ देव जिनदेव-विशेष; (सम १२) । ३ रत्नमय पर्वत का एक शिखर ; (ठा ८) । केऊरी स्त्री [केतकी] वृक्ष-विशेष ; कुप्र) । तिलय न [तिलक] इस नाम के विशाल वृक्ष का एक नगर; (इक) । थल न [स्थल] रत्नमय-रत्नमय एक नगर ; (इक) ।

कंचलागम न [कञ्चलागम] चौरासी योनियों में एक नीच योनि ; (राज) । सेल पुं [शैल] मेरु पर्वत, (कुप्र) ।

कंचणगा पुं [काञ्चनक] १ पर्वत-विशेष ; (सम ७०) । २ वनस्पति वृक्ष-विशेष ; (सम ७०) ।

कंचणा स्त्री [काञ्चना] रत्नमय रत्नमय एक नदी ; (ठा १, ४) ।

कंचणार पुं [काञ्चनार] वृक्ष-विशेष ; (पउम ११३, ३८, कुप्र) ।

कंचणिया स्त्री [काञ्चनिका] रत्न-माला ; (औप) ।

कंचा (वै) देखो कण्हा ; (प्राप्र) ।

कंचि) स्त्री [काञ्चि, ञ्ची] १ स्वर्ण-रत्नमय एक देश;
कंची) (कुप्र) । २ स्त्री-मेखला, कमर का आभूषण ; (पउम) । ३ स्वर्ण-रत्नमय एक नगर ; (सुपा ४०६) ।

कंची स्त्री [दे] कुएँ के मुँह में रक्खी जाती लोहे की एक बटबटाहट वाली ; (दे २, १) ।

कंचु) पुं [कञ्चुक] १ स्त्री का स्तनाच्छादक वस्त्र,
कंचुअ) चोली ; (पउम ८, ११ ; पव) । २ सर्प-केंचुल, साँप की कंचली ; (विसे २१९७) । ३ वर्म, कवच ; (सम ८, ३३) । ४ वृक्ष-विशेष ; (हे १, २६; ३०) । ५ वस्त्र, कपड़ा ; "सो इत्थिकंचुएणं तत्तेणं (तप्तेन), मोहब्भवं कंचुयं संगोएइ" (पउम ३६, १५) ।

कंचुइ पुं [कञ्चुकिन्] १ अन्तःपुर का प्रतिहार, खवासी; (णाया १, १ ; पउम ८, ३६ ; सुर २, १०६) । २ साँप ; (विसे २१९७) । ३ वस्त्र, जरब ; ४ कवच, वर्म; ५ दुकानदार, व्यापार में होने वाला एक प्रकार का अन्याय, ठगबाजी । ६ वि. जिसने कवच धारण किया हो वह ; (हे ४, २६३) ।

कंचुइज्ज वि [कञ्चुकिन] कञ्चुक वाला ; (कुमा ; विसे १, २) ।

कंचुइज्ज पुं [कञ्चुकीय] अन्तःपुर का प्रतिहार ; (सम ११, ११) ।

कंचुइज्जंत वि [कञ्चुकायमान] कञ्चुक की तरह आचरण करता ; "गेवेज्जकंचुइज्जंतदेवलोगे" (सुपा १८१) ।

कंचुग देखो कंचुअ (श्रेणि ६७ ; विसे २१२८) ।

कंचुगि देखो कंचुइ ; (सम) ।

कंचुलिआ स्त्री [कञ्चुलिका] कंचली, चोली ; (कप्पू) ।

कंचुल्ली स्त्री [दे] हल, कुदाल आदि

कंजिअ न [काञ्जिक] कांजी; (सुर १, १३३, कप्पू)।

कंटअंत वि [कण्टकायमान] १ कण्टक जैसा, कण्टक की तरह आचरता, (से ६, २४)। २ पुलकित होता, (मच्छ ६८)।

कंटइअ वि [कण्टकित] १ कण्टक वाला, (से १, ३१)। २ रोमाञ्चित, पुलकित, (कुमा, प्रभ)।

कंटइज्जंत देखो कंटअंत, (गा ६७)।

कंटइल्ल [कण्टकिल्ल] १ एक जात का बाँस, २ वि कण्टकों से व्याप्त, (सूअ १, ५)।

कंटइल्ल देखो कंटइअ, (पण्ह १, १, कुमा)।

कंटउद्धि वि [दे] कण्टक-प्रोत, (दे २, १७)।

कंटइल्ल देखो कंटइअ, (दे २, ७५)।

कंटग) [कण्टक] १ काँटा, कण्टक; (कप्प, हे १,
कंटय) ३०)। २ रोमाञ्च, पुलक, (गा ६७)। ३ शत्रु, दुश्मन, (णाया १, १)। ४ वृश्चिक का पूँछ, कण्टक वस्तु, (उत्त १)। ५ शल्य, (विपा १, ८)। ६ दुःखोत्पादक वस्तु, (उत्त १)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक दुर्योग, (गण १६)। °ओदिया स्त्री [°दे] कण्टकशाखा, (आचा २, १, ५)।

कंटाली स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, कण्टकारिका, भटकटैया; (दे १, ४)।

कंटिय वि [कण्टिक] १ कण्टक वाला, कण्टक-युक्त। २ वृक्ष विशेष, (उप १०३१ टी)।

कंटिया स्त्री [कण्टिका] वनस्पति-विशेष; (सूत्र १; आचा १)।

कंटी स्त्री [दे] उपकण्ठ, कण्ठिका, पर्वत के नजदीक की भूमि;

" एयामो पव्वयासन्नफलभरनयभुरिया भूमिकन्दुरा।
कंटीओ निव्वरंति व, मनोदरमंदरमाओ "

(गउड)।

कंदुल्ल } (दे) देखो कक्कोड = (दे), (पाअ, दे
कंटोल } २, ७)।

कंठ पु [दे] १ सुअर, सूअर; २ मर्यादा, सीमा; (दे १, ३१)।

कंठ पु [कण्ठ] १ गला, घाँटी, (कुमा)। २ मर्याद, सीमा। ३ मन्त्र, " कंठे बन्धाईव निवदणाहिम " (दे १, १८)। °दारुवत्तिअ वि [°दारुवर्तिक] गला, (पव्व)। °मुरय न [°मुरज] आभरण-विशेष, (णाया १, १)। °मुरवी स्त्री [°मु गले का एक आभरण; (औप)। °मुद [°मुखी] गले का एक आभूषण; (राज)। न [°सूत्र] १ सूत्र-ग्रन्थ विशेष। २ गले का आभूषण; (औप)।

कंठ वि [कण्ठ्य] १ कण्ठ से उत्पन्न। २ मन्त्र, सु (निचू १६)।

कंठकुंची स्त्री [दे] १ वस्त्र बाँधने के अञ्चल में हुई गाँठ; २ गले में लटकायी हुई लम्बी नाड़ि-ग्रन्थि (दे २, १८)।

कंठदीणार पु [दे] छिद्र विवर; (दे १, १४)।

कंठमल्ल न [दे] १ टट्टी, मूत्र-शिविका; २ यान पात्र, वाहन, (दे २, २०)।

कंठय पु [कण्टक] स्वनाम-ख्यात एक चौर-नायक, (महा)।

कंठाकंठि अ [कण्ठाकण्ठि] गले गले में ग्रहण कर; (णाया १, २—पत्र ८८)।

कंठिअ पु [दे] चपरासी, प्रतीहार; (दे २, १६)।

कंठिआ स्त्री [कण्ठिका] गले का एक आभूषण, (गा ७१

कंठीरव पु [कण्ठीरव] सिंह, शार्दूल; (प्रयौ २१)।

कंड सक [कण्ड्] १ नोंदि करके का छिलका अलग करना, २ सींचना। ३ खुजलाना। वकृ —कंडंत, (भग ४६८, गा ६६३), कंडिंत, (णाया १, ७)।

कंड पुन [काण्ड] १ दण्ड, लाठी, २ निन्दित समुदाय; ३ पानी, जल, ४ पाँ, ५ वृक्ष का स्कन्ध, ६ वृक्ष की शाखा, ७ वृक्ष का वह एक भाग, जहाँ से शाखाएँ नीकलती हैं, ८ ग्रन्थ का एक भाग, ९ गुच्छा, स्तबक, १० अवसर, थोड़ा; ११ प्रेत, पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा, १२ रीढ़, पृष्ठभाग की लम्बी हड्डी, १३ खुशामद; १४ श्लाघा, प्रशंसा; १५ गुप्ता, प्रच्छन्नता, १६ एकान्त, निर्जन, १७ तृण-विशेष, १८ निर्जन पृथ्वी, (हे १, २०)। १९ अवसर, प्रस्ताव, (गा ६६३)। २० समूह, (णाया १, ८)। २१ बाण, शर, (उप ६६६)। २२ देव-विमान-विशेष; (राज)। २३ पर्वत वगैर का एक भाग; (सम ६५)। २४ खण्ड टुकड़ा, अवयव, (आचू १)। °च्छारिय पु [°च्छारिक] १ इस नाम का एक ग्राम, २ एक ग्राम-नायक (पव ७)। देखो कडार, कंदार।

कंड पुं [दे] १ देर, ढेर ; २ वि. दुर्बल ; ३ विस्तृत, विनिर्मुक्त : (दे २, ५१)।

कंडइअ देखो कंडइअ, (गा ५१८)।

कंडइज्जंत देखो कंडइज्जंत ; (गा ६७ अ)।

कंडग पुंन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड : (आचा ; भगव)। २ संख्या-प्रति विशेष : (ठा ३)। ३ इस नाम का एक ग्राम; (आचा १)। देखो कंडय।

कंडण न [कण्डन] कूटने वगैरः की क्रिया करना, टुकड़े करना ; (श्र २०)।

कंडपंडवा स्त्री [दे] चक्रिका, पपड़ी : (दे ३, ५६)।

कंडय पुंन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड तथा कंडग २७ वृक्ष-विशेष ; गन्नों का वैचक वन ; " तुंगो मूलाय मंबे, स्कंधाग्गे च कंडगो " (उप ८)। २८ दर्भादि, गुच्छा. वस्त्र ; " कासंति कंडयाई, पडगाईणंति अन्नाई " (सुर १६, ३३)।

कंडरीय पुं [कण्डरीक] महापद्म राजा का एक पुत्र पुण्डरीक का छोटा भाई जिसने बड़ी तड़क भड़क के साथ दीक्षा ली थी ; (ठाण १, १६; उव)।

कंडलि स्त्री [कन्दलिका] मुकुल, कन्दाग; (वि ३३३; कंडलिआ दे ३, ३८ ; कुमा)।

कंडवा स्त्री [कण्डवा] बाद-विशेष : (गाध)।

कंडार सक [उत्+कृ] खुदना, छीन-छाट कर ठीक करना। संहृ—

" एसो दुवे इह पमाणओ जम्मिओ,
के वेहिम्मसमोक्कडाउकडारए।
एक्केण घडंइ पटुं दुमारिल्लयं,
कंडारिऊण पमदेइ पुणो दुईओ " (कप्पू)।

कंडावेली स्त्री [काण्डवल्ली] वनस्पति विशेष, (पण्ण १)।

कंडिअ वि [कण्डित] बाद-सुधरा किया हुआ; (दे १, ११६)।

कंडियायण न [कण्डिकायन] वैशाली (विहार) का एक क्षेत्र ; (भग ११)।

कंडिल्ल पुं [काण्डिल्य] १ कौण्डिन्यगोत्र का प्रवर्तक ऋषि-विशेष ; २ पुन्नाग, कौण्डिन्य गोत्र में उत्पन्न ; ३ न. वृक्ष-विशेष, जो नागवल्ली गोत्र की एक शाखा है, (प्र ३— ३६०)। २यण पुं [यन] स्त्रीलक्षण-वृक्ष-विशेष ; वृ १० ।

कंडु देखो कंडू ; (गाध)।

कंडु देखो कंडुइ ; (सुख १, ६)।

कंडुअ सक [कण्डूय्] खुजलाना। कंडुअइ ; (हे १, १२१ ; उव)। कंडुअए ; (वि ४६२)। वकृ— कंडुअंत ; (गा ४६०) ; कंडुअमाण; (प्रासू २८)।

कंडुअ पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचने वाला ; "गया चिंतेइ; कओ कंडुअस्स जउकंसेरयपवेसो?" (भवभू)।

कंडुअ) पुं [कन्दुक] गेंद : (दे ३, ४६ ; राज)।
कंडुग)

कंडुज्जुय वि [काण्डर्जु] बाण की तरह सीधा ; (सं ३१७ ; गा ३१२)।

कंडुयग वि [कण्डूयक] खुजाने वाला ; (औप)।

कंडुयण न [कण्डूयन] १ खुजली, खाज, पामा, रोग-विशेष ; २ खुजलाना ; " पामागहिएस जहा, कंडुयणं दुक्खमेव सुरुस्स " (सं ५१६ ; उव ३६४ टी ; गउड)।

कंडुय देखो कंडुयग ; " अकंडुयट्ठिं " (पव २, १— पत्र १००)।

कंडुरु पुं [कण्डुरु] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने गजसुकुमाल के साथ अपनी बेटी ब्याही थी; (पउम ८४, ६)।

कंडू स्त्री [कण्डू] १ खुजलाहट, खुजलाना ; (पाचा १, ६) । २ रोग-विशेष, पामा, खाज; (आचा १, १३)।

कंडूइ स्त्री [कण्डूति] ऊपर देखो; (गा ६३२; सुर २, २३)।

कंडूअ न [कण्डूयित] खुजलाना ; (सुख १, ३, ३ ; गा १८१)।

कंडूय देखो कंडूअ=कण्डूय्। कंडूअ : (महा)। वह— कंडूयमाण ; (महा)।

कंडूयग वि [कण्डूयक] खुजलाने वाला ; (ठा ५, १)।

कंडूयण देखो कंडुयण ; (उप ३१६ ; सुर १०६ ; २१०)।

कंडूयय देखो कंडूयग ; (महा)।

कंडूर पुं [दे] बक, बगुला ; (दे ३, ६)।

कंडूल वि [कान्त] १ सुन्दर, खूबसूरत, कमनीय, मनोहर (कप्पू)। २ पुं. वृक्ष-विशेष, कण्टकित (पाचा १, १)। ३ पुं. पनस, कटहल ; (पण्ण १)। ४ न. कलिंग, वंश (आचा २, १, १)।

कंदिर वि [कन्दिर] कँपने वाला; (सण)।

कंदी स्त्री [दे] मूला, कन्दविशेष; (दे ३, १)।

कंदु पुंस्ती [कन्दु] एक प्रकार का बरतन, जिसमें खाद्य पदार्थ पकाया जाता है, हँडिया; (विपा १, ३; सूत्र १, ५)।

कंदुअ पुं [कन्दुक] १ गेंद; (पाअ; स्वप्न ३८; कुमा ६१)। २ कदम्बवृक्ष विशेष; (पाअ १)।

कंदुइय पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचने वाला; (दे ३, ४१; ६, ६३)।

कंदुरी देखो कंदुअ; (पाअ)।

कंदुट्ट, ट्टे) देखो कंदोट्ट; (पाअ; कप्पू; स्वप्न ४; सण)।

कंदोइय देखो कंदुइय; (सुर ३६२)।

कंदोट्ट न [दे] नील कमल; (दे ३, ५; प्रासू ५६; सुर १, १७१; कुमा ११६; कप्पू; सण)।

कंध देखो खंध = स्कन्ध; (पाअ; कप्पू ३६)।

कंधग स्त्री [कन्धक] ईख, गन्ना; (पाअ; सुर ४, १६६; स्वप्न ४)।

कंधार पुं [दे] सरदार, संघ का पीछा करने वाला; (दे ८, ८१)।

कंध पुं [स्कन्ध] कंधा, शिखर। °कर; (हे ३, ३०)। °पुर—कांधेल, कांधलाव, (प्राप्र; कप्पू)। °वित्तेल्ल; (हे १, ३८; २३, ५६)। प्रकोष्ठक—कंधावित्तेल्ल; (सुर १६३)।

कंप पुं [कम्प] कम्पन, कंपन, हिलना, (कुमा; प्रासू)।

कंपड पुं [दे] पर्वत, मुसाफिर; (दे ३, ३)।

कंपण न [कम्पन] १ कंपन, हिलना; (भवि)। २ कम्पित। °वायु पुं [°वायु] वात का एक प्रकार; (ठा ७)।

कंपि वि [कम्पिन्] काँपने वाला, (कप्पू)।

कंपिअ वि [कम्पित] काँपा हुआ, (सुर)।

कंपिर वि [कम्पितृ] काँपने वाला, (सुर १६१; सुपा ५८८; पि ३३)।

कंपिल्ल वि [कम्पयितृ] काँपने वाला, कम्पित, कम्पनशील। °वायु पुं [°वायु] वात का एक प्रकार; (ठा ७)।

कंपिल्ल पुं [काम्पिल्य] १ प्रसिद्ध नगर जहाँ तेरहवें तीर्थंकर श्री विमलनाथ का जन्म हुआ था, (कप्पू; पउम २०, १; सुपा ४८; ती १४ दी)। पुर न [°पुर] उक्त नगर, (पउम ६, १६३; सुर)।

कंपेर वि [कम्प्र] १ काँपने वाला, कम्पी, २ सुन्दर, मनोहर, (पि ३६६)।

कंपेल्ल देखो कंपिल्ल।

कंबर पु [दे] शिला; (दे ३, ३३)।

कंबल पुं [कम्बल] १ कमली, ऊनी कपड़ा, (प्रासू; स्वप्न)। २ पु. मलमलकपड़ा एक कीड़ा; (सण)। ३ न. ऊन के रूप का पदार्थ, सफेद; (पिंड १, २)।

कंबा स्त्री [कम्बा] नदी, तलैया; "तिसि कंबाउलं, तिसिदिट्ठं कंबाभिहं वणं"। सुपा ३६६)।

कंबि) स्त्री [कम्बि, म्बी] १ नदी, तलैया। २ कंची। °कलाव पुं, छोटी, करधौनी के रूप में पहनी जाने वाली लड़ियाँ, (उप पृ ३३०)।

कंबु पु [कम्बु] १ शङ्ख; (कप्पू १, ४)। २ इस नाम का एक द्वीप; (पउम ४५, ३६)। ३ पर्वतविशेष, (पउम ४५, ३६)। ४ न. एक देवविमान, (सम ३६)। °सामि न [°स्वामिन्] एक देव विमान; (सम ३६)।

कंबोय पु [काम्बोज] देशविशेष, (पउम ३५, ५, स ८०)।

कंबोय वि [काम्बोज] काम्बोज देश में उत्पन्न; (स ८०)।

कंभार पुंन [कम्भार] इस नाम का एक अनिष्ट देव, (हे ३, १८ वृ)। °वडेंसग न [°वतंसक] नगर, शहर (सुर)। इस अर्थ में बहुव।

कंभेर) देश। इस देश (पउ)।

कंस पु [कंस] १ मथुरा राजवंश का एक राजा, श्रीकृष्ण का मामा (पाअ १, ४)। २ कांसा धातु, ३—(पाअ ७८)। ३ कांसा, एक प्रकार की धातु (पाअ १, ३—पाअ ११८)। °पाय पु [°पात्र] इस नाम का मुनि ३०, इस नाम पु [°पति] इस नाम का मुनि, (ती २, ३—पाअ ७८)। °वणिया पु [°वणिज] इस नाम का मुनि, (ती २, ३)। °संघाय पु [°संघात] इस नाम का मुनि, (ती २, ३)।

कंस न [कांस्य] १ एक धातु, कांसा, २ इस नाम का एक मान, तौल, (ठा ४, २, ३४)। °ताल न [°ताल] इस नाम का एक वाद्य, (ठा ४, २)। °पाई स्त्री [°पात्री] कांसा का बना हुआ बरतन विशेष, (पाअ ७)। °पाय न [°पात्र] कांसा का बना हुआ बरतन, (ठा ३)।

कंसार १ [दे] काश, एक प्रकार की मिठाई, "ता
कंसाल [कंसाल] देखो [illegible]
कंसाली [दे] [illegible]
कंसाल १ [कांस्यताल] [illegible]
कंसाल [कांस्यताल, कांस्यपात्र,] काँसे का एक
कंसालिया [कांस्यपात्रिका] एक प्रकार का बाजा
कंसिअ १ [कांसिक] १ काँसे का बना हुआ, २ काँसे
कंसिआ [कांसिका] [illegible]
कंसी [illegible]
कंसु [illegible]
कंसुआ [illegible]
कंसेरु [illegible]
कंसेरुअ [illegible]
कंसेरुआ [illegible]
कंसोट्ट [illegible]
कंसोट्टी [illegible]
कंसोट्टुअ [illegible]
कंसोट्टुआ [illegible]
कंसोट्ठ [illegible]
कंसोट्ठी [illegible]
कंसोट्ठुअ [illegible]
कंसोट्ठुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्ल [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुअ [illegible]
कंसोट्ठुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुल्लुआ [illegible]
कंसोट्ठुल्ल

कक्खड वि [दे] रूक्ष, रुक्ष; (दे २, ११; कप्र; हम; भवि)।
कक्खडंगी स्त्री [दे] स्पर्श, संस्पर्श; (दे २, १६)।
कक्खल [दे] देखो कक्कस; (षड्)।
कक्खा देखो कच्छा=कक्षा; (पाअ; गाथा १, ८; सुर ११, १२१)।
कक्खाड पुं [दे] १ अवलम्बन, विश्रामस्थान, तटवर्ती; २ विशाल, वृक्ष की शाखाएँ; (दे २, ५४)।
कक्खायण पुं [दे] विशाल, वृक्ष का विस्तार, वृक्ष की शाखाएँ; २, २२)।
कक्खड न [दे, कृत्य] कार्य, काम; (दे २, २; षड्)।
कक्खड (दे) देखो कज्ज; (प्राप्र)।
कक्खड न [काक] काक, कौआ; 'कक्खडमंसेहिं व सव्वं भक्खेहिं पडंतएहिं' (कप्र)।
कक्खंत वि [कृत्यमान] खींचा जाता; (सुख १, २, १)।
कक्खगा स्त्री [दे] १ कक्षा, कक्षा सम्बन्धी; २ कक्षा को सुशोभित, लटकता हुआ आभूषण-विशेष, एक प्रकार का आभूषण, मुखशोभी में जिसको 'काकली' कहते हैं; "पुणो कक्खगा पच्छा हिलमेक्खा" (भवि)।
कक्खचार पुं [दे] अवलम्ब, टेका; (सूत्र ११)।
कक्खाइणी स्त्री [कात्यायनी] देवी-विशेष, चण्डी; (स ४३७)।
कक्खायण पुं [कात्यायन] १ प्रसिद्ध-प्रसिद्ध ऋषि-विशेष; (सुख १०)। २ न. कौशिक गोत्र की शाखा-रूप एक गोत्र; ३ पुंस्त्व, इस गोत्र में उत्पन्न; (ठा ७—पत्र ३६०)।
कक्खायणी स्त्री [कात्यायनी] पार्वती, दुर्गा; (पाअ)।
कक्खि न [कक्षिवत्] इस शब्दों का सूचक अव्यय,—१ प्रश्न; २ संशय; ३ अनिश्चय; ४ हर्ष; (वि २७१; हे २, २१७; २१८)।
कक्खु (अप) आप देखो (हे ४, ३२६)।
कक्खूर पुं [कर्कूर] रत्न-विशेष, कड़ा, कानी हथनी; (भ २०)।
कक्खोल) पुं [कक्खोलक] रत्न-विशेष, पद्मराग;
कक्खोलय) (पाअ १०३, १२०; भवि; सुर २०१)।
कच्छ पुं [कक्ष] १ कौंछ, कानी; २ वन, जंगल; (सम ३, ६)। ३ कूप, पानी; ४ शुष्क कूप; ५ कानी, तट; ६ शुष्क कानों वाला जंगल; ७ गाछा कौंछ का

कलम्बका; ८ हाथी को बाँधने का तीर; ९ पर्वत, वस्तु; १० वृक्ष-समूह; ११ कक्षा, श्रेणी; १२ द्वार, दरवाजा; १३ कक्षावस्त्रिशेष, लंगोट; १४ त्रिशिखर पुर; १५ घर की भीत; १६ स्थान का व्यास; १७ अन्तर-वन देश; (हे २, १७)।
कच्छ पुं न [कच्छ] १ समतल-स्थान देश, जो आस पास की 'कच्छ' नाम से प्रसिद्ध है; (पउम ६८, ६८; हे २, १ टी)। २ जलप्राय देश, जल-बहुल देश; (गाथा १, १—पत्र ३३; सुख)। ३ कच्छ; लँगोट; (सुर २, १६)। ४ इक्षु वगैरः की वाटिका; (सुख; भाचा २, ३)। ५ महाविदेह वर्ष में स्थित एक विजय-प्रदेश; (ठा २, ३)। ६ तट, किनारा; "गोदावरीए कच्छे, चक्काणी गामओ पवरो" (सा १७१)। ७ नदी के जल से वेष्टित वन; (सम)। ८ मलयाद्रि-कासदेव का एक पुत्र; (अंत)। ९ कच्छ-विजय का एक राजा; १० कच्छ-विजय का अधिष्ठायक देव; (जं ४)। ११ पर्वतीय प्रदेश; १२ गजा वगैरः के उदर के आसपास का प्रदेश; (ठा ८५; औ)। १३ छन्द-विशेष, गीतक छंद का एक भेद; (पिंग)। 'कूड न [कूट] १ मन्त्राक्षर-न्यास वस्त्रालंकार पर्वत का एक शिखर; २ कच्छ-विजय के वैताढ्य पर्वत के अधिष्ठायक पार्श्ववर्ती देव का शिखर; (ठा ९)। ३ विद्युत्प्रभ पर्वत का एक शिखर; (जं ४)। 'गहिर पुं ['गंभीर] कच्छ देश का गाछा; (भवि)। 'गहिवइ पुं ['गंभीरपति] कच्छ देश का नृपति; (भवि)।
कच्छगावई स्त्री [कच्छकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय-प्रदेश; (ठा २, ३)।
कच्छट्ठी स्त्री [दे] कौंछी, लंगोटी, कछनी; (पंचा—दि)।
कच्छप पुं [कच्छप] १ कूर्म, कछुआ; (पड्ड १, १; राज १, १)। २ वसु-विशेष; (सम १३, ६)। 'रिंगिण न ['रिङ्गिण] कुल-वन्दना का एक ढंग, कछुए की तरह चलते हुए वन्दना करना; (द्वा ३; कुमा)।
कच्छभी स्त्री [कच्छपी] १ कच्छपी, कूर्मी। २ वाद्य-विशेष; (पड्ड २, ६)। ३ नगर की दीवार; (गाथा १, १७)। ४ पुष्प-विशेष; (ठा ५, ३)।
कच्छर पुं [दे] वृक्ष, पेड़, वृक्षक; (दे २, २)।
कच्छरी स्त्री [कच्छरी] वृक्ष-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३२)।

कच्छव (भव) पु [कच्छ] स्वनाम-प्रसिद्ध देश-विशेष, (भवि)।

कच्छभ देखो कच्छभ, (पउम ३४, ३३, दे १, १६७; गउड)।

कच्छभी देखो कच्छभी; (बृह ३)।

कच्छह देखो कच्छभ; (पाअ)।

कच्छा स्त्री [कक्षा] १ विभाग, भाग, (पउम १६, ७०)। २ उरो-बन्धन, हाथी के पेट पर बाँधने की रज्जू, "उप्पीलियकच्छे" (विपा १, २—पत्र २३, औप)। ३ कौम, वगल, (भग ३, ६; प्रामा)। ४ श्रेणि, पट्टिका; "समस्स य अमुरिंदस्स असुरकुमारगणो दुसस्स पायत्ताणियाहिवइस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ" (ठा ७)। ५ कमर पर बाँधने का वस्त्र; (गा १८४)। ६ जनानखाना, अन्त पुर, (ठा ७)। ७ संशय-कोटि; ८ स्पर्धास्थान। ९ पर की भींत, १० प्रकोष्ठ, (दे १, १७)।

कच्छा स्त्री [कच्छा] कटि-मेखला, कमर का आभूषण, (पाअ)। °वई स्त्री [°वती] देखो कच्छगावई, (अं ४)। °वईकूड न [°वतीकूट] महाविदेह वर्ष में स्थित वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर, (इक)।

कच्छु स्त्री [कच्छू] १ खुजली, खाज, रोग-विशेष; (प्रासू १८)। २ खाज को उत्पन्न करने वाली ओषधि, कपिकच्छु; (पण्ह १, ४)। °ल, °ल्ल वि [°मत्] खाज रोग वाला; (राज; विपा १, ७)।

कच्छुडिया स्त्री [दे. कच्छपटिका] कछौटी, लगोटी, (रंभा)।

कच्छुरिअ वि [दे] १ ईर्षालु, जिसको ईर्ष्या की जाय वह; २ न. ईर्ष्या, (दे १, १६)।

कच्छुरिअ वि [कच्छुरित] व्याप्त, लक्षित, (कुम्मा ६ टी)।

कच्छुरी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच, (दे १, ११)।

कच्छुल्ल पु [कच्छुल्ल] मुख्य विशेष, (पण्ण १—पत्र ११)।

कच्छुल्ल पु [कच्छुल्ल] स्वनाम-ख्यात एक नारद मुनि, (पउम ७१)।

कच्छू देखो कच्छु, (प्रासू ७१)।

कछोटी स्त्री [दे] कछौटी, लगोटी, (रंभा—टि)।

कज वि [कार्य] १ जो किया जाय वह; २ करने योग्य, उद्देश्य; "न य साहेइ सकज्जं" (प्रासू २ ३ कारण, हेतु; (पव २)। ४ काम, काज "अन्नह परिचिंतिज्जइ, सहरिसकंडुज्जएण हियएण परिणमइ अन्नह चिय, कज्जारंभो विहिवसेण" (सुर ४,

°जाण वि [°ज्ञ] कार्य को जानने वाला; (उप

°सेण पु [°सेन] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न ख्यात एक कुलकर-पुरुष, (सम १५०)।

कज्जउड पु [दे] अनर्थ; (दे १, १७)।

कज्जमाण वि [क्रियमाण] जो किया जाता हो "कज्ज च कज्जमाणं च आगमिस्सं च पावगं" (सूअ १,

कज्जल न [कज्जल] १ काजल, मसी; २ अञ्जन, सुर (कुमा)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] सुदर्शना-नाम जम्बू-वृक्ष की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी; (जीव ३)

कज्जलइअ वि [कज्जलित] १ काजल वाला; २ स्याम, कृष्ण, (पाअ)।

कज्जलंगी स्त्री [कज्जलङ्गी] कज्जल गृह, दीप के ऊपर रखा जाता पात्र, जिसमें काजल इकट्ठा होता है, कजौटी, (अंत; णाया १ १—पत्र ६)।

कज्जला स्त्री [कज्जला] इस नाम की एक पुष्करिणी, (इक)।

कज्जलाव अक [प्रकट] ढकना, ढूँढना। "आउसंतो समणा! एवं ते णावाए उदयं उत्तिंगेण आगच्छइ, उक्कड्ढाहि वा णावाए कज्जलावेहि" (आचा २, ३, १, १६)। वकृ—कज्जलावेमाण; (आचा २, ३, १, १६)।

कज्जलिअ देखो कज्जलइअ; (से २, ३६, गउड)।

कज्जव } पु [दे] १ विघ्न, मैला, २ तृण कचरा का
कज्जवय } समूह, कूड़ा, कतवार, (दे २, ११, ३ १७६; ६१३, स ३६४; दे १, ६६, भणु)।

कज्जिअ वि [कार्यिक] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी, (उ २)।

कज्जोवग पु [कार्योपग] मदारी मतावलंबी में एक भद्र क नाम, (ठा २, २—पत्र ७८)।

कज्जल न [दे] सेवाल, एक प्रकार की घास, जो जल राशों में लगती है; (दे १, ८)।

कट्टरि (भग) अ [कट्टरे] इन अर्थों का द्योतक अव्यय,— १ अवधारण, निश्चय, "कट्टरि पच्चंतए पुढवीए, जे भवि निच्चिन्न भए" (दे ४, ३६०)।

" कट्टरि मासु सुविसासु, कट्टरि सुहकम्म एसन्निम " (धर्म्म ११ टी)।

कटार (प्रा) न [दे] छुरी, बुरिका ; (हे ४, ४४६)।

कट्ट सक [कृत्] काटना, छेदना। कट्ठ; (भवि)। संकृ—कट्टि, कट्टिवि, कट्टिअ ; (रंभा ; भवि ; सिरि)।

कट्ट वि [कृत्त] काटा हुआ, छिन्न ; (उप १८०)।

कट्ट न [काष्ठ] १ दुःख ; २ वि. कष्ट-कारक, कष्ट-दायी ; (सिरि)।

कट्टर न [दे] खण्ड, अंश, टुकड़ा ; " से जहा वितत-कट्टर इ वा विकायकट्टर इ वा " (अनु)।

कट्टारय न [दे] छुरी, शस्त्र-विशेष ; (स १४३)।

कट्टारी स्त्री [दे] बुरिका, छुरी ; (दे २, ८)।

कट्टिअ वि [कर्त्तित] काटा हुआ, छेदित ; (सिरि)।

कट्टु वि [कर्त्तृ] काटनेवाला ; (षड्)।

कट्टु अ [कृत्वा] करके ; (राया १, १ ; कप्प ; भग)।

कट्ठोरग पुं [दे] कठोग, प्याला, पात्र-विशेष ; " तमो पलेहिं कोट्ठगा कट्ठोरगा मंदरमा सिरामी य हवेज्जंति " (सिरि १)।

कट्ठ न [काष्ठ] १ दुःख, पीड़ा, व्यथा ; (वृना)। २ पाप ; ३ वि. कष्ट-दायक, पीड़ा-कारक ; (हे २, ३४ ; ६०)। °हर न [°गृह] कटघरा, काठ की बनी हुई चार-दिवारी ; (सुर २, १८१)।

कट्ठ न [काष्ठ] काठ, लकड़ी ; (वृना ; सुपा ३६४)। २ पुं राजगृह नगर का निवासी एक स्वतन्त्र-स्वतन्त्र श्रेष्ठी। (आक)। °कम्मंत न [°कर्मान्त] लकड़ी का कार-खाना ; (आचा २, २)। °करण न [°करण] स्थापत्य-शास्त्र प्रसिद्ध एक यंत्र का नाम, (कप्प)। °कार पुं [°कार] काठ-कर्म से जीविका चलाने वाला ; (अनु)। °कोलंब पु [°कोलम्ब] वृक्ष की शाखा के नीचे लटकता हुआ अग्र-भाग ; (अनु)। °खाय पु [°खाद] कूप-विशेष, पुरः ; (ठा ४)। °दल न [°दल] वृक्ष की दाल, (गाज)। °पाउया स्त्री [°पादुका] काठ का जूता, खड़ाऊँ ; (अनु ४)। °पुत्तलिया स्त्री [°पुत्तलिका] काष्ठपुत्री ; (अनु)। °पेया स्त्री [°पेया] मूंग आदि का स्वाद न हुए से कच्ची हुई खिचड़ी की तरह (दश) । °महु न [°मधु] पुराना मद्य ; (वृना)। °मूल न [°मूल] द्विदल धान्य, जिसका दो टुकड़ा समान होता है ऐसा चना, मूंग आदि अन्न ; (पिंड १)। °हार पुं [°हार] इन्द्रिय जन्तु-विशेष, जूं कीट-विशेष ; (जीव १)। °हारय पुं [°हारक] कटहरा, लकड़हारा ; (सुपा ३८६)।

कट्ठ वि [कृष्ट] विलिखित, खींचा हुआ ; " सीयदुमट्ठेपंथ-कट्ठोल्ला इंधणे य मेलो य " (ओघ ३३६)।

कट्ठण न [कार्षण] आकर्षण, खींचाव ; (गउड)।

कट्ठा स्त्री [काष्ठा] १ दिशा ; (सम ८८)। २ हद, सीमा ; " कट्ठाए अट्ठो परा कट्ठा " (आ १६)। ३ काल का एक परिमाण, अठारह निमेष ; (तंदु)। ४ प्रकर्ष ; (सुज ६)।

कट्ठिअ पुं [दे] चपरासी, प्रतीहार ; (दे २, १६)।

कट्ठिअ वि [काष्ठित] काट से संस्कृत मीत बनाया ; (आचा २, २)।

कट्ठिण देखो कढिण ; (नट—मालती ६६)।

कड वि [दे] १ जीर्ण, दुर्बल ; २ रुग्न, विनष्ट ; (दे २, ५१)।

कड वि [कट] १ स्खलित, गलत ; (राया १, १—पत्र ६६)। २ तृण, घास ; ३ चटाई, आस्तरण-विशेष ; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। ४ लकड़ी, यष्टि ; " तेसिं च जुद्धं लयादिदुट्ठकडलायडंडेहिं " (वसु)। ५ वंश, बाँस ; (विपा १, ६ ; ठा ४, ४)। ६ तृण-विशेष ; (ठा ८, ४)। ७ छिला हुआ काष्ठ ; (आचा २, २, १)। °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] क्षुद्र-विशेष ; (भौप ; जं २)। °तड न [°तट] १ कटक का एक भाग; २ स्खलित-तट ; (राया १, १)। °पूयणा स्त्री [°पूतना] व्यन्तरी-विशेष ; (विसे २५४६)।

कड वि [कृत] १ किया हुआ, बनाया हुआ, रचित ; (भग ; पण्ह २, ५ ; विपा १, १ ; कप्प ; सुपा ३६)। २ युग-विशेष, सत्ययुग ; (ठा ४, ३)। ३ चार की संख्या ; (सूम १, २)। °जुग न [°युग] सत्य युग, उत्पत्ति का समय, आदि युग, १७२८००० वर्षों का वह युग होता है ; (ठा ८, ३)। °जुम्म पुं [°युग्म] राशि-विशेष, चार से भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे वैसा राशि (ठा ४ ; °जुम्मकडजुम्म पु [°युग्म कृतयुग्म] राशि-विशेष (भग ३८, १)। °जुम्मक-

लिओय [°युग्मकल्योज] राशि-विशेष, (भग ३४, १)। °जुम्मतेओय पु [°युग्मत्र्योज] राशि-विशेष ; (भग ३४, १)। °जुम्मदावरजुम्म पुं [°जुग्मद्वापरयुग्म] राशि-विशेष , (भग ३४, १) °जोगि वि [°योगिन्] १ कृत-क्रिय, (निचू १)। २ गीतार्थ, ज्ञानी , (ओघ ११४ भा)। ३ तपस्वी ; (निचू १)। °वाइ पु [°वादिन्] सृष्टि को नैसर्गिक न मान कर किसी की बनाई हुई मानने वाला, जगत्-कर्तृत्व-वादी , (सूम १, १, १)। °इ पु [°दि] देखो °जोगि, (भग, णाया १, १— पत्र ७४)। देखो कय=कृत।

कडभल्ल पु [दे] दौवारिक, प्रतीहार , (दे २, १६)।

कडभल्ली स्त्री [दे] कण्ठ, गला , (दे २, १६)।

कडरूव पु [दे] स्थपति, बढ़ई , (दे २, २२)।

कडरूव वि [कटकित] कंकण की तरह स्थित , (से ११, ४१)।

कडल्ल पु [दे] दौवारिक, प्रतीहार ; (दे २, १६)।

कडंगर न [कटङ्गर] वृक्ष, टिलका , (सुपा ११६)।

कडंत न [दे] मूली, कन्द-विशेष , २ सुगत , (दे २, ६१)।

कडंतर न [दे] पुराना सूप आदि उपकरण ; (दे २, १६)।

कडंतरिअ वि [दे] दलित, विदलित, विनाशित; (दे २, १०)।

कडंब पु [कटम्ब] वाद्य-विशेष , (विसे ७८ टी)।

कडंबुअ न [दे] १ कुम्भपीत-नामक पात्र-विशेष, २ घड़े का ऊर्ध्व-भाग , (दे २ १०)।

कडक देखो कडग , (नाट—रत्ना ४८)।

कडकडा स्त्री [कडकडा] अनुकरण-शब्द विशेष, कड़-कड़ आवाज , (स २५० ; सि ४६८, नाट—मालती ४६)।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कड़-कड़ आवाज किया हो वह , (सुर ३, १६३)।

कडकडाविअ वि [कडकडापित्] कड़-कड़ आवाज करने वाला , (स्वप्न)।

कडक्ख पु [कटाक्ष] कटाक्ष, तिरछी निगाह, भव-भुकुटि, आँख का संकेत , (कप्र ; सुर १, ६३, सुपा ६)।

कडक्खण न [कटाक्षण] कटाक्ष करना। कडक्खए , (भवि)। कड—कटाक्षयति , (भवि)।

कडक्खण न [कटाक्षण] कटाक्ष करना, (भवि)।

कडक्खिअ वि [कटाक्षित] १ जिस पर कटाक्ष किया हुआ हो वह , (स्वप्न)। २ न कटाक्ष ; (भवि)।

कडग पुंन [कटक] १ कड़ा, वलय, विशेष , (णाया १, १)। २ "अन्नन्नस संगमगमणं होदी कडंतेरण तं स ज्झाएणं" (उप १६६ टी)। ३ पर्वत का मध्य भाग , ४ पर्वत को सम भूमि एक भाग , "गिरिकंदरकडगविसमदुग्गेसु" पद्म १, ३ ; णाया १, ४ ; १८)। ७ गिरि का स्थान, (कुछ १)। ८ पु देश विशेष; (णाय पत्र ३१)। देखो कडय।

कडच्छु स्त्री [दे] कर्छी, चमची, डोई ; (दे

कडण न [कदन] १ मार डालना, हिंसा ; (कुमा नाश करना , ३ मर्दन ; ४ पाप ; ५ युद्ध , ६ वि आकुलता , (हे १, २१७)।

कडण न [कटन] १ घर को छत , २ घर पर छत डा (गच्छ १)।

कडणा स्त्री [कटना] घर का अवयव-विशेष ; (८, ६)।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला , "सुरगिरिकडणिरीणि वंदाइच्चाण सिरिमणुहरति" (सुपा ६१५)।

कडतला स्त्री [दे] लोहे का एक प्रकार का हथियार, ए एक धार वाला और वक्र होता है ; (दे २, १६)।

कडत्तरिअ [दे] देखो कडंतरिअ , (भवि)।

कडद्दरिअ वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ ; २ न छिन्न (पट्)।

कडप्प पु [दे, कटप्र] १ समूह, निकर, कलाप , (दे १, ११ ; पट् , गउड , सुपा ६२ , भवि विक ६६)। २ वस्त्र का एक भाग , (दे २, १३)।

कडय देखो कडग , (सुर १, ११३, पाम गउड, क सुपा १६२ , दे ४, ३३)। ६ लश्कर, सैन्य , (ह ६)। १० पु काशी देश का एक राजा, (महा)। स्त्री [°यती] राजा कटक की एक कन्या , (महा)।

कडयड पु [कडकड] कड़-कड़ आवाज, "कण्ण नग्ग दृण्णयडम (? य) डमरणंतुमणहरणं" (पउम ६४, ८८)।

कडयडिय वि [दे] परावर्तित, फिराया हुआ, घुमाया हुआ, "न कुम्मए कयडिय पिट्ठि न पवित्तइ सिरिघर ।" सुर १, ६)।

कडयमकरा स्त्री [दे] वस्त्र-शाखा ,

कडसी स्त्री [दे] स्मशान, मसान ; (दे २, ६)।

कडह पुं [कटभू] वृक्ष-विशेष ; (हे १)।

कडा स्त्री [दे] कड़ी, बिछली, जंजीर की लड़ी : "विघडइ-बाहुडालं खडक्खमो निसुणिओ तणो" (सुपा ४१४)।

कडार न [दे] नासिकेर, नरियर ; (दे २, १०)।

कडार पुं [कडार] १ वर्ण-विशेष, तमड़ा वर्ण, भूरा रंग ; २ वि. कपिल वर्ण वाला, भूरा रंग का, मटमैला रंग का ; (पाअ ; स्वप्न ७७ ; सुपा ३३; ६२)।

कडाली स्त्री [दे. कटालिका] घोड़े के मुँह पर बाँधने का एक उपकरण ; (अनु ६)।

कडाह पु [कटाह] १ कड़ाह, लोहे का पात्र, लोहे की बड़ी कड़ाही ; (अनु ६ ; णाट—मृच्छ ३)। २ वृक्ष-विशेष ; (पउम १३, ७६)। ३ पाँजर की हड्डी, शरीर का एक अवयव ; (पण्ण १)।

कडाहपरहत्थिअ न [दे] देखो पार्श्वों का अवलोकन, पार्श्वों को घुमाना-फिराना ; (दे २, २४)।

कडि स्त्री [कटि] १ कमर, कटी ; (विपा १, २ ; अनु ६)। २ वृक्षादि का मध्य भाग ; (जं १)। 'तड न [तट] १ कटी-तट ; २ मध्य भाग ; (गाय)। 'पट्टय न ['पट्टक] धोती, वस्त्र-विशेष ; (कुमा ४)। 'पत्त न ['पत्र] १ सर्वादि वृक्ष की पत्ती; २ पछाड़ी कमर; (अनु ६)। 'यल न ['तल] कटी-प्रदेश ; (भवि)। 'ल्ल वि ['ल्लीय] देखो कडिल्ल (दे) का २ रा अर्थ। 'वट्टी स्त्री ['पट्टी] कमर का पट्टा, कमर-पट्टा ; (सुपा ३३१)। 'वत्थ न ['वस्त्र] धोती, कमर में पहनने का वस्त्र; (दे २, १७)। 'सुत्त न ['सूत्र] कमर का आभूषण, मेखला, (सम १८३ ; कप्प)। 'हत्थ पुं [हस्त] कमर पर रखा हुआ हाथ ; (दे २, १७)।

कडिअ वि [कटित] १ कट—बटाई में आच्छादित ; (कप्प)। २ कट में संस्कृत : (आचा २, २, १)। ३ एक तृण में मिला हुआ ; "वणकडियकडिक्काए" (औप)।

कडिअ वि [दे] प्रेरित, तुमाँ किया हुआ; (षड्)।

कडिअम पुं [दे] १ कमर पर रक्खा हुआ हाथ ; (पाअ. दे २, १७)। २ कमर में किया हुआ आसन ; (दे २, १७)।

कडिल देखो कलिल ; (स्वप्न ९, २ टी—पत्र ६)।

कडिल्ल न [दे] शरीर के एक भाग में होने वाला एक रोग (दे २, ६)।

कडिल्ल वि [दे] १ छिन्न-भिन्न; निर्विद्ध ; (दे २, ६२ ; षड्)। २ न. कटी-वस्त्र, कमर में पहनने का वस्त्र, धोती वगैरः ; (दे २, ६२ ; पाअ ; षड् ; सुपा १६२ ; कप्पू ; भवि ; विसे २६००)। ३ वन, जंगल, अटवी ;

"संसारमकडिल्ले, संजोगविओगसोगरण्णहरे।
कुसुमपयाय तुमं, सत्थाहो नाह ! उत्थन्नो ॥"

(पउम २, ४६ ; वव २; दे २, ६२)। ४ गहन, निबिड, सान्द्र ; " निल्लिभिल्लावाकडिल्ले " (उप १०३१ टी ; दे २, ६२; षड्)। ५ आशीर्वाद, आशीस; ६ पुं. दौवारिक, प्रतीहार ; ७ विन्न, शत्रु, दुश्मन ; (दे २, ६२ ; षड्)। ८ कटाह, लोहे का बड़ा पात्र ; (ओघ ६२)। ९ उपकरण-विशेष ; (दस ६)।

कडी देखो कडि ; (सुपा ३२६)।

कडु) पुं [कटुक] १ कड़ुआ, तिक्त, रस-विशेष ; (ठा
कडुअ) १)। २ वि. तिक्त, तिक्त रस वाला; (से १,६१; कुमा)। ३ अनिष्ट ; (पिंड २, ६)। ४ दारुण, भयंकर ; (पिंड १, १)। ५ पाप. निन्दुर ; (नाट—रत्ना ६६)। ६ स्त्री. वनस्पति-विशेष, कुटकी ; (हे २, १६१)।

कडुअ (सौ) अ [कृत्वा] करके ; (हे २, २७२)।

कडुआल पुं [दे] कुत्ता, श्वान ; (दे २, ५७)। २ छोटी मछली ; (दे २, ५७ ; पाअ)।

कडुइय वि [कटुकित] १ कड़ुआ किया हुआ। २ तिक्त ; (गउड)।

कडुइया स्त्री [कटुकी] वल्ली-विशेष, कुटकी; (पण्ण १)।

कडुच्चय
कडुच्चु
कडुच्चुय } पुंस्त्री (दे) देखो कडच्चु ; " धूवकडुच्चय-हत्था " (सुपा ४१; पाअ ; सिरि ३, १, धम्म

कडुयाविय वि [दे] १ प्रेरित, जिस पर प्रहार किया गया हो वह, (उप पृ ६६)। २ व्यथित, पीड़ित, " सा य (वाणमाडी) कुमारपहारकडुयाविया भणइ पम्मुक्का कया " (महा)। ३ हताहत हुआ, पराभूत ; ४ भारी विपद् में फँसा हुआ, । भवि)।

कडुइय (सौ) वि [कटुकृत] कड़ुआ किया हुआ, (नाट—

कडेवर न [कलेवर] शरीर (उप ९८६ टी ; ९८७)।

कड्ढ सक [कृष्] १ खींचना। २ काम करना। ३ जमा करना। ४ पढ़ना। ५ उच्चारण करना। कड्ढइ, (ठा ४, १८७)। वकृ—कड्ढंत, कड्ढमाण, (ठा ८, मद्य)। कवकृ- कड्ढिज्जंत, कड्ढिज्जमाण, (ठा ५, २१; ६, २१, पण्ह १, ३)। संकृ - कड्ढिऊण, कड्ढेउ, कड्ढित्तु, कड्ढिय, (महा), कड्ढी नमोक्कारं" (पंचा), कड्ढिउं (पि ५७७)। हे—कड्ढेयव्व, (सुपा २३६)।

कड्ढ ३ [कर्ष] खींचाव, आकर्षण, (उप १६)।

कड्ढण न [कर्षण] १ खींचाव, आकर्षण, (सुपा २६२)। २ वि खींचने वाला, आकर्षक, (उप पृ १७७)।

कड्ढणया स्त्री [कर्षणता] आकर्षण, (उप पृ १७७)।

कड्ढाविय वि [कर्षित] खींचाया हुआ, बाहर निकलवाया हुआ, (भवि)।

कड्ढिय वि [कृष्ट] १ आकृष्ट, खींचा हुआ, (पण्ह १,३)। २ खींचा, उखाड़ा, (स १८२)।

कड्ढोकड्ढि न [कर्षापकर्षि] खींचातान, (उप १६)।

कड्ढ सक [कृष्] १ काम करना। २ उखाड़ना। ३ लाना, गमन करना। कड्ढ, (ठा ४, २२०)। वकृ कड्ढमाण, (वि २२१)। कवकृ —"राया कड्ढमाणेहिं कड्ढेतेहिं" (सुपा १२०)। कड्ढोमाण, (वि २११)।

कड्ढकड्ढेंत वि [कड्ढकड्ढायमान] बार बार आकर्षण, (पउम २१, ६०)।

कड्ढिअ वि [कर्षित] १ उखाड़ा हुआ; २ गमन किया हुआ, —कड्ढिअ न्हु निकला अड्ढाइज्जा गव्वूअ" (भग २०, उद्दे १०, सुपा ८६)।

कड्ढिआ स्त्री [दे] खेत, अंजन विशेष, (ठा २, ३)।

कड्ढिअ वि [कर्षित] १ खींचा, खोदा, उखाड़ा, फाड़ा, (उप १, ३, पण्ह)। २ न तृण-विशेष, (उप १, ३, ३)। ३ खेत, क्षेत्र, (उप १, ४, पण्ह)।

कड्ढिर वि [कर्षित] १ खींचने वाला, निकालने वाला, (पउम ३२, ३३)।

कड्ढ सक [कल्प्] शक्त करना, समर्थ करना, (ठा ६, ३१८)। कर्मणि, (सुर १०, २१८ काकर ११)।

कड्ढ सक [कल्प्] समर्थ करना, (ठा ६, ३१६)।

कण पु [कण] १ कण, लेश; "न सक्कइ" (सार्ध ७६)। २ विदीर्ण वनस्पति-विशेष, (पण्ण १)। ४ पुं. (राज)। ५ मद्य विशेष, मद्याधिष्ठायक, २, २—पत्र ७७)। ६ तण्डुल, ओदन; ७ कनिक; (आचा २, १)। ८ विंदु; इभ" (पाम)। °इभ वि [°धन्] (पाम)। °कुंडग पु [°कुण्डक] हुई एक भक्ष्य वस्तु, "कणकु इगं चउरण्ण सूसरो" (उप १२)। °पूपलिया स्त्री [° भाजन-विशेष, कणिक की बनाई हुई एक खाद्य वस्तु, २, १)। °भक्ख पु [°भक्ष] वैशेषिक मत का ऋषि, (राज)। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] (सुपा २३४)। °वियाणग पु [°विज्ञानक] कणग वियाणग, (सुज्ज २०; इक)। पु [°संतानक] देखो कणग-संताणय, (ठा २११४)। °यण्ण वि [°कीर्ण] (पाम)।

कण पु [क्वण] शब्द, आवाज, (उप पृ १०

कणइकेउ पु [कनकिकेतु] इस नाम का एक (दंस)।

कणइपुर न [कनकिपुर] नगर विशेष, जो महाबल के भाई बलद की राजधानी थी, (ती)।

कणइर पु [कर्णिकार] कनेर, वनस्पति-विशेष; (१—पत्र १२)।

कणइल्ल पु [दे] शुक, तोता, (पाम)।

कणई स्त्री [दे] लता, वल्ली, (६ २, १ ६१६, पाम)।

कणगार न [कनकार] पाषण का एक प्रहार, (विपा १, १)।

कणकण पु [कणत्कण] कण-कण आवाज, (पउम २१, ६१)। वह कणकण

कणकणअ पु [दे] कण कण आवाज, (पउम ४२, ८६)।

कणकणग पु [कनकनक] वृक्ष-विशेष,

णक्कणिअ वि [क्वणत्क्वणित] कण-कण आवाज करता, क्वण् ।
णग देखो कण ; (कप्प ।
णग (दे) देखो कणय= (दे) ; (पउम १, २)।
णग पुं [कनक] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७७) । २ जैसा-तैसा उत्पात-पिण्ड, जो आकाश से गिरता है ; (भग ३१० मा; जी ६)। ३ बिन्दु ; ४ शलाका, सलाई ; (गच्छ)। ५ कुण्डल द्वीप का अधिपति देव ; (सुज्ज १६)। ६ बिल्व वृक्ष, बेल का वृक्ष ; (उत्त) । ७ न. सुवर्ण, सोना ; । सं ६४ ; जी ३)। कंत वि [कान्त] १ कनक की तरह चमकता ; (आचा २, ४, १)। २ पुं. देव-विशेष ; (देव)। कूड न [कूट] १ पर्वत-विशेष का एक शिखर; (जं ४)। २ पुं. स्वर्ण-मय शिखर वाला पर्वत ; (जंबू ३)। केउ पु [केतु] इस नाम का एक राजा ; (सामा १, १४)। गिरि पुं [गिरि] १ मेरु पर्वत; २ स्वर्ण-प्रधान पर्वत ; (औप)। ज्झय पु [ध्वज] इस नाम का एक राजा ; (पंचा ५)। पुर न [पुर] नगर-विशेष, (विपा २, ६)। पभ पु [प्रभ] देव-विशेष ; (सुज्ज १६)। पभा स्त्री [प्रभा] १ देवी-विशेष, २ 'इलायपुत्त' का एक अध्ययन ; (सामा २, १)। पुप्फिअ न [पुष्पित] जिसमें सोने के फूल लगाए गये हों ऐसा वस्त्र ; (निचू । माला स्त्री [माला] १ एक विद्याधर की पुत्री ; (उत्त ६)। २ एक स्त्रीलक्षण स्थान माप्यी ; (सुर १६, ६०)। रह पु [रथ] इस नाम का एक राजा ; (ठा २ : १०)। लया स्त्री [लता] वर्मलोक के सोम नामक लोकपाल-देव की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १ -पत्र २०४)। वियाणग पुं [वितानक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव विशेष; (ठा २, ३—पत्र ७७)। संताणग पुं [संतानक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७७)। वलि स्त्री [वलि] १ सुवर्ण का एक आभूषण, सुवर्ण के मणियों से बना आभूषण ; (भग २७)। २ नग-विशेष, एक प्रकार की वनस्पति ; (औप)। ३ पुं. द्वीप-विशेष ; ४ समुद्र विशेष; (जंबू ३)। वलिपविभत्ति स्त्री [वलि-पविभक्ति] नाट्य का एक प्रकार ; (राय)। वलिमद्द पुं [वलिभद्र] कनकवलि द्वीप का एक अधिष्ठायक देव ; (जंबू ३)। वलिमहामद्द पुं [वलिमहाभद्र] कनकावलिवर-नामक समुद्र का एक अधिष्ठायक देव ; (जंबू ३)। वलिमहावर पुं [वलिमहावर] कनकवलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जंबू ३)। वलिवर पुं [वलिवर] १ इस नाम का एक द्वीप ; २ इस नाम का एक समुद्र ; ३ कनकवलिवर समुद्र का अधिष्ठाता देव विशेष ; (जंबू ३)। वलिवरमद्द पुं [वलिव-रभद्र] कनकवलिवर द्वीप का एक अधिपति देव; (जंबू ३)। वलिवरमहामद्द पुं [वलिवरमहाभद्र] कनकवलिवर-नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जंबू ३)। वलि-वरोभास पुं [वलिवरावभास] १ इस नाम का एक द्वीप ; २ इस नाम का एक समुद्र ; (जंबू ३)। वलिवरोभासभद्द पुं [वलिवरावभासभद्र] कनका-वलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव ; (जंबू ३)। वलिवरोभासमहाभद्द पुं [वलिवरावभासमहा-भद्र] कनकवलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव; (जंबू ३)। वलिवरोभासमहावर पुं [वलिवरावभासमहावर] कनकवलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव ; (जंबू ३)। वलिवरोभासवर पुं [वलिवरावभासवर] कनकवलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव; (जंबू ३)। वली स्त्री [वली] देखो वलि का १ला और २रा अर्थ ; (पव २७१)। देखो कणय=कनक ।

कणगा स्त्री [कनका] १ सोम-नामक गजेन्द्र की एक अग्र-महिषी, (ठा ४, २—पत्र ७७) । २ वर्मेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी ; (ठा ४, १)। ३ 'णायाधम्मकहा' सूत्र का एक अध्ययन; (सामा २, १)। ४ क्षुद्र जन्तु-विशेष की एक जाति, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष ; (जीव १)।

कणगुत्तम पु [कनकोत्तम] इस नाम का एक देव ; (देव)।

कणय पुं [दे] १ फूलों की इच्छा करना, अवदय; २ वाग, गर ; " अक्खिडक्कणयदंसि—" (पउम ८, ८८ ; पव १, १ ; दे २, ५६ ; पाम)।

कणय देखो कणग=कनक; (भग ३१० मा ; प्रासू १६६; दे १, २२८ ; दव ; पाम ; भग ; कुमा)। २ पुं. राजा जनक के एक भाई का नाम ; (पउम २८, १३२)। ३ रावण का इस नाम का एक सुभट ;

णाम न [नामन्] कर्म-विपाक, जिसके उदय से जीव का शरीर काला होता है, (राज)। °पत्तिय वि [°प्रत्यय] १ क्रूर कर्म करने वाला ; (सूअ १, १)। २ कुछ काल तक शृंगार में रहण करने वाला (जीव), (ठा १, १)। °भंजुजीव पु [°चञ्चुजीव] कुछ किंचित्, श्याम (पण्ण १७)। भूम, °भीम पु [भूम] काली जमीन, (भग ६, ३३ ; ठा ८ ; राय, राई स्त्री [°रात्रि, °जी] १ काली रेखा, (भग ६, ३३ ; ठा ८ ; कप्प)। २ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी, (ठा ८ ; भग ३, ८)। °सिरि पु [°ऋषि] ज्ञातापर्मकथा ' सूत्र का एक अध्ययन पुरिमताल नगर में हुआ (णाया १, १)। °सिरिया स्त्री [°श्रेयस्] इस नाम का एक श्रेष्ठी, जिसका जन्म शंखावती नगरी में हुआ था, (णाया १, ८)। °सेम, °सेय वि [°श्रेयस्] कृष्ण संबंधी, परिणाम, अन्त्य पुनि : (भग, ठा १, १)। °सेय न [°श्रेयस्] एक दो [मित्र, (राज, णाया १, १)। °सेयग पु [°श्रेयक] काली विशेष, मान्द्रमणी, (पण्ण १)। २ शनि, (ठा ८)। °सेया स्त्री [°श्रेया] १ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी, (ठा ८ ; भग ३, ८)। २ एक अन्तकृत् स्त्री, (अंत १४)। ३ द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री, (णाया १, १६)। ४ अग्र-महिषी का एक नाम, (भग ३, ८)। °सोय न [°शोक] एक नरक, (भग)।

कसणा स्त्री [कृष्णा] १ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी, (ठा ८ ; भग ३, ८)। २ एक अन्तकृत् स्त्री, (अंत १४)। ३ द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री, (णाया १, १६)। ४ अग्र-महिषी का एक नाम, (भग ३, ८)।

कसणु पु [कृष्णु] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणेर पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणेरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोयय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरा स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरी स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरु पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरो स्त्री [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयरोय पु [°नेत्र] कृष्ण, काला, (सूअ १, १)।

कसणोयर

त्थ सक [कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसा। कत्थइ ; (हे ४, १८७)।
त्थ अ [कुतः] कहाँ से ? (षड्)।
त्थ अ [क्व, कुत्र] कहाँ ? (षड् ; कुमा , प्रासू १२३)। °इम [चित्] कहीं, किसी जगह ; (आचा, हम ; हे २, १७८)।
त्थइ वि [कत्थयि] १ कहने योग्य, कथनीय ; २ कथन का एक भेद , (ठा ४, ४—पत्र २८७)। ३ कत्थनक्रिया , (गाद)।
त्थंत देखो कह = कथय्।
त्थमाणी स्त्री [कत्थमानी] पर्वत में होने वाली वनस्पति-विशेष ; (पणण १—पत्र ३४)।
त्थूरिया , स्त्री [कस्तुरी] मृग-नाभि , हरिण के नाभि में होने वाली सुगन्धित वस्तु , (सुपा ३४७ , स ३३६ ; कप्पू)।
त्थ वि [दे] १ उत्तम , श्रेष्ठ ; २ क्लीव , दुर्बल ; (षड्)।
दइअ देखो कदुअ = कटु , (कुमा)।
दलली देखो कयली , (उप ९—पत्र ३०)।
दुइया स्त्री [दे] कपड़े सिलने , बनाने , सीने ; (पण १—पत्र ३३)।
दुम) पु [कर्दम] १ कादा, कीचड़ , (पाद १, दुमग) ४)। २ वैद्यक क्रिया , एक अपध्यान ; (भग १ , ३)।
दमिअ वि [कर्दमित] मलिन-युक्त , कीचड़ वाला ; (से ३ , २० , सण)।
दमिअ पु [दे] कपि , बैल , (हे १ , १५)।
दम देखो कयम = कर्म , (सुर १, ३ , सुर २, १७१, पाअ १२४ , उप ५६ टी , ८ ४ , ३ ; सुपा ६६ ; पव)। °संग पु [कर्मज] कर्म का उत्पन्न ; (पव)।
दलउड्ड देखो कयलउड्ड , (कुमा)।
दलग देखो कयलय [कदलक] केला , केलवृक्ष , केलापेड़ (सुर १ , १११ ; प्रभा)।
दली देखो कयली , (सण ; पाअ , १२१ ; पव)।
दलीघाय देखो कयलीघाय , (सण)।
दलीसमुग्घाय वि [दे] [illegible] (सण)

कल्लीरह पु [कर्णीरथ] एक प्रकार की शिबिका , पालकी का एक प्रकार का वाहन ; (राज ३, ३)।
कल्लुल्लड (अप) पु [कर्ण] कान, श्रवणेन्द्रिय ; (कुमा)।
कल्लेय देखो कण्णिआर ; (कुमा)।
कल्लोली (दे) देखो कण्णोल्ली ; (पव)।
कल्ह देखो कण्ह ; (सुपा ३६६ ; कप्र)। °सह न [सह] जैन शास्त्रों के एक मुनि का नाम ; (कप्र)।
कविंजल पु [कपिञ्जल] पक्षि-विशेष—१ चातक , २ तीतर पक्षी ; (पाद १ , १)।
कप्पूर देखो कप्पूर ; (श्रा २७)।
कप्प अक [कृप्] १ समर्थ होना। २ कल्पना, कल्प में लाना। ३ काटना, छेदना। कप्पइ, कप्पए ; (कप्प; भग; विपा) कर्म—कप्पिज्जइ; (हे ४, ३३७)। कृ—कप्पणिज्ज, (आचा १)। प्रयो—कप्पावेइज्ज; (निचू १७)। वकृ—कप्पायंत, (निचू १७)।
कप्प सक [कल्पय्] १ काटना, कतरना। २ वर्णन करना। ३ कल्पना करना। वकृ—कप्पेमाण, (निचू १, १)। संकृ—कप्पेऊण, (पंचव १)।
कप्प वि [कल्प्य] उचित योग्य, (पंचा १३)।
कप्प पु [कल्प] १ कल्प-विशेष, देवों के दो इन्द्रों द्वारा पालित स्वर्ग, "सक्कस्स कप्पिलस्स य कप्पा कप्पाणु लिप्पेसु" (अनु १८, कुमा)। २ आचार-विशेष, अनुष्ठान, (ठा ६)। ३ आचार-विहित, (निचू १७३; सुपा ३३४)। ४ कल्पना प्रसूत उपकरण, (आचा ८०)। ५ वेदों का अंग, कल्प वेदांग ; (अनु ५, ४, ठा ३, १७०)। ६ आचार विशेष निर्णय ग्रंथ, वैकल्पिक ग्रंथ, (अनु ३)। ७ कल्प-विशेष, जहाँ-कल्पित पात्र की देने वाला कल्प हो, कल्प इव (कुमा)। ८ तप-विशेष, " छम्मासियं तवोकम्मं उक्कोसेणं वियाणियं " (पंचा ६, ७३)। ९ कल्पित, समर्थ, (सूत्र १)। १० आचार अंग का एक अध्ययन, (सम)। ११ पु. स्वर्ग, त्रिष्टिप, (सण १, १३)। १२ सदृश, तुल्य " कप्पसमं " आचा १, २)। °ट्ठ पु [स्थ] आचार्य, गण का नायक)। °ट्ठिइ स्त्री [स्थिति] साधुओं का आचार-विशेष ; (पंचा ६) °ट्ठिया स्त्री [स्थिका] [illegible] (पंचा ६) °ट्ठी स्त्री [स्थी] [illegible] (पंचा ६)। °ड्ढ [स्थ] [illegible] (पंचा ६)। °तरु [illegible] ; [illegible]

कप्प-वृक्ष, (प्राप् १६८, हे १, ७६)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] देवी, देव-स्त्री, (ठा २)। °दुम, °दुम पु [°द्रुम] कल्प-वृक्ष, (पण १, मग)। °पायव पु [°पादप] कल्प-वृक्ष; (पडि, सुपा ३६)। °पाहुड न [°प्राभृत] जैन ग्रन्थ-विशेष, (ठा)। °रुक्ख पु [°वृक्ष] कल्प-वृक्ष, (पण्ह १, ४)। °विमंसय न [°विमंसक] १ विमान-विशेष, २ विमान वासी देव विशेष, जिसमें कल्पावतंसक देव-विमानों का वर्णन है, (राय, निर १)। °विडंसिया स्त्री [°विटंसिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, (सुपा ३६६)। °विडिवि पु [°विटपिन्] कल्प-वृक्ष, (सुपा ३६६)। °साल पु [°शाल] कल्प-वृक्ष, (उप १४२ टी) °सुत्त न [°सूत्र]-थोभवन्दु स्वामि-विरचित एक जैन ग्रन्थ, (कप्प, कस)। °सुय न [°श्रुत] १ ज्ञान-विशेष, २ ग्रन्थ-विशेष, (णंदि)। °हिअ पु [°तीत] उत्तम जाति के देव-विशेष, सौधर्म आदि अनुत्तर विमान के निवासी देव, (पण्ह १, ४, पण्ण १)। °ग पु [°ग] विधि को जानने वाला, (कप्प, औप)। °पाय पु [°पाय] कर, चुंगी, राज-देय भाग, (विपा १, ३)।

कप्पंत पु [कल्पान्त] प्रलय-काल, सहार-समय, (कप्पू)।

कप्पड पु [कर्पट] १ कपड़ा, वस्त्र, (पउम २१, १८, सुपा ३४४, स १८०)। २ जीर्ण वस्त्र, लकुटाकार कपड़ा, (पण्ह १, ३)।

कप्पडिअ वि [कापटिक] भिक्षुक, भीखमंगा, (णाया १, ८, सुपा १३८; सुर १)।

कप्पडिअ वि [कापटिक] कपटी, मायावी; (णाया १, ८—पत्र १६०)।

कप्पण न [कल्पन] छेदन, काटना, (सुपा १३८)।

कप्पणा स्त्री [कल्पना] १ रचना, निर्माण, २ प्ररूपण, निरूपण; (निचू १)। ३ कल्पना, विकल्प, (विसे १६३१)।

कप्पणी स्त्री [कल्पनी] कतरनी, कैंची, (पण्ह १, १, विपा १, ४, स ३७१)।

कप्पर पु [कर्पर] खप्पर, कपाल, सिर की खोपड़ी, (सुर ४, ८८)। देखो कुप्पर=कर्पर।

कप्परिअ वि [दे] दारित, चीरा हुआ, (द १,१०, वज्जा ३०, भवि)।

कप्पास पु [कार्पास] १ कपास, (निचू १)।

कप्पासमिंजि पु [कार्पासमिञ्जिक] कपास का जन्तु विशेष, (जं १)।

कप्पासिय वि [कार्पासिक] कपास का बना हुआ, कपास, (भग)।

कप्पासी स्त्री [कार्पासी] रुई का वस्त्र, (निचू १)।

कप्पिय वि [कल्पित] १ रचित, निर्मित, (स्वप्नि १)। २ समीप में रखा हुआ, ३ अभ्यर्थित, मंगे हुए अन्नादि वस्तु, (निर १,१)।

कप्पिय वि [कल्पिक] १ अनुज्ञा, अनुमति, (सुपा १, २)। २ छिन्न, काटा हुआ, (सुपा १३०)। २ कल्प, उचित। ४ पक्ष १, ३ पु. गताय, इनी संज्ञा, "वि का आख्यिक" (स

कप्पिया स्त्री [कल्पिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, (उप १, निर)।

कप्पूर पु [कर्पूर] कपूर, सुगन्धि द्रव्य-विशेष, (अ ६, सुर १, ६, सुपा ३६३)।

कप्पोवग पु [कल्पोपग] १ कल्प-वृक्ष। २ देवलोक वासी देव, (पउम २१)।

कप्पोववण्ण पु [कल्पोपपन्न] ऊपर देखो, (सुपा ८

कप्पोववत्तिआ स्त्री [कल्पोपपत्तिका] देवलोक में उत्पत्ति, (भग)।

कप्फल न [कट्फल] इस नाम की एक वनस्पति, कचूर (हे १, ७७)।

कप्फाड देखो कप्पाड = कपाट, गवाक्ष।

कप्फाड [दे] देखो कप्पाड (पाअ)।

कप्फ पु [कफ] कफ, शरीर स्थित धातु-विशेष, रस

कप्फाड पु [दे] गुफा, गुहा, (दे २, ७)।

कप्पड पुन [कर्पट] १ खराब वस्त्र, टुकड़ा, (भग पण्ह १, ३)। २ वस्त्र-विशेष, (ठा २, ३ पत्र ७०)। ३

कप्पडग विष्टायक देव विशेष (ठा २ ३ पत्र ७०)। ३ तुलसा का निवासी, (उप १०)।

कप्पाडभयय पु [दे] ठाका पर जमाल खरने वाला मजदूर (ठा ४ १—पत्र २००)।

कप्पुर } वि [कर्पूर] १ कपूर, चिनगारी, कण
कप्पुरय } (गउड मच्छु)।

विष्टायक देव-विशेष

कव्वुरिअ वि [कर्बुरित] अनेक वर्ण वाला, चित्रवर्ण किया हुआ ; "इंदधणुकव्वुरियजलमिव" (सुपा ६४); "मणिमयदेसम्मि चित्तकव्वुरियम्मि कव्वुरिअं" (कुमा ६ ; पउम ८२, ११)।

कम (अप) देखो काम ; (षड्)।

कमच्छ न [दे] कपड़ा, वस्त्र ; (अनु ६ ; उवा)।

कम सक [क्रम्] १ चलना, पैर रखना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. फैलना, पसरना। ४ होना। "मणसो वि विसुद्धिमिमो न कयाइ जओ न संकप्प" (विसे २४६); "न एत्थ उवायंतरं कमइ" (स २०६)। वह—कमंत ; (से २, ६)। कृ—कमणिज्ज ; (औप)।

कम सक [काम्] चाहना, वाञ्छना। वकृ—कममाण ; (दे २, ८५)। कृ—कमणीय ; (सुपा ३४; २६२) ; कम्म , (गाथा १, १४ टी—पत्र १८८)।

कम पुं [क्रम] १ पाद, पग, पाँव ; (सुर १, ८)। २ परम्परा, " नियकुलकमागयाओ विज्जाओ विज्जामो मज्झ दिन्नाओ" (सुर ३, २८)। ३ अनुक्रम, परिपाटी; (गउड)। ४ मर्यादा, सीमा ; (ठा ४)। ५ न्याय, फैसला ; " अविमाम्मि कमे ण ठविस्सदि" (स्वप्न २१)। ६ नियम ; (दृ १)।

कम पुं [वल्मन्] श्रम, थकावट, क्लान्ति ; (हे २, १०६ ; कुमा)।

कमंडलु पुंन [कमण्डलु] संन्यासियों का एक मिट्टी या काठ का पात्र ; (णि ३, १ ; पाअ १, ४ ; उत्त १४८ टी)।

कमंध पुंन [कबन्ध] रुंड, मस्तक-हीन शरीर ; (हे १, २३६ ; प्राप्र ; कुमा)।

कमठ पुं [दे] १ वही की कलगी; २ स्थिर, स्थाली ; ३ वर्तुलेय ; ४ मुख, मुँह ; (दे २, ४५)।

कमठ
कमठग
कमठय } पुं [कमठ, क] १ तापस-विशेष, जिसको भगवान् पार्श्वनाथ ने वाद में जीता था और जो मर कर दैत्य हुआ था ; (सूनि २२)। २ कूर्म, कछुआ ; (पाम)। ३ वंश, बाँस ; ४ शल्यकी मत्स्य; (हे १, १६६)। ५ न. तैल, तट ; (सिरु ३)। ६ साध्वीमों का एक पात्र ; (सिरु १ ; ओघ ३६ भा)। ७ साध्वीमों को पहनने का एक वस्त्र ; (ओघ ६७५ ; दृ ३)।

कमण न [क्रमण] १ गति, चाल ; २ प्रवृत्ति ; (आचू ४)।

कमणिया स्त्री (कमणिका] उतावल, जल्दी ; (दृ ३)।

कमणिल्ल वि [कमणिवत्] जल्दी करने वाला, जल्दी चलने वाला ; (दृ ३)।

कमणी स्त्री [कमणी] जल्दी, उतावल ; (दृ ३)।

कमणी स्त्री [दे] निःश्रेणि, सीढ़ी ; (दे २, ८)।

कमणीय वि [कमनीय] सुन्दर, मनोहर ; (सुपा ३४ २६२)।

कमल पुं [दे] १ स्थिर, स्थाली ; २ पद्म, शंख ; (दे २, ५४)। ३ सुख, मुँह ; (दे २, ५४ ; षड्)। ४ हरिण, मृग ; " कन्य व एणी कमलो:मणब्भरिणीए संगओ कस्स " (सुर १६, २०२ ; दे २, ५४ ; अणु ; कप्प ; औप)। ५ कलह, लड़ाई ; (षड्)।

कमल न [कमल] १ कमल, पद्म, अरविन्द ; (कप्प ; कुमा ; प्राप्र ७१)। २ कमलाख्य इन्द्राणी का निवास-स्थान; ३ संख्या-विशेष, 'कमलाङ्क' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (जो २)। ४ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ५ पुं. कमलाख्य इन्द्राणी के पूर्व जन्म का पिता ; (गाथा २)। ६ श्रेष्ठि-विशेष ; (सुपा २७५)। ७ पिङ्गल-प्रतिष्ठ एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमें गुरु हो वह गण ; (पिंग)। ८ एक जाति का चावल, कलम ; (प्राप्र)। °चक्ख पुं [°चक्ष] इस नाम का एक यक्ष ; (सण)। °जय न [°जय] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। °जोणि पुं [°योनि] ब्रह्मा, विधाता ; (पाम)। °पुर न [°पुर] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)। °पभा स्त्री [°प्रभा] १ काल-नामक विनाचन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १)। २ इस धर्मकथा ' सूत्र का एक अध्ययन; (गाथा २)। °बन्धु पुं [°बन्धु] १ सूर्य, रवि ; (पउम ७०, ६२)। २ इस नाम का एक राजा ; (पउम २२, ८८)। °माला स्त्री [°माला] पोतनपुर नगर के राजा अमरदत्त की एक रानी, भगवान् अजितनाथ की माताजी—राणी ; (पउम ५, ५२)। °रय पुं [°रजस्] कमल का पराग; (पाम)। °वडिंसय न [°वतंसक] कमला-नामक इन्द्राणी का प्रासाद; (गाथा २)। °सिरी स्त्री [°श्री] कमला-नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म की माता का नाम ; (गाथा २)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] इस नाम की एक राजा - (उप ७२८

टी)। °सेणा स्त्री [सेना] एक राज पुत्री, (महा)। °आर, °गार पु [°कार] १ कमलों का समूह। २ सरोवर, हद वगैर जलाशय, (से १, २६, कप्प)। °पोंड °मेल पु [°पोंड] भरत चक्रवर्ती का अश्व रत्न, (-ज ३, पि ६२)। °मण पु [°मन] ब्रह्मा, विराता, (पाअ, दे ७, ६२)। कमला स्त्री [दे] हरिणी, मृगी, (पाअ)। कमला स्त्री [कमला] १ लक्ष्मी, (पाअ, सुपा २७६)। २ रावण की एक पत्नी, (पउम ७४, ६)। ३ काल-नामक विनाचेन्द्र की एक अग्र-महेषी, इन्द्राणी-विशेष, (ठा ६, १)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन, (णाया १)। ५ छन्द-विशेष, (पिंग)। °आर पु [°कार] धनाढ्य धनी, (से १, २६)। कमलिणी स्त्री [कमलिनी] पद्मिनी, कमल का गाछ, (पाअ)।

कमय } अक [स्वप्] सोना, सो जाना। कमइ, कमयम } (षड्), कमयए, (हे ४, १६६, कुमा)।

कमसो अ [क्रमशः] क्रम से, एक एक करके; (सुर १, ११६)।

कमिअ वि [दे] उपार्जित, पास आया हुआ, (दे २, ३)।

कमेलय } पुंस्त्री [कमेलक] ऊँट, ऊँटनी, (पाअ, उप १०३१ कमेल्लय } टी, सुर ३३)। स्त्री—णी, (उप १०३१ टी)।

कम्म सक [कृ] इजाफत करना, जोर-कर्म करना। कम्मइ, (हे ४, ७१, षड्)। अक —कम्मंत, (कुमा)। कम्म सक [मुच्] भोजन करना। कम्मइ, (हे ४, ११०)।

कम्म देखो कम्मन्।

कम्म पुन [कर्मन्] १ जीव द्वारा ग्रहण किया जाता कार्मण सूक्ष्म पुद्गल, (ठा ४, ४, कम्म १, १)। २ काम, क्रिया, कार्य, व्यापार, (ठा १, आचा)। "कम्मा कम्मस्स कारगा" (ठा १०२)। ३ जो किया जाय वह, स्वरूप-प्रसिद्ध छन्द-विशेष, (पिंग २०२६, २८२०)। ४ स्थान, जहाँ पर पूजा वगैर कराया जाता है, (सूत्र १, ३—पत्र ११३)। ५ पूर्व-कृति, भाग्य, "कम्म दुप्पणिहिया वा" (सूत्र १, ३, १, आचा)। ६ कर्मण-शक्ति नामकर्म, (कम्म १, २१)। ७ कर्म वि [कर] करने वाला, (आचा) देखो °गार। °करण न [°करण] कर्म-विषयक बन्धन, जीव-प्रदेश (भग ६, १)। °कार वि [°कार] नीच १७, ७)। °किच्चिय वि [किल्विष] कर्म सराव काम करने वाला, (उत्त ३)। °क [°स्कन्ध] कर्म-पुद्गलों का पिण्ड, (कम्म १)। देखो °कर; (प्राकृ)। °गार पु [°कार] १ गर, गिरनी, (णाया १,८) देखो °कर। °जोग पु [शास्त्रोक्त अनुष्ठान, (कम्म)। °ट्ठाण न [स्था कारखाना, (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [स्थिति] कर्म-पुद्गलों का अवस्थान-समय, (भग ६, ३)। वि. सगाती जीव, (भग १४, ६)। °निबेअ [°निषेक] कर्म पुद्गलों की रचना-विशेष, (भग ६, (अणु)। °परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] पुद्गलों का जीव-प्रदेशों से पृथक्करण, (सूअ १, १ °पुरिस पु [पुरुष] कर्म-प्रधान पुरुष—१ कसाई, (सूअ १, ४, १), २ महारम्भ करने वाले वसुदत्त राजा लोक; (ठा ३, १—पत्र ११३)। °पग न [°प्रवाद] जैन ग्रन्थाय-विशेष, आठवाँ पूर्व; (२६)। °बंध पु [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों का आत्म लगना, कर्मों से आत्मा का बन्धन, (भग)। °भूमग वि [°भूमिक] कर्म-भूमि में उत्पन्न, (१)। °भूमि स्त्री [°भूमि] कर्म प्रधान भूमि, खेत वगैर, (जी ३३)। °भूमिग देखो भूम (पण्ण ३३)। °भूमिय वि [°भूमिज] कर्म में उत्पन्न; (ठा ३, १—पत्र ११४)। °मास [°मास] श्रावण मास, (जं १)। °मासग [°मासक] मान-विशेष, चार गुञ्जा, चार रत्ती, (ठा य वि [ज] १ कर्म से उत्पन्न होने वाला, २ पुद्गलों का बना हुआ शरीर-विशेष, कार्मण शरीर, (ठा ५, १)। °या स्त्री [जा] अभ्यास से उत्पन्न कर्मों की बुद्धि, अनुभव, (सूत्र)। °लेस्सा स्त्री [लेश्या] कर्म द्वारा होने वाला जीव का परिणाम, (भग १४, १)। °वग्गणा स्त्री [वर्गणा] कर्म-रूप में परिणत होने योग्य पुद्गल-समूह, (पण्ण)। °वाइ वि [वादिन्] कर्म को ही सब कुछ मानने वाला, (गच्छ)। °विवाग [°विपाक] १ कर्म परिणाम, कर्म-फल, २ कर्म का प्रतिपादक ग्रन्थ, (कम्म

[°संवत्सर] सांवत्सर वर्ष ; (सुज्ञ १०)। °साला स्त्री [°शाला] १ कारखाना ; २ कुम्हार का पकाने का स्थान , (वृह १)। °सिद्ध पु [°सिद्ध] कर्मठ, निपुण ; (प्रकर)। °सूयय [°सूदय] १ कर्मठ ; २ कर्मठों का कोई भी कर्म बताने का सिद्धादि ग्रन्थ करने वाला मनु. (हे २, १)। °दाण न [°दान] निपुण अथवा पटु को दिया जाता धन ; (मृच्छ ८, ६ । °यग्गि पु [°र्य] वे कर्म, सांप व्यापार करने वाला ; (पाअ १)। °वाड देखो °वाड ; (प्रभा)।

कम्म वि [कार्मण] १ कर्म-संबन्धी, कर्म-जन्य, कर्म-निर्मित, कर्म-मय , २ न कर्म-पुद्गलों का ही बना हुआ एक अत्यन्त सूक्ष्म शरीर, जो संसार में सभी प्राणियों के साथ ही रहता है ; (हे १, कम्म ४)। ३ कर्म-निर्मित, कार्मण शरीर का हेतु-भूत कर्म ; (कम्म २, ३१)। ४ कार्मण-शरीर का व्यापार , (कम्म ३ १४ ; कम्म ४)।

कम्मइय न [कार्मणिक, कार्मण] ऊपर देखो , (पउम १०१, ८८)।

कम्मंत पु [दे. कर्मान्त] १ कर्म-व्यवहार का काण्ड; (आचा. सूत्र २,२)। २ कर्म-स्थान, कारखाना; (हे २,१७४)।

कम्मंत वि [कुर्वत्] १ हलचल करता हुआ , २ हलचल, चंचल , कुप्र ।। °साला स्त्री [°शाला] उक्त अर्थ का द्योतक आधुनिक जमाने का वह स्थान (सिरि ८)।

कम्मग न [कार्मक, कार्मक, कार्मण] ऊपर कम्म= कार्मण (हे २, २ पाअ २१ भग)

कम्मण न [कार्मण] १ कर्म-बन्ध उत्पन्न (हे २,१७ । २ औषध, मन्त्र आदि के द्वारा न हो सकने योग्य उच्चाटन आदि कर्म (हे १,१४ टी सं १०८ गारि वि [कारिन्] कर्मण करने वाला ; (सुर १, १८ जोय पु [योग] कार्मण-प्रयोग (सण २, १४ ,

कम्मण न [भोजन] भोजन (हे

कम्मम प्र ऊपर कम्म = कर्म ।

कम्मय ऊपर कम्मग (भग १४ ,

कम्मय वि [उप+भुज्] उपभोग करने , कम्मय (१, १५ १६२

कम्मयण न [उपभोग] उपभोग करने के योग्य (हे

कम्मर वि [कम्मय] १ अधिक १ न पाप (हे १, ३५ ,

कम्मार स्त्री [कार्मन्] किया, व्यापार , (हे ४, २—पद २९०)।

कम्मार पु [कर्मार] १ लोहार, लोहकार ; (विसे १११८)। २ प्रति-विशेष ; (आव १)।

कम्मार वि [कर्मकार, °क] १ लोहार, चांडाल ; (ठा ३ ३३१ ; औप ४, ६४ टी)। २ कारीगर, मिस्त्री ; (जीव ३)।

कम्मारिया स्त्री [कर्मकारिका] स्त्री-लोहार, दासी, सुप्र ३३०)।

कम्मि वि [कर्मिन्] कर्म करने वाला, अभ्यासी ; कम्मिअ)

" सव्वकम्मिएण इमं वत्तमेयं दट्ठूण पाउद्दामीओ।
सं.कम्मे जो रामसण्णहम्मि अवगासो मुक्खा "
(गा ६६४)।

२ पाप कर्म करने वाला ; (सूत्र १, ७, ६)।

कम्मिया स्त्री [कर्मिका, कार्मिका] १ अभ्यास से उत्पन्न होने वाली बुद्धि ; (णाया १, १)। २ अशोभ कर्म-जन्य, अनिष्ट कर्म ; (भग)।

कम्हल न [कदम्बल] वस्त्र ; (गउड)।

कम्हा अ [कस्मात्] क्यों, किस कारण से ? (औप)।

कम्हार देखो कंभार ; (हे २, ४४)। °ज न [°ज] लोहा, कुटुम्ब ; (हेका)।

कयिहिअ पु [दे] मालो, मनोकार , (दे २, ८)।

कयहार देखो कंभार , (सुर १ १२, वि १२०; ३३१)।

कय पु [कच] केश, बाल (हे १, १३३, कुमा)।

कय पु [कय] कारीगर सुर १ १४ ।

कय देखो कड = कृत अथवा कृत्य प्रभा १,

पुण्ण, पुन्न वि [पुण्य] पुण्यशाली, भाग्यवान् (सुर १ १०१ सुर १ १२३ , क पुन्न न १ २) । कयत्त वि [कृत्य] कृतार्थ, व्यवहार-कुशल (सुर १, ८ कयण्ण वि [कृतज्ञ] कृतज्ञ-भाव (सुर १ १४ ३) किच्च वि [कृत्य] कृतार्थ, व्यवहार-कुशल ; सुर १) । °ण न [क] (ठा ३ १३३) । °ण न [कृत्य] कर्तव्य, कार्य ; (पिंड ४३२ , ठा ३ १) । °ण न [कृतज्ञ] कृतज्ञता ; (पिंड ४३२

मनागपि ; (पउम ६४, २०)।
कयंध देखो कमंध ; (हे १, १३६ ;
क, वे देखो कर्तरि ; (पण्ण १, हे १,
कयंबिय वि [कदम्बित] मलहल, कि
कयंबुअ देखो कर्तबुअ, (कप्प)।
कयग पु [कनक] १ धतूरा-विशेष, वि
काक फल, निर्मली-फल, पापमारी ; " जद
जलबुदोम्व विणासिनि " (सिरि ५३६ टी)।
कयड्ढ पु [कदर्द] कनख, हाथ, (राज)
(सुपा ४४१)।
कयण न [कदन] हिंसा, मार डालना, (हे १, ११
कयत्थ सक [कदर्थय्] हैरान करना, पीड़ा क
(भग ८ टी)। कृ—कयत्थिअ
कयत्थण न [कदर्थन] हैरानी, हैरान करना, पीड़ा,
(सुपा १८०, महा)।
कयत्थणा स्त्री [कदर्थना] ऊपर देखो, (ग
सुर १५, १)।
कयत्थिय वि [कदर्थित] हैरान किया हुआ, पी
(सुपा २७७, महा)।
कयम वि [कतम] कौन में से कौन ? (ठा ४०१)।
कयर वि [कतर] दो में से कौन ? (हे १, ४८)।
कयर पु [करक] १ धूल-मिश्रित ओला, करोंदा। २
१४६)। न करीर का फल, (पभा १४)।
कयल पु [कदल] १ केली वृक्ष, केला का पेड़।
व. केली-फल, केला, (हे १, १३ ७)।
कयलि स्त्री [दे] अतिकंजर, पक्षी मारने का बड़ा जाल
(हे १, ४)।
कयलि, लो स्त्री [कदलि, ली] केला का पेड़, (कु
हे १, १७०)। °समागम पु [°समाग
का संयोग, (भगवती)। °हर न [°गृह
कयवर पु [दे] १ कचरा, दूड़ा, मैला, (भग, सुर १, १४
सुर १२, ८१, ग १४, भग ८१, पभा, पण्ण
मिच्छ ७)। २ मिश्र ; (भग)।
कयवरिआ स्त्री [दे] १ कचरा डालने की जगह, कूड़ा
(सुर १, ८)। २ कचरा डालने की टोकरी, (पि
कयवाल पु [कृतपाल] १ एक राजा का नाम, (उप
२ एक श्रेष्ठी का नाम, (उप ६४८)।
कयवाल पु [कृतपाल] १ एक राजा का नाम, (उप
२ एक श्रेष्ठी का नाम, (उप ६४८)।
कयवाल पु [कृतपाल] १ एक राजा का नाम, (उप
२ एक श्रेष्ठी का नाम, (उप ६४८)।

कयवाड पुं [कुक्कवाकु] कुक्कुट, कुक्कड़ा, मुर्गा ; (गउड)।
कयवाय पुं [कुक्कवाक] कुक्कुट, कुक्कड़ा, मुर्गा ; (पाअ)।
कयसण न [कदशन] खराब भोजन; (विवे १३६)।
कयसेहर पुं [दे] कुक्कड़ा, मुर्गा ; " कयसेहरगए सुम्मइ आलावो अत्ति गोत्तम्मि " (वज्जा ७२)।
कया अ [कदा] कब, किस समय ? (उप ३, ४ ; प्राप्र १६६)।
क्याइ अ [कदापि] कभी भी, किसी समय भी; (उवा)।
क्याइ } अ [कदाचित्] १ किसी समय, कभी ; (उवा ;
क्याई } पि ७३)। " अह अन्नया कयाई " (सुपा ५०६, २. विकल्प-द्योतक अव्यय ; " नहेनि कयाइनि " (भग १६)।
क्याण न [क्रयाणक] बेचने योग्य वस्तु, किरियाना ; (उप पृ १८०)।
क्यार पुं [दे] कलार, कूड़ा, मैला; (दे २, ११ ; भवि)।
क्यावि देखो कयाइ=कदापि ; (प्राप्र १३१)।
क्य सक [कृ] करना, बनाना। कज्ज; (हे ४, २३४)। भूत—कासी, कही, काहीअ, करिंसु, करिंसू, अकासि, अकासी; (हे ४, १६२ ; कुमा ; भग ; कम)। भवि—काहिइ, काही, करिस्सइ, करिहिइ, काहं, काहिमि; (हे ३,१६; वि १३३; कुमा)। कर्म—कज्जइ, कीरइ, करिज्जइ; (भग; हे ४, २४०) वह—करेमि, करिंत, करेंत, करेमाण ; (वि ५०८ ; स्वप्न ७२ ; से २, १६; सुर २, २४० ; उवा)। कवह—कज्जमाण, कीरंत, कीरमाण ; (वि ५४७ ; कुमा ; भग २७२ ; स्वप्न ८६)। संकृ—करित्ता, करित्ताणं, करिदूण, काउं, काऊण, काऊणं, कट्टु, करिअ, किच्चा, कियाणं ; (कम ; उव ३ ; षट् ; कुमा ; भग ; अभि ४१ ; सुम १, १, १ ; औप)। हेकृ—काउं, करेत्तए ; (कुमा ; भग ८,२)। कृ—करणिज्ज, करणीय, करिअव्व, करेअव्व, कायव्व ; (उव १० ; षट् ; स २१ ; प्राप्र १४८ ; कुमा)। प्रयो—कारवेइ, कारवेइ; (वि ५६३; ५६२)।
कर पुं [कर] १ हस्त, हाथ; (सुर १, ५४ ; प्राप्र ५७)। २ महसूल, चुंगी ; (उप ७६८ टी ; सुर १, ५४)। ३ किरण, अंशु ; (उप ७६८ टी; कुमा)। ४ हाथी की सूँड़ ; (कुमा)। ५ करवा, मिट्टी-घटि, मोटा; "करकडाकरिदरिक्खिदे " (पउम ८६, १५)। °ग्गह पुं [ग्रह] १ हाथ से ग्रहण करना ; " दाममरलग्गहणुद्धिमो धम्मिल्लो " (गा ५४१)। २ पाणि-ग्रहण, शादी ; (गाज)। °ज्ज पुं [ज] नख ; (काप्र १७२)। °ट्ठ पुंन [करट्ठ] १ नख; (हे १, ३४)। २ हस्त-किरण ; (पउम ७७, ८८)। °त्तावत्त न [°लाघव] कला-विशेष, हस्त-लाघव; (कप्र)। °त्तंदण न [°चन्दन] कन्दन का एक ढोंग, एक प्रकार का मुक्का मारने का बन्दन करना ; (कुप्र ३)।
करअडी } स्त्री [दे] स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा ; (दे २,
करअरी } १६)।
करआ स्त्री [करका] करका, ओला, मिट्टा-घटि ; (अभ, ६४)।
करइल्ली स्त्री [दे] शुष्क वृक्ष, सूखा पेड़ ; (दे २, १७)।
करंक पुं [दे. करङ्क] १ भिक्षा-पात्र; (दे २,११६; गउड)। २ अशोक वृक्ष ; (दे २, ११)।
करंक पुंन [करङ्क] १ हड्डी, हाड़ ; " करंकवम्मीसु मसाणमज्झे " (सुपा १७६)। २ अस्थि-पञ्जर, हाड़-पञ्जर ; (उप ७२८ टी)। ३ पानदान, पान वगैरः रखने की छोटी पेटी; " नवोत्तकरंकवाहिणीओ " (कप्र)। ४ हड्डियों का ढेर; (सुर ६, २०३)।
करंज सक [भञ्ज]. तोड़ना, फोड़ना, टुकड़ा करना। करंजइ ; (हे ४, १०६)।
करंज पुं [करञ्ज] वृक्ष-विशेष, करिञ्जा ; (पण्ण १ ; दे १, १३ ; गा १२१)।
करंज पुं [दे] शुष्क त्वचा, सूखी त्वचा ; (दे २, ८)।
करंजिअ वि [भग्न] तोड़ा हुआ ; (कुमा)।
करंड } पुं [करण्ड, क] १ करण्ड, डिब्बा, पेटिका ;
करंडग } (पण्ह १, ५ ; आ १४; उप ४, ४)।
करंडिया स्त्री [करण्डिका] छोटा डिब्बा ; (आचा १, ७ ; सुर ४२८)।
करंडी स्त्री [करण्डी] १ डिब्बा, पेटिका ; (आ १४)। २ कूँची, पात्र-विशेष ; (उप ६६३)।
करंडुय न [दे] पेड़ के पत्ते की हड्डी ; (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।
करंत देखो कर=कृ।
करंब पुं [करम्ब] दही और [illegible] हुआ एक खाद्य द्रव्य, दिग्दोहन ; [illegible], १४ ; कुमा १३६)।

करंबिय वि [करम्बित] व्याप्त, सचित्र, (सुपा ३४ ; गउड)।

करकंट पु [करकण्ट] इस नाम का एक परिव्राजक, तापस-विशेष, (औप)।

करकंडु पु [करकण्डु] एक जैन महर्षि, (महा, पडि)।

करकड वि [दे कर्कर, कर्कट] १ कठिन, परुष, (उत्त)। करकडी स्त्री [दे करकटी] चिपड़ा, निन्दनीय वस्त्र-विशेष, जो प्राचीन काल में वध्य पुरुष को पहनाया जाता था; (विपा १, २—पत्र २४)।

करकय पु [करकच] करपत्र, करात, आरा, (पण्ह १, १)।

करकर पु [करकर] 'कर कर' आवाज; (णाया १, ६)।

करकरिग पु [करकरिक] ग्रह विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ७८)।

करग पुं [करक] १ करका, ओला, (था २०, ओघ ३८३ ; जी ५)। २ पानी की कलसी, जल-पात्र, (अनु ५ ; था १६, सुपा ३३६ ; ३६४)। देखो करय=करक।

करघायल पु [दे] खिलाट, दूध की मलाई, (दे २, २२)।

करट पु [दे] अपवित्र अन्न को खाने वाला ब्राह्मण, (मृच्छ २०७)।

करड पु [करट] १ काक, कौआ, (उर १, १४)। २ हाथी का गण्ड-स्थल, (सुपा १३६ ; पाअ)। ३ वाद्य-विशेष ; (विक ८७)। ४ कुसुम्भ-वृक्ष, ५ करीर-वृक्ष ; ६ गिरगिट, सरट ; ७ पाखंडी, नास्तिक, ८ भाड-विशेष ; (द २, ११ टी)।

करड पु [दे] १ व्याघ्र, शेर, २ वि कबरा, चितकबरा, दे २, ११)।

करडा स्त्री [दे] लाट्टा—१ एक प्रकार का कण्टक-वृक्ष, करंज, २ भ्रमर, भ्रमरा ; ३ वाद्य-विशेष ; २, ११)।

करडि पु [करटिन्] हाथी, हस्ती, (सुर १, १६, सुपा ३१६)।

करडी स्त्री [दे करटी] वाद्य-विशेष ; "मद्दलं करडिलं" ( )।

करडूय पु [दे] भाद्र-विशेष ; (पिंड)।

करण न [करण] १ इन्द्रिय ; (सुर ८, २१६, ४, सुर ४, २४६)। ५ कारक-विशेष, साधकतम, ३, १, विसे १६३६)। ६ उपधि, उपकरण, (६६६)। ७ न्यायालय, न्याय-स्थल ; (उप पृ ११० ८ वीर्य-स्फुरण ; (ठा ३, १—पत्र १०६)। ६ शास्त्र-प्रसिद्ध बव-बालवादि करण, (सुर २, १६६)। निमित्त, प्रयोजन, (आवु १)। ११ जेल, कैदखाना (भवि)। १२ वि. जो किया जाय वह ; (भग ३)। १३ करने वाला, (कुमा)। °गिहवइ पु [जेल का अध्यक्ष, (भवि)।

करणया स्त्री [करणता] १ अनुष्ठान, क्रिया, २ उद्यम ; (णाया १, १—पत्र ५०)।

करणि स्त्री [दे] १ रूप, आकार, (दे २, ७ ; १०५, ४७५, पाअ)। २ सादृश्य, समानता, (सुपा ३ अनुकरण, नकल करना ; (गउड)। ४ अंगीकार, (उप पृ ३८५)।

करणिज्ज देखो कर=कृ।

करणिल्ल वि [दे] समान, सदृश, "मयणजलणल्लीढ णिल्लेण पयामथोरेण निरंतरेण च ऊसुएण" (स ३१ "बंधूयकरणिल्लेण सहावारुणेण अहरेण" (स ३१२)।

करणीअ देखो कर=कृ।

करपत्त न [करपत्र] करपत्र, करवत, (विपा १, ६

करभ पु [करभ] ऊँट, उष्ट्र, (पण्ह १, १, पउ

करभी स्त्री [करभी] १ उष्ट्री, स्त्री-ऊँट, (पिंड)। धान्य भरने का एक बड़ा पात्र ; (बृह २, कप्प)। करही।

करम वि [दे] क्षीण, दुर्बल, (द २, ६, पउ)।

करमंद पु [करमन्द] फल वाला वृक्ष-विशेष ; (पण्ण करमद पु [करमर्द] वृक्ष-विशेष, करोंदा, (पण्ण पत्र ३१)।

करमरी स्त्री [दे] हट हट स्त्री, बौंदी ; (द २, १५, गा ६१७, पाअ)।

करय देखो करग ; (उप ७२८ टी, पण्ण १ ; इला, ७)। २ पंक्ति-विशेष ; (पण्ह

करयंदी स्त्री [दे] मल्लिका, बेला का गाछ, (दे २, १८)।

करयर अक [करकरायृ] 'कर-कर' आवाज करना। वह—करयरंते ; (पउम ६४, ३६)।

करह पुं [करभ] ऊन्ट-विशेष ; (सिंह)।

करलि)स्त्री [कदलि, ली] १ पताका ; २ हरिण की करली)एक जाति, ३ हाथी का एक आभरण ; (दे १, २२० ; कुमा)।

करव पुंन [दे. करक] जल-पात्र, "पाडिग्गहाउ मोत्तूण पाउं पुव्विल्लं" (सुपा २१४ ; ६३१)।

करवंदी स्त्री [करमन्दी] वृक्ष-विशेष, एक जात का पेड़ ; (दे ८, ३५)।

करवणिआ स्त्री [करपत्रिका] जल-पात्र-विशेष ; (श्रा १२)।

करवाल पुं [करवाल] खड्ग, तलवार ; (पाअ ; सुपा ६०)।

करविया स्त्री [दे. करिकिका] पल-पात्र विशेष ; (सुपा ८८८)।

करवीर पुं [करवीर] वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ ; (गउड)।

करसी [दे] देखो कडसी ; (दे २, १७४)।

करह पुं [करभ] १ ऊँट, उष्ट्र ; (पउम ६६, ४४ ; पाअ ; कुमा ; सुपा ८२७)। २ सुगंधी द्रव्य-विशेष ; (गउड ६६८)।

करहंच न [करहञ्च] छंद-विशेष ; (पिंग)।

करहाड पुं [करहाट] वृक्ष-विशेष, करहार, सिरा कन्द, मैनफल ; (गउड)।

करहाडय पुं [करहाटक] १ ऊख देखो। २ देश-विशेष ; "करहाडविसए वल्लरयसंनिवेसम्मि" (स २१३)।

करही देखो करभी। २ इस नाम का एक छन्द (पिंग)। °रह वि [°रोह] ऊँट-सवार, ऊष्ट्री पर सवारी करने वाला ; (महा)।

करहणी स्त्री [दे] शाल्मली-वृक्ष, सेमल का पेड़ ; (दे २, १८)।

करहल्ल पुं [करहल्ल] स्वल्प-स्थान एक राजा ; (ती ३०)।

कराल वि [कराल] १ उत्कट, क्रौंच ; (भवि ४)। २ दन्तुरित, जिसका दाँत लम्बा और बाहर निकला हो वह ; (गउड)। ३ भयानक, भयंकर ; (कप्पू)। ४ फाड़ने वाला ; ५ विकसित ; (से १०, ४१)। ६ व्यवहित ; (से ११, ६८)। ७ वि. इस नाम का विंध्याचल का राजा ; (धर्म १)।

कराल सक [करालय्] १ फाड़ना, छिन्न करना। २ विकसित करना। करालेइ ; (से १०, ४१)।

करालिअ वि [करालित] १ दन्तुरित, लम्बा और बहिर्निर्गत दाँत वाला ; (से १२, १०)। २ व्यवहित किया हुआ, अन्तराल वाला बनाया हुआ ; (से ११, ६८)। ३ भयंकर बनाया हुआ ; (कप्पू)।

करालो स्त्री [दे] उत्कल, दाँत युद्ध करने का काष्ठ ; (दे २, १२)।

करावण न [कारण] करवाना, बनवाना, निर्माण ; (सुपा ३३१ ; धर्म ८ टी)।

करावित्र वि [कारित] करवा हुआ ; (स ५६४ ; महा)।

करि पुं [करिन्] हाथी, हस्ती ; (पाअ ; प्राप्र १६८)। °धरणट्ठाण न [°धरणस्थान] हाथी को बाँधने का ठौर—कच्छः (पाअ)। °नाह पुं [°नाथ] १ ऐरावण, इन्द्र का हाथी ; २ उत्तम हस्ती ; (सुपा १०६)। °बंधण न [°बन्धन] हाथी पकड़ने का गर्त ; (पाअ)। °मयर पुं [°मकर] जल-हस्ती ; (पाअ)।

करिअ } देखो कर=कृ।
करिअव्व }

करिआ स्त्री [दे] मदिरा पीसने का पात्र ; (दे २, १८)।

करिएव्वउ } (अप) देखो कायव्व ; (हे ४, ४३८ ;
करिएव्वउं } कुमा ; वि २१४)।

करिंत देखो कर=कृ।

करिणिया } स्त्री [करिणी] हस्तिनी, हथिनी, (महा ;
करिणी } पउम ८०, ५३ ; सुपा ४)।

करिण पुं [करिन्] हाथी, हस्ती ; "रे दुट्ठ करिणाहम ! कुलाय ! मुंचंतदुवइगहदोस" (उप ६ टी)।

करित्ता }
कारत्तार्ण } देखो कर=कृ।
करिदूण }

करिमरी [दे] देखो करमरी ; (गा ६४ ; ६६)।

करिल्ल न [दे] १ वंशाङ्कुर, बाँस का कोंपड़, रेंतोली भूमि में उत्पन्न होने वाला वृक्ष-विशेष, जिसे ऊँट खाते हैं, (दे १, १०)। २ करेला, तरकारी-विशेष; "थाणु-पुग्गिाइट्ठउप्पलाइसंभियकरिल्लसंभई" (विसे २६३)। ३ अंकुर, कन्दल; (अनु)। ४ पु. करीर-वृक्ष, करील; (षड्)। ५ वि. वंशाङ्कुर के समान; "हाहा ते चेव करिल्लपियमाबाहुसयणउल्ललिय" (गउड)।

करिस देखो कड्ढ=कृष्। करिसइ, (हे ४, १८७)। वकृ—करिसंत, (सुर १, २३०)। संकृ—करिसित्ता, (पि ५८२)।

करिस पु [कर्ष] १ आकर्षण, खींचाव। २ विलेखन, रेखा-करण। ३ मान-विशेष, पल का चौथा हिस्सा, (जी १)।

करिस देखो करीस; (हे १, १०१, पाम)।

करिसग वि [कर्षक] खेती करने वाला, हलवाहा; (उत्त १; आचा)

करिसण न [कर्षण] १ खींचाव, आकर्षण। २ खेती करना; ३ हलि, खेती, (पण्ह १, १)।

करिसय देखो करिसग, (सुपा २, २१०; सुर २, ७०)।

करिसावण पुंन [कार्षापण] सिक्का विशेष, (विसे १०६; अणु)।

करिसिद (णो) वि [कर्षित] १ आकर्षित। २ खाया हुआ, खत्री किया हुआ, (हेका ३३१)।

करिसिय वि [कृशित] दुर्बल किया हुआ; (सुर २, ३)।

करीर पु [करीर] वृक्ष विशेष, करीर, करील, (उप ७१८ टी, श्रा १६, प्रभु ६१)।

करीस पु [करीष] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कंडा, गोइठा; (हे १, १०१)।

करुण देखो कलुण, (स्वप्न ६१; सुपा ३१६); "उल्लव्व करुणभत्तं दरिसणमत्तं च साधुवग्ग" (गउड)।

करुणा स्त्री [करुणा] दया, एक के दुःख को दूर करने की इच्छा, (गउड, हुमा)।

करुणाविय वि [करुणायित] जिस पर दया की गई हो (गउड)।

करुणिअ वि [करुणिन्] करुणा करने वाला, दयालु; (मल)।

करेडु पु [दे] कुक्कुट, मुरगिट, मुरट; (दे
करेणु पु [करेणु] १ हस्ती, हाथी; २ हथि
"एसो करेणू" (हे २, ११६)। ३ स्त्री. हथिनी,
(हे २, ११६; णाया १, १; सुर ८, १३६)। [दत्ता] मथुरा चक्रवर्ती की एक स्त्री; (उत्त
°सेणा स्त्री [°सेना] देखो पूर्वोक्त अर्थ, (उत्त
करेणुआ स्त्री [करेणु] हस्तिनी, हथिनी; (प

करेमाण } देखो कर=कृ।
करेअव्व }

करेवाहिय वि [करवाधित] राज-कर से पीड़ित, हैरान, (औप)।

करोड पु [दे] १ नारिकेर, नरियर; २ कड़, ३ इक्षु, बेल; (दे २, ५४)।

करोडग पु [दे] पात्र-विशेष, कटोरा; (निचू १)।

करोडिय पु [करोटिक] कापालिक, भिक्षु-वि
करोडिया } स्त्री [करोटिका, °टी] १ कुंडा, बड़ी
करोडी } एक पात्र, कांस्य-पात्र विशेष; (अनु,
११; पाम)। २ स्थगिका, पानदान; (णाया १
टी—पत्र ४१)। ३ मिट्टी का एक जात का पात्र, (दं
४ कपाल, भिक्षा-पात्र, (णाया १, ८)। ५ एक
एक उपकरण, (दे २, १८)।

करोडी स्त्री [दे] एक प्रकार की चींटी, क्षुद्र-जन्तु विशे
(द २, ३)।

कल्ल सक [कलय्] १ संख्या करना। २ आवाज क
३ जानना। ४ पहिचानना। ५ सम्बन्ध करना। क
(हे ४, २६६, षड्)। कलयति, (सिरे २०१६)।
भवि—कल्लइस्सं, (पि ५३३)। कर्म—कलिज्जइ
२०१६)। वकृ—कल्लयंत, (सुपा ४)। कवकृ—कलि
(सुपा ६४)। संकृ—कलिऊण, कलिअ, (आ
भवि १८२)। हे—कल्लणिज्ज, कलणीअ, (ठा
११२; पि ६१)।

कल्ल वि [कल्य] १ मधुर, मनोहर; (पाम)। २
अव्यक्त मधुर शब्द; (णाया १, १)। ३ आलाप, ग
धर; (पउ १६)। ४ कर्म, कोष, डाढ़, (ठा
१३०)। ५ धान्य-विशेष, गोल चना, मटर, (ठा
३)। °कंडी स्त्री [°कण्डी] कोठिला, धान
(दे १, १०; कुप्र)। °मंडुल वि [°मण्डल]

से मधुर; (पउम)। °अंठ वि [°कण्ठ] कोकिल, कोयल; (दुआ)। °अंडी देखो °कण्डी; (सुर ४, ४८)। °हंस पुं [°हंस] एक पक्षी, राज-हंस, (कप्प; गउड)।

कलंक पुं [कलङ्क] १ दाग, दोष; (प्रासू ६४)। २ लाञ्छन, चिन्ह; (दुआ; गउड)।

कलंक सक [कलङ्कय्] कलंकित करना। कलंकइ; (भवि)। कृ—कलंकियव्व; (सुपा ४४८; ६८१)।

कलंक पुं [दे] १ बाँस, वंश; (दे २, ८)। २ बाँस की बनाई हुई बाड़; (गाया १, १८)।

कलंकण न [कलङ्कन] कलंकित करना; (पव ८)।

कलंकल वि [कलङ्कल] भयङ्कर, भयुग; (औप; संक्षि)।

कलंकवई स्त्री [दे] रुपि, बाट, कोट आदि से परिवेष्टित स्थान-परिधि; (दे १, २४)।

कलंकिअ वि [कलङ्कित] कलंकित, दागी; (हे ४, ४३८)।

कलंकिल्ल वि [कलङ्किल्] कलंक वाला, दागी; (कस; वि ६६६)।

कलंद पुं [कलन्द] १ कुत्ता, कुत्ता, पंख-पात्र; (उवा)। २ जाति से आर्य एक प्रकार के मनुष्य; (ठा ६—पत्र ३६८)।

कलंब पुं [कदम्ब] १ वृक्ष-विशेष, नीप, कदम का झाड़; (हे १, ३०; २२२; गा ३७; कप्प)। °चीर न [°चीर] वस्त्र-विशेष; (विपा १, ६—पत्र ६६)। °चीरिया स्त्री [°चीरिका] तृण-विशेष, जिसका अग्र भाग अति तीक्ष्ण होता है; (जीव ३)। °चालुया स्त्री [°चालुका] १ कदम्ब के फूल के आकार वाली बूटी; २ नरक की नदी; "कलंबचालुयाए दहदुग्गंधाए अइकक्खडे" (उत्त १६)।

कलंबु स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, नालिका; (दे २, ३)।

कलंबुअ न [कदम्बक] कदम्ब-वृक्ष का फूल; "घाग-हयकलंबुअं वि समुच्चलियसेयबहलं" (कप्प)।

कलंबुआ [दे] देखो कलंबु; (पण्ण १; पत्र ४)।

कलंबुआ स्त्री [कदम्बुका] १ कदम्ब फूल के समान गोल-पीतक; २ एक गाँव का नाम, जहाँ पर भगवान् महावीर को कटपूतना ने सताया था; (राज)।

कलकल पुं [कलकल] १ कोलाहल, कलकलारव; (श्रा १४)। २ अव्यक्त शब्द, स्पष्ट आवाज; (भग २, ३३; राय)। ३ वृक्ष आदि से निर्गत जल; (विपा १, ६)।

कलकल अक [कलकलाय्] 'कल-कल' आवाज करना। वह—कलकलंत, कलकलिंत, कलकलेंत, कलकलमाण; (पण्ह १, १; ३; औप)।

कलकलिअ न [कलकलित] कोलाहल करना; (दे १, ३६)।

कलक्ख देखो कडक्ख=कटाक्ष; (गा ७०२)।

कलचुलि पुं [करचुलि] १ अन्त्यज-विशेष; २ इस नाम का एक अन्त्यज-वंश; (निचू)।

कलण देखो करण; "नंतुवि कलणेसु हेसु सुहयकरणी" (मन्नु ८२)।

कलण न [कलन] १ शब्द, आवाज; २ संख्यान, गिनती; (विसे २०२८)। ३ धारण करना; (सुपा २६)। ४ जानना; (सुपा १८)। ५ प्राप्ति, ग्रहण; "दुर्ग वा सव्वकडाकलणं सयावासमुल्लसं" (श्रा १६)।

कलणा स्त्री [कलना] १ कृषि, करण; "दुलं कंदप्पदमं गिहुयरकलणाकंदलिल्लं कुसीलं" (कप्र)। २ धारण करना, लगाना; "मालकंदे सिरिखंडंकलणया" (कप्र)।

कलणिज्ज देखो कल=कलय्।

कलत्त न [कलत्र] स्त्री, भार्या; (प्रासू ७६)।

कलधोय देखो कलहोय; (औप)।

कलभ पुंन्नी [कलभ] १ हाथी का बच्चा; (गाया १, १)। २ बच्चा, बालक; "उक्कसमु भरवतेनछउनदंता-बहासनूहुभं" (हे १, ७)।

कलभिआ स्त्री [कलभिका] हाथी का स्त्री-बच्चा; (गाया १, १—पत्र ६३)।

कलम पुं [दे. कलम] १ चोर, तस्कर; (दे २, १०; पाम; भवि)। २ एक प्रकार का उत्तम चावल; (उवा; ठ २; पाम)।

कलमल पुं [कलमल] १ पेट का मंड; (ठा ३, ३)। २ वि, दुर्गन्धि, दुर्गन्ध वाला; (पव ८३३)।

कलय देखो कालय; (हे १, ६०)।

कलय पुं [दे] १ अर्जुन वृक्ष; २ सोनार, सुवर्णकार; (दे २, ५४)।

कल्लय पु [कल्लाद] सोनार, सुवर्णकार, (पट्)।
कल्लयंदि वि [दे] १ प्रसिद्ध, विख्यात, २ स्त्री वृद्ध-विशेष, पाइरी, पाइल, (दे २, ५८)।
कल्लयज्जल न [दे] आफ्टर-शेव, हाट पर लगाया जाता लेप-विशेष, (भवि)।
कल्लयल देखो कलकल, (दे २, २२०, पाअ, गा ५३५)।
कल्लयलिर वि [कलकलायितृ] कलकल करने वाला, (वज्जा ६६)।
कल्लरुद्दाणी स्त्री [कलरुद्राणी] इस नाम का एक छन्द, (पिंग)।
कल्लल न [कलल] १ वीर्य और शोणित का समुदाय, "पाइज्जति रुहंता सुतक्कसुक्कसमिभ कलल" (पउम ११८, ८)। "वसकललमेभमोणिय—" (पउम ३६, ५६)। २ गर्भ-वेष्टन चर्म; ३ गर्भ के अवयव रूप रस-विकार; (गउड)। ४ कादा, कीचड़, कर्दम, (गउड)।
कल्लालिय वि [कललित] कर्दमित, कीच वाला किया हुआ, "अणंगागरुकलहलिअलियंकसरीलालकललियहारा" (गउड)।
कल्लविंक पु [कलविङ्क] पक्षि-विशेष, चटक, गौरिया पक्षी, (पाअ, गउड)।
कल्लसू स्त्री [दे] तुम्बी-पात्र, (दे २, १२, षट्)।
कल्लस पु [कलश] १ कलश, घड़ा, (उवा, णाया १, १)। २ स्कन्धक छन्द का एक भेद, छन्द विशेष, (पिंग)।
कल्लसिया स्त्री [कलशिका] १ छोटा घड़ा; (अणु)। २ वाद्य-विशेष, (भवि १)।
कल्लह पु [कलह] कलेश, झगड़ा, (उत्त, औप)। कल्लह देखो कलहम, (उत्त, पउम ७८, २८)।
कल्लह न [दे] तलवार की म्यान; (दे २, ६, पाअ)।
कल्लह अक [कलहाय्] झगड़ा करना, लड़ाई करना। वकृ—कल्लहंत, कल्लहमाण; (पउम २८, ४; सुपा ११; ३३३, ६४६)।
कल्लहण न [कलहन] झगड़ा करना, (उत्त)।
कल्लहाअ देखो कलह=कलहाय्। कल्लहाअदि (शौ), (नाट)। वकृ—कल्लहाअंत; (गा ६०)।
कल्लहाअअ वि [कलहायित] कलह करना, झगड़ालोर, कलहकारक)।
कल्लहि वि [कलहिन्] झगड़ालोर, (दे ६, ६४)।
कल्लहोय न [कलधौत] १ सुवर्ण, सोना, (मद्य)। २ चाँदी, रजत, (गउड; पव्व १, ४; पाअ)।
कल्ला स्त्री [कला] १ अंश, भाग, मात्रा, (२ समय का सूक्ष्म भाग; (विसे २०२८)। का सोलहवाँ हिस्सा; (प्रामू ६६)। ४ ज्ञान विज्ञान; (कप्प, गय, प्रामू ११२)। पुरुष के मुख्य बहत्तर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौ हैं, "बावत्तरी कला" (अणु); "चउसट्ठिकलापंडिया" (पुरिमा' (प्रामू १२६)। "पुरुष-कला ये हैं,—१ लिपि-ज्ञान। २ गणित। ३ चित्र-कला। ४ नाट्य-कला। ५ गान, गा ६ वाद्य बजाना। ७ स्वर-गत (षड्ज, ऋषभ वगैरे स्व का ज्ञान)। ८ पुष्कर-गत (मृदंग, मुरजादि विशेष वा का ज्ञान)। ९ समताल (संगीत के ताल का ज्ञान)। १० द्यूत कला। ११ जनवाद (लोगों के साथ आलाप-संलाप करने की विधि)। १२ पाँसे का खेल। १३ अक्षर (चौपाट खेलने की रीति)। १४ गीघ्र-कवित्व। १५ दक-मृत्तिका (पृथक्करण-विद्या)। १६ पाक-कला। १७ पान-विधि (जलपान के गुण-दोष का ज्ञान)। १८ वस्त्र-विधि (वस्त्र के सजावट की रीति)। १९ विलेपन-विधि २० शयन-विधि। २१ आर्या (छन्द-विशेष) बनाने की रीति। २२ पहेलिका (विनोद के लिए पहेलिया-बूझाव्य पद्य)। २३ मागधिका (छन्द-विशेष)। २४ गाथा (छन्द विशेष)। २५ गीति (छन्द-विशेष)। २६ श्लोक (अनुष्टुप् छन्द)। २७ हिरण्य युक्ति (चाँदी के आभूषण को यथास्थान योजना)। २८ सुवर्ण युक्ति । २९ चूर्ण-युक्ति (सुगन्धि पदार्थ बनाने की रीति)। ३० आभरण-विधि (आभूषणों का सजावट)। ३१ तरुणी-परिकर्म (स्त्री का सुन्दर बनाने की रीति)। ३२ स्त्री-लक्षण (स्त्री के शुभाशुभ चिह्नों का परिज्ञान)। ३३ पुरुष-लक्षण। ३४ अश्व लक्षण। ३५ गज-लक्षण। ३६ गो लक्षण। ३७ कुक्कुट लक्षण। ३८ छत्र-लक्षण। ३९ दण्ड-लक्षण। ४० असि-लक्षण। ४१ मणि-लक्षण (रत्न परीक्षा)। ४२ काकणि लक्षण (रत्न विशेष की परीक्षा)। ४३ वास्तुविद्या (गृह बनाने और सजाने की रीति)। ४४ स्कन्धावार मान (सैन्य-परिमाण)। ४५ नगर मान। ४६ चार (गृह-चार का परिज्ञान)। ४७ प्रतिचार (ग्रहों के वक्र-गमन वगैरे का ज्ञान)। ४८ प्रतिचार-ज्ञान)।

मल्ल-युद्ध। ५२ शकट-युद्ध। ५३ मुद्ग (मल्ल युद्ध)। ५४ मुद्गरि-युद्ध (मुद्गरादि शस्त्र से युद्ध)। ५५ यष्टि-युद्ध। ५६ मुष्टि-युद्ध। ५७ बाहु-युद्ध। ५८ लता-युद्ध। ५९ इषु-शास्त्र (विद्याल-सूचक शास्त्र)। ६० स्वर-गत (संगीत-विद्या शास्त्र)। ६१ पत्रच्छेद्य। ६२ कटच्छेद्य। ६३ प्रतर-याक (चाँदी बनाने की रीति)। ६४ सुवर्ण-याक। ६५ सूत्रक्रीड़ा (एकही सूत के अनेक प्रकार का दिखाना)। ६६ वस्त्र क्रीड़ा। ६७ नालिका खेल (द्यूत-विशेष)। ६८ पत्र-च्छेद्य (अनेक पत्तों में अमुक पत्र का छेदन, शस्त्र-प्रयोग)। ६९ कट-च्छेद्य (कट की तरह क्रम से छेद करने का ज्ञान)। ७० सजीव (मरी हुई धातु को फिर जिन्दह बनाना)। ७१ निर्जीव (धातु-मारण, रसायन)। ७२ शकुन-रुत (शकुन-ज्ञान)। (उत्त २ टी; सम ७२)। °गुरु पुं [°गुरु] कलाचार्य, विद्याध्यापक, शिक्षक; (सुर १३)॥ °चरिय पुं [°चार्य] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (सण्हा १, १)। °वई स्त्री [°वती] १ कला वाली स्त्री। २ एक पत्निका स्त्री; (उत्त ३३६; पटि)। °संवण्ण न [°सवर्ण] सन्ध्य-विशेष। (उत्त १०)।

कलाइआ स्त्री [कलाविका] प्रकोष्ठ; कोनी से पंजे पर्यन्तका हाथका भाग; (पाअ)।

कलाय पुं [कलाद] सुनार, सुवर्णकार, (पाअ १, २, हास्य १, ८)।

कलाय पुं [कलाय] धान्य-विशेष, मोठ, मटर; (उत्त ३, १; अनु १)।

कलाव पुं [कलाप] १ समूह, समुदाय; (हे १, २३१)॥ २ मयूर-पिच्छ; (सुर ४८)। ३ मणि, मुक्ता, जिनसे हार बनाये जाते हैं; (हे २, १६)। ४ वस्त्र का अञ्चल, (कौमु)।

कलावग न [कलापक] १ धान्य-विशेषों की एक-कक्षता। २ क्रीत का एक प्रकार; (पव २, १)।

कलावि पुंस्त्री [कलापिन्] मयूर, मोर, (उत्त ३०८ टी)।

कलि पुं [कलि] १ कलह, झगड़ा, (सुपा; प्रासू ६१)। २ द्यूत-विशेष, कलि-द्यूत; (उत्त ८३३)। ३ पर्वत-विशेष; (मे ६४)। ४ प्रथम मेरु, (जिन १४)। ५ एक, संख्या; (ठा १, १, ३; भग १८, ८)। ६ द्यूत पुराण; "द्यूत कलि" (पाअ)। °कील, °कोल पुं [°कील] द्यूत-क्रीड़ा-विशेष, (भग १८, ८, उत्त ८, ३)। °कोलुज्झ पुं [°कीलयुग्म] युग्म-राशि-विशेष, (भग ३८, १)। °कलिओय पुं [°कलयोज युग्म] युग्म-राशि-विशेष; (भग ३८, १)। °ओयकडजुम्म पुं [°ओजकृतयुग्म] युग्म-राशि-विशेष, (भग ३८, १)। °ओयकलिओय पुं [°ओजकल्योज] युग्म-राशि विशेष; (भग ३८, १)। °ओयदावरजुम्म पुं [°ओजद्वापरयुग्म] युग्म-राशि विशेष; (भग ३८, १)। °कुंड न [°कुण्ड] तीर्थ-विशेष; (ती १४)। °जुग न [°युग] कलि-युग; (ती २१)।

कलि पुं [दे] शत्रु, दुश्मन; (दे २, २)॥

कलिअ वि [कलित] १ युक्त, सहित; (पव १, २)। २ प्राप्त, मुलंबित; ३ ज्ञात, विदित; (दे २, ४६; पाअ)।

कलिअ देखो कल=कलय्।

कलिअ पुं [दे] १ नकुल, नेवला; २ वि. गर्वित, गर्व-युक्त; (दे २, ४६)।

कलिआ स्त्री [दे] सखी, सहेली; (दे २, ४६)।

कलिआ स्त्री [कलिका] अविकसित पुष्प; (पाअ; गा ४९२)।

कलिंग पुं [कलिङ्ग] १ देश-विशेष, यह देश उड़ीसा से दक्षिण की ओर गोदावरी के मुहाने पर है; (पव्व ६८, ६९, ओघ ३० भा; प्रासू ६०)। २ कलिंग देश का राजा; (विपा)।

देखो किलिंच, (गा ७२०)।

कलिंचु पुं [कलिञ्चु] वंश, बाँस, (जिन १७)।

कलिंज न [दे] छोटी टहनी, (दे २, ११)।

कलिंब [कलिम्ब] १ धान्य का पका-सिंका; "कलिंबे वलयाणी" (गउड २)। २ सूखी लकड़ी; (भग ८, ३)।

कलिंब न [कलिम्ब] वस्त्र का एक प्रकार; एक प्रकार का वर्ण-युक्त वस्त्र, (पाअ १, १; औप)।

कलिंब न [दे] वस्त्र, वस्त्र, (दे २, ३)।

कलिंब वि [कलिम्ब] सड़ा, खट्टा, दुर्गंधि, (पाअ)।

कलुअ वि [कलुष] १ दोष, दुष्ट-अध्यवसाय, दुष्ट-भाव, (ठा १, २, १४; प्रासू १२१; सुर २, २३६)। २ अनिष्ट-सूचक प्रतिभा का होना जो एक दोष है, (अनु)।

कलुआ देखो करुआ; (पाअ)।

कलुस वि [कलुष] १ अनिष्ट, अनिष्टकर; "कलिकलुसे" (विसे १, १; पाअ)। २ अ-साफ, गंदा, मैला; (गा ११३; पाअ)।

कलुसीकय वि [कलुषीकृत] मलिन किया हुआ ; (उप)।
कलेर १ [दे] १ कंकाल, अस्थि-पञ्जर, २ वि. कराल, भयंकर, (१ १, ११)।
कलेवर न [कलेवर] शरीर, देह, (आउ ४८, पिंग)।
कलेसुय न [कलेसुक] पुष्प-विशेष, (सूअ २, २)।
कल्ल न [कल्य] १ दिन, (भग ५, १, १ ८, ६)। २ शब्द, आवाज, (सुर ३, १८१)। ३ आलस्य, निरोगता, "कल्ल विसल्ल" (विपा १, ३, २)। ४ प्रभात, सुबह। ५ वि. नीरोग, रोग-रहित, (ठा ३, ३ ; ६ ८, ६)। ६ वि. दक्ष, चतुर, (२ ८, ६)।
कल्लाणग १ [कल्याणक] भोजन, प्रातर्भोजन, जल पान, (स्वप्न ६०, भग)।
कल्लाणिअ वि [दे] १ निर्मल, आदिम, २ विख्यातिप्राप्त हुआ, (१ १, १८)।
कल्लाणी स्त्री [दे] रात्रि, दिन, (२ १, १)।
कल्लाणीभूअ [कल्याणीभूत] १ प्रतिदिन, हर रोज, (विपा १, १ ; सुपा १, १८)। २ प्रतिदिन, हर रोज, (ठा, प्रज्ञा)।
कल्लाल पुं [कल्लाल] गुड़, मदिरा, क्षेम, "गुणाकल्लालेण मत्तकल्लालाणं" (उप ६०० , महा, विपा १, ६)। २ विक्रय, बेचना, (विपा १, ६)। ३ जिस मकान में गुड़ या मद्य-शराब का विक्रय, बेचना, दुकान आदि किया जाता है, (ठा, प्रज्ञा)। ४ शराब, दारू, (ठा)। ५ एक विमान, (देवेन्द्र ८)। ६ एक निरय, (देवेन्द्र ११)। ७ एक देव-विमान (देवेन्द्र ११)। ८ एक देव-विमान, (देवेन्द्र ११)। ९ एक देव-विमान, (देवेन्द्र ११)। १० पुण्य, शुभ कर्म, (पंच ३)। ११ वि. दक्ष, चतुर, (पंच ३)।
कल्लालघर न [कल्लालगृह] मद्य विक्रय, (श्रा)।
कल्लालिअ वि [कल्यवर्तिन्] कल्याणकारक, (स्वप्न)।
कल्लालिआ [कल्लालिका] १ कल्याणकारक, (स्वप्न)।
कल्लाल पुं [कल्यपाल] कलाल, दारू बेचने वाला (अणु ; भाव ६)।
कल्लिं अ [कल्ये] कल दिन, कल को ; (गा १०१)।
कल्लुग पुं [कल्लुक] द्वीन्द्रिय जीव विशेष, कीट की एक जाति, (जीव २)।
कल्लुरिया [दे] देखो कुल्लरिया, (राज)।
कल्लेउय पुन [दे] कलेवा, प्रातराश, (ओघ ४६४ टी)।
कल्लोडय पुं [दे] दमनीय बैल, साँड़, (आचा १, ४, १)।
कल्लोडिआ [दे] दासी कल्लोडी, (नाट)।
कल्लोल पुं [कल्लोल] तरङ्ग, ऊर्मि ; (१२७)।
कल्लोल वि [दे कल्लोल] शत्रु, दुश्मन, (दे २,
कल्लोलिणी स्त्री [कल्लोलिनी] नदी, (कप्प)।
कल्लार न [कह्लार] सफेद कमल, (पण्ण १, ५६)।
कल्लिं देखो कल्लिं, (गा ८०१)।
कल्होड पुं [दे] कलार, कलवार, (दे १, ६)।
कल्होडी स्त्री [दे] कलारी, कलवारी, (दे १, ६)।
कव अक [कु] आवाज करना, शब्द करना। कवइ ; ८, १३३)।
कवइय वि [कवयित] करने वाला, करनेवाला, (ठा ९०, ९१, औप)।
कवंध देखो कमंध, (पाअ १, १, महा, गउड)।
कवडिआ स्त्री [कपर्दिका] कौड़ी, कपर्दिका, (स्वप्न)।
कवडिअ वि [कपर्दिन्] पंडित, केशवाला किया हुआ, (१, १२८)।
कवड न [कपट] माया, छद्म, धोखा, (पाअ, सुर १२१)।
कवडि देखो कवड्डि, "ता मणह 'कवडिअन्त कवडि कुप्पस त्त" (सुपा ३८१)।
कवड्डु पुं [कपर्दिन्] कौड़ी, कपर्दिका, (१ १, ११०, भग ११)।
कवड्डुग पुं [कपर्दिन्] १ वस्त्र विशेष, (सुपा ३११)। २ आभरण, जिन, (सुपा)।
कवड्डुया स्त्री [कपर्दिका] कौड़ी, कपर्दिका, (सुपा ३८६)।
कवय वि [विद्] पंडित ; (स्वप्न ५०, ८, सुपा

कवय पुं [कवच] वर्म, कवच ; (निर १, २ ; पउम २४, ३३ ; पाअ)।
कवय न [दे] अन्नादि-विशेष, भुनिअन्न ; (ठा २, ३)।
कवयरी स्त्री [कवरी] केश-पाश, चन्दिअन्न . (गुप्त : देसी १०८)।
कवल सक [कवलय्] ग्रसना, हड़प करना . खाना, (गउड)। अक —कवलिज्जन्त . (गउड)। कवह — कवलिज्जन्त . (सुर १०)। संकृ —कवलिऊण, (गउड)।
कवल पुं [कवल] ग्रास, प्रास; (पव ४, प्रौप)।
कवलण न [कवलन] ग्रसन, भक्षण ; (कप्प १७० ; सुर ४०४)।
कवलिअ वि [कवलित] ग्रसित, भक्षित ; (पउम सुर २, १४८ , सुर १२१; ३१८)।
कवलिआ स्त्री [दे] ग्रास का एक प्रकारण; (आचा ८)।
कवलिआ स्त्री [दे] पक्व-विशेष, मुद्ग वगैरह पकाने का भाजन, कवल्ली) कड़ाह . कण्ड "पक्वमिश्र व जिसे कवलिआल कवल्लिमूआ " ; संघ १२० ; विपा १, ३)।
उकवा) पुं [कपाट] किवाड़, किवाड़ी, (गउड ; प्रौप ; कवाल) का १२०)।
कवाड न [कपाल] १ नरेन्द्र, सिर की हड्डी ; "कवड-लिअकवाडो" (सुर १४३)। २ पक्व-विशेष, मिठा-पात्र ; आचा; हे १, २३६)।
कवास पुं [दे] एक प्रकार का वृक्ष, अर्जुनवृक्ष ; (दे २, ४)।
कवि देखो कइ=कवि ; (सुर १, २४६)।
कवि पुं [कवि] १ कविता करने वाला ; (सुर १, १८ ; सुपा ४१२ ; उप ६४८)। २ शुक्र, ग्रह-विशेष ; (सुपा ४१२)। °त्त न [°त्व] कवित्व, कवित्व; (सुर १, ४२)। °वर्ग देखो कइ=कवि।
कविअ न [कविक] लगाम ; (पाअ ; सुर २१३)।
कविंजल देखो कविंजल ; (आचा २)।
°पिक्कच्छु) देखो कइकच्छु ; (पव २, ६ ; ओघ १४ ;
°विगच्छु) हे १, २६ ; जीव ३)।
कविट्ठ देखो कात्थ ; (पव १ ; हे ३, ४५)।
कविड न [दे] घर का पीछला आँगन ; (दे २, ६)।
कवित्थ देखो कात्थ ; (ठा १०३१ टी)।
कविपच्छु देखो कइकच्छु ; (ण २३६)।
कविल पुं [दे] धन, द्रव्य ; (दे २, ६ , पाअ)।
कविल पु [कपिल] १ वर्ण-विशेष, भूरा रंग, लालदार वर्ण; (ठा ३)। २ पक्षि-विशेष ; (पण्ण १, ४)। ३ सांख्य मत का प्रवर्तक मुनि-विशेष ; (आचा ; प्रौप)। ४ एक आचार्य वादि ; (ठा ८)। ५ इस नामका एक केवली ; (सुपा १, १६)। ६ गरुड का पुत्र-विशेष ; (कुप्र १०)। ७ भूरा रंग का, मटमैला रंग का ; (पण्ण १, ७० ; हे ४, ३२)॥ °त्ती स्त्री [°त्री] एक आर्याजी का नाम; (आचू)।
कविलडोला स्त्री [दे. कपिलडोला] क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको कुमारगी में "सनमाड़ी" कहते हैं; (जी १८)।
कविलास देखो कइलास ; "सेतुपि हेवज्ज कपिलासंकपिलिम्मिका कृता" (ठा)।
कविलिअ वि [कपिलित] कपिल रंग वाला किया हुआ; भूरे रंग से रंगित ; (गउड)।
कविल्लुअ न [दे] पक्व-विशेष, कड़ाही; (सूत्र १,)।
कविस पुं [कपिश] १ वर्ण-विशेष,का लालदार रंग, बादामी, हल्का-पीत-मिश्रित वर्ण ; २ वि. कपिश वर्ण वाला ; (पाअ ; गउड)।
कविस न [दे] वस्त्र, नया वस्त्र ; (दे २, २)।
कविसा स्त्री [दे] अर्जुनवृक्ष, एक प्रकार का वृक्ष; (दे २, ४)।
कविसायण पुं [कपिशायन] मद्य-विशेष, गुड का दारू; (कप्प १७—पव ३३२)।
कविसीसग) पुं [कपिशीर्षक] प्रासाद का अग्र-भाग ;
कविसीसय) (प्रौप ; राय १, १ ; राज)।
कविल्लुय देखो कविल्लुय ; (ठा ८—पव ४१७)॥
कवोय पुं [कपोत] १ कबूतर, पक्षि ; (गउड ; विपा १, ७)। २ म्लेच्छ-देश विशेष ; (पउम ३७, ७)। ३ न. वृक्षगुण, कोटरा ; (सम १६)।
कवोल पु [कपोल] गाल, गण्ड ; (सुर ३, १२० ; हे ४, ३६६)।
कव्व न [काव्य] १ कविता, कवित्व; (ठा ४, ४ ; प्रभा १)। २ पुं. ग्रह-विशेष, शुक्र ; (सुर ३, ५३)। ३ वि. कवि-संबंधि, स्तवनीय ; (हे २, ७८)। °त्त वि [°वत्] काव्य वाला; (हे २, १४८)।
कव्व न [काव्य] मांस ; (सुर ३, ५३)।
कव्वड देखो कव्वड ; (गउड)।

कव्वाड पु [दे] दक्षिण हस्त, दाहिना हाथ, (दे २, १०)।
कव्वाय पु [कव्वाद] १ राक्षस, पिशाच ; (पउम ७, १०, दे २, १५, स २११)। २ वि. कच्चा मांस खाने वाला, (पउम २२, ३५), ३ मांस खाने वाला ; (पाअ)।
कव्वाल न [दे] १ कर्म-स्थान, कार्यालय ; २ गृह, घर, (दे २, ५१)।
कस सक [कष्] १ डाह मारना। २ कसना, घिसना। ३ मलिन करना। कसति, (पणण १३)। कसंत—कसिज्जमाण, (सुपा ६१५)।
कस पु [कश] चर्म-यष्टि, चाबुक ; (पणह १, ३, णाया १, १, स २८७)।
कस पु [कष] १ कसौटी, कष-क्रिया, " तावच्छेयकसेहि सुद्ध पासह सुवन्नमुत्तन्नं " (सुपा ३८६)। २ कसौटी का पत्थर ; (पाअ)। ३ वि हिंसक, मार डालने वाला, डाह मारने वाला, (ठा ४, १)। ४ पुं. संसार, भव, जगत् ; (उत्त ४)। ५ न कर्म, कर्म-पुद्गल ; " कम्म कस भवो वा कसं " (विसे ११२८)। °ट्ट, °ट्ट पु [°पट्ट] कसौटी का पत्थर, (अणु ; गा ६१६; सुर १, १४)। °हि पुंस्त्री [°हि] सर्प की एक जाति ; (पणण १)।
कसई स्त्री [दे] फल-विशेष, अगस्यवाची वनस्पति का फल, (दे २, ६)।
कसट (पै) देखो कट्ठ=कष्ट, (हे ४, ३१८, प्राप्र)।
कसट्ट पु [दे] कतार, कूड़ा ; (आचा ११७)।
कसण पुं [कृष्ण] १ वर्ण-विशेष, २ वि कृष्ण वर्ण वाला, काला, श्याम, (हे १, ७५ ; ११० ; कुमा)। °पक्ख पु [°पक्ष] कृष्ण पक्ष, वदि पखवारा, (पाअ)। °सार पु [°सार] १ हरिण-विशेष ; २ हरिण की एक जाति, (नाट—मृच्छ ३)।
कसण वि [कृत्स्न] सकल, सब, सर्व, (हे २, ७५)।
कसणसिअ पु [दे] कामदेव, कामुदेव का बड़ा भाई, (दे २, ३३)।
कसणसिर वि [कृष्णित] काला किया हुआ ; (पाअ)।
कसणसीस देखो कसीस। (पउम ६८, ६६)।
कसर पु [दे] अधम देव, (दे २, ४, गा ७६५)। ~ वसु मंतेमाणस्सहवे, तहि हु सीयति का(? क)सरत्त" (पुप्फ ६३)।

कसर पुन [दे. कसर] " कच्चुभ(? क)रागभिभूआ तणू " (जं २—पत्र १६६)।
कसरक्क पुन [दे. कसरत्क] समय जो शब्द होता है वह, " सव्व (हे ४, ४२३, कुमा)। २ कुट्ट " ते गिरिसिहरा ते पंलुप्पल्लवा ते.क लब्भति कस्स ! मलिलनियाइ कसं
कसव्व न [दे] बाण, भाण ; २ ३ प्रचुर, व्याप्त ; (दे २, ५३)। " दहिकसव्वालविथरोहखणडोलवम्भनिउर दे २, ५३)। ४ कर्कश, परुष ; " कलुसपयालासकलकसव्वाओ " (गउड)।
कसा स्त्री [कशा, कसा] चर्म-यष्टि, (विपा १, ६, सुपा ३४६)।
कसा देखो कासा, (षड्)।
कसाइ वि [कषायिन्] १ कषाय रंग वाला मान-माया लोभ वाला, (पणण १८, आचा)
कसाइअ वि [कषायित] ऊपर देखो : (आ ३६ ; आचा)।
कसाय सक [कषाय्] ताड़न करना, मारना। कसाइत्था, (आचा)।
कसाय पु [कषाय] १ क्रोध, मान, माया और (विसे १२१६, दं ३)। २ रस-विशेष, (ठा १)। ३ वर्ण-विशेष, लाल पीला रङ्ग, (२२)। ४ काथ, काढ़ा, ५ वि कषैला स्वाद ६ कषाय रंग वाला, ७ सुगन्धी, सुगन्धित, (हे ११०)।
कसार [दे] देखो कंसार, (भवि)।
कसिअ न [कशिका] प्रतोद, चाबुक, " अवा म महरदीए कसिअं आउत " (प्रयौ १०८)।
कसिआ स्त्री ऊपर देखो, (सुर १२, १७०)।
कसिआ स्त्री [दे] फल-विशेष, अगस्यवाची नामक वनस्पति का फल, (दे २, ६)।
कसिट (पै) देखो कट्ठ=कृष्ट, (षड्)।
कसिण देखो कसण=कृष्ण, कृत्स्न, (हे १, १३, कुमा, पाअ, दे ६, १३,

सेरु) पुं [कशेरु, क] जलीय कन्द-विशेष; (गउड; सेरुय) पण्ण १)।

सेल पुं [दे] पङ्क, कर्दम, कादा; (दे २, २)।

सेलय न [दे] प्राकार, दरवाजा, मेंड; (दे २, १२)।

सेलय पुं [काशेय] १ वंश-विशेष; "कस्सवसेलयसेणो" (सिरि ६६)। २ रूपि-विशेष; (अभि २६)।

सेव सक [सेवय्] करना, बजाना। वकृ; (हे ४, २)। कर्म—सेव्वइ, सेविज्जइ, सेविज्जमाण; (स्वप्न ७२; सुर ११, १४८)। वकृ—सेवंत, सेविज्जंत, सेविज्जमाण; (गउड; सुर १, ६४; सण १६८; सुर १४, ६४)। संकृ—सेविउं, सेविऊण; (महा; कप्र)। हे—सेवियव्व, सेवियव्व, सेवेयव्व, सेवणीय; (सुपा १, १, १; सुर ४, १६१; सुपा ३१६; (पिंड २, ४; सुर १२, १७०)।

सेव सक [सेवय्] सेवा करना, उपासना। वकृ; (पउ)।

सेव पुं [सेफ] कफ, शरीरस्थ धातु-विशेष, बलगम; (कुमा)।

सेव देसी कई; (हे १, २६ ; कुमा ; पउ)। 'सेवहि देखो सेव-सेवंपि; (गउड ; उप ७२८ टी)। 'वि देखो सेव-पि; (प्राकृ ११४; १४१)।

सेवहा अ [सायंया] विशेष और आश्चर्य अर्थ को बतलाने वाला अव्यय; (से ७, ३४)।

सेवं अ [सेयम्] १ ऐसे, इस तरह? (स्वप्न ४१ ; कुमा)। २ क्यों, किस लिए? (हे १, २६ ; पउ ; महा)। 'सेवंपि अ [सेयमपि] किसी तरह; (सण १६६)। 'सेवा स्त्री [सेवा] शास्त्रोक्त का उल्लंघन करने वाली कथा, विरुद्ध, (आचा)। वि, वी अ [विध्] किसी तरह, किसी प्रकार से, (श्रा १२, उप ६३० टी)। पि अ [अपि] किसी तरह, (गउड)।

सेवाल पुं [शैवाल] जलीय वनस्पति, सुर्खी का रंग (हे १, २ पाअ ११० कप्र)।

सेवालिय अ [शैवालिक] सुर्खी के रंग का बना हुआ (पिंड ४६८)।

सेवालिया) स्त्री [शैवालिका] १ जलीय वनस्पति विशेष, शैवाल (पण्ण १) २ जीव-विशेष (पण्ण १७, पव ६) ३ वनस्पति-विशेष (सूत्र, आचा, प्रज्ञा ११, उत्त ३६)।

सेवाली स्त्री [शैवाली] १ जलीय वनस्पति विशेष (पण्ण १) २ जीव-विशेष (पण्ण १७)।

सेवि वि [सेविन्] सेवा करने वाला, सेवक; (सण)।

सेविय वि [सेवित] सेवा किया हुआ; (सुपा ६६ ; ४६७)।

सेविया स्त्री [सेविका] दासी, नौकरानी; (सुपा ६६)।

सेस वि [शेष] बाकी, अवशिष्ट; (हे १, ३३ ; कुमा)।

सेसव पुं [शैशव] बाल्यावस्था, बचपन; (हे १, २६०)।

सेसवय पुं [शैशवक] बाल्यावस्था, बचपन; (हे १, २६०)।

सेसवि वि [शेषवत्] बाकी वाला; (हे १, ३३)।

सेसिय वि [शेषित] बाकी रखा हुआ; (हे १, ३३)।

सेह पुं [शेख] १ मुसलमान धर्म-गुरु, मुसलमान साधु; (पाअ ३०१) २ मुसलमान, यवन; (पाअ ३०१)।

सेह पुं [शैक्ष] १ नूतन दीक्षित साधु, नया साधु; (ओघ ३ भा; पंचा १२, ३) २ अज्ञानी, मूर्ख; (सूत्र १, १, ३)।

सेहंत वि [शोभमान] शोभता, शोभायमान; (सुर ३, ६)।

सेहंतिय वि [शोभमानक] शोभता, शोभायमान; (सुर ३, ६)।

सेहर न [शेखर] १ मस्तक, सिर; (सुर ३, ६) २ मुकुट, शिरोभूषण; (सुर ३, ६)।

सेहरय न [शेखरक] १ मस्तक, सिर; (सुर ३, ६) २ मुकुट, शिरोभूषण; (सुर ३, ६)।

सेहा स्त्री [शोभा] शोभा, कान्ति; (सुर ३, ६)।

सेहाविय वि [शोभित] शोभता, शोभायमान; (सुर ३, ६)।

सेहिय वि [शोभित] शोभता, शोभायमान; (सुर ३, ६)।

सेहिर वि [शेखरिन्] १ मस्तक पर धारण करने वाला; (सुर ३, ६) २ मुकुट धारण करने वाला; (सुर ३, ६)।

सेहिरय वि [शेखरिक] १ मस्तक पर धारण करने वाला; (सुर ३, ६) २ मुकुट धारण करने वाला; (सुर ३, ६)।

सेहिरिया स्त्री [शेखरिका] १ मस्तक पर धारण करने वाला; (सुर ३, ६) २ मुकुट धारण करने वाला; (सुर ३, ६)।

सेहिल्ल पुं [दे] कर्ण, स्वर; (प्रति १२)।

सेहा स्त्री [कथा] कथा, वार्ता, हकीकत; (सुर २, २१०; सुपा ; स्वप्न ८३)।

सेहाणग) न [कथानक] १ कथा, वार्ता; (श्रा १२ ; सेहाणय) उप पृ ११६)। २ प्रसंग, प्रस्ताव; "कयं से नामं जाइविसिट्ठं सेहाणयविसेसेण" (स १३३ ; ६८८)। ३ प्रयोजन, कार्य; "सेहाणयविसेसेण समागमो पाटलाहह" (स ६८६)।

सेहाव सक [कथय्] कहलाना, बुलवाना। सेहावेइ; (महा)।

सेहावण पुं [कार्षापण] सिक्का-विशेष; (हे २, ७१ ; ६३ ; कुमा)।

सेहाविय वि [कथित] कहलाया हुआ; (सुपा ६६ ; ४६७)।

सेहि) अ [क्व, कुत्र] कहाँ, किस स्थान में? (उवा; सेहिआ) मग; नाट ; कुमा ; उवा)।

सेहि देखो सेट्ठि; (पाअ ; गउड)।

सेहिल्ल वि [कथयितृ] कहने वाला, सूचक; (सण १६)।

सेहिय वि [कथित] कथित, उक्त; (उवा ; नाट)।

सेहिया स्त्री [कथिका] कथा, कहानी; (उप १०३१ टी)।

सेहु (अप) अ [कुतः] कहाँ से, ? (पउ)।

सेहेड वि [दे] नष्ट, दुःखित; (हे २, १३)।

सेहेत्तु देखो सेहित्तु; (उप ४, २)।

सैइअ वि [सांयिक] सायंकालीन; सायंकालवाली, (आचा १४, प्रभा)।

सैइआ) स्त्री [सांयिकी] १ सायंकालवाली क्रिया, सायंक्रिया (ओघ ३ भा, ४ पिंड १०, ओघ ४) २ सायंकाल, (सूत्र, आचा, प्रभा ११, उत्त २)।

सैंदी स्त्री [सांयन्दी] [illegible] विशेष [illegible]

सैंधव पुं [दे] [illegible] ([illegible])।

काई स्त्री [काकी] कौए की मादा ; (विपा १, ३)।
काउ स्त्री [कापोती] लेश्या-विशेष, आत्मा का एक प्रकार का परिणाम , (भग ; आचा)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] आत्म-परिणाम विशेष , (सम ; ठा ३, १)। °लेस्स वि [°लेश्य] कापोत लेश्या वाला , (पण्ण १७ ; भग)। °लेस्सा देखो °लेसा , (पण्ण १७)।
काउं देखो कर=कृ।
काउंबर पु [काकोदुम्बर] नीचे देखो ; (राज)।
काउंबरी स्त्री [काकोदुम्बरी] ओषधि-विशेष , "तिंबरु-डंबरकाउंबरिबोरि—" (उप १०३१ टी ; पण्ण १)।
काउकाम वि [कर्तुंकाम] करने को चाहने वाला, (ओघ ६१७)।
काउड्डावण न [कायोड्डायन] उचाटन, दूर-स्थित दूसरे के शरीर का आकर्षण करना ; (ठाया १, १४)।
काउदर पु [काकोदर] साँप की एक जाति , (पण्ह १, १)।
काउमण वि [कर्तुंमनस्] करने की चाह वाला; (उत्त ; उप पृ ७० ; सं ६०)।
काउरिस पु [कापुरुष] १ खराब आदमी, नीच पुरुष ; २ कायर, डरपोक पुरुष ; (गउड ; सुर ८, १६० , सुपा १६१)।
काउल्ल पु [दे] बक, बगुला ; (दे २, ६)।
काउस्सग्ग)पु [कायोत्सर्ग] १ शरीर पर के ममत्व
काउस्सग्गो) का त्याग, (उत्त २६)। २ कायिक क्रिया का त्याग , ३ ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता , (पडि)।
काऊ देखो काउ , (ठा १ ; वव्व ४ , १३)।
काऊण) देखो कर=कृ।
काऊणं)
काओदर देखो काउदर ; (स्वप्न ६८)।
काओली स्त्री [काकोली] कन्द-विशेष, वनस्पति-विशेष, (पण्ण १)।
काओवगय पु [कायोपग] मरणार्थी आत्मा , (सूत्र २, ६)।
काओसग्ग देखो काउस्सग्ग , (पंचा)।
काक पु [काक] १ कौआ, वायस , (अनु ३)। २ असुर-विशेष, असुरनिकाय के देव विशेष, (ठा २,३ —पत्र ८८)। °जंघा स्त्री [°जङ्घा] वनस्पति विशेष, चकमनी, घूघची, (अनु ३)। देखो काग, काय=काक।
काकदग पु [काकन्दक] एक जैन मुनि ; (कप्प)।
काकंदिय पु [काकन्दिक] एक जैन मुनि ; (कप्प)।
काकंदिया स्त्री [काकन्दिका] जैन मुनियों की एक शाखा ; (कप्प)।
काकंदी देखो कायंदी ; (णाया १, ६ , ठा ५, १)।
काकणि देखो कागणि ; (विपा १, २)।
काकलि देखो कागलि ; (ठा १०—पत्र ४७१)।
काग देखो काक ; (दे १, १०६ ; प्राप्र ६०)। °तालसंजीवगनाय पु [°तालसंजीवकन्याय] काकतालीय न्याय ; (उप १४२ टी)। °तालिज्ज, °तालीय वि [°तालीय] जैसे कौए का अनिर्दिष्ट आगमन और ताड़फल का अकस्मात् गिरना होता है ऐसा अनिर्दिष्ट संबंध, अकस्मात् किसी कार्य का होना ; (आचा ; ठ ५, १६)। °थल न [°स्थल] देश-विशेष, (दे २, २७)। °पाल पु [°पाल] वृक्ष-विशेष , (राज)। °पिंडी स्त्री [°पिण्डी] अन्न-पिंड , (आचा २, १, ६)। देखो काय=काक।
कागंदी देखो कायंदी , (अनु २)।
कागणि स्त्री [दे] १ राज्य ; " अणोगनिरिसो पुनो अम्ह कायर कागणि " (विसे ८६२)। २ मांस का छोटा टुकड़ा ; (ओघ)।
कागणी देखो कागिणी ; (आ २७ , ठा ७)।
कागल पु [काकल] ग्रीवास्थ उन्नत प्रदेश , (अनु)।
कागलि) स्त्री [काकलि, °ली] १ सूक्ष्म घोष-ध्वनि,
कागली) स्वर-विशेष , (सुपा ६६ , उप पृ ३५)। २ देवी-विशेष, भगवान् अभिनन्दन की शासन-देवी, (पव २७)।
कागिणी स्त्री [काकिणी] १ कौड़ी, कपर्दिका, (उत्त ७, ३ , उव , आचा २८ टी)। २ बीस कौड़ी के मूल्य का एक सिक्का , (उप ६४६)। ३ रत्न-विशेष (सम २१, उप ६८६ टी)।
कागी स्त्री [काकी] १ कौए की मादा । २ विद्या-विशेष , (विसे २४६३)।
कागोणंद पु [काकोनन्द] इस नाम की एक नगरी " सिरिकागंदीए विक्खाया मणियलम्मि ते गया (पउम ३४, ४१)।
काण वि [काण] काना, एकाक्ष, (सुपा ६०)।
काण वि [दे] १ संछिन्न, काना आचा २, १, ८ २ चुराया हुआ। °कय पु [कय] चुराई हुई वस्तु से संबंधित , (सुपा ३४३ , ३४६)।

[illegible]) स्त्री [ङी] देखो अगला के समान, कहावत ; "[illegible]" (द ३, २८ , आचा) । "[illegible]" (द ३, २८ , आचा) । "[illegible]" (द ३, २८ , आचा) । "[illegible]" (द ३, २८ , आचा) ।

[illegible] न [कालत्त] १ कर, जंगल (पाअ ; १ [illegible]) २ [illegible], [illegible] (प्रभु , औप) ।

[illegible] पु [ङे] [illegible] [illegible] (द ३, २८) ।

[illegible] स्त्री [ङी] [illegible] (द ३, २८) ।

[illegible] स्त्री [ङी] [illegible] (द ३, २८) ।

[illegible] स्त्री [illegible] (द ३, २८) ।

[illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] (द ३, २८) ।

[illegible] स्त्री [illegible] (द ३, २८) ।

[illegible] स्त्री [illegible] (द ३, २८) ।

[illegible] न [illegible] [illegible]

कारावित्र वि [कारित] करवाया हुआ, बनवाया हुआ, (विसे १०१६, सुर ३, २४; ग १६३)।

कारि वि [कारिन्] कर्ता, करने वाला; "पायच्छा कारिणो बालिगतमारोविया जेण" (उत्त ५६७ टी)। "एवमण्ण-स्स कारिणी अहयं" (सुर ८, ५६)।

कारिम वि [दे] कृत्रिम, बनावटी, नकली, (ठ १, २७; गा ४५७, पड्; उप ७२८ टी, ग ११६, प्रास २०)।

कारिय वि [कारित] करवाया हुआ, बनवाया हुआ, (पड्ड २, ६)।

कारियल्लई स्त्री [दे] कल्ली विशेष, करेला का गाछ, (पण्ण १—पत्र ३३)।

कारिया स्त्री [कारिका] करने वाली, कर्त्री, (उत्त)।

कारिल्लिटी स्त्री [दे] कल्ली-विशेष, करेला का गाछ, (सूक्त ६१)।

कारीस पु [कारीष] गोइठा का अग्नि, कंडा की आग, (उत्त १२)।

कारु पु [कारु] कारीगर, शिल्पी; (पाअ, प्राप्र ८०)।

कारुइज्ज वि [कारुकीय] कारीगर से सम्बन्ध रखने वाला, (पण्ह १, २)।

कारुणिय वि [कारुणिक] दयालु, कृपालु, (ठ ४, २; सण)।

कारुण्ण } न [कारुण्य] दया, करुणा, (महा, उप
कारुन्न } ७२८ टी)।

कारेमाण } देखो कार = कारय्।
कारेयव्व }

कारेल्लय न [दे] करैला, तरकारी विशेष, (अनु ६)।

कारोडिय पु [कारोटिक] १ कापालिक, भिक्षुक-विशेष, २ ताम्बूल-वाहक, स्थगीधर, (सौर)।

काल न [दे] तमिस्र, अन्धकार, (दे २, १६; पड्)।

काल पु [काल] १ समय, वक्त; (जी ४६)। २ मृत्यु, मरण, (विसे २०६७, प्राप्र ११२)। ३ प्रस्ताव, प्रसङ्ग, अवसर, (विसे २०६७)। ४ विलम्ब, देरी; (स्वप्न ६१)। ५ उमर, वय; (स्वप्न ४२)। ६ ग्रह-विशेष, महाभिष्टायक देव-विशेष, (ठा २, ३—पत्र ७८)। ८ ज्योति-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग, (गण १६)। ९ सातवीं नरक-पृथ्वी का एक नरकावास, (ठा ५, ३—पत्र ३४१, सम ८८)। १० नरक के जीवों को दुःख देने वाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति; (सम १८)। ११ इन्द्र का एक लोकपाल, (ठा ४, १—पत्र १२ प्रभञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल, (ठा ४, १—पत्र १८८)। १३ इन्द्र विशेष, पिशाचेन्द्र का दिशा का इन्द्र, (ठा २, ३—पत्र ८४)। १४ लवण समुद्र के पातालकलशों का अधिष्ठाता देव, (ठा २—पत्र २२९)। १५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)। १६ इस नाम का एक तापसी, (निर १, १)। १७ अभाव, (कुमा ४)। १८ [illegible] दशा की एक जाति, (पण्ण १)। १९ [illegible] (ठा ६—पत्र ४४६)। २० वर्ण-विशेष, [illegible] (पण्ण २)। २१ न० देव विमान-विशेष; (सम २२ निरयावली सूत्र का एक अध्ययन, (निर १, २३ काली-देवी का सिंहासन, (भगवा १)। वि कृष्ण, काला रंग का, (सुर २, ६)। °कुमार [°कुमार] १ समय की अपेक्षा करने वाला, (सूत्र २ अवसर का ज्ञाता, (उत्त ६)। °कप्प पु [°कल्प] १ समय-सम्बन्धी शास्त्रीय विधान, २ उसका प्रतिपादक शास्त्र (पंचभा)। °काल पु [°काल] मृत्यु-समय (विसे २०६६)। °कूड न [°कूट] उत्कट [illegible] विशेष, (सुपा २३८)। °क्खेव पु [°क्षेप] विलम्ब देरी, (से १३, ४२)। °गय वि [°गत] मृत्युप्राप्त, मृत, (भगवा १, १, महा)। °चक्क न [°चक्र] १ बीस सागरोपम परिमित समय, (सूरि)। २ [illegible] भयंकर शस्त्र," जादे एवमति न मक्खइ ताहे कालचक्कं विउव्वइ" (आवम)। °चूला स्त्री [°चूला] अन्त समय बगैरः का अधिक समय, (निर १)। °ण्णु वि [°ज्ञ] अवसर का जानकार; (उप १०६ टी, प्रास)। °दंड वि [°दष्ट] मौत से मरा हुआ, (उप ७२८ टी)। °देव पु [°देव] देव-विशेष (राय)। °धम्म [°धर्म] मृत्यु, मरण, (भगवा १, १, विपा १, २) °न्न, °न्नु देखो °ण्णु, (पि २७६, सुपा १०६)। °परियाय पु [°पर्याय] मृत्यु-समय, (आचा)। °परिहीन न [°परिहीन] विलम्ब, देरी, (राय)। °पाल पु [°पाल] देव-विशेष, धरणेन्द्र का एक लोकपाल, (ठा ४, १)। °पास पु [°पाश] ज्योति-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग, (गण १८)। °पिट्ठ, °पुट्ठ पुन [°पृष्ठ] १ धनुष; २ कर्ण का धनुष। २ काला हरिण, ४ कौञ्च पक्षी; (पाअ)।

कलि पुं [पुरुष] जो पुंवेद कर्म का अनुभव करता है; (सूम १, ९, १, २ टी)। प्पभ पुं [प्रभ] इस नाम का एक पर्वत; (ठा १०)। कोडय पुंस्त्री [कपोटक] कबूतर, कोरा। स्त्री—डिया; (पंचा)। मास पुं [मास] मृत्यु-समय; कालमास कालं किच्चा " (विपा १, १; २, ७ ३, ६)। मासिणी स्त्री [मासिनी] स्त्री, मूर्खिणी, (ठा ५, १)। मिग पुं [मृग] एक मृग की एक जाति, (जं २)। रत्ति स्त्री [रात्रि] प्रलय रात्रि, प्रलय-काल; (गउड)। वड्डिसंग न [वर्तक] देव-विमान विशेष, वार्ता देवों का विमान; (राया २)। वाइ वि [वादिन्] जगत को काल-कृत मानने वाला, समस्त कोई सब कुछ मानने वाला; (संति)। वासि पुं [वर्षिन्] अवश्य पर बरसने वाला मेघ; (ठा ४, ३—पत्र २६०)। संदीव पुं [संदीप] असुर-विशेष, विद्युत्सुर; (आक)। समय पुं [समय] समय, काल; (सुख ८)। समा स्त्री [समा] समय-विशेष, आरक-रूप समय; (जी ३)। सार पुं [सार] मृग की एक जाति, काला मृग; "एक्को । कालसारो ण देइ गंतुं पयाहिणवलेणो " (गा २५)। सोअरिय पुं [सौकरिक] स्वनाम-ख्यात एक कसाई; आक)। सुरु, सुरुं, सुरु न [सुरु] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में लाया जाता है; राया १, १; कप्प; ओप; गउड)। सेय, सेस [सेस] लोहे की एक जाति; (हे १, २६६; प्रला; प्राप्र; से ८, ६१)। सोवेसियपुत्त पु [कालैशिकपुत्र] इस नाम का एक जैन मुनि जो भगवान महावीर की परम्परा में थे, (भग)।

कलिंजर पु [कालञ्जर] १ देश-विशेष, (विपा)। २ पर्वत-विशेष, (आवम)। देखो कालिंजर।

कलिक्खर सक [दे] १ निर्भर्त्सना करना, फटकारना। २ निर्वासित करना, बाहर निकाल देना। " तो तेण संचिय भावइ, सिरं पुणो कालक्खरिज्जइ एसो, ता मा संसेव मणो सव्वमुइ, मइ जीवलोए इमं न होइ त्ति जाइ दव्वंपि, हे कालो तच्चेसो, पुणविउत्तस्स विहुरस्स विवसम " उवमि सुपा ३६६, ४००)।

कालक्खर पुन [कालाक्षर] १ अन्य वर्ण, अन्य लिपि; २ वि अन्य लिपिज्ञ " कालक्खरसूचिवियं वम्मिय वे सिक्खीअमच्चिअ " (गा ८७८)।

कालक्खरिअ वि [दे] १ दयालु, निर्भर्त्सित; २ निर्वासित, " तत्थेव न विणइ दुल्लहो अणाहकुलडाए संगमे, तओ कालक्खरिओ विडप्पा " (सुपा ३८८); "तो विडप्पा कावेसं कालक्खरिओ " (सुपा ४८८)।

कालक्खरिअ वि [कालाक्षरिक] अक्षर-ज्ञान वाला, शिक्षित; "भो तुम्हाहं सव्वाणं मज्झे अहं एक्को कालक्खरिओ " (कप्प)।

कालग पुं [कालक] १ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य; (पुक्ख कालय १४६; २४०)। २ अमर, भमरा; (गउड)। देखो काल; (ठवा; ठा २८६ टी)।

कालय वि [दे] धूर्त, ठग; (दे २, २८)।

कालवट्ट न [दे. कालपृष्ठ] धनुष; (दे २, २८)।

कालवेसिय पुं [कालवैशिक] एक वेश्या-पुत्र; (उत्त २)।

काला स्त्री [काला] १ श्याम-वर्ण वाली; २ तिरस्कार करने वाली; (कुमा)। ३ एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक पटरानी; (ठा ५, १)। ४ वेश्या-विशेष; (उत्त २)।

कालि पुं [कालिन्] विहार का एक पर्वत; (ती १३)।

कालिआ स्त्री [दे] १ शरीर, देह; २ कालान्तर; ३ मेघ, वारिद; (दे २, ४८)। ४ मेघ-समूह, बादल; (पाम)।

कालिआ स्त्री [कालिका] १ देवी-विशेष; (सुपा १८२)। २ एक प्रकार का तोफानी पवन; (ठा ४२८ टी; राया १, ६)।

कालिंग पुं [कालिङ्ग] १ देश-विशेष; " पत्ता कालिंगेसमो " (भवि ११)। २ वि. कलिङ्ग देश में उत्पन्न, (पउम ६६, ५१)।

कालिंगी स्त्री [कालिङ्गी] वल्ली-विशेष, तरबूज का गाछ, (पण्ण १)।

कालिज्जण न [दे] वर्षाकाल, श्याम समय का पर्व, (दे २, २६)।

कालिज्जणी स्त्री [दे] ऊख दण्डा, (दे २, २६)।

कालिंजर पु [कालिञ्जर] १ देश-विशेष, (विपा)। २ पर्वत-विशेष, (उत्त ३६)। ३ न उद्यान-विशेष; (पउम ४८, ८)। ४ तीर्थ-स्थान-विशेष, (ती ६)।

काहल वि [दे] १ मृदु, कोमल ; २ ठग, धूर्त, (दे १, ६८)।

काहल वि [कातर] कातर, डरपोक, अ-धीर, (हे १, २१४ ; २६४)।

काहल पुन [काहल] १ वाद्य-विशेष, (सुर ३, ६६, मौज, आदि)। २ अव्यक्त आवाज, (पाद २, २)।

काहला स्त्री [काहला] वाद्य-विशेष, मदा-डक्का, (विक ८७)।

काहली स्त्री [दे] तरुणी, युवति, (दे २, २६)।

काहल्ली स्त्री [दे] १ खर्च करने का धान्यादि, २ लवा, जिस पर पूरी वगैर पकाया जाता है, (२, ५६)।

काहार पु [दे] कहार, पानी वगैर ढोने का काम करने वाला नौकर, (दे १, २७, भवि)।

काहावण पु [कार्षापण] सिक्का-विशेष ; (हे १,७१, पण्ह १, २, पड्, प्राप्र)।

काहिय वि [काथिक] कथा-कार, बातें करने वाला, (वृह १)।

काहिल पुं [दे] गोपाल, ग्वाला, स्त्री—ला, (दे २, २८)।

काहिल्लिआ स्त्री [दे] तवा, जिस पर पूरी आदि पकाया जाता है ; (पाअ)।

काहीइदाण न [करिष्यतिदान] प्रत्युपकार की आशा से दिया जाता दान, (ठा १०)।

काहे अ [कदा] कब, किस समय? (हे २, ६६, अंत २४, प्राप्र)।

काहेणु स्त्री [दे] गुञ्जा, लाल रत्ती, (दे २, २१)।

कि देखो किं ; (हे १, २६, पड्)।

किअ सक [कृ] करना, बनाना, "डुकिञ् करणे" (सिद्ध ३३००)। कवकृ—किज्जंत, (सुर १, ६०, ३, १४ ; ६६)।

किअ देखो कय=कृत ; (कप्प ६२६, प्रासू १६, धम्म १४ ; मै ६६, वज्जा ४)।

किअ देखो किय=इदम्, (पड्)।

किअंत वि [कियत्] कितना ; (सण)।

किअंत देखो कयंत, (मन्नु ६६)।

किआडिआ स्त्री [एकाटिका] गला का उन्नत भाग, (प्राम)।

किइ स्त्री [कृति] कृति, क्रिया, शिल्प, (उप) । 'कम्म न ['कर्मन्] १ कर्म, क्रिया, (भग १६, १)। २१)। २ कार्य-करण, (भग १६, १)।

किं अ [किम्] कौन, क्या, क्यों, निन्दा, प्रश्न, अल्पता और आक्षेप को बताने वाला शब्द, (हे १, ६८, ७१, कुमा, विपा १, १ : मिच्छ ११ कुलानि मलीमसो जाउ मलसंपि सिलाहि" (उप "उण अ [पुनः] तब फिर, फिर क्या? (उव)

किंकत्तव्वया देखो किंकायव्वया, (मकर १,१

किंकम्म पु [किंकर्मन्] इस नाम का एक (भंत)।

किंकर पु [किङ्कर] नौकर, चाकर, दास, (सु १२३)। 'मय पु ['मय] १ परमेश्वर, २ अच्युत, विष्णु, (मच्चु १)।

किंकरी स्त्री [किङ्करी] दासी, नौकरानी ;

किंकायव्वया स्त्री [किंकर्तव्यता] क्या क जानना। मूढ वि [मूढ] किंकर्तव्य विमूढ, भौचक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क जाय, (महा)।

किंकिअ वि [दे] सफेद, श्वेत, (दे २, ३१)।

किंकिअजड वि [किंकृत्यजड] हक्काबक्का, ब जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय, (६

किंकिणिआ स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र घण्टिका ११६)।

किंकिणी स्त्री [किङ्किणी] क्षुद्र घण्टा, (कुमा)।

किंगिरिड पु [किङ्किरिट] क्षुद्र कीट विशे जीव की एक जाति, (राज)।

किंच अ [किञ्च] समुच्चय-द्योतक अव्यय, और भी ; (सुर १, ४०, ४१)।

किंचण न [किञ्चन] १ द्रव्य-हाण, थोड़ा, १४६१)। २ अ कुछ, किञ्चित्, (वव २)।

किंचहिय वि [किञ्चिदधिक] कुछ अधिक, ४३०)।

किंचि अ [किञ्चित्] अल्प, ईषत्, थोड़ा (स्वप्न ४७)।

किंचिमत्त वि [किञ्चिन्मात्र] स्वल्प, थोड़ा यत्किञ्चित् ; (सुपा १४३)।

किंपुरुष पुं [किम्पुरुष] मनुष्य-सदृश, मनुष्य का मौजूदा अश्व भाग ; (इ २ ६)।

किंपुरुष न [किम्पुरुष] उत्तरीय-प्रसिद्ध एक स्थित वर्ष ; (सिरि ३३६०)।

किंपुरुष पुं [किंपुरुष] १ पलाश का पेड़, टेसू, ढाक ; (सुर ३ ४६)। २ न. पलाश का फूल : (हे १, २६ ; षड्)।

किंकिंडि पुं [डि] सूर्य, सौर ; (इ २, ३२)।

किंकिंकिंणी स्त्री [किङ्किणिका] नगरी-विशेष ; (से १४, ४१)।

किंकिंकिंणि पुं [किङ्किणि] १ पक्षी विशेष ; (पउम ६, ४५)। २ इस नाम का एक राजा; (पउम ६, १४५; १०, २०)। पुर न [पुर] नगर-विशेष ; (पउम ६, ४५)।

किच्च वि [कृत्य] १ करने योग्य, कर्तव्य, फर्ज ; (सुर ४६५ ; कुमा)। २ वन्दनीय, पूजनीय ; "च विट्ठेहिं न पुरुषो नेव छिच्चाय सिट्ठेहा" (उत्त ३)। ३ पुं. गृहस्थ. (सूम १, १, ४)। ४ न. शास्त्रोक्त अनुष्ठान, क्रिया वगैरः (आचा २, २, २ ; सूम १, १, ४)।

किच्चंत वि [कृत्यमान] १ छिन्न किया जाता, कटा जाता ; २ पीड़ित किया जाता, सताया जाता ; (गउड)।

किच्चण न [दे] प्रजागर, पहरा ; " हुंतिमे छंदेण अम्हाणं किच्चणं च पोसणं " (पिंड १६८—पत्र ७२)।

किच्चा स्त्री [कृत्या] १ काटना, कर्तन ; (उत्त १ ३६६)। २ क्रिया, कर्म, कर्म ; ३ देव वर्ग की मूर्ति का एक भेद ४ जादूगिरी, जादू ; ५ राज-क्रीड़ा, महाभारत का एक, (इ १ २२८)।

किच्चा देखो करअ=कृ।

किच्चि स० [कृति] १ यज्ञ वर्ग का एक ; २ यज्ञों के वर्ग ३ मुहूर्त्त का एक ४ कृत्तिका नक्षत्र ; (इ १, २२, ८ ; पड्)। पाउरण पुं [प्रावरण] नगर का एक ; हर पुं [धर] नगर का एक ; पड्

किच्चिं अ [कियच्चिरम्] कितना समय, कब तक का ; (उत्त ३३८)।

किच्छ न [कृच्छ्र] १ [illegible]

२ वि. कष्ट-साध्य, कष्ट-युक्त, (हे १, १२८)। ३ किवि दु ग म, मुश्किल से; (सुर ८, १४८)।

किज्ज वि [कीय] खरीदने योग्य; "अकिज्जं किज्जमेव वा" (दस ७)।

केज्जंत देखो कि=कृ।

कइअ वि [कृत] किया गया, निर्मित, (पिंग)।

कइट्ट सक [कीर्तय्] १ श्लाघा करना, स्तुति करना। २ वर्णन करना। ३ कहना, बोलना। किट्टइ, किट्टे, (आचा, भग)। वकृ—किट्टमाण, (पि २८६)। संकृ—किट्टइत्ता, किट्टित्ता; (उत्त २६, कप्प)। हेकृ—किट्टित्तए, (कप्प)।

किट्ट सीन [किट्ट] १ धातु का मल, मैल, (उत्त ३३)। २ तैल, घी वगैरः का मैल। स्त्री—ट्टी, (पभा ३३)।

किट्टण देखो कित्तण, (दृष्ट ३)।

किट्टि स्त्री [किट्टि] १ अल्पीकरण-विशेष, विभाग विशेष, "अणुभागोऽणुणभियण किट्टी" (पंच १२, भावम)।

किट्टिय वि [कीर्तित] १ वर्णित, प्रशंसित, (सूम २, ६)। २ प्रतिपादित, कथित, (सूम २, २, टा ७)।

किट्टिया स्त्री [कीटिका] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १, भग ७, २)।

किट्टिस न [किट्टिस] १ सत्तू, सत्तो, तिल आदि का तैल रहित चूर्ण, (अणु)। २ एक प्रकार का मूत, मूता, (अणु, भावम)।

किट्टी देखो किट्ट=किट्ट।

किट्टीकय वि [किट्टीकृत] आपस में मिला हुआ, एक्का कार, जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ, (उप)।

किट्ठ वि [किलष्ट] क्लेश-युक्त, (भग ३, २, जीव ३)।

किट्ठ वि [कृष्ट] जोता हुआ, हल-विदारित, (सुर ११, ६६, भग ३, २)। २ न देव-विमान विशेष, "जे देवा णिच्चच्चं णिरिदामकंटे मन्ते किट्ठं (? ट्ठ) चावेलाणय अरणवडिसग विमाण देवत्ताए उववण्णा" (भग १६)।

किट्टि स्त्री [कृष्टि] १ कर्षण, २ सींचाव, आकर्षण। ३ देव-विमान विशेष, (भग ६)। °कूड न [°कूट] देव-विमान-विशेष, (भग ६)। °घोस न [°घोष] विमान-विशेष, (भग ६)। °जुत्त न [°युक्त] विमान-विशेष, (भग ६)। °ज्झय न [°ध्वज] विशेष, (भग ६)। °णाम न [°नाम] विशेष, (भग ६)। °वण्ण न [°वर्ण] विशेष, (भग ६)। °सिंग न [°शृङ्ग] विशेष, (भग ६)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] विमान, (भग ६)।

किट्ठियावत्त न [कृष्टयावर्त] देव विमान, (भग ६)।

किट्ठुत्तरवडिंसग न [कृष्टोत्तरावतंसक] का एक देव-विमान, देव-भवन, (भग ६)।

किट्टि पु [किरि] सूअर, सअर; (हे १, २६१; षड्भा १, १—पत्र ७४)।

किट्टिकिट्टिया स्त्री [किटिकिटिका] झींगुर की आवाज; (णाया १, १—पत्र ७४)।

किट्टिभ पु [किट्टिभ] रोग-विशेष, एक जाति का कुष्ठ, (तदुल १४, भग ७, ६)।

किट्टिया स्त्री [दे] चिड़की, छोटा द्वार, (ण ६८)।

किट्टु सक [क्रीड्] खेलना, क्रीड़ा करना। वकृ—किट्टंत, (पि ३६७)।

किट्टकर वि [क्रीडाकर] क्रीड़ा-कारक, (औप)।

किट्टा स्त्री [क्रीडा] १ क्रीड़ा, खेल, (विपा १, ७) बाल्यावस्था, (ठा १०—पत्र ५१६)।

किट्टाविया स्त्री [क्रीडिका] क्रीड़न-पुत्री, बालक खेल-कूद कराने वाली दाई, (णाया १, १६—पत्र २११)।

किट्टि वि [दे] १ संभाग के लिए जिसका एकान्त स्थान लाया जाय वह, (वव ३)। २ स्थविर, वृद्ध, (१)।

किट्टिण न [किट्टिन] सन्यासियों का एक पात्र, जो ताँ का बना हुआ होता है; (भग ७, ६)।

किण सक [क्री] खरीदना। किणइ, (हे ४, ६२)। वकृ—"से किणंतं किणावेमाणे हणं वायमाणं" (१)। किणंत, (सुपा ३६६)। प्रयो—किणावेइ; (पि ५८२)। संकृ—किणित्ता, किणिऊण; (पि ५६१)।

किण पु [किण] १ घर्षण-चिह्न, घर्षण की निशान (गउड)। २ मास-मक्षिका, ३ मक्खी घाव, (सुपा ३७० वज्जा ३६)।

किणइय वि [दे] शोभित, विभूषित, (पउम ६२, ३१)।

किणण न [क्रयण] खरीदना, खरीद, क्रय।

किणा देखो किण्ण।

किणिकिण अक [किणिकिणय्] किण किण आवाज करना। कृ—किणिकिणिंत; (औप)।

किणिय वि [क्रीत] किना हुआ, खरीदा हुआ; (सुर ४, ३४)।

किणिय पुं [किणिक] १ मनुष्य की एक जाति, जो दरियां बनाती और बजाती है; ३)। २ स्त्री बनाने का काम करने वाली मनुष्य-जाति; "किणिया उ वत्थकम्मे वयंति" (पंचा)।

किणिय न [किणित] वाद्य-विशेष; (राय)।

किणिया स्त्री [किणिका] छोटा कीड़ा, घुनसी;

"अस्थेवि सहं अहिवइणिसिंचसुपल्लविणिवोणिच्चा।
मंतिसवक्खसमोऽहंवणिग्गहं कासि हिंडंति"
(स १८०)।

किणिस्स अक [शाण्] तीक्ष्ण करना, तेज करना। किणिस्स; (पिंग)।

किणो अ [किमिति] क्यों, किस लिए? (हे २, ३१; हे १, २१६; षड्; स ६७; महा)।

किण्ण वि [कीर्ण] १ उत्कीर्ण, खुदा हुआ; "दंतकिण्णव वट्टदप्पिणं" (सुर ३, ७६)। २ छिन्न, फैला हुआ; (से ६)।

किण्ण पुं [किण्व] १ फल बनाने वाला क्षुद्र-विशेष, जिससे दाल बनता है (सूत्र २; आचा)। २ न. सुरा-बीज, जिससे दारू का बीज, जिस का दारू बनता है; (हेम २)। सुरा स्त्री [सुरा] जिस-पूर्व के फल से बनी हुई मदिरा, (सूत्र २)।

किण्ण वि [दे] अन्यमनस्क, खिन्नमन; (दे ३, ३०)।

किण्णं अ [किंनम्] प्रश्नार्थक अव्यय (उत्त)।

किण्णर देखो किन्नर; (हे १, १७; ३४)।

किण्णा अ [काममू] क्या आप की इच्छा है? अथवा यह अर्थ (हे २, १७४)।

किण्णु अ [किंनु] इस अर्थ का सूचक अव्यय; (हे २, १७४; षड्; स ६७; महा; पि २)।

किण्ण [दे] कान्त, मनोहर; (दे ३, ३०)।

किण्ण [दे] (दे ३, ३०)।

किण्ह देखो कण्ह; (हे १, ३—पव ३४१; कम्म १ १३)।

किण्हय पुं [किनव] यूदड़, कुत्ता; (दे ४, ८)।

किण्ह देखो किट्ट=कीर्तय्। भवि—किण्हिस्सं; (पि)।

संकृ—किण्हइत्ताण; (पव ११६)।

किण्हण न [कीर्त्तन] १ स्तवन, स्तुति; "तह य जिणुत्तमाणं किण्हणं" (अजि ४; मे ११, १३३)। २ कथन, प्रतिपादन; ३ कथन, उक्ति; (विसे ६४० ; गउड; दुआ)।

किण्हवारिअ देखो कत्तवारिअ; (हे ८)।

कित्ति स्त्री [कीर्त्ति] १ यश, कीर्त्ति, सुख्याति; (औप, प्रासू ४३; ७४; ८२)। २ एक विद्या-देवी; (पउम ७, १४१)। ३ केसरि-हद की अधिष्ठात्री देवी; (इक २, ३—पद्म ७२)। ४ हेम-प्रतिमा विशेष; (राजा ३, १ टी—पद्म ४३)। ५ स्तवना, प्रशंसा; (पंच ३)। ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर; (जं ४)। ७ सौधर्म देवलोक की एक देवी; (ठाणं)। ८ पुं. इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पाँचवें बलदेव ने दीक्षा ली थी; (पउम २०, २०१)। °कर वि [कर] १ यशस्कर, ख्याति-कारक; (राज १, १)। २ पुं. भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम; (राज)। °चंद पुं [°चन्द्र] इस नाम का एक राजा, (धर्म)। °धम्म पुं [°धर्म] इस नाम का एक राजा, (धर्म)। °धर पुं [°धर] १ इस नाम का एक राजा; (पंचा)। २ एक जैन मुनि, इसी बलदेव के पुत्र; (पउम २०, २०१)। °पुरिस पुं [°पुरुष] कीर्ति-प्रधान पुरुष, बलदेव वगैरः (इक)। °मइ वि [°मत्] कीर्ति युक्त। °मई स्त्री [°मती] १ एक जैन सध्वी, साध्वी)। २ इक्ष्वाकु वंश की एक राजकन्या; (उत्त १८)। °य वि [°द] कीर्तिकर, यशस्कर और

किलि क [कृलि] धर्म, धर्मार्थ, पुण्य अर्थात् कर...; (ठा ३, ३)। (सूत्र ४९०) (पंचा ११)।

किलिन्न वि [क्लिन्न] भीगा हुआ, आर्द्र (...

किलिब्ब न [कौलिब्ब] (...) (...) (...) (...) (...) (...) (...) (...)

किलिय न [किलित] (...)

किल्ल न [किल्लत] (...)

किल्ल देखो कल्ल ...

२ वि. कष्ट-साध्य, कष्ट-युक्त, (हे १, १२८)। ३ निंदित दुःख से, मुश्किल से। (सुर ८, १४८)।

किच्च वि [कृत्य] सर्जित करना, "अहिरत्तं किच्चमेो का" (दस ७)।

किज्जत देखो किर=कृ।

किट्टिअ वि [कृत] किया गया, निर्मित। (सिरि)।

किट्ट सक [कीर्तय्] १ श्लाघा करना, स्तुति करना। २ वर्णन करना। ३ कहना, बोलना। किट्टइ, किट्टए, (आचा, भग)। वकृ-किट्टमाण, (पि २८२)। संकृ—किट्टइत्ता, किट्टित्ता: (उत्त २६, कप्प)। हेकृ—किट्टित्तए, (कप्प)।

किट्ट सक [किट्ट] १ धातु का मल, मैल, (दा ६३१)। २ रंग विशेष, (जं ६, ६)। ३ तेल, घी वगैरह का मैल। स्त्री—ट्टी, (पभा ३३)।

किट्टण देखो कित्तण, (पुर ३)।

किट्टि स्त्री [किट्टि] १ अन्योरसग-विशेष, सिरस विशेष, "अणुअविद्धोहीए अणुभागगुणविभयणं किट्टी" (पंच १२, भावम)।

किट्टिय वि [कीर्तित] १ वर्णित, प्रशंसित; (सूम २, ६)। २ प्रतिपादित, कथित; (सूम २, २; दा ७)।

किट्टिया स्त्री [कीटिका] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १, भग ७, २)।

किट्टिस न [किट्टिस] १ मली, सरसो, तिल आदि का तैल रहित चूर्ण, (अणु)। २ एक प्रकार का गुल, मूआ, (अणु, भावम)।

किट्टी देखो किट्ट=किट्ट।

किट्टीकय वि [किट्टीकृत] आपस में मिला हुआ, एक्का कार, जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ, (उत्त)।

किट्ठ वि [किष्ट] क्लेश-युक्त, (भग ३, २, जीव ३)।

किट्ठ वि [क्षुष्ट] जीता हुआ, दल-विदलित; (सुर ११, ४६, भग ३, २)। २ न. देव-विमान विशेष, "जे देवा सिरिवच्छं सिरिदामकंडं मल्लं किट्ठं (?ट्ठ) चावणामयं अरणाभिसणं विमाणं देवत्ताए उववण्णा" (सम ३६)।

किट्ठि स्त्री [कृष्टि] १ कर्षण, २ संचित, आकर्षण। ३ देव-विमान विशेष, (सम ६)। °कूड न [°कूट] देव-विमान-विशेष, (सम ६)। °घोस न [°घोष] विमान-विशेष, (सम ६) °जुत्त न [°युक्त] विमान-

किट्ठि (सम ६)। °प्पभ न [°प्रभ] विमान-विशेष, (सम ६)। °वण्ण न [°वर्ण] विमान-विशेष, (सम ६)। °सिंग न [°शृङ्ग] विमान-विशेष, (सम ६)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] विमान-विशेष, (सम ६)।

किट्ठिकायल न [कृष्टकायलं] देखो किट्ठ=कृष्ट (सम ६)।

किट्ठिकायलसंठिय न [कृष्टकायलसंस्थित] देखो किट्ठ=कृष्ट (सम ६)।

किट्ठि पु [किट्टि] धूआं, धुआं, (पि १, २६१)।

किट्ठिकिट्ठिया अ° [किट्टिकिट्टिका] अव्यक्त, (भग १, १ पत्र ३२)।

किट्ठिम पु [किट्टिम] देखो किट्टिम, एक जाति का धातु, (सूम १२ भग ७, ६)।

किट्ठिया स्त्री [दे] छिपकली, छोटा हरा, (दे ३, ६८)।

किट्ठ सक [कीर्ट्] खाना, काटना, भक्षण करना। वकृ-किट्ठंत, (पि ३६७)।

किट्ठकर वि [कीर्टकर] काटने वाला, भक्षक (औप)।

किट्ठा स्त्री [कीर्टा] १ काटा हुआ हिस्सा, (ठा १, १)। २ व्यवस्था, (ठा १०—पत्र ८१०)।

किट्ठाविया स्त्री [कीर्टिका] काट-छांट करने वाली दाई। (आचा २, १६)।

किट्टि वि [दे] १ संभाग के लिए जिसको पहले लाया जाय वह, (दा ३)। २ व्यापार, ६)।

किट्टिण न [किट्टिन] सन्धानिका का एक पत्र, का बना हुआ होना है, (भग ७, ६)।

किण सक [क्री] खरीदना। (महा (हे ४, १)। वकृ—"से किणं किणावेमाणे हणं (आचा २, ६ १)। किणंत, (सुपा ३६२, ५०६ (पि ४८२)। प्रयो किणावइ, (पि ४८२)।

किण पु [किण] १ घर्षण-चिह्न, व्रण, (गउड)। २ मास-ग्रन्थि, ३ सन्धि, (पि ४८२)।

किणइय वि [दे] खरीदा हुआ, विक्रीत (पउम ६, ६)।

किणण न [क्रयण] खरीद, खरीदना, (उप ६ ३ ३)।

किणा देखो किण्णा, (पण्ण १७)।

किलिकिल अक [किलिकिलाय्] किल-किल आवाज करना। वकृ—किलिकिलिंत, (औप)।

किलिय वि [क्रीत] किना हुआ, खरीदा हुआ, (सुपा ३४८)।

किलिय पु [किलिञ्ज] १ बांस की एक जाति, जो (कि उसकी छाल बनती है; ३)। २ उसी जाति के बांस से बनने वाली चटाई-आदि, " किलिञ्ज इत्यादि " (पिंड)।

किलिय न [किलित] बाद किया हुआ; (राज)।

किलिया स्त्री [किलिका] छोटा खोरा, टुकड़ा; " अस्थिनि खंडं अट्ठिकिलिंजं अट्ठकिलिंजियं किलिया अट्ठिकिलिंजियाओच्छाइयाओ अट्ठियाओ छाविं छिंदंति " (ग १८०)।

किलिस सक [क्लिश्] पीड़ना, दुखी करना, सेवा करना। किलिसइ, किलिसए (भवि)।

किलिसि अ [किमिति] क्यों, किस लिए? (हे २ ३१; कुमा; पाअ; सण ३७, ७८)।

किलिसि वि [क्लिष्ट] १ उत्पीड़ित, तंग हुआ; 'दारिद्र-किलिसिय कइवयदिवस' (सुर ४७१)। २ खिन्न, खेद हुआ, दुःखी (उप ६)।

किलिस्स पु [क्लिश्य] १ एक बड़ा वृक्ष-विशेष, जिसके डंठल बहुत हैं (पणण ; आचा)। २ न. वृक्ष-फल, जिसके फल के बीज, जिस का डंठ बहुत है ; (उत्त २)। 'सुरा की [सुरा] जिस-वृक्ष के फल से बनी हुई मदिरा; (पणण)।

किलेण्ण वि [दे] गलमय, गलमल ; (दे २, ३०)।

किलेसं अ [क्लेशम्] प्रयोजन अर्थक अव्यय; (उव)।

किलेसइ देखो किलिस ; (उव ; गउड ; हे ४, २३६)।

किलेसा अ [कथम्] क्यों, कहो कर, कैसे ? "किलेसा तक्का किलेस पत्ता" (सिरि ३, १—पत्र १०६)।

किलेसु अ [किंनु] इस अर्थ के सूचक अव्यय;—१ प्रश्न, २ विकल्प, ३ अनुज्ञा, ४ संभव, ५ वितर्क; ६ खेद, ७ आक्षेप ; (उव)।

किल्लह देखो कल्लह ; (सण ६१ ; सुपा १, १ ; उप ६, ४ ; पाअ १७)।

किल्लह न [दे] १ कपोल, गाल; २ संकेत, इशारा; (दे २, ४६)।

किल्लिअ पु [किलिञ्ज] देखो कल्लह ; (उप ६, ३—पत्र ३६१ ; कुप्र १३)।

किल्लिय पु [किलिय] पुलकर, कुम्भी ; (दे ४, ८)। किल देखो किट्ट=कीर्त्। भवि—किल्लिस्सं ; (पिंड)। °सेह -किलाइत्ताए ; (पव १११)।

किल्लिय न [कीर्तन] १ स्तवन, स्तुति; "तव य जिणुत्तम किल्लिअं" (भवि ४ ; सं ११, १३३)। २ कीर्त्तन, ३ कथन, उक्ति; (सिरि ६४० ; गउड; सुपा ; प्रासा)।

किल्लोरिअ देखो कल्लोरिअ ; (उप ८)।

किल्लि स्त्री [कीर्लि] १ वज्र, कीलक, खुरपनि ; (आचा, प्रभू ४३ ; ७४ ; ८२)। २ एक विद्या-देवी; (पउम ७, १४१)। ३ केवली-भद्र की अधिष्ठात्री देवी; (पउम ७, पत्र ७३)। ४ देव-प्रतिमा विशेष; (गच्छा १, १ दी—पत्र ४३)। ५ स्थान, प्रदेश ; (पंच ३)। ६ मेरुपर्वत का एक शिखर ; (जं ४)। ७ सौधर्म देवलोक की एक देवी ; (ठा)। ८ पुं. इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पांचवें वासुदेव ने दीक्षा ली थी ; (पउम २०, २०५)। °कर वि [कर] १ वज्रधर, वज्रपाणि-इन्द्र ; (पाअ १, १)। २ पुं. भगवान् अरिष्टनेमि के एक पुत्र का नाम ; (गउड)। °चंद पुं [चन्द्र] इस नाम का एक राजा, (धम्म)। °धम्म पुं [धर्म] इस नाम का एक राजा, (संति)। °धर पुं [धर] १ इस नाम का एक गजा, २ एक जैन मुनि, दूसरे वासुदेव के पुत्र; (पउम २०, २०५)। °पुरिस पु [पुरुष] कीर्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव कोटि ; (उप ६)। °मइ वि [मत्] कीर्ति-युक्त। 'मई स्त्री [मती] १ एक जैन साध्वी, (आव)। २ अयोध्या चक्रवर्ती की एक स्त्री ; (उत्त १३)। °वि वि [द्] कीर्ति-कारक ; (औप)।

किल्लि स्त्री [कृलि] चर्म, चमड़ा; "दुद्धे अल्लाय कवल्लिं वे" (कप्प ८१३ ; सं ६४० ; कप्प ८४)।

किल्लिम वि [कृत्रिम] बनावटी, नकली; (सुर २४, १९३)।

किल्लिय वि [कीर्लित] १ उक्त, कथित; "दिट्ठिल्लदिल्लिया" (पउ)। २ प्रशंसित, श्लाघित ; (उप ३, ४)। ३ स्त्रिष्ट, प्रतिपादित ; (पंचा)।

किल्लिय वि [क्रियत्] क्रिया, (गउड)।

किल्लिन्न वि [क्लिन्न] भीगा, गीला ; (हे ४, ३३६)।

किल्ह देखो कल्ह ; (कप्प)।

...कष्ट-साध्य, कष्ट-युक्त, (हे १, ११८)। ३ निंद्य, दुःख से, मुश्किल से ; (सुर ८, १४८)।

किज्ज वि [क्रेय] खरीदने योग्य; " अकिज्ज किज्जमेत्त वा" (दस ७)।

किज्जंत देखो कि=क्रि।

किट्टिअ वि [कृत] किया गया, निर्मित, (पिंग)।

किट्ट सक [कीर्त्तय्] १ श्लाघा करना, स्तुति करना। २ वर्णन करना। ३ कहना, बोलना। किट्टइ, किट्टेइ, (भाषा, भग)। वकृ—किट्टमाण, (पि ३८६)। कृ—किट्टइत्ता, किट्टित्ता; (उत्त २६, कप्प)। हेकृ—किट्टित्तए, (कप्प)।

किट्ट पुंन [किट्ट] १ धातु का मल, मैल, (उत्त ३३२)। २ रंग विशेष, (जं ६, ५)। ३ तेल, घी वगैरह का मैल। स्त्री—ट्टी, (पभा ३३)।

किट्टण देखो कित्तण, (पि ३)।

किट्टी स्त्री [किट्टि] १ अन्योऽन्यगुण-विशेष, विभाग विशेष, ...विशेषः अणुभागगुणविभागेण किट्टी " (पंच १२, ...)।

किट्टिअ वि [कीर्तित] १ वर्णित, प्रशंसित, (सूअ १, ... २ प्रतिपादित, कथित, (सूअ २, २, टी ७)। ...स्त्री [कीर्तिका] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १, ...)।

किट्टिम [किट्टिम] १ सजी, सजाया, मिल आदि का चूर्ण, (अणु)। २ एक प्रकार का सूत, सूता, ...वस्त्र)।

किट्ट=क्विट्ट।

किट्टोकिण्ण [किट्टोत्कीर्ण] आगम में लिखा हुआ, एक ...वर्ण आदि का किट्ट उसमें भिन्न जाता है उस ...ट, (उत्त)।

किट्ठ [कृष्ण] कृष्ण-वर्ण, (भग ३, २, औप ३)। ...] खींचा हुआ, हल-विदारित, (सुर ११, ...)। २ न. देव विमान विशेष, " जे देवा ...ट्ठ मज्झ किट्ठं (? ट) चउत्थाय अर... ...दिवसए उवसग्गा " (सम ३६)। ...कर्ण, २ नीलवर्ण, श्यामवर्ण। ३ देव... ...सम ६)। °कूड न [°कूट] ... (सम ६)। °घास न [°घोष] ... ६) °जुत्त न [°युक्त] विमान... विशेष, (सम ६)। °उत्थय न [°ध्वज] वि... विशेष, (सम ६)। °पभ न [°प्रभ] देव-वि... विशेष, (सम ६)। °वण्ण न [°वर्ण] विमा... विशेष, (सम ६)। °सिंग न [°शृंग] विमान... विमान, (सम ६)। सिट्ठ न [शिष्ट] एक दे... किट्ठियावत्त न [कृष्णावर्त्त] देव विमान विशेष, (सम ६)।

किट्ठुत्तरवडिंसग न [कृष्णोत्तरावतंसक] इस नाम का एक देव-विमान, देव-भवन, (सम ६)।

किडि पु [किरि] सूअर, सुअर ; (हे १, २६१ ; १

किडिकिडिया स्त्री [किटिकिटिका] झींगी ह... आवाज, (णाया १, १—पत्र ७४)।

किडिभ पु [किटिभ] राग विशेष, एक जात का चुड़... (लहुम १६, भग ७, ६)।

किडिया स्त्री [दे] चिटकी, छोटा द्वार ; (... ५८३)।

किड्ड सक [क्रीड्] खेलना, क्रीड़ा करना। वकृ—किड्डंत, (पि ३६७)।

किड्डकर वि [क्रीडाकर] क्रीड़ा-कारक, (औप)।

किड्डा स्त्री [क्रीडा] १ क्रीड़ा, खेल, (विपा १, ७)। २ बाल्यावस्था, (ठा १०—पत्र ५१६)।

किड्डावणिया स्त्री [क्रीडापनिका] क्रीड़न-धात्री, बालक को खेल-कूद कराने वाली दाई, (णाया १, १६ - पत्र २११)।

किड्डि वि [दे] १ संभाग के लिए जिसका एकान्त स्थान में लाया जाय वह, (वव ३)। २ स्थविर, वृद्ध, (वृह १)।

किढिण न [किटिन] सन्यासियों का एक पात्र, जो बाँस का बना हुआ होता है ; (भग ७, ६)।

किण सक [क्री] खरीदना। किणइ, (हे ४, ५२) वकृ—"से किणं हिरण्णमाणे हरणं धारेमाणे" (समः १)। किणंत, (सुपा ३११)। संकृ किणित्ता, (पि ५८३)। प्रयो किणावइ ; (पि ५५१)।

किण पु [किण] १ पर्पटक चिह्न, पर्पटक की निशानी, (गउड)। २ मण-ग्रन्थि, ३ मसा पत्र, (सुपा ३७०, कक्का ३६)।

किणइय वि [दे] खरीदा, विक्रीत, (पउम ६०, ८)।

किणण न [क्रयण] खरीद, खरीद, क्रय, (उप पृ ५८८)।

किणा देखो किण्णा, (प्रश्न, हे ३, ६२)।

किणिकिण अक [किणिकिणाय्] किण किण आवाज करना। वह—किणिकिणिंत, (औप)।

किणिय वि [क्वथित] किया हुआ, सरोहा हुआ . (सुपा ४३४)।

किणिय पुं [किणिक] १ मनुष्य की एक जाति, जो कटिन बनाती और बजाती है ; ३)। २ रस्सी बनाने का काम करने वाली मनुष्य-जाति , " किणिया उ वरत्तगा वलिंति " (पंचु)।

किणिय न [किणित] वाद्य विशेष : (राय)।

किणिया स्त्री [किणिका] छोटा फोड़ा, फुनसी .

" अन्नेवि सहं महिलालिंगियतुच्चकिणियकोसिल्ला।
मलिणजलकयडोच्छइयविग्गहा कहवि हिंडंति "

(स १८०)।

किणिस सक [शाणय] तीक्ष्ण करना, तेज करना। किणिसइ ; (पिंग)।

किणो अ [किमिति] क्यों, किस लिए? (हे २, ३१६ ; षड्भा ; गा ६७ , महा)।

किण्ण वि [कीर्ण] १ उत्कीर्ण, खुदा हुआ; "उवलक्खिऊण कट्ठऽक्खिण्णं" (सुर ४०१)। २ क्षिप्त, फेंका हुआ ; (आ ६)।

किण्ण पु [किण्व] १ फल वाला वृक्ष-विशेष, जिसकी छाल कषाय है ; (गउड ; आचा)। २ न. सुरा-बीज, किण्वक के बीज, जिस का छाल बनता है : (उत्त २)। 'सुरा स्त्री [सुरा] किण्व-वृक्ष के फल से बनी हुई मदिरा; (गउड)।

किण्ण वि [दे] गोमयान, गोबर्मन ; (दे २, ३०)।

किण्णं अ [किंनम्] प्रश्नार्थक अव्यय; (उवा)।

किण्णर देखो किंनर : (जं १ ; राय : इक)।

किण्णा अ [कथम्] क्यों, क्यों कर, कैसे ? "किण्णा लद्धा किण्ण पत्ता" (विसा २, १—पत्र १०६)।

किण्णु अ [किंनु] इन अर्थों का सूचक अव्यय;—१ प्रश्न ; २ विर्तक ; ३ संदेह ; ४ स्मरण, स्मृति ; ५ विकल्प; (उवा ; स्वप्न ३४)।

किण्ह देखो कण्ह ; (गा ६४ ; गाथा १, १ ; उत्त ६, ५ ; पव १७)।

किण्हं न [दे] १ वर्षाकृत कपड़ा ; २ संकेत कपड़ा ; (दे २, ५६)।

किण्हा देखो कण्हा ; (ठा ५, ३—पत्र ३५१ ; कम्म ४ १३)।

किण्व पुं [किण्व] शूकर, सूअर ; (दे ४, ८)।

कित्त देखो किट्ट=कीर्तय्। भवि—कित्तइस्सं : (पंचा)।

किंत्ताण : (पव ११६)।

कित्तण न [कीर्तन] १ श्लाघा, स्तुति; "तव य जिणुत्तम संति कित्ति" (अजि ४ ; से ११, १३३)। २ वर्णन, प्रतिपादन; ३ कथन, उक्ति; (विसे ६४० ; गउड; उवा)।

किंत्तवारिअ देखो कत्तवारिअ ; (ठा ८)।

किंत्ति स्त्री [कीर्ति] १ यश, कीर्ति, सुख्याति ; (औप ; प्रासू ४३ ; ७४ ; ८२)। २ एक विद्या-देवी; (पउम ७, १६१)। ३ केसरि-हद की अधिष्ठात्री देवी; (ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ वेद-प्रतिमा विशेष, (गाथा १, १ टी – पत्र ८३)। ५ श्लाघा, प्रशंसा ; (पंच ३)। ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर ; (जं ४)। ७ सौधर्म देवलोक की एक देवी ; (ति)। ८ पुं. इस नाम का एक जैन मुनि, जिनके पास पांचवें बलदेव ने दीक्षा ली थी ; (पउम २०, २०५)। 'कर वि [कर] १ यशस्कर, ख्याति-कारक; (गाथा १, १)। २ पुं. भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम ; (राज)। चंद पु [चन्द्र] इस नाम का एक राजा ; (धर्म)। धम्म पुं [धर्म] इस नाम का एक राजा ; (धर्म)। धर पुं [धर] १ वृक्ष-विशेष ; (तंदु)। २ एक जैन मुनि, इनसे बलदेव के पुत्र; (पउम २०,२०५)। पुरिस पु [पुरुष] कीर्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव वगैरः ; (ठा ६)। म वि [मत्] कीर्ति-युक्त। 'मई स्त्री [मती] १ एक जैन साध्वी, (आक)। २ अप्रशस्त चक्रवर्ती की एक स्त्री; (उत्त १३)। 'य वि [द] कीर्तिकर, यशस्कर ; (औप)।

किंत्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म, चमड़ा; "कुसे अन्तरा कयकित्ती व" (काप्र ८६३ ; गा ६४० ; वज्जा ४४)।

किंत्तिम वि [कृत्रिम] बनावटी, नकली; (सुपा २४ ; ६१३)।

किंत्तिय वि [कीर्तित] १ उक्त, कथित; "सिद्धिपहदेसयाणं किंत्तिय वंदिय" (पंचा)। २ प्रशंसित, श्लाघित ; (ठा २, ४)। ३ निरूपित, प्रतिपादित ; (तंदु)।

किंत्तिय वि [कियत्] कितना ; (गउड)।

किंत्त वि [क्लिन्न] आर्द्र, गीला ; (हे ४, ३२८)।

किंन्ह देखो कण्ह ; (कप्प)।

किपाड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ, (षड्)।
किब्बिस न [किल्बिष] १ पाप, पातक, (पण्ह १, २)। २ माप, "निग्गयं च स बीयप्पमाणं किब्बिस" (म २६३)। ३ पु चाण्डाल-स्थानीय दुष्ट-जाति, (भग ११, ६)। ४ वि. मलिन, ५ अधम, नीच, (उत्त ३)। ६ पापी, दुष्ट ; (धर्म ३)। ७ वक्र, चित्तवक्र, (तंदु)।
किब्बिसिय पु [किल्बिषिक] १ चाण्डाल स्थानीय देव-जाति, (ठा ३, ४—पत्र १६२)। २ केवल वेषधारी साधु, (भग)। ३ वि अधम, नीच, (सूअ १, १, ३)। ४ पाप-फल को भोगने वाला दरिद्र, पंगु वगैर ; (णाया १, १)। ५ भाण्ड-चेष्टा करने वाला, (औप)।
किब्बिसिया स्त्री [कैल्बिषिकी] १ भावना-विशेष, धर्म-गुरु वगैर की निन्दा करने की आदत, (धर्म ३)। २ केवल वेष-धारी साधु की वृत्ति, (भग)।
किम (अप) अ [कथम्] क्यों, कैसे ? (हे ४, ४०१)।
किमण देखो किवण ; (आचा)।
किमब्भ पु [किमभ्र] वृक्ष-विशेष, जिसने इन्द्र का संग्राम में हराया था और शाप लगने से जो मर कर अजगर हुआ था ; (निचू १)।
किमि पु [कृमि] १ क्षुद्र जीव, कीट-विशेष, (पण्ह १, ३)। २ पेट में, पुरीष में और कलेवर में उत्पन्न होने वाला जन्तु-विशेष, (जी १५)। ३ द्वीन्द्रिय कीट-विशेष; (पण्ह १, १—पत्र २२)। °यन [अ] कृमि-जन्तु से उत्पन्न वस्त्र, "कोसेज्जपट्टमाई अ, किमिय तु पुप्फ" (पंचभा)। °राग, °राय पु [°राग] किरमिजी का रंग, (कम्म १, २० ; दे २, ३२., पण्ह २, ४)। °रासि पु [°राशि] वनस्पति-विशेष, (पाण १—पत्र ३१)।
किमिरायमण [दे] देखो किमिहरयमण ; (षड्)।
किमिच्छय न [किमिच्छक] इच्छानुसार दान, (णाया १, ८—पत्र १६०)।
किमिण वि [कृमिमत्] कृमि-युक्त ; "किमिणबहुदुरभिगंधेसु" (पण्ह १, ३)।
किराय वि [दे] लाल से रक्त ; (दे २, ३२)।
किरायमण न [दे] औशीर वस्त्र ; (दे २, ३२)।
किरि [किमु] इन अर्थों का सूचक अव्यय,—१ प्रश्न, २ विकल्प, ३ निषेध ; ४ अतिशय ; (विसे १०६१)।
किम्मिय न [दे. किम्मित] जड़ता, जाड्य, (गच्छ
किम्मीर वि [किर्मीर] १ कबरा, कबरा, (पाअ)। २. राक्षस-विशेष, जिसको भीमसेन ने मारा था, (११७)। ३ वंश-विशेष, "जाया किम्मीरवंसे" (स्वप्न)
कियन्थ देखो कयन्थ, (भवि)।
कियव्व देखो कइअव ; (उप ७२८ टी)।
किया देखो किरिया ; "हवं नाण कियाहीणं" (हे १, १०४), "मग्गणुसारी सद्धो पन्नवणिज्जो कियावरो सो" (उप १६६, विसे ३१६३ टी ; कप्पू)।
कियाणं देखो कर = कृ।
कियाणग न [क्रयाणक] किराना, करियाना, बेचने योग्य चीज, (सुर १, ६०)।
किर पु [दे] सूकर, सूअर, (दे २, ३० ; षड्)।
किर अ [किल] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ सभावना ; २ निश्चय, ३ हेतु, निश्चित कारण, ४ वार्ता-प्रसिद्ध अर्थ, ५ अरुचि, ६ अलीक, असत्य ; ७ संशय, संदेह ; (दे २, १८६, षड् ; गा १२६, प्राप्र १७ ; दस १)। ८ पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है, (कम्म ४, ७६)।
किर सक [कृ] १ फेंकना। २ फैलाना, फैलाना। ३ विस्तारना। वकृ—किरत, (से ४, ५८, १४, ५७)।
किरण पुन [किरण] किरण, रश्मि, प्रभा, (सुपा गउड, प्राप्र ८२)।
किरणिल्ल वि [किरणवत्] किरण वाला, तेजस्वी (सुर २, १४२)।
किराड } पु [किरात] १ अनार्य देश-विशेष (किराय } १८८)। २ भील, एक जंगली जाति (१ २, १७ ; १८०, सुपा ३६१, ६ १, १८३)।
किरि पु [किरि] सांड का आवाज, "कत्थइ किरिणि कत्थइ किरिणि सिट्ठाण सद्दो"(पउम ८ ४६)।
किरिकिरिया } स्त्री [दे] १ कर्णोत्कर्णिका, एक कान से किरिकिरिया } दूसरे कान गई हुई बात, गप, २ कुतूहल, कौतुक ; (दे २, ११)।

केरिसण देखो किसण, (नाट—मालवि ६७)।
केरिया स्त्री [क्रिया] १ क्रिया, कृति, व्यापार, प्रवृत्ति; (सुम २, १ ; ठा ३, ३)। २ शास्त्रोक्त अनुष्ठान, धर्मानुष्ठान; (सुम २, ४ ; पव १४६)। ३ सावद्य व्यापार; (भग १७, १)। ४ ट्ठाण न [स्थान] धर्मबन्ध का कारण; (सुम २, २ ; आव ४)। °वर वि [°पर] अनुष्ठान-कुशल; (पट्)। °वाइ वि [°वादिन्] १ आत्मिक, जीवादि का अस्तित्व मानने वाला; (ठा ४, ४)। २ केवल क्रिया से ही मोक्ष होता है ऐसा मानने वाला; (सम १०६)। °विसाल न [°विशाल] एक जैन ग्रन्थांग, तेरहवाँ पूर्व-ग्रन्थ, (सम २६)।
किरीड पुं [किरीट] मुकुट, शिरो-भूषण; (पाम)।
किरीडि पुं [किरीटिन्] अर्जुन, मध्यम पाण्डव; (वेणी १२२)।
किरोण वि [क्रीत] बिना हुआ, खरीदा हुआ; (प्राप्र)।
किरोय पुं [किरीय] १ एक म्लेच्छ देश; २ उसमें उत्पन्न म्लेच्छ जाति; (राज)।
किरोलय न [किरोलक] पत्र-विशेष, किरोलिका वल्ली का पत्र; (उत्त १, ४)।
किल देखो किर=किल; (हे २, १८६ ; गउड)। वृत्ता)।
किलंत वि [क्लान्त] खिन्न, श्रान्त; (पट्)।
किलंज न [किलिञ्ज] बाँस का एक पात्र, जिस में गेंहू वगैरः को साफ़ किया जाता है; (उत्त)।
किलकिल अक [किलकिलाय्] 'किल किल' आवाज करना, हँसना। " किलकिलइ व महुरिसं मणिहरंधिकिलिकिलिवेए " (कप्र)।
किलकिलाइय न [किलकिलायित] 'किलकिल' ध्वनि, हर्ष-ध्वनि; (आचम)।
किलक्की स्त्री [दे] स्पर्धा, शर्त; (दे १, ३१)।
किलम्म अक [क्लम्] कष्टवान होना, खिन्न होना। किलम्मइ; (कप्र)। किलम्मसि; (सरस्व ६२)। देखो—किलम्मंत; (पि १३६)।
किलायवक्क न [कोशातकक] इस नाम का एक शाक—पात्र; (पिंड)।
किलाड पुं [किलाट] दूध का विकार विशेष, मावा; (दे १, ३३)।
किलाम सक [क्लमय्] कष्टवान करना, खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना। किलामेज्ज; (पि १३६)। वकृ—किलामेंत; (भग ६, ६)। कवकृ—किलामीअमाण; (ठा ४६)।
किलाम पुं [क्लम] खेद, परिश्रम, ग्लानि; " रमणिज्जो मे किलामो " (पडि; विसे २४०४)।
किलामणया स्त्री [क्लमना] खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना; (भग ३, ३)।
किलामिय वि [क्लमित] खिन्न किया हुआ, हैरान किया हुआ, पीड़ित; " तक्काकिलामियंगो " (पउम १०३, २२ ; सुर १०, ४८)।
किलिंच न [दे] छोटी लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा; " इंतंकरणोहरणयं किलिंचमिच्चाइ अविदिन्नं " (सत १०२ ; पाम ; दे २, ११)।
किलिंचिय न [दे] ऊन देखो; (ठा ८०)।
किलिंत देखो किलंत; (नाट—मृच्छ २६ ; पि १३६)।
किलिकिंच अक [रम्] रमण करना, क्रीड़ा करना। किलिकिंचइ; (हे ४, १६८)।
किलिकिंचिय न [रत] रमण, क्रीड़ा, संभोग; (प्रभा)।
किलिकिल अक [किलकिलाय्] 'किल किल' आवाज करना। वकृ—किलिकिलंत; (उप १०३१ टी)।
किलिकिलि न [किलिकिलि] इस नाम का एक विद्याधर-नगर; (इक)।
किलिकिलिकिल देखो किलकिल। वकृ—किलिकिलिकिलंत; (पउम ३३, ८)।
किलिंगिलिय न [किलिकिलित] 'किल किल' आवाज करना, हर्ष-सूचक ध्वनि-विशेष; (ग ३७० ; उप ३८६)।
किलिट्ठ वि [क्लिष्ट] १ क्लेश-दुक्त, (उप ३१)। २ कठिन, विषम; ३ क्लेश-जनक; (प्राप्र ; हे १, १०६ ; उव)।
किलिण्ण देखो किलिन्न; (स्वप्न ८६)।
किलिन्न वि [क्लन्न] क्लिन्न, गीला; (प्राप्र, कप्र ; हे १, १४६)।
किलिन्ति स्त्री [क्लन्ति] स्नान, क्लान्ति; (पि ६६)।
किलिन्न वि [क्लिन्न] आर्द्र, गीला; (हे १, १४६ ; २, १०६)।
किलिम्म देखो किलम्म। किलिम्मइ; (पि १७०)। वकृ—किलिम्मंत; (हे २, ८० ; ११, ४०)।

किलिम्मिअ वि [दे] खचित, जड़ित; (दे २, ३१)।
किलिव देखो कीव, (पव २, मै ४१)।
किलिस अक [क्लिश्] खेद पाना, थक जाना, दुःखी होना। वकृ—किलिसंत, (पउम २१, ३८)।
किलिस देखो किलेस, "मिच्छत्तमन्नाणकिलिसमलिल-म्मि बुड्ढाण" (सुपा ६४)।
किलिसिअ वि [क्लेशित] आयासित, क्लेश-प्राप्त, (ग १४६)।
किलिस्स देखो किलिस = क्लिश्। किलिस्सइ, (महा, उव)। वकृ—किलिस्संत, (नाट—माल ३१)।
किलिस्सिअ वि [क्लिष्ट] क्लेश-प्राप्त, क्लेश-युक्त, (उप पृ ११६)।
किलीण देखो किलिण्ण, (भवि)।
किलीव देखो कीव; (स ६०)।
किलेस पु [क्लेश] १ खेद, थकावट; (औप)। २ दुःख, पीड़ा, बाधा, (पउम २२, ७५, सुज्ज २०)। ३ दुःख का कारण; ४ कर्म, शुभाशुभ कर्म, (कुप्र १)। °यर वि [°कर] क्लेश-जनक, (पउम २२, ७५)।
किलेसिय वि [क्लेशित] दुःखी किया हुआ, (सुर ४, १६७; १६६)।
किल्लटा देखो किट्टा; (मै ६१)।
किव पु [कृप] १ इस नाम का एक ऋषि, कृपाचार्य; (हे १, ११८)। "भाइसयसमग्गं गंगेय विदुरं दोण जयद्द सउणी कीवं (? सउणिं किवं) आसत्थामं" (णाया १, १६—पत्र २०८)।
किवं (अप) देखो कहं; (कुमा)।
किवण वि [कृपण] १ गरीब, रंक, दीन, (सूम १, १, २; मच्छु ६७)। २ दरिद्र, निर्धन; (पण्ह १, २)। ३ कंजूस, अ-दाता; (दे २, ३१)। ४ क्लीव, कायर, (सूम २, २)।
किवा स्त्री [कृपा] दया, मेहरबानी; (हे १, ११८)। °वन्न वि [°वन्न] कृपा-प्राप्त, दयालु; (पउम ६६, ४७)।
किवाण पुन [कृपाण] खड्ग, तलवार; (सुपा ११८; हे १, ११८; गउड)।
किवालु वि [कृपालु] दयालु, दया करने वाला; (पउम १४, ६०; ६७, २०)।
किविड न [दे] १ सलिहान, अन्न साफ करने का स्थान; वि. सलिहान में जो हुआ हो वह; (दे २, १०)।
किविडी स्त्री [दे] १ खिड़की, पर्दा-दर, किल्ला आँगन; (दे २, १०)।
किविण देखो किवण; (हे १, ४१; ११८; सुर ३, ४४, प्राप्र ६१; पण्ह १, १)।
किस वि [कृश] १ दुर्बल, निर्बल, (उत्त १११) पतला, (हे १, ११८, दा ४, २)।
किसंग वि [कृशाङ्ग] दुर्बल शरीर वाला; (सुर ११)
किसर पु [कृशर] १ खड़ा-तिल, तिल, चावल की दाल की मिश्रित भोजन-विशेष, (हे १, ११८)।
किसर देखो केसर, "मरुकेसरालिकलिया" (हे १, ११८)।
किसरा स्त्री [कृशरा] खिचड़ी, चावल-दाल की भोजन-विशेष, (हे १, ११८; हे १, ८८)।
किसल देखो किसलय, (हे १, २१६, कुमा)।
किसलइय वि [किसलयित] अङ्कुरित, नये अङ्कुरवाला; (सुर ३, ३६)।
किसलय पुन [किसलय] १ नूतन अङ्कुर; (श्रा ३) २ कोमल पत्ता, (जी ६)। "सव्वोवि किसलओ उग्गममाणो अणन्तओ भणिओ" (पण्ण १)। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष, (अजि १६)।
किसा देखो कासा, (हे १, १२७)।
किसाणु पु [कृशानु] १ अग्नि, वह्नि, आग; २ वि विशेष, चिकना हुआ, ३ तीन की संख्या, (हे १, ६६)।
किसि स्त्री [कृषि] खेती, चास, (विसे १६१६, २००, प्राप्र)।
किसिअ वि [कृशित] दुर्बलता-प्राप्त, कृशता-युक्त ४०; वज्जा ४०)।
किसिअ वि [कृषित] १ विलिखित, जैसा किया हुआ जोता हुआ, इष्ट, २ खेती का हुआ, (हे १, ११८)
किसीयल पु [कृषीवल] कर्षक, किसान "धन्नं भक्खंति किसीवला पुव्वि" (श्रा १६)।
किसोर पु [किशोर] बाल्यावस्था के बाद का अल्प वाला बालक; "सीहकिसोरस्स गुहाओ निग्गय (सुर ६४१)।
किसोरी स्त्री [किशोरी] कुमारी, अविवा (णाया १ ६)।

कुक्कुअ न [कौकुच्य] काम-कुचेष्टा, "भंडाईण व नयणाइयाण सवियारकरणमिह भणियं। कुक्कुइयं" (पुप्फ १०६; पडि)।

कुक्कुड पु [कुक्कुट] १ कुक्कुट, मुर्गा; (गा ६८२, उवा)। २ वनस्पति-विशेष, (भग १६)। ३ क्रिया द्वारा किया जाता हस्त-प्रयोग-विशेष, (वव १)। °मंसय न [°मांसक] १ मुर्गा का मांस, २ बीजयुक्त वनस्पति का गुदा, (भग १६)।

कुक्कुड वि [दे] मत्त, उन्मत्त, (दे ३, ३७)।

कुक्कुडय न [कुक्कुटक] देखो कुक्कयय, (सूअ १, ४, २, ७ टी)।

कुक्कुडिया } स्त्री [कुक्कुटिका, °टी] कुक्कुटी, मुर्गी,
कुक्कुडी } (णाया १, २; विपा १, २)।

कुक्कुडेसर न [कुक्कुटेश्वर] तीर्थ-विशेष; (ती १६)।

कुक्कुर पु [कुक्कुर] कुत्ता, श्वान; (पउम ६४, ८०, सुपा २७७)।

कुक्कुरुड पुं [दे] निकर, समूह, (दे ३, १३)।

कुक्कुस पुं [दे] धान्य आदि का छिलका, भूँसा; (दे ३, ३६; दस ५, ३४)।

कुक्कुह पु [कुक्कुभ] पक्षि-विशेष, (गउड)।

कुक्खि [दे. कुक्षि] देखो कुच्छि; (दे ३, ३४, औप, स्वप्न ६१; कप्प ३३)।

कुग्गाह पु [कुग्राह] १ कदाग्रह, हठ, (उप ८३२ टी)। २ जल-जन्तु विशेष; "कुग्गाहग्गाहाइयजलुसंकुला" (सुपा ६१६)।

कुच्च पु [कुच्च] स्तन, थन; (कुमा)।

कुच्च न [कूर्च] १ दाढ़ी-मूँछ, (पाअ; अभि २११)। २ तृण-विशेष; (पण्ह २, ३)। देखो कुच्चग।

कुच्चंधरा स्त्री [कूर्चधरा] दाढ़ी-मूँछ धारण करने वाली; (ओघ ८३ भा)।

कुच्चग } देखो कुच्च; (आचा १, १, ३; कस)।
कुच्चय } २ कूची, तृण-निर्मित तूलिका, जिससे दीवाल में चूना लगाया जाता है; (उप पृ ३४३; कुमा)।

कुच्चिय वि [कूर्चिक] दाढ़ी-मूँछ वाला; (भग १)।

कुच्छ सक [कुत्स्] निन्दा करना, धिक्कारना। कृ—कुच्छ, कुच्छणिज्ज; (पण्ह १, ३)।

कुच्छ [कुक्ष] २ गोत्र-विशेष; (कप्प)।

कुच्छ देखो कुच्छ=कुक्ष्।

कुच्छग पु [कुक्ष्मक] वनस्पति-विशेष; (सूअ १, ३)।

कुच्छणिज्ज देखो कुच्छ=कुत्स्। "अन्नेसिं कुच्छियं साणाणं मासणिज्जं हि" (श्रा २७)।

कुच्छा स्त्री [कुत्सा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा; (संबो ४१४, उप ३२० टी)।

कुच्छि पुस्त्री [कुक्षि] १ उदर, पेट; (हे १, ३१; षड्, भग)। २ अष्टकलोम अशुभ का मान; (जं २)। °किमि पु [°कृमि] उदर में उत्पन्न होने वाला कीड़ा, इन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पण्ण १)। °धार पु [°धार] १ जहाज का काम करने वाला नौकर; "कुच्छिधारकन्नधार-गब्भजसंजत्तगावावाणियगा" (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ एक प्रकार का जहाज का व्यापारी; (णाया १, १६)। °पूर पु [°पूर] उदर-पूर्ति; (सुर ४)। °वेयणा स्त्री [वेदना] उदर का रोग-विशेष, (औप २)। °सूल पुन [°शूल] रोग-विशेष, (णाया १, १३, विपा १, १)।

कुच्छिंभरि वि [कुक्षिम्भरि] एकजठरा, पेटू, स्वार्थी; "हा नियचरित्तकुच्छिं(? च्छिं)भरिए!" (सिरि)।

कुच्छिमई स्त्री [दे. कुक्षिमती] गर्भिणी, आपन्न-सत्त्वा, (दे ३, ४१, षड्)।

कुच्छिय वि [कुत्सित] खराब, निन्दित, गर्हित; (पंचा ७, भवि)।

कुच्छिल्ल न [दे] १ भूमि का विवर, बाड़ का छिद्र; (दे ३, ३४)। २ छिद्र, विवर; (पाअ)।

कुच्छेअय पु [कौक्षेयक] तलवार, खड्ग, (दे १, ११७; षड्)।

कुज पुं [कुज] वृक्ष, पेड़; (जं २)।

कुजय पु [कुजय] जुआरी, जुआखोर, (सूअ १, ३, ३)।

कुज्ज वि [कुब्ज] १ कुब्ज, वामन, (सुपा २, कप्पू)। २ पुंन. पुष्प-विशेष; (षड्)।

कुज्जय पुं [कुब्जक] १ वृक्ष-विशेष, गन्धप्रियंगु, (पउम ४२, ८; कुमा)। २ न. उस वृक्ष का पुष्प, "बंधेउं कुज्जयमालं" (हे १, १८१)।

कुज्झ सक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना। कुज्झइ; (हे ४, २१७; षड्)।

कुट्ट सक [कुट्ट्] १ कूटना, पीटना, ताड़न करना। २ काटना, छेदना। ३ गरम करना। ४ उपालम्भ देना। भवि—कुट्टिस्सं, (वि ६२८)। वकृ—कुट्टिंत; (सुर ११,

१)। कट्ट—कुट्टिज्जंत, कुट्टिज्जमाण : (सुपा ३४०; प्रासू ६६; गच)। लेह—कुट्टिय; (सण १४, ८)।

कुट्ट पुं [कुट] पक्ष, डैना, (सुख २, ७)।

कुट्ट पुंन [दे] १ कट, किला; "दिज्जंति कवाडाइं कुट्टपरिसंठियाइं" (सुर ५०३)। २ नगर, शहर; (सुर १६, ८३)। °पाल पुं [°पाल] कोटवाल, नगर-रक्षक; (सुर १६, ८१)।

कुट्टण न [कुट्टन] १ पेषण, चूर्णन, मेहन; (औप)। २ कूटना, तोड़ना; (हे ४, ४३८)।

कुट्टणा स्त्री [कुट्टना] शास्त्रोक्त पीड़ा; (सुख १, १२)।

कुट्टणी स्त्री [कुट्टनी] १ मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं; (कुट १)। २ दासी, कुटनी, कुट्टिनी; (रंभा)।

कुट्टा स्त्री [दे] गौरी, पार्वती; (दे २, ३४)।

कुट्टाय पुं [दे] चर्मकार, मोची; (दे २, ३७)।

कुट्टित देखो कुट्ट=कुट्।

कुट्टिनिया देखो कोट्टनिया; (गच)।

कुट्टिय [दे] देखो कोट्टिय; (पाम)।

कुट्टिणी स्त्री [कुट्टिनी] कुटनी, दासी; (कप्पू; रंभा)।

कुट्टिम देखो कोट्टिम=कुट्टिम; (सण ८, ६; गच; जीव ३)।

कुट्टिय वि [कुट्टित] १ कूटा हुआ, तोड़ित; (सुपा १४; उत्त १६)। २ छिन्न, छेदित; (कुट १)।

कुट्ठ पुंन [कुष्ठ] १ पक्षियों के पंखों की जड़ों में होनेवाली एक वस्तु; (विसे २६३; पण्ह २, ५)। २ रोग-विशेष, कोढ़; (पव ६)।

कुट्ठ पुं [कोष्ठ] १ उदर, पेट, "जठरं विलं दुक्खाणं संभूयविकारगो। वेदणा हवंति मंदेहिं" ; (पंचा)। २ कोठा, कुम्भ, धान्य भरने का बड़ा भाजन, (पव २, १)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] एक बार जानने पर नहीं भूलने वाला; (पव २, १)। देखो कोट्ठ, कोट्ठग।

कुट्ठ वि [कृष्ट] १ कर्षित, अनिमत; २ न. गात्र, अभिप्राय-सूचक; "दट्ठूं कुट्ठेहिं पेक्खंता मालया इव" (सुपा २६०)।

कुट्ठा स्त्री [कुष्ठा] इमली, विल्वा; (कुट १)।

कुट्ठि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोग वाला, (सुपा २४३; ३७६)।

कुड्ड पुं [कुट] १ पक्षी, पक्षिन; (दे २, ३५; गा २२६, विसे १४१६)। २ पर्वत; ३ हाथी बाँधने का बन्धन-स्थान; (गाया १, १—पत्र ६३)। ४ घर, पेड़; "सद्दविवित्तं इंदियकुड्डगो" (सुपा ५६२)। °कंठ पुं [°कण्ठ] पात्र-विशेष, पक्षी के जैसा पात्र; (दे २, २०)। °दोहिणी स्त्री [°दोहिनी] घर-पूर्ण दूध देने वाली; (गा ६३७)।

कुड्डंग पुंन [कुड्ड] १ कुञ्ज, निकुञ्ज, लता वगैरः से ढका हुआ स्थान; (गा १८०; हेका १०१)। २ वेत्र, जंगल; (उप २२० टी)। ३ बाँस की जाली, बाँस की बनी हुई छत; (कुट १)। ४ गढ़, कोटर; (गच)। ५ वंश-गहन; (गाया १, ८; कुमा)।

कुड्डंग पुंन [दे. कुड्ड] लता-गृह, लता से ढका हुआ घर; (दे २, ३७; महा; पाम; षट्)।

कुड्डंगा स्त्री [कुड्डङ्गा] लता-विशेष; (पउम ६३, ७८)।

कुड्डंगी स्त्री [दे. कुड्डङ्गी] बाँस की जाली; "एक्कक्कट्ठिल्ल निवडिया वंसकुडंगी" (महा; सुर १२, २०० ; उप पृ २८१)।

कुड्डय देखो कुड्डुय; (महा; गा ६०६)।

कुड्डग देखो कुड्ड; (आचा; सूत्र १, १२) F.

कुड्डभी स्त्री [कुड्भी] छोटी पताका; (सम ६०)।

कुड्डय न [दे] लता-गृह, लता से आच्छादित घर, कुटीर, झोंपड़ा; (दे २, ३७)।

कुड्डय पुंन [कुट्टज] वृक्ष-विशेष, कुरैया; (गाया १,६; पण्ण १७; स १६८), "दुद्दयं दद्दइ" (कुमा)।

कुड्डव पुं [कुडव] अनाज नापने का एक माप; (गाया १, ७ ; उप पृ ३७०)।

कुड्डाल देखो कुद्दाल; (उवा)।

कुड्डिअ वि [दे] कृश, दुबला; (पाम)।

कुड्डिआ स्त्री [दे] बाड़ का छिद्र; (दे २, २४)।

कुड्डिच्छ न [दे] १ बाड़ का छिद्र; २ कुटी, झोंपड़ा। ३ वि. छिद्रित, छिन्न; (दे २, ६४)।

कुड्डिल वि [कुटिल] वक्र, टेढ़ा; (सुर १, २० ; २, ८६)।

कुड्डिलविड्डल न [दे. कुटिलविटल] हँसी-मिज़ाक; (गच)।

कुड्डिल्ल न [दे] १ छिद्र, बिल; (पाम); कुञ्ज, कुलड़ा; (पउम)।

कुडिल्लय वि [दे. कुटिलक] कुटिल, टेढ़ा, वक्र, (दे २, ४० ; भवि)।

कुडिव्वय देखो कुलिव्वय, (राज)।

कुडी स्त्री [कुटी] छोटा गृह, झोंपड़ा, कुटीर; (सुपा ११०, वज्जा ६४)।

कुडीर न [कुटीर] झोंपड़ा, कुटी, (हे ४, ३६४, पउम ३३, ८६)।

कुडोर न [दे] बाड़ का छिद्र, (दे २, २४)।

कुडुंग पु [दे] लतागृह, लताओं से ढका हुआ घर, (षड्, गा १७६, २३१ अ)।

कुडुंब न [कुटुम्ब] परिजन, परिवार, स्वजन-वर्ग; (उवा, महा, प्राप्र १६७)।

कुडुंबय पु [कुस्तुम्बक] १ वनस्पति विशेष, धनियाँ; (पण्ण १—पत्र ४०)। २ कन्द-विशेष, "पलंडलसण-कंदे य कंदली य कुडुंबए" (उत्त ३६, ६८ का)।

कुडुंबि } कुडुंबिअ } वि [कुटुम्बिन्, °क] १ कुटुम्ब-युक्त, गृहस्थ, सबन्धी; "सोभागुणसमुदएणं माणणइडुंबिएणं" (कप्प)। २ कुनबे वाला, कर्षक, (गउड)। ३ कुटुंबीअ न [दे] सुरत, सभोग, मैथुन, (षड्)।

कुडुंभग पुं [दे] जल-भाण्डक, पानी का मटका; (निचू १)।

कुडुयक पु [दे] लता-गृह, (षड्)।

कुडुच्चिअ न [दे] सुरत, संभोग, मैथुन, (दे २, ४१)।

कुडुल्ली (अप) स्त्री [कुटी] कुटिया, झोंपड़ी, (कुमा)।

कुड्ड पुन [कुड्य] १ भित्ति, भीत; (पउम ६८, ६, हे २, ७८)।

"अज्जं गब्भोत्ति अज्जं गब्भोत्ति गणिरीए।
पट्मच्चिअ दिअहे दुओ लेहाहिं चित्तलिओ"
(गा २०८)।

कुड्ड न [दे] आश्चर्य, कौतुक, कुतूहल, (दे २, ३३, पाम; षड्; हे २, १७४)।

कुड्डमिल्लेई [दे] वृद्ध-गोधा, छिपकली, (दे २, १६)।

कुड्डलेवणी स्त्री [दे. कुड्यलेपनी] सुधा, खड़ी, मट्टिया, (दे २, ४२)।

कुड्डाल न [दे] हल का अगला विस्तृत अग, (उवा)।

कुड्डुअ पुन [दे] १ खायी हुई वस्तु को सीज में जाना; (दे २, ४२, सुपा ५०३)। २ छीनी हुई चीज को दबाने के बाद, वापिस लेने वाला, (दे २, ६१)।

कुड्डार पु [कुट्टार] कुल्हाड़ा, परशु; (षड्)।

कुड्डायय न [दे] अनुगमन, पीछे जाना, (दे)।

कुड्डिय वि [दे] दूर, सूर्ण, बेगमफ; "कुड्डि पुणो पुणो कुड्डियुग्गिरंतेण" (सुर ३, १०२)।

कुण सक [कृ] करना, बनना। कुणइ, कुणए, (भग, महा, सुपा ३२०)। वकृ—कुणंत, माण, (गा १६६, सुपा ३६, १११, भक्त)।

कुणअक पु [कुणक] वनस्पति विशेष, (पण्ण १—पत्र ३६)।

कुणप न [कुणप] १ मुरदा, मृत-शरीर; (पाअ; सुर ३, १३१)। २ वि दुर्गन्धी, (हे १, १३१)।

कुणाल पु न [कुणाल] १ जैन-विशेष, (ठाणा १, ८, उप ६८६ टी)। २ प्रसिद्ध मौर्यराज अशोक — (विसे ८६१)। °नयर न [°नगर] उज्जैन, "आगो कुणालनयरे" (सण)।

कुणाला स्त्री [कुणाला] इस नाम की एक नगरी (१०३)।

कुणि } कुणिअ } पु [कुणि] १ हस्त विकल, हाथ से जिसका एक हाथ छोटा हो वह, २ जिसका एक हाथ न हो, लूला, (पण्ह १, ४—पत्र १४० आचा)। कुणिआ स्त्री [दे] शनि-चिह्न, बाड़ का छिद्र, (दे २, ४)।

कुणिम पुन [दे. कुणप] १ शव, मृतक, मुरदा, (पण्ह १)। २ मास; (ठा ४, ४, सोप)। ३ नरकावास विशेष, (सम १, ५, १)। ४ शव का सड़ना, दुर्गन्ध, बदबू, (भग ७, ६)।

कुणुकुण अक [कुणुकुणाय्] गीत में कम्प होना या 'कुड़' आवाज करना। वकृ—कुणुकुणंत (सुर ३, १०३)।

कुण्डरिया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

कुतत्ती स्त्री [दे] मनोरथ, वाञ्छा (द २, ४, दे २, ३३)।

कुतुव पुन [कुतुप] १ तैल घी भरने का चमड़े का पात्र, (दे २, ३२)। देखो कुडुअ।

कुत्त पु [दे] कृत्य, टुकड़ा, (दे २, ४३)।

कुत्त न [दे. कुत्तक] देखो, इत्तार ; (दिप्पा १, १—पत्र ११)।

कुत्तिय पुंस्ती [दे] एक जाति का कोड़ा, चतुर्गिन्द्रिय जन्तु-विशेष ; 'कयत्तिय कुत्तिय विच्छू' (भाव १७ ; पभा ४३)।

कुत्ती स्त्री [दे] कुत्ती, कुतरी ; (रंभा)।

कुत्थ अ [कुत्र] कहाँ, किस स्थान में ? (उत्त १०४)।

कुत्थ देखो कुट्ठ । कुत्थंभरि, कुत्थंभरी ; (ती ५०१ अ)।

कुत्थय न [कौत्थ] सड़ना, सड़ जाना ; (पव ४)।

कुत्थर न [दे] १ विष्ठा ; (दे २, १३)। २ कोटर, वृक्ष की पोल, खड्ड ; (सुपा २४८)। ३ सर्व वर्गस्थ का बिल ; (उत्त २६७ टी)।

कुत्थुंभ पुं [कुम्भुम्भ] वाद्य-विशेष ; (राय)।

कुत्थुंभरी स्त्री [कुस्तुम्बरी] वनस्पति-विशेष, धनियाँ ; (पण्ण १—पत्र ३१)।

कुत्थुह पुंन [कौस्तुभ] मणि-विशेष, जो विष्णु की छाती पर रहता है ; (कप्पा २४१)।

कुत्थुहवत्थ न [दे] नौली, नाग, इजारबन्द ; (दे २, ३८)।

कुदो देखो कुओ ; (हे १, ३७)।

कुद्द वि [दे] प्रभूत, प्रचुर ; (दे २, ३४)।

कुद्दण पुं [दे] गवल, गला ; (दे २, ३८)।

कुद्दव पुं [कोद्रव] धान्य-विशेष, कोदा, कोदव ; (सम्य १२)।

कुद्दाल पुं [कुद्दाल] १ भूमि खोदने का साधन, कुदार, कुदाली ; (सुपा ४२६)। २ वृक्ष-विशेष ; (जं २)।

कुद्ध वि [क्रुद्ध] कुपित, क्रोध-युक्त ; (महा)।

कुप्प सक [कुप्] कोप करना, गुस्सा करना। कुप्पइ ; (उव ; महा)। वकृ—कुप्पंत ; (सुपा १६७)। कृ-कुप्पियव्व ; (स ८१)।

कुप्प सक [माप्] नापना, कहना। कुप्पए ; (भवि)।

कुप्प न [कुप्य] सुवर्ण और चाँदी को छोड़ कर अन्य धातु और मिट्टी वगैरः के बने हुए गृह-उपकरण ; "लोहाई दव्वकप्पो कुप्पं" (बृह १, पीठ)।

कुप्पड पुं [दे] १ कुटाचार, घर का विनाश ; २ समुद्राचार, लटाचार, (दे २, ३६)।

कुप्पर न [दे] सुख के समय किया जाने वाला हृदय-ताडन-विशेष ; १ समुद्राचार, लटाचार ; २ सम. हँसी, दिल्लगी, (दे २, ३६)।

कुप्पर पुं [कूर्पर] १ कर्कोणि, हाथ का मध्य भाग; २ जानु, घुटना ; ३ रथ का अवयव-विशेष ; (जं ३)।

कुप्पर पुं [कर्पर] देखो कप्पर। भित्ति की पतन, भित्ति की जीर्ण-शीर्ण थर; "एयाओ पाडलावंडुकुप्पर कुप्पलिल्लीओ" (गउड)।

कुप्पल देखो कुंपल ; (ती २७७)।

कुप्पास पुं [कूर्पास] कञ्चुक, काँचली, जनानी कुरती ; (हे १, ७२ ; कप्पू ; पाम)।

कुप्पिय वि [कुपित] १ कुपित, क्रुद्ध; २ न. कोप, गुस्सा; "कुप्पियं नाम कुज्झियं" (आचा ४)।

कुप्पिस देखो कुप्पास ; (हे १, ७२ ; दे २, ४०)।

कुयर पुं [कुयर] मगधान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष ; (पव २७)।

कुबेर पुं [कुबेर] १ कुबेर, यक्ष-राज, धनेश ; (पाम ; गउड)। २ मगधान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठाता यक्ष-विशेष ; (संति ८)। ३ काम्पिल्यपुर के एक राजा का नाम ; (पउम ७, ४६)। ४ इस नाम का एक श्रेष्ठी ; (उत्त ७२८ टी)। ५ एक जैन मुनि ; (कप्प)। °दिसा पुं [°दिश्] उत्तर दिशा ; (सुर २, ८५)। °नयरी स्त्री [°नगरी] कुबेर की राजधानी, अलका ; (पाम)।

कुबेरा स्त्री [कुबेरा] जैन साधु-संघ की एक शाखा ; (कप्प)।

कुब्ज वि [दे] कूबड़, कुब्ज, वामन ; (श्रा २७)।

कुब्बर पुं [कुबर] वैश्रमण के एक पुत्र का नाम; (संत ६)।

कुमंड पुं [कुमाण्ड] देव-विशेष की जाति; (ठा२,३—पत्र ८६)।

कुमंडिंद पुं [कुमाण्डेन्द्र] इन्द्र-विशेष, कुमाण्ड देवों का स्वामी ; (ठा २, ३)।

कुमर देखो कुमार ; (हे १,६७; सुपा २४३; ६१८; कुमा)।

कुमरी देखो कुमारी; (कप्प ; पाम)।

कुमार पुं [कुमार] १ प्रथम-वय का बालक, पाँच वर्ष तक का लड़का ; (ठा १० ; राजा १, २)। २ युवराज, राजपुत्र पुरुष ; (पउम १, ६)। ३ मगधान् वासुपूज्य का शासनाधिष्ठाता यक्ष ; (संति ७)। ४ लोहकार, लोहार ; "चवेटमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव" (उत्त २३)। ५ कार्तिकेय, स्कन्द , (पाम)। ६ शुक पक्षी , ७ युवराज ; ८ स्त्रि. नट ; ९ वृक्ष-विशेष, वरण-वृक्ष ; (हे १, ६७)। १० अ-विवाहित, ब्रह्मचारी, (सम ५०)। °गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष, (भग्र २, ३)। °चंदि

दुं [°नन्दिन्] इस नाम का एक सोनार, (आवम) । °धम्म पु [°धर्म] एक जैन साधु, (कप्प) । °पाल पु [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध जैन राजा ; (दे १, ११३ टी) ।

कुमार पु [दे] कुआँर का महीना, आश्विन मास, (टा २, १) ।

कुमारा स्त्री [कुमारा] इस नाम का एक सन्निवेश ; "तओ भगवं कुमाराए सन्निवेसे गओ" (आवम) ।

कुमारिय पु [कुमारिक] कसाई, शौनिक, (बृह १) ।

कुमारिया स्त्री [कुमारिका] देखो कुमारी ; (पि ३६०) ।

कुमारी स्त्री [कुमारी] १ प्रथम वय की लड़की ; २ अविवाहित कन्या ; (हे २, १२) । ३ वनस्पति-विशेष, घीकुआरी, (पव ४) । ४ नवमल्लिका ; ५ नदी-विशेष ; ६ जम्बू-द्वीप का एक भाग, ७ वनस्पति-विशेष, भारंगिनी, ८ सीता ; ९ बड़ी इलायची ; १० वन्ध्या ककड़ी की लता, ११ पक्षि-विशेष ; (हे २, १२) ।

कुमारी स्त्री [दे. कुमारी] गौरी, पार्वती, (दे २, ३६) ।

कुमुअ पु [कुमुद] १ इस नाम का एक वानर ; (से १, ३४) । २ महाविदेह-वर्ष का एक विजय-युगल, भूमि-प्रदेश-विशेष, (ठा २, ३— पत्र ८०) । ३ न चन्द्र-विकासी कमल, (णाया १, ३—पत्र ६६ ; से १, २६) । ४ संख्या-विशेष, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, (जो २) । ५ शिखर-विशेष ; (ठा ८) । ६ वि पृथ्वी में आनन्द पाने वाला, ७ सराग प्रीति वाला, (से १, २६) । देखो कुमुद ।

कुमुअंग न [कुमुदाङ्ग] संख्या-विशेष, 'महाकमल' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, (जो २) ।

कुमुआ स्त्री [कुमुदा] १ इस नाम की एक पुष्करिणी, (ज ४) । २ एक नगरी, (दीव) ।

कुमुइणी स्त्री [कुमुदिनी] १ चन्द्र विकासी कमल का पेड़ ; (कुमा, रंभा) । २ इस नाम की एक नगरी, (इक १०३१ टी) ।

कुमुद देखो कुमुअ ; (इक) । देव-विमान विशेष, (सम ३१, ३६) । °गुम्म न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष, (सम ३६) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, (इक) । °पभा स्त्री [°प्रभा] इस नाम की एक पुष्करिणी, (ज ४) । °वण न [वन] मथुरा नगरी के समीप का एक उद्यान, (ती ३१) । °सर पु [°सर] कुमुदों का तालाब, कुमुदों से भरा हुआ वन, (पव १, ४) ।

कुमुदग देखो कुमुअंग ; (इक) ।

कुमुदग न [कुमुदक] तृण-विशेष, (सूअ २, २) ।

कुमुदी स्त्री [दे] कुमुदिनी, कुमुदा, (दे २, ३८) ।

कुम्म पु [कूर्म] कछुआ, कछुआ ; (पाअ) । °गाम, [°ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम, (भग ११) ।

कुम्मण वि [दे] म्लान, शुष्क, (दे २, ४०) ।

कुम्मास पु [कुल्माष] १ अन्न-विशेष, उड़द, (ठा ३३६ ; पव २, ५) । २ थोड़ा भीजा हुआ मूँग आदि धान्य ; (पव २, ५—पत्र १४८) ।

कुम्मी स्त्री [कूर्मी] १ स्त्री-कछुआ, कछुई । २ [कूर्म की माता का नाम ; (पउम ११, ५२) । °पुत्त पु [°पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुक्ति पाई है (औप) ।

कुम्ह पुन [कुड्मल] वृक्ष-विशेष, (हे २, ७४) ।

कुय पु [कुच] १ स्तन, थन । २ वि. निर्मित ; (सुर ७) । ३ अस्थिर, (निचू १) ।

कुयया स्त्री [दे] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३१) ।

कुरंग पु [कुरङ्ग] १ मृग की एक जाति ; (ज २) । २ कोई भी मृग, हरिण, (पाअ १, १, गउड) । °°गी, (पाअ) । °°च्छी स्त्री [°क्षी] हरिण के जैसे नेत्र वाली स्त्री, मृग-नयनी स्त्री, (वज्जा २०) ।

कुरंटय पु [कुरण्टक] वृक्ष-विशेष, पियवाँसा ; (ठा १०३१ टी) ।

कुरकुर देखो कुरुकुर । वकृ -कुरकुराअंत, (उप ६

कुरय पु [कुरक] वनस्पति-विशेष, (पण्ण १—पत्र ३१)

कुरर पु [कुरर] कुरल-पक्षी, उत्क्रोश, (पाअ १, १ ; उप १०३६) ।

कुररी स्त्री [दे] पशु, जानवर, (दे २, ४०) ।

कुररी स्त्री [कुररी] १ कुरर पक्षी की मादा, २ छन्द का एक भेद, (पिंग) । °मई, मयी [°मयी] ।

कुरल पु [कुरल] १ केश, बाल, 'कुरलकलापि कुटिल नखलदलसामला अवसण्णा' (सुपा २ पउम । २ पक्षि-विशेष, (जीव १) ।

कुरली स्त्री [कुरली] १ केश का एक गुच्छा, मुण्ड २४) । २ कुरल पक्षिणी, 'कुरलिव नवनव नवीं (पउम ११, ७६) ।

कुरवय पु [कुरवक] वृक्ष विशेष, कटसरैया या ४०, पिक २२, से ६१८, कुमा ३, ८ ।

-कुल ;

सो [कुश] वर्ण-विशेष, अकर्ण भूमि विशेष . (उ

३ ; १०) ।

या न [दे] दक्ष जनक, अरोक अहरी , (सं- ४०३) ।

पुंड, [कुल] १ अर्क देश-विशेष, जो इस नाम से

; (स्थान ९, ८ , मूल) । २ स्थानाङ्ग अभिधान का

इस नाम का एक पुत्र . (सं १६) । ३ अर्क भूमि विशेष.

(उ ६) । ४ इस नाम का एक वंश . (सं ६) । आग,

देखो, इस वंश के उत्पन्न, इस संबंधि , (उ ६) । आगा,

आरी देखो ऊपर आग, आगी. (पउ ११) । वेत्त [वेत्र],

न [क्षेत्र] १ विन्ध्य के पास का एक मैदान, जहां पहिले

मैं पाण्डवों की राजधानी थी . २ इस देश की राजधानी,

हस्तिनापुर नगर ; (संक्षि ; सं १६) । चंद पु [चन्द्र]

इस नाम का एक राजा . (पाअ , भवि) । चर पि

[चर] इस देश के रहने वाला । जी— चरा, चरी,

(उ ३, ३१) । जंगल न [जङ्गल] कुरुभूमि,

देश-विशेष (संक्षि ; सं ३) । णाह पु [नाथ]

कुरुवंश , (स ४४३ ; गउड) । दत्त पु [दत्त]

इस नाम का एक होने वाला जैन आचार्य ; (उप ७ ; संक्षि) ।

मई जी [मती] प्रस्तुत अवसर्पिणी की एकराजा ; (सम

१५३) । राय पु [राज] इस देश का राजा , (उ

३) । वइ पु [पति] इस देश का राजा , (उप

३७८ टी) ।

कुरुकुया स्त्री [कुरुकुला] एक का नक्षत्र ; (सौर

३७८) ।

कुरुकुल न [कुरुकुल] एक कुरु अवसर्पिणी काल, कुरु-

कुरुवंश, कुरुवंश , कुरुकुलेसु (पि १५८) । वह—

कुरुकुलाअंत कुरु ,

कुरुकुलिय न [दे] ,

कुरुकुसुर [कुरुकुर] ,

कुरुखिल्ल पु [दे] ,

कुरुचंद पु [दे] ,

कुरुचंदा स्त्री [दे] ,

कुरुज न [दे] ,

कुरुजा स्त्री [दे] ,

कुरुजा स्त्री [दे] ,

कुरुजा स्त्री

वि [॰ज्ञ] कुलीन, सानदान वग का, (आया १, ६)। ॰थेर पु [॰स्थविर] श्रेष्ठ साधु, (पंचु)। ॰दिणयर पु [॰दिनकर] कुल में श्रेष्ठ, (कप्प)। ॰दीव पु [॰दीप] कुल प्रकाशक, कुल में श्रेष्ठ, (कप्प)। ॰देव पु [॰देव] कुल-देवता, (कप्प)। ॰देवया स्त्री [॰देवता] गोत्र-देवता, (सुपा ६८०)। ॰देवी स्त्री [॰देवी] गोत्र-देवी, (सुपा ६०१)। ॰धम्म पु [॰धर्म] कुलाचार, (ठा १०)। ॰परंपरा पु [॰परंपरा] वंश-विस्तार, (गच्छ ११, सुपा ४३)। ॰पुत्त पु [॰पुत्र] वंश रक्षक पुत्र, (उप १)। ॰बालिया स्त्री [॰बालिका] कुलीन कन्या, (सुर १, ४१, हेका ३०१)। ॰भूसण न [॰भूषण] १ वंश का शोभन वाला, २ एक कवि भगवान्, (गच्छ ३६, १२२)। ॰मय पु [॰मद] कुल का अभिमान, (ठा १०)। ॰महत्तरिया, ॰महत्तरिया स्त्री [॰महत्तरिका] कुल में प्रधान स्त्री, कुटुम्ब की मुखिया, (सुपा ४१, आक)। ॰य देखा ॰ज, (सुपा ६६८)। ॰रोग पु [॰रोग] कुल व्यापक रोग, (उ १)। ॰वइ पु [॰पति] गोत्रों का मुखिया, प्रधान सरदार, (सुपा ११०, उप ३१)। ॰वंस पु [॰वंश] कुल का वंश, वंश, (भग ११, १०)। ॰वंस पु [॰वंश्य] कुल में उत्पन्न, वंश में संजात, (भग ६, ३३)। ॰वडिंसय पु [॰वतंसक] कुल भूषण, कुल-दीपक, (कप्प)। ॰वहू स्त्री [॰वधू] कुलीन स्त्री, कुलाङ्गना, (आव ४, पि १८०)। ॰संपन्न वि [॰संपन्न] कुलवान, सानदान वंश का, (औप)। ॰समय पु [॰समय] कुलाचार, (सूत्र १, १, १)। ॰सील पु [॰शील] कुल-चरित्र, (सुपा ६००, सं ११६)। ॰सेहरया स्त्री [॰शेखरा] कुल में श्रेष्ठ हुई स्त्री, "कुलसेहरयत्ति सरिया कुल श्रेष्ठत्वात्" (सूत्र ६००)। ॰हर न [॰गृह] पितृ-गृह, पिता का घर, (ठा, १११, सुपा ३१०, सं ६,६३)। ॰हरंच वि [॰गृहीत] अपने कुल की मर्यादा का अच्छी तरह पालन करने वाला, (ठा ४, १)। ॰हर पु [॰धर] पर्वत, मेरु, (पाअ)। ॰हार पु [॰धार] कुलाचार का पालन करने वाला श्रावक, (श्रा १)। ॰हि पु [॰धि] पितृगृह की अपेक्षा से जमाई, (ठा ३, १)। ॰हिय वि [॰हित] कुलकर के लिए हितकर, कौलिन करने वाला, (सुपा ३, ६)।

कुलउर पु [कुलपुर] इस नाम का एक नगर, (पउम ८०, १६)।

कुलंध पु [कुलान्ध] इस नाम का एक अनार्य देश, १ उसमें रहने वाली जाति ; (सुअ २, २)।

कुलकुल देखो कुरकुर। कुलकुलाइ ; (भवि)।

कुलक्ख पु [कुलक्ष] १ एक म्लेच्छ देश ; २ उसमें का रहने वाला जाति ; (पण्ह १, १ ; इक)।

कुलडा स्त्री [कुलटा] कुलटा स्त्री, पुंश्चली, (उप १८६)।

कुल-ध पुंस्त्री [कुलस्थ] अन्न-विशेष, कुलथी ; (श १ ; आया १,६)। स्त्री—त्थिया ; (ओघ १८)।

कुलप्पसव पु [दे] कुल-कलङ्क, कुल का दाग, कुल की अपकीर्ति ; (दे २, ४२ ; भवि)।

कुलय पु [कुलक] १ पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। २ वृद्ध पक्षी ; (उप १४)। ३ कुशल पक्षी ; (सुपा १,११)। ४ मार्जार, बिलाव, "जहा कुक्कुडपायस्स णिच्चं कुलयभयं" (दस ८)।

कुलय देखो कुडय, (जी २)।

कुलसंतइ स्त्री [दे] कुली, कुल्हा, (दे १, ३६)।

कुलाण देखो कुवाल, (राज)।

कुलाल पु [कुलाल] कुम्भकार, कुम्हार, (पाअ ; गाया १,१३)।

कुलाल पु [कुलाद] १ मार्जार, बिलाव ; २ कुशल पक्षि ; (सुअ २, ६)।

कुलिंगाल पु [कुलाङ्गार] कुल में कलंक लगाने वाला, दुराचारी, (ठा ४, १—पव १८६)।

कुलिक) पु [कुलिक] १ ज्योतिश्चक्र में प्रसिद्ध एक
कुलिय) कुयोग, (सम १८)। २ न एक प्रकार का वस्त्र, (पण्ह १, ३)।

कुलिय न [कुल्य] १ भीत, भित्ति ; (सुअ १,३,१)। २ मिट्टी की बनाई हुई भीत, (सूत्र २, ७)।

कुलिया स्त्री [कुलिका] भीत, कुल्या, (सूत्र १)।

कुलिर पु [कुलिर] मेष वगैरे बारह राशि में चतुर्थ राशि, (पउम १०, १०८)।

कुलिंगय पु [कुलिङ्गक] परिव्राजक का एक भेद, (औप) यह मैं ही सर्वज्ञ आदि का विजय घोषणा करता हूँ (औप)।

कुलिस पुन [कुलिश] वज्र, इन्द्र का मुख्य शस्त्र, (पउम ३१० टी)। निणाय पु [निनाद] [illegible] इस नाम का एक मुनि, (पउम ८१, २, [illegible] [मय] एक प्रकार की [illegible] पउम [illegible]

कुलीकोस पुं [कुलीकोश] पक्षि-विशेष; (पण्ण १,१—पत्र ८)।

कुलीण वि [कुलीन] उत्तम कुल में उत्पन्न; (प्रासू ७१)।

कुलीर पुं [कुलीर] जन्तु-विशेष; (पाअ; दे २,४१)।

कुडुंब सक [दृह, दृढ] १ उछालना। २ अभ्यास करना। संकृ— "भत्तदुगुणगं कुणुंचिऊण मा जणि णिच्चुडी लिसिो" (सण ४१६)।

कुलुक्खिय वि [दे] १ जला हुआ; "विरहदवग्गिकुलुक्खिय-कंदलो" (सवि)।

कुल्ल पुं [दे] १ सींका, बाज, २ वि. अभ्यर्थ, अभ्यस्त, ३ छिन्न-टुकड़े, छिन्न-भिन्न किया गया हो वह; (दे २,६१)।

कुल्ल सक [कुट्ट] कूटना। वकृ—"मारट्टरक्खसाए कुल्लंतकुलंतकंडपेसाणुट्ठं" (पउम ६३, ७६)।

कुल्लउर न [कुल्यपुर] नगर-विशेष; (संघा)।

कुल्लड न [दे] १ बुल्ली, कुल्हा; (दे २,६३)। २ छोटा पात्र, पुरवा; (दे २,६३; पाम)।

कुल्लरिअ पुं [दे] कन्दविक, हलवाई, मोदक बनाने वाला; (दे २,४१)।

कुल्लरिया स्त्री [दे] हलवाई की दुकान; (आचा)।

कुल्ला स्त्री [कुल्या] १ जल की नीक, नालिनी; (हुमा; हे १,७८)। २ नदी, क्षुद्र नदी; (कप्प)।

कुल्लाग पुं [कुल्याक] संनिवेश-विशेष, मगध देश का एक गाँव; (कप्प)।

कुल्लुडिया स्त्री [कुल्लुडिका] पटिका, पट्टी; (सुख १,८,२)।

कुल्लरिअ [दे] देखा कुल्लरिअ ; (सवि)।

कुल्लह पुं [दे] पलाश, किंशार; (दे २,३४)।

कुवणय न [दे] लकुट यष्टि, लकड़ी; (राज)।

कुवलय न [कुवलय] १ नीलोत्पल, हरा रंग का कमल; (पाम)। २ चन्द्र-विकासी कमल; (भा १०)। ३ कमल, पद्म; (गा ६)।

कुविंद पुं [कुविन्द] जन्तुतरय, कपड़ा बुनने वाला; (सुख १—८)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] वल्ली-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३३)।

कुविय वि [कुपित] क्रुद्ध, जिसको गुस्सा हुआ हो वह; पउ १, २ सुर १, ६, हेका ७३ ; प्रासू ६४)।

कुविय देखा कुप्प=कुप्य; (पउम १,६, सुपा ४०६)। °भंडा स्त्री [°भाण्डा] बिछौना आदि ओढ़ने-बिछाने की कुटिया, घर का वह भाग जिसमें ओढ़ने-बिछाने रक्खे जाते हैं; (पउम १,४—पत्र १३३)।

कुवेणी स्त्री [कुवेणी] नाम विशेष, एक जज्ञ का हथियार; (पउम १,३—पत्र ४८)।

कुवेर देखो कुबेर; (महा)।

कुव्व सक [कृ, कुर्व्] करना, बनाना। कुव्वइ; (भग)। भूत—कुव्विया; (पि ५१७)। वकृ—कुव्वंत, कुव्वमाण; (भवि १४ भा ; गाथा १,६)।

कुस पुं न [कुश] १ तृण-विशेष, दर्भ, डाभ, काश; (विपा १,६ ; निचू १)। २ पुं. दाशरथी राम के एक पुत्र का नाम; (पउम १००, २)। °ग्ग न [°ग्र] दर्भ का अग्र भाग जो अत्यन्त तीक्ष्ण होता है; (उत्त ७)। °ग्गनयर न [°ग्रनगर] नगर-विशेष, बिहार का एक नगर, राजगृह, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है; (पउम २, ६८)। °ग्गपुर न [°ग्रपुर] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (सुर १, ८१)। °ट्ठ पुं [°र्त्त] आर्य देश-विशेष; (सम ६७ टी)। °ट्ठ पुं [°र्य] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी सौराष्ट्र था ; (इक)। °त्त न [°क्त, °क्त] आस्तरण-विशेष, एक प्रकार का बिछौना ; (गाया १, १—पत्र १३)। °त्थलपुर न [°स्थलपुर] नगर-विशेष ; (पउम २१, ७८)। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] डाभ के साथ कूटी जाती मिट्टी; (निचू १८)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष; (जंबू)।

कुसण न [दे] नेत्रमल, आँख का मैल ; (दे २, ३६)।

कुसल वि [कुशल] १ निपुण, चतुर, दक्ष, अभिज्ञ ; (आचा; गाया १, २)। २ न. सुख, हित ; (सम)। ३ पुण्य ; (पंचा ६)।

कुसला स्त्री [कुशला] नगरी-विशेष, जितेला, अयोध्या; (आवम)।

कुसी स्त्री [कुशी] लोहे का बना हुआ एक हथियार ; (दे ८, ६)।

कुसुंभ पुन [कुसुम्भ] १ वृक्ष-विशेष, कसुम, कर्ड ; (इक — पत्र ४०६)। २ न. कसुम का पुष्प, जिसका रंग लाल है ; (उत्त २)। ३ रक्त रंग ; (गा १७)।

कुसुंभिअ वि [कुसुम्भित] कुसुम्भ रंग वाला, (आचा)।

कुसुंभिल पुं [दे] तिलुड, तुरुक वृक्षविशेष ; दे २, ४०)।

कुसुंभी स्त्री [कुसुम्भी] वृक्ष-विशेष, कसुम का वह वृक्ष

कुसुम न [कुसुम] १ पुष्प, फूल, (पाअ, प्राप्र ३४)। २ पु. इस नाम का भगवान् पद्मप्रभ का शासनाधिष्ठायक यक्ष, (संति ७)। °केउ पु [°केतु] भरतक्षेत्र का अधिष्ठायक देव, (दीव)। °चाय, चाव पु [°चाप] कामदेव, मारध्वज, (सुपा ६६, ५३०, महा)। उज्झय पु [ध्वज] वसन्त ऋतु; (कुमा)। °णयर न [°नगर] नगर-विशेष, पाटलिपुत्र, आजकल जो 'पटना' नाम से प्रसिद्ध है, (भवि)। °दंत पु [°दन्त] एक तीर्थङ्कर देव का नाम, इस अवसर्पिणी काल के नवमें जिन देव, श्री सुविधिनाथ; (पउम १, ३)। °दाम न [°दामन्] फूलों की माला, (उवा)। °धणु न [धनुस्] कामदेव, (कुमा)। °पुर न [°पुर] देखो ऊपर °णयर, (उप ४८६)। °बाण पु [°बाण] कामदेव, (सुर ३, १६२ ; पाअ)। °रअ पु [°रजस्] मकरन्द, (पाअ)। °रद पु [°रद] हाथी दाँत ; (पउम २०, ६)। °लया स्त्री [°लता] छन्द-विशेष, (अजि १६)। °संभव पु [°संभव] मधु-मास, चैतमास, (अणु)। °सर पु [°शर] कामदेव, (सुर ३, १०६)। °अर पु [°कर] इस नाम का एक छन्द, (पिंग)। °उह पु [°युध] काम, कामदेव, (स ६३८)। °यई स्त्री [°यती] इस नाम की एक नगरी, (पउम ६, २६)। °रसव पु [°रसव] किञ्जल्क, पराग, पुष्प-रेणु ; (णाया १, १, औप)।

कुसुमाउ पु [दे] चोर, स्तेन, (दे २, १०)।

कुसुमाउलिअ वि [दे] शून्य-मनस्क, भ्रान्त-चित्त, (द २, ४२)।

कुसुमिअ वि [कुसुमित] पुष्पित, पुष्प-युक्त, खिला हुआ, (णाया १, १ ; पउम ३३, १४८)।

कुसुमिल्ल वि [कुसुमवत्] ऊपर देखो, (सुपा २३३)।

कुसुर [दे] देखो झसुर, (दे २, १७४ टि)।

कुसूल पु [कुशूल] काष्ठ, अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा पात्र ; (पाअ)।

कुह अक [कुथ्] सड़ जाना, दुर्गन्धी होना। कुहइ, (भवि, हे ४, ३६६)।

कुह पु [कुह] वृक्ष, पेड़, गाछ, "कुहा महीरुहा वच्छा" (उप ७)।

कुहंड देखो कूहंड ; (गा ६०७ अ)।

कुहंडाण पु [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति, (कप्प)।

कुहंडिया स्त्री [कूष्माण्डी] कोहला का गाछ, कुहग पु [कुहक] इन्द्र [जिसे ; "तत्र हिन्दे कुहगा य तेरव य" (उप ३६, ६६ का)।

कुहड वि [दे] उच्च, कूबड़ा ; (दे २, ३१)।

कुहण पु [कुहन] १ घड़ी का एक प्रकार, इसे जारी, "स किं नं कुहणा ? कुहणा अणेगविहा" (पण्ण १—पत्र ३६)। २ वनस्पति-विशेष, (पण्ण १—पत्र ३० , भाषा)। ३ इन्द्र [४ इस में रहने वाली जाति, (पण्ण १, १—पत्र १८, ६—पत्र १००)।

कुहणी स्त्री [दे] कूर्पर, हाथ का मध्य-भाग, (४१२)।

कुहय पुन [कुहक] १ वायु-विशेष, दौरते हुए उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार का गवियदवसुदए" (गच्छ २)। २ इन्द्रजालादि "मलणुए अवसुदए अमरे" (दस ६, २)।

कुहर न [कुहर] १ पर्वत का अन्तराल, (कुमा ; पत्र ६३)। "मेदव विन्नहिम णिज्जरकूरं " सुण्णविअं" (गा ६०७)। २ छिद्र, बिल, कि १, ४, पाप्र २)। ३ पुंस्त्व शक्ति-विशेष, (६७)।

कुहाड पु [कुठार] कुल्हाड़, फरसा, (विपा १, १ ६६, २४, स २१४)।

कुहाडी स्त्री [कुठारी] कुल्हाड़ी, कुठार, (उप ६६१)

कुहावणा स्त्री [कुहना] १ आश्चर्य जनक दम्भ-चर्या, २ लोगों से द्रव्य हासिल करने के लि हुआ कपट-भेष, (ओघ)।

कुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ, (द २, २४)।

कुहिअ वि [कुथित] १ थोड़ी दुर्गन्ध वाला, (१, १२—पत्र १७१)। २ सड़ा हुआ, ३ निष्ट ; (णाया १, १)। पूइय वे [अत्यन्त सड़ा हुआ, (पण्ह २, ५)।

कुहिणी स्त्री [दे] १ कूर्पर, हाथ का मध्य भाग महल्ला ; (द २, ६२)।

कुहिल पुस्त्री [कुटुमत्] कोयल पक्षी, (पिंग

कुहु स्त्री [कुहु] कोकिल पक्षी का आवाज

कुहुण देखो कुहण=कुहन ; (उप ३६

क्षय पुं [कुटुम्बन] कलह-विशेष ; (उत्त ३६, ६८) ।
ड पुं [डि] कोलसी-विशेष, घुंघची, एक जाति का हर्रे का
ड ; (डि २, ३५) ।
ड) पुं [कुहेड,क] १ असत्कार उत्पन्न करने वाला मन्त्र-
डय) कल्पादि ग्रन्थ ; "कुडेडविज्जासहस्सारीओ न गच्छई
ओ तस्सि काले" (उत्त २०, ४६) । २ आलापक,
शिल्प-विशेष ; 'तेसु न विज्जइ सव्वं आहुट्टुड्डेडाइडि'
(पव ७३ ; दुष्ट १) ।
ड्डा स्त्री [कुहेटका] कलह-विशेष ; कित्तानु ; (उत्त ४) ।
ण न [कूजन] १ अव्यक्त शब्द ; २ वि. ऐसा आवाज
ने वाला ; (ठा ३, ३) ।
णया स्त्री [कूजनता] कूजन, अव्यक्त शब्द ; (ठा
३) ।
ण न [कूजित] अव्यक्त आवाज ; (महा ; सुर ३, ४८) ।
या स्त्री [कूचिका] तुडतुडि, कुडतुडा, पक्षी का कुज-
; (सिरि १४६७) ।
अक [कूज्] अव्यक्त शब्द करना । कूजति ; (चारु
) । वकृ—कूजंत ; (सं २६) ।
य न [कूजित] अव्यक्त आवाज, (कुमा; सं २६) ।
पुं [दे. कूट] पाश, फाँसी, जाल ; (दे २, ४३ ;
; उत्त १ ; सुख १, १, २) ।
ल [कूट] १ अन्य छद्म-युक्त वस्तु ; "कूडतुल-
डाणे" (पंचा) । २ भ्रान्ति-जनक वस्तु ; (सम ७,
। ३ माया, कपट, छद्म, दगा, धोखा ; (सुर १२७)।
गृह, (उत्त ६) । ४ पोड़ा-जनक स्थान, दुर्गम-स्थान इ
; । सुख १, १, १ ; उत्त ६) । ६ शिखर, टोंच ; (ठा
१ ; रंभा) । ७ पर्वत का अग्र भाग, (जं २) ।
परन्तप अस्त्र-विशेष, भाले का एक प्रकार का अस्त्र ;
म १५) । ९ समूह, राशि ; (सिरि १, १) । 'कारि
'कारिन्] पोतवाहक, डगमगेर ; (सुर १२७) ।
ह पुं [ग्राह] पोत में जोखों को पहुँचाने वाला ;
या १. १) । स्त्री—ग्राहिणी ; (सिरि १, २) ।
ल न [जाल] पोत की जाल, फाँसी ; (उत्त १६) ।
ा स्त्री [तुला] कूट तौल, कमती तौल ; (उत्त
। 'पास न [पाश] एक प्रकार की माड़ी पहनने
ड्ड ; (सिरि १, ८) । 'मोअग पुं [मोचक]
न पात्र ; (आचा ४) । 'लेह पुं [लेख] १ जाली
लेख के हस्ताक्षर-मुद्रा आदि करने का पीतल की

कला ; २ दूसरे के नाम से झूठी चिट्ठी वगैरः लिखना ;
(पंडि ; ठक) । 'वाहि पुं ['वाहिन्] बैल, बलीवर्द ;
(आव ५)। 'सक्ख न [साक्ष्य] झूठी गवाही ; (पंचा १)।
'सक्खिय वि [साक्षिन्] झूठी साक्षी देने वाला ; (श्रा १४)।
'सविहत्त न [साक्ष्य] झूठी गवाही ; (सुपा ३७६) ।
'सामलि स्त्री [शाल्मलि] १ वृक्ष-विशेष के आकार का
एक स्थान, जहाँ असुर-जातीय देवों का निवास है; (सम १३;
ठा ३,३) । २ नरक स्थित वृक्ष-विशेष ; (उत्त २०) ।
'सार न [सार] १ सिरस के आकार वाला वृक्ष ; (ठा
४, २) । २ पर्वत पर बना हुआ घर ; (आचा २,३,३) ।
३ पर्वत में बना हुआ घर ; (निचू १२) । ४ हिंसा-स्थान ;
(ठा ४,३) । 'सालसाला स्त्री [शालशाला] षड्यन्त्र
करने का स्थान, षड्यन्त्र करने के लिए बनाया हुआ घर ; (निचू
१,३) । 'हिच्च न [हित्य] पापात्मक कृत्य को नहीं
मानना, बुचाल डालना ; (सम १५) ।
कूडग देखो कूड ; (आवम) ।
कूण अक [कूणय्] संकुचित होना, संकोच पाना ; (गउड) ।
कूणिअ वि [कूणित] संकोच-प्राप्त, संकोचित ; (गउड) ।
कूणिअ वि [दे] ईषद् विकसित, थोड़ा खिला हुआ ; (दे २,
४४) ।
कूणिअ पुं [कूणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र ; (औप) ।
कूय अक [कूज्] अव्यक्त आवाज करना । वकृ—कूयंत,
कूयमाण ; (औप २१ टी ; विसे १,७) ।
कूय पुं [कूप] १ कूप, कुँआ, (गउड) । २ घी, तैल
वगैरः रखने का पात्र, कुप्पा ; (स्थाप १,१—पत्र ३८ ;
औप) । 'दद्दुर पुं [दर्दुर] १ कूप का मेढक ; २ वह
मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो, अनाड़ ; (उत्त
६ सुख टी) । देखो कूप ।
कूर वि [क्रूर] १ निर्दय, निष्ठुर, हिंसक ; (पाअ १, २)।
२ अधेर, गैर ; (स्थाप १,८ ; सुख १, ७) । ३ पुं.
राक्षस का इस नाम का एक मुख्य ; (सम १६,३६)।
कूर न [कूर] अन्न, भोजन, (दे २,४३) । 'भंडुअ, 'भंडुग
पुं [भाण्डुक] एक जैन आचार्य ; (अभि ; अभय ८) ।
कूर अक [क्वथ्] पकना, क्वथन, (हे ४,११६ ; षड्) ।
कूरविअड्ढ न [दे] अन्नोत्सव विशेष, अन्नप्राशन ; (अन्न) ।
कूरि वि [क्रूरिन्] १ निर्दयी, क्रूर हिंसा करने ; २ निर्दय
परिणाम वाला ; (पंच १,३) ।

कुलय न [दे] सैन्य का छिपने का स्थान, (दे २,४३ ; से १२, ६२)।

कुलय न [कुल्य] तट, किनारा, (पाअ, गाया १, १६)। °पायग पु [°पायक] एक प्रकार का वनस्पति जो छिलने पर खट्टा हो जाता है और भोजन बनता है ; (ओघ.)। °पालग, °पालय पु [°पालक] एक जैन मुनि, (भग, कप्प)।

कुलयकण्णा स्त्री [कुल्यकर्णा] नदी, तीर को ताड़ने वाली नदी, (देशी १२०)।

कुलव पु [दे] १ पुराई खेत की साल में आना, (दे २, ६१, पाअ) । २ बुराई खेत को खुदाने वाला, छीली हुई खेत की लकड़ी खेत से बाहर ले जाने वाला, "तए णं से कुलवए तेसिं पुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे चंडिक्किए कोवाविट्ठे मिसिमिसेमाणे जेणेव वासुदेवे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० जाव वासुदेवं राइं जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवा० अंतेउरिया देवी वासुदेवेणं वासुदेवे राया सद्धिं बाहाओ पक्खित्तिय जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरइ, तं एस णं देवा० अहं तुमं वरेमि कण्णं अंतेउरवरगयं तेहिंतो विद्धंसामि" (णाया १, १६ —पत्र २१५)। "दासेण कुलवाहा" (उप ६४८ टी; ध ६, ६१)।

कुल) पु [कुल, क] १ कुल, कुटुंब, वंश, (प्रासू ६६)।
कुलग) २ समूह, वृंद, (कप्पा ७२, उप पृ ४१२)।
कुलय) ३ अन्न का मापा विशेष, जहाँ पर सत्तर सेर होता है, (ओघ, गाया १,८)। °चुडा स्त्री [°चुडा] कुलटा, छिनाल, (उ १, ६१, ८०)। °मंडुक्क पु [°मण्डूक] १ कुल का मेढक, २ असत् मनुष्य, जो मालिक पर कुछ करता न करने दे, (सिरि १)।

कुलउत्त पु [कुलपुत्र] वही कुलउत्त-पुत्र, (स्वप्न ३१)। स्थविर दीक्षित एक जैन मुनि, (कप्प ३)।

कुलउत्त पु [कुलपुत्र] १ अच्छे कुल का लड़का, उत्तम कुल में उत्पन्न, "सव्वंगसंपन्नकुलउत्ता" (कप्पा १, ६—पत्र १००)। २ अच्छे कुल में उत्पन्न होने वाला लड़का, कुलपुत्र, (उ १७, ८०)।

कुलउर न [दे] अन्तःपुर, (उ १, ४१)।

कुलंगिय न [कुलाङ्गिक] अन्तःपुर संबंधी, "अन्न वहीं कुलंगिय को अन्तःपुरिक अन्तेउर अन्तः" (भग ६०८)।

कुलंगिय पु [कुलाङ्गिक] इस नाम का एक मनोरंजन—नाटक, (कप्प)।

कुलिय वि [दे] मोल-व्यावर्तक, चुकायी हुई चीज के बदले में उसे लेने वाला, (णाया १, १८—पत्र २११)। २ की साल करने वाला ; (णाया १, १)।

कुलिया स्त्री [कुल्पिका] १ छोटा कुल, (उप ७२८ टी)। २ छोटा स्नेह-पात्र, (राज)।

कुली स्त्री [कुली] ऊपर देखो ; "णयामो अम्हाहिं" (उप ७२८ टी)।

कुलुसार पु [दे] गर्भाकार, गर्भ जैसा स्थान, जहाँ "कुलारकलंतसमो" (दे २,४४ ; पाअ)।

कुलंड पुं [कुम्भाण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति (पव १,९)।

के सक [अक] जीना, रहना। कइ, केअइ ; (प्राप्र)।

के वि [कियत्] कितना ? °चिरेण अ [°चिरेण] कितने समय में ? (अंत २४)। °चिरं अ [°चिरं] कितने समय तक ? (पि १४६)। °चिरेण देखो °चिरेण (पि १४२)। °दूर न [°दूर] कितना दूर ? "केत्तिय पुरी लंका ?' (पउम ४८, ४७)। °महालय वि [°महालय] कितना बड़ा ? (णाया १,८)। °महालिय वि [°महालिय] कितना बड़ा ? (पणण २१)। °महिड्ढिय वि [°महर्द्धिक] कितनी बड़ी ऋद्धि वाला, (पि १४६)।

केअइ पु [कैकय] देश विशेष, जिसका आधा भाग आर्य और आधा भाग अनार्य है, सिन्ध देश को लेकर यह देश, (इक)। "केयइमरुं च मालिव मलिवं" (ती १, पत्र ६७ टी)।

केअई स्त्री [कैकयी] देश विशेष, कैकय का राजा, (सुर ३ ८, २६)।

केअय) पु [केतक] १ एक विशेष, कैकय का राजा, इसके केयय) (गउड)। २ न कैकय-पुष्प, कैकय का फूल (गउड)। ३ चिह्न, निशान, (ठा १०)।

केअव देखो केयव (अंत २६)।

केआरव देखो केयारव (अंत २६)। "जे केयारवेण [illegible]

केआ स्त्री [दे] लता, बल्ली, (दे ३, ४४ ; पाअ ११३)।

केआर पु [केदार] १ क्षेत्र, खेत, (सुर ३, [illegible] ; पाअ, स ६३०)। [illegible]

केआरवाल पु [दे] एक विशेष [illegible]

केआरिआ स्त्री [केदारिका] [illegible]

केउ पुं [केतु] १ ध्वज, पताका ; (सुपा २२६)। २ ग्रह विशेष ; (सुज्ज २० , गउड)। ३ चिन्ह, निशान ; (भग)। ४ कुशा-सूत्र, दर्भ का सूता ; (गउड)। °क्खेत्त न [°क्षेत्र] मेरु-पर्वत से ही जिसमें अन्न पैदा हो सकता हो ऐसा देश-विशेष ; (आव १)। °मई स्त्री [°मती] किन्नरेन्द्र और किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष ; (भग १०, ५ ; णाया १)। °माल न [°माल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

केउ पुं [दे] कन्द, कोंदा ; (दे २, ४४)।

केउग) पुं [केतुक] पताल-कदंब विशेष ; (सम ७१ ;
केउय) ठा ४, २—पत्र २२६)।

केऊर पुंन [केयूर] १ हाथ का आभूषण-विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द ; (पाम ; भग ६, ३३)। २ पुं. दक्षिण समुद्र का पताल-कलश ; (पव २७२)।

केऊर पुं [केयूर] दक्षिण समुद्र का एक पताल-कदंब ; (इक)।

केकाय अक [केकाय्] 'के के' आवाज करना। वह—"पेच्छह तमो जह्मिं केकायंतं महीवइयं" (पउम ४४, ६९)।

केंसुअ देखो किंसुअ (कुमा)।

केई स्त्री [केकयी] १ राजा दशरथ की एक रानी, केकय देश के राजा की कन्या ; (पउम २२, १०८ ; हरि पृ ३७)। २ आठवें वासुदेव की माता ; (सम १५२)। ३ अपर-विदेह के विमलपुर-वासुदेव की माता ; (आवम)।

केकय पुं [केकय] १ देश-विशेष, यह देश प्राचीन बाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर तथा सिंधु देश की सीमा पर स्थित है ; २ इस देश का रहने वाला, (पउम १, १)। ३ केकय देश का राजा ; (पउम २२, १०८)।

केकसिया स्त्री [कैकसिका] रावण की माता का नाम ; (पउम ७, ६४)।

केका स्त्री [केका] मयूर-शब्द। रव पुं [रव] मयूर का आवाज, मयूर-वाणी (णाया १, १ पत्र २६)।

केकाइय न [केकायित] मयूर का शब्द (सुपा ३६)।

केकई देखो केकई (पउम २८, २६)।

केककसी स्त्री [कैकसी] रावण की माता (पउम १०३, १६६)।

केकाइय देखो केकाइय (सुपा ३ ; ४—पत्र ६५)।

केकई देखो केकई (पउम २, ६१, २०, १३८)।

केकाइय देखो केकाइय ; (गउड)।

केकेअ वि [कैकेय] केकय की बात ; (ठा ६)।

केढव) पुं [कैटभ] १ इस नाम का एक प्रतिवासुदेव
केढव) राजा ; (पउम ६,१६६)। २ दैत्य-विशेष ; (हे १,२४० ; कुमा)। °रिउ पुं [°रिपु] श्रीकृष्ण, नारायण ; (कुमा)।

केत्तिअ) वि [कियत्] कितना ? (हे २, १५७ ; कुमा ;
केत्तिल) षड् ; महा)।

केत्तुल (अप) ऊपर देखो ; (कुमा ; षड् ; हे ४,४०८)।

केत्थु (अप) अ [कुत्र] कहां, किस जगह ? (हे ४,४०६)।

केदह देखो केत्तिअ ; (हे २,१५७ ; प्राप्र)।

केम) (अप) देखो कहं ; (षड् ; हे ४, ४०१ ;
केव) ४१८)।

केय न [केत] १ गृह, घर ; २ चिह्न, निशानी ; (पव ४)।

केयण न [केतन] १ वक्र वस्तु, टेढ़ी चीज ; २ चोरी का हाथा ; (ठा ४, २—पत्र २१८)। ३ संकेत, संकेत-स्थान ; (पव ४)। ४ धतूरे की मूल ; (दस ६)। ५ मछली पकड़ने की जाल ; (सूअ १, ३, १)। ६ स्थान, जगह ; (आचा)।

केयय देखो केकय ; (सुपा १४२)।

केर) वि [दे. संबन्धिन्] संबन्धी वस्तु, संबन्धी चीज ;
केरय) (स्वप्न ५१ ; हे ४, ३६६ ; ३७३ ; प्राप्र ; भवि)।

केरव न [कैरव] १ कुमुद, सफेद कमल ; (पाम ; सुपा ४६)। २ कैरव, कपट ; (हे १, १६२)।

केरिच्छ वि [कीदृक्ष] कैसा, किस तरह का ? (हे १, १०५ ; प्राप्र ; काल)।

केरिस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का ? (प्राप्र)।

केरी स्त्री [कर्कटी] वृक्ष-विशेष, करीर का गाछ ; "निंबेबोरिकेरि—" (उप १०३१ टी)।

केल देखो कायल=कदल ; (हे १, १६७)।

केलाइय वि [समारचित] सजाया हुआ ; (कुमा)।

केलाय सक [समा+रचय्] सजाना, साफ करना ठीक करना। केलायइ , (हे ४, ६६)।

केलास पुं [कैलास] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पर्वत-विशेष , (से ६, ७३ ; गउड , कुमा)। २ इस नाम का एक नाग-राज ; (इक)। ३ इस नाग-[illegible] आवास-पर्वत ;

(टी ४, २)। ५ मिट्टी का एक तरह का पात्र ; (निर १, ३)। देखो कइलास।

केलि देखो कयलि ; (कुमा)।

केलि) स्त्री [केलि, °ली] १ क्रीडा, खेल, गम्मत; (कुमा; केली) पाअ ; कप्पू)। २ परिहास, हँसी, ठट्ठा ; (पाअ ; औप)। ३ काम-क्रीडा ; (कप्पू , औप)। °आर वि [°कार] क्रीडा करने वाला, विनोदी ; (कप्पू)। °काणण न [°कानन] क्रीडोद्यान, (कप्पू)। °किल, °गिल वि [°किल] १ विनोदी, क्रीडा-प्रिय ; (सुपा ३१४)। २ व्यन्तर-जातीय देव-विशेष , (सुपा ३२०)। ३ स्थान-विशेष , (पउम ५५, १७)। °भवण न [°भवन] क्रीडा-गृह, विलास-घर ; (कप्पू)। °विमाण न [°विमान] विलास-महल ; (कप्पू)। °सयण न [°शयन] काम-शय्या ; (कप्पू)। °सेज्जा स्त्री [°शय्या] काम-शय्या, (कप्पू)।

केली देखो कयली ; (हे १, १२०)।

केली स्त्री [दे] मैथुनी, कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री , (दे २, ४४)।

केलीगिल वि [कैलीकिल] केलीकिल स्थान में उत्पन्न, (पउम ५५, १७)।

केव° देखो के° ; (भग ; पण्ण १७—पत्र ५४५ , विसे २८६१)।

केवँ (अप) देखो कहँ , (कुमा)।

केवइय वि [कियत्] कितना ? (सम १२४ ; विसे ६४६ टी)।

केवट्ट पु [कैवर्त्त] धीवर, मल्लाह , (पाअ ; स २५६ ; हे १, ३०)।

केवड (अप) देखो केत्तिअ , (हे ४, ४०८ ; कुमा)।

केवल वि [केवल] १ अकेला, असहाय ; (ठा २, १ ; औप)। २ अनुपम, अद्वितीय ; (भग ६, ३३)। ३ शुद्ध, अन्य वस्तु से अ-मिश्रित, (ठा ४)। ४ सम्पूर्ण , परिपूर्ण ; (निर १, १)। ५ अनन्त, अन्त-रहित ; (विसे ८४)। ६ न. ज्ञान-विशेष, सर्वत्र ज्ञान, भूत, भावि वगैरे सर्व वस्तुओं का ज्ञान, सर्वज्ञता; (विसे ८०७)। °कप्प वि [°कल्प] परिपूर्ण, सम्पूर्ण , (ठा २, ४)। °णाण न [°ज्ञान] सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान ; (ठा २, १)। °णाणि, °नाणि वि [°ज्ञानिन्] १ केवल-ज्ञान वाला, सर्वज्ञ , (कप्प, औप)। २ पु. इस नाम के एक अर्हत् देव, अतीत उत्सर्पिणी-काल के प्रथम तीर्थङ्कर ; (पव ६)। °णाण, °नाण, °न्नाण °णाण ; (विसे ८२६ ; ८२६ ; ८२३)। °दंसण न [°दर्शन] परिपूर्ण सामान्य बोध ; (कम्म ४, ११)।

केवलं अ [केवलम्] केवल, फक्त, मात्र ; (स्वप्न ४१, ६३, सुपा)।

केवलाभ सक [समा+रभ्] आरम्भ करना, शुरू करना ; केवलाभए ; (भवि)।

केवलि वि [केवलिन्] केवल ज्ञान वाला, सर्वज्ञ ; (भग °पक्खिय वि [पाक्षिक] १ स्वयंबुद्ध, २ . जिनदेव, तीर्थंकर , (भग ६, ३३)।

केवलिअ वि [केवलिक] १ केवलज्ञान वाला , (भग) २ परिपूर्ण, सम्पूर्ण ; " सामाइयं केवलियं पच्चक्खं " (वि २६८१)।

केवलिअ वि [कैवलिक] १ केवल ज्ञान से सम्बन्ध रखने वाला ; (द १७)। २ केवलि-प्रोक्त ; (सूम १,१३ ३ केवल-ज्ञानि-सम्बन्धी, (ठा ४, २)। ४ न. केवल ज्ञान सम्पूर्ण ज्ञान ; (भाव ४)।

केवलिअ न [कैवल्य] केवल ज्ञान ; " केवलिए सम्मं " (सम ६७ टी ; विसे ११८०)।

केस पु [केश] केश, बाल , (उप ७६८ टी , प्र २६)। °पुर न [°पुर] वैताढ्य पर स्थित एक नि घर-नगर , (इक)। °लोअ पु [°लोच] केशों उन्मूलन , (भग ; पंचा २, ४)। °वाणिज्ज [°वाणिज्य] केश वाले जीवों का व्यापार ; (८, ५)। °हत्थ, °हत्थय पु [°हस्त, °क] के पाश, समारचित केश, संयत बाल , (कप्प ; पाअ)।

केस देखो किलेस , (उप ७६८ टी , धर्म २२)।

केसर पु [कपीश्वर] उत्तम कपि, श्रेष्ठ कपि, (७२८ टी)।

केसर पुन [केसर] १ पुष्प-रेणु, किञ्जल्क (से ५० ; दे ६, १२)। २ सिद्ध वगैरे के स्कन्ध का केसरा ; (से १, ५० , सुपा २१५)। ३ पु. वृक्ष , (कप्प , गउड , पाअ)। ४ न इस नाम एक उद्यान, काम्पिल्य नगर का एक उद्यान , (उत्त ५ फल-विशेष , (राज)। ६ सुवर्ण, सोना ७ विशेष , (इ १, १४६)। ८ पुष्प-विशेष ११२२)।

वैकुण्ठ पुं [वैकुण्ठ] १ शिव के एकादश रुद्र में से एक रुद्र का नाम ; "वैकुण्ठ च संज्ञितः" (हरिवं ११३ ; सट्ठ ; हुआ)।

वैकुण्ठि पुं [वैकुण्ठिन्] १ शिव, महादेव, कार्तिकेय, (हेम ३२८ टी, मे ८, ३४ ; प्रभा ३, ४)। २ देव-विशेष, वैकुण्ठवासी देवों का निकाय एक देव ; (सम १७४)। ३ पुरुष-विशेष, भगवान् के अनुचर देवविशेष, (सम १८४)। एए पुं [ढक्] देव-विशेष, (ठा २, ३)।

वैकुण्ठिका स्त्री [वैकुण्ठिका] लता करने का यन्त्र के दृष्टान्त, (भग ; विसे २१२० टी)।

वैकुण्ठिल्ल वि [वैकुण्ठवत्] वैकुण्ठ वाला, (सट्ठ)।

वैकुण्ठी स्त्री [वैकुण्ठी] हस्त वैकुण्ठिका, "विरइऊणं विमलं वेकुण्ठिल्लोवमं विमाणं" (महा ३, ६ ; पउम १०६)।

वैकुण्ठ पुं [वैकुण्ठ] १ अर्ध-चक्रवर्ती राजा, (सम)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव, नारायण, (सट्ठ)।

वैकृति वि [वैकृतिन्] वैकृत-युक्त, विकृत ; (विसे ३३६४)।

वैकृति पुं [वैकृति] १ एक वैद्य मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्य ; (राज, भग)। २ असुर-विशेष, असुर के भव को धारण करने वाला एक दैत्य, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ; (मुद्रा ३६२)।

वैकृषि पुं [वैकृषिन्] देखो वैकृष्य ; (पउम ७६, २०)।

वैकृषिक वि [वैकृषिक] वैकृष्य वाला, वैकृष्य युक्त। स्त्री—आ; (सूअ १, ४, २)।

वैकृषी स्त्री [वैकृषी] सातवें वासुदेव की माता ; (पउम २०, १८८)।

वैकृषी स्त्री [वैकृषी] वैकृष्य वाली स्त्री, "विकलकरणी" (उवा)।

वैकृष्य देखो वैकृष्य ; (हे १, २६ ; ८६)।

वैकृष्य वि [वैकृष्य] वैकृष्य-युक्त, विकृष्य का ; (हे १, १ ; सा १२४)।

वैकोश देखो वैकोष ; (हे २, ४१ टी)।

वैकोष देखो वैकोष, (सट्ठ)।

एसो वैकोषंड । (पंक)।

वैकोसाम अ [वि+कस्] विकसना, संकोचना, वैकोसाम (हे ४, १६६)।

वैकोसिय वि [विकसित] विकसित, प्रफुल्ल ; (हुआ, उ १)।

वैकोस पुं [वैकोसिल] १ कैवल, शिव ; (पउम १, ४ ; हुआ २३, सम्मत्त ६१)। २ छन्द का एक भेद, (पिंग)। वैकोस पुं [वैकोस] वैकोसिक-विशेष, वैकोसवंश ; (पउम १०—पत्र १२३)।

वैकोसा स्त्री [वैकोसिका] वैकोसवंश, शिव ; "वैकोसा पंचम सरं" (अनु ; पंक)।

वैकोसा स्त्री [दे] वैकोसा, वस्त्र का प्रकार, (दे २, ४८)।

वैकोसा स्त्री [दे] साहड़ा का अन्न, कणविशेष ; (दे २, ४८ ; पंक)।

वैकोस)न [वैकौतुक] १ कुतूहल, अपूर्व वस्तु देखने का वैकोस) कौतुहल ; (सुर २, २२६)। २ आश्चर्य, विस्मय ; (वज्ज १)। ३ उत्सव ; (राय)। ४ उत्सुकता, उत्कण्ठा ; (पंचा १)। ५ दृष्टि-दोषादि से रक्षा के लिए किया जाता मसी तिलक रक्षा-बन्धनादि प्रयोग ; (राय ; औप, विपा १, १ ; पउ १, २ ; धर्म ३)। ६ सौभाग्य आदि के लिए किया जाता स्नपन, विस्मापन, भूत, होम दोषः कर्म ; (दस १ ; आचा १, १४)।

वैकोहल)देखो कुकुहल, (हे १, ११७ ; १७१ ; २, वैकोहल्ल) ६६ ; कुमा ; प्राप्र)।

वैकोहल्लिय वि [कुतूहलिन्] उत्सुकता, कौतुकी, कुतूहलिन ; (कुमा)।

वैकोहल) देखो कुकुहल, (कुमा ; वि ६१)।

वैकोहल्ल)

वैकोण पुं [वैकोण] देश-विशेष ; (स ४१२)।

वैकोणग पुं [वैकोणक] १ अनार्य देश-विशेष ; (इक)। २ वि. उस देश में रहने वाला ; (पउ १, १ ; विसे १८१२)।

वैक्य पुं [वैक्य] १ इस नाम का एक अनार्य देश ; (पउ १, १)। २ पक्षि-विशेष ; (ठा ७)। ३ द्वीप-विशेष ; (जी ४६)। ४ इस नाम का एक असुर ; (कुमा)। ५ वि. वैक्य देश का निवासी ; (पउ १, १)। रिंखु पुं [रिंखु] वनस्पति-विशेष, (कुमा)। वीर पुं [वीर] इस नाम का एक इंद्र, (अनु)। वीरग पुं [वीरक] एक प्रकार का लड्डू (पिंड ४)। देखो कुंचु।

वैक्विंग स्त्री [वैक्विंक] वाद्य-विशेष (ठा ४, ४)।

कोचिय वि [कुञ्चित] आकुञ्चित, सङ्कुचित, (पण्ह १, ४)।

कोट्टअ न [दे] १ धान्य संबन्धी भूसा, २ गेहूँ आदि धान्य संबन्धी भूसा, "सउअं कोट्टअस्स" (ओघ २२१ भा)।

कोट्ट देखो कुट्ट, (हे १, १११ वि)।

कोट्ट देखो कुट्ट, (हे १, १०१)।

कोट्ट १ [कोष्ठ, कोट्ट] धान्य विशेष, (प्रज्ञा)।

कोट्टग देखो कुट्टग, (पव्व)। 'मेत्तण पु [मित्रक] एक अनार्य देश का नाम (पव्व १)।

कोट्टग १ [कुट्टाक] पक्षि विशेष, (ओघ)।

कोट्टगिया स्त्री [दे] १ स्त्रियों का अन्तर-वस्त्र, साड़ी, घाघरी, २ घर का एक भाग, (दे २, ४०)।

कोट्टिम १ [दे] फर्श किया हुआ भाग में पृथ्वी का कठिन किया हुआ भाग, (दे २, ४८)।

कोट्टिया देखो कुट्टिया, (पव्व १, ६)।

कोट्टिल्ल देखो कोट्टिम्ब, (पव्व)।

कोट्ठ देखो कुट्ठ, (हे १, १११)।

कोट्ठ १ [दे] उन्दुर, उन्दुर, धान्य विशेष, (दे २, ४०)।

कोट्ठ देखो कुट्ठ, पाय १, १ सूत्र २, १८)।

कोट्ठ देखो कुट्ठा, (कप्प १, ११ - पत्र २११)।

कोट्ठ १ [कोष्ठ] १ भाजन विशेष, (ठा ८, ४१)। २ गृह, मकान, (हे १, ४८)।

कोट्ठगार पुं [दे] कर्मकार शिल्पी, लुहार, सोनार, (पव्व १, १)। °सा, (कप्प १, १ -पत्र ६४)।

कोट्ठघर न [कोष्ठगृह] १ धान्य कुठार, २ धान्य भण्डार, (पव्व १ सूत्र ४४)।

कोट्ठपुत्तिय [दे] देखो कोट्ठकोत्तिय, (पव्व १, ६— पत्र ८८)।

कोट्ठबुद्ध देखो कुट्ठबुद्ध, (सूत्र १, ५ —पत्र २०१)।

कोट्ठय न [कोष्ठक] कुसूल, धान्य रखने का कोठार, (दस १, ५१, ५२)। °घर न — कोष्ठकगृह, (कुप्र)। °वण्ण वि — कोष्ठकवर्ण (कप्प)।

कोट्ठयार १ [कोष्ठकार] देखो अर्थ का पद कोट्ठ, (पव्व १)।

कोट्ठयिल्ल [दे] देखो कोट्ठपुत्तिय, (दे २, ४०)।

कोट्ठिअ वि [व्याहृत] आहत, बुलाया हुआ, (भवि)।

कोट्ठकुट्टय देखो कुट्ठकुट्टम, (भग ; औप)।

कोट्ठुब्भ देखो कोत्थुभ। वकृ—कोट्ठुब्भमाण, (भग ११६)।

कोट्ठण न [दे] अनीक हित, सूती भलाई, हीनकार्य हित (दे २, ४६)।

कोट्ठिअय पुंस्त्री [दे] नौकर, नया शिष्य, (बृह १)।

कोट्ठुड न [कौटस] १ गोत्र-विशेष, २ पुंस्त्री. कौटस गोत्र में उत्पन्न, (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोट्ठुड वि [कौष्ठ] १ कुक्षि-संबन्धी, उदर से सम्बन्ध रखने वाला, २ न. उदर-प्रदेश, "गणियायारकोट्ठडत्थी (णाया १, १—पत्र ६४)।

कोट्ठुडमास पु [दे.कुत्समाष] काक, कौआ, बायस, "न मणो सयसाहस्सो आसिज्जइ कोट्ठडमासस्स" (उप)।

कोट्ठेभय देखो कुट्ठेभय, (हे १, १६१, कुमा, १६)।

कोट्ठेज्ज देखो कुट्ठेज्ज, (कप्प)।

कोट्ठेज्जण न [दे] स्त्री-सहवास, (दे २,४६)।

कोट्ठेज्जय देखो कुट्ठेज्जय ; (णाया १,८—पत्र १२६)।

कोट्ठेज्जभिन्न वि [दे] आपूरित, पूर्ण किया हुआ, भरा हुआ, (पव्व)।

कोट्ठेभिन्न वि [दे] ऊपर देखा, (दे २, ४०)।

कोट्टुंब पुन [दे] हाथ से आहत जल, "कट्टुंबो अवक- पाणिया" (पाअ)। देखो कोट्टुंब।

कोट्ठ देखो कुट्ठ=कुष्ठ। वकृ कोट्ठिज्जमाण, (भग)। कृ - कोट्टिय, (ओघ ३)।

कोट्टण न [दे] १ नाश, संहार, (दे २, ४६)। २ छेद, विदारण, पूर्ति ; (णाया १,८—पत्र १३६ ; उत्त ३०, सूत्र १, सूत्र ११८)। °पाल पु [पाल] कारागार, जेल रक्षक, (पुप्फ ४१३)।

कोट्टणिया स्त्री [कुट्टनिका] स्त्री वेश का धारण करने वाला, (णाया १,१—पत्र ११०)।

कोट्टग पु [कोट्टाक] १ कोट्ट, कोट, (भग ११ २ वृक्ष का कोटर का दृष्टान्त का स्थान विशेष ११

कोट्टग देखो कुट्टग, (ठा १ ११ ; पव्व १ १

कोट्टर देखो कोट्ट (ठा ४ १ ११ ; ५ ३

कोट्टरग पु [कोट्टराक] वृक्ष का एक भेद वृक्ष [illegible] (पव्व १ ११)।

कोट्टा स्त्री [दे] १ कौंच, चर्चरी; (दे ३,३१—१,१४१)। २ लता, वल्ली; (दे ६६१)।

कोट्टिंद पुं [दे] ३ मेरु, कैलास, अवाड; (दे ३,४७)।

कोट्टिम पुं [कुट्टिम] १ स्नान की भूमि; (पाअ १,१—२ धान-कूटने आदि के लिये बनाई हुई जमीन; (दे ३)। ३ भूमि तल; (सुर ३,१००)। ४ एक या अनेक खंड का बनाया घर; (सवर)। ५ कोष्ठक, खंडा; ६ स्नान की जगह; ७ आंगन का पेड़; (दे १,११६; उत्त)।

कोट्टिम वि [कृत्रिम] बनावटी, बनाया हुआ, अकृत्रिम; (पाअ ३६,३८)।

कोट्टिल) पुं [कौट्टिक] कुटुंब, कुलीन, कुलवान; (पाअ; कोट्टिल्ल) पा १६—पअ ६६; ६६)।

कोट्टी स्त्री [दे] १ वेदि, वेदिका; २ चित्र लगाना; (दे १, ६४)।

कोट्टुट्टुम पुं [दे] हाथ से आहत वाद्य; "कोट्टुम करइ नेत्तो" (दे १,८१)।

कोट्टुम्म अक [रुम्] कैद करना, रक्षा करना। कोट्टुम्म: (हे ४, २६८)।

कोट्टुवाली स्त्री [कोट्टुवाली] वैद्य चुकित्सा की एक शाखा; (राज)।

कोट्ठ देखो कुट्ठ=कोष्ठ; (पाअ १, १; ठा ३, १; कोट्ठग) पण्ण)। २ अन्नादि-कोठा, अन्नादि-कोठा, (औप कोट्ठय) २००, ठा ५.१)। ३ अवयव, कोशी; (ठा ५,३; ठा ८.६)। ४ वैद्य-कोठा; (पाअ २,१)। 'गार न [गार] धान्य रखने का घर; (औप, कप्प)। २ अवयव, अवयव, (पाअ १, १)।

कोट्ठग पुं [कोट्ठगार] अवयव, अवयव, (पएण २, ३)।

कोट्ठि वि [कुट्टित] कुटा हुआ; (प्रभा)।

कोट्ठिआ स्त्री [कौष्ठिका] छोटा कोष्ठ, लघु कुटुंब; (उत्त)।

कोट्ठु पुं [कोष्टु] शृगाल, सियार, (पउ)।

कोट्ठुंड देखो कोट्ठंड ; (पाअ ३,१६१)।

कोट्ठुंडिय देखो कोट्ठंडिय ; (कप्प)।

कोट्ठुंब न [दे] कर्ण, कान, कान के ३, ३)।

कोट्ठुंब [दे] देखो कोट्ठिम ; पाअ।

कोट्ठुंब न [कोष्ठ] स्नान घर के पास आग, तेजस; (पाअ १,१६२)।

कोट्ठुल पुं [कोष्ठल] पक्षि-विशेष; (राज)।

कोडाकोडि स्त्री [कोडाकोडि] संख्या-विशेष, करोड़ को करोड़ से गुणने पर जो संख्या हाथ लगे वह; (सम १०१; कम्म; उत्त)।

कोडाल पुं [कोडाल] १ पक्षि-विशेष का प्रवर्तक पुरुष; २ न. पक्षि विशेष; (कप्प)।

कोडि स्त्री [कोटि] १ संख्या विशेष, करोड़, १०००००००; (पाअ १,८; सुर ३, ६७; ४, ६१)। २ अग्र-भाग, अणी, नोक; (नि १३,३६; पाअ)। ३ अंश, विभाग, भाग; "कम्मिअकोडी पाणी दोण्ह वलाणं कोडिकम्मि" (उत्त ३६, ७८)। 'कोडि देखो कोडाकोडि; (सुर २६६)। 'बद्ध वि [बद्ध] करोड़ संख्या बांधा; (उत्त ३)। 'भूमि स्त्री [भूमि] एक जैन तीर्थ ; (ती ४३)। 'सिला स्त्री [शिला] एक जैन तीर्थ ; (पउम ४८, ६६)। 'सुन्न [शून्य] करोड़ो, अनेक करोड़; (सुर ४२०)। देखो कोडी।

कोडिअ न [दे] १ छोटा मिट्टी का पात्र, लघु भाजन; (दे ३,४७)। २ पुं. तिलक, दुर्वल, कुलांगेलक; (पड़)।

कोडिअ पुं [कौटिक] १ एक जैन मुनि; (कप्प)। २ एक जैन मुनि-कुल; (कप्प; ठा ७)।

कोडिअण) न [कौटिकेय] १ इस नाम का एक गण;
कोडिअ) (ठा ७.५८ टी)। २ वार्षिक गोत्र की शाखा का एक गोत्र; (कप्प)। ३ पुं. कौटिकेय गोत्र का प्रवर्तक पुरुष; ४ पि. कौटिकेयगोत्रीय; (ठा ७—पत्र ३८०; कप्प)। ५ पुं एक मुनि, जो निह्नवों का मिथ्या था; (विसे २५५२)। ६ अनगारियों का मिथ्या, एक जैन मुनि; (कप्प)। ७ गोदास-गणों के पांच प्रधान स्थविरों में पांचवें का एक; (ठा ७.५८ टी)।

कोडिअण्ण स्त्री [कौटिकेन्या] कौटिकेय-गोत्रीय स्त्री; (कप्प)।

कोडिअल पुं [दे] तिलक, दुर्वल, कुलांगेलक; (दे ३,४०; पउ)।

कोडिअल देखो कोडिल ; (राज)।

कोडिअल पुं [कौटिय] इस नाम का एक ऋषि, कण्डरीक मुनि; (उत्त १; अणु)।

कोडिअसाल न [कौटिकशाल] कण्डरीक-ऋषि-निर्वाण, (अणु)।

कोडी देखो कोडि, (उत्त, टा ३, १; जी ३७) । °करण न [°करण] विभाग, विभजन; (पिंड ३०७)। °णार न [°नार] इस नाम का सारठ देश का एक नगर, (ती ५६)। °भारसा स्त्री [°भारसा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३६३)। °वरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष; (इक, पत्र १७४)। °वरिसिया स्त्री [°वर्षिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प)। °सर पु [°श्वर] कोटीश, कोटीश्वर, (सुपा ३)।

कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौण्ड गोत्र की एक शाखा रूप है, २ वि. इस गोत्र में उत्पन्न, (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोडुंबि देखो कुडुंबि; (ठा ३, १—पत्र १२५)।

कोडुंबिय पु [कौटुम्बिक] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया, (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का बड़ा आदमी, (पह १,५—पत्र ६४)। ३ वि. कुटुम्ब में नियुक्त, कुटुम्ब से संबन्ध रखने वाला, कुटुम्ब-सम्बन्धी, (महा, जीव ३)।

कोडूसग पु [कोटूपक] अन्न-विशेष, कोदव की एक जाति; (राज)।

कोड्ड [दे] देखो कुड्ड; (दे १,३३; ग ६४१; ६४२; ह ४, ४२२; णाया १, १६—पत्र २१४; उप ८६२; भवि)।

कोड्डम देखो कोड्डुम; (कुमा)।

कोड्डमिअ न [रत्न] रत्ति कोदव-विशेष; (कुमा)।

कोड्डिय वि [दे] कुतूहली, कुतुकी, उत्कण्ठित, (उप ७६८ टी)।

कोढ्ढ } पु [कुष्ठ] रोग-विशेष, कुष्ठ रोग; (पि ६६; णाया
कोढ } १, १३; ओघ २०)।

कोढि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोग से ग्रस्त, कुष्ठ-रोगी; (आचा)।

कोढिअ } वि [कुष्ठिक] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त, (पह २, ५;
कोढिय } विपा १,७)।

कोण वि [दे] १ काला, श्याम वर्ण वाला; (दे २, ४५)। २ पुं. लट्ठ, लकड़ी, यष्टि; (दे २, ४५; निचू १; पाम)। ३ वीणा बजाने की लकड़ी, वीणा वादन-दण्ड, (जीव ३)।

कोण } पुं [कोण] कोना, अन्य, घर का एक भाग,
कोणग } (पउम; दे २, ४५; रंभा)।

कोणय पु [कौणप] राक्षस, पिशाच; (पाम)।

कोणालग पु [कौनालक] जलचर पक्षि-विशेष, (पह १,१)।

कोणाली स्त्री [दे] गोली, गोट, (कुप्र १)।

कोणिअ } पुं [कौणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र, वह कोण,
कोणिग } (अंत; णाया १, १; भग; उत्त)।

कोणु स्त्री [दे] लेखा, रेखा; (दे २, २६)।

कोण्ण पु [दे, कोण] गृह-कोण, घर का एक भाग; (दे २, ४६)।

कोत्तय न [कौतव] मूत्र के रंग से तैयार वस्त्र, (राज)।

कोतुहल्ल देखो कुऊहल; (काल)।

कोत्तलंका स्त्री [दे] दाल पकाने का भगड़, पात्र-विशेष, (दे २, १४)।

कोत्तिअ वि [कौतुकिक] कौतुकी, कुतूहली, (ठा ६,३)

कोत्तिअ पु [कौत्रिक] १ भूमि-शयन करने वाला व्रत-ग्रन्थ, (औप)। २ न. एक प्रकार का मद्य, (उत्त ६)।

कोत्थ देखो कोच्छ = कौत्स।

कोत्थर न [दे] १ विज्ञान; (दे २, १३)। २ कोट, गढ़वर, (सुपा २४७, निचू १६)।

कोत्थल पु [दे] १ कुशूल, कोष्ठ, (दे २,४८)। २ कलश, थैला; (ग ११२)। °कारा स्त्री [°कारी] ममरी, कोष्ठ-विशेष, (कुप्र १)।

कोत्थुभ } पु [कौस्तुभ] वासुदेव के वक्ष स्थल का
कोत्थुह } मणि; (ती १०, प्राय, महा, गा १६१
कोथुभ } पह १, ४)।

कोदंड पु [कोदण्ड] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप, (सण ११)।

कोदंडिम } देखो कु-दंडिम; (ज ३, कप्प)।
कोद्दिय }

कोदूसग देखो कोडूसग; (भग ६, ७)।

कोद्दव देखो कुद्दव, (भवि)।

कोद्दाल देखो कुद्दाल; (पह १, १—पत्र २३)।

कोद्दालिया स्त्री [कुद्दालिका] छोटा कुदार, कुदाली, (विपा १, ३)।

कोध पु [कोध] इस नाम का एक राजा, जिसने दीक्षा भरत के साथ जैन दीक्षा ली थी; (पउम ८५, ४)।

कोप्प देखो कुप्प=कुप्। कोप्पइ, (भवि)।

कोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह, (दे २, ४५)।

कोप्प वि [कोप्य] द्वेष्य, अप्रीतिकर, "अकोप्यजयकुमर" (पह १, ३)।

कोसल पुं [कौसल] १ कुश का बनाया नगर ; (हरि १११ अ ; भूमा ; वै १, १३१) । २ नगरी का निवासी, राजा आदि ; (हरि ३०) ।

कोसिनी स्त्री [कौसिनी] विद्या-विशेष ; (पद्म ३, १०६) ।

कोसुम) पुं [कौसुम] पक्षि-विशेष ; (हरि ; हरि) ।
कोसुमक)

कोसुम्भ वि [कौसुम्भ] १ कुसुम के संबन्ध रखने वाला, कुसुम-संबन्धी ; (वि १, ३१) । २ कुसुम-संबन्धी ; (पद्म) । ३ कुसुम्भ में उत्पन्न, (वै १, ७१) । स्त्री—सिया. ङी, (हरि १४) । नियम न [कृत्य] वैदक शास्त्र-विहित जिसमें कपड़ों के स्वच्छ-संबन्धी कर्म है ; (वि १, ३—७२) ।

कोसुमी स्त्री [कौसुमी] विद्या-विशेष ; (पद्म ३, १३३) ।

कोसुम्बा स्त्री [कौसुम्बिका] औषधि-विशेष के एक प्रकार, जो कुसुम की सूखी के साथ खाने वाली थी, (वि १४१) ।

कोसुरी स्त्री [दे] दुर्गन्धि, बदबू की दुर्गन्धि ; (दे १, ४८) ।

कोसुरी स्त्री [कौसुरी] १ नगर छोटे की दुर्गन्धि ; (दे १, ४८) ; २ कस्तूरी, कस्तूरी ; (हरि ; पद्म ११) । ३ इस नाम की एक नगरी ; (पद्म ३६, १००) । ४ कौसिक की दुर्गन्धि ; (पद्म) । कोसुरु पुं [कौरव] राजा, वीर ; (पद्म ११) । कोसुरुत्व पुं [कौरवत्व] राजापन ; (वि ३११) ।

कोसुरुदिया देखो कोसुरुया ; (भाग १, १—भाग १००) ।

कोसुरुरी देखो कोसुरुअरी ; (भाग १, १) ।

कोसुरुया) पुं [दे] वर्ष के बीच में होने वाले का नाम कुछ
कोसुरुवा) प्रकार-विशेष ; (भाग १, १—भाग ११६) ।

कोसुरुवी स्त्री [दे] वर्ष के बीच में होने वाला ; (कुछ ३) ।

कोसुरु पुं [कौरव] वंश-विशेष ; (पद्म १, १—पद्म ८) ;

कोसुरु) पुं [कौरव्य, क] १ वंश-विशेष ; (पद्म) ।
कोसुरुअ)

कोसुरुढ़ा) न. इस नाम का सुगन्धित (सौरभ) द्रव्य का
कोसुरुढ़ा) एक प्रकार ; (वै १) ; २ कोसुरुढ़ा द्रव्य का पूरा ; (पद्म ९, ४ ; वै १) ।

कोसुरुअ) पुं [कौरव] वर्णसंकर जाति, जात की कोई
कोसुरुअ) (पद्म) । " कस्यपे कोसुरुअ जस्मा " (द्र (१—भाग १८६) ।

कोसुरुव पुंस्त्री [कौसुरुव] १ कुरु-वंश में उत्पन्न ; (हरि १११ ; द्र १) । २ कौसुरुव-संबन्धी ; ३ पुं उक्त नाम-वाली राजा द्रव्यादि ; (हरि १) ।

कोसुरुवया स्त्री [कौसुरुवया] इस नाम की नदी द्रव्य की एक मूर्छना ; (द्र ७) ।

कोसुरुट) देखो कोसुरुट ; (भाग १, १—भाग १६ ;
कोसुरुटिय) कथ ; पद्म १२, ८ ; हरि ; द्र) ।
कोसुरुट)

कोसुरु पुं [दे] प्रेत, भूत, राक्षस ; (दे १, ४१) ।

कोसुरु पुं [क्रोड] १ सूअर, बराह ; (पद्म १, १—भाग ७ ; ८ १११) । २ उपसमुद्र, कोना ; " कोसुरुअ— " (पद्म) ।

कोसुरु पुं [कोल] १ वेर-विशेष ; (पद्म ८८, ६६) । २ सूत, बढ़ई ; (पद्म ३६) । ३ सूअर, बराह, सूअर ; (उप ३२० टी ; भाग १, १ ; कुमा ; पद्म) । ४ मूर्छित के प्रकार का एक जन्तु ; (पद्म १, १—भाग ३) । ५ अन्न-विशेष ; (पद्म ५) । ६ लोहे का एक नीच जाति ; (आचा १) । ७ बढ़ई-सूत्र, बैल का बच्चा ; ८ बढ़ई-जात, बैल ; (पद्म ५, १ ; भाग १, १०) । 'पाल न [पाल] अन्न-विशेष, जहाँ औषधादिक अनाज् का संग्रह है, वह अन्न संचित है ; (वै ४६) । 'पाल पुं [पाल] देश-विशेष, कोसल का नरेश्वर ; (द्र १, १—भाग १०३) । 'सुअर, 'सुअर पुंस्त्री [शूकर] १ बड़ा सूअर, शूकर की एक जाति, जंगली बराह ; (प्रश्न १, १, ४) । २ निकम्मा कुत्ता ; (पद्म ११) । स्त्री—सिया ; (पद्म ११) । 'सास पुं [श्वास] बाघ, बघेरा ; (पद्म ३६) ।

कोसुरु वि [कौल] १ कील के समान, कीलिका आदि का आकार ; २ कीलिका आदि से संबन्ध रखने वाला ; " कोसुरु पाणी कमा सो कण्ठ मणी " (कप्प) । ३ न. वस्त्र-विशेष ; (पद्म ११) । 'चुरण न [चूर्ण] बेर का चूर्ण, बेर का सत्तू ; (पद्म ५, १) । 'तिलय न [तिलक] बेर की गुठली ; (पद्म ५, १०) ।

कोसुरुद पुं [दे] शिव, महादेव ; (दे १, ४५ पद्म) । २ गुरु, बाप ; (दे १, ४१) ।

कोसुरुद पुं [कौसुद] इस नाम का नगर द्रव्य इस नाम का राजा ; (भाग १) ।

कोसुरुसियों का [कौसी, कौसकी] वेद-शाखा की ; (भाग १) ।

कोडी देखो कोडि ; (उप ; टा ३, १ , जी ३७) । °करण न [°करण] विभाग, विभजन ; (पिंड १०७) । °णार न [°नार] इस नाम का गोरट्ठ देश का एक नगर, (ती ५६)। °मातसा स्त्री [°मातसा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७—पत्र ३६३) । °वरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष ; (इक; पव १७४)। °वरिसिया स्त्री [°वर्षिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा , (कप्प) । °सर पुं [°श्वर] कपर्द-पति, कौड़ीश, (सुपा ३) ।

कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौण्ड गोत्र की एक शाखा रूप है ; २ वि. इस गोत्र में उत्पन्न , (ठा ७—पत्र ३६०) ।

कोडुंबि देखो कुडुंबि ; (ठा ३, १—पत्र १२५) ।

कोडुंबिय पु [कौटुम्बिक] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया; (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का बड़ा आदमी, (पंह १,५—पत्र ६४)। ३ वि. कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्ब से संबन्ध रखने वाला, कुटुम्ब-संबन्धी ; (महा, जीव ३) ।

कोडूसग पु [कोद्रूषक] अन्न-विशेष, कोदव की एक जाति ; (राज) ।

कोड्ड [दे] देखो कुड्ड ; (दे ३,३३ ; स ६४१ ; ६४२ ; हे ४, ४२२ ; आया १, १६—पत्र २२४ , उप ८६२ , भवि) ।

कोड्डम देखो कोट्टुम ; (कुमा) ।

कोड्डमिअ न [रत] रति-क्रीड़ा-विशेष , (कुमा) ।

कोड्डिय वि [दे] कुतूहली, कुतुकी, उत्कण्ठित, (उप ७१८ टी)।

कोड्ढ पुं [कुष्ठ] रोग-विशेष, कुष्ठ रोग, (पि ६६; आया १, १३ ; ओघ २०) ।

कोढि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोग से ग्रस्त, कुष्ठ-रोगी ; (आचा) ।

कोढिअ वि [कुष्ठिक] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त, (पंह २, ५ ; विपा १,७) ।

कोण वि [दे] १ काला, श्याम वर्ण वाला ; (दे ३, ४६) । २ पुं. लकुट, लकड़ी, यष्टि; (दे ३, ४६ , निचू १ ; पाम) । ३ वीणा बजाने की लकड़ी, वीणा-वादन-दण्ड, (जीव ३)।

कोण पुन [कोण] कोण, अंश, घर का एक भाग, कोणग (गउड ; दे ३, ४६ ; रंभा) ।

कोणय पु [कौणप] राक्षस, पिशाच ; (पाम) ।

कोणालग पुं [कोलालक] जलचर पक्षि-विशेष , (पंह १,१) ।

कोणाली स्त्री [दे] गंडी, गोल, (पिंड १) ।

कोणिअ पुं [कोणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र, वृद्धि
कोणिग (भग, णाया १, १ ; भग , उत्त) ।

कोणु स्त्री [दे] लेखा, रेखा ; (दे ३, ३६) ।

कोणग पु [दे. कोण] घर का एक भाग , (दे ४, ४६) ।

कोतव न [कौतव] मूषक के रोम से निष्पन्न वस्त्र, (राज) ।

कोतुहल देखो कुऊहल ; (काल) ।

कोत्तअंका स्त्री [दे] दाम पगारने का भाग, पत्र-विशेष; (दे ३, १४) ।

कोत्तिअ वि [कौतुकिक] कौतुकी, कुतूहली, (दा १०)

कोत्तिअ पु [कोत्रिक] १ भूमि-शयन करने वाला साधु, प्रत्येक बुद्ध , (ओघ) । २ न. एक प्रकार का मद्य ; (ठा ३) ।

कोत्थ देखो कोच्छ = कौत्स ।

कोत्थर न [दे] १ विस्तर , (दे ३, १३) । २ कोट, गढ़वर , (सुपा २४७ ; निचू १६) ।

कोत्थल पु [दे] १ कुशूल, कोठा, (दे ३,४८)। २ कलार, थैला; (स १६२)। °कारा स्त्री [°कारी] मलारी, कोट-विशेष (कुप्र १) ।

कोत्थुभ
कोत्थुह
कोथुभ } पु [कौस्तुभ] वासुदेव के वक्षःस्थल का मणि ; (ती १० ; प्राप्र ; मद्र ; सा १११, पंह १, ४) ।

कोदंड पु [कोदण्ड] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप , (स १६) ।

कोदंडिम
कोदंडिय } देखो कु-दंडिम ; (जं २ ; कप्प) ।

कोद्दूसग देखो कोडूसग ; (भग ६, ७) ।

कोद्दव देखो कुद्दव ; (भवि) ।

कोद्दाल देखो कुद्दाल ; (पंह १, १—पत्र २२) ।

कोद्दालिया स्त्री [कुद्दालिका] छोटा कुदाल, कुदाली, (विपा १, २) ।

कोध पु [कोध] इस नाम का एक राजा, जिसने दशरथ भरत के साथ जैन दीक्षा ली थी ; (पउम ८६, ४) ।

कोप्प देखो कुप्प=कुप् । कोप्पइ ; (नाट) ।

कोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह ; (दे ३, ४६) ।

कोप्प वि [कोप्य] द्वेष्य, अप्रीतिकर ; "अकोप्पत्तणेण" (पंह १, ३) ।

कोप्पर पुं [कूर्पर] १ हाथ का मध्य भाग ; (भवि ३६६ भा ; कुमा ; हे १, १२४) । २ नदी का किनारा, कूल, तीर ; (भवि ३०) ।

कोवेरी स्त्री [कौवेरी] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १४१) ।

कोसग) पुं [कोशक] पक्षि-विशेष ; (अंत ; औप) ।
कोसगक)

कोसल वि [कोमल] मृदु, सुकुमार ; (सो १० ; पाम ; कप्पू) ।

कोसार वि [कौमार] १ कुमार से संबन्ध रखने वाला, कुमार-संबन्धी ; (विपा १, ७१) । २ कुमारी-संबन्धी ; (पाम) । ३ कुमारी में उत्पन्न ; (हे १, ८१) । °भिच्च न [°भृत्य] वैद्यक शास्त्र-विशेष, जिसमें बालकों के स्वास्थ्य-संबन्धी कार्य है ; (विपा १, ७—पत्र ७६) ।

कोसारी स्त्री [कौमारी] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३७) ।

कोसुइया स्त्री [कौमुदिका] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक देवी, जो कार्तिक की पूर्णिमा के समय बजाई जाती थी ; (विपा १४१ ;) ।

कोसुई स्त्री [दे] पूर्णिमा, कौदी की पूर्णिमा ; (दे २, ४८) ।

कोसुई स्त्री [कौमुदी] १ शरद् ऋतु की पूर्णिमा ; (दे २, ४८) । २ चन्द्रिका, चाँदनी ; (औप ; पाम ११ टी) । ३ इस नाम की एक लता ; (पउम ३६, १००) । ४ कार्तिक की पूर्णिमा ; (गच्छ) । °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा, चाँद ; (पाम ११ टी) । °महूसव पुं [°महोत्सव] उत्सव-विशेष ; (णि ३६६) ।

कोसुइया देखो कोसुइया ; (राया १, ४—पत्र १००) ।

कोसुई देखो कोसुई-कोसुदी ; (राया १, १ २) ।

कोसुग) पुं [दे] नई के मध्य हुए कुएँ का बना हुआ
कोसुय) प्राकृत-विशेष ; (राया १, १७—पत्र १२६) ।

कोसुंबी स्त्री [दे] नई के मध्य हुआ कुआ ; (दे २) ।

कोसेरा पुं [कोशेरु] पक्षि-विशेष ; (पउम १, १—पत्र ८) ।

कोसेट्ठ) पुं [कोशेष्ट, क] १ वृक्ष-विशेष ; (पाम) ।
कोसेट्ठग) २ न. इस नाम का सुगन्धित (नवीन) गन्ध का एक द्रव्य ; (पव १) । ३ कोशस्थ वृक्ष का फूल ; (पउम १, ४ ; उत्त १) ।

कोसेय) पुं [कौशेय] रेशमी कपड़ा, रेशम का कपड़ा;
कोसेय) (पाम) । °वत्थ न [°वस्त्र] वही अर्थ ; " कोसेयवत्थपरिहिया " (उप ४, १—पत्र १२६) ।

कोसेय्य पुंस्त्री [कौशेय] १ कुरु-वंश में उत्पन्न ; (सम ११२ ; उत्त ६) । २ कौशेय-गोत्रीय ; ३ पुं. भावी चक्रवर्ती राजा प्रद्मदत्त ; (जीव ३) ।

कोसेय्यायण स्त्री [कौशेयायन] इस नाम की पहले ग्राम की एक कुलाङ्गना ; (उत्त ७) ।

कोसेरिट) देखो कोसेट्ठ ; (राया १, १—पत्र १६ ;
कोसेरिय) कप्प ; पउम ४१, ८ ; औप ; उवा) ।
कोसेट्ठ)

कोल पुं [दे] क्रीड़ा, खेल, गल्ला ; (दे २, ४६) ।

कोल पुं [क्रोड] १ सूअर, वराह; (पिंड १, १—पत्र ७; सं १११) । २ उच्छिष्ट, जूठा ; " कोलीकय—" (गउड) ।

कोल पुं [कोल] १ देश-विशेष ; (पउम ८८, ६६) । २ पुरुष, कर्म-कौंट; (सम ३८) । ३ सूअर, वराह, सूकर; (उत्त ३२० टी ; राया १, १; कुमा ; पाम) । ४ मूषिक के आकार का एक जन्तु ; (पिंड १, १—पत्र ७) । ५ मत्स्य-विशेष ; (पन्न १) । ६ मनुष्य की एक नीच जाति ; (आचा १) । ७ बदरी-वृक्ष, बैर का झाड़ ; ८ न. बदरी-फल, बैर ; (उत्त ६, १ ; सम ६, १०) । °पाग न [°पाक] नगर-विशेष, जहाँ श्रीहरिवंश कथानक का मंदिर है, यह नगर दक्षिण में है ; (सं ४६) । °पाल पुं [°पाल] देव-विशेष, वरसेन्द्र का लोकपाल ; (उप ३, १—पत्र १०७) । °सुणय, °सुणह पुंस्त्री [°शुनक] १ बड़ा सूअर, सूअर की एक जाति, जंगली वराह ; (आचा २, १, ६) । २ शिकारी कुत्ता ; (पण्ण ११) । स्त्री— °णिया ; (पण्ण ११) । °वास पुंन [°वास] कट, लकड़ी ; (सम ३६) ।

कोल वि [कौल] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी ; २ तान्त्रिक मत से संबन्ध रखने वाला ; " कोलो वच्चो कप्पं सो णाइ रम्मो " (कप्पू) । ३ न. बदर-फल-संबन्धी ; (भग ६, १०) । °चुण्ण न [°चूर्ण] बैर का चूर्ण, बैर का सत्तु ; (उत्त ६, १) । °टिय न [°ष्टिक] बैर की गुठली ; (भग ६, १०) ।

कोलंब पुं [दे] सिर, स्थली ; (दे २, ४७ ; पाम) । २ द्वीप, धर ; (दे २, ४७) ।

कोलंब पुं [कोलम्ब] वृक्ष की शाखा का बना हुआ अन्न नाल ; (भवि ६) ।

कोलंबिणी स्त्री [कोली, कोलकी] केल-जातीय स्त्री ; (भवि ४) ।

कोडी देखो कोडि ; (उव ; ठा ३, १, जी ३७)। °करण न [°करण] विभाग, विभजन, (पिंड ३०७)। °णार न [°नार] इस नाम का सोरठ देश का एक नगर, (ती ५६)। °मातसा स्त्री [°मातसा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७—पत्र ३६३)। °वरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष ; (इक, पत्र १७८)। °वरिसिया स्त्री [°वर्षिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प)। °सर पु [°श्वर] करोड़-पति, कोटीश, (सुपा ३)।

कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौन्स गोत्र की एक शाखा रूप है, २ वि. इस गोत्र में उत्पन्न ; (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोडुंबि देखो कुडुंबि ; (ठा ३, १—पत्र १२६)।

कोडुंबिय पु [कौटुम्बिक] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया, (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का बड़ा आदमी, (पण्ह १,५—पत्र ६४)। ३ वि कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्ब से संबन्ध रखने वाला, कुटुम्ब-संबन्धी, (महा, जीव ३)।

कोडूसग पु [कोद्रूषक] अन्न-विशेष, कोदव की एक जाति ; (राज)।

कोढ [दे] देखो कुढ, (दे २,३३ ; स ६४१ ; ६४२, है ४, ४२२ ; गाथा १, १६—पत्र २२४ ; उप ८६२ ; भवि)।

कोढुम देखो कोद्दुम ; (कुमा)।

कोढुमिअ न [दल] वनि कोद्रव-विशेष ; (कुमा)।

कोढिय वि [दे] कुतूहली, कुतुकी, उत्कण्ठित, (उप ७६८ टी)।

कोढ } पु [कुष्ठ] रोग-विशेष, कुष्ठ रोग, (पि ६६; गाथा
कोढ } १, १३ ; श्रा २०)।

कोढि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोग से ग्रस्त, कुष्ठ-रोगी ; (आचा)।

कोढिक } वि [कुष्ठिक] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त, (पण्ह २, ५ ;
कोढिय } विपा १,७)।

कोण वि [दे] १ काना, श्याम वर्ण वाला ; (दे २, ४६)। २ पुं. लकुट, लकड़ी, यष्टि ; (दे २, ४६, निचू १, पाअ)। ३ वीणा बजाने की लकड़ी, वीणा वादन-दण्ड, (जीव ३)।

कोण } पुन [कोण] कोण, अस्र, घर का एक भाग,
कोणग } (गउड, दे २, ४६ ; रंभा)।

कोणय पु [कौणप] राक्षस, निशाचर ; (पाअ)।

कोणालग पु [कौणालक] अलक्त पक्षि-विशेष, (पण्ह १,१)।

कोणासी स्त्री [दे] गोष्ठी, गोट, (वृह १)।

कोणिअ } पु [कौणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र, कूणिक
कोणिग } (अन्त, गाथा १, १ ; महा ; उव)।

कोणु स्त्री [दे] लेखा, रेखा ; (दे २, ३६)।

कोण्ण पु [दे. कोण] गृह-कोण, घर का एक भाग ; (दे ४६)।

कोत्तय न [कौन्तव] मूलक के रंग से निष्पन्न वस्त्र, (राज)।

कोतुहल देखो कुऊहल ; (काल)।

कोत्तलंका स्त्री [दे] दाल पकाने का भगड, पक-पात्र, (दे २, १४)।

कोत्तिअ वि [कौतुकिक] कौतुकी, कुतूहली, (ठा ३,१)।

कोत्तिअ पु [कौत्रिक] १ भूमि-शयन करने वाला व्यक्ति, प्रस्थ, (सौप)। २ न एक प्रकार का मद्य, (ठा ६)।

कोत्थ देखो कोच्छ = कौत्स।

कोत्थर न [दे] १ विज्ञान ; (दे २, १३)। २ कंथा, गुदड़ी, (सुपा २४७, निचू १६)।

कोत्थल पु [दे] १ कुशूल, कोष्ठ, (दे २,४८)। २ कुल्या, थैला, (स १६२)। °कारा स्त्री [°कारी] मकरी, कीट-विशेष, (वृह १)।

कोत्थुभ } पु [कौस्तुभ] वासुदेव के वक्षःस्थल का
कोत्थुह } मणि ; (ती १०, प्राप्र, महा, ठा ११,
कोथुभ } पण्ह १, ४)।

कोदंड पु [कोदण्ड] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप, (सुर १६)।

कोदंडिम } देखो कु-दंडिम, (ज ३, कप्प)।
कोदंडिय }

कोद्दूसग देखो कोडूसग, (भग ६, ७)।

कोद्दव देखो कुद्दव, (भवि)।

कोद्दाल देखो कुद्दाल, (पण्ह १, १—पत्र २३)।

कोद्दालिया स्त्री [कुद्दालिका] छोटा कुदार, कुदाली, (विपा १, ३)।

कोध पु [कोध] इस नाम का एक राजा, जिसने हरिषेण चक्रवर्ती के साथ जैन दीक्षा ली थी ; (पउम ८६, ४)।

कोप्प देखो कुप्प=कुप्। कोप्पइ, (नाट)।

कोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह, (दे २, ४६)।

कोप्प वि [कोप्य] द्वेष्य, अप्रीतिकर, "अकोप्पवयणो" (पण्ह १, ३)।

कोसल पुं [कौशल] १ राज्य का अमुक प्रदेश ; (कप्प १११ ; उत्त ९, १४) । २ उस का निवासी, वह ; (कप्प ३०) ।

कोसी सी [कौशिकी] नदी-विशेष, (पउम ३, १८३) ।

कोसेय) वि [कौशेयक] रेशमी-विशेष ; (कप्प ; कप्प) ।
कोसेयग)

कोसेय वि [कौशेय] रेशमी, रेशम का ; (औ १० ; पव ; स्वप्न) ।

कोसेय वि [कौशेय] १ कुश के संस्कार वाला काम, कुश-संबन्धी, (ठा ५, ३३) । २ कुशमयी, कुश का बना हुआ ; (पव) । ३ कुशों में उत्पन्न, (ठा ५, ८३) । °कीड—पुं, °की, (भग १४) । °कोसिय [°कौशिक] १ कुश के संस्कार वाला किसी काम के अधिकार-विशेष वाला ; (ठा ५, ३—पव ७३) । °कोसी सी [°कौशी] ऐसा अधिकार-विशेष ; (ठा ५, ३—पव ७३) । °कोसुया सी [°कौसुदिका] औषधि-विशेष की एक जेली, जो कुश की मूल के साथ पकाई जाती थी ; (ठा ५, ३—पव ७३ ;) ।

कोसुं सी [दे] तृणिका, कोई सी तृणिका, (दे २, ४८) ।

कोसुं सी [कौसुदी] १ स्वनाम ख्यात की तृणिका ; (दे २, ४८) । २ कार्तिक, कौमुदी, (कप्प, पव ११ टी) । ३ इस नाम की एक नगरी ; (पउम ३६, १००) । ४ तिथि की एक संज्ञा, (स्वप्न) । °नाह पुं [°नाथ] राजा, चंद्र, (पव ११ टी) । °महसव पुं [°महोत्सव] उत्सव-विशेष, (ठा ३६१) ।

कोसुंडिया देखो कोसुइया, (स्वप्न १, ६—पव १००) ।

कोसुंडी देखो कोसुंडिकी ; (स्वप्न १, १ २) ।

कोसुया) पुं [दे] मद्य के लिए हुए कार्य का नाश हुआ
कोसुया) प्रकार-विशेष ; (स्वप्न १, १७—पव २३६) ।

कोसुयी सी [दे] मद्य के लिए हुआ कार्य ; (दृ ३) ।

कोसु पुं [कोशाम्र] पक्षि-विशेष ; (पउम १, १—पव ८) ।

कोह) पुं [कोशाम्र, °क] १ वृक्ष-विशेष, (पउम) ।
कोहग) २ न इस नाम का नगरादिक (नगरीय) वहां का वृक्ष ; (कप्प १) । ३ कोशाम्र वृक्ष का फल ; पउम १, ४, ८ १) ।

कोह पुं [कोशक] पक्षि-विशेष, सुग्गा, पक्षी की चोंच ; (पउम) । "कलाति कोसा कलाति" (ठा ४—पव १८६) ।

कोसिअ पुं [कौशिक] १ कुशवंश में उत्पन्न ; (स्वप्न १११ ; उत्त १) । २ कौशल-संबंध ; ३ पुं अमुक व्यवहारी नाम इन्द्र ; (जीव ३) ।

कोसिआयणी सी [कौशिकायनी] इस नाम की साधु श्रमणी की एक शिष्या ; (उत्त २) ।

कोसिंद) देखो कोसेंद ; (स्वप्न १, १—पव १६ ;
कोसिंदिय) कप्प ; पउम ४१, ८ ; जीव ; उत्त) ।
कोसेंद)

कोसी पुं [दे] ईख, गेंद, स्वप्न ; (दे २, ४६) ।

कोसी पुं [कोशिन्] १ कुश, घास ; (उत्त १, १—पव ७ ; ग १११) । २ कुशमुट्ठि, कोशा ; " कोसीकय—" (सूत्र) ।

कोसु पुं [कोसु] १ देश-विशेष ; (पउम २८, ६६) । २ कुश, कुश-कीड़े ; (स्वप्न ३८) । ३ कुश, घास, तृण ; (उत्त २२० टी ; कप्प १, १ ; कुस ; पउम) । ४ कुशिक के अपत्य का एक अन्तर ; (पउम १, १—पव ७) । ५ अन्य-विशेष ; (पण्ण १) । ६ संतुष्ट की एक जाति ; (अनु ४) । ७ वर्षा-ऋतु, वैर का साधु ; ८ न, वर्षा-फल, वैर ; (ठा ६, १ ; कप्प ६, १०) । °पास न [°पाश] अस्त्र-विशेष, जहां श्रीकृष्णदेव आदमी का मर्दित है, वह अस्त्र-विशेष में है ; (औ ४६) । °पाल पुं [°पाल] देव-विशेष, पार्श्वनाथ का तीर्थकर ; (ठा ३, १—पव १०७) । °सुणय, °सुणह पुंसी [°शुनक] १ बड़ा कुत्ता, कुत्ता की एक जाति, जंगली कुत्ता ; (आचा २, १, १) । २ सियारी कुत्ता ; (पण्ण ११) । °सी—णिया ; (पण्ण ११) । °घास पुं [°घास] कास, लकड़ी ; (स्वप्न ३६) ।

कोसु वि [कौसु] १ मांस का उत्पादक, मांसिक मत का अनुयायी ; २ मांसिक मत से संबन्ध रखने वाला ; " कोसुं धम्मं वन्नं सो भक्ष रम्मो" (वज्जा) । ३ न. वह-वध-संबन्धी, (भग ६, १०) । °चुण्ण न [°चूर्ण] वैर का चूर्ण, वैर का साधु ; (ठा ६, ३) । °छिव न [°च्छिवक] वैर की छुरिका ; (भग ६, १०) ।

कोसुंब पुं [दे] सिंह, शंखली ; (दे २, ४५ पण्ण) । २ वृक्ष, घर ; (दे २, ४७) ।

कोसुंब पुं [कोसम्ब] वृक्ष की शाखा का नमा हुआ अग्र भाग ; (अनु ६) ।

कोसुंभिणी सी [कोसुंभी, कोसुंभकी] वेल-जातीय स्त्री ; (अनु ४) ।

कोडी देखो कोडि, (उत्त, ठा ३, १; जी ३०)। °करण न [°करण] विभाग, विभजन, (पिंड ३०७)। °णार न [°नार] इस नाम का सारठ देश का एक नगर; (ती ५६)। °मातसा स्त्री [°मातसा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना; (ठा ७—पत्र ३६३)। °वरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष; (इक, पत्र १७४)। °वरिसिया स्त्री [°वर्षिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा, (कप्प)। °सर पु [°श्वर] करोड़-पति, कोटीश, (सुपा ३)।

कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा रूप है, २ वि इस गोत्र में उत्पन्न, (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोडुंबि देखो कुडुंबि; (ठा ३, १—पत्र १२६)।

कोडुंबिय पु [कौटुम्बिक] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया, (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का बड़ा आदमी, (पंह १,६—पत्र ६४)। ३ वि. कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्ब से संबन्ध रखने वाला, कुटुम्ब-संबन्धी; (महा, जीव ३)।

कोडूसग पु [कोद्रूषक] अन्न-विशेष, कोदव की एक जाति, (राज)।

कोड्ड [दे] देखो कुड्ड; (दे २,३३; स ६४१; ६४२; हे ४, ४२२; णाया १, १६—पत्र २२४, उप ८६२; भवि)।

कोड्डुम देखो कोट्टुम; (कुमा)।

कोड्डुमिअ न [रत] रति क्रीडा-विशेष, (कुमा)।

कोड्डिय वि [दे] कुतूहली, कुतुकी, उत्कण्ठित, (उप ७१८ टी)।

कोढ्ढ } पु [कुष्ठ] रोग-विशेष, कुष्ठ रोग, (पि ६६; णाया
कोढ } १, १३; श्रा २०)।

कोढि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोग से ग्रस्त, कुष्ठ-रोगी; (आचा)।

कोढिक } वि [कुष्ठिक] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त, (पंह २, ५;
कोढिय } विपा १, ७)।

कोण वि [दे] १ काला, श्याम वर्ण वाला, (दे २, ४५)। २ पु लकुट, लकड़ी, यष्टि; (दे २, ४५, निचू १, पाम)। ३ वीणा बजाने की लकड़ी, वीणा वादन-दण्ड, (जीव ३)।

कोण } पुन [कोण] कोण, अंश, घर का एक भाग;
कोणग } (गउड, दे २, ४५; रंभा)।

कोणय पु [कौणप] राक्षस, पिशाच; (पाम)।

कोणालय पुं [कौणालक] अलक्त पक्षि-विशेष, (पंह १,१)।

कोणालो स्त्री [दे] गेंडुली, गोट, (बृह १)।

कोणिअ } पुं [कौणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र, कूणिक
कोणिग } (अंत, णाया १, १; भग; उत्त)।

कोणु स्त्री [दे] लेखा, रेखा; (दे २, २६)।

कोण्ण पु [दे, कोण] घर-कोण, घर का एक भाग, (दे ४६)।

कोत्तव न [कौतव] मूषक के रोम से निष्पन्न वस्त्र, (राज)।

कोतुहल देखो कुऊहल्ल, (काल)।

कोत्तलंका स्त्री [दे] दारु पीसने का मचान, पनकटिया, (दे २, १४)।

कोत्तिअ वि [कौतुकिक] कौतुकी, कुतूहली, (सूत्र १,१)

कोत्तिअ पु [कौप्तिक] १ भूमि-शयन करने वाला तपस्वी, प्रन्थ, (औप)। २ न. एक प्रकार का वस्त्र, (सूत्र १)।

कोत्थ देखो कोच्छ = कौत्स।

कोत्थर न [दे] १ विज्ञान; (दे २, १३)। २ कपड़ा, गद्दा, (सुपा २४७, निचू १६)।

कोत्थल पु [दे] १ कुगूल, कोष्ठ, (दे २,४८)। २ क्रीड़ा शैला, (स १६२)। °कारा स्त्री [°कारी] भमरी, कीट-विशेष, (बृह १)।

कोत्थुभ } पु [कौस्तुभ] वासुदेव के वक्षःस्थल का
कोत्थुह } मणि; (ती १०, प्राप्र, महा, सुर ११,
कोथुभ } पंह १, ४)।

कोदंड पुं [कोदण्ड] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप, (सुर १६)।

कोदंडिम } देखो कु-दंडिम, (ज ३, कप्प)।
कोदंडिय }

कोदूसग देखो कोडूसग, (भग ६, ७)।

कोद्दव देखो कुद्दव, (भवि)।

कोद्दाल देखो कुद्दाल, (पंह १, १—पत्र २३)।

कोद्दालिया स्त्री [कुद्दालिका] छोटा कुदाल, कुदाली, (विपा १, ३)।

कोध पुं [कोध] इस नाम का एक राजा, जिसने दीक्षा भरत के साथ जैन दीक्षा ली थी, (पउम ८५, ४)।

कोप्प देखो कुप्प=कुप्। कोप्पइ, (नाट)।

कोप्प पु [दे] अपराध, गुनाह, (दे २, ४६)।

कोप्प वि [कोप्य] द्वेष्य, अप्रीतिकर, "अकोपणस्स" (पंह १, ३)।

कोप्पर पुं [कूर्पर] १ हाथ का मध्य भाग ; (भवि ११६ मा ; पुला ; हे १, १२४) । २ नदी का किनारा, तट, तीर ; (भवि ३०) ।

कोवेरी स्त्री [कौवेरी] विद्या-विशेष; (पउम ७, १४२) ।

कोसग) पुं [कोशक] पक्षि-विशेष ; (भवि ; भौर) ।
कोसगक)

कोसल वि [कोमल] मृदु, सुकुमार ; (जी १० ; पाम ; कप्पू) ।

कोसार वि [कौमार] १ कुमार से संबन्ध रखने वाला, कुमार-संबन्धी ; (विपा १, ७१) । २ कुमारी-संबन्धी ; पाम) । ३ कुमारी में उत्पन्न ; (दे १, ८१) । °वी—रिया, °री ; (भग १५) । °भिच्च [°भृत्य] वैद्यक शास्त्र-विशेष, जिसमें बालकों के रोग-पोषण-संबन्धी वर्णन है ; (विपा १, ७—पत्र ७५) ।

कोसारी स्त्री [कौमारी] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३७) । मुद्दया स्त्री [कौमुदिका] कार्तिक पूर्णिमा को एक मेला, जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती थी ; (विसे १४५६ ;) ।

कोसुई स्त्री [दे] पूर्णिमा, कोई भी पूर्णिमा ; (दे २, ४८) ।

कोसुई स्त्री [कौमुदी] १ शरद् ऋतु की पूर्णिमा ; (दे २, ८) । २ चन्द्रिका, चाँदनी ; (भवि ; धर्म्म ११ टी) । इस नाम की एक नगरी ; (पउम ३६, १००) । ४ दिवाली की पूर्णिमा ; (गच) । °नाह पुं [°नाथ] राजा, चाँद ; (धर्म्म ११ टी) । °महूसव पुं [°महोत्सव] उत्सव-विशेष ; (वि ३६६) ।

कोसुइया देखो कोमुइया ; (राया १, ६—पत्र १००) ।

कोसुई=कौसुदी ; (राया १, १ २) ।

कोसुंभ) पुं [दे] लाल से रंगे हुए कपड़े का बना हुआ
कोसुंभय) प्रावरण-विशेष ; (राज १, १७—पत्र २२६) ।

कोसुंभी स्त्री [दे] लाल से रंगा हुआ कपड़ा ; (कुप्र ३) ।

कोसुंभु पुं [कौसुम्भ] पक्षि-विशेष ; (पव १, १—पत्र ८) ।

कोसेट्ठ) पुं [कौशेष्ट, °क] १ वृक्ष-विशेष ; (पभा) ।
कोसेट्ठग) २ न. इस नाम का नगर-विशेष (नवर) नगर का ईशान कोण ; (कप्प १) । ३ कौशेष्टक वृक्ष का फूल ; पव १, ४, ४ १) ।

कोसेय) पुं [कौशेय] कोशेटक कीड़ा, रेशम का कीड़ा;
कोसेयग) (पभा) । " कोसारि कोसया कोसेय " (उत्त १, १—पत्र १८६) ।

कोरव्व पुंस्त्री [कौरव्य] १ कुरु-वंश में उत्पन्न ; (सम १५२ ; ठा ६) । २ कौरव्य-गोत्रीय ; ३ पुं आठवाँ चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त ; (जीव ३) ।

कोरव्वीया स्त्री [कौरवीया] इस नाम की षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७) ।

कोरिंट) देखो कोरंट ; (गाथा १, १—पत्र १६ ;
कोरिंटय) कप्प ; पउम ४२, ८ ; भौप ; सवा) ।
कोरंट)

कोल पुं [दे] प्रेता, नेता, गंडा ; (दे २, ४१) ।

कोल पुं [कोड] १ सूअर, वराह; (पव १, १—पत्र ७; स १११) । २ उच्चदंत, केता ; " केतकित्व—" (गउड) ।

कोल पुं [कोल] १ देश-विशेष ; (पउम ८८, ६६) । २ घुण, काष्ठ-कीट; (सम ३६) । ३ सूअर, वराह, सूअर; (ठा ३२० टी ; गाथा १, १; कुमा ; पाम) । ४ मूषिक के आकार का एक जन्तु ; (पव १, १—पत्र ७) । ५ मत्स्य-विशेष ; (धर्म्म ५) । ६ मनुष्य की एक नीच जाति ; (आचा ४) । ७ बदरी-वृक्ष, बैर का गाछ ; ८ न. बदरी-फल, बैर ; (दस ५, १ ; सग ६, १०) । °पाग न [°पाक] नगर-विशेष, जहाँ श्रीकृष्णदेव भगवान् का मंदिर है, यह नगर द्वारिका में है ; (नी ४१) । °पाल पुं [°पाल] देव-विशेष, वर्धमान का लोकपाल ; (ठा ३, १—पत्र १०७) । °सुणय, °सुणह पुं [°शुनक] १ बड़ा कूकर, सूअर की एक जाति, जंगली वराह ; (आचा २, १, ५) । २ शिकारी कुत्ता ; (पण्ण ११) । स्त्री—°णिया ; (पण्ण ११) । °वास पुं न [°वास] कक्ष, लकड़ी ; (सम ३६) ।

कोल वि [कौल] १ कौल का उपासक, तन्त्रिक मत का अनुयायी ; २ तन्त्रिक मत से संबन्ध रखने वाला ; " कोलो धम्मो कस्स णो णाइ रम्मो" (कप्पू) । ३ न. वदर-फल-संबन्धी ; (सग ६, १०) । °चुण्ण न [°चूर्ण] बैर का चूर्ण, बैर का सत्तु ; (दस ५, १) । °तित्थिय न [°तीर्थिक] बैर की गुठली ; (सग ६, १०) ।

कोलंब पुं [दे] सिर, खोपड़ी ; (दे २, ४७ ; पभा) । २ गृह, घर ; (दे २, ४७) ।

कोलंब पुं [कोलम्ब] वृक्ष की खाल का बना हुआ वस्त्र भग ; (भवि १) ।

कोलगिणी स्त्री [कोली, कोलकी] कोल-जातीय स्त्री ; (आचू ४) ।

कोडी देखो कोडि ; (उत्त ; ठा ३, १, जी ३)। °कारण न [°करण] विभाग, विभजन, (विसे ३०७)। °णार न [°नार] इस नाम का सोरठ देश का एक नगर, (ती ५६)। °मातसा स्त्री [°मात्मा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना ; (ठा ७—पत्र ३६३)। °थरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष ; (इक, पव १७४)। °थरिसिया स्त्री [°वर्षिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा, (कल्प)। °सर पु [°श्वर] कराड़-पति, कटोरा, (सुपा ३)।

कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौण्ड गोत्र की एक शाखा रूप है, २ वि. इस गोत्र में उत्पन्न, (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोडुंबि देखो कुडुंबि ; (ठा ३, १—पत्र १२५)।

कोडुंबिय पु [कौटुम्बिक] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया, (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का बड़ा आदमी, (पिंड १,६—पत्र ६४)। ३ वि. कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्ब से संबन्ध रखने वाला, कुटुम्ब-संबन्धी, (सण, जीव ३)।

कोडूसग पु [कोद्रूषक] अन्न-विशेष, कोदव की एक जाति ; (राज)।

कोड्ड [दे] देखो कुड्ड ; (दे २, ३३ ; स ६४१, ६४२, हे ४, ४२२ ; णाया १, १६—पत्र २२४ ; उप ८६२, भवि)।

कोड्डम देखो कोट्टुम ; (कुमा)।

कोड्डमिअ न [रत] रति क्रीडा-विशेष, (कुमा)।

कोड्डिय वि [दे] कुतूहली, कुतुकी, उत्कण्ठित, (उप ७६८ टी)।

कोड्ढ) पुं [कुष्ठ] रोग-विशेष, कुष्ठ रोग, (पि ६६, णाया
कोढ) १, १३ ; श्रा २०)।

कोढि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोग से ग्रस्त, कुष्ठ-रोगी ; (आचा)।

कोढिक) वि [कुष्ठिक] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त, (पिंड २, ६,
कोढिय) विपा १, ७)।

कोण वि [दे] १ काला, श्याम वर्ण वाला ; (दे २, ४६) २ पुं. लकुट, लकड़ी, यष्टि ; (दे २, ४६, निचू १, पाअ) ३ वीणा वगैरः बजाने की लकड़ी, वीणा वादन-दण्ड, (जीव

कोण) पुन [कोण] कोना, अस्र, घर का एक
कोणग) (गउड, दे २, ४६ ; रंभा)।

कोणव पु [कौणप] राक्षस, पिशाच ; (पाअ)

कोणालग पु [कोनालक] जलचर पक्षि-वि (१,१)।

कोणालो स्त्री [दे] नदी, नाला, (दे १)।

कोणिअ) पुं [कौणिक] राजा कोणिक का पुत्र, क
कोणिग) (अंत १, णाया १, १ ; भग, उप)।

कोणु स्त्री [दे] नदी, नाला ; (दे १, २१)।

कोणय पु [दे. कोण] घर का कोना, घर का एक भाग, (दे ४६)।

कोत्तर न [कौतर] सूत के वस्त्र से विपरीत वस्त्र (राज)।

कोतुहल देखो कुऊहल, (कप्प)।

कोत्तलंडा स्त्री [दे] दास बनाने का भाव, दासत्व (दे २, १४)।

कोत्तिअ वि [कौतुकिक] कौतुकी, कुतूहली, (उप

कोत्तिअ पु [कौत्रिक] १ भूमि शासन करने का ग्रन्थ, (भौम)। २ न. एक प्रकार का मद्य, (दे

कोत्थ देखो कोट्ठ = कोष्ठ।

कोत्थर न [दे] १ विज्ञान, (दे २, ११)। २ गह्वर, (सुपा २४७ ; निचू १६)।

कोत्थल पु [दे] १ कुलाल, कोष्ठ, (दे २, ८०) २ वेला, (स ११२)। °कारा स्त्री [कु
(कुप्र १)।

कोत्थुभ पु [कौस्तुभ
कोत्थुह मणि, (ती १
कोथुभ ४)
कोदंड
१६
कोप्प

कोसल पुं [कौशल] १ देश का नाम आदि नाम ; (संक्षि ३१६ आ ; सुर ; हे १, १२४)। २ नदी का किनारा, तट, तीर ; (संक्षि ३०)।

कोसिई स्त्री [कौशिकी] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १४१)।

कोसिग) पुं [कौशिक] पक्षि-विशेष ; (संक्षि ; कप्र)।
कोसिगक)

कोसिल्लि वि [कौशल] दक्ष, सुशिक्षित ; (औ १० ; पउम ; कप्र)।

कोसिर वि [कौशिर] १ कुशल से संबन्ध रखने वाला, कुशल-संबन्धी ; (निचू १, ११)। २ कुशली-संबन्धी ; (पउम)। ३ कुशली में उत्पन्न ; (हे १, ८१)। स्त्री—णिया, °री ; (सण १४)। °णिच्च न [°भृत्य] वैद्यक शास्त्र-विशेष, जिसमें घावों के स्वस्थ-संबन्धी वर्णन है ; (निचू १, ७—पत्र ७६)।

कोसिरी स्त्री [कौशिरी] विद्या-विशेष ; (पउम ७, १३७)।

कोसुइया स्त्री [कौसुदिका] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक देवी, जो उनके पीछे सुरक्षा के समय खड़ी होती थी ; (निचू १४७६ ;)।

कोसुई स्त्री [दे] पूर्णिमा, कोई भी पूर्णिमा ; (दे २, ४८)।

कोसुई स्त्री [कौसुदी] १ शरद् ऋतु की पूर्णिमा ; (दे २, ४८)। २ चन्द्रिका, चाँदनी ; (संक्षि ; पाअ ; पउम ११ टी)। ३ इस नाम की एक नगरी ; (पउम ३६, १००)। ४ कार्त्तिक की पूर्णिमा ; (सण)। °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा, चाँद ; (पउम ११ टी)। °महूसव पुं [°महोत्सव] उत्सव-विशेष ; (नि ३६६)।

कोसुदिया देखो कोसुइया ; (सण्हा १, ५—पत्र १००)।

कोसुदी देखो कोसुई ; (सण्हा १, १ २)।

कोसुयग) पुं [दे] रूई से भरे हुए कपड़े का बना हुआ
कोसुयय) आच्छादन-विशेष ; (सण्हा १, १७—पत्र २२६)।

कोसुयी स्त्री [दे] रूई से भरा हुआ कपड़ा ; (दे २)।

कोसुंग पुं [कोसुम्भ] पक्षि-विशेष ; (पउम १, १—पत्र ८)।

कोसुंट) पुं [कोसुम्भ, °क] १ वृक्ष-विशेष ; (पउम)।
कोसुंडग) २ न. इस नाम का नगरविशेष (नवीन) शहर का एक उपनगर ; (पव १)। ३ कोसुम्ब वृक्ष का पुष्प ; (पउम १, ४ ; उत्त १)।

कोसुंब) पुं [कोसुम्ब] पलाशवृक्ष, पत्र की कली,
कोसुंभ) (पउम)। "वणारि कोसुंब फलाण" (उप ६, १—पत्र १२६)।

कोसुंभ पुं [कौसुम्भ] १ वृक्ष-विशेष ; (पउम १४२ ; उप ६)। २ कौसुम्भ-संबन्धी ; ३ पुं. अन्तर्वस्त्र-विशेष, साड़ी आदि ; (संक्षि ३)।

कोसुंभया स्त्री [कौसुम्भया] इस नाम की पहरने के वस्त्र की एक मूर्च्छना ; (उप ७)।

कोसेट्ट) देखो कोसेट्ट ; (सण्हा १, १—पत्र १६ ;
कोसेट्टिय) कप्र ; पउम ४१, ८ ; औप ; उत्त)।
कोसेट्ट)

कोल पुं [दे] क्रीत, लेन, खरा ; (दे २, ४१)।

कोल पुं [प्रोड] १ सुअर, वराह ; (पाअ १, १—पत्र ७ ; स १११)। २ उत्तरकुरु, देवता ; " कोलेच्च—" (गउड)।

कोल पुं [कोल] १ देश-विशेष ; (पउम ८८, ६६)। २ सुर, कच्छभ ; (सम ३८)। ३ सूअर, वराह, सुअर ; (उप ३२० टी ; सण्हा १, १ ; कुमा ; पउम)। ४ मूषिक के आकार का एक जन्तु ; (पाअ १, १—पत्र ७)। ५ म्लेच्छ-विशेष ; (धर्म १)। ६ मनुष्य की एक नीच जाति ; (आचा १)। ७ बदरी-वृक्ष, बेर का वृक्ष ; ८ न. बदरी-फल, बेर ; (उप ६, १ ; सण ६, १०)। °पाग न [°पाक] नगर-विशेष, जहाँ श्रीदामचंदेव भगवान् का मंदिर है, यह नगर दक्षिण में है ; (ती ४६)। °पाल पुं [°पाल] देव-विशेष, धर्मपाल का लोकपाल ; (ठा ३, १—पत्र १०७)। °सुणय, °सुणह पुंस्त्री [°शुनक] १ बड़ा सूअर, सुअर की एक जाति, जंगली वराह ; (आचा २, १, ६)। २ शिकारी कुत्ता ; (पण्ण ११)। स्त्री—°णिया ; (पण्ण ११)। °वास पुंन [°वास] कट, टट्टी ; (सम ३८)।

कोल वि [कौल] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी ; २ तान्त्रिक मत से संबन्ध रखने वाला ; " कोलो धम्मो कस्स सो साहु रम्मो" (कप्र)। ३ न. बदर-फल-संबन्धी ; (सण ६, १०)। °चुण्ण न [°चूर्ण] बेर का चूर्ण, बेर का सत्तू ; (सम ६, १)। °दिय न [°दिक] बेर की कुल्फी ; (सण ६, १०)।

कोलंब पुं [दे] सिर, खोपड़ी ; (दे २, ४७ ; पाअ)। २ गुह, घर ; (दे २, ४७)।

कोलंब पुं [कोलम्ब] वृक्ष की शाखा का बना हुआ अग्र भाग ; (अनु ६)।

कोलगिणी स्त्री [कोली, कोलकी] केत-जातीय स्त्री ;

कोलघरिय वि [कौलगृहिक] कुल-गृह-संबन्धी, पितृ-गृह-सबन्धी, पितृ-गृह से संबन्ध रखने वाला, (उवा)।

कोलज्जा स्त्री [दे] धान्य रखने का एक तरह का गर्त, (आचा २, १, ७)।

कोलर देखो कोटर ; (गा ६६३ अ)।

कोलव न [कौलव] ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध एक करण, (विसे ३३४८)।

कोलाल वि [कौलाल] १ कुम्भकार-सबन्धी, २ न. मिट्टी का पात्र ; (उवा)।

कोलालिय पु [कौलालिक] मिट्टी का पात्र बेचने वाला, (बृह २)।

कोलाव पु [कोलाप] साँप की एक जाति ; (पण्ण १)।

कोलाहल पु [दे] पक्षी का आवाज, पक्षि-शब्द ; (दे २, ५०)।

कोलाहल पु [कोलाहल] तुमुल, शोरगुल, रौला, बहुत दूर जाने वाला अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द, (दे २, ५०, हेका १०६, उप ६)।

कोलाहलिय वि [कोलाहलिक] कोलाहल वाला, शोर-गुल वाला, (पउम ११७, १६)।

कोलिअ पु [दे] कोली, तन्तुवाय, कपड़ा बुनने वाला ; (दे २,६६, सूत्र २, उप पृ २१०)। २ जाल का कीड़ा, मकड़ा, (दे २, २६, पाम, श्रा २० ; आव ४, बृह १)।

कोलित्त न [दे] उल्मुक, लुआ ; (दे २, ४६)।

कोलीकय वि [कोडीकृत] स्वीकृत, अंगीकृत, (गउड)।

कोलीण न [कौलीन] १ किंवदन्ती, लोक-वार्ता, जन-श्रुति, (ठा ३७)। २ वि. वंश-परंपरागत, कुलक्रम से आयात ; ३ उत्तम कुल में उत्पन्न, ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी, (नाट—महावी १३३)।

कोलीर न [दे] लाल रंग का एक पदार्थ, कुरविन्द, "कोलीरगलयवेगं" (दे २, ४६)।

कोलुण्ण न [कारुण्य] दया, अनुकम्पा, करुणा, (निचू ११)। °पडिया, °वडिया स्त्री [°प्रतिज्ञा] अनुकम्पा की प्रतिज्ञा, (निचू ११)।

कोल्ल पुन [दे] कोयला, जली हुई लकड़ी का टुकड़ा, (निचू १)।

कोल्लइर न [कोल्लकिर] १ वर्धक्य, बुढ़ापन ; (पिंड)। २ नगर-विशेष, (मच ३)।

कोल्लपाग न [कोल्लपाक] दक्षिण देश का एक नगर, जहाँ श्री ऋषभदेव का मन्दिर है ; (ती ४६)।

कोल्लर पु [दे] मिश्र, स्थाली ; (दे २,४७)।

कोल्ला देखो कुल्ला, (कुमा)।

कोल्लाग देखो कुल्लाग ; (अंत)।

कोल्लापुर न [कोल्लापुर] दक्षिण देश का एक नगर, (ती ३४)।

कोल्लासुर पु [कोल्लासुर] इस नाम का एक देव, (ती ३४)।

कोल्लुग [दे] देखो कोल्लुअ ; (वव १; कुप्र १)।

कोल्लाहल न [दे] फल-विशेष, बिम्बी-फल, (दे २,३६)।

कोल्लुअ पु [दे] १ शृगाल, सियार ; (दे २, ६६, पव, पउम ७, १७, १०६, ४२)। २ कोल्हू, ऊख से रस निकालने की कल, (दे २, ६६ ; महा)।

कोव पु [कोप] क्रोध, गुस्सा ; (विसे १,६ ; प्रासू १७६)।

कोवण वि [कोपन] क्रोधी, क्रोध-युक्त, (पाअ, सुपा ३८६, सम ३४७, स्वप्न ८२)।

कोवासिअ देखो कोआसिय, (पाअ)।

कोविं वि [कोपिन्] क्रोधी, क्रोध-युक्त, (सुपा २८१, श्रा २०)।

कोविअ वि [कोविद्] निपुण, विद्वान्, अभिज्ञ, (कुमा, सुपा १३०, ३६२)।

कोविअ वि [कोपित] १ क्रुद्ध किया हुआ। २ दृप्त, दर्प-युक्त किया हुआ, "वइरी हिअ दाहो वायरासि व्व कोविय वयण" (उव)।

कोविआ स्त्री [दे] शृगाली, स्त्री-सियार, (दे २, ४६)।

कोविआर पुं [कोविदार] वृक्ष-विशेष, (धर्मवि ३३)।

कोविणी स्त्री [कोपिनी] दर्प-युक्त स्त्री, (श्रा ११)।

कोस पु [दे] १ कुसुम्भ रंग से रक्त वस्त्र, २ समुद्र, सागर, (दे २, ६६)।

कोस पु [क्रोश] कोस, मार्ग की लम्बाई का परिमाण, दो मील ; (कप्प, जी ३१)।

कोस पु [कोश, न] १ खजाना, भण्डार, (आचा १,११६, पउम ६, २४)। २ तलवार की म्यान, (सुपा १, ६)। ३ कुड्मल, "कमलकोसस्थ" (कुमा)। ४ पुष्प-कली, (गउड)। ५ गोल, कृताकार; "ता सुकयविरइ कोसगविहियसरंतरंतकरपसरं" (सुपा ३७ ; गउड)। ६ दिव्य-भेद, तथा लोहे का स्पर्श वगैरः शस्त्र, " एत्थ अन्ने

सविस्तरं पञ्चाशत्" (सम ३३४)। ३ अभिधान-शास्त्र, शब्दार्थ-निरूपक ग्रन्थ, जैसा प्रस्तुत पुस्तक। ४ पुंन. पात्र, बरतन ; (पाअ)। ५ न. नगर-विशेष ; "कोसं नाम नगरं" (सं १३३)। °पाण न [°पान] सौवल, राजब ; (ण ४४८)। °पिहिय पुं [°पिधि] खड़ताली, मंजीरा ; (सुपा ७३)।

कोसंब पुं [कोशाम्र] फल-वृक्ष-विशेष ; (पण्ण १—पद ३१)। °डिया स्त्री [°डिका] खट्टम-विशेष, एक प्रकार की लटकन ; (राज)।

कोसंबिया स्त्री [कौशाम्बिका] जैन मुनि-संघ की एक शाखा ; (कप्प)।

कोसंबी स्त्री [कोशाम्बी] वत्स देश की मुख्य नगरी ; (उप १० ; विपा १, ५)।

कोसग पुं [कोशक] सांपों का एक जन्म-सम उपकरण, साँपों की एक प्रकार की पेटी ; (पंच ३)।

कोसट्टइआ स्त्री [दे] रानी, पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी; (दे २, ३५)।

कोसग्ग न [दे, कोशक] लघु शराव, छोटा पात्र-पात्र ; (दे २, ४३ ; पाम)।

कोसल न [कौशल] कुशलता निपुणता, चातुरी, (कृत्य)।

कोसल न [दे] नीली, नखा, इक्षुखण्ड ; (दे २, ३८)।

कोसल) पुं [कोसल, क] १ देश-विशेष ; (कुमा ; कोसलग) महा)। २ एक जैन महर्षि, सुकौशल मुनि ; (पउम २२, ४४)। ३ कनट देश का राजा ; ४ वि. कोसल देश में उत्पन्न ; (उप ५, २) । ५ °पुर न [°पुर] अयोध्या नगरी; (प्राक १)।

कोसला स्त्री [कोसल्या] १ नगरी-विशेष, अयोध्या-नगरी; पउम २०, ३८)। २ अयोध्या-प्रान्त, कोसल-देश ; (भग ७, ८)।

कोसलिअ वि [कौशलिक] १ कोसल देश में उत्पन्न, कोसल-देश-संबन्धी ; (भग २०, ८) । २ अयोध्या में उत्पन्न, अयोध्या-संबन्धी ; (उत्त २)।

कोसलिअ न [दे, कौशलिक] प्रकट, भेंट, उपहार ; (दे २, १२ ; सुर ; सुर—उपोद्घात ५)।

कोसलिआ स्त्री [दे, कौशलिका] ऊख देखो ; (दे २, १२ ; सुर—उपोद्घात ५)।

कोसल्ल न [कौशल्य] निपुणता, चतुराई ; (कुमा ; सुर १६ ; सुपा १०, ८०)।

कोसल्ल न [दे] प्रकट, भेंट, उपहार ; " न पुणऽज्जकोसल्लं " (महा)।

कोसल्लआ स्त्री [कौशल्या] निपुणता, चतुराई; "तह सयलकोसल्लया य गंधव्विया इयाणिं" (सुपा ६०३)।

कोसल्ला स्त्री [कौशल्या] दाशरथि राम की माता ; (उप पृ ३४८)।

कोसल्लिअ न [दे, कौशलिक] भेंट, उपहार; (दे २, १२ ; सुपा ४१३ ; ५२७ ; सण)।

कोसा स्त्री [कोशा] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या, जिसके यहाँ जैन महर्षि श्रीस्थूलभद्र मुनि ने निर्विकार मन से चातुर्मास किया था ; (विसे ३३)।

कोसिण वि [कोश्य] कोश का, कोश-संबंधी ; (भग—केसी)।

कोसिय न [कौशिक] १ नक्षत्र का गोत्र विशेष ; (भग ४१ ; सूप ३६०)। २ बीसवें नक्षत्र का गोत्र; (चंद १०)। ३ पुं. उलूक, घूक, उल्लू ; (पाम ; मार्क ५८)। ४ गोत्र-विशेष, चरकाध्वर्यु-नामक ऋषि-विशेष का जिसने मरकत श्रीसहदेव ने प्रवर्तित किया था ; (भावप्र)। ५ वृक्ष-विशेष ; ६ इन्द्र ; ७ नकुल; ८ कौशाम्बल, सहस्रनयी ; ९ प्रीति, अनुराग ; १० इस नाम का एक राजा ; ११ इस नाम का एक मुनि ; १२ सर्प को पकड़ने वाला, सपेरिया ; १३ कौशिक-गोत्र का १४ उदयप्रभ गण ; (हे १, १५८)। १५ इस नाम का एक तापस ; (नंदि)। १६ पुंस्त्री. कौशिक गोत्र में उत्पन्न, कौशिक-गोत्रीय ; (उप ३—पत्र ३६०); स्त्री. °च्चस, कौशिक-गोत्रीय ; (उप ३—पत्र ३६०)।

कोसिई ; (सं १६)।

कोसिया स्त्री [कौशिका] १ मालवदेश की एक नदी; (२ इस नाम की एक विद्याधर-राज-कन्या; (पउम ७, ६ ३ चमड़े का जूता ; "कोसियाओ उप्पाडिऊणं" (सं २२३)। देखो कोसी।

कोसियार पुं [कौशिकार] १ कीट-विशेष, रेशम का कीड़ा; (पण्ण १, ३)। २ न. रेशमी वस्त्र ; (उप ६, ३११)। ३ कौशिकार एक द्रव्य; "कंचणकोसियारकंदल" (कुमा)। °कुसुम वि [°कुसुम] फूल-संबन्धी, फूल का बना हुआ ; "कोसुम कप्पा" (गउड)।

कोसेज्ज न [कौशेय] १ रेशमी वस्त्र, रेशम का बना हुआ वस्त्र ; (उप ३)।

कोसेज्ज न [दे] ऊख ; (दे २, ३३ ; सम १५३ ; पउम १, ९६ ; ठा ३)।

कोह पुं [क्रोध] गुस्सा, कोप ; (ओप १ भा ; ठा ४, १)। °मुंड वि [°मुण्ड] क्रोध-रहित, (ठा ४, २)। कोह पु [दे. कोथ] कोथली थैला ; (विसे २६८८)। कोह वि [क्रोधवत्] क्रोध-युक्त, कोप-सहित; "कोहाए माणाए मायाए लोभाए ...आगायणाए" (पडि)। कोहंगक पु [क्रोमङ्गक] पक्षि-विशेष , (ओप)। कोहंझाण न [क्रोधध्यान] क्रोध-युक्त चिन्तन; (आउ ११)। कोहंड न [कूष्माण्ड] १ कुष्माण्डी-फल, कोहला ; (पि ७६; ८६; १२७)। २ न. देव-विमान-विशेष , (सी ५६)। ३ पु. व्यन्तर-श्रेणीय देव-जाति-विशेष ; (पव १६४)। कोहंडी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहले का गाछ , (हे १, १२४, दे २, ५० टी)। कोहण वि [क्रोधन] १ क्रोधी, गुस्सागोर ; (सम ३७ ; पउम ३६, ७)। २ पुं. इस नाम का रावण का एक सुभट, (पउम ५६, २२)। कोहल देसी कुऊहल , (हे १, १७१)। कोहलिअ वि [कुतूहलिन्] कुतूहली ; कुतूहल-प्रेमी। स्त्री— °आ; (गा ७१८)। कोहलिआ स्त्री [कूष्माण्डिका] कोहले का गाछ ;

"जह लवेसि पवड्ढइ, नियवयं भरसहंपि सोलूणं।
तह मणो कोहलिए, अप्पं कल्लंपि पुहिहिसि" (गा ७१८)।

कोहल्ली देसी कोहंडी , (हे २, ७१ , दे २, ५० टी)। कोहल्ल देसी कोहल ; (षड्)। कोहल्ली स्त्री [दे] तापिका, तवा, पचन-पात्र विशेष, (दे ४, ४६)। कोहल्ली देसी कोहंडी ; (षड्)। कोहि) वि [क्रोधिन्] क्रोधी, क्रोध-स्वभावी, गुस्सा कोहिल्ल) गोर , (कम्म ४, १४० ; कुप्र २)। °किलिस देसी किलिस=दुःखित ; (उप ७२८ टी)। °कूर देसी कूर=क्रूर ; (वा २६)। °केर देसी °केर , (हे २, ६६)। °खंड देसी खंड , (गउड)। °खंभ देसी खंभ , (से ३, ५६)। °खग्ग देसी खग्ग , (प्राप्र २७)। °खलण देसी खलण , (गउड)। °खिंसा देसी खिंसा , (सुपा ५१०)। °खु देसी खु ; (कप्र , अभि ३७ , चारु १४)। °खुत्त देसी खुत्त , (गउड)। °खेड्ड देसी खेड्ड , (सुपा ५५२)। °खेव देसी खेव; " खारक्खेवं व खए" (उप ७२८ टी)। °खोडी देसी खोडी ; (पव १, ३)।

इय सिरिपाइअसद्दमहण्णवे कसायाइसद्दसंकलणो
दसमो तरंगो समत्तो।

ख

[ख] १ आकाश-अर्थ विशेष, इसका स्थान कण्ठ है ; प्रभृत : प्रभा) । २ न. आकाश, गगन ; " सावित्रि वि ख " (कु १, १८७) ; पुष्प ; कुमा १, १२१) । ३ [ख] १ पक्षी, विष्टिप ; (षड्भा) । ४ [ख] १ पक्षी, ख ; (पउम, ३ २, ४०) । २ मनुष्य की एक जाति, जो सिंध के कर में आकाश में गमन करते हैं, विमान-लोक ; (भग ३६) । ३ देवों का स्थान = स्वर्ग । ४ [खग] [गति] १ आकाशगति, २ कर्मविशेष, जो आकाशगति का कारण है ; (कम्म २, ३, अव ११) । [गामिणी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है, (पउम ७, १४६) । [पुप्फ] न [पुष्प] आकाश-पुष्प, असम्भवित वस्तु ; (कुमा) । [खाय वि [क्षयिन्] १ क्षय करने वाला, नाश करने वाला । २ क्षय होने वाला, क्षय-शील ; (सुपा २३३ ; ५७६) ।

खइअ वि [क्षपित] नष्ट किया हुआ, दूर किया हुआ, (पउम ; सुपा २४० ; उप पृ ८६) । २ आकान्त ; " तह य हिंसा ट कलया । खइओ उण्हि मणुस्से कालाकालरहं न सोहइ " (स ११४) । ३ न. क्षेत्र, मकान ; " खइए व पंथए व न य एसो लहसि हवइ अन्नं " (पच १२ ; उप ६, ४—पत्र ३३६) ।

खइअ वि [क्षयित] क्षय-प्राप्त, क्षीण, " विनिवारयत्य- दसो (सुर १६, १६३ ।

खइअ पु [दे] हंडक, स्थानक ; उप ६ ८ — पत्र ३३६) ।

खइअ, पु [क्षायिक] १ क्षय किया हुआ, उच्छेदन, " स हि न खइग ! खग ? खग्ग आगए कम्मक्खए खइए ' मणु) । २ वि क्षय से उत्पन्न क्षय-जन्य, क्षय से सम्बन्ध रखने वाला ; कम्मक्खए य खइयम्मि " कम्मक्खय- खइय स्वाम [वित्] १८८ क्षय ; १४, ३, १६, १, ३३, सम्म, ३३ ठाण

खइल न [क्षैत्र] क्षेत्र के समूह अथवा खण्ड (वि ६१) ।

खइया स्त्री [खदिका] खड़िया मिट्टी हुआ करती है, (अनु)।

खइर पु [खदिर] खैर-विशेष, खैर का वृक्ष ; (अभा ; कुमा) ।

खइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-संबन्धी, (ठा १, ३ ; सुपा १२१) ।

खइय [दे] देखो खइअ ; (ठा ४, ४—पत्र २७६ टी) ।

खइड पु [खचुट] व्यन्तर-विशेष, एक प्रेमाधर्य, (अभय ; अनु) ।

खइर अक [क्षुभ्] १ क्षुब्ध होना, डर से स्थिर होना । २ सक. क्षुभित करना । खइरइ : (कुमा) । " खइरेंति रिसमाणा " (स ६, ३) ।

खइर वि [दे] क्षुभित ; " इयहुइविवाह-विहुल- खलाइर " (स ६, ८३ ; स ६७८) ।

खइर न [क्षीर] खैर-वृक्ष, हड़ताल ; (हेका १८६) ।

खइर पुं [क्षपुर] नैर वृक्ष का बिलवा रस, गोंद ; (हे ३ ; हिम १६) । [कढिणय न [कठिनक] कालों का एक प्रकार का पात्र ; (पिंड १४६ ; हे ३) ।

खइरिअ वि [क्षुब्ध] क्षुभित ; (पाम ; हे ३) ।

खइरिअ वि [क्षोभित] क्षुब्धित, क्षुभित, कम्पायित किया हुआ ; (स १०, ४३) ।

खइरीकय वि [खपुरित] खादित, विकसित हुआ, (निचू१) । खइरीकय वि [खपुरीकृत] गोंद वृक्ष की तरह विकसित किया हुआ ;

" कडुलीकओ य विहीकओ य सइरीकओ य मलिलीओ । कन्नेहि एस जीवो, नाऊणवि मुच्चई जेण " (उव) ।

खओवसम पु [क्षयोपशम] उक्त नाम का विनाश और उ का दबना ; (भग) ।

खओवसमिय वि [क्षयोपशमिक] १ क्षयोपशम से उत्प क्षयोपशम-संबन्धी, (सम १४८ ; ठा २, १ ; भग) । २ प पगम ' (भग ; विसे २१०४) ।

खंखर पु [दे] पलाश वृक्ष, (पि ६३) ।

खंगार पु [खड्गार] राजा सिंहराज के एक पूर्वज, जिनका गजाओं का सोरठ देश के एक भाग, जो काठियाव लाट-विशेष, सौराष्ट्र के एक भाग, जो काठियाव के नाम से प्रसिद्ध है ; ' ।

खंच सक [कृष्] १ खींचना, २ वश में करना (भवि) । " जा गच्छ दुग्विदुग्दि सुरवं ण संच दवं " (सुर १६८) ।

खंचिय वि [कृष्ट] १ खींचा हुआ ; (स ६७४)। २ वश में किया हुआ ; (भवि)।

खंज अक [खञ्ज्] लंगड़ा होना , (कप्पू)।

खंज वि [खञ्ज] लंगड़ा, पङ्गु, लूला ; (सुपा २७६)।

खंजण पु [खञ्जन] १ पक्षि-विशेष, खञ्जरीट ; (दे २, ७०)। २ वृत्त-विशेष ; "ताडवडखञ्जखंजणमुक्खयरागहीर-दुक्खसंचारं" (स २६६)।

खंजण पु [दे] १ कर्दम, कीच , (दे २,६६ , पाम)। ,३ कज्जल, काजल, मसी , (ठा ४,२)। ३ गाड़ी के पहिए के भीतर का काला कीच , (कप्प १७—पत्र ६२४)।

खंजर पुं [दे] सूखा हुआ पेड़ ; (दे २, ६८)।

खंजा स्त्री [खञ्जा] छन्द-विशेष , (पिंग)।

खंजिअ वि [खञ्जित] जो लंगड़ा हुआ हो, पङ्गुभूत , (कप्पू)।

खंड सक [खण्डय्] तोड़ना, टुकड़ा करना , विच्छेद करना । संख, (हे ४,२६७)। कवकृ—खंडिज्जंत, (से १३,३२, सुपा १३४)। हेकृ—खंडित्तए, (उवा)। कृ —खंडियव्व ; (ठा ७,३८ टी)।

खंड पुन [खण्ड] १ टुकड़ा, भाग, हिस्सा ; (हे २,६७, कुमा)। २ चीनी, मिश्री ; (ठा ६,८)। ३ पृथ्वी का एक हिस्सा ; "जंबुद्दी—" (सम)। °घडग पुं [°घटक] भिक्षुक का अन्न-पात्र , (आया १, १६)। °पवायगा स्त्री [°प्रपाता] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा ; (ठा २,३)। °भेय पु [°भेद] विच्छेद-विशेष, पदार्थ का एक तरह का पृथक्करण, फटे हुए घड़े की तरह पृथग्भाव ; (भग ५, ४)। °मल्लय पुन [°मल्लक] भिक्षा पात्र , (आया १, १६)। सो अ [°शस्] टुकड़ा टुकड़ा, खण्ड-खण्ड ; (पि ३१६)। °भेय देखो °भेय ; (ठा १०)।

खंड न [दे] १ मुख, शिर, मस्तक , २ दाक का बरतन, मद्य-पात्र , (दे २, ६८)।

खंडा स्त्री [दे] मसी, कज्जल , (दे २,६७)।

खंडुग न [खण्डुक] शिक्थ-विशेष , (ठा ६ , ३६)।

खंडुय न [खण्डुक] १ विखंडन, भञ्जन, नाश , (आया १, ८)। २ खण्ड, खण्ड करके किसी को अलग करना , "खंडुयखंडुयं निद्दलंते" (सुपा १४)। ३ वि. नाश करने वाला, नाशक , (सुपा ४२२)।

खंडुया स्त्री [खण्डुका] विच्छेद, विनाश, (कप्पू, निचू १)।

खंडपट्ट पु [खण्डपट्ट] १ वस्त्रकार, जुलाहा, (विपा १,१। २ धूर्त, ठग, ३ अन्याय से व्यवहार करने वाला, (विपा १,१।

खंडरक्ख पुं [खण्डरक्ष] १ दण्डपाशिक, कोतवाल (णाया १,१ ; पह १,३ ; औप)। २ शुल्कपाल, चुंगी वसूल करने वाला ; (णाया १,१ ; विसे २३६० , कप्पू)।

खंडव न [खाण्डव] इन्द्र का वन-विशेष, जिसको अग्नि ने जलाया बनलाया जाता है , (नाट—वेणी ११४)।

खंडा स्त्री [खण्ड] मिश्री, चीनी, शक्कर ; (औप ३०१)।

खंडा स्त्री [खण्डा] इस नाम की एक विद्याधर-कन्या ; (कप्र)।

खंडाखंडि अ [खण्डशस्] टुकड़े टुकड़े, खण्ड-खण्ड, (उवा ; णाया १,६)। °डीकय वि [°कृत] टुकड़े टुकड़े किया हुआ ; (सुर १६, ६६)।

खंडामणिकंचण न [खण्डामणिकाञ्चन] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

खंडावत्त न [खण्डावर्त्त] इस नाम का एक विद्याधर-नगर ; (इक)।

खंडाहंड वि [खण्डखण्ड] टुकड़े टुकड़े किया हुआ, (सुपा ३८६)।

खंडिअ पु [खण्डिक] छात्र, विद्यार्थी ; (औप)।

खंडिअ वि [खण्डित] छिन्न, विछिन्न, (ह १, ६२, महा)।

खंडिअ पु [दे] १ मार्गण, भिक्षुक-याचक , २ वि. निवारण करने को समर्थ ; (दे २, ७८)।

खंडिआ स्त्री [खण्डिका] खण्ड, टुकड़ा , (अणु ६१)।

खंडिआ स्त्री [दे] नाप-विशेष, बीस मन का नाप , (३ २४)।

खंडी स्त्री [दे] १ अपद्वार, छोटा गुप्त द्वार , (आचा १, १८—पत्र १३६)। २ किले का छिद्र, (आया १, १— पत्र ७६)।

खंडुअ न [दे] बाहु वलय, हाथ का आभूषण-विशेष , (दे २, १८१)।

खंत देखो खा ।

खंत वि [क्षान्त] क्षमा-शील, क्षमा-युक्त, (उत्त १३० टी, कप्पू; भवि)।

खंतव्व वि [क्षन्तव्य] क्षमा-योग्य, माफ करने लायक, (पि ३८, भवि)।

खंति स्त्री [क्षान्ति] क्षमा, क्रोध का अभाव, (कप्प, सं, प्राप्र ४८)।

खंति देखो खा ।

[स्कन्द] १ कार्तिकेय, महादेव का एक पुत्र; (हे २, ग्राम; सामा १,१—पत्र ३६)। २ राम का इस नाम एक सुभट : (पउम ६७, ११)। °कुमार पुं [कुमार] जैन मुनि : (उव)। °गह पुं [°ग्रह] १ स्कन्द- ; उत्पत्ति; स्कन्दावेश; (हे २)। २ ज्वर-विशेष ; (सण ३,)। °गह पुं [गह] स्कन्द का उत्पात ; (सामा १,१)। सिरी सी [श्री] एक वीर-सेनानी की माता का नाम; (विपा १, ३)।

खंदग) पुं [स्कन्दक] १-२ जैन देवो। ३ एक जैन खंदय) मुनि, (उव ; भग ; अंत ; सुअ ४०८)। ४ एक परिव्राजक, जिसने भगवान् महावीर के पन पीछे से जैन दीक्षा ली थी ; (पुप्फ ८४)।

खंदिल पुं [स्कन्दिल] एक प्रख्यात जैनाचार्य, जिसने मथुरा में जैनागमों को लिपि-बद्ध किया; (गच्छ १)।

खंध पुं [स्कन्ध] १ पुद्गल-द्रव्य, पुद्गलों का पिंड ; (कम्म ४, ६६)। २ स्कन्ध, सिंह ; (विसे ८००)। ३ कन्धा, कँधा ; (कुमा)। ४ पेड़ का धड़, जहाँ से शाखा निकलती है ; (कुमा)। ५ छन्द-विशेष ; (पिंग)। °करणी सी [करणी] कार्यालों को पहनने का उत्तर-विशेष ; (आचा ६७७)। °बीय वि [°बीज] स्कन्ध बन्धा , (सामा १, १)। °बीय पुं [°बीज] स्कन्ध ही जिसका बीज होता है ऐसा कटहल वगैरः वृक्ष ; (उत्त ४, २)। °सालि पु [°शालिन्] स्कन्ध देशों की एक जाति ; (राज)।

खंधगि पु [हे, स्कन्धयामिन्] स्कन्ध कावों की रक्षा; (हे २, ७० ; पाअ)।

खंधमंस पुं [हे] हाथ, भुजा, बाहु ; (हे २, ७१)।

खंधमंसी सी [हे] स्कन्ध-यष्टि, हाथ ; (षड्)। खंधय देखो खंध ; (पिंग)।

खंधयट्टि सी [हे] हाथ, भुजा ; (हे २, ७१)।

खंधर पुंसी [कन्धर] ग्रीवा, डोक; (सण)। °यट्टि सी [हे] स्कन्ध-यष्टि, हाथ, भुजा ; (षड्)।

खंधवार देखो खंधावार; (सण)।

खंधार पु. ब. [स्कन्धार] देश-विशेष ; (पउम ६८, ६६)।

खंधार देखो खंधावार ; (पउम ६६, ७८ ; सण , सिरि ३६६)।

खंधाल वि [स्कन्धवत्] स्कन्ध वाला ; (सुपा १२६)।

खंधावार पुं [स्कन्धावार] छावनी, सैन्य का पड़ाव, निवेश ; (सामा १, ८ ; म ६०३ ; सण)।

खंधि वि [स्कन्धिन्] स्कन्ध वाला ; (भौप)।

खंधी सी. देखो खंध ; (भौप)।

खंधोवार पुं [हे] बहुत गरम पानी की धारा ; (हे २, ७२)।

खंप सक [सिच्] सिञ्चना, छिटकना। खंपइ ; (भवि)।

खंपण्ण न [हे] वस्त्र, कपड़ा : "बहुनेयसिलिनतमसलखंपण्ण-विक्कयकरीसो" (सुपा ११)।

खंभ पुं [स्तम्भ] खंभा, थंभा : (हे १, १८७ ; २, ६; ६ ; भग ; सण)।

खंभमिल्ल वि [स्तम्भनिगडित] खंभे से बाँधा हुआ ; (भे ६, ८४)।

खंभाइत्त न [स्तम्भादित्य] गूर्जर देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम से प्रसिद्ध है : (ती २३)।

खंभालण न [स्तम्भालगन] खम्भे से बाँधना ; (पव १, ३)।

खइखवग पुंन [हे] सूखी हुई लेंडी ; (धर्म २)।

खग पुं [खड्ग] १ पशु-विशेष, गेंडा ; (उत्त १४८ ; पण्ह १, १)। २ पुंन. तलवार, असि ; (हे १, ३४ ; म ६३१)। °धेणुआ सी [धेनुका] दूती, चाटु ; (हंस)। °पुरा सी [पुरा] विदर्भ-वर्ती की स्वनाम-ख्यात नगरी ; (हे २, ३)। °पुरी सी [°पुरी] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (इक)।

खगिंग पुं [खड्गिन्] जन्तु-विशेष, गेंडा ; (कुमा)।

खगिग्ग पुं [हे] क्रोधन, क्रोध का मुखिया ; (हे २, ६६, ३, ३)।

खग्गी सी [खड्गी] विद्या वर्ग की स्त्री-देवता ; ( )।

खग्गूड वि [हे] १ गत-प्राय, मूर्ख-शिरोमणि ; (भवि ३६)। २ निर्लज्ज ; ३ स्वच्छन्दचर ; (हे १)।

खच्च सक [खच्] १ पूरना, भरना, पूर्ण करना। २ बाँधना। खच्चइ ; (हे ४, ८८)।

खचिअ देखो खइअ-खचित ; (हम)। ३ वि

(कप्र)।

खज्जल पुं [हे] बल, अन्धड़, आँधी ; (हे २,

खज्जोल पुं [हे] आग, अग्नि ; (हे २,

खज्ज पु [खर्ज] वृक्ष-विशेष ; (स २५६)।
खज्ज वि [खाद्य] १ खाने योग्य वस्तु, (पव १, २)। २ न. खाद्य-विशेष , (भवि)।
खज्ज वि [क्षपय] जिस का क्षय किया जा सके वह, (पड्)।
खज्जंत देखो खा।
खज्जग देखो खज्ज=खाद्य ; (भग १६)।
खज्जमाण देखो खा।
खज्जय देखो खज्ज=खाद्य ; (पउम ६६, १६)।
खज्जिअ वि [दे] १ जीर्ण, सड़ा हुआ ; २ उपालब्ध, जिसको उलहना दिया गया हो वह ; (दे २, ७८)।
खज्जिज्जंत (अप) वि [खाद्यमान] जो खाया गया हो वह ; (भवि)।
खज्जू स्त्री [खर्जू] खुजली, पामा; (राज)।
खज्जूर पु [खर्जूर] १ खजूर का पेड़, (कुमा , उप ३४)। २ न. खजूर-फल ; (पउम ४१, ६ , सुपा ६७)।
खज्जूरी स्त्री [खर्जूरी] खजूर का गाछ, (पाअ, पणण १)।
खज्जोअ पु [दे] नक्षत्र ; (दे २, ६६)।
खज्जोअ पु [खद्योत] कीट-विशेष, जुगनू ; (सुपा ४७ ; कप्पू १, ८)।
खट्ट न [दे] १ नीलन, कपड़ा ; (दे २, ६७)। २ वि. सड़ा, अम्ल ; (पणण १—पव २७, जीव १)। °मेह पु [°मेघ] सड़े जल की वर्षा, (भग ७, ६)।
खट्टंग न [दे] छाया, आतप का अभाव , (दे २, ६८)।
खट्टंग न [खट्वाङ्ग] १ शिव का एक आयुध, (कुमा)। २ चारपाई का पाया या पाटी ; ३ प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा माँगने का एक पात्र ; ४ तान्त्रिक मुद्रा-विशेष ;

"हत्थट्ठियं खग्गं, न मुयइ मूढो मसाणि मज्झंमि ।
ता तुह सिरेण भरियं, खट्टंगं कावलिणीए जायं"
(कप्पू ८८)।

खट्टकवड्ड पु [खट्टकवर्धक] खटकवड़ा-नामक पृथिवी का एक अवयवरूप , "खट्ट काउण रयणप्पभाए पुढवीए खट्टकवड्डसंठिते वट्ट वेयड्ढपव्वते तेसि णामा उच्चारेमि" (ठा ८६)।
खट्टा स्त्री [खट्वा] खाट, पलंग, चारपाई, (सुपा ३३०, दे १, १८१)। °मल्ल पु [°मल्ल] बिमारी की एकलता से जो खाट से उठ न सकता हो वह , (कुप्र १)।
खट्टिम } [दे. खट्टिक] खाट, खाँचा, खटोला, (ठा
खट्टिक } ८२ , सुपा १, २ , ६ २, ४४)।
खड न [दे] तृण, घास ; (दे २, ६७ ; कुमा)।
खडइअ वि [दे] संकुचित, संकोच-प्राप्त ; (दे २,
खडंग न [षडङ्ग] छः अंग, वेद के ये छः अंग—कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त। °विउ [°विद्] छहों अंगों का जानकार ; (पि २६६)।
खडक्कय पुन [खटत्कृत] आहट देना, ध्वनि सूचना, निकली वगैरः का आवाज, "कक्कमो निवुत्तिमो तत्तो" (सुपा ६१४)।
खडक्कार पु [खटत्कार] ऊपर देखो; (सुर १, विक ६०)।
खडक्किआ } स्त्री [दे] खिड़की, छोटा द्वार।
खडक्की } महा , दे २, ७१)।
खडखड पुं [खडखड] देखो खाडखड ; (हे
खडखडिअ वि [दे] छोटा और लम्बा ; (राज)।
खडणा स्त्री [दे] गेया, गौ ; (गा ६३६ अ)।
खडहड पुं [खटखट] साँकल वगैरः का आवाज ; (सुपा ६०२)।
खडहडी स्त्री [दे] जन्तु-विशेष, गिलहरी, गिल्ली, (दे
खडिम देखो खट्टिम , (गा ६८२ अ)।
खडिम देखो खलिम ; (गा १६२ अ)।
खडिआ स्त्री [खटिका] खड़ी, लड़कों को लिखने की (कप्पू)।
खडी स्त्री [खटी] ऊपर देखो ; (प्राकृ)।
खडुआ स्त्री [दे] मौक्तिक, मोती , (दे २, ६८)।
खडुक्क अक [आविस्+भू] प्रकट होना, उत्पन्न होना खडुक्कति , (वज्जा ४६)।
खडु सक [मृदु] मर्दन करना। खडुइ ; (हे ४, १२६)।
खडु } न [दे] १ श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ, (दे २, ६
खडुग } पाअ)। २ बड़ा, महान् ; (विसे २५७६ टी)। ३ गर्त के आकार वाला , (उवा)।
खडुआ स्त्री [दे] १ खानि, आकर , (दे २, ६६)। २ पर्वत का नाम, पर्वत का गर्त, (दे २, ६६)। ३ कूप, गड्ढा, खड्डा ; (सुर २, १०२ , सं १६२ ; सुपा १६ , श्रा १६ , महा , उप २ ; पंचा ७)।
खडुइअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (कुमा)।
खडुया स्त्री [दे] ईख, आखाड , " खडुया व खाइ मे" (उप १, ३८)।

सणयर) वि [दे] मन्द, धीमा, निष्ठुर, (दे १, १६, सणपुर) पुंस)।

सम सक [क्षमय्] १ क्षमा करना, माफ करना। २ सहन करना। सत्र, (उत्त ८३, महा)। कर्म—क्षमियव्व, (कुमा १०७, उत्त ७२८ टी, कुप्र ४, १६०)। प्रयो—खमाव, (भवि)। संकृ—खमाविऊण, खमाविता, (पि, काल)। हे—खमाइत्तए, (कप्प)।

खम वि [क्षम] १ उचित, योग्य, "नाणिणो आहारो न खमं अणाहारो" (पंच ५४, पाम)। २ समर्थ, शक्तिमान्, (हे १, १७, उप ६६०, सुपा ३)।

खमग पुं [क्षमक, क्षपक] तपस्वी जैन साधु, (उप पृ ११२, श्रा १४, श्रप ६८)।

खमण न [क्षमण, क्षामण] १ उपवास, (सुर १, निचू १०)। २ तपस्वी जैन साधु, (उप १०—पव ११४)।

खमणा स्त्री क्षमा, (श्रप ६१४, उप ८८१, श्रप ४०)।

खमा स्त्री [क्षमा] १ पृथ्वी, भूमि, "उल्हसमाभारो" (सुर १८)। २ क्षमा का अभाव, अक्षमा, (हे १, १०)। खइ पुं [खनि] खान, द्वीप, भूमि, (धर्म ११)। खमण पुं [श्रमण] साधु, ऋषि, मुनि, (पंच)। खर पुं [खर] १ गधा, गदहा, २ साधु, मुनि, (सुर ११)।

खमणया } स्त्री [क्षमणा] क्षमा, सहनशीलता, (श्रप १४, १, कम्म)।

खमणिज्ज वि [क्षमणीय] क्षमा किया हुआ, (हे १, १४१, सुपा ६१४)।

खमणी स्त्री [क्षमणी] १ सहन, सहिष्णुता। २ मन का वश में होना, (हे २, ७८)।

खमय वि [क्षमक] क्षमा करनेवाला, सहन करनेवाला, (हे १, १७)। खमा स्त्री [क्षमा] १ सहन, सहिष्णुता, (हे १, १७)। २ पृथ्वी, भूमि, (कुमा)। ३ क्षमा का अधिष्ठाता देव, (संक्षि)। खमाव सक [क्षमापय्] क्षमा करना, माफ करना। खमव, (उत्त ८३, महा)। कर्म—खमिज्जइ, (भवि)। हे—खमियव्व, (सुपा १०७, उत्त ७२८ टी, कुप्र ४, १६०)। प्रयो—खमाव, (भवि)। संकृ—खमाविऊण, खमाविता, (पि, काल)। हे—खमाइत्तए, (कप्प)।

खमावणा स्त्री [क्षमापना] क्षमा माँगना, (श्रप ६, १, कप्प)।

खमावणिय वि [क्षमापित] क्षमा किया हुआ, (हे १, १४१, सुपा ६१४)।

खमि वि [क्षमिन्] १ क्षमा करनेवाला, सहनशील। २ मन का वश में होना, (हे २, ७८)।

खमिय वि [क्षमित] क्षमा किया हुआ, सहन किया हुआ, (हे १, ६६)। खय पुं [क्षय] १ नाश, प्रलय, विनाश, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)। २ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)। ३ संकोच, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)। ४ अपचय, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)। ५ अभाव, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)। ६ मृत्यु, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)। ७ क्षय-रोग, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)। ८ क्षय-रोग, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)। ९ क्षय-रोग, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)। १० क्षय-रोग, (हे १, १६, उत्त ३६, ६, सुपा ६१४, ६४६, कुमा)।

खयर पुं [खचर] १ आकाश में चलने वाला, पक्षी, (हे १, १०)। २ विद्याधर, विद्या बल से आकाश में चलने वाला मनुष्य, (सुर ३, ८८, सुपा २४०)। °राय पुं [°राज] विद्याधरों का राजा, (सुपा १३०)।

खयर देखो खइर=खदिर, (श्रप १२, सुपा ६६३)।

खयाल पुं [दे] बाल-जाल, बाँस का बन, (श्रपि)।

खर अक [क्षर्] १ झरना, टपकना। २ नष्ट होना। (विसे ६६६)।

खर वि [खर] १ निष्ठुर, कठोर, परुष, कठोर, (सुर ३, १६२, पाम)। २ पुंस्त्री तीक्ष्ण, गरम, (पंच १, १, पउम ६६, ६८)। ३ पुं छन्द-विशेष, (पिंग)। °तेल न [°तैल] सरसों का तेल, (आचा २०६)। °कंट न [°कण्ट] सूअर की दाढ़ा, (उत्त ३, ४)। °कंड न [°काण्ड] वनस्पति वृक्षादि का प्रथम काण्ड अथवा विभाग, (आचा)। °कम्म न [°कर्मन्] जिसमें अनेक जीवों की हिंसा हो ऐसा कर्म, निष्ठुर धंधा, (सुपा ६००)। °किरण पुं [°किरण] सूर्य, सूरज, (पिंग, पभ)। °दूसण पुं [°दूषण] राक्षस राजा, रावण का बहनोई व खर नाम का एक विद्याधर राजा, (पउम ३१८, १०, १०)। °पह पुं [°पथ] नरक, (सुपा ३३१, ६००)। °पवण पुं [°पवन] झंझावात, (सुपा ३३१, ६००)। °पुंख पुं [°पुङ्ख] बाण, तीर, (पाम)। °फरुस न [°परुष] अत्यन्त कठोर वचन, (पाम)। °फरुसया स्त्री [°परुषता] अत्यन्त कठोरता, (पाम)। °फरुसिय वि [°परुषित] अत्यन्त कठोर किया हुआ, (पाम)। °फास पुं [°स्पर्श] कठोर स्पर्श, (पाम)। °मुह पुं [°मुख] १ गधा, २ वृक्ष-विशेष, (पाम)। °रस पुं [°रस] १ कठोर रस, २ कठोर रस वाला, (पाम)। °वाय पुं [°वात] झंझावात, (पाम)। °सर पुं [°स्वर] १ कठोर स्वर, २ कठोर स्वर वाला, (पाम)। °हिय वि [°हृत] अत्यन्त कठोर किया हुआ, (पाम)।

खरंट सक [खरण्ट्] १ मलिन करना, २ कलंकित करना, (हे ४, १६०, षड्)। खरंटिय वि [खरण्टित] १ मलिन किया हुआ, २ कलंकित किया हुआ, (हे ४, १६०, षड्)।

खरंटी स्त्री [खरण्टी] १ मलिनता, २ कलंक, (हे ४, १६०, षड्)।

खरंडण न [खण्डन] १ खण्डन, टुकड़ा, २ खण्डन करना, (हे १, १६, कुमा)।

खरंडिय वि [खण्डित] १ खण्डित, टुकड़ा किया हुआ, २ खण्डन किया हुआ, (हे १, १६, कुमा)।

खरंत वि [खरन्त] १ कठोर, २ कठोर वर्ण वाला, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपय पुं [खरम्पच] १ चाण्डाल, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपया स्त्री [खरम्पचा] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरिय वि [खरम्परित] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरी स्त्री [खरम्परी] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीय वि [खरम्परीय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाया स्त्री [खरम्परीयाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायाय वि [खरम्परीयायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायाया स्त्री [खरम्परीयायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायाय वि [खरम्परीयायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायाया स्त्री [खरम्परीयायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायाय वि [खरम्परीयायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायायायायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायायायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायायायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायायायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायायायायायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायायायायायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायायायायायायायायायाया स्त्री [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयायायायायायायायायायायायायायायायायायाय वि [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायायायायायायाया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयायायायायायायायायायायायायायायायायायायाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय वि [खरम्परीयाय] १ चाण्डाल जाति का, २ नीच, अधम, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीया स्त्री [खरम्परीया] १ चाण्डाल जाति की स्त्री, २ नीच स्त्री, (हे १, १६, कुमा)।

खरंपरीयाय

का निशाचरी ; (पउम ७, ४)। 'सुही स्त्री ['सुखी] १ खर-विशेष, (पउम ३०, ३३; सुपा ३०; प्रौप)। २ स्तुहिही दासी ; (हर ६)। खर वि [खर] १ निर्दय कठोर ; (सुपा १०६)। २ पु. इस नाम का एक जैन राक्षस; (गउड)। 'सत्तय न [सप्तक] तिल का तैल ; (ओघ ४०६)। 'साविआ स्त्री ['शाविका] लिपि-विशेष ; (पम ३६)। 'स्सर पुं [स्वर] वानव्यन्तिक देवों की एक जाति ; (पम २६)।

खर वि [क्षर] विनश्वर, अस्थायी ; (सिरि ४६७)।

खरंट सक [खरण्टय्] १ घृष्टकरना, निर्भर्त्सना करना। २ लेप करना। खरंटइ ; (भगु ६६)।

खरंट वि [खरण्ट] १ घृष्टकरने वाला, निर्भर्त्सक ; २ दूषित करने वाला ; ३ अशुचि पदार्थ ; (हे ४, १ ; भगु ६६)।

खरंटण न [खरण्टन] १ निर्भर्त्सना, घृष्ट करना; (उप १)। २ लेपना ; (ओघ ४० भा)।

खरंटणा स्त्री [खरण्टना] ऊपर देखो ; (ओघ ७६)।

खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना। संकृ—खरडिवि; (सुपा ४१६)

खरड पुं [खरट] एक जाति का म्लेच्छ-जाति ; "खड केइ खरंटए किरिए हरिसे वरवरविसेसे" (सुपा ३६२)।

खरडिअ वि [हे] १ कर्कश, रूक्ष ; २ मलिन, गंदा ; (हे २, ४८)।

खरडिअ वि [लिप्त] लिप्तकिये लेप किया गया हो वह, पोता हुआ ; (ओघ ३७३ टी)।

खरण्ण न [हि] कटु कौआ की कठोर-मधुर ध्वनि; (ठा४,३)।

खरय पुं [हे] १ कर्कश, नीरस ; (ओघ ४३८)। २ साधु, (सूत्र १२, ६)।

खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज करना। वह—खरहरंत ; (गउड)।

खरहिअ पुं [हे] पौत्र, पोता, पुत्र का पुत्र ; (हे २, ७३)।

खरा स्त्री [खरा] जन्तु-विशेष, नकुल की तरह पुत्र से चलने वाला जन्तु-विशेष ; (ओघ २)।

खरिअ वि [हे] कुष्ठ, कर्कश , (हे २, ६७ ; सवि)।

खरिआ स्त्री [हे] कैफियत, दलील ; आव ४३८)।

खरिंजुअ पु [हे. खरिञ्जुक] वस्त्र-विशेष (आ २०)।

खरही स्त्री [खरोष्ट्री] उक्त खरोष्ट्रिका (पम ३)।

खरल्ल वि [हे] १ कठिन, कठोर ; २ स्पष्ट, विषम और कर्कश ; (हे २, ७८)।

खरोट्ठिआ स्त्री [खरोष्ट्रिका] लिपि-विशेष; (पम ३६)।

खल्ल अक [स्खल्] १ पड़ना, गिरना। २ स्खलना। ३ रुकना। खलइ ; (प्राप्र)। वह—खलंत, खलमाण ; (से २, २७ ; गा ४४६ ; सुपा ६४३)।

खल्ल वि [खल] १ दुर्जन, मथन स्वभाव ; (सुर १, १८)। २ न. धान साफ करने का स्थान ; (विपा १, ८; श्रा १४)। 'पू वि [पू] धान को साफ करने वाला ; (उत्त ; पउ ; प्रभा)।

खल्लइअ वि [हे] स्खलित, गलती ; (हे २, ७१)।

खल्लक्खल्ल अक [खलखलाय्] 'खल-खल' आवाज करना। संदेखल्लेइ ; (सि ४६८)।

खल्लाडिअ वि [हे] नग्न, दिगम्बर ; (हे २, ६७)।

खल्लण न [स्खलन] १ नीचे देखो ; (आचा ; से ८, ६६ ; गा ४६६; वज्जा २६)।

खल्लणा स्त्री [स्खलना] १ गिर जाना, स्खलन ; (हे २, ६४)। २ विनाश, मरण्डन ; (ओघ ७८८)। ३ अपकार, अकार्य ; "होलाऽऽ कुपो, ण खल्लणं कीरेमि जइ अम्ह वयणस्स" (हर ३३६ टी)।

खल्लभलिय वि [हे] चुल्य, लोल-चञ्चल ; (सवि)।

खल्लहर) पुं [खल्लखल] नदी के प्रवाह का आवाज; "वह-खल्लहल) णावकहिपीयं तिदिविदिविसुव्वंकल्लहरासो" (सुर ३, ११ ; २, ७६)।

खल्ला अक [हे] खराब करना, बुरबाद करना। "दाणवि खल्लो खल्लाइ व" (पउम ३१, ६३)।

खल्लिअ वि [स्खलित] १ रुका हुआ; २ गिरा हुआ, पतित; (हे २, ७१ ; पभा) । ३ न. स्खलन, फुलाइ ; ४ सूत्र , (वि १, ८)।

खल्लिअ वि [खल्लिक] खल से व्याप्त, खलि-मिश्रित ; (हे ४, १०)।

खल्लिआ [खल्लिन्] १ लगाम ; (पाम)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष ; (पव ६)।

खल्लिया स्त्री [खल्लिका] तिल वगैरः का तैल-सहित चूर्ण; (सुपा ४१४)।

खल्लियार सक [खल्ली+कृ] १ तिरस्कार करना, घृष्टकरना। २ छलना। ३ उपहास करना। खल्लियारसि, खल्लियारेसि, (सुर २३१ ; से ६, ८८)।

खप्पर } वि [दे] रुक्ष, रूखा, निष्ठुर ; (दे २, ६६ ;
खप्पुर } पाअ)।

खम सक [क्षम्] १ क्षमा करना, माफ करना। २ सहन करना। खमइ ; (उवर ८२, महा)। कर्म—खमिज्जइ ; (भवि)। कृ—खमियव्व, (सुपा ३०७, उप ७२८ टी, सुर ४, १६७)। प्रयो—खमावइ, (भवि)। संकृ—खमावित्ता, खमाविऊण, (पडि, काल)। कृ—खमावियव्व ; (कप्प)।

खम वि [क्षम] १ उचित, योग्य, "सच्चित्तो आहारो न खमो मणसा वि पत्थेउं" (पच ५४ ; पाअ)। २ समर्थ, शक्तिमान्, (दे १, १७ ; उप ६६०, सुपा ३)।

खमग पु [क्षमक, क्षपक] तपस्वी जैन साधु ; (उप पृ १६१, ओघ १८० ; भग ४४)।

खमण न [क्षपण, क्षमण] १ उपवास, (सूत्र १, निरू १०)। २ पु. तपस्वी जैन साधु, (उप १०—वृत्त ५१८)।

खमय देखो खमग, (ओघ ५६४, उप ४८६; भग ४०)।

खमा स्त्री [क्षमा] १ पृथिवी, भूमि ; "उव्वूढखमाभारो" (सुपा ३४८)। २ क्रोध का अभाव, शान्ति, (हे २, १८)। °धर पु [°पति] राजा, नृप, भूपति ; (धर्म १६)। °समण पु [°श्रमण] साधु, ऋषि, मुनि ; (पडि)। °हर पु [°धर] १ पर्वत, पहाड, २ साधु, मुनि, (सुपा ११६)।

खमावणया } स्त्री [क्षमणा] क्षमाना, माफी माँगना,
खमावणा } (भग १०, ३ ; राज)।

खमाविय वि [क्षमित] माफ किया हुआ, (हे २, १६१, सुपा ३६०)।

खम्मक्खम पु [दे] १ सघन, लकड़ी, २ मन का दुःख, २ पक्षपात का अभाव, (दे १, ७६)।

खय देखो खव। खयइ ; (षड्)।

खय अक [क्षि] क्षय पाना, नष्ट होना। खयइ ; (षड्)।

खय देखो खग, (पभ)। २ आकाश तक ऊँचा पहुँचा हुआ, (से ६, ८१)। °राय पु [°राज] पक्षि-जाति का राजा ; गरुड-पक्षी, (पभ)। °हर पु [°पति] पक्षी ; (से १६, ६०)।

खय न [क्षत] १ क्षत, घाव ; "खयरेणं व रुहिरं" (उप ८८ टी)। २ क्षीण, क्षयप्राप्त हुआ, "पुण्णेसु खीणेसु खयं" (सुर १४, १७६ ; सुर १२, ६१)। °यार पु [°चार] निर्दयाचारी साधु या श्रावक ;

खय वि [क्षात] नाश हुआ, (पउम ६१,

खय पु [क्षय] १ क्षय, प्रलय, विनाश ; (भ
२ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा ; (लहुम १६)।
[°कारिन्] नाश-कारक ; (सुपा ६६६)।
°काल पु [°काल] प्रलय-काल ; (भवि, हे ४,
°ग्गि पु [°ग्नि] प्रलय-काल की आग ; (वि १
°नासि पु [°नासिन्] केवलज्ञानी, परिपूर्ण ज्ञ
संवेग ; (विसे ५१८)। समय पु [°समय]
काल ; (लहुम २)।

खयंकर वि [क्षयंकर] नाश-कारक, (पउम ७, ८
६६, ३४ ; पुप्फ ८२)।

खयंतकर वि [क्षयान्तकर] नाश-कारक ; (पउ
१७०)।

खयर पुस्त्री [खचर] १ आकाश में चलने वाला,
२०)। २ विद्याधर, विद्या बल से आकाश में
मनुष्य, (सुर ३, ८८, सुपा १४०)। °राय पु
विद्याधरों का राजा, (सुपा १३४)।

खयर देखो खइर=खदिर, (अंत ११ ; सुपा ६६३)।

खयाल पुन [दे] बंश-जाल, बाँस का वन, (नवि)।

खर अक [खर्] १ झरना, टपकना। २ नष्ट होना। ४
(विसे ४१६)।

खर वि [खर] १ निष्ठुर, दृढ, पक्का, कठोर, (सुर १,
दे २, ७८, पाअ)। २ पुस्त्री. गदहा, गधा,
पउम ६६, ४४)। ३ पु. छन्द-विशेष, (पि
नीम का तेल, (ओघ ४०६)। °कंटइ न [°क
बेर की शाखा ; (उप ३, ४)। °कंड न [
स्थानमा पृथिवी का प्रथम काण्ड—भग-विशेष;
°कम्म न [°कर्मन्] जिसमें अनेक जीवों को ह
हो ऐसा काम, निष्ठुर धंधा, (सुपा ६०५)। °कां
[°कर्मिन्] १ निष्ठुर कर्म करने वाला, २ व
व्यवहारिक, (ओघ २१८)। °किरण पु [दि
सूर्य, सूरज, (पिंग ; सण)। °दूसण पु [दूषण]
नाम का एक विद्याधर राजा, जो रावण का बनेवी था ; (
१०, १७)। °नहर पु [°नखर] शरभ जन्तु, हि
प्राणी ; (सुपा ११६, ६७४)। निस्सण पु [निस्वन
इस नाम का रावण का एक सुभट, (पउम ६६, १०)। °सु
पु [°सुत] १ अनार्य देश-विशेष ; २ उस

का निवासी ; (पउ १, ४)। °मुही स्त्री [°मुखी] १ कार्य-विशेष; (पउम ५१, २३; सुपा ६०; भवि) । २ नपुंसक दासी ; (वव १)। °यर वि [°तर] १ विशेष कठोर ; (सुपा ६०६)। २ पुं. इस नाम का एक जैन गच्छ; (गण)। °सत्थय न [°संतक] लिंग का भेद ; (श्रोप ४०६)। °सावित्रा स्त्री [°शाविका] लिंग-विशेष; (पव ३६)। °सुर पुं [°सुर] परमाधार्मिक देवों की एक जाति ; (सम २८)।

खर वि [क्षर] विनश्वर, अस्थायी ; (किरा ४६०)।

खरंट सक [खरण्ट्य्] १ धूल करना, निर्लज्जता करना। २ लेप करना। खरंटइ ; (भवि ४६)।

खरंट वि [खरण्ट] १ धूल करने वाला, निष्कारक ; २ लांछित करने वाला ; ३ अशुचि पदार्थ ; (हे ४, १ ; भवि ४६)।

खरंटण न [खरण्टन] १ निर्लज्जन, परम मारण; (वव १)। २ द्वेषण ; (श्रोप ४० टी)।

खरंटणा स्त्री [खरण्टना] ऊपर देखो ; (श्रोप ७६)।

खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना । संक्रे—खरडिवि; (सुपा ४१६)

खरड पुं [खरट] एक जातीय म्लेच्छ-जाति ; "अह केरड सारसेय डिंडिर हरिस वग्गवरिवस्स" (सुपा ३६२)।

खरडिअ वि [दे] १ कच्चा, रसा ; २ मला, नष्ट ; (दे २, ७८)।

खरडिअ वि [लिप्त] लिपाने लेप किया गया होवह, पोता हुआ ; (श्रोप ३७३ टी)।

खरण्ण न [दे] कूट कौवे की कल्पित-कथा डाली; (दा ४, ३)।

खरण्ण पुं [दे] १ कर्कश, निष्ठुर ; (श्रोप ४३८) । २ गरु; (सण १२, १)।

खरहर सक [खरखरायृ] 'खरखर' आवाज करना। वह—खरहरंत ; (गउड)।

खरहिअ पुं [दे] पैर, पैर, पुत्र का पुत्र ; (दे २, ७३)।

खरा स्त्री [खरा] उल्लू-विशेष, उल्लू की तरह मुंह से बोलने वाला उल्लू-विशेष ; (श्रोप २)।

खरिअ वि [दे] पुष्ट, मजबूत ; (दे २, ६० ; भवि)।

खरिआ स्त्री [दे] कैफियत, हकीकत ; (श्रोप ४३८)।

खरिसुअ पुं [दे, खरिशुक] उल्लू-विशेष ; (श्रा २०)।

खरुट्टी स्त्री [खरोष्ट्री] देखो खरोट्टिआ ; (पण्ण १)।

खरुल्ल वि [दे] १ कठिन, कठोर ; २ स्थूल, विषम और ऊँचा ; (दे २, ७८)।

खरोट्ठिआ स्त्री [खरोष्ठिका] लिपि-विशेष; (सम ३५)।

खल सक [स्खलय्] १ पहना, गिराना । २ भूलना । ३ रुकना । खलइ ; (प्राप्र) । वकृ—खलंत, खलमाण ; (से २, २७ ; गा ६४६ ; सुपा ६४१)।

खल वि [खल] १ दुर्जन, अधम मनुष्य ; (सुर १, १६)। २ न. धान साफ करने का स्थान ; (विपा १, ८; श्रा १४)। °पू वि [°पू] खले को साफ करने वाला ; (कुमा ; पड् ; प्राप्र)।

खलइअ वि [दे] दिग्ध, लोंदी ; (दे २, ७१)।

खलक्खल सक [खलखलायृ] 'खल-खल' आवाज करना। खोटक्खलेइ; (सि ४६८)।

खलंडिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त ; (दे २, ६७)।

खलण न [स्खलन] १ नीचे देखो ; (आचा ; से ८, ६६ ; गा ४२६; कप्पा २६)।

खलणा स्त्री [स्खलना] १ गिर जाना, गिराना ; (दे २, ६४)। २ विनाश, मरण्डन ; (श्रोप ७८८)। ३ अस्कादन, स्खलाट ; "होऊण पुणो, स खलणा कोमि जइ अन्न वस-रुक्ष" (उप ३३६ टी)।

खलपलिय वि [दे] चुप्प, चौल-युक्त ; (भवि)।

खलहर) पुं [खलखल] नदी के प्रवाह का आवाज; "वह-खलहल] मगवहिरियं दिसिदिसिपुंजियकंठहासद्दो" (सुर ३, ११ ; २, ७६)।

खला अक [दे] खराब करना, दुरुस्तान करना। "खाणि गडो खलाइ व" (उप ३३, ६३)।

खलिअ वि [स्खलित] १ स्खलित हुआ; २ गिरा हुआ, पतित; (दे २, ७१ ; पाअ) । ३ न. अपराध, कुसूर ; ४ भूल ; (उ १, ६)।

खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलि-खलित ; (दे ४, १०)।

खलिअ [खलित] १ लगाम ; (पाअ) । २ कपोलपर्यंत का एक रोग ; (पव ६)।

खलिआ स्त्री [खलिका] लिंग कौवे का मैथुन-सूचक शब्द; (सुपा ४१४)।

खलियार सक [खलीकृ] १ तिरस्कार करना, धूल करना। २ छलना। ३ उपहास करना। खलियारेसि, खलियारेसि ; (सुर २३०, ८ ४१८)।

खप्पर } वि [दे] रक्त, लाल, सिन्दूर, (दे २, ६६,
खप्पुर } पाम)।
खम सक [क्षम्] १ क्षमा करना, माफ करना। २ सहन करना। खमइ, (उवर ८३, महा)। कर्म—खमिज्जइ, (भवि)। कृ—खमियव्व, (सुपा ३०७, उप ७१८ टी, सुर ४, १६७)। प्रयो—खमावइ, (भवि)। संकृ—खमावइत्ता, खमाविता; (पडि, काल)। कृ—खमावियव्व; (कप्प)।
खम वि [क्षम] १ उचित, योग्य, "खमिनो आहारो न खमो मज्झ वि पत्थेउं" (पव ६४; पाम)। २ समर्थ, शक्तिमान्; (दे १, १७; उप ६६०, सुपा ३)।
खमग पुं [क्षमक, क्षपक] तपस्वी जैन साधु, (उप पृ ३६२, ओघ १४०; भत ४४)।
खमण न [क्षपण, क्षमण] १ उपवास; (बृह १; निचू २०)। २ पु. तपस्वी जैन साधु; (उप १०—पव ६१४)।
खमय देखो खमग, (ओघ ६६४; उप ४८६; भत ४०)।
खमा स्त्री [क्षमा] १ पृथिवी, भूमि; "उव्वूढखमाभारो" (सुपा ३४८)। २ क्रोध का अभाव, शान्ति; (हे २, १८)। °वइ पुं [°पति] राजा, नृप, भूपति; (धर्म १६)। °समण पु [°श्रमण] साधु, ऋषि, मुनि; (पडि)। °हर पु [°धर] १ पर्वत, पहाड़; २ साधु, मुनि; (सुपा ६२६)।
खमावणया } स्त्री [क्षमणा] खमाना, माफी माँगना;
खमावणा } (भग १७, ३; राज)।
खमाविय वि [क्षमित] माफ किया हुआ; (हे २, १६२; सुपा ३६४)।
खम्मक्खम पु [दे] १ संग्राम, लड़ाई; २ मन का दुःख; ३ परचात्ताप का संग्राम; (दे २, ७६)।
खय देखो खच; खमइ; (षड्)।
खय अक [क्षि] क्षय पाना, नष्ट होना। खयइ; (षड्)।
खय देखो खग; (पाम)। २ आकाश तक ऊँचा पहुँचा हुआ; (से ६, ४२)। °राय पुं [°राज] पक्षि-मात्र का राजा; गरुड़-पक्षी, (पाम)। °वइ पु [°पति] गरुड़-पक्षी; (से १५, ६०)।
खय न [क्षत] १ व्रण, घाव; "खारकवेरं व खए" (उप ७१८ टी)। २ वक्षित, घायल हुआ, "भुयमोक्ख कोइसमो" (श्रा १४; सुपा ३४६; सुर १२, ६१)। °यार पुंस्त्री [°यार] गिरिकदराकरी नदी का कगार; (सण)।
खय वि [खात] खोदा हुआ, (पउम ६१, ४२)।
खय पु [क्षय] १ नाश, प्रलय, विनाश; (भग ११, १०) २ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा; (सुपा ६६६)। °कारिन् [°कारिन्] नाश-कारक; (सुपा ६६६)। °काल पु [°काल] प्रलय-काल; (भवि, हे ४, ३४४)। °ग्गि पु [°ग्नि] प्रलय-काल की अग्नि; (वि १६, ८)। °णाणि पुं [°ज्ञानिन्] केवलज्ञानी, परिपूर्ण ज्ञान का धारक सर्वज्ञ; (विसे ६१८)। °समय पु [°समय] प्रलय-काल, (सुपा ३)।
खयंकर वि [क्षयंकर] नाश-कारक; (पउम ७, ८८, ६६, ३४; पुप्फ ८२)।
खयंतकर वि [क्षयान्तकर] नाश-कारक; (सुर १, १७०)।
खयर पुंस्त्री [खचर] १ आकाश में चलने वाला, पक्षी; (सुर २०)। २ विद्याधर, विद्या बल से आकाश में चलने वाला मनुष्य, (सुर ३, ८८; सुपा २४०)। °राय पु [°राज] विद्याधरों का राजा; (सुपा १३४)।
खयर देखो खइर=खदिर, (भत १२; सुपा ६६३)।
खयाल पुन [दे] वंश-जाल, बाँस का वन, (षड्)।
खर अक [क्षर्] १ झरना, टपकना। २ नष्ट होना। खरइ (विसे ४६६)।
खर वि [खर] १ निष्ठुर, रूखा, कठोर, क्रूर, (सुर ३, दे २, ७८, पाम)। २ पुंस्त्री. गर्दभ, गधा; (पाअ १, १; पउम ६६, ४४)। ३ पु. छन्द-विशेष, (पिंग)। °तिल न [°तिल] तिल का तैल; (ओघ ४०६)। °कंट न [°कण्ट] बबूल की शाखा; (ठा ३, ४)। °कंड न [°काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम काण्ड—भवन-विशेष, (देवेन्द्र)। °कम्म न [°कर्मन्] जिसमें अनेक जीवों की हानि हो ऐसा काम, निष्ठुर धंधा; (सुपा ६०६)। °कम्मिय [°कर्मिन्] १ निष्ठुर कर्म करने वाला; २ कठोर दण्डशासिक; (ओघ २१८)। °किरण पु [किरण] सूर्य, सूरज; (पिंग; सण)। °दूसण पु [दूषण] नाम का एक विद्याधर राजा, जो रावण का बनोई था; (पउम १०, १७)। °नहर पु [°नखर] खतरनाक जन्तु, हिंस्र प्राणी; (सुपा १२६; ४७४)। °निस्सण पु [निस्वन] इस नाम का रावण का एक सुभट, (पउम ६६, ३०)। °मुह पुं [°मुख] १ अनार्य देश-विशेष; २ अनार्य देश-वि

का निवासी ; (पउम १, ४)। 'मुही स्त्री ['मुखी] १ खर-विशेष, (पउम ६१, २३; सुपा ३०; मोघ)। २ नपुंसक दासी ; (वव १)। 'यर वि ['तर] १ विशेष कठोर ; (सुपा ६०६)। २ पु. इस नाम का एक जैन गच्छ; (गच्छ)। 'सणय न ['संज्ञक] तिल का तैल , (ओघ ४०६)। 'सावित्रिआ स्त्री ['शाविका] लिपि-विशेष ; (सम ३५)। 'स्सर पुं ['स्वर] परमाधार्मिक देवों की एक जाति , (सम २६)।

खर वि [क्षर] विनश्वर, अस्थायी ; (पिंड ४५७)।

खरंट सक [खरण्टय्] १ धूत्कारना, निर्भर्त्सना करना। २ लेप करना। खरंटए ; (सूक्त ४६)।

खरंट वि [खरण्ट] १ धूत्कारने वाला, तिरस्कारक ; २ उत्लिप्त करने वाला ; ३ अशुचि पदार्थ ; (ठा ४, १ ; सूक्त ४६)।

खरंटण न [खरण्टन] १ निर्भर्त्सन, परुष भाषण; (सूत्र १)। २ प्रेरणा ; (ओघ ४० भा)।

खरंटणा स्त्री [खरण्टना] ऊपर देखो ; (ओघ ७५)।

खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना। संकृ—खरडिवि; (सुपा ४१५)

खरड पुं [खरट] एक जघन्य मनुष्य-जाति ; "अह केण खरडेणं किंतुइ हत्थिम वरणवयियस्स" (सुपा ३६२)।

खरडिअ वि [दे] १ रूक्ष, रूखा ; २ भग्न, नष्ट ; (दे ३, ७६)।

खरडिअ वि [लिप्त] जिसको लेप किया गया हो वह, पोता हुआ ; (ओघ ३७३ टी)।

खरण न [दे] बकुल कौरैया की कण्टक-मय डाली; (ठा४,३)।

खरय पुं [दे] १ कर्मकर, नौकर ; (ओघ ४३८) । २ राहु; (भग १२, ६)।

खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज करना। वह—खरहरंत ; (गउड)।

खरहिअ पुं [दे] पौत्र, पोता, पुत्र का पुत्र ; (दे ३, ७२)।

खरा स्त्री [खरा] जन्तु-विशेष, नकुल की तरह भुज से चलने वाला जन्तु-विशेष ; (जीव २)।

खरिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित , (दे २, ६२ ; भवि)।

खरिआ स्त्री [दे] नौकरानी, दासी ; (ओघ ६३८)।

खरिंसुअ पुं [दे. खरिंशुक] कन्द-विशेष , (श्रा २०)।

खरुट्टा स्त्री [खरोष्ट्री] देखो खरोट्टिआ (पण्ण १)।

खरूअ वि [दे] १ कठिन, कठोर ; २ स्थपुट, विषम और ऊँचा ; (दे २, ७८)।

खरोट्टिआ स्त्री [खरोष्ट्रिका] लिपि-विशेष ; (सम ३५)।

खल अक [स्खलय्] १ फिसलना, गिरना। २ भूलना। ३ रुकना। खलइ ; (प्राप्र)। वकृ—खलंत, खलमाण ; (से २, २७ ; गा ५४६ ; सुपा ६४१)।

खल वि [खल] १ दुर्जन, अधम मनुष्य ; (सुर १, १६)। २ न. धान साफ करने का स्थान ; (विपा १, ८; श्रा १४)। 'पू वि ['पू] गले को साफ करने वाला ; (कुमा ; षट् ; प्राप्र)।

खलइअ वि [दे] रिक्त, खाली ; (दे २, ७१)।

खलक्खल अक [खलखलाय्] 'खल-खल' आवाज करना। खोलक्खलेइ ; (पि ५५८)।

खलंडिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त ; (दे २, ६७)।

खलण न [स्खलन] १ नीचे देखो ; (आचा ; से ८, ५६ ; गा ४६६; वज्जा २६)। २ भूलना।

खलणा स्त्री [स्खलना] १ गिर जाना, निपतन ; (दे २, ६४)। २ विगर्हणा, भर्त्सन ; (ओघ ७८८)। ३ अतिकायन, रुवावट ; "होज्जा गुणो, ण खलणं कस्सि जइ अस्स वय-णस्स" (उप ३३६ टी)।

खलभलिय वि [दे] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त ; (भवि)।

खलहर] पुं [खलखल] नदी के प्रवाह का आवाज; "बद-खलहल] माणवाहिणीणं दिनिदिसिसुच्चंतरम्मलहरासद्दो" (सुर ३, ११ ; २, ७५)।

खला अक [दे] खराब करना, नुकसान करना। "ताणवि खलो खलाइ य" (पउम ३७, ६३)।

खलिअ वि [स्खलित] १ स्खा हुआ; २ गिरा हुआ, पतित; (हे २, ७७ ; पाम) । ३ न. अपराध, गुनाह ; ४ भूल ; (से १, ६)।

खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलि-खचित ; (दे ४, १०)।

खलिण [खलिन] १ लगाम ; (पाम)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष ; (पव ५)।

खलिया स्त्री [खलिका] तिल बगैरः का तैल-रहित चूर्ण; (सुपा ४१४)।

खलियार सक [खली+कृ] १ तिरस्कार करना, धूत्कारना। २ टालना। ३ उपद्रव करना। खलियारेमि, खलियारेंति, (सुपा २३०, ग ४८८)।

खलियार पु [खलिकार] तिरस्कार, निर्भर्त्सना, (पउम ३६, ११६)।

खलियारण न [खलीकरण] तिरस्कार, (पउम ३६, ८४)।

खलियारणा स्त्री [खलीकरणा] बदनामी, रुसवाई, (सुर २८)।

खलियारिअ वि [खलीकृत] १ तिरस्कृत; (पउम ६६, २)। २ बदनाम, रुसवा हुआ, (सुर २८)।

खलिर वि [स्खलितृ] स्खलना करने वाला, (वज्जा १८, गद्य)।

खली स्त्री [दे, खली] तिल-पिण्याक, तिल कोर का स्नेह-रहित पूर्त, (उ २, ६६, सुपा ४१६, ४१६)।

खलीकय देखो खलियारिअ; (पउम ४४)।

खलीकर देखो खलियार = खली+कृ। खलीकरेइ, (सुर २)। कर्म—खलीकरीयइ, खलीकिज्जइ, (सुर २८, गद्य)।

खलीण न [स्खलीन] घोड़ा का लगाम, (सुपा ७७, सुर ३, ७४)। २ मुँह का लगाम, "खलीणमप्पिय गलमाणे" (सिरि १, १—पद ११—१२)।

खलु अ [स्खलु] इस अर्थ का सूचक अव्यय,—१ अवधारण, निश्चय, (औप)। २ पुनः, फिर, (आचा)। ३ वाक्यालंकार और वाक्य का शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है, (आचा, निचू १०)। खिल न [क्षेत्र] अनाज का अच्छी तरह निर्जीव हुआ खेत, (आचा ८)।

खल्लंक पु [दे] १ बड़ी बेंत, अभिनव बेंत, (उ ४, १—पद २८८)। २ अभिनव शिष्य, कुशिष्य, (उप १०)।

खल्लकिच्चय वि [दे] १ बड़ी बेंत संबन्धी, २ उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन, (उप २०)।

खल्लय न [खल्लक] कुष्ठ, पैर का अभिनव-व्रण; (सिरि १, १)।

खल्ल न [दे] १ घड़ा का छिद्र, २ छिन्न; (द २, ७०)। ३ अन्न, भिक्षा, "अन्ना खल्लयरेणा [?] दिन्नदिन्नखल्लयं" (सुर ७८ टी, २ १, ३८)।

खल्लाडुअ वि [दे] १ अभिन्न, अद्रव्य-भूत, २ उन्मत्त, दर्प भूत; (पिंड ७८, भाव]; ४ [?] स्खलन होना [illegible]

खल्लाड देखो खल्लीड; (सिरि २०)।

खल्लिरा स्त्री [दे] संकेत; (दे २, ७०)।

खल्लिहड (अप) देखो खल्लीड; (हे ४, ३८६)।

खल्ली स्त्री [दे] सिर का वह चमड़ा, जिसमें केश पैदा न होता हो; (आचा)।

खल्लीड पु [खल्वाट] जिसके सिर पर बाल न हो, गंजा, चंदला; (हे १, ७४; कुमा)।

खल्लूड पु [खल्लूट] कन्द-विशेष, (पणण १—पद ३६)।

खव सक [क्षपय्] १ नाश करना, २ डालना, फेंक देना। ३ उल्लंघन करना। संक्रे; (उत्त)। वकृ खवंति; (भग १८, ७)। कर्म—खविज्जति; (भग)। वकृ—खवेमाण; (आचा १, १८)। संकृ—खवइत्ता, खवित्तु, खवेत्ता, (भग १६; सम्य १६; औप)।

खव पु [दे] १ बाम हस्त, बायाँ हाथ; २ सर्प, साँप, (दे २, ७०)।

खवग वि [क्षपक] १ नाश करने वाला, क्षय करने वाला, २ पु तपस्वी जैन मुनि; (उत्त; भाव ८)। ३ क्षपक श्रेणि में आरूढ, (कम्म ६)। °सेढि स्त्री [°श्रेणि] आत्म-कर्म, कर्मों के नाश की परिपाटी; (भग ६, ३३३, उत्त ३३८)।

खवडिअ वि [दे] स्खलित, स्खलना प्राप्त, (द २, ४१)।

खवण } न [क्षपण] १ क्षय, नाश, (औप)। २ डालना, प्रक्षेप; (कम्म ४, ७६)। ३ जैन मुनि; (सिरि ३६८६; सुपा ७८)।

खवय पु [दे] स्वजन, बंधु, (द २, ६०)।

खवय देखो खवग; (सम २६, आचा १३, औप)।

खवलिअ वि [दे] दलित, कुंठ, (द २, ७२)।

खवल्ल पु [खवल्ल] मत्स्य-विशेष, (सिरि ४८३ टी)।

खवा स्त्री [क्षपा] रात्रि, रात। °अर न [°कर, दिन, (उ ४, ६)।

खविअ वि [क्षपित] १ निर्जरित, क्षय किया हुआ, (उ ३०, उत्त)। २ उद्धरित, (उ ३३)।

खव्व पु [दे] १ कम या बंधा हुआ २ [illegible] ३ [illegible]

खव्व पे [खर्व] [illegible] (सम)

स.भू. – स्वाणी]

स्वायुर देखो स्वायुर. (सिद्ध ३८) ।

स्वयंकुल न [दे] मुख, मुँह ; (दे ३, १८) ।

स्वयं कर [दे] निश्चल, स्थिर ; पाला । स्वयं ... (पिंग) ।

स्वयं पुंड [स्वयम्] १ अपने देश विशेष, निजपुरुषत्व की
पुरुष में स्थित इस नाम का एक पक्षी। सुरत्न : ८
६६)। २ पुंसी, स्त्री देश में रहने वाला मनुष्य। (पण्ण १ —
पत्र १६; इक) ।

स्वयंगरण पु [स्वयम्गरण] देखो स्वयं-वर, उत्सव, स्वय.
(सं ६६) ।

स्वयंगहिय अक [दि] स्वयं, निजतरा, स्वि पढ़ना । वह स्वय-
पाठमाण ; (सं ३ ३५) ।

स्वयंकृति वि [दे] व्याकुल, अधीर । हुआ वि [भूत]
व्याकुल बना हुआ . (दे ४, ४१२) ।

स्वयंवर देखो कयंवर = दे कयंवर ; (सं ३ ; स ८८०) ।

स्वयंसिद्ध देखो स्वयंभू = स्वयंभू ; (दे १, १८३) ।

स्वयंसिद्ध वि [कालित] देखो विशेष. स्वयंसी, (हे १, १८२) ।

स्वयंसिद्ध वि [दे] निश्चल हुआ , (सुपा ३८१) ।

स्वयंभू पुं [दे] देखो-विशेष, पद्म . गुजराती में ' स्वय .
(सम) ।

स्वर देखो सय , (उ ३, १) ।

स्वहयर देखो स्वयर , । और ; विपा १, १ ।।

स्वहयरी स्त्री [स्वयरी] १ पत्नियों, सदा पत्नी । २
विधवारी, विधवा की स्त्री , (उ ३, १) ।

स्वा) सक [स्वाट] खाना, भोजन करना, सक्षण करना । स्वाद,
स्वाअ) स्वाद्य , स्वाट ; (हे ४, २७८) । संवि , (सुपा
३७० ; महा) । संवि—स्वादि ; (हे ४, २७८) ।
कर्म—स्वज्जइ ; (उत्त) । वकृ - स्वंत, स्वयंत, स्वाय-
माण , (कप्प १८ ; पउम २७, ७४ ; विपा १, १) ।
"संता तिमता इह जे मरंति, पुणोवि ते संति तिमंति गर्भ"
(कप्प १८) । कवकृ—स्वज्जंत, स्वज्जमाण ; (पउम
२२, ८३; गा २८८; पउम १२, ८१, ८७, ८०)। हेकृ—
स्वाइउं ; (वि ६७३) ।

स्वाअ वि [स्वात] १ सुखा हुआ, २ न सड़ा हुआ अखण्ड
अंग ; " सव्वोदगड " (कप्प) । ३ ऊपर में निर्मल
जली और नीचे में कीचड़ वाली पानी ; ४ ऊपर और नीचे
समान रूप से सुधी हुई पानी ; (औप) । ५ खाई,
परिखा , (पम) ।

स्वाइ सी [स्वाति] खाई, परिखा ; (सुर ३३४) ।

स्वाइ सी [स्वाति] प्रसिद्धि, कीर्ति ; (सुपा ४३६ ; उ
३, ४) ।

स्वाइ [दे] देखो स्वाई; (औप) ।

स्वाइअ देखो स्वाअ = स्वादिम ; (पिंड ४८ ; २१४ ;
सत्त ६७ दी) ।

स्वाइअ वि [स्वादित] खाया हुआ, भुक्त, भक्षित ; (प्राय-
चित्त १ १) ।

स्वाइआ सी [दे स्वानिका] खाई, परिखा; (दे २, ७३
पम ; सुपा ४३६ ; सग ५, ७ ; पउम ३, ५) ।

स्वाई म [दे] १—२ वाक्य की शोभा और पुनः शब्द के
अर्थ का सूचक अव्यय , (सग ५, ४ ; औप) ।

स्वाइम देखो स्वाअ = स्वादिम ; (सुपा ४६१) ।

स्वाइम न [स्वादिम] अन्न-वर्जित फल, औषध वगैरः ग
चीज; (सम ३८ ; उ ८२; औप) ।

स्वाइर वि [स्वादिर] खदिर-वृक्ष-संबन्धी; (हे १,६ ;
स्वाओवयम } देखो स्वओवयमिय ; (सुपा ५
स्वाओवयमिय } १४८ ; सम्य २३) ।

स्वाउअ वि [दे] प्रतिकृति, प्रतिबिम्बित ; (
७३) ।

स्वाउखड पुं [स्वाडखड] चौथी नरक-पृथिवी
नरकपाल ; (उ ६) ।

स्वाउहिया सी [दे] एक प्रकार का जानवर,
सियारी ; (पण्ण १, १; उत्त पृ २०४ ; पिंड ३०

स्वाण न [स्वादन] भोजन, भक्षण ; " स्वयंग
ण वह महिसो मंडवो अप्पमाणं " (गा ६
१९, १३८) ।

स्वाण न [स्थान] कथन, उक्ति ; (राज) ।

स्वाणि सी [स्वानि] शब्द, अवाज ; (
कना ; सुर ३४८) ।

स्वाणिअ वि [स्वानित] शब्दायमान हुआ ; (

स्वाणी देखो स्वाणि ; (पम) ।

[यजमान्] वही अर्थ ; (पउम ४, ८) ।

स्वाअ वि [स्वादित] खाया हुआ, भक्षित, "सव्वसिणा — " (गा
६६८ ; सवि) ।

खाणु) पु [स्थाणु] स्थाणु, ठूंठा वृक्ष, (पाअ २, ५, खाणुय) हे २, ७ ; कप्प)।

खाम सक [क्षमय्) क्षमाना, माफी माँगना। खामेइ, (भग)। कर्म—खामिज्जइ, खामीअइ ; (हे ३, १६३)। संकृ—खामेत्ता ; (भग)।

खाम वि [क्षाम] १ कृश, दुर्बल ; " खामंडकवोलं " (उप ६८६ टी ; पाम)। २ क्षीण, अशक्त, (दे ६, ४६)।

खामणा स्त्री [क्षमणा] क्षमापना, माफी माँगना, क्षमा-याचना, (सुपा ५६४, विवे ७६)।

खामिय वि [क्षमित] १ जिसके पास क्षमा माँगी गई हो वह, क्षमाया हुआ, (विसे २३८८ ; हे ३, १६२)। २ सहन किया हुआ, ३ विलम्बित, विलम्ब किया हुआ ; " तिण्णि अहोरत्ता पुण न खामिया मे कयंतेण " (पउम ४३, २१ ; हे ३, १६३)।

खार पुं [क्षार] १ क्षरण, झरना, सचलन, (ठा ८)। २ भस्म, खाक ; (णाया १, १२)। ३ खार, क्षार, लवण-विशेष, (सुअ १, ७)। ४ लवण, नोन, (बृह ४)। ५ जानवर-विशेष ; (पण्ण १)। ६ सर्जिका, सज्जी ; (सुअ १, ४, २)। ७ वि. कटुक स्वाद वाला, कटुक चीज, (पण्ण १७—पत्र ५३०)। ८ खारी चीज, लवण स्वाद वाली वस्तु, (भग ७, ६, सुअ १, ७)। °तउसी स्त्री [°त्रपुषी] कटु त्रपुषी, वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १७)। °तिल्ल न [तैल] खार से संस्कृत तैल, (पाअ २, ५)। °मेह पु [°मेघ] खार रस वाले पानी की वर्षा ; (भग ७, ६)। °यलिय वि [°पालिक] खार-पात्र में जिमाया हुआ, २ खार-पात्र का आधार भूत ; (औप)। °यत्तिय वि [°पृत्तिक] खार में फेंका हुआ, खारसे सिञ्चा हुआ, (औप, दसा ६)। °वावी स्त्री [°वापी] खार से भरी हुई वापी ; (पाअ १,१)।

खारंडिडी स्त्री [दे] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष, (दे २, ७१)।

खारदूसण वि [खारदूषण] खरदूषण का, खरदूषण संबन्धी, (पउम ४६, १६)।

खारय न [दे] मुख, कली, (दे २,७१)।

खारायण पु [क्षारायण] १ ऋषि-विशेष, २ भगवान् मेघ की सन्तान में उत्पन्न एक गोत्र ; (ठा ७)।

खारि स्त्री [खारि] एक प्रकार का नाप, (गा ८१२)।

खारिभरी स्त्री [खारिभरी] खारी-परिमित वस्तु जिस में भर सके ऐसा पात्र भर कर दूध देने वाली ; (गा ८११)।

खारिय वि [क्षारित] १ खारित, खराया हुआ, (सुअ २ पानी में भिगा हुआ ; (भवि)।

खारी देखो खारि ; (गा ८१२, जी १)।

खारुणिय पुं [क्षारुणिक] १ म्लेच्छ देश-वि २ उसमें रहने वाली म्लेच्छ जाति, (भग १२, २)।

खारोदा स्त्री [क्षारोदा] नदी-विशेष ; (राज)।

खाल सक [क्षालय्] धोना, पखारना, पानी से साफ क कृ—खालणिज्ज, (उप ३२६)।

खाल सील [दे] नाला, मोरी, अशुचि निकलने का मा (ठा २, ३)। स्त्री—खाला ; (कुमा)।

खालण न [क्षालन] प्रक्षालन, पखारना ; (सुपा ३१८

खालिअ वि [क्षालित] धौत, धोया हुआ ; (ती १२

खावणा स्त्री [ख्यापना] प्रसिद्धि, प्रकथन, "अस्स खावणाभिहाणं वा" (विसे)।

खावियंत वि [खाद्यमान] जिसको खिलाया जाता हो "कागणिमंसाइं खावियंत" (विपा १, २—पत्र २४)।

खावियग वि [खादितक] जिसको खिलाया गया वह ; "कागणिमंसखावियगा" (औप)।

खावेंत वि [ख्यापयत्] प्रख्याति करता हुआ, प्रसिद्धि क (उप ८३३ टी)।

खास पु [कास] रोग-विशेष, खाँसी की बिमारी, खाँ (विपा १,१, सुपा ४०४, सण)।

खासि वि [कासिन्] खाँसी का रोग वाला, (सुपा ३१

खासिअ न [कासित] खाँसी, खाँसना, (हे १,१८१)

खासिअ पुं [खासिक] १ म्लेच्छ देश-विशेष, २ उ रहने वाली म्लेच्छ-जाति ; (पण्ह १, १—पत्र १४ ; इ सुअ १, ५, १)।

खिइ स्त्री [क्षिति] पृथिवी, धरा, (पउम २०, १६ स ४१६)। °गोयर पु [°गोचर] मनुष्य, मानुष, (पउम ५३, ४३)। °पइट्ठ न [°प्रतिष्ठ] नगर-विशेष (स ६)। °पइट्ठिय न [°प्रतिष्ठित] १ इस नाम का नगर, (उप ३२० टी ; स ७)। २ राजगृह नाम नगर, जो आजकल बिहार में 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है (ती १०)। °सार पु [सार] इस नाम का एक पु (पउम ८०, ३)।

खिंखिणिया स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र घण्टिका, (उत्त

ी [किट्टिणी] ऊपर देखो । (उप १० ; स्वप्न
दि २७) ।
ी [दे] 'खलाणी, स्त्री-लिंग; (दे २, ३४) ।
[चिट्ठ] स्तंभित, अवरुद्धवाणी ; "अन्नेनचिंतइ-
ग्रन्थे" (स्वप्न) ।
[चिंत्] निन्दा करना, गर्हा करना, तुच्छ
चिंतइ; (श्रावक) । कर्म—चिंतिज्जइ; (हे ४, २८८) । कृ—चिंतणिज्ज,
चिंतिज्जंत; (उप ६८८) । कृ—चिंतणिज्ज,
ा १.३) ।
न [चिंतन] अपरिवाद, निन्दा, गर्हा ; (औप) ।
ा स्त्री [चिंतना] निन्दा, गर्हा ; (औप ; उप
४ टी) ।
ा स्त्री [चिंसा] ऊपर देखो ; (औप ६० ; ठ ४२) ।
मय वि [चिंसित] निन्दित, गर्हित ; (उप ६) ।
चिंसंड पु [दे] कुकडास, मिसिट, सट, (दे २, ३४) ।
चिंसयंत वि [चिंसयमान] 'सि-सि' आवाज करता ;
पद १,३—पत्र ४६) ।
चिक्खिरी स्त्री [दे] ढेला वगैरः की मर्यादा गोकने की लकीर ;
(दे २, ३३) ।
चिंच पुंन [दे] लोंवडी, कृमाण ; (दे १, १३४) ।
चिंचइ अक [चिंच्] १ सेट करना, अलोभ करना । २ उद्विग्न
होना, थक जाना । चिंचइज्ज, चिंचइज्जा ; (ग ३४ ; गउड; वि
४१७) । कृ—चिंचिज्जयव्व ; (महा ; गा ४१३) ।
चिंचइया स्त्री [चेंचइका] सेट-क्रिया, अलोभ, मन
का उद्वेग ; (छाया १, १६—पत्र २०२) ।
चिंचिंअ न [दे] उपालम्भ, उलहना ; (दे २, ३४) ।
चिंचिंअय वि [चिंचित] १ सेद-प्राप्त ; २ न. सेद ; (स
५११) । ३ प्रायः उन्हा मेघ ; (छाया १, ६—पत्र १६६) ।
चिंचिंअय न [चेंचितक] छन्द-विशेष ; (अजि ३) ।
चिंचिंअर वि [चेंचितृ] सेद करने वाला, चिन्ता होने की
आदत वाला ; (कुमा ७, ६०) ।
चिंचिंदु न [चेंचित] खेद, थकेश, मजाक ; "चिंचिंदुहत्थ मए मरिएवं
एए" (सुर ३०२) । "बालत्तणं निप्फलं गमेइ" (सुर
६८) । °कर वि [°कर] खेद करने वाला, मजाक करने
वाला ; (सुर ७८) ।
चिंचिण वि [चिंचित] १ चिन्न, खेद-प्राप्त ; २ श्रान्त, थका
हुआ ; (दे १, १३४ ; गा २६६) ।
चिंचिणी देखो खीणी ; (प्राप) ।

चिंचिल वि [चिंचिल] १ केश हुआ सुर ३, १०२ ; सुपा
३६१) । २ प्रेरित ; (दे १, ६३) । इल, 'चिंच वि
[चिंचिल] श्रान्त-चिन्न, विचिन्न-मनस्क, थकावट ; (उप ६,
३ ; मोघ ४६७ ; उप ६, १) । मय वि [मतन्]
चिंच-भ्रम वाला ; (महा) ।
चिंच देखो चेत्त ; (भवु ; प्रभु ; पडि) । देवया स्त्री
[देवता] चैत्र का अधिष्ठायक देव ; (आक ४७) । पाल
पु [पाल] देव-विशेष, चैत्र-रक्षक देव ; (सुपा १६२) ।
चिंतय न [चिंतक] छन्द-विशेष ; (अजि २४ ; २६) ।
चिंतय न [दे] १ अनर्थ, दुरुपाय ; २ वि. दग्ध, प्रज्वलित ;
(दे २, ७६) ।
चिंतिअ वि [चैत्रिक] १ चैत्र-संबन्धी ; २ पुं. व्यवहा-
विशेष ; "तत्थुट्ठं गरुलाणं जह बहुवरहेण चिंतिओ वाही"
(आ १२) ।
चिंत्त देखो चिण्ण=चिन्न ; (पाअ ; महा) ।
चिंप वि [क्षिप्र] शीघ्र, त्वरा-युक्त । °पाइ वि [°पति]
१ शीघ्र गति वाला । २ पुं. अभिनयति इन्द्र का एक लोक-
पाल ; (ठा ४, १) ।
चिंपं अ [क्षिप्रम्] तुरन्त, शीघ्र, जल्दी ; (प्रासू ३१ ;
पडि) ।
चिंपंत देखो चिंच ।
चिंपामेव अ [क्षिप्रमेव] शीघ्र ही, तुरन्त ही ; (अंत ३ ;
महा) ।
चिंर अक [क्षर्] १ गिरना, गिर पड़ना । २ टपकना, झरना ।
चिंरइ; (हे ४, १७३) । वकृ—चिंरंत; (पउम १०, ३२) ।
चिंरिय वि [क्षरित] १ टपका हुआ ; २ गिरा हुआ ;
(पाअ) ।
चिंल न [चिल्ल] अहह-ध्वनि, ऊपर उर्मिन; (पिंड १, २—
पत्र २६) ।
चिंलीकरण न [चिल्लीकरण] मजबूती करना, मुख्य करना;
"दुबलबलवंगचिंलीकरणकवाडाओ वेल्लइओ" (मै ८) ।
चिंल्ल सक [कीलय्] खेलना, रुकावट डालना । 'मणइ
इमस्स बन्धव ! गमणं चिंल्लेसि कट्ठिउं रहं" (सुपा १३७) ।
चिंल्ल अक [चेल्ल्] खेल करना, खेल करना, क्रीडा
करना । वकृ—चिंल्लंत ; (सुपा ३६६) ।
चिंल्लण न [चिल्लन] खिलौना, खेलना ; (सुपा १५, २०८) ।
चिंल्लहड पुं [दे चिल्लहड] । कन्द-विशेष ; (श्रा २० ;
चिल्लहल) पुं [चिल्लहल] धर्म २) ।

खिव सक [क्षिप्] १ फेंकना । २ प्रेरना । ३ डालना । खिवइ, खिवइ, (महा) । वकृ—खिवेमाण, (णाया १, २) । कवकृ—खिप्पंत; (काल) । संकृ—खिविय, (कम्म ४, ७८) । कृ—खिवियव्व, (सुपा १६०) ।

खिवण न [क्षेपण] १ फेंकना, क्षेपण ; (से १२,३६) । २ प्रेरण, इधर उधर चलाना ; (से ५, ३) ।

खिविय वि [क्षिप्त] १ क्षिप्त, फेंका हुआ, २ प्रेरित, (सुपा २) ।

खिव्व देखो खिव । संकृ—"अह खिव्विऊण गन्न, पोए ते पत्थिया रयणभूमि" (धम्म १२ टी) ।

खिस सक [दे] मरकना, सिसकना । संकृ—"नियगाम गच्छंतम्म खिसिऊण वाहणाहिंतो पडिय" (सुपा ५२७ ; ५२८) ।

खीण देखो खिण्ण = खिन्न, "कायव्व सुयणकीणो" (पउम ३२, ३) ।

खीण वि [क्षीण] १ क्षय-प्राप्त, नष्ट, विच्छिन्न, (सम्म ६० ; हे २, ३) । २ दुर्बल, कृश, (भग २, ५) । °दुह वि [°दुःख] दुःख-रहित, (सम १५३) । °मोह वि [मोह] १ जिसका मोह नष्ट हो गया हो वह; (ठा ३, ४) । २ वि बारहवाँ गुण-स्थानक, (सम २६) । °राग वि [°राग] १ वीतराग, राग-रहित, २ पु. जिन-देव, तीर्थंकर देव, (गच्छ १) ।

खीयमाण वि [क्षीयमाण] जिसका क्षय होता जाता हो वह, (गा ६८६ टी) ।

खीर न [क्षीर] १ दुग्ध, दूध, (हे २, १७, प्राम १३, १६८) । २ पानी, जल, (हे २, १७) । ३ पु. क्षीरवर समुद्र का अधिष्ठायक देव, (जीव ३) । ४ समुद्र-विशेष, क्षीर-समुद्र, (पउम ६६, १८) । कयंब पु [°कदम्ब] इस नाम का एक ब्राह्मण-उपाध्याय, (पउम ११, ६) । °काओली स्त्री [°काकोली] वनस्पति-विशेष, क्षीरविदारी, (पण्ण १) । °जल पु [°जल] क्षीर-समुद्र, समुद्र-विशेष, (जीव) । °जलनिहि पु [जलनिधि] वही पूर्वोक्त अर्थ, (सुपा २६४) । दुम, द्रुम पु [द्रुम] दूध वाला पेड़, जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति ; (भग ३०६, णाया १,१) । °धाई स्त्री [धात्री] दूध पिलाने वाली दाई ; (पण्ण १०) । °पूर पु [°पूर] उबलता हुआ दूध ; °प्पभ पु [°प्रभ] क्षीरवर द्वीप का एक का रक्षक देव, (जीव ३) । °मेय पु [मेय] दूध-समान स्वाद वाले पानी की वर्षा; (निच्च) । °वई स्त्री प्रभूत दूध देने वाली ; (दुर्ग २) । °वर पु द्वीप विशे०, (जीव ३) । °वारि न [°वारि समुद्र का जल ; (पउम ६६, १८) । °हर पु [°धर] क्षीर-सागर; (वज्जा २४) । °लद्धि पु [लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से वचन दूध की तरह मालूम हो, २ ऐसी लब्धि वाला जीव, (पण्ह १,१, हुआ हो वह, "तए णं सालो पत्तिया वत्तिया खीरइय वि [क्षीरकित] संजात-क्षीर, जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति, (उप १०३१ टी) । खीरि वि [क्षीरिन्] १ दूध वाला, २ पु जिसमें खीरिज्जमाण वि [क्षीर्यमाण] जिसका दोहन किया जाता हो वह, (आचा १, १, ४) । खीरिणी स्त्री [क्षीरिणी] १ दूध वाली, (आक ४) । २ वृक्ष-विशेष, (पण्ण १—पत्र ३१) । खीरी स्त्री [क्षीरी] क्षीर, पक्वान्न-विशेष, (सुपा ६३ पाम) ।

खीरोअ पु [क्षीरोद] समुद्र-विशेष, क्षीर-सागर ; (हे १८२, गा ११७, गउड, उप ५३० टी, स ३४४) ।

खीरोआ स्त्री [क्षीरोदा] इस नाम की एक नदी, (ठा २, ३) ।

खीरोद देखो खीरोअ ; (ठा ७) ।

खीरोदग } पु [क्षीरोदक] क्षीर-सागर, (आया खीरोदय } औप) ।

खीरोदा देखो खीरोआ, (ठा ३, ४—पत्र १६१) ।

खील } खोल्ल } पु [कील, क] खीला, खूँटे, खूँटी ; (१०६, सुर १, ११, हे १, १८१, कुमा) । °मग पु [°मार्ग] मार्ग-विशेष, जहाँ उपद्रव रहने से खूँटे के निशान बनाये गये हों, (ठा १, ११) ।

खीलावण न [क्रीडन] खेल कराना, क्रीडा करना ।

°धाई स्त्री [°धात्री] खेल-कूद कराने वाली दाई, (ठा १, १—पत्र ३७) ।

खीलिया स्त्री [कीलिका] छोटी खूँटी, (भावस) ।

खीव पु [क्षीव] मद-प्राप्त, मदोन्मत्त, (दे ८, ६६) ।

खु अ [खलु] इन अर्थों का सूचक अव्यय, —१ निश्चय, २ विर्तक, विचार, ३ संशय, संदेह, ४ [illegible] अवधारण,

; ६ विस्मय, आश्चर्य ; (हे २, १६८ ; षड् ; गा १४१ ; ४०१ ; स्वप्न ६ ; कुमा) ।

लो खुहा ; (पण्ह २, ४ ; सुर १६८ ; गाथा १,) ।

ं स्त्री [क्षुत्ति] १ छींक ; २ छींक का निशान ; (गाथा , १६ ; भग ३, १) ।

खुपय पुं [दे] नख का छिद्र ; (दे २, ७६ ; पाम) ।

खुंखुणो स्त्री [दे] रण्ड, मुस्टण्डा ; (दे २, ७६) ।

खुंट पुं [दे] खूँटा, खूँटी । °मोडय वि [°मोटक] १ खूँट को मरोड़ने वाला, उससे चुराकर माल जाने वाला; २ पुं. इस नाम का एक हाथी ; (श्रा—मुख ८४) ।

खुंडय वि [दे] स्खलित, स्खलना-प्राप्त ; (दे २, ७१) ।

खुंपा स्त्री [दे] कृषि को खोदने के लिए बनाया जाता एक तृणमय उपकरण ; (दे २, ७६) ।

खुंभण वि [क्षोभण] क्षोभ उत्पन्न करने वाला ; (पण्ह १, १—पत्र २३) ।

खुज्ज) वि [कुब्ज] १ कुबड़ा; २ वामन; (हे १, १८१, खुज्जय) गा ६३४) । ३ वक्र, टेढ़ा ; (श्रौप) । ४ एक पर्वत में होने ; (पव ११०) । ५ न. संध्यन-विशेष, शरीर का वामन आकार ; (ठा ६ , सम १४८ ; औप) । °सी—खुज्जा, (गाथा १, १) ।

खुज्जिय वि [कुब्जित] कुबड़ा ; (गाथा) ।

खुट्ट सक [तुद्] १ तोड़ना, खण्डित करना, टुकड़ा करना । २ अक. खण्डित होना, टूटना । ३ सूदन, खण्डित होना, मुक्त ; (नाट—मृच्छ १२६ , हे ४, ११६) । खुट्टि, (ठा) ।

—ण [दे] खण्डित, खण्डित, छिन्न , (हे १, ७४ ;) ।

देखो खुड्ड-खुट्ट । खुत्त , (हे ४, ११६) । वि, (म ८, ४८) । बहु—°पडणिम्मल°पयर ट्ठंतरिम पिव " (पउम ३३, ११३ ; स ४४८) । ण—खुट्टिऊण ; (स ११३) ।

खुट्टिय [दे] देखो खुडुक्किय , (सं ११६) । ट्टिम वि [खण्डित] खण्डित, खण्डित, विच्छिन्न ; (दे १, ६३ ; षड्) ।

खुड्डक्क सक [दे] १ नीचे उतारना ; २ खण्डित होना । ३ अल्प की तरह चुराना । ४ कृपण के जैसा व्यवहार करना ।

खुड्डक्क ; (हे ४, २६६) । बहु—खुड्डुक्कंत ; (कुमा) ।

खुड्डुक्किअ वि [दे] १ अल्प की तरह चुरा हुआ, खण्डित हुआ ; (दे २१६) । २ गोप-मूक, कुत्ता से भौंक भागर करने वाला । स्त्री—°या ; (गा २२६ अ) ।

खुड्ड } वि [दे, क्षुद्र, क्षुल्लक] १ लघु, छोटा; (दे २, खुड्डग } ७४ ; कम ; हम ३ ; आचा २,२,३ ; उत्त १) । २ नीच, अधम, दुष्ट ; (पुक्ख ४४१) । ३ पुं. छोटा साधु, लघु भिक्षु ; (सुम १, ३, २) । ४ पुं. अंगुलित्र-विशेष, एक प्रकार की अंगुली ; (औप ; दश २०४) ।

खुड्डमड्ड म [दे] १ बहु, अत्यन्त ; २ छिन्न छिन्न ; (निचू २०) ।

खुड्डय देखो खुड्ड ; (हे २, १७४ ; षड् , कम्र ; सम ३५ ; गाथा १, १) ।

खुड्डाग } देखो खुड्ड ; (औप ; पण्ण ३६ ; गाथा खुड्डाय } १, ७ ; कम) । °णियंठ न [°नैर्ग्रन्थ्य] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवाँ अध्ययन ; (उत्त ६) ।

खुड्डिअ न [दे] सूत, मैथुन, संभोग ; (हे २, ७६) । खुड्डिआ स्त्री [दे, क्षुद्रिका] १ छोटी, लघु; (ठा २, ३; आचा २, २, ३) । २ दवा, नहीं सुखा हुआ छोटा नवांकुर; (ठा १ ; पण्ह २, ५) ।

खुड्डुगखुड्डिआ स्त्री [दे] प्रलय, नाश, अनिष्ट ; (दे २, ७६) ।

खुण्ण वि [क्षुण्ण] १ मर्दित ; (सा ४४६; निचू १) । २ चूर्णित ; (दे ६, ४६) । ३ मान, दलित ; " अह-रत्तारत्तपत्तं सहसा सुक्खुण्णा " (पउ ३८ ; सुपा) ।

खुण्ण वि [दे] परिवेष्टित ; (दे २, ७६) ।

खुण्ण वि [दे] निपात, टूटा हुआ ; (दे २, ७८ ; पाअ १, १ ; गा २११ ; ३३४ ; सुपा ; गउड) ।

खुणो म [क्षत्रम्] क्षत, क्षय; (उत्त, सुर १४, ६१ ; ८ ६) ।

खुद्द वि [क्षुद्र] तुच्छ, नीच, दुष्ट, क्रूर ; (पण्ह १, १ ; ८ ६) ।

खुद्द न [क्षोदय] चूरण, कुट्टन, पेषण; (उत्त १, ६ ; ८ ६) ।

खुद्दिआ स्त्री [क्षुद्रिका] लघुता द्योतक प्रत्यय की एक मूर्ति ; (ठा ३—पत्र ३१३) ।

खुद्ध वि [क्षुब्ध] क्षोभ-प्राप्त, चलायमान हुआ ; (३१३) ।

खुप्पिय वि [खुप्पित] कुपित ;

खुल्ल देखो खुड्ड = क्षुद्र, (पि ६६८)।
खुल्ल देखो खुज्ज = (दे) : (श्राम)।
खुल्ल अक [मज्ज्] डूबना, निमग्न होना। खुप्पइ, (हे ४, १०१)। वकृ—खुप्पंत, (गउड, कुमा, श्रौप)। हेकृ—खुप्पिउं, (नंदि ११, म ११, १)।
खुप्पिवासा स्त्री [क्षुत्पिपासा] भूख और प्यास, (पि ३८८)।
खुभ अक [क्षुभ्] १ क्षोभ पाना, क्षुभित होना। २ नीचे ढकना। वकृ—खुभंत, (स ७—पत्र ३८३)।
खुभिअ न [क्षोभित] क्षोभ, घबराहट। (राज)।
खुभ सक [क्षुभ्] क्षोभ, घबराना। खुभइ, (रयण १)। हे—खुभिउअ, (पउ २, २)।
खुभिअ वि [क्षोभित] १ क्षोभ-युक्त, घबराया हुआ, ३, १)। २ न. क्षोभ, घबराहट, (श्रौप)।
खुभिर वि [दे] क्षोभ, घबराया हुआ, (काया १,१—पत्र ४०)।
खुर पुं [खुर] घोड़ा के पैर का नख, (सुर १, २४८, ४, १०१)।
खुर पुं [क्षुर] छुरा, अस्त्र; (काया १, ८; कुमा, ७, ६१)। खुरग न [वत्र] अस्त्र, छुरा, (विपा १, ३, पत्र ६०)।
खुरप्प पुं [क्षुरप्र] १ बाण फेंकने का अस्त्र विशेष, खुरपा, (पि ११८)। २ अस्त्र विशेष, एक प्रकार का बाण; (पि ११८)।
खुरप्पाउह वि [दे] बाण-विशेष, (पिंग)।
खुरप्पाहुह वि [दे] बाण-विशेष, (पिंग)। २ खुरप्पाउह (पिंग)।
खुरलि वि [खुरलिन्] खुर वाला करने वाला, (भग ३)।
खुरहुर पुं [दे] अस्त्र-विशेष, (दे ३, ४४)।
खुरहुरा पुं [दे] खुरहुर (पिंग)।
खुरहुरिआ स्त्री [दे] अस्त्र-विशेष, (दे ३, ४४)।

खुल्ल वि [क्षुल्लक, क] १ छोटा, नीच, क्षुद्र, (पि ६६८)। २ पुं क्षान्तिय जीव विशेष, (जी ३७)।
खुल्लण (अप) देखो खुड्ड, (पिंग)।
खुल्लय वि [क्षुल्लक] १ लघु, क्षुद्र, छोटा, (पि ६६८)। २ कार्षा-विशेष, एक प्रकार की कौड़ी, (भग ३३६, पत्र ३३६)।
खुलिडी स्त्री [दे] गंडेरी, (दे ३, ४०)।
खुव पुं [क्षुप] जिसकी शाखा और मूल छोटे हों ऐसा एक वृक्ष, (पाया १, १—पत्र ८६)।
खुव्व पुं [दे] तृण-विशेष, काष्ठिक-तृण (प ६, पत्र ३४६)।
खुव्वय देखो खुभ। खुव्वइ, (पउ)।
खुव्वय न [दे] घर का पुड़ला, (दे ३, ४)।
खुह देखो खुभ। हे—खुहियव्व, (पउ ३१)।
खुहा स्त्री [क्षुध्] भूख, बुभुक्षा, (श्रा ... पत्र ...)।
परिसह, परीसह पुं [परिषह, परीषह] क्षुधा ... (पंच ३, ... ३४१)। २ त्रास, घबराहट, (पाया १, ... ३ भयानक, (सुर ३, ४२०)।
खूण न [क्षूण] दुःखाना, ग्लानि, (सुर ३, ४२०)।
खेअ सक [खेदय्] खिन्न करना, (सुर ३, ४२२, महा)।
खेअ पुं [खेद] १ श्रम, उद्वेग, ग्लानि, (सुर ३, ४२०)। २ पसीना, परिश्रम, (प ३१८, पत्र ३६)। ३ घबराहट, ग्लानि, (उप ६६)। ४ खिन्न, दुःखी, दुःख, (श्रा १४०)।
खेअ देखो खेत्त, (सुर १, ६, श्रा ...)।
खेअण न [खेदन] १ श्रम, उद्वेग, (सुर ३, ४२०)। २ ... (श्रा ...)।
खेअर देखो खयर, (श्रा, पत्र ...)।
खेइअ [खेदित] खिन्नता को प्राप्त, ...
खेइया पुं [खेदज्ञ] ...
खेउ पुं [खेतृ] ...

वेआलु वि [दि] १ निःसह, मन्द, अलसी ; २ अ-सहिष्णु, ईर्ष्यालु ; (हे २, ७७)।

वेइय वि [वेदित] विन्न किया हुआ; (स ६३४)।

वेयर देखो वेअर ; (हा ३, १)।

वेयज्जणा स्त्री [वेदना] वेद-सूचक बाली, पेट , (गाथा १, १८)।

वेड सक [कृ] सेवी करना, काम करना। वेडइ ; (सुर २७६)। "अह अन्नया व दुस्सिवि हलाइं विडंति अन्नकज्जेसु" (सुपा २३७)।

वेड न [वेष्ट] १ धूली का प्राकार वाला नगर ; (औप ; पउम ९, २)। २ नदी और पर्वतों से वेष्टित नगर ; (सूम २, २)। ३ पुं. सुगंधी, शिकार , (सवि)।

वेडग न [वेष्टक] फलक, ढाल ; (पउम ३, ३)।

वेडण न [कर्षण] खेती करना ; (सुपा २३७)।

वेडण न [वेष्टन] वस्त्रादिना, पोंद इटाना; (उप २२६)।

वेडणय [वेलनक] निर्लोना; (णाट—रत्ना ६२)।

वेडय पुं [ह्यैष्टक] १ विष, जहर ; (हे २, ६)। २ ज्वर-विशेष ; (कुमा)।

वेडय वि [रुफैष्टक] नागक, नाग करने वाला ; (हे २, ६; कुमा)।

वेडय न [वेटक] छोटा गाँव ; (पाम ; सुर २, १८३)।

वेडाइय वि [वेलक] खेल करने वाला, रमणशील (उप पृ १८८)।

वेडिअ वि [वृष्ट] हल से विदारित ; (हे १, १३६)।

वेडिअ पुं [रुफैटिक] १ नाग वाला, नागर ; २ अनादर वाला ; (हे २, ६)।

वेड्ड अक [रम्] क्रीडा करना, खेल करना। वेड्डइ ; (हे ४, १६८)। वेड्डंति ; (कुमा)।

वेड्ड) न [वेल] १ क्रीडा, खेल, रमणता, रतिक्रीड ;
वेड्डय) (हे २, १८४ ; महा; सुपा २७८ ; स ५०६)। २ बहाना, छल ; "मयणेड्डयं विदेऊण" (सुपा ५२३)।

वेड्डा स्त्री [क्रीडा] क्रीड़ा, खेल, रमणता ; (औप ; पउम ८, ३७ ; गच्छ २)।

वेड्ढिया स्त्री [दे] वाणी, उक्ति ; " भद्दे! पच्चिआ वेड्ढिया" (स ४८५)।

वेत्त पुंन [क्षेत्र] १ आकाश ; (विसे २७८८)। २ कृषि-भूमि, खेत ; (कुप्र १)। ३ उर्वरा, भूमि ; ४ देश, गाँव, नगर वगैरः स्थान ; (कम्म , पंच ; विसे)। ५ मार्ग, नीं ; (ठा १०)। °कप्प पुं [°कल्प] १ देश का विधान ; (बृह १)। २ क्षेत्र-संबन्धी अनुष्ठान ; ३ अन्य-विशेष, जिसमें क्षेत्र-विषयक आचार का प्रतिपादन हो; (पंचू)। °पलिओवम न [°पल्योपम] काल का नाप-विशेष ; (अणु)। °रिय पुं [°र्य] आर्य भूमि में उत्पन्न मनुष्य ; (पण्ण १)। देखो खित्त=क्षेत्र।

वेत्ति वि [क्षेत्रिन्] क्षेत्र वाला, क्षेत्र का स्वामी ; (विसे १४८२)।

वेम न [क्षेम] १ कुशल, कल्याण, हित ; (पउम ६५, १७ ; ठा ४८६ ; भत ३६ ; रयण ६)। २ प्राप्त वस्तु का परिपालन ; (गाथा १, ५)। ३ वि. कुशलता-युक्त, हितकर, उपद्रव-रहित ; (गाथा १, १ ; इस ५)। ४ पुं. पाटलिपुत्र के राजा जितशत्रु का एक अमात्य ; (आवू १)। °पुरी स्त्री [°पुरी] १ नगरी-विशेष; (पउम २०, ७)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३)।

वेमंकर पुं [क्षेमङ्कर] १ कुलकर पुरुष-विशेष ; (पउम ३, ५२)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ कुलकर-पुरुष ; (सम १५३)। ३ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि; (पउम २१, ८०)। ५ वि. कल्याण-कारक, हित-जनक ; (उप २११ टी)।

वेमंधर पुं [क्षेमन्धर] १ कुलकर पुरुष विशेष; (पउम ३, ५२)। २ ऐरवत क्षेत्र का पाँचवाँ कुलकर पुरुष-विशेष ; (सम १५३)। ३ वि. क्षेम-धारक, उपद्रव-रहित ; (राज)।

वेमय पुं [क्षेमक] स्वनाम-प्रसिद्ध एक अन्तकृद् जैन मुनि ; (अंत)।

वेमलिज्जिया स्त्री [क्षेमलिया] जैन मुनि-गण की एक शाखा ; (कप्प)।

वेमा स्त्री [क्षेमा] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३)। २ वेमगुरी-नामक नगरी-विशेष; (पउम २०, १०)।

वेरि स्त्री [दे] १ परिवेष्टन, नाल ; "कण्णवेरि" वा" (कुप्र २)। २ वेर, दुश्मन ; ३ उत्कंठा, उत्सुकता ; (सवि)।

वेल्ल अक [वेल्] खेलना, क्रीड़ा करना, रमणता करना। वेल्लइ ; (कप्प)। वेल्लउ ; (ठा १०६)। वकृ—वेल्लंत ; (वि २०६)।

वेल्ल पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, बल, निष्ठीवन, थूथू ; (स १० ; औप ; कप्प ; पंचा)।

वेल्लण) न [वेल्लन, °क] १ क्रीड़ा ; २ निष्ठीवन ;
वेल्लणय) (अंक ; स ५२७

सेलोक्कमोलि स्त्री [त्रैलोक्यमौलि] १ त्रिलोक शिरोमणि, त्रिलोक में सर्वोपरि का वाचक देने वाले, (पद्म २, १ ; सूत्र १)। २ वि उक्त अर्थवाचक, (अजित ; पद्म १७८)।

सेवंत देखा सेव = सेवय्। सेवन्त, (सि २०६)। वह सेवन्तवन्त, (उप ४४१)। प्रयो, वह —सेवन्तावेऊण, सि २०६)।

सेवन्त देखा सेव = सेवय्। सेवन्ता (स्वप्न)।

सेवन्तय देखा सेवन्त (उप ४४१)।

सेवन्तवन्त) व [सेवन्तवत्] १ सेवा करता, सेवा करता।

सेवन्तवन्तु) २ वि विनीत, (उप १४१ टी)। भाई स्त्री [भगिनी] सेवा करने वाली बहन, (स्वप्न)।

सेविअव्व व [देय] सेवने, होने, करने, (उप ४६, ४६)।

सेविअव्वय देखा सेवियव्व, (पउम)।

सेव्व १ [सेवा] १ सेवा, टहल, (उप ४४८ टी)। २ आश्रय, सहारा, (सिरि ६०२)। ३ सम्बन्ध-विशेष, (कम्म ४ ५१ ५४)।

सेव्व २ [सेव्य] उपास्य, सेव्य, आश्रय, "बहु चेव गुरू सव्वं आराध्य व्व आयरियं ", (उप ६ ४, २१)।

सेव्वग व [सेवक] सेवा, टहल, (सुर १, २)।

सेव्वय वि [सेवक] सेवा करने वाला, (सा १४१)।

सेव्वाविय वि [सेवित] सेवा कराया हुआ, (सुर १)।

सेस पुं [शेष] १ बाकी, अवशिष्ट, "सेसाणुभागसत्ता अणुभागा हुंति सेसाणं" (सूत्र ११, १४१)।

सेसंग) न [शेष] बाकी का अवयव, अवशिष्ट अंग, (सूत्र १, ११, ४१३)।

सेसंगया) स्त्री [शेषता] बाकी का अवयव, (सूत्र १, १३)।

सेसंगुल वि [शेषाङ्गुल] अवशिष्ट अवयव वाला, जिसका अंगुल बाकी रहा हो। वह —सेसंगुलत्तण, ओघ, पत्र १, २)।

सेसंत व [देय] अवसान, अन्त भाग, दशवां भाग। वह —सेसंतिअ, (सूत्र १, १ टी)। वह सेसंतिय, (सूत्र १, १ टी)।

सेसंतिय वि [देय] अवसान, अन्त भाग, (सूत्र १, १, ११)।

सेसंतिय वि [शेषान्तिक] १ अवसान, अन्त भाग, (सूत्र १, १, ११)। २ अन्त में होने वाला, (सूत्र १, १, ११)। ३ अन्त में होने वाला, (सूत्र १, १, ११)। ४ अन्त में होने वाला, (सूत्र १, १, ११)। ५ अन्त में होने वाला, (सूत्र १, १, ११)।

सेसंतिय देखा सेसंत

य—खोहिय]

)। °सिण न [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे
व में देवता का आवाहन किया जाता है ; (ठा १०)।
मिय न [क्षौमिक] १ कास का बना हुआ वस्त्र ;
ठा ३, ३)। २ सन का बना हुआ वस्त्र ; (कप्प)।
ोय देखो खोद ; (सम १४१ ; इक)।
ोर) न [दे] पात्र-विशेष, कर्चेटक ; (ठा पृ ३१५ ;
वोरय) सदि)।
ोल्ल पुं [दे] १ छोटा गधा ; (दे २, ८०)। २ बन
का एक देश ; (दे २, ८० ; ५, ३०; कुप्र १)। ३ मद्य का
नीचता कोट-कर्दम ; (माचा २, १, ८ ; कुप्र १)।

खोल्ल न [दे] कोटर, गह्वर " सोल्लं कोट्टरं " (निचू १५)।
खोसलय वि [दे] दन्तुर, लम्बे और बाहर निकले हुए दाँत वाला ; (दे २,७७)।
खोह देखो खोभ=क्षोभय। खोहइ ; (भवि)। वह—खोहेंत; (मे १५, ३३)। कवकृ—खोहिज्जंत ; (मे २, ३)।
खोह देखो खोभ=क्षाभ ; (पव १, ४ ; कुमा ; सुपा ३६७)।
खोहण देखो खोभण ; (श्रा १२ ; सुपा ५०२)।
खोहिय देखा खोभिय ; (सण)।

इस तिलिपाइअसद्दमहण्णवे खमागइसद्दसंकलणो
एमारहमो तरंगो समत्तो ।

ग

ग पु [ग] व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है, (प्रामा, प्राप)।

गइ वि [गमि] १ जाने वाला; २ प्राप्त होने वाला, जैसे—पगग, वगग, (आचा, महा)।

गइ स्त्री [गति] १ ज्ञान, अवगम, (विसे २५०२)। २ गमन चलन, गमन, (ठा १, १, ६)। ४ जन्मान्तर-प्राप्ति, भवान्तर-प्राप्ति, (कुमा)। ४ जन्मान्तर-प्राप्ति, भवान्तर-गमन, (ठा १, १, ६)। ५ देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक और मुक्त जीव की अवस्था, देवादि योनि, (ठा ५, ३)। °नाम न [°नामन्] (कम्म ३, १३; ४, १६)। °प्पवाय पु [प्रपात] १ गति की नियतता, (पण्ण १६)। २ गति का कारण-भूत कर्म; (सम ६७)। °गयण न [°गमन] अन्यान-विशेष, (भग ८, ७)।

गइंद पु [गजेन्द्र] १ ऐरावण हाथी, इन्द्र-हस्ती, २ श्रेष्ठ हाथी, (गउड, कुमा)। °पय न [पद] गिरनार पर्वत पर का एक जल-तीर्थ; (ती ३)।

गउ } गउअ } पु [गो] बैल, वृषभ, साँड; (हे १, १५८)। °पुच्छ पुन [°पुच्छ] १ बैल का पूँछ, २ वाद्य-विशेष; (कुमा)।

गउअ पु [गवय] गो-तुल्य आकृति वाला जंगली पशु-विशेष, (कुमा)।

गउआ स्त्री [गो] गैया, गौ, (हे १, १५८)।

गउड पु [गौड] १ स्वनाम-ख्यात देश, बंगाल का पूर्वी भाग, (हे १, २०१, सुपा ३८६)। २ गौड देश का निवासी; (हे १, २०२)। ३ गौड देश का राजा, (गउड, कुमा)। °वह पु [वध] वाक्पतिराज का बनाया हुआ प्राकृत भाषा का एक काव्य-ग्रन्थ, (गउड)।

गउ वि [गौण] अ-प्रधान, अ-मुख्य, (हे १, २)।

गउी स्त्री [गौणी] शक्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति, देखो गावय; (कुमा, हे १, १६२)।

गउय वि [गौरित] गौरव-युक्त किया हुआ, जिसका सम्मान किया गया हो वह, "गउयगयाइ सम्मानितगजादि" (सुपा ६०)।

गउरी स्त्री [गौरी] १ पार्वती, शिव-पत्नी, (पु २ गौर वर्ण वाली स्त्री; ३ स्त्री-विशेष। (कुमा)

गउ पु [पुत्र] पार्वती का पुत्र, स्कन्द, कार्तिकेय, (कुमा) गंधे देखो गाय = गव; "भीया जहागयगई पलिय (गभा)।

गंग पु [गङ्ग] मुनि-विशेष, द्विदिय मा का प्रवर्तक (ठा ७, विसे २४२५)। देत्त पु [दत्त] एक जैन मुनि, जो षष्ठ वासुदेव के पूर्व-जन्म का गुरु है (पउम २०, १७१)। २ नवमे वासुदेव के पूर्वजन्म का (भग १६, ५)। दत्ता स्त्री [दत्ता] की स्त्री का नाम; (विसे १, ७)।

गंग देखो गंगा। °प्पवाय पु [प्रपात पर्वत पर का एक स्थान, जहा से गगा (ठा २, ३)। °सोअ पु [स्रोतस्] का प्रवाह, (पि ८५)।

गंगली स्त्री [दे] मौन, चुप्पी, (सुपा १७८, ४

गंगा स्त्री [गङ्गा] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी, (ठा, २७, कप्प)। २ स्त्री-विशेष, (कुमा)। ३ के मत से काल-परिमाण-विशेष, (भग १५)। ४ नदी की अधिष्ठायिका देवी, (आवम)। ५ मंदाकिनी की माता का नाम, (णाया १, १६)। कुंड [°कुण्ड] हिमाचल पर्वत पर स्थित ह्रद-विशेष, जहा से ह निकलती है, (ठा ८)। °कूड न [°कूट] हिम पर्वत का एक शिखर, (ठा २, ३)। °दीव [°द्वीप] द्वीप-विशेष, जहा गगा-देवी का म (ठा २, ३)। °देवी स्त्री [देवी] गगा दे ष्ठायिका देवी, देवी-विशेष, (इक)। वत्त पु [वर्त्त] विशेष, (कप्प)। °सय न [°शत] गगावर्त्त ह में एक प्रकार का काल-परिमाण, (भग १५)। सर पु [°सागर] प्रसिद्ध तीर्थ-विशेष, जहा गगा समुद्र में मि है, (उत्त १८)।

गंगेय पु [गाङ्गेय] १ गगा का पुत्र, भीष्मपितामह (णाया १, १६, वेणी १०४)। २ ढंकिय का प्रवर्तक आचार्य, (आवू १)। ३ एक जैन मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के वंश के थे, (भग ६, ३३)।

गंछ } गंछय } पु [दे] बछड़ा, इस नाम की एक म्लेच्छ (दे १, ८४)।

गंज पुं [दे] गज , । दे २, ८३) ।

गंज पुं [गञ्ज] मेरु-विशेष, एक प्रकार की काच वस्तु ; (पव २, ४—पत्र १४८) । °माला स्त्री [शाला] कुंभ, लकड़ी वगैरः इकट्ठा रखने का स्थान , (निचू १४) ।

गंजण न [गञ्जन] १ अपमान, तिरस्कार, (सुर ८८०, १६) । °कुंजिणि स्त्री [°कुञ्जिनी] वनस्पति गंजा न होने इसलिये (वज्जा ९३) । °सिरिवाल मास्त्री, न संज्ञा वीरपुरुषिका" (वज्जा १८) ।

गंजा स्त्री [गञ्जा] मुख-पाक, रूप की बीमारी ; (दे २, ८४ टी) ।

गंजिअ पुं [गाञ्जिक] कलाल-पात्र, इक्ष देखने वाला, कलाल, (दे २, ८४ टी) ।

गंजिअ वि [गञ्जित] १ पराजित, अभिभूत ; "अवमिगंजिओ इव" (उप ६८६ टी) । २ हत, मारा हुआ, विनष्ट । (निचू) । ३ पीड़ित , (दे ४, ४०२) ।

गंजिल्ल वि [दे] १ विशेष-प्राप्त, विपुल ; २ अत्यन्त-चिन, पचुर ; (दे २, ८३) ।

गंजोल वि [दे] व्याकुल, व्याकुल , (षड्) ।

गंजोल्लिअ वि [दे] १ गात्र-स्थित, सिक्त गात्र सदृश हुआ हो वह ; (दे २, १०० , मवि) । २ न. हमेशा के लिए किया जाता अंग-संस्कार, गुदगुदी, गुदगुदाहट , (दे २, १००) ।

गंठ सक [ग्रन्थ्] १ संदर्भ, गूँथना । २ रचना, बनाना । गंठ : (हे ४, १२०, षड्) ।

गंठ देखो गंथ ; (गच ; सुख २, ४ ; धर्म २) ।

गंठि पुंस्त्री [ग्रन्थि] १ गाँठ, जोड़ , २ बाँस आदि की गिरह, पर्व ; (हे १, ३४ ; ४, १२०) । ३ गवाँरु, गँवार, मूर्ख ; (हे १, १३ ; प्रौढ) । ४ लोह-विशेष , (उप ३५३) । ५ गण-द्वेष का हेतु-विशेष, परिणाम-विशेष ; (उप ३५३) । "गंठित्ति सुदुब्भेओ कक्खडघणरूढगूढगंठि व्व ।

जीवस्स कम्मजणितो घणरागद्दोसपरिणामो" (विसे ११६४) ।

°छेअ पुं [°च्छेद] गाँठ तोड़ने वाला, चोर-विशेष, पॉकेट-मार ; (दे २, ८६) । °भेअ पुं [°भेद] ग्रन्थि का भेदन ; (धर्म १) । °भेयग वि [°भेदक] ग्रन्थि के भेदने वाला ; २ पुं. चोर-विशेष ; (स्थान ५, ३८, पत्र ५३३) । °मुक्क पुं [°मुक्त] १ ग्रन्थि से छूटा हुआ । २ न. अपने को कृतकृत्य-विशेष, अनि-विशेष ; (धर्म २ ; पिंड) ।

गंठिम न [ग्रन्थिम] १ अन्यत्र से लाई हुई माला वगैरः ; (पव २, ६ ; सग ६, ३३) । २ गुम्फ-विशेष ; (सम्म ११—पत्र ३३) ।

गंठिय वि [ग्रथित] गूँथा हुआ, गया हुआ ; (कुम) ।

गंठिय वि [ग्रन्थिक] गाँठ वाला ; (सूत्र २, ६) ।

गंठिल्ल वि [ग्रन्थिमत्] ग्रन्थि युक्त, गाँठ वाला; (गउड) ।

गंड पुं [दे] १ वन, जंगल ; २ दाल्दापत्यिक, कंटकाल ; ३ छोटा मृग ; (दे २, ८६) । ४ सन्धि, जोड़ ; (दे २, ८६ ; आचा २, १, २) । ५ न. गुच्छ, समूह ; "दुसगंडसंदोहदवग्गिदावं" (सत्त) ।

गंड पुं [गण्ड] १ गाल, कपोल ; (सग ; सुर ८) । २ गण्ड-विशेष, गण्डमाला ; "कंठ मा कोल बिंब गंडेसोरि-फेडियचुल्ल" । उप ३६८ टी ; आचा) । ३ हाथी का दुष्प्रस्थित ; (पव २६ ।। ४ कुष्ठ, स्थान ; (उत्त ८) । ५ ऊख का जत्था, इक्षु-समूह ; (उप पृ ३५८) । ६ छन्द-विशेष ; (पिंग) । ७ फोड़ा, स्फोटक ; (उत्त १०) । ८ गँडा, अस्त्र ; (अभि १७ ; अभि १८४) । °भेअ, °भेयग पुं [°भेदक] चोर-विशेष, पॉकेटमार (अभि १७ ; अभि १८४) । °माणिया स्त्री [°माणिका] धान्य का एक प्रकार का नाप ; (गच) । °माला स्त्री [°माला] वेल-विशेष, जिसमें अनेक फूल आती हैं; (स्थान ५, ३, पत्र ३१३) । °लेहिअ न [°लेखित] कपोल-भाग, गाल पर लगाई हुई कस्तूरी वगैरः की [°लेहा] कपोल-पाली, गाल पर लगाई हुई कस्तूरी वगैरः की पाली ; (कप्प) । °वडा स्त्री [°वटा] कपोल की घटा, (णि १, १ ; गउड) । °वच्छया [°वक्षस्का] पंख स्थानों में पुष्ट छाती वाली स्त्री ; (ठा ८) । °वालिया स्त्री [°पालिका] बाँस का छिलका, जो टोपरा में लगा होता है; (सुर ३, ८) । °वाली पुं [°पालि] गाल का पार्श्व-भाग ; (गउड) । °वाहडिया स्त्री [गण्डवाहिका] वेल-विशेष ; (अनुत्त) । °संडय पुं [गण्डसंड] १ गेंडा, जानवर विशेष ; (दे ३, ५१) । २ दुर्बुद्धिवाला बनिया पुरुष, (दे ३, ५१) । °वाला पुरुष ; (अंत ६ ८८) ।

गंडअली स्त्री [दे] गंडेरी, ऊख का टुकड़ा; (उप पृ ३५८) ।

गंडि पुं [गण्डि] अन्न-विशेष ; (उत्त १) ।

गंडि वि [गण्डिन्] १ लम्बपात्र का खेल करने वाला; २ गण्ड रोग वाला; (पव २, ५) ।

गंडिया स्त्री [गण्डिका] १ गंडेरी, ऊख का टुकड़ा ; (अभि) । २ लम्बा का एक प्रकार ; (ठा

१ एक अर्थ के अधिकार वाली ग्रन्थ-पद्धति, (सम ११६)।
गंडिल देखो गंधिल, (इक)।
गंडिलावई देखो गंधिलावई; (इक)।
गंडी स्त्री [गण्डी] १ सोनार का एक उपकरण; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। २ कमल की कर्णिका, (उप ३६)। °तिंदुग न [°तिन्दुक] यक्ष-विशेष, (तो ३८)। °पय ७ [°पद] हाथी वगैर चतुष्पद जानवर, (ठा ४, ४)। °पोत्थय पुन [°पुस्तक] पुस्तक-विशेष, (ठा ४, २)।
गंडीरी स्त्री [दे] गण्डेरी; ऊख का टुकड़ा, (दे २, ८२)।
गंडीव न [गाण्डीव] १ अर्जुन का धनुष, (वेणी ११२)। गंडीव न [दे, गाण्डीव] धनुष, कार्मुक, (दे २, ८४, महा, पाम)।
गंडीवि ७ [गाण्डीविन्] अर्जुन, मध्यम पाण्डव, (वेणी ५८)।
गंडुअ न [गण्डु] मोमीमा, मिहना, (महा)।
गंडुअ न [गण्डुत्] तृण-विशेष, (दे २, ७५)।
गंडुल ७ [गण्डोल] कृमि-विशेष, जो पेट में पैदा होता है; (जी १५)।
गंडूपय ७ [गण्डूपद] जन्तु-विशेष, (राज)।
गंडूल देखो गंडुल; (पण्ह १, १—पत्र २३)।
गंडूस ७ [गण्डूष] पानी का कुल्ला; (गा १७०, सुपा ४४६), "बहुमइरागडूसगाण" (उप ६८६ टी)।
गंत देखो गा।
गंतव्व } देखो गम = गम्।
गंता }
गंतिय न [गन्तृक] तृण-विशेष, (पण्ण १—पत्र ३३)।
गंती स्त्री [गन्त्री] गाड़ी, शकट; (धम्म १२ टी; सुपा २७७)।
तुं देखो गम = गम्।
तुंपच्चागया स्त्री [गन्धाप्रत्यागता] भिक्षा-चर्या-रोध, जैन मुनियों की भिक्षा का एक प्रकार; (ठा ६)।
काम वि [गन्तुकाम] जाने की इच्छा वाला; (ठा १४)।
ण वि [गन्तुमनस्] ऊपर देखो, (कप्प)।
देखो गम = गम्।
गंठ—ग्रन्थ। गथइ, (वि ३३३)। कर्म—(वि १४८)।

गंथ ७ [ग्रन्थ] १ गास, गुच्छ, पुस्तक; (कि ११८३)। २ धन-धान्य वगैरः बाह्य और कोष, मान आदि आभ्यन्तर उपधि, परिग्रह; (ठा ६, सिरे २१७३)। ३ धन, पैसा, (ग ११)। ४ स्वजन, संबन्धी लोग; (पण्ह १, ४)। [°तीत] जैन साधु; (सूअ १, ६)।
गंथि देखो गंठि, (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।
गंथिम देखो गंठिम; (णाया १, १३)।
गंदिला स्त्री [गन्दिला] देखो गंधिल; (इक)।
गंदीणी स्त्री [दे] कीड़ा—विशेष, जिसमें आँत जाती है, (दे २, ८३)।
गंदुअ देखा गेंदुअ, (पउ)।
गंध ७ [गन्ध] १ गन्ध, नाभिका से प्रगट होने वाली पदार्थों की वास, महक, (औप, भग, हे १, १११, १, १)। २ सेवा; (से ६, ३)। ३ पूर्ण-विशेष, (अ ४ न देव-विमान-विशेष, (सिरे १, ४)। ६ वि. अ युक्त पदार्थ, (सूअ १, ६)। °उडी स्त्री [गन्ध-द्रव्य का घर, (गउड, हे १, ८)। °काय स्त्री [°कायिका] सुगन्धि कषाय रस को साधे, भग ६, ३३)। °गुण ७ [°गुण] गन्धमय (भग)। °ट्टय न [°टक] गन्ध-द्रव्य का घ (ठा ३, १—पत्र ११७)। °ड्ढ वि [°ढ्य] अ पूर्ण, सुगन्ध-पूर्ण, (पंचा २)। °णाम न [°नाम गन्ध का हेतुभूत कर्म-विशेष, (भग)। °तैल [°तैल] सुगन्धित तैल, (कप्प)। °दव्व [°द्रव्य] सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य, (ठा ३, देवी स्त्री [°देवी] देवी-विशेष, सौधर्म देवलोक एक देवी; (निर १, ४)। °द्धणि स्त्री [गन्ध-गुटी, (णाया १, १—पत्र १५, औप)। देखो °णाम; (सम ६७)। °भय ७ [कस्तूरी-मृग, कस्तूरिया हरिन, (सुपा २)। °भ [°भत्] १ सुगन्धित, सुगन्ध-युक्त, २ अभिमान वाला, विशेष गन्ध से युक्त, (ठा ६, ३—पत्र ३११)
°भायण, °भायण ७ [°भादन] १ पर्वत-विशेष, इस का ३—पत्र ६६)। २ पर्वत-विशेष का एक शिख (ठा ३, ३—पत्र ८०)। ३ नगर-विशेष, (सुर

[चरी] मृतनन्द-नगर गोविन्द का श्मशान-स्थान ; (हेम)। °चइय न [°चैत्य] मृतचिता देव-स्थान ; (विसा १, २)। °चट्टि स्त्री [°चर्ति] गन्ध-द्रव्य की बुँदी हुई गोली ; (गाथा १,१ ; औप)। °वह पु [°वह] न, बधू ; (दुषा ; सा ५४२)। °वत्थ पुं [°वास] मृतचिता वस्तु का पुंज ; २ चूर्ण-विशेष ; (सुपा ८१)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ मृतचिता, मृतश्य-पूर्ण ; २ न. गन्ध-विशेष ; (श्रावक ; इक)। °सालि पुं [°शालि] गन्धित शाली ; (श्रावक)। °हत्थि पु [°हस्तिन्] श्रेष्ठ हाथी, जिसकी गन्ध से दूसरे हाथी भाग जाते हैं , (सम ; पडि)। °हत्थि पु [°हस्ति] उक्तपूर्वक हस्ति, (कप्पू)। °हारग पुं [°हारक] १ इस नाम का एक देवता ; २ गन्धवाहक देश का निवासी , (पण्ण १, १ —पत्र १४)।

गंधिसाय पुं [दे] गन्धिक, पसारी ; (दे २, ८७)।

गंधी देखो गंध , (महा)।

गंधया स्त्री [दे] गान्धिका, द्राक्ष ; (दे २, ८६)।

गंधव्व पुं [गन्धर्व] १ देव गायन, स्वर्ग-गायक ; (इक ; सुर)। २ एक प्रकार की देव-जाति, व्यंतर देवों की एक जाति, (पण्ण १, १, औप)। ३ यक्ष-विशेष, भगवान् कुन्थुनाथ का शासन-रक्षक यक्ष , (संति ८)। ४ न. सूत्र-विशेष , (सम ५१)। ५ वृक्ष-मुक्त गीत, गाना , (विपा १, १)। °कंठ न [°कण्ठ] स्वर की एक जाति, (सम)। °घर न [°गृह] संगीत-गृह, संगीत-स्थान, संगीत का अभ्यास-स्थान, (उप १०)। °नगर, °नगर न [°नगर] आकाश-स्थान, आकाश में मनुष्य में दिखाई पड़ता-सा, जो नगरी उत्पात का सूचक है , (कप्पू , पव ११८)। °पुर न [°पुर] देखो पाचार , (महा)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष , (सम ३५)। °विवाह पु [°विवाह] देव-संबंधी विवाह, गंधर्व-पुरुष की इच्छा के अनुसार विवाह , (सूत्र)। °सेणा स्त्री [°सेना] गन्धर्व-कन्या, संगीत-दक्ष, संगीतज्ञ , (कप्पू)।

गंधव्व वि [गान्धर्व] १ गन्धर्व-संबंधी, गन्धर्व से संबंध रखने वाला , (उप १ ; प्रति १५१)। २ पु. उत्पादक विवाह-विशेष, विवाह-विशेष, "कन्यायाः विवाहात्मकः विवाहः" (श्रावक)। ३ न. संगीत, गान ; (पव)।

गंधव्विय वि [गान्धर्विक] १ गन्धर्व-विद्या में कुशल ; (सुर ३३६)।

गंधा स्त्री [गन्धा] नगरी-विशेष ; (इक)।

गंधाण न [गन्धान] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

गंधार पुं [गान्धार] देश-विशेष, कन्धार ; (स ३८)। २ पर्वत-विशेष , (स ३८)। ३ नगर-विशेष ; (स ३८)। गंधार पुं [गान्धार] स्वर-विशेष, संगीत-विशेष; (ठा ७)। गंधारी स्त्री [गान्धारी] १ नदी-विशेष, कुरु प्रदेश की एक नदी ; (पडि ; भवि १४)। २ विद्या-देवी-विशेष , (संति ६)। ३ भगवान् अभिनंदन की शासन-देवी ; (संति १०)।

गंधावह } पुं [गन्धवाहिन्] स्वनाम-ख्यात एक वृत्त
गंधाहाह } वैताढ्य पर्वत, (इक ; ठा २, ३—पत्र ६६; ८०, ठा ४, २—पत्र २२३)।

गंधि वि [गन्धिन्] गंध-युक्त, गंध वाला , (कम ; गउड)।

गंधिअ वि [दे] दुर्गन्ध, खराब गन्ध वाला; (दे २, ८३)।

गंधिअ पुं [गान्धिक] गन्ध-द्रव्य बेचने वाला, पसारी ; (दे २, ८७)।

गंधिअ वि [गन्धिक] गंध-युक्त, "गुणद्रव्यसमवायिकारणम्" (भाषा)। °साला स्त्री [°शाला] द्राक्ष वगैरः गन्ध वाली चीज की दुकान , (पव ६)।

गंधिअ वि [गन्धित] गन्ध-युक्त, गन्ध वाला, (ठा ३,३, सम ५४१ ; ८७१)

गंधिट्ठ पुं [गन्धिष्ठ] वर्ण-विशेष, विकट-वेश विशेष ; (ठा ३, ३ ; इक)।

गंधिलावई स्त्री [गन्धिलावती] १ देश-विशेष, विकट-वेश-विशेष , (ठा ३, ३ ; इक) २ नगरी-विशेष, (इ १७)। °कूड न [°कूट] १ गन्धमादन पर्वत का एक शिखर; (जं ४)। २ वैताढ्य पर्वत का शिखर-विशेष , (ठा ६)।

गंधिल्ली स्त्री [दे] दासी, दाँती ; (उप १०३१ टी)।

गंधुत्तमा स्त्री [गन्धोत्तमा] मदिरा, सुरा ; (दे २,८६)।

गंधोली स्त्री [दे] १ दासी, दाँती , २ स्नुषा-विशेष ; (दे २, १००)।

गंधोदग }न [गन्धोदक] सुगन्धित जल, सुगन्धित-युक्त
गंधोदय } पानी ; (कप्प ; सुर १, ६)।

गंधोली स्त्री [दे] १ दासी, क्रीत-दासी ; २ स्नुषा, वधू ; (दे २, ८६)।

गंधिं } देखो गन्धवत् ;
गंधिल्लु }

गंभीर वि [गम्भीर] १ अगाध, अतल, अथाह, गहन, (औप ; सं ६, ४१ , स्वप्न)। २ पुर, नगर-आदि, स्थान

प्रतिशब्द उत्पन्न हो ; (विसे ३४०४ , कुप्र १)
३ पु. रावण का एक सुभट ; (पउम ६६, ३)। ४ यदुवंश
के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र , (अंत ३)। ५ न. समुद्र
के किनारे पर स्थित इस नाम का एक नगर, (सुर १३,३०)।
°पोय न [°पोत] नगर-विशेष , (णाया १, १७)। °मा-
लिणी स्त्री [°मालिनी] महाविदेह-वर्ष की एक नगरी ,
(ठा २, ३)।

गंभीरा स्त्री [गम्भीरा] १ गंभीर-हृदया स्त्री ; (वा ६)।
२ मात्रा-छन्द का एक भेद , (पिंग)। ३ क्षुद्र जन्तु-विशेष,
चतुरिन्द्रिय जीव विशेष , (पण्ण १)।

गंभीरिअ न [गाम्भीर्य] गम्भीरता, गम्भीरपन , (हे २,
१०७)।

गंभीरिम पुस्त्री [गाम्भीर्य] ऊपर देखो ; (राय)।

गगण न [गगन] आकाश, अम्बर , (कप्प , स ३४८)।
°णंदण न [°नन्दन] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर ;
(इक)। °चल्लभ, °चल्लह न [°चल्लभ] वैताढ्य पर्वत
पर का एक नगर , (राज , इक)।

गगणंगण पुन [गगनाङ्गन] छन्द-विशेष, (पिंग)।

गग्ग पु [गर्ग] १ ऋषि-विशेष , २ गोत्र-विशेष, जो गौतम
गोत्र की एक शाखा है ; (ठा ७)।

गग्ग पु [गार्ग्य] गर्ग गोत्र में उत्पन्न ऋषि-विशेष, (उत्त २६)।

गग्गर वि [गद्गद] १ गद्गद आवाज वाला, अति अस्पष्ट
बोल, (प्राप्र)। २ आनंद या दुःख से अव्यक्त कथन, (हे १,
२१६ , कुमा)।

गग्गरी स्त्री [गर्गरी] गागरी, छोटा घड़ा, (दे २, ८६, कुमा
३३६)।

गग्गिर देखो गग्गर, "रुज्जगग्गिर गेम" (गा ८४३; सण)।

गच्छ सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ जानना। ३
प्राप्त करना। गच्छइ , (प्राप्र , पउ)। भवि— गच्छ ;
(हे ३, १७१ , प्राप्र)। कृ—गच्छंत, गच्छमाण ,
(सुर ३, ६६ ; मग १२, ६)। संकृ—गच्छिअ , (कुमा)।
हेकृ—गच्छित्तए , (वि ६६८)।

गच्छ पुन [गच्छ] १ समूह, सार्थ, संघात , (उ १४८)।
एक आचार्य का परिवार, (ओघ, सं ४७)। ३ गुरु-परिवार;
"गच्छा गच्छो, तत्थ वसंताण निज्जरा विउला" (पंचव,
३)। °वास पु [°वास] गुरु-कुल में रहना, गच्छ
के साथ विहार, (धर्म ३)। °विहार पु [°विहार]
गच्छ की समाचारी, गच्छ का आचार, (ओ
स्त्री [°सारणा] गच्छ का रक्षण ; (राज
गच्छासच्छि अ. गच्छ २ से होकर (औप)
गच्छिल्ल वि [गच्छवत्] गच्छ वाला, गच्छ
वाला , (कुप्र १)।

गज देशी गय = गज , (षड् ; प्रभू १७१; हे)।
पु [सार] एक जैन मुनि, दशार्ण-भद्र का वंश,
गज्ज पुं [दे] जा, यत, अव्यय-विशेष , (दे १, ८१, ग
गज्ज न [गद्य] छन्द-रहित वाक्य, प्रबन्ध ; (ठा ४, ४
पत्र २८७)।

गज्ज अक [गर्ज्] गरजना, धड़धड़ाना।
६८)। वकृ—गज्जंत, गज्जयंत , (सुर
५८)।

गज्जण न [गर्जन] १ गर्जन, भयंकर ध्वनि
का नाद। २ नगर-विशेष , (उप ७६५)।
गज्जणसद्द पु [दे. गर्जनशब्द] पशु और हाथी
(दे १, ८८)।

गज्जभ पु [गर्जभ] परिचमोत्तर दिशा का पवन , (
गज्जर पु [दे] कन्द-विशेष, गाजर, गजरा, इसक
धर्म शास्त्र में निषिद्ध है , (श्रा १६ , जी ६)।

गज्जल वि [गर्जल] गर्जन करने वाला , (निचू ३
गज्जह देखो गज्जभ , (आचा)।

गज्जि स्त्री [गर्जि] गर्जन, हाथी वगैर की आवा
सुपा ८८ , उप पृ ११७)।

गज्जिअ वि [गर्जित] १ जिसने गर्जन किया है।
स्तनित ; (पाअ)। २ न गर्जन, मेघ वगैर की ध्व
(पणह १, १)।

गज्जितु } वि [गर्जितृ] गर्जन करने वाला, गर्ज
गज्जिर } (उप ४.४ —पत्र २६६ , गा ५५)।

गज्जिअल्लिअ न [दे] १ गुदगुदी, गुदगुदाहट , ए
से होने वाला रोमांच, पुलक , (षड्)।

गज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य , (ठा १४० ; पिंड
गट्ठण पु [गट्ठन] धरणेंद्र की नाग्य सेना का अधि
(राज)।

गड्डिया स्त्री [दे] गड़िया, गुड़ली, "अयगड्डिया (धर्म
गड न [गड] १ विस्तीर्ण शिला, मोटा पत्थर ,
११०)। २ गर्त, खाई , (सुर १३, ८१)।

ग्रह [ग्रह] देखो गरह=ग्रह्। (उत्त)।

गरहड पुं [हि] गरुड, मन्त्रशास्त्र-प्रसिद्ध, सुवर्ण वर्ण की आकृति; "गरुडस्य सुपर्णस्य, खगेशस्य खगेश्वरः", "हे पक्षिन्नाथ विभो, हे खगेन्द्र गरुडध्वज" (सुपा १८१; १४१)।

गरहण अक [हि] गर्जना करना, आवाज करना करना। गरहणसुत्तय, (सुपा १६४)।

गरहणी स [हि] वज्र-विशेष, गरजने आवाज, वज्र-शक्ति, (पि २, ८, ; सण)।

गरहिअ न [हि] गरहा, गीलापन, ; (सुपा १४१)।

गरिअ, देखो गरुअ=गुरु।

गरुअ)
गरुल न [हि] आकाश वर्णन का आकाशवाचक ; (धर्म २)।

गरुई [गर्वी] गरदा, गरु, (हे २, ३१, प्राप्त, सुपा ११४)। स्त्री —गरुइ ; (हे १, ३५)।

गरुडिआ) स्त्री [हि] केंचो, मेंचो, झींगुर, "गरुडिआसद्दोत्ति
गरुडिया) लोगपसिद्धस्स रुक्ख विसेसस्स" (धम्म ; सुम १, ३, ४)।

गरुणी स्त्री [हि] १ छाती, मज्जा, बरसी, (हे २, ८४)। २ भेरी, मेंचो, (रंभ ३८)।

गरुड पुंस्त्री [हि] गरुड, गरुड, गरु, (हे २, ३०)। 'वाहण पुं [वाहन] गरुड, उत्तालक, (कुमा)।

गरुडिआ) स्त्री [हि] गरुडी, गरुड ; (आव ३८६ टी ;
गरुडी) हे २, ८१, सुपा २६२)।

गरुड न [हि] गरुआ, विशेषता ; (हे २, ८१)।

गरुड देखो घरुड=गरुड्। गरुड ; (हे ४, ११२)।

गरुड पुंस्त्री [हि] गरु, दुर्ग, किला, कोट ; (हे २, ८१ ; सुपा २४ ; १०४)। स्त्री—गरुडा ; (कुमा)।

गरुडिअ वि [ग्रथित] गरुड हुआ, ग्रथित ; (कुमा)।

गरुडिअ वि [ग्रथित] १ गूँथा हुआ, निबद्ध ; "वेहलिगट-गरुडिआणं" (उव ८८६ टी ; पाद १, ४)। २ संबंध, मुम्बिल, लिप्त ; (उप २, १)। ३ दृढ, आसक्त ; (आचा २, ३, २, पाद १, २)।

गरुय सक [गरुय] १ सिलना, सिलाई करना। २ आदर करना। ३ अन्वय करना, आकृति करना। ४ पर्यालोचन करना। गरुइ, गरुएइ, (कुमा ; महा)। क—गरुयंत, गरुयंत, (पव ४ ; से ६, १४)। ह—गरुयेयव्व, (उप ३६१)।

गरुय पु [गरुय] १ समुद्र, समुद्रतट, पुर, पोत, (सो ३४ ; कुमा, प्रभु ४, २६ ; १२१)। २ सत्य, सत्यमय आचार व्यवहार करने वाले साधुओं का समूह, (कप्प)। ३ उत्तराध्ययन आदि आगम-ग्रन्थ ; (विसे)। ४ सिंह का अनुचर, (पउम ; हम्मी)। ५ सत्यों का समुदाय ; (भग)। 'ओ पु [त्रस्] अनेकता, बहुता, (सुपा २, ६)। 'नायग पु [नायक] गण का मुखिया ; (आचा १, १)। 'नाह पु [नाथ] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया ; (सुपा २, १०)। २ आचार्य, जिनदेव का प्रधान शिष्य ; (पउम ११, ६)। ३ आचार्य, सूरि ; (सूत्र २३)। 'भाव पु [भाव] विशेष-विशेष ; (भग)। 'राय पु [राज] १ समूह का राजा ; (ठा ७, ६)। २ सेनापति ; (भग ३, ८०)। 'वइ पुं [पति] १ गण का स्वामी ; २ गणेश, गजराज, सिद्ध-पुरुष ; (ठा ३७२ ; भग)। ३ जिन देव का मुख्य शिष्य, गणधर ; (विसे २)। 'सामि पु [स्वामिन्] गण का मुखिया, गणधर ; (उप २८० टी)। हर पु [धर] १ जिन-देव का प्रधान शिष्य ; (ठा ११३)। २ अनुत्तर ज्ञानादि-गुण-समूह का धारण करने वाला जैन साधु, आचार्य वगैरः ; "जिनवचनं गणधरा" (आचा ; पंच २७६)। 'हरिद्द पुं [धरेन्द्र] गणधरों में मेरु, प्रधान गणधर ; (पउम ३, ४३ ; १८, १)। 'हारि पु [धारिन्] देखो हर ; (सम २३ ; कप्प १)। 'जीव पु [जीव] गण के नाम से जिनदेव करने वाला ; (उप ६, १)। 'वच्छेइय, 'वच्छेदय, 'वच्छेयय पुं [वत्सछेदक] साधु-गण के कार्य की चिन्ता करने वाला साधु ; (आचा २, १, १० ; ठा ३, ३ ; कप्प)। 'हिवइ पुं [धिपति] १ जिन-देव का प्रधान शिष्य ; (पउम २६, ४)।

गणाय पुं [गणक] [illegible] वेत्ती, ज्योतिश्शास्त्र का जानकार ; ([illegible] २ संख्यारी, गणितज्ञानविद् ; (उप्पा १, १

गणाय न [illegible], संख्यान ; (कप्प १)।

गणाया [illegible], लिखी, संख्या, संख्यान ; ([illegible] : सूम २, २)।

गणणाइआ स्त्री [दे. गण-नायिका] पार्वती, पत्नी, शिव-पत्नी, (दे १, ८७)।
गणय देखो गणग; (ओघ; सुपा २०२)।
गणसम वि [दे] गोष्ठी-स्थ, गोष्ठ में स्थित, (दे १, ८६)।
गणायमह पु [दे] शिष्ट-गणक, (दे १, ८६)।
गणाविअ वि [गणित] गिनती कराया हुआ, (स ६१६)।
गणि पि [गणिन्] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया। स्त्री—गणिणी, (सुपा ६०२)। २ पुं. आचार्य, गच्छ-नायक, साधु-समुदाय का नायक; (ठा ८)। ३ जिन-देव का प्रधान साधु-शिष्य, (पउम ६१, १०)। ४ परिच्छेद, निश्चय, सिद्धान्त, (णंदि)। °पिडग न [°पिटक] १ बारह मुख्य जैन आगम ग्रन्थ, द्वादशाङ्गी, (सम १, १०६)। २ निर्युक्ति वगैरः से युक्त जैन आगम, (ओप)। ३ पुं. यक्ष-विशेष, जिन-शासन का अधिष्ठायक देव; (संति ४)। ४ निश्चय-समूह, सिद्धान्त-समूह, (णंदि)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] १ शास्त्र-विशेष; २ ज्योतिष और निमित्त शास्त्र का ज्ञान; (णंदि)।
गणिम न [गणिम] गिनती से बेची जाती वस्तु, संख्या पर जिसका भाव हो वह, (श्रा १८; आया १, ८)।
गणिय वि [गणित] १ गिना हुआ, २ न. गिनती, संख्या; (ठा ६; जं २)। ३ जैन साधुओं का एक कुल; (कप्प)। ४ अङ्क-गणित, गणित-शास्त्र; (णंदि, अणु)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष, अंक-लिपि, (सम ३५)।
गणिय पुं [गणिक] गणित-शास्त्र का ज्ञाता, "गणियं जाणइ गणिओ" (अणु)।
गणिया स्त्री [गणिका] वेश्या, गणिका, (श्रा १२, विपा १, २)।
गणिर वि [गणयितृ] गिनती करने वाला, (गा १०८)।
गणेत्तिआ } स्त्री [दे] १ दर्भ का बना हुआ हाथ का
गणेत्ती } आभूषण-विशेष, (आया १, १६—पत्र २१३; ओप; भग; महा)। २ अक्ष-माला, (दे २, ८१)।
गणेसर पुं [गणेश्वर] १ गण का नायक। २ छन्द-विशेष, (पिंग)।
गत्त न [गात्र] देह, शरीर; (ओप; पाअ; सुर २, १०१)।
गत्त देखो गद्द; (भग १६)। स्त्री—गत्ता; (सुपा २१४)।

गत्त न [दे] १ हेरा, चौपड़ की लकड़ी जिस पर कौड़ियाँ फेंकी जाती हैं; (दे १, ६६)। २ वि. गत, गया हुआ, (दे १, ८२)।
गत्ताडी } स्त्री [दे] १ गाड़ना, बनावटी सिर;
गत्ताडी } (दे १, ८२)। २ गाड़ियों, गाड़ी बनाने का काम करने वाला, (दे १, ८२)।
गत्थ वि [ग्रस्त] ग्रसित, ग्रस्त किया हुआ, "लोभगत्थ (? त्था)" (पाअ १, ३—पत्र ४४, ओघ १४६)।
गद्द सक [गद्] बोलना, कहना। वकृ—गद्दंत, (ओघ ६६)।
गद्दभोय पु [गर्दभोद] लोहार्गल देश का एक राजा, (सम ८६, आचा १, ८)।
गद्दभ पुं [दे] कटु ध्वनि, कर्ण-कटु आवाज, (दे ८२, पाअ, स १११, ४२०)।
गद्दभ देखो गद्दह=गर्दभ, (आचा)।
गद्दभय देखो गद्दहय, (आचा २, ३, १, ४म)।
गद्दभाल पु [गर्दभाल] संस्कृत प्रसिद्ध एक ऋषि, (भग)।
गद्दभालि पुं [गर्दभालि] एक जैन मुनि, (ती ३१)।
गद्दभिल्ल पु [गर्दभिल्ल] उज्जयिनी का एक राजा, (निचू १०, पि २६१, ४००)।
गद्दभी स्त्री [गर्दभी] १ गधी, गदही, (पि २६१)। २ विद्या-विशेष, (काल)।
गद्दह पु [गर्दभ] १ गदहा, गधा, खर, (स १०१; १, ८०, पाअ, दे १, ३७)। २ इस नाम का एक मन्त्रि-पुत्र; (कुप्र १)।
गद्दह न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल, (दे १, ८२)।
गद्दहय पु [गर्दभक] १ क्षुद्र जन्तु विशेष, जो दो इन्द्रिय वगैरः में उत्पन्न होता है, (जी १७)। २ (नाट)।
गद्दहो देखो गद्दभो, (नाट—मृच्छ ६८)।
गद्दिअ वि [दे] गर्वित, गर्व-युक्त, (दे २, ८)।
गद्ध पु [गृध्र] पक्षि-विशेष, गीध, गिद्ध, (ओघ)।
गन्न वि [गण्य] १ माननीय, आदरास्पद, "करेंता, कप्प न होइ गरुआ गुरुगन्ना", "राया पुं (उप)। २ न. गणना, गिनती, "मुल्लन्ना (सुपा २६३)।

गमन न [गमन] १ गति, चेष्टा, प्रवृत्ति, क्रिया, व्यापार, कार्य (सुर १, १०१; १६, १०३; सुपा ४६१; ५६१; ६४६; ६४७; ६४८; ६४६; ६५०; ६५१; ६५२; ६५३; ६५४; ६५५; ६५६; ६५७; ६५८; ६५९; ६६०; ६६१; ६६२; ६६३; ६६४; ६६५; ६६६; ६६७; ६६८; ६६९; ६७०; ६७१; ६७२; ६७३; ६७४; ६७५; ६७६; ६७७; ६७८; ६७९; ६८०; ६८१; ६८२; ६८३; ६८४; ६८५; ६८६; ६८७; ६८८; ६८९; ६९०; ६९१; ६९२; ६९३; ६९४; ६९५; ६९६; ६९७; ६९८; ६९९; ७००; ७०१; ७०२; ७०३; ७०४; ७०५; ७०६; ७०७; ७०८; ७०९; ७१०; ७११; ७१२; ७१३; ७१४; ७१५; ७१६; ७१७; ७१८; ७१९; ७२०; ७२१; ७२२; ७२३; ७२४; ७२५; ७२६; ७२७; ७२८; ७२९; ७३०; ७३१; ७३२; ७३३; ७३४; ७३५; ७३६; ७३७; ७३८; ७३९; ७४०; ७४१; ७४२; ७४३; ७४४; ७४५; ७४६; ७४७; ७४८; ७४९; ७५०; ७५१; ७५२; ७५३; ७५४; ७५५; ७५६; ७५७; ७५८; ७५९; ७६०; ७६१; ७६२; ७६३; ७६४; ७६५; ७६६; ७६७; ७६८; ७६९; ७७०; ७७१; ७७२; ७७३; ७७४; ७७५; ७७६; ७७७; ७७८; ७७९; ७८०; ७८१; ७८२; ७८३; ७८४; ७८५; ७८६; ७८७; ७८८; ७८९; ७९०; ७९१; ७९२; ७९३; ७९४; ७९५; ७९६; ७९७; ७९८; ७९

गलेव देखो गवेव। गवाइ, (हे ४, १८६)। गवि: (कुमा)।

गम्म वि [गम्य] १ जानने योग्य, २ जो जाना जा सके; (उप १३०, कुमा ४२६) ३ होने योग्य, आकस्मिक, (सुर २, १२६; १४, १४४)। ४ जाने योग्य, = अगम्य गमन स्त्रीनी वगैरे, (सुर १२, ५२)।

गम्मगमाल देखो गम=गमु।

गय वि [दे] १ पूर्ण, भरित, पुलाकायमान, (दे २, ६६, ४६)। २ दत्त, आप हुआ, निर्दोष, (दे २, ६६)।

गय वि [गत] १ गया हुआ, (कुमा ३३८)। २ अतिक्रान्त, गुजरा हुआ, (दे १, ५६)। ३ विज्ञात, जाना हुआ (गउड)। ४ मरा हुआ; (उप ७२८ टी)। ५ प्राप्त; 'अणाइणिहिं गयं' (सम्मु ८३, १०७)। ६ स्थित, रहा हुआ, 'मणगयं' (उप १)। ७ प्रविष्ट, जिसने प्रवेश किया हो, (ठा ४, १)। ८ प्रसृत, (पाम १, १, १)। ९ बराबर हो, (भवि)। १० न गति, गमन, "उत्तमा गयइ गयइ। रायरोहिया भणई" (वज्जा, सुपा ५०८, माघ)। °गय वि [प्राप्त] पाया हुआ, (श्रा २७)। °राय पु [°काल] मरण प्राप्ति, मौत, निर्वाण, (उप ७२८ टी)। °वइया, °वई स्त्री [°पतिका] १ विधवा, रांड, (ओघ, पत्र ४२, ४३)। २ जिसका पति विदेश गया हो वह स्त्री, प्रोषितभर्तृका, (ठा ३३२, पत्र २६, ४२)। °वय वि [°वयस्] वृद्ध, बुड्ढा, (पाअ)। °सुगइअ वि [°सुगतिक] मरकर अच्छी गति का अनुभव किया हुआ, मरा अच्छी गति, (ठा ४, ४)।

गय पु [गज] १ हाथी, हस्ती, कुञ्जर, (प्रासू १८०, सुपा ३३८)। २ एक अनगार जैन मुनि, अन्तकृद्दशा मुनि, (अंत १)। ३ हाथ नाम का एक नाप, (ठा ४८८ टी)। ४ गणित का एक भेद, (पउम ८६, ७)। °उर न [पुर] नगर विशेष, कुरु देश का प्रसिद्ध नगर, हस्तिनापुर, (ठा ३०१० सुपा, पभ)। °कण्ण, °कन्न पु [°कर्ण] १ इस नाम का एक वृक्ष, २ उसके पत्ते के आकार का, (पंच ३, ढ ७, २)। °कडण न [°कदन] हाथी का अंकुश, (पभ)। °गय वि [°गत] हाथी पर चढ़ा हुआ, (पभ)। °णासय पु [°नासक] नगर विशेष, (पउम ८, ८१; सुर ३०४ टी, सुपा १, ४, १)। °पइय पु [°पदिक] हाथी का पदचिह्न करने वाला, (पउम ३०२)।

°मारिणी स्त्री [°मारिणी] वनस्पति, सिरदुखा, (पण्ण १—पत्र ३२)। °मुह पु [°मुख] १ शंख, २ यक्ष-विशेष, शिव-पुत्र; (पाअ)। २ यक्ष-विशेष, (आ °राय पु [°राज] प्रधान हाथी, श्रेष्ठ हस्ती, (सुर ३, °वइ पु [°पति] गजेन्द्र श्रेष्ठ हस्ती, (कुमा १, सुपा २८६)। °वर पु [°वर] प्रधान हाथी। °वरारि [°वरारि] सिंह, शार्दूल, वनराज; (पाअ १, °वहू स्त्री [°वधू] हथिनी, हस्तिनी, (स्वप्न)। °वाय स्त्री [°वायु] शुष्क वगैर महा-महा का वायु-भेद (ठा ६)। °सणय पु [°शनक] हाथी को सूँघने, सुकुमाल पु [°सुकुमाल] एक प्रसिद्ध जैन मुनि भव में मुक्ति-गत जैन साधु विशेष, (अंत, पडि)। °हि [°रि] सिंह, पञ्चानन, (भवि)। °हेड पु [°हेत] हस्तिताड, महावत, (पाअ)।

गय पु [गद] रोग, बिमारी, (ओघ, सुपा ५८८)।

गयक पु [गजाङ्क] दशों का एक जाति, शिवकुमार राजा,

गयउर पु [गजेन्द्र] श्रेष्ठ हाथी; (गउड)।

गयण न [गगन] गगन आकाश, अम्बर, (हे १, गउड)। °गइ पु [°गति] एक राज-कुमार, (उप)। °गय [°गत] आकाश में चलने वाला, पक्षी, विहग, (सुपा २५०)। °मंडल पु [°मण्डल] एक राजा,

गयगवय पु [दे] मेघ, मद, बादल (दे २, ८८)।

गयणिंदु पु [गगनेन्दु] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ८५)।

गयणयाउड } वि [दे] विकल, बेचैन (दे २,
गयणयाउल्ल } पढ़)

गया स्त्री [गदा] लोहे का या पाषाण का अस्त्र विशेष, मुद्गर या लाठी, (पाअ)। °हर पु [°धर] (उप ११)।

गया स्त्री [गया] प्रसिद्ध नगर विशेष (उप ६८

°गर वि [°कर] करने वाला, कर्ता, (पंच)।

गर पु [गर] १ विष-विशेष, एक प्रकार का जहर २ उपधि, छल-प्रपंच करने की क्रिया में ३ (उप ३१८)

गरण देखो करण, (स्वप्न ६३)।

गरुअ न [गरुक] १ विष, जहर, (पाअ २ महत्त्व, ३ भारत्व, भारी, "अ-गरुअत्तं अ-लघुत्तं (ओघ)।

...वद्ध—गार्दभ]

...वद्ध वि [गर्दभिकाबद्ध] टेकिरन, उपजीव्य ; ...ठे १)।

...सर [गर्द्] हिंसा करना, हुर करना ; गरजना, गरजना ; ...ो। ...ड—गरजना ; (हे ३, ६५)। ...ड—गर्दभिन् ; (हे ३, ७४)। ...ड—गर्दभिन् ; (हे ३, ७४)। ...गर्दभिन् ; (हे ३, ७४)। ...गर्दभिन् ; (हे ३, ७४)। ...

गल्ला देसी गलअ (पाद १, १)।
गल्लत्थ देसी शिव। गल्लत्थर, (हे ४, १४३ ; भवि)।
गल्लत्थण न [क्षेपण] १ फेंकना, फेंकना ; २ प्रेरण ; (से ५, ५३ ; सुपा २८)।
गल्लत्थलिअ वि [दे] १ क्षिप्त, फेंका हुआ ; २ प्रेरित ; (द २, ८७)।
गल्लत्थल्ल पु [दे] गलफल्ल, हाथ से गला पकड़ना, (माया १, ६ ; पाद १, २—पत्र ५३)।
गल्लत्थलिअ [दे] देखो गलत्थलिअ, (से ५, ४३, ८, ६१)।
गल्लत्था स्त्री [दे] प्रेषणा ;
" गाहावइं चिय भुवणम्मि आवया न उण हुंति लहुयाण।
गहवल्लालग्गत्था, गणिमुत्ताणं न ताराणं "
(उप ७१८ टी)।
गल्लत्थिअ वि [क्षिप्त] १ प्रेरित, (सुपा ६३६)। २ फेंका हुआ, (दे २, ८७, सुपा)। ३ बाहर निकाला हुआ, (पाम)।
गल्लद्धअ पु [दे] प्रेषित, क्षिप्त, (षड्)।
गल्लाण देखो गिलाण, (नाट—चैत ३४)।
गल्लि) वि [गल्लि, °क] दुर्विनीत, दुर्दम, (श्रा १२ ;
गल्लिअ) सुपा २७६)। °गद्दह पु [गर्दभ] अविनीत गदहा, (उप २७)। °बइल्ल पु [बलीवर्द] दुर्विनीत बैल, (कप्पू)। °अस्स पु [अश्व] दुर्दम घोड़ा, (उप १)।
गल्लिअ वि [गलित] १ गया हुआ, खिसका हुआ, (कप्प)। २ खलित, प्रस्खलित, (कुमा)। ३ स्खलित, पतित, (से १, २)। ४ नष्ट, नाश प्राप्त, (सुपा २४३, सण)।
गल्लिअ वि [दे] स्नात, स्नान किया हुआ, (दे २, ८१)।
गल्लिंत देखो गल = गल्।
गल्लिर वि [गल्लिन्] निरन्तर खिसकता, टपकता, "बहुगाग-रल्लिरसवेण" (श्रा १४)।
गल्लुल देखो गलुल, (कप्पू १, षड्)।
गल्लोई) स्त्री [गल्लूची] फलों का विशेष, खिरनी, सुख,
गल्लोया) (हे १, १३४, षड् १०)।
गल्लोल पु [गल्लोल] १ गप्प, बकवाद, (दे २, ८१, उप)। २ हर्ष का गद्गद-स्वर, हृदय-स्वर, (षड्)। °मम्मु-रिया स्त्री [°मर्मरिका] गप्प का टकराव, (श्रौप)।
गल्लरक्क पुंन [दे] १ स्फटिक मणि ; (... १६६)।
गल्लत्थ देखो गलत्थ। गल्लत्थर, (षड्)।
गल्लप्फोड पु [दे] डमरु, वाद्य-विशेष ; (दे २, ८८)।
गल्लोल्ल न [दे] गड्ढा, पात्र-विशेष ; (निचू १)।
गव पुंस्त्री [गो] पशु, जानवर ; (सूअ १, ३, १)।
गवक्ख पुं [गवाक्ष] १ गवाक्ष, वातायन ; (... पाद २, ४)। २ गवाक्ष के आकृति का स्त्रीलिंग (जीव ३)। °जाल न [°जाल] १ स्त्रीलिंग ... द्वार, (औप ३ ; राय)। २ जाली वाला ... (औप)।
गवच्छ पु [दे] आच्छादन, ढकना, (राय)।
गवच्छिअ वि [दे] आच्छादित, ढका हुआ, (... जीव ३)।
गवत्त न [दे] घास, तृण ; (दे २, ८६)।
गवय पु [गवय] गौ की आकृति का जङ्गली पशु-विशेष (पाद १, १)।
गवर पु [दे] वनस्पति-विशेष, (पणण १—पत्र ३०)।
गवल पु [गवल] १ जङ्गली पशु-विशेष, जंगली भैंसा (पउम ८८, ६)। २ न महिष का सिंग, (... १७, सुपा ६२)।
गवा स्त्री [गो] गैया, गाय ; (पउम ८०, १३)।
गवाक्षिणी स्त्री [गवाक्षिनी] इन्द्रवारुणी, वनस्पति-... (दे २, ८२)।
गवार वि [दे] गँवार, छोटे गाँव का निवासी, (... गवालिय न [गवालोक]गौ के विषय में अनुत्त ... १, २)।
गविअ वि [दे] अवज्ञात, निश्चित, (षड्)।
गविट्ठ वि [गवेषित] खोजा हुआ, (सुपा ११४, ... से ४८४, पाम)।
गविल्ल न [दे] जात्य घीनी, शुद्ध मिश्री, (ठा ६, ...
गवेधुआ स्त्री [गवेधुका] जैन मुनि-गण की एक ... (कप्प)।
गवेलग पुस्त्री [गवेलक] १ मेष, भेड़, (कप्प ... औप)। २ गौ और भेड़, (ठा ७)।
गवेस सक [गवेषय्] अन्वेषण करना, खोजना, ... गवेसइ ; (भग ; षड्)। भूका—गवेसिंसु ; ... कृ—गवेसंत, गवेसयंत, गवेसमाण, ...

ग ४१० ; सुर १, २०३ ; पासा १, ४)। देह—वेसित्तए ; (कप्प)।

सइत्तु वि [गवेषयितृ] खोज करने वाला, गवेषक ; (ठा ४, २)।

सग वि [गवेषक] ऊपर देखो ; (उप पृ ३३)।

सण न [गवेषण] खोज, अन्वेषण ; (औप ; सुर ४, १३)।

सणया) स्त्री [गवेषणा] १ खोज, अन्वेषण ; (औप;
सणा) सुर ३, २३३)। २ शुद्ध भिक्षा की याचना; (ओघ ३)। ३ भिक्षा का ग्रहण ; (ठा ३, ४)। देखो गवेसग; (सवि)।

सावय वि [गवेषित] १ दूसरे से खोजवाया हुआ, २ द्वारा खोज किया गया ; (स २०७ ; ओघ ६३२)। २ गवेषित, अन्वेषित, खोजा हुआ ; (स ६८)।

सि वि [गवेषिन्] खोज करने वाला, गवेषक; (पुप्फ ०)।

सिय वि [गवेषित] अन्वेषित, खोजा हुआ ; (सुर ३, १२६)।

सुं [गर्व] मान, अहंकार, अभिमान ; (सग १६ ; २१६)।

र न [गहुवर] कोटर, गुहा ; (स ३६३)।

रिल वि [गर्विन्] अभिमानी, गर्व-युक्त ; (श्रा १२ ; दे ६१)।

ट्ठ वि [गर्विष्ठ] विशेष अभिमानी, गर्व करने वाला ; (ठा १, १२८)।

यि वि [गर्वित] गर्व-युक्त, जिसको अभिमान उत्पन्न हुआ है ; (पाअ ; सुपा २७०)।

रि वि [गर्विन्] अहंकारी, अभिमानी; (हे ३, १६६ ; ४६)। स्त्री—री ; (हेका ४६)।

सइ [ग्रस्] खाना, निगलना, भक्षण करना। गसइ; ४, ३०४ ; षड्)। वकृ—गसंत; (उप ३२० टी)।

सण न [ग्रसन] भक्षण, निगलना; (स ३४७)।

सिय वि [ग्रस्त] भक्षित, निगलित ; (कुमा ; सुर ६, ; सुपा ४८६)।

ह [ग्रह्] १ ग्रहण करना, लेना। २ जानना। गेहइ; ८)। वकृ—गेहंत ; (श्रा २७)। संकृ—गहाय, ण, गहिऊण, गहिया, गहेउं ; (वि ६६१ ; नाट; वि ६८६; सुपा १, ४, १; १, ६, २)। कृ—गहीअव्व, गहेअव्व ; (स्वप्न ७० ; मग)।

गह पुं [ग्रह] १ ग्रहण, आदान, स्वीकार ; (विसे ३७१ ; सुर ३, ६३)। २ सूर्य, चन्द्र वगैरः ज्योतिष्क देव ; (गउड ; पण्ह १, २)। ३ कर्म का बन्ध ; (दस ४)। ४ भूत वगैरः का आक्रमण, आवेश ; (कुमा ; सुर २, १४४)। ५ वृद्धि, आसक्ति, तल्लीनता ; (आचा)। ६ संगीत का रस-विशेष ; (दस २)। °सोम पुं [°सोम] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक तीर्थंकर ; (पउम ५, २६६)। °गज्जिय न [°गर्जित] ग्रहों के संचार से होने वाली आवाज; (जंबू ३)। °गहिय वि [°गृहीत] भूतादि से आक्रान्त, पागल ; (कुमा ; सुर २, १४४)। °चरिय न [°चरित] १ ज्योतिष-शास्त्र ; (वव ४)। २ ज्योतिष-शास्त्र का परिज्ञान ; (सम ८३)। °दंड पुं [°दण्ड] दण्डाकार ग्रह-पंक्ति; (सग ३, ७)। °नाह पुं [°नाथ] १ सूर्य, सूरज ; (श्रा २८)। २ चन्द्र, चन्द्रमा ; (उप ७२८ टी)। °मुसल न [°मुशल] मुशलाकार ग्रह-पंक्ति ; (जंबू ३)। °सिंघाडग न [°शृङ्गाटक] १ पानी-फल के आकार वाली ग्रह-पंक्ति ; (सग ३, ७)। २ ग्रह-युग्म, ग्रह की जोड़ी; (जंबू ३)। °हिव पुं [°धिप] सूर्य, सूरज ; (श्रा २८)।

गहं न [गृह] घर, मकान। °बइ पुं [°पति] गृहस्थ, गृही, संसारी ; (पउम २०, ११६ ; प्राप्र ; पाअ)। °इणी स्त्री [°पत्नी] गृहिणी, स्त्री ; (सुपा २२६)। गहकल्लोल पुं [दे. ग्रहकल्लोल] राहु, ग्रह-विशेष; (दे २, ८६ ; पाअ)।

गहगह अक [दे] हर्ष से मर जाना, आनन्द-पूर्ण होना। गहगहइ ; (सवि)।

गहण न [ग्रहण] १ आदान, स्वीकार; (से ४, ३३ ; प्राप्र १४)। २ आदर, सम्मान ; ३ ज्ञान, अवबोध ; (से ४, ३३)। ४ शब्द, आवाज; (आचा २, ३, ३; आक्षे)। ५ ग्रहण करने वाला; ६ इन्द्रिय ; (विसे १७०७)। ७ चन्द्र-सूर्य का उपराग; (सग ११, ६)। ८ आदर, जिसका ग्रहण किया जाय वह; (ठा ३२)। ९ भिक्षा-विशेष; (आव)।

गहण न [ग्राहण] ग्रहण कराना, अंगीकार कराना ; "जो भणति बंभचेरस्सग्गहणं" (कुमा)।

गहण वि [गहन] १ विषम, दुर्गम, दुर्ज्ञेय ; "कासे अणइंदिये जोतिसगहणम्मि मीसे इत्थ" (जो ४६);

"फलगारणलिणिगहणा" (गउड)। २ वन, झाड़ी, घना कानन ; (पाअ, भग)। ३ वृक्ष-गह्वर, वृक्ष का कोटर; (विपा १, ३—पत्र ४६)।

गहण न [दे] १ निर्जल स्थान, जल-रहित प्रदेश; (दे २, ८२ ; आचा २, ३, ३)। २ बन्धक, धरोहर, गिरों, (सुपा ५४८)।

गहणय न [दे] गहना, आभूषण, (सुपा १६४)।

गहणया स्त्री [ग्रहण] ग्रहण, स्वीकार, उपादान, (औप)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] गुदाशय, गाँड़, (पणह १, ४ ; औप)।

गहणी स्त्री [दे] जबरदस्ती हरण की हुई स्त्री, बाँदी, (दे २, ८४, से ६, ४७)।

गहत्थि पु [गभस्ति] किरण, त्विषा ; (पाअ)।

गहर पु [दे] वृक्ष, गीध पक्षी, (दे २, ८४, पाअ)।

गहयर पु [दे] १ ग्रामीण, गाँव का रहने वाला, (दे २, १००)। २ चन्द्रमा, चाँद, (दे २, १०० ; पाअ, वज्जा १६)।

गहिअ वि [दे] वक्र, मोड़ा हुआ, टेढ़ा, किया हुआ ; (दे २, ८६)।

गहिअ वि [गृहीत] १ ज्ञात, स्वीकृत ; (औप ; ठा ४, ४)। २ पकड़ा हुआ ; (पणह १, ३)। ३ ज्ञात, उपलब्ध, विदित, (उप २, पट्)।

गहिअ वि [गृद्ध] आसक्त, तल्लीन ; (आचा)।

गहिआ स्त्री [दे] १ काम-भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह स्त्री ; (दे २, ८६) २ ग्रहण करने योग्य स्त्री, (षट्)।

गहिर वि [गभीर] गहरा, गम्भीर, अ-उथला ; (दे १, १०१, काप्र ६२६ ; कप्र ; गउड ; औप ; प्राप्र)।

गहिल वि [ग्रहिल] भूतादि से आविष्ट, पागल ; (आ १०)।

गहिल्लिय } वि [दे, ग्रहिल] आवेश-युक्त, पगला, भ्रान्त-
गहिल्ल } चित्त, (पाअ ११३, ४३ ; षट् ; आ १२ ; उप ६६७ टी ; औप)।

गहीअ देखो गहिअ=गृहीत ; (आ १२ ; स्वप्न ६८)।

गहीर देखो गभीर, (प्रयु ६)।

गहीरिम न [गाभीर्य] गहराई, गम्भीरता ; (हे २, १०७)।

गहीरिम पुस्त्री [गभीरिमन्] गहराई, गम्भीरता, (पाअ, ४१६)।

गहेअव्व } देखो गह=ग्रह्।
गहेउं }

गहूण (अप) देखो गह=ग्रह्। गहिउ, (भवि)।

गा } सक [गै] १ गाना, आलापना। २ कथन
गाअ } ३ श्लाघा करना। गाइ, गाअइ; (हे ४,३)। गंत, गायंत, गायमाण, (गा ५४६; पि ६४, ६४, २४)। कवकृ—गिज्जंत ; (गउड ; गा ३१ २१ ; सुर ३, ७६)। संकृ—गाइउं, (महा)।

गाअ पु [गो] बैल, वृषभ, साँड, (हे १, १५)।

गाअ न [गात्र] १ शरीर, देह, (सम ६०)। २ अवयव ; (औप)।

गाअ वि [गायक] गाने वाला ; (उत्त)।

गाअंक पु [गवाङ्क] महादेव, शिव ; (उत्त)।

गाअण वि [गायन] गाने वाला, गवैया, (सुपा ३१

गाइअ वि [गीत] १ गाया हुआ ; "विज्जाहर गीयं" (सुपा १६)। २ न. गीत, गान, गाना ;

गाइआ स्त्री [गायिका] गाने वाली स्त्री ; (

गाइर वि [गायक] गाने वाला, गवैया, (

गाई स्त्री [गो] गैया, गौ ; (हे १, १८, ३
गा २७१ ; सुर ७, ६६)।

गाउ } न [गव्यूत] १ कोस, कोश, दो
गाउअ } प्रमाण जमीन; (पि २६४, औप, इ,
गाऊअ } विसे ८२ टी)। २ दो कास,
१२)।

गागर पु [दे] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, राती में 'घाघरो', (पाह १,४)। २ मत्स्य-विशेष

गागरी [दे] देखो गायरी, (पि ६२)।

गागलि पु [गागलि] एक जैन मुनि, (उत्त १

गागेज्ज वि [दे] मथित, आलोडित, (दे ३,

गागेज्जा स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन, (दे ३,

गाडिअ वि [दे] विधुर, विधुक्त, (दे ३,८३)।

गाढ वि [गाढ] १ गाढ, निविड, सान्द्र, (पाअ, ४८)। २ मजबूत, दृढ, (सुर ४,२३०)। ३ तीव्र, अतिशय ; (कप्र)।

गाण न [गान] गीत, गाना, (हे ४,६)।

गाण वि [गायन] गवैया, गीत-प्रवीण, (हे ६,

गणिअ पुं [गाणङ्गणिक] छ ही मास के भीतर एक गण से दूसरे गण में जाने वाला साधु ; (बृह १)।
गणी स्त्री [दे] गवाइनी, वनस्पति-विशेष, इन्द्रवारुणी ; २, ८२)।
गणेरी देखो गाहा ; (भग ; पिंग)।
वि [गाध] स्नाघ, श्र-गहरा ; (दे ६, २४)।
पुं [ग्राम] १ समूह, निकर ; "चक्खो इंदियगामो" २, १३८)। २ प्राणि-समूह, जन्तु-निकर ; (विसे ६६)। ३ गाँव, वसति, ग्राम; (कप्प; गाया १,१८; औप)। इन्द्रिय-समूह ; (भग; औप)। °कंडग, °कंडय पु [°कण्टक] १ इन्द्रिय-समूह रूप काँटा ; (भग ; औप)। २ लोगों का रूक्ष आलाप, गाली ; (आचा)। °घायग वि [°घातक] गाँव का नाश करने वाला ; (पण्ह १,३)। °गच्छमण न [°निर्घमन] गाँव का पानी जाने का रास्ता, ना ; (कप्प)। °धम्म पुं [°धर्म] १ विषयाभिलाष, य की वाञ्छा ; (ठा १०)। २ इन्द्रियों का स्वभाव ; ३ स-प्रवृत्ति ; (आचा)। ४ मैथुन ; (सूम १, २,२)। ५ द, रूप वगैरः इन्द्रियों का विषय; (पण्ह १,४)। ६ गाँव धर्म, गाँव का कर्तव्य ; (ठा १०)। °जूह पुंन [°यूथ] था गाँव। २ उत्तर भारत, भारत का उत्तर प्रदेश ; (निचू १)। °मारी स्त्री [°मारी] गाँव भर में फैली हुई विमारी-षेष ; (जीव ३)। °रोग पुं [°रोग] ग्राम-व्यापक विमारी; ं २)। °वइ पुं [°पति] गाँव का मुखिया ; (पाअ)। गुग्गाम न [°नुग्राम] एक गाँव से दूसरे गाँव ; (औप)।
गार पुं [°चार] विषय ; (आवम)।
गउड) पुं [दे] गाँव का मुखिया ; (दे २, ८८ ;
गऊड) बृह ३)।
गंतिय न [ग्रामान्तिक] १ गाँव की सीमा ; (आचा)। वि. गाँव की सीमा में रहने वाला ; (दसा १)। ३ पुं नेतर दार्शनिक विशेष ; (सूम २,२)।
गगोह पुं [दे] गाँव का मुखिया ; (दे २, ८६)।
गड पुं [ग्रामक] गाँव, छोटा गाँव ; (श्रा १६)।
गण न [दे. गमन] भूमि में गमन, भू-पर्यटन ; (भग १, ११)।
गणह न [दे] ग्राम-स्थान, ग्राम-प्रदेश ; (पट्)।
गणि देखो गामणी ; (दे २, ८८; पट्)।
गणिमुअ पुं [दे] गाँव का मुखिया ; (दे २,८८)।
गणी पुं [दे] गाँव का मुखिया ; (दे २,८८ ; प्राप्त)।
गामणी वि [ग्रामणी] १ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक ; (ठा ७, ६० ; धर्म १ ; गा ४४६ ; पट्)। २ पुं. तृण-विशेष ; (दे २, ११२)।
गामपिंडोलग पुं [दे] भीख से पेट भरने के लिए गाँव का आश्रय लेने वाला भीखारी ; (आचा)।
गामरोड पुं [दे] छल से गाँव का मुखिया बन बैठने वाला ; गाँव के लोगों में फूट उत्पन्न कर गाँव का मालिक होने वाला; (दे २, ६०)।
गामहण न [दे] १ ग्राम-स्थान, गाँव का प्रदेश; (दे २,६०)। २ छोटा गाँव ; (पाअ)।
गामाग पुं [ग्रामाक] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक सन्नि-वेश ; (आवम)।
गामार वि [दे. ग्रामीण] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहने वाला ; (वज्जा ४)।
गामि वि [गामिन्] जाने वाला ; (गा १६७ ; आचा)। स्त्री—°णी; (कप्प)।
गामिअ वि [ग्रामिक] १ देखो गामिल्ल; (दे २, १००)। २ ग्राम का मुखिया ; (निचू २)। ३ विषयाभिलाषी ; (आचा)।
गामिणिआ स्त्री [गामिनिका] गमन करने वाली स्त्री ; "ललिअहंसवहुगामिणिआहि" (मजि २६)।
गामिल्ल) वि [ग्रामीण] गाँव का निवासी, गँवार ;
गामिल्लुअ) (पउम ७७, १०८; विसे १ टी; दे ८, ४७)।
गामीण स्त्री— °ल्ली ; (कुमा)।
गामुअ वि [गामुक] जाने वाला ; (स १७६)।
गामेइआ स्त्री [ग्रामेयिका] गाँव की रहने वाली स्त्री, गँवार स्त्री ; (गउड)।
गामेणी स्त्री [दे] छागी, अजा, बकरी ; (दे २, ८४)।
गामेयग वि [ग्रामेयक] गाँव का निवासी, गँवार; (बृह १)।
गामेरेड [दे] देखो गामरोड; (पट्)।
गामेल्लुअ) देखो गामिल्ल ; (पृच्छ २७६ ; विसे १,१ ;
गामेल्ल) विसे १४११)।
गामेस पुं [ग्रामेश] गाँव का अधिपति; (दे २,३७)।
गायरी स्त्री [दे] गर्गरी, कलशी, छोटा घड़ा; (दे २,८६)।
गार वि [°कार] कारक, कर्ता; (भवि)।
गार पुं [दे.आयन्] पत्थर, पाषाण, कङ्कर; (वज्ज ४)।
गार न [अगार] गृह, घर, मकान; (ठा ६)। °त्थ पुंस्त्री [°स्थ] गृहस्थ, गृही; (निचू १)। °ट्ठिय पुंस्त्री [°स्थित]

२७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े और ११५ प्यादे हों ऐसी सेना ; (पउम ५६,५)। ४ वृन्द, समूह ; (औप ; सूम २, २)। ५ गच्छ का एक हिस्सा, जैन मुनि-समाज का एक भेद ; (औप)। ६ स्थान, जगह ; (ओघ १६१)।

गुम्मइअ वि [दे] १ मूढ, मूर्ख ; (दे २, १०१ ; ओघ १२६ ; पाम ; षड्)। २ अपूरित, पूर्ण नहीं किया हुआ ; (षड्)। ३ पूरित, पूर्ण किया हुआ ; (दे २,१०१)। ४ स्खलित ; ५ संचलित, मूल से उच्चलित ; ६ विघटित, वियुक्त ; (दे २, १०१ ; षड्)।

गुम्मड देखो गुम्म। गुम्मइ ; (हे ४, २०७)।

गुम्माडिअ वि [मोहित] मोह-युक्त, मुग्ध किया हुआ ; (कुमा ७, ४७)।

गुम्मागुम्मि अ. जत्थाबन्ध होकर ; (औप)।

गुम्मिअ वि [मुग्ध] १ मोह-प्राप्त, मूढ ; (कुमा ७,४७)। २ घूर्णित, मद से घूमता हुआ ; (बृह १)।

गुम्मिअ पु [गौल्मिक] कोटवाल, नगर-रक्षक ; (ओघ १६२ ; ७६६)।

गुम्मिअ वि [दे] मूल से उखाड़ा हुआ, उन्मूलित ; (दे २, ६२)।

गुम्मी स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाषा ; (दे २,६०)।

गुम्ह सक [गुम्फ्] गूँथना, गढना। गुम्हइ (शौ) ; (स्वप्न ६१)।

गुय्ह देखो गुज्झ ; (हे १, १२४)।

गुरय देखो गुरु ; "जो गुरुवे साहीणे धम्मं साहेइ पोरवुड्ढिओ" (पउम ६, ११४)।

गुरु } पुं [गुरु] १ शिक्षक, विद्या-दाता, पढ़ाने वाला ;
गुरुअ } (पव १; मनु)। २ धर्मोपदेशक, धर्माचार्य ; (विसे ६३०)। ३ माता, पिता वगैरः पूज्य लोग, (ठा १०)। ४ बृहस्पति, ग्रह-विशेष, (पउम १७, १०८ ; कुमा)। ५ स्वर-विशेष, दो मात्रा वाला स्वर, ई वगैरः स्वर, जिसके पीछे अनुस्वार या संयुक्त व्यञ्जन हो ऐसा भी स्वर-वर्ण ; (पिंग)। ६ वि. बड़ा, महान् ; (उवा ; से ३, ३८)। ७ भारी, बोझिल ; (ठा १, १ ; कम्म १)। ८ उत्कृष्ट, उत्तम ; (कम्म ४, ७२ ; ७६)। °कम्म वि [°कर्मन्] कर्मों का बोझ वाला, पापी ; (सुपा २६६)। °कुल न [°कुल] १ धर्माचार्य का सामीप्य, (पंचा ११)। २ गुरु-परिवार ; (उप ६७७)। °गइ स्त्री [°गति] गति-विशेष, मानुषी से ऊँचा-नीचा गमन, (ठा ८)। °लाघव न [°लाघव] सारासार, अच्छा और बुरापन, (ठा ४)। °सहिअल्ला पुं [°सहाध्यायिक] गुरु के भाई, (कुप्र ४)।

गुरुई देखो गरुई, (गाया १,१)।

गुरुणी स्त्री [गुर्वी] १ गुरु-स्त्रीजाति की, (सूत्र ११,१) २ धर्मोपदेशिका, गुरानी ; (उत्त ७१८ टी)।

गुरुट्ट न [गुरुट] तृण-विशेष ; (दे १, ६४)।

गुल देखो गुड=गुड ; (ठा ३, १ ; ६ ; कप्पा १,२, ६६४, औप)।

गुल न [दे] गुल्मन ; (दे २, ६१)।

गुलगुंछ सक [उत्+क्षिप्] ऊँचा फेंकना। (हे ४, १४४)। संक—गुलगुंछिऊण ; (प्राप्र)।

गुलगुंछ देखो गुलुगुंछ=उद्+नमय्। गुलगुंछइ, (हे ४,१११)।

गुलगुल अक [गुलगुलाय्] गुलगुल आवाज द्वारा से गरजना। वकृ—गुलगुलंत, गुलगुलेंत, १०११ टी ; उवा ; पउम ८, १७१, १०२,२०)।

गुलगुलाय } न [गुलगुलायित] हाथी की
गुलगुलिय } (अं ५, सुपा ३१७)।

गुलल सक [चाटु कृ] खुशामद करना। गुललइ (षड्)। वकृ—गुललंत, (कुमा)।

गुलिअ वि [दे] मथित, विलोडित, (दे २, १०१ ; २ पुं. गेंद, कन्दुक ; "कंदुमो गुलिओ" (पाअ)।

गुलिआ स्त्री [दे] १ वल्लिका, २ गेंद, कन्दुक, ३ गुच्छा ; (दे २, १०२)।

गुलिआ स्त्री [गुलिका] १ गोली, गुटिका, (ठा, १, १३ ; सुपा २६२)। २ वर्णक द्रव्य-विशेष, द्रव्य-विशेष ; (औप ; कप्पा १,१—पत्र २४)।

गुलुअ वि [दे] गुल्मिन्, गुल्म वाला, सेना सहित (औप ; भग)।

गुलुंछ पुं [गुलुञ्छ] गुच्छ, गुच्छा, (दे २, ६१)।

गुलुगुंछ देखो गुलगुंछ=उत्+क्षिप्। गुलुगुंछइ, (हे ४,१११)।

गुलुगुंछ सक [उत्+नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना, गुलुगुंछइ, (हे ४,२६)।

गुलुगुंछिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया (दे २, ६१ ; कुमा)।

गुलुगुंछिअ वि [दे] बाद से अन्तरित ; (दे २, ६१)।

गुलुगुल देखो गुलगुल। गुलुगुलति, (भवि)। वकृ—गुलुगुलेंत, (पि ५१८)।

गुलुगुलाय } देखो गुलगुलाय ; (औप ; कप्प १,१,
गुलुगुलिय } सु ३१६)।

गुच्छ वि [दे] अनित, घुमाया हुआ, क्षिप्त किया हुआ ; (दे ३२)।
गुच्छ पुं [गुत्तुच्छ] गुच्छा, स्तबक ; (पाम)।
गुच्छय वि [गुच्छवत्] गुच्छा-युक्त वाला, गुच्छे-युक्त ; पउ १,१—पत्र ६)।
देखो गुप्प=गुप्। गुप्ति; (ठा १५)।
गुज्झ देखो कुवलय। "गुहियगुत्तपलित्थं" (पंचा)।
गुज्झा [दे] देखो गोआलिआ ; (ओ १७)।
गुज्झ वि [गुप्त] व्याकुल, क्षुब्ध ; (उ ३,४—पत्र १६१)। ड वि [गुप्तिल] १ गहन, सघन, गाढ, निबिड ; (सुर १६; उप पृ ३० ; पड १, ३)। २ न. झाड़ी, ; (उप ८३३ टी) ;
"इक्के कय कम्मं, इक्के अणुहवइ दुक्कयविवागं।
इक्के संसरइ विमो, अमरणपवज्जणुव्विग्गो" (पव ४४)। ड वि [दि] चौड़ी का बना हुआ, सिला बाला (सिक्थ) ; (५, १०)।
गुड़ी स्त्री [गुर्विणी] गर्भवती स्त्री ; (सुपा २७७)। देखो गुम। गुप्त ; (हे १, २३६)।
गुड [गुह] कार्तिकेय, एक शिव-पुत्र ; (पाम)।
गुड्ढा स्त्री [गुहा] गुफा, कन्दरा ; (पाम ; उ २, ३ ; २७१)।
गुड्ढिर वि [दे] गम्भीर, गहरा ; (पाम ; कम)।
गुड्ढिर वि [गूढ] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ ; (पड १, ४ ; १०)। दंत पुं [दन्त] १ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप ; २ द्वीप-विशेष का निवासी ; (उ ४, २)। ३ जैन मुनि; ४ अन्तकृद्दशा सूत्र का एक अध्ययन; (अनु २)। ५ भरत क्षेत्र का एक भावी चक्रवर्ती राजा ; (सम १५४)।
गुढ [गुह] छिपना, गुप्त रखना। वह—गूहंत ; (६१०)।
गुढ [गूथ] गू, विष्ठा ; (दंड)।
गुढण [गूहन] छिपना ; (सम ७१)।
गुढिअ वि [गूहित] छिपा हुआ ; (स १८६)।
गुढ (अप) देखो गिण्ह। गुढ्ढ ; (कुमा)। संक—गृण्हेप्पिणु ; (हे ४, ३६४)।
गुढ वि [गेय] १ गाने योग्य, गाने लायक, गीत ; (उ ४—पत्र १८७ ; कुमा ४४)। २ न. गीत, गान ; "हरसेणगुणेसु" (सुर ३, ६६ ; सम ३३४)।
गुडुअ न [दे] स्तनों के ऊपर की वस्त्र-पट्टिका ; (दे २, ६३)।
गुंडुल्ल न [दे] कन्धुक, चेंडी ; (दे २, ६४)।
गुंड न [दे] देखो गोंडुअ ; (दे २, ६३)।
गुंडुई स्त्री [दे] क्रीड़ा, खेल, गम्मत ; (दे २, ६४)।
गुंडुअ पुं [कन्दुक] गेंद, गेंदा, खेलने की एक वस्तु ; (हे १, ६७ ; १८२ ; कुप्र १, १२१)।
गुंडअ वि [दे] मथित, विलोड़ित ; (दे २, ८८)।
गुंडअल न [दे] प्रीति का आलाप ; (दे २, ६४)।
गुंडअ वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य ; (हे १, ७८)।
गुंडण न [दे] १ फेंकना, क्षेपण ; २ दे देना; "तत्तुंगेड-एहए संखेमा आलाउ लहु" (उप ६४८ टी)।
गुंडु न [दे] १ पङ्क, कीच, कादा ; २ घर, अन्त-क्लिष्ट ; (दे २, १०४)।
गुंडी स्त्री [दे] गेंडी, गेंद खेलने की लकड़ी ; (कुमा)।
गुंण्ह देखो गिण्ह। गेण्हइ ; (हे ४, २०६; उव ; महा)। मूका—गेण्हीअ ; (कुमा)। भवि—गेण्हिस्सइ ; (महा)। वह—गेण्हंत, गेण्हमाण; (सुर ३, ७४; विक्र १, १)। संह—गेण्हित्ता, गेण्हिऊण, गेण्हिअ; (भग; वि ६८६; कुमा)। कृ—गेण्हियव्व ; (उव १)।
गेण्हण न [ग्रहण] ग्रहण, ढाढल, लेना; (उप ३३६; स ३७६)।
गेण्हणया स्त्री [ग्रहणा] ग्रहण, ग्रहान ; (उप ६३६)।
गेण्हाविय वि [ग्राहित] ग्रहण कराया हुआ; (स ३३६; महा)।
गेण्हिअ न [दे] उत्तर-सूत्र, उत्तराध्ययक वस्त्र ; (दे २, ६४)।
गेद्ध देखो गिद्ध; (प्रौप)।
गेरिअ } न [गैरिक] १ गेरु, लाल रङ्ग की मिट्टी ;
गेरुअ } (स ३३३ ; वि ६०; ११८)। २ मंत्रि-क्षिप्त, रक्त की एक जाति ; (पण्ण १—पत्र २६)। ३ वि. गेरु रंग का ; (कप्प)। ४ पुं. त्रिदंडी साधु, संन्यास मत का अनुयायी परिव्राजक ; (पण ६४)।
गेलण्ण } न [ग्लान्य] ग्लानि, विमारी, व्याधि ; (विसे
गेलन्न } ६४० ; उप ४८६ ; प्रौप ७७ ; २२१)।
गेविज्ज } न [ग्रैवेयक] १ ग्रीवा का आभूषण, गले का
गेवेज्ज } गहना; (प्रौप; सम १, २)। २ ग्रैवेयक
गेवेज्जय } देवों का विमान; (उ ६)। ३ पुं. उक्त

श्रेणी के देवों की एक जाति ; (कप्प ; औप, भग, जी ३३ ; इक)।

गेह न [गेह] घर, घर, मकान, (स्वप्न १६ ; गउड)। °जामाउय पु [°जामातृक] परजमाई, सासरा मधुर के घर में रहने वाला जामाता, (उप पृ ३६६)। °गार वि [°कार] १ घर के आकार वाला, २ पु. कन्नौज की एक जाति ; (सम १७)। °त्थु वि [°स्थ] घर वाला, गृही, संसारी ; (पउ)। °त्थम पु [°श्रम] गृहस्थाश्रम ; (पउम ३१, ८३)।

गेद्धि वि [गृद्ध] लोलुप, अभिलाषक, (ओघ ८७)।

गेद्धि स्त्री [गृद्धि] आसक्ति, गार्ध्य, लालच ; (स ११३, पाद १, ३)।

गेहि वि [गेहिन्] नीचे देखो, (आया १, १४)।

गेहिअ वि [गेहिक] १ घर वाला, गृही। २ पु. मर्त्य, धनी, पति ; (उत्त २)।

गेद्धिअ वि [गृद्धिक] अभिलाषक, लोलुप, लालची ; (पण्ह १, ३)।

गेहिणी स्त्री [गेहिनी] गृहिणी, स्त्री ; (सुपा ३४१ ; कुमा, कप्प)।

गो पु [गो] १ रश्मि, किरण, (गउड)। २ स्वर्ग, वज्रभूमि, (सुपा १४२)। ३ बैल, बलीवर्द ; ४ पशु, जानवर, ५ स्त्री, गेया, " अवरुप्परियंपिरियानियम्मिए-दिग्गमणगोणिओ गाव " (विसे १७६८ ; पउम १०१, ६०; सुपा २०६)। ६ वाणी, वाग्, (सूअ १, १३)। ७ भूमि, " जं महइ विक्कमगोयराण लोआ पुढिवाण " (गउड, सुपा १४२)। °अल देखो °वाल, (पुक्ख २१६)। °इन्द वि [°मत्] गो-धन, जिसके पास अनेक गौ हों वह, (द १, ६८)। °उल न [°कुल] १ गौओं का समूह ; (आव ३)। २ गोठ, गो-बाड़ा ; " सामी गाउलगओ " (आचा)। °उलिय वि [°कुलिक] गो-कुल वाला, गो-कुल का मालिक, गोवाला ; (सूत्र)। °किलंजय न [°किञ्जक] पत्र-विशेष, जिससे गौ को सजा दिया जाता है ; (भग ७, ८)। °कीड पु [°कीट] पशुओं की मक्खी, कीड़ी, (जी १६)। °कुमार, °कोर न [°कोर] गेया का पुत्र ; (सम ६०, कप्प १, १)। °खाड पु [°खड] गौ की कोरी, गौ का डिंभक, (पव १, ३)। °गहण न [°ग्रहण] गो-वध ; (कप्प १, १८)। °णिम्मडा स्त्री [°निर्मटा] आसन-विशेष, गौ की तरह बैठना ; (ठा ५, °तित्थ न [°तीर्थ] १ गौओं का तालाब आदि का रास्ता ; कम से नीचो जमीन ; (जीव ३)। समुद्र वगैरः को एक जगह ; (ठा १०)। [°त्रास] १ गौओं का त्रास देने वाला ; २ साढ का पुत्र ; (विसे १, २)। °दास पु [दास] जैन मुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य ; २ गण ; (कप्प ; ठा ६)। °दोहिया स्त्री [१ गौ का दोहन, २ आसन-विशेष, गौ की तरह बैठना जाना है उस तरह का उपवेशन ; (ठा ५ °दुह वि [°दुह] गौ का दोहने वाला ; (°धूलिआ स्त्री [°धूलिका] सन्ध्या-समय, गौएं घर पीछे घुसने का समय, सायंकाल ; (रयण)। °पय, °प्पय न [°पद] १ बैल उतना गहरा ; "लद्धम्मि अम्मि जीवाओ अवर मा जउहो" (आव ६६)। २ गो-पद परिमित भूमि ; ३ गौ का पैर, (ठा ४, ४)। °भद्द पु [भद्र विशेष, शालिभद्र के पिता का नाम ; (ठा १०)। °भूमि स्त्री [°भूमि] गौओं को चरने का जगह ; °भू वि [°भू] गौ वाला, (सिरि १४८)। न [°भूत] गौ का गर्व, (आया १, ११—पत्र °भय न [°भय] गोबर, गो का मल, गो-विष्ठा ; (२)। °मुत्तिया स्त्री [°मूत्रिका] १ गौ का मूत्र (ओघ ६४ भा)। २ गो-मूत्र के आकार (पंचा २)। °मुहिअ न [°मुखित] गौ के आकार वाली छाल, (आया १, १८)। °रूव पु [तीन वर्ष का बैल ; (सूअ १, ४, २)। [°रोयण] स्वनाम-ख्यात पीत-वर्ण द्रव्य विशेष, पीत शुक्ल वर्ण, (सुर १, १३०), (४)। °लोहणिया स्त्री [°लोहनिका] (सिरि १)। °लोम पु [°लोम] १ गौ के २ द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, (जीव १)। °वइ १ इन्द्र, २ सूर्य ; ३ राजा, (सुपा १४१)। देर ; ६ बैल ; (हे १, २३१)। °वय पु [गौओं की चर्या का अनुकरण करने वाला एक प्रका (आया १, १६)। °वय देखो °पय, (रया पु [°वाट] गौओं का बाड़ा, (ठा १, १ देखो °वइय, (ओघ)। °वाला स्त्री [

गौओं का बाड़ा ; (निचू ८)। °हण न [°धन] गौओं का समूह ; (गा १०६ ; सुर १, ४६)।

[गो देखो गोव=गोपयु । कु—गोअणिद्द; (नाट—मालती १२१)।

गोअंट पुं [दे] १ गौ का चारा ; २ स्थल-रहित, स्थल में होने वाला झाड़-झाड का पेड़ ; (दे २, ६८)।

गोअग्गा स्त्री [दे] रम्भा, मुहल्ला : (द २, ६६)।

गोअल्ला स्त्री [दे] दूध बेचने वाली स्त्री ; (दे २, ६८)।

गोआ स्त्री [गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी नदी ; "गोआगइकच्छकुडंगवासिणा दरिसमेहेण" (गा १७५)।

गोआ स्त्री [दे] गर्भिणी, कलुषा, छोटा घड़ा; (दे २, ८६)।

गोआवरी स्त्री [गोदावरी] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ३११)।

गोआलिआ स्त्री [दे] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होने वाला कीट-विशेष ; (दे २, ६८)।

गोआवरी देखो गोआवरी ; (हे २, १७४)।

गोउर न [गोपुर] नगर का दरवाजा ; (सम १३७ ; सुर १, ४६)।

गोंजी } स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ६६)।
गोंटी }

गोंड देखो कोंड=कौण ; (इक)।

गोंड न [दे] कानन, वन, जंगल ; (दे २, ६४)।

गोंडी स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ६६)।

गोंदल देखो गुंदल; (भवि)।

गोंदीण न [दे] मधु-लिप्त, मोर का पित्त ; (दे २, ६७)।

गोंफ पुं [गुम्फ] पाद-अस्थि, पैर की गाँठ ; (पव्व १, ४)।

गोकण्ण } पुं [गोकर्ण] १ गौ का कान। २ दो मुख
गोकन्न } वाला चतुष्पद-विशेष ; (पव्व १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष ; ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य ; (ठा ४, २)।

गोकंचुरय पुं [गोकुरक] एक ओषधि का नाम, गोखरू ; (स २५६)।

गोकच्चय पुं [दे] प्राङ्गण-द्वार, ओहार ; (दे २, ६७)।

गोकच्छ देखो गुच्छ ; (से ६, ४७ ; गा ३३२)।

गोकच्छय } पुंन [गोकच्छक] पत्र वगैरः साफ करने का
गोच्छग } वस्त्र-खण्ड ; (कस ; पव्व २, ६)।

गोकडड न [दे] गोमय, गो-विष्ठा ; (सूक्त ३४)।

गोकच्छा स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर ; (दे २, ६६)।

गोकिच्चय देखो गुच्छिय ; (भवि ; गाया १, १)।

गोकुड देखो गोच्छड; (नाट—मृच्छ ४१)।

गोकुलोया स्त्री [गोकुलीका] क्षुद्र कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (पत्र १६)।

गोकुल पुं [दे] १ सांगलिक दोष वाला बैल; (सुपा २८१)। २ गाने वाला, गवैया, गायक ;

" वेलावंसणजाहं, गोयं नट्टगइउक्कोज्जेहिं ।
वंदिज्जेण सहरिसं, जयदइवाणयं च कयं "
(पउम ८६, १६)।

गोकुल पुं [गोकुल] गौओं के रहने का स्थान ; (महा : पउम १०३, ४० ; गा ४४७)।

गोकुलामाहिल पुं [गोकुलामाहिल] कर्म-पुद्गलों को जीव प्रदेश से अभद्र मानने वाला एक जैनाभास आचार्य ; (ठा ७)।

गोकुट्टि देखो गोट्ठी ; (भवन)।

गोकुल्लिय } पुं [गौकुलिक] एक मण्डली के सदस्य,
गोकुल्लया } समान-वस्त्र-धारी दोस्त ; (गाया १, १६—पत्र
गोकुल्लिय } २०६ ; विपा १, २—पत्र ३७)।

गोकुट्ठी स्त्री [गोकुट्ठी] १ मण्डली, समान वय वालों की सभा ; (प्राक; दसनि १ ; गाया १, १६)। २ वार्तालाप, परामर्श ; (कुमा)।

गोकुड पुं [गौड] १ देश-विशेष ; (स २८६)। २ वि. गौड़ देश का निवासी ; (पव्व १, १)।

गोकुड पुं [दे] गोड़, पाद, पैर ; (नाट—मृच्छ १४८)।

गोकुडा स्त्री [गोला] नदी-विशेष, गोदावरी ; (गा ६८ : १०३)।

गोकुडी स्त्री [गौडी] गुड़ की बनी हुई मदिरा, गुड़ का दारू ; (कुप्र २)।

गोकुड वि [गौड] १ गुड़ का बना हुआ ; २ मधुर, मिष्ट ; (भग १८, ६)।

गोकुड [दे] देखो गोड ; (मृच्छ १२०)।

गोण पुं [दे] १ साली ; (दे २, १०४)। २ बैल, वृषभ, बलीवर्द ; (दे २, १०४ ; कुमा ; हे २, १७४ ; सुर ६४७ ; सौर ; प्रभ ६, १ ; आचा २, ३, ३ ; ठा ६०४ ; विपा १, १)। °इल वि [°वत्] गौ वाला, गौओं का मालिक ; (सुर ४४७)। °उल पुंन [°कुल] गौओं का मन्दिर, गौ बाड़ा ; (सुर ४४७)।

गोल वि [गोल] १ गुप्त कि कर्म, गुप्त कार्य, (हिं० गोल करना)। २ अकारण, अकस्मात् (को०)।

गोलकंदला की [गोलकन्दला] गेंद, गो० (हिं० गोलकंदला)।

गोलकंदा) की [गोलकन्दा] गेंद का कोई पौधा, (हिं० गोलकंदा)।
गोलकंदी)

गोलकंद पु [गोलकन्द] गेंद का कोई पौधा, (हिं० गोलकंद)।

गोलकंदी पु [गोलकन्दी] गेंद की एक जाति, एक प्रकार की गेंद, (हिं० गोलकंदी)।

गोलकी की [गोलकी] गेंद, गोली, (हिं० गोलकी)।

गोलकुंड पु [गोलकुण्ड] गुप्त कार्य, गुप्त कर्म, (हिं० गोलकुंड)।

गोलखाना पु [गोलखानह] गेंद, गो० (हिं० गोलखाना)।

गोलगंज पु [गोलगञ्ज] गेंद का कोई पौधा, (हिं० गोलगंज)।

गोलगंजा की [गोलगञ्जा] गेंद, गो० (हिं० गोलगंजा)।

गोलगंडा पु [गोलगण्डा] गेंद, गो० (हिं० गोलगंडा)।

गोलगंडी की [गोलगण्डी] गेंद, गो० (हिं० गोलगंडी)।

गोलगट्टा पु [गोलगट्टा] गेंद, गो० (हिं० गोलगट्टा)।

गोलगट्टी की [गोलगट्टी] गेंद, गो० (हिं० गोलगट्टी)।

गोलगोल वि [गोलगोल] गोल गोल, (हिं० गोलगोल)।

गोलचंदा पु [गोलचन्दा] गेंद, गो० (हिं० गोलचंदा)।

गोलचंदी की [गोलचन्दी] गेंद, गो० (हिं० गोलचंदी)।

गोलचक्कर पु [गोलचक्कर] गेंद, गो० (हिं० गोलचक्कर)।

गोलचक्की की [गोलचक्की] गेंद, गो० (हिं० गोलचक्की)।

गोलचाल की [गोलचाल] गेंद, गो० (हिं० गोलचाल)।

गोलचिंता की [गोलचिन्ता] गेंद, गो० (हिं० गोलचिंता)।

गोलचिंती की [गोलचिन्ती] गेंद, गो० (हिं० गोलचिंती)।

गोलछाला पु [गोलछाला] गेंद, गो० (हिं० गोलछाला)।

गोलछाली की [गोलछाली] गेंद, गो० (हिं० गोलछाली)।

गोलजंगी की [गोलजङ्गी] गेंद, गो० (हिं० गोलजंगी)।

गोलजंघा की [गोलजङ्घा] गेंद, गो० (हिं० गोलजंघा)।

गोलजंघी की [गोलजङ्घी] गेंद, गो० (हिं० गोलजंघी)।

गोलजाल पु [गोलजाल] गेंद, गो० (हिं० गोलजाल)।

गोलजालिका की [गोलजालिका] गेंद, गो० (हिं० गोलजालिका)।

गोलजाली की [गोलजाली] गेंद, गो० (हिं० गोलजाली)।

गोलटा पु [गोलटा] गेंद, गो० (हिं० गोलटा)।

गोलटी की [गोलटी] गेंद, गो० (हिं० गोलटी)।

गोलडंडा पु [गोलदण्डा] गेंद, गो० (हिं० गोलडंडा)।

गोलडंडी की [गोलदण्डी] गेंद, गो० (हिं० गोलडंडी)।

गोलडा पु [गोलडा] गेंद, गो० (हिं० गोलडा)।

गोलडी की [गोलडी] गेंद, गो० (हिं० गोलडी)।

गोलतकिया की [गोलतकिया] गेंद, गो० (हिं० गोलतकिया

गोत्रकर्दम क एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास जैसा लेकर शत्रुञ्जय पर्वत पर मुक्त हुआ था; (अंत ३)। ४ एक मनुष्य-जाति, जो वैद्य द्वारा लिया जाने का अच्छा धंधा बताती है; (पण्हा १, १४)। ५ एक ब्राह्मण; (उत्त १७)। ६ द्वीप-विशेष; (सम ८०; इक ६६० टी)। °केसिज्ज न [°केशीय] उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन, जिसमें पार्श्वसन्तानी और केशिमुनि का संवाद है; (उत्त २३)। °सगुत्त वि [°सगोत्र] गोतम गोत्रीय; मग; (अच्चु)। °सामि पुं [°स्वामिन्] भगवान् महावीर; सर्व-प्रथम शिष्य का नाम; (विसे १,१—पत्र २)।

गयमङ्गिया) स्त्री [गौतमार्थिका] जैन मुनि-संघ की
गयमेज्जिया) एक शाखा; (राज; कप्प)।

गयर पुं [गोचर] १ गौओं को चरने की जगह; "गोगोयरे व वरुत्तमाहारे" (दृढ ३)। २ विषय; "अंतुरहरगयरं सद्द...सद्देसु" (गउड)। ३ इन्द्रिय का विषय, प्रपञ्च; "इम या लज्जायें तं कत्तो नयरगोमरं करं"(कुमा)। ४ भिक्षाटन, भिक्षा के लिए भ्रमण; (ओघ ६६ भा; उत्त ६,१)। ५ भिक्षा, माधुकरी; (उत्त २०४)। ६ वि. भूमि में विचरने वाला, "पिंडवरणोवगया दुविहाए" (गउड)। °चरिया वि [°चर्या] भिक्षा के लिए भ्रमण; (उत्त १३७ टी; पउम ५, ३)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ गौओं के चरने की जगह; (उ ३, ४०)। २ भिक्षा-भ्रमण की जगह; (उ ६)।

गयरि वि [°चरिन्] भिक्षा के लिए भ्रमण करने वाला; (ठा २०४)।

गयरी स्त्री [गौचरी] भिक्षा, माधुकरी; (सुपा २६६)।

गर पुं [गौर] १ शुक्ल वर्ण, सफेद रंग; २ वि. गौर वर्ण वाला, शुक्ल; (गउड; कुमा)। ३ अश्वत्थ, पिप्पल; (आचा १,८)। °खर पुं [°खर] गदहे की एक जाति; (पण्ण १)।

गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष, हिमालय, (निचू १)।

गिरा पुं [°मृग] १ हरिण की एक जाति; २ न. उस हिरण के चमड़े का बना हुआ वस्त्र; (आचा २, ५, १)।

गरव देखो गोरव; (ठा ८८)।

गरंग वि [गौराङ्ग] शुक्ल शरीर वाला; (कप्प)।

गरिंडी स्त्री [दे] गोला, गोद, उत्सङ्ग-विशेष; (दे १,८८)।

गरिद्ध वि [दे] स्वल्प, थोड़ा; (षड्)।

गरव न [गौरव] १ महत्त्व, गुरुत्व; (उप्प ३०)। २ दर्प, अभिमान, बड़प्पन; (विसे २४७३; स्वप्न ५३)। ३ ऋद्धि, गारव; (ठा ३)।

गोरविय वि [गौरवित] सम्मानित, जिसका आदर किया गया हो वह; (दे ४,६)।

गोरस पुं [गोरस] गोरस, दूध, दही, मद्य वगैरः; (पाचा १,८; ठा ४,१)।

गोरा स्त्री [दे] १ लाट्यल-पद्धति, हल-रेखा; २ चक्षु, आँख; ३ प्रेक्षा, दौड़; (दे २, १०४)।

गोरि देखो गोरी; (हे १, ४)।

गोरिज्ज न [गौरिक] विद्याधर का नगर-विशेष; (इक)।

गोरी स्त्री [गौरी] १ शुक्ल-वर्णा स्त्री; (हे ३,२८)। २ पार्वती, शिव-पत्नी; (कुमा; सुपा २४० ; गा १)। ३ श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम; (अंत १६)। ४ इस नाम की एक विद्या-देवी; (संति ६)। °कूड न [°कूट] विद्याधर-नगर-विशेष; (इक)।

गोल पुं [दे] १ साखी; (दे २,६६)। २ पुत्र का लिङ्गगर्भ मांसपिण्ड; (आचा १, ८)। ३ निष्ठुरता, कठोरता; (दस ७)।

गोल पुं [गोल] १ देश-विशेष; "कम्मगोलगिरिछल्लेमंतिमम्मि" (मयू ६८)। २ गोलाकार, वृत्ताकार, गोलाकार वस्तु; (उ ४,४; मयू ६)। ३ गोलक, कुंडा; (सुपा ३७०)। ४ गेंद, कन्दुक; (सुम १,४)।

गोलय) पुं [गोलक] ऊख देखो; (सुम २,२ ; उत्त १
गोलय) ३६१ टी)।

गोला स्त्री [दे] गौ, गैया; (दे २, १०४ ; पाम)। २ नदी, कोई भी नदी; ३ सखी, सहेली, सखिनी; (दे २, १०४)। ४ गोदावरी नदी; (दे २,१०४ ; ठा ५८ ; १७६; हेका २६७ ; वि ८६ ; १६४ ; पाम ; पड्)।

गोलिय पुं [गौडिक] गुड़ बनाने वाला; (उत्त ६)।

गोलिया स्त्री [दे] १ गोली, गुटिका; (राय; मयू)। २ गेंद, लड़कों के खेलने की एक चीज; "गोए दावेंति पढमं गोलियाए मित्तं" (उत्त २)। ३ बड़ा कुंडा, बड़ी बाल्टी; (उ ८)। °लिंछ, °लिच्छ न [°लिञ्छ, °लिच्छ] १ कुत्ती, कुत्ता; २ अग्नि-विशेष; (उ ८—पत्र ४१७)।

गोलियायरिय न [गौलिकाचार्य] १ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है; २ वि. गोलिकाचार्य-संबंधि; (उ ८)।

गोली स्त्री [दे] मक्खी, मक्षिका, दही मथने की लकड़ी; (दे २, ८६)।

गोल्ल न [दे] स्त्री-लिंग, कुलटा का पति; (आचा १,८ ; कुमा)।

गोल्ल पुं [गौल्य] १ देश-विशेष, (आचा)। २ न गात्र-विशेष, जो कायरा गोत्र की शाखा है। ३ वि. गौल्य गात्र में उत्पन्न, (ठा ७)।

गोल्लइ स्त्री [दे] मिट्टी, वल्ली-विशेष, इन्द्रायन का पेड़, (दे ३, ६६ ; आचा ; पाअ)।

गोव सक [गोपय्] १ छिपाना। २ रक्षण करना। गोवए, गोवेइ, (कुमा ३४६, महा)। कर्म—गोविज्जंत, (कुमा ११७ ; सुर ११, १६२, प्राप ६६)।

गोव [गोप] पुं [गोप] गौओं का रक्षक, ग्वाला, गो-पाल, (उवा ७ ; दे १, ६८ ; कप्पू)। °णिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष, "गोवगिरिनिहसघट्टियचामीयरसामसरच्छे" (पुणि १०८६)।

गोवइय न [गोपन] १ रक्षण। २ छिपाना, (आ २८ ; उप ६६० टी)।

गोवद्धण पुं [गोवर्धन] १ पर्वत-विशेष, (वि २६१)। २ ग्राम-विशेष, (पउम १०, ११६)।

गोवर पुं [दे] गोबर, गोमय, गो-विष्ठा, (दे १, ६६, उप ६६० टी)।

गोवर पुं [गोवर] मगध देश का एक गाँव, गौतम-स्वामी की जन्म-भूमि, (आवम)। २ क्षत्रिय-विशेष ; (उप ६६० टी)।

गोवाल न [गोपाल] गोधन, गोकुल, गौओं का समूह, "धारिणि गोवालए" (कुमा ४३१)। २ गोत्र-विशेष, (कुप्र १०)।

गोवालायण देखो गोवल्लायण, (कुप्र १०)।

गोवालिय पुं [गोपालक] ग्वाला, अहीर, (कुमा ४३१)। २ न. नगर-विशेष, (इक)।

गोवालायण वि [गोपालायन] १ गोकुल गोत्र में उत्पन्न, (कुप्र १०)।

गोवा पुं [गोपा] गौओं का पालन करने वाला, ग्वाला, (प्रभा)।

गोवाय सक [गोपाय] १ छिपना। २ रक्षण करना। कर्म—गोवायंत, (उप ६६०)।

गोवाल पुं [गोपाल] गौओं का पालन करने वाला, ग्वाला, अहीर, (दे १, १८)। °गुरुडरी स्त्री [°गुरुडरी] गोपाल स्त्री की भाषा-विशेष, गुजरात के अहीरों की बोली, (कुमा)।

गोवालय पुं [गोपालक] ग्वाल, ग्वार, (पउम ६, ६६)।

गोवालि पुं [गोपालिन्] ग्वाल, (सुर ४१२ ; ४३३)।

गोवालिणी स्त्री [गोपालिनी] गोपी, ग्वालिन, (सुर ४१२)।

गोवालिय पुं [गोपालिक] गोप, अहीर, (सुर ४३३)।

गोवालिया स्त्री [गोपालिका] गोप-स्त्री, (आचा १, १६)।

गोवाली स्त्री [गोपाली] वल्ली-विशेष, (पणण १)।

गोविअ वि [दे] अ-जन्याक, नहीं बोलने वाला, (सुर १, ८८, निर १, ३)।

गोविअ वि [गोपित] १ छिपाया हुआ, (सुर १, ८८, निर १, ३)।

गोविआ स्त्री [गोपिका] गोपांगना, अहीरिन, (सुर ११४)।

गोविंद पुं [गोपेन्द्र] १ स्वनाम-ख्यात एक बौद्ध-नैयायिक ; २ एक जैन मुनि, (पंचव, वंदि)।

गोविंद पुं [गोविन्द] १ विष्णु, कृष्ण ; २ एक जैन आचार्य, (ठा १०)। °णिज्जुत्ति स्त्री [°निर्युक्ति] एक जैन दार्शनिक ग्रन्थ ; (निचू ११)।

गोविन्ल न [दे] कच्छूफल, चाली, (दे १, ६७)।

गोवी स्त्री [दे] बाला, कन्या, कुमारी, लड़की, (दे १, ६६)।

गोवी स्त्री [गोपी] गोपाङ्गना, अहीरिन, (कुमा ४३३)।

गोव्वर [दे] देखो गोयर, (उप ६६१, ६६० टी)।

गोस्स पुं [दे] प्रभात, सुबह, प्रातःकाल, (दे १, ६६ ; सण ; गउड, कप्र ६, पंचव १, पव ४)।

गोसंधिय पुं [गोसंधित] गोपाल, अहीर, (उप ६६० टी)।

गोसग्ग पुं [दे गोसर्ग] प्रातःकाल, प्रभात, (दे १, ६६, पाअ)।

गोसण्ण [दे] पूर्ण, भरपूर, (दे १, ६७, सूत्र)।

गोसाल } पुं न [गोशाल] १ देश-विशेष, (गोसालया } ६८, ६६)। २ पुं भगवान् महावीर के शिष्य, जिसने पीछे अपना अलग मत चलाया था, (भग १५)।

गोसालिआ स्त्री [दि] १ कन्या, कुमारी, (सण)। २ पूर्व-कर्मी

घ

घ पुं [घ] कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्रा ; प्राप्रा)।

घअंद न [दे] मुख, दाँत ; (षड्)।

घइं (अप) अ. पाद-पूरक और अलंकार अर्थ ; (हे ४, ४२४ ; कुमा)।

घओअ) पुं [घृतोद] १ समुद्र-विशेष, जिसका पानी
घओद) घी के तुल्य स्वादिष्ट है ; (इक, ठा ७)। २ मेघ-विशेष, (ति य) ३ वि. जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाशय। स्त्री—°आ, °दा ; (जीव ३ ; राय)।

घंघ पु [दे] गृह, मकान, घर ; (दे २, १०६)। °साला स्त्री [°शाला] अनाथ-मकान, भिक्षुकों का आश्रय-स्थान ; (ओघ ६१६ ; पव ७ ; आचा)।

घंघल (अप) न [झकट] १ झगड़ा, कलह, (हे ४, ४२२)। २ मोह, घबराहट, (कुमा)।

घंघोर वि [दि] भ्रमण-शील, भटकने वाला ; (दे २, १०६)।

घंचिय पुं [दे] तेली, तेल निकालने वाला ; गुजराती में 'घांची' ; (सुर १६०)।

घंट पुंस्त्री [घण्ट] घण्टा, कौतुक-निमित्त वाद्य-विशेष ; (ओघ ८६ भा)। स्त्री—°टा ; (हे १, १६६, राय)।

घंटिय पुं [घाण्टिक] घण्टा बजाने वाला, (कप्प)।

घंटिया स्त्री [घण्टिका] १ छोटा घण्टा, (आचा)। २ किंकिणी ; (सुर १, १४८ ; जं २)। ३ आभरण-विशेष, (णाया १, ६)।

घंस पु [घर्ष] घर्षण, घिसन ; (णाया १, १—पत्र ६३)।

घंसण न [घर्षण] घिसन, रगड़ ; (स ४७)।

घंसिय वि [घर्षित] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ, (ओघ)।

घक्कूण देखो घे।

घग्घर न [दि] घघरा, लहँगा, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र ; (दे २, १०७)।

घग्घर पुं [घर्घर] १ शब्द-विशेष ; (गा ८००)। २ खोखला गला ; "घग्घरगलम्मि" (दे ६, १७)। ३ खोखला आवाज, "हयमाणी घग्घरेण सद्देण" (सुर २, १११)। ४ न. शाङ्वल, रोवाल वगैरः का समूह ; (गउड)।

घट्ट सक [घट्टय्] १ स्पर्श करना, छूना। २ हलाना, चलाना। ३ संघर्ष करना। ४ आहत करना। घट्ट, (प्रया ११६)। कर्म—घट्टिज्जंत, (सा ७)। कृ—घट्टणिज्ज, (ओघ ६, ७)।

घट्ट अक [घट्ट्] भय होना। आघा। (षड्)।

घट्ट पुं [दे] १ हरताल रंग से रँगा हुआ वस्त्र ; २ पट, ३ वेतु, बेंत, (दे २, १११)।

घट्ट पुं [घट्ट] १ शर्करामय-कणमय-भूमि-प्रदेश-रूप (इक)। २ पुंज, जमाव, (आ २८)। ३ स्थान, "दारघट्टए" (सुपा २६६)। ४ वि. सजा, सिंचा, "सद्धम्मघट्टो" (सुपा ११)।

घट्टंसुअ न [दे घट्टांशुक] वस्त्र-विशेष, दुपट्टा वस्त्र ; (कुमा)।

घट्टण न [घट्टन] १ छूना, स्पर्श करना। २ हिलना, (दस ४)।

घट्टणग पुं [घट्टनक] पात्र वगैरः को चिपका करने के उपर दिया जाता एक प्रकार का पदार्थ, (कुप्र)।

घट्टणया) स्त्री [घट्टना] १ आघात, आहनन, (
घट्टणा) ठा ४, ४) । २ चलन, हिलन, (आचा) ३ विचार, ४ पृच्छा, (सूत्र ४)। ५ कर्तव्य, (आचा)। ६ स्पर्श, छूना, (पव ११)।

घट्टय देखो घट्ट, (भग)।

घट्टिय वि [घट्टित] १ आहत, स्पर्श-युक्त, (उप ३ प्रेरित, चालित, (पउम १, ३)। ३ छूआ हुआ, (ज १, राय)।

घट्ठ वि [घृष्ट] १ घिसा हुआ, (हे २, १७४, ओघ, कप्प) घड सक [घट्] १ चेष्टा करना। २ करना, बनाना। परिश्रम करना। ४ संगत होना, मिलना। घडइ (हे १६६) कर्म—घडंत, घडमाण, (से १, ६, सिरि) कृ—घडियव्व, (आचा १, १—पत्र ६०)।

घड सक [घटय्] १ मिलाना, जोड़ना, संयुक्त करना, बनाना, निर्माण करना। २ संचालन करना। घडइ (हे ४०)। भवि—घडिहामि, (स ३६४)। (सुपा ३६६)। संकृ—घडिअ, (सम्म ६, १)।

घड पुं [घट] घड़ा, कुम्भ, कलश, (हे १, १६६) । °कार पुं [°कार] कुम्भकार, मिट्टी का बरतन बनाने वा (उप पृ ४१६)। °चेडिया स्त्री [°चेटिका] घड़े वाली दासी, पनिहारी, (सुपा ४६०)। °दास पुं [पानी भरने वाला नौकर, (आचा)। °दासी स्त्री [पानी भरने वाली, पनिहारी, (सूत्र १, १६)।

त]

दे] सूतेकला, बनाया हुआ ; (पड़) ।
वि [दे] मुँहबिचा ; (पड़) ।
पुं [घटक] छोटा घड़ा ; (जं २ ; भग) ।
न [घटन] १ घड़ना, कृत्रि, निर्माण ; (उप ७६७) ।
स्थल, देश, परिमाण ; (भग ४ ; कप्प २,१) ।
पणा सी [घटना] मिलाप, मेल, संयोग ; (सुम १,१,१) ।
डय देखो घडग ; (जं २) ।
डा सी [घडा] समूह, जत्था ; (गउड) ।
डाघडी सी [दे] गोठी, सभा, मण्डली ; (पड़) ।
डाय सक [घटय्] १ बनाना । २ बनवाना । ३ संयुक्त करना, मिलाना, घटाना ; (हे ४,३४०) । संकृ— घडाविऊण, घडावित्ता ; (भवि) ।
डि सी [घटी] देखो घडिआ=घटिका ; (सम ६५) ।
डिअ, डिय देखो घडिअ=घटित ; (गउड ; कम्म) ।
डिअ वि [घटित] १ कृत, निर्मित ; (पाम) । २ संयुक्त किया हुआ ; (सण) । ३ संबद्ध, मिला हुआ ; (पाम ; स १२४ ; भौत ; महा) ।
डिअड्डा सी [दे] गली, मण्डली ; (दे २, १०६) ।
डिआ सी [घटिका] १ छोटा घड़ा, कलशी ; (सा ४८८ ; था २७) । २ घड़ी, मुहूर्त ; (सुज १०—) । ३ स्तंभ बनाने का पत्थर का ढाँचा ; (पाम) । देखो घडिआ ; (दे १,१०६) ।
डिआ } सी [दे] गोठी, मण्डली ; (पड़ ; दे १,१०६) ।
डी }
डी सी [घटी] देखो घडिआ ; (स २३८ ; प्रास) ।
डुकव्व पुं [घटोत्कच] १ एक मे उत्पन्न ; २ पुं कपि-
डुकव्व वि [घटोद्भव] (प्राप्त) ।
कित, मारव्य मुनि ; (प्राप्त) ।
न [दे] दूध, दोहन, स्तूप ; (पाम) ।
पुं [घन] १ मेघ, बादल ; (सुर १३, ४६ ; प्रास ; १२) । २ हथौड़ा ; (हे १,११) । ३ शरीर-विशेष, जैन मुनियों का पुराय कर्म, जैसे दो का पाप करने से एक मनुष्य होता है (उप १०—पद ४६१ ; विसे ३५४०) । ४ बाण का अग्रभाग, कांटा, कील वगैरः (उप ३,३) । ५ वि. दृढ, ठोस ; (हम्मीर) । ६ संहत, निबिड, निश्छिद्र, सान्द्र ; (हम्मीर ; हम्मीर ४६० टी) । ७ सान्द्र, गहिर, स्थान ; (जी ७० ; उप ३, ४) । १० न. देव-विमान-विशेष ; (सम ३७) । ११ किंडा ; (सुम १,१,७) । १२ बाण-विशेष ; (कुप्र १२) । °उदहि देखो घणोदहि ; °णिचिय वि [°निचित] मजबूत निविड ; (भग) । °तव न [°तपस्] तपश्चर्या-विशेष ; (भग ७, ८ ; भौत) । °तव न [°दल] १ इस नाम का एक मन्त्र ; (उत ३) । °दंत पुं [°दन्त] १ इस नाम का एक मुनि ; २ ऊपरी निवासी मनुष्य ; (उप ४,२) । °माल न [°माल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित विद्याधर-नगर-विशेष ; (इक) । °मुद्दर पुं [°मुद्गर] मेघ की तरह गंभीर आवाज करने वाला बाण-विशेष ; (भौत) । °रह पुं [°रथ] एक जैन मुनि ; (पउम २०, १८) । °वाउ पुं [°वायु] स्थान वायु, जो नरकपृथ्वी के नीचे है ; (उत ३६) । °वाय पुं [°वात] देखो °वाउ ; (भग ; जी ७) । °वाहण पुं [°वाहन] विद्याधरों के एक राजा का नाम ; (पउम ६,७०) । °विज्जुआ सी [°विद्युता] देवी-विशेष, एक दिक्कुमारी देवी का नाम ; (इक) । °समय पुं [°समय] वर्षा-काल, वर्षा ऋतु ; (कुमा ; पाम) ।
घणघणाइय न [घनघनायित] स्त्र का चीत्कार, अव्यक्त शब्द-विशेष ; (पउम १,३) ।
घणवाहि पुं [दे] इन्द्र, स्वर्ग-पति ; (दे २, १०७) । °मंतर पुं [°मन्तर] देव-विशेष ; (पउम ५,१०२) ।
घणसार पुं [घनसार] कपूर ; (पाम ; सण) । °मंजरी सी [°मञ्जरी] एक सती का नाम ; (कम्म) ।
घणा सी [घना] घरेलू की एक अन्न-मक्खी, रुएंदार ; (पाम) ।
घणिय वि [घनित] गर्जना, गर्जन ; (कुप्र २०) ।
घणोदहि पुं [घनोदधि] पत्थर की तरह कठिन जल ; (सम ३७) । °थलय न [°स्तनित] बरसात का बादल ; (कप्प २) ।
घणा पुं [दे] १ दल, बादल, छत्री ; २ वि. घना ; (कप्प २) ।
घणा पुं [दे] १ दल, बादल, छत्री ; २ वि. घना ; (कप्प २) ।
घत्त सक [क्षिप्] १ फेंकना, डालना । २ प्रेरणा करना ; (हे ४,१४३) । संकृ— °घत्तिऊण घत्तिऊण य ; (स ३१०,३० ; स ३१०) ।
घत्त सक [क्षप्] [illegible]
घत्त सक [illegible]

घत्त वि [घात्य] १ मार डालने योग्य ; २ जो मारा जा सके ; (पि २८१, सुम १, ७, ६ ; ८)।
घत्तण न [क्षेपण] फेंकना ; (कुमा)।
घत्ता स्त्री [घत्ता] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
घत्ताणंद न [घत्तानन्द] छन्द-विशेष ; (पिंग)।
घत्तिय वि [क्षिप्त] प्रेरित ; (स २०७)।
घत्थ वि [ग्रस्त] १ भक्षित, निगला हुआ, कवलित ; (पउम ७१,६१ ; पव्व १, ६)। २ आक्रान्त, अभिभूत, (सुपा ३६२ ; महा)।
घम्म पुं [घर्म] घाम, गरमी, संताप, (दे १, ८७ ; गा ४१४)। २ पसीना, स्वेद ; (हे ४,३२७)।
घम्मा स्त्री [घर्मा] पहली नरक-पृथिवी ; (ठा ७)।
घम्मोई स्त्री [दे] तृण-विशेष ; (दे २, १०६)।
घम्मोडी स्त्री [दे] १ मध्याह्न काल ; २ मसक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; ३ मामणी-नामक तृण, (दे २, ११२)।
घय न [घृत] घी, घृत ; (हे १, ११६ ; सुर १६, ६३)। °आसय पु [°आश्रय] जिसका वचन घी की तरह मधुर लगे ऐसा लब्धिमान् पुरुष ; (आवम)। °किट्ट न [°किट्ट] घी का मैल (धर्म २)। °किट्टिया स्त्री [°किट्टिका] घी का मैल ; (पा ४)। °गोल न [°गोल] घी और गुड़ की बनी हुई एक प्रकार की मीठाई, मिष्टान्न-विशेष, (सुपा ६३३)। °घट्ट पु [°घट्ट] घी का मैल, (कुप्र १)। °पुन्न पुं [°पूर्ण] घेवर, मिष्टान्न-विशेष ; (उप १४२ टी)। °पूर पु [°पूर] घेवर, मिष्टान्न-विशेष ; (सुपा ११)। °पूसमित्त पु [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि, आर्यरक्षित सूरि का एक शिष्य, (आचू १)। °भंड पु [°भाण्ड] घर का घी, घृतघार ; (जीव ३)। °भेंड पुं [°भेद] घी के गुण्य विशेष ; (जी १६)। °यर पु [°यर] घी बरसने वाली वर्षा ; (अ ३)। °सागर पु [°सागर] समुद्र-विशेष ; (इक)। °हंस पुं [दे] मारट, मरुआ ; (उप ६ १०४, १७६ ; सुर ३)।
घर [गृह] घर, मकान, गृह ; (हे १, १४४ ; ८ ६, ६५)। °कुडी स्त्री [°कुटी] १ घर के बाहर की कुटिया ; २ कौड़े के मौसर की कुटिया ; (आचा १०६)। °कोइला, °कोइलिआ स्त्री [°कोकिला] गृहगोधा, छिपकली ; (पिंड, सुर
°गोली स्त्री [°गोली] गृहगोधा, छिपकली, १०६)। °गोहिआ स्त्री [°गोधिका] छिपकली विशेष, (दे २, १६)। °जामाउय पुं [°जामातृ घर-जमाई, ससुर-घर में ही रहेगा रहने वाला द (आया १, १६)। °त्थ पु [°स्थ] घरवारी, (आचू १२१)। °नाम न [°नामन्] ह नाम, वास्तविक नाम, (महा)। °वाडय न [°व बड़ी हुई जमीन वाला घर ; (पाम)। °वार न [°द घर का दरवाजा ; (काम १६६)। °सउणि [°शाकुनि] पालतू जानवर, (वा २)। °समुदा पु [°समुदानिक] भावीधिक मत का अनुयायी (भौप)। °सामि पु [°स्वामिन्] घर का मालिक (हे २, १४४)। °सामिणी स्त्री [°स्वामि स्त्री ; (पि ६२)। °सूर न [°शूर] घर में ही बहादुरी दिखाने वाला, (हे कृत शूर, घर में ही बहादुरी दिखाने वाला, (दे
घरंगण न [गृहाङ्गण] घर का आँगन, चौक, (गा
घरग देखो घर, (जीव ३)।
घरघंट पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी, (दे २, १ पाम)।
घरघरग पुं [दे] मीठा का आभूषण-विशेष, (दे १
घरट्ट पुं [घरट्ट] अन्न पीसने का पाषाण यन्त्र, (ए सण)।
घरट्ट पु [दे] मारट, मरहट, पानी का चरखा, (घरट्टी स्त्री [घरट्टी] शक्ती, ताप, (दे २, १०
घरणी देखो घरिणी, "तं घरघरणि वरणि व" ७१८ टी ; प्राप्र ४६)।
घरयंद पुं [दे] मारसा, दर्पण, शीशा, (दे २, १०
घरस पुं [दे. गृहवास] गृहाश्रम, गृहस्थाश्रम, (सू
घरसण देखो घंसण, (सण)।
घरिणी स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, भार्या, पत्नी, (७१८ टी ; से २, ३८ ; सुर २, १०० , कुमा)।
घरिल्ल पुं [गृहिन्] गृही, संसारी, घरवारी, (गा ७११)
घरिल्ली स्त्री [दे] गृहिणी, पत्नी, (दे २, १०६)।
घरिस पु [घर्ष] घर्षण, रगड़, (आचा १, ११)।
घरिसण न [घर्षण] घर्षण, रगड़ ; (सण)।
घरोल्ला स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली, (पि ११८)।

ह न [दे] कृत-कोलाहल-विशेष ; (दे १, १०६)।
हया) स्त्री [दे] कृत-चिह्न, किये हुए ; मुहरवाली में
हि) लगी ; (पउम १, १; दे १, १०६)।
ह पुं [घनघन] 'घन घन' आवाज, ध्वनि-विशेष ;
(सण १, ६)।
ह [क्षिप्] फेंकना, डालना, गिराना। घाएइ,
क्षिपति ; (भवि, हे ४, ३३४, ४३२)।
वि [दे] अनुकूल, प्रेमी ; (दे २, १०१)।
क्ष वि [क्षिप्त] फेंका हुआ, डाला हुआ, (भवि)।
क्ष वि [दे] गर्वित, निर्भर्त्सित, तिरस्कृत हुआ, "अवहीरिय
ति परिक्खित्तं, तिरक्कारसूयगमेयं" (सुख २४१)।
ह [घृष्] १ घिसना, रगड़ना। २ मार्जन करना,
साफ करना। घट्ठइ ; (महा ; षड्)। संकृ—"घसिऊण
रेणुएणं अन्नो पाहरिओ मए पच्छा" (सुर ७, १८६)।
ष देखो घंसण ; (सुर १४, हे १, १६६)।
षेय वि [दे] मर्दित, संघर्षित ; (षड्)।
सी सी [घर्षणी] घर्षण, एक तरह का, (सुर ३६१)।
सी [दे] १ पंक्ती जमीन, २ भूमि-रेखा, तरेड़ ;
(हे)।
य वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ ; (हेका ४)।
र वि [असिनृ] बहु भक्षक, बहुत खाने वाला, (भग
३ श)।
ी सी [दे] १ भूमि-रेखा, तरेड़ ; २ नीचे उतरना,
उतरना, (राज)।
वि [घातिन्] घातक, नाशक, हिंसक ; (सा ४३७ ;
१३६८ ; सम)। 'कम्म न ['कर्मन्] कर्म-
ष, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय दे
कर्म, (भवि) 'चउक्क न ['चतुष्क] पूर्वोक्त
कर्म ; (कम्म)।
य वि [घातित] १ मारित, विनाशित; (राया १, ८;
)। २ घसाया हुआ, जो शक्ति-शून्य हुआ हो, कमजोर
त, "कयराहं घाइयाहं जाया मह वेयणा मंदा" (सुर
३३६)।
आ सी [घातिका] १ विनाश करने वाली स्त्री, मारने
ली स्त्री, (उप २)। २ घात, हत्या; ३ घात करना ;
सुर १६, १६०)।
ज्जमाण } देखो घाय=हन्।
य्व }
घाएय्व देखो घाय=घातय्।
घाइर वि [घातिन्] मूँघने वाला ; (सा ४४६)।
घाइकाम वि [घ्रातुकाम] सूंघने की इच्छा वाला, (सण
१, १८)।
घाएंत देखो घाय=हन्
घाड सक [त्रंश्] भ्रष्ट होना, च्युत होना। घाडए,
(षड्)।
घाड पुं [घाट] १ किनारा, सौंदर्य ; (दुर्ग। महा १,
१)। २ मस्तक के नीचे का भाग ; (महा १, ८—पत्र
१३३)।
घाडिय वि [घाटिक] बलवान्, शिव ; (राया १, १ ;
दुर्ग १)।
घाडेगय पुं [दे] सामोन की एक जाति (?)
"से जहा संमत्तुल्लालगसुनिम्मिआ दुवे मत्ता।
घाडेगयाण इअ अवयवा ते पउमंति"
(उप ७३८ टी)।
घाण पुं [घ्रा] १ सूंघने की इन्द्रिय, नासिका ; (पिंड)।
२ गन्ध, पकवी आदि में एक बार डालने का परिमाण,
(सुख १४)।
घाण पुं [घ्राण] नाक, नासिका ; "दो घाणा" (पण्ण
१५ ; उत्त १४८ टी ; दे २, ७६)। 'रिस पुं
['र्शस्] नासिका में होने वाला रोग-विशेष ; (ओघ
१८४ भा)।
घाणिंदिय न [घ्राणेन्द्रिय] नासिका, नाक ; (उत्त १६)।
घाय सक [हन्] मारना, मार डालना, विनाश करना,
वकृ—घायंत ; (उव)। वकृ—"घाएंत तिम
वहवे " (पउम ८०, १७)। घायंत ; (पउम २४
२६ ; विसे १७६३)। वकृ—"से पच्छे चिंताउर
पंससमाउण्णा पंचहिं चारणाईहिं सद्धिं सद्दं घाइज्जमाणं
पासइ " (राया १, १८)। वकृ—घाइयव्व ; (पउम
६६, ३४)।
घाय सक [घातय्] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना
विनाश करवाना। वकृ—घायमाण; (सुख २, १)
कृ—घाइयव्व ; (पउम ६६, ३४)।
घाय पुं [घात] १ प्रहार, चोट, वार ; (पउम ६६
३४)। २ नरक ; (सूअ १, ५, १)। ३ हत्या
विनाश, हिंसा, (सूअ १, १, २)। ४ संसार ; (सू
१, ७)

घायग वि [घातक] मार डालने वाला, विनाशक ; (स २६४, सुपा २०७)।

घायण न [हनन] १ हत्या, मारा, हिंसा, (सुपा ३४६, द २६)। २ वि. हिंसक, मार डालने वाला, (स १०८)।

घायण पु [दे] गायक, गवैया, (दे २, १०८, हे २, १७४, षड्)।

घायणा स्त्री [हनन] मारना, हिंसा, वध, (पव्ह १, १)।

घायय देखो घायग, (विसे १७६३, स २६७)।

घायावणा स्त्री [घातना] १ मरवाना, दूसरे द्वारा मारना, २ लुटपाट मचवाना, "बहुगामघायावणाहिं ताविया" (विपा १, ३)।

घार अक [धारय्] १ विष का फैलना, विष की असर से बेचैन होना। २ सक. विष से बेचैन करना। ३ विष से मारना। कर्म—"घारिज्जंतो य तमो विसेण" (स १८६) हेकृ—घारिज्जिउं, (स १८६)।

घार पु [दे] प्राकार, किला, दुर्ग, (दे २, १०८)।

घारंत पु [दे] धतूरा, धंबर, एक जात की मीठाई, (दे २, १०८)।

घारण न [धारण] विष की असर से होने वाली बेचैनी, (सुपा १२४)।

घारिय वि [धारित] जो विष की असर से बेचैन हुआ हो, "तमो मोगो। सव्वत्थ तदुवघाया विसघारियभोगदुल्लोति" (उप ४४१)। "विसघा(? धा)रियम्म अद्द का यणचन्दणकामिनीभोगो" (उवर १७)। "विसघारिओ वि धणूरिओ वि मोहेण दिन्न टंकिओ सि" (सुपा १२४, ४४७)।

घारिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, गुजराती में जिसे 'घारी' कहते हैं ; (भवि)

घारी स्त्री [दे] १ शकुनिका, पक्षि-विशेष, (दे २,१०७, पाम)। २ छन्द-विशेष, (पिंग)।

घास पु [घास] तृण, पशुओं को खाने का तृण ; (दे २, ८६ ; प्रौप)।

घास पु [ग्रास] १ कवल, कौर, (प्रौप, उत्त १)। २ आहार, भोजन ; (आचा, प्रौप ३१०)।

घास पु [घर्ष] घर्षण, रगड़, "जो मे दव्वियाणं दुह, घरघासेण घरघासेण" (सुपा १४)।

घासेसणा स्त्री [ग्रासैषणा] आहार-विषयक शुद्धि अशुद्धि का पर्यालोचन ; (प्रौप ३१८)।

घि देखो घे। भवि—घिच्छिह (विसे १०११)। भूका (प्राप्त ४)। संहृ—घित्तूण, (हम्मी ७, ४६), घित्तुं, (सुपा २०६)। कृ—घित्तव्व, (सुर १,

घिअ न [घृत] घी, घीव, आज्य, (पा ३१)।

घिअ वि [दे] मर्दित, निरस्कृत, भर्त्सित, (दे २,

घिं } पु [ग्रीष्म] १ गरमी की ऋतु,
घिंसु } "घिं सिसिरवासे" (प्रौप ३१० मा ; ठा ६, १०१)। २ गरमी, अभिताप ; (सुपा १, ४,

घिट्ठ वि [दे] कुब्ज, कूबड़ा, (दे २, १०८)।

घिट्ठ वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ ; (कुमा ३१६ अ)।

घिणा स्त्री [घृणा] १ जुगुप्सा, २ दया, (हे १, १२८)।

घित्त (अप) वि [क्षिप्त] फेंका हुआ, डाला हुआ

घित्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहण करने (सुपा २०६)।

घित्तूण } देखो घि।
घिप्पं }

घिस सक [घ्रस्] घसना, निगलना, भक्षण क (हे ४, २०४)।

घिसरा स्त्री [दे] मछली पकड़ने की जाल-विशे १, ८—पत्र ८६)।

घिसिअ वि [ध्मस्त] कवलित, निगला हुआ, भ ७, ४६)।

घुंघुरुड पु [दे] उत्कर, ढग, समूह, (दे २, १०

घुंट पु [दे] घूंट, एक बार में पीने योग्य पानी क ४, ४२३)।

घुग्घ } (अप) पुन [घुग्घिका] कौपी-बेर,
घुग्घिअ } बेटा, (हे ४, ४२३, कुमा)।

घुग्घुच्छण न [दे] खेद, तकलीफ, परिश्रम, (दे २,

घुग्घुरि पु [दे] मण्डूक, भेक, मेढक, (दे २,१०

घुग्घुस्सुअ वि [दे] नि शंक होकर गया हुआ,

घुग्घुस्सुसय न [दे] साशंक वचन, आशंका-पू (दे २, १०६)।

घुघुघुघुघ अक [घुघुघुघाय्] 'घुघु' आवाज का बोलना। वकृ—घुघुघुघुघुघेंत, (पउम १

घुघुघ अक [घुघूय्] ऊपर देखो। वकृ—घु (आया १, ८—पत्र १३३)।

घुसिअ न [दे] पत्थर की बड़ी शिला; । दे २, ५०)।

वि [घुष्ट] घोषित, ऊँची आवाज से उच्चरित किया गया; (पउम ३, ११८, भवि)।

घुस अक [गर्ज्] गरजना, गर्जारव करना। घुसइ, (हे ४, ३६१)।

पुं [घुस] अव्यक्त-अस्पष्ट शब्द; (ठा ४, १; सिरि ६३६)।

घुसिआ स्त्री [दे] कपोलकर्णिका, गण्डकर्णी; (दे गाहुणी १२, ११० , भवि)।

घय वि [घुषित] घुला हुआ, । (कुमा १)।

णा देखो घुस्मा। वह—घुण्णंत (नाट)।

ण्णाय वि [घूर्णित] १ घुमा हुआ, २ भ्रान्त, भटका हुआ; (हे ८, ४६)।

णेत्र वि [दे] गर्वित, अभिमानी, (दे २, १०६)।

र) देखो घुस्म। पुमान्, (सिरि)। वह—

र) (पउम १, ३)।

घुसिर वि [घुसघुसिर] १ किसी 'घुस घुस' आवाज किया हुआ; २ न. 'घुस घुस' ध्वनि, "मद्दुग्गलंघुसघुसिरमाणत्ते" (सुपा ४०)।

स अक [घूर्ण्] घूमना, चक्कर खिलना। घुस्सइ; (हे ४, ११७ ; षड्)। वह—घुस्संत, घुस्समाण; (रंभा ३३; रयण १, ६)। संकृ—घुस्सिऊण; (महा)।

सण न [घूर्णन] चक्कर खाना भ्रमण; (कुमा)।

स्सिय वि [घूर्णित] घुमा हुआ, चक्र की तरह फिरा हुआ; (सुपा ८४)।

स्सिर वि [घूर्णिन्] घूमने वाला, फिरने वाला, चक्कर खाने वाला, (उप पृ ६२, गा १८०; गउड)।

रग पु [दे] एक तरह का पक्षी, जो पंख फैलाकर को चिढ़ाने के लिए उस पर किया जाता है; (पिंड)।

रघुर देखो घुरघुर। वह—घुरहुरंत; (भवि)।

रक्क अक [दे] घुरकना, घुड़कना, गरजना। "घुरक्कति रुषा" (भवि)।

रघुर अक [घुरघुराय्] घुरघुराना, 'घुर घुर' आवाज करना, व्याघ्र वगैरः का बोलना। घुरघुरंति; (सिरि ६६८)। वह—घुरघुराय॑त; (कुमा ६०६)।

रघुरि पुं [दे] भाड़ा, भेंट, मेंड; (दे २, ७८)।

घुरघुर) देखो घुरघुर। घुरघुरा; (भग)। वह—

घुरघुरा) घुरघुरायंत; (भग; औप)।

घुल देखो घुम्म। घुलइ; (हे ४, ११७)।

घुलकि स्त्री [दे] हाथी की आवाज, कलिभाव; (सिरि)

घुलघुल अक [घुलघुलाय्] 'घुल घुल' आवाज करना। वह—घुलघुलायमाण; (सिरि ६६८)।

घुलिअ वि [घूर्णित] चक्कर खाया हुआ; (कुमा)।

घुल्ला स्त्री [दे] कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति; (पण्ण १)।

घुसण देखो घुसिण; (कुमा)।

घुसल अक [मथ्] मथना, विलोडन करना। घुसलइ; (हे ४, १२१)।

घुसलिअ वि [मथित] मथित, विलोडित; (कुमा)।

घुसिण न [घुसृण] कुंकुम, कुसुम्भ द्रव्य-विशेष, केसर; (हे १, १३८)।

घुसिणच्छ वि [घुसृणवत्] कुंकुम वाला, कुंकुम-युक्त; (कुमा)।

घुसिणिअ वि [दे] गर्वित, अभिमानी; (दे २, १०६)।

घुसिम न [दे] कुंकुम, कुंकुम; (षड्)।

घुसिरमार न [दे] अकाल, विवाह के अवसर में स्नान के पहले लगाया जाता मङ्गादि का विलेपन; (हे २, ११०)।

घूअ पुंस्त्री [घूक] उलूक, उल्लू, पक्षि-विशेष; (ठाणा १, ८ ; पउम १०१, ६८)। स्त्री—घूई; (विपा १, ३)। °रि पुं [°रि] काक, कौआ, वायस; (नंदु)।

घूणाग पुं [घूणाक] स्वनाम-ख्यात तन्तिवेश-विशेष, विशेष; (आवू १)।

घूरा स्त्री [दे] १ जङ्घा, जाँघ; २ खलिहान, शस्य का अवस्थान विशेष; "खलयाण वा घूराओ वा" (सूत्र २, २, ४६)।

घे देखो गाह=ग्रह्। घेइ; (षड्)। संवि—घेच्चा; (सिरि ११२७)। कर्म—घेप्पइ; (हे ४, २४६)। कृह—घेप्पंत, घेप्पमाण; (गा १८३; भग ; स ११२)। संकृ—घेऊण, घेक्कूण, घेक्कूण, घेत्तुआण, घेत्तुआणं, घेत्तूण, घेत्तूणं; (नाट—मालती ५१ ; सि ४८४ ; हे ४, २१० ; रि ; उव ; प्राप्र)। हेकृ—घेत्तुं, घेत्तूण; (हे ४, २१० ; पउम ११८, २४)। कृ—घेत्तव्व; (हे ४, २१० ; प्राप्र)।

घेउर पुन [दे] घेवर, घृतपूर, मिष्टान्न-विशेष, "सा घेउर देवा घुम्म । पउउ, (
मण्ड निवगेहेवि हु वयसेउरणाएण समाउण्ड" (सुपा (कप्प ; गा ३७१ ; उवा)
११)। घोट्ट सक [घोटय्] १ पि
घेक्कूण देखो घे। (विपे १०४४ ; से ४, ४१)
घेत्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहण करने की इच्छा वाला, घोट्ट न [दे] कपड़े से छाना हुआ
(पउम १११, १६)। घोट्टण न [घोटन] पर्याय, रगड़
घोट्टणा स्त्री [घोटना] पत्थर की
घेप्प } देखो घे। गोलाकार होना ; (उ ४७)।
घेप्पंत } घोल्लवड } न [दे] एक प्रकार का
घेप्पमाण } घोल्लवडय } (पभा ३३ ; श्रा १० ;
घेवर [दे] देखो घेउर ; (दे १, १०८)। घोलाविअ वि [घोलित] मिश्रित किया
घोट्ट } सक [पा] पीना, पान करना । वकृ, (दे ४, हुआ , (से ४, ४१)।
घोट्टय } १०)। वकृ—घोट्टयत ; (उ २१७)। घोलिअ न [दे] १ शिखानख , २ छ
देह—घोट्टिउं , (उमा)। (दे १, १११)।
घोड देखो । घुम्म वकृ ; (से ५, १०)। घोलिअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ, (प
घोड } पुंस्त्री [घोट्ट, क] घोड़ा, अश्व, हय ; (दे १, घोलिअ वि [घोलित] रगड़ा हुआ, मर्दित ;(
घोडग } १११ , पंच ५२ ; उवा ; उत्त २०८)। १ पुं (गा ३१८ ; उ ५७८ ; गउड)।
घोडय } द्वायोत्पार्ता का एक रोग , (पव ५)। २ रेवन्त घोस सक [घोषय्] १ घोषणा करना, ढं
पु [रक्षक] अश्वपाल ; (उत्त ५६७ टी)। ३ भावि जाहिर करना । २ बोलना, ऊँचे आवाज से
अश्वग्रीव-नामक प्रतिवासुदेव, उत्त-विशेष ; घोसह ; (हे १,१६० ; प्राप्रा) । प्रयो—घोसावे
(पउम)। ४ मुद्ग न [मुद्ग] जैनेतर शास्त्र-विशेष ; (अणु)। घोस पुं [घोष] १ ऊँचा आवाज ; (७ ,
घोडिय पु [दे] मित्र, वयस्य , (सूद १)। ५४)। २ आभीर-पल्ली, अहीरों का महल्ला ;
घोडी स्त्री [घोटी] १ घोड़ी, २ वृक्ष-विशेष , "घोयल्लि- १६०)। ३ गोठ, गौओं का बाड़ा, (ठा १,४-सू ८
कोडिकच्चुकारसप्पराइसंकिण्णे " (उ २१६)। ४ स्तनितकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र ,
घोण न [घोण] नाक का नाक ; (सण)। ५ उत्तर आदि स्वर-विशेष , (भग ६, १)। ७ न देव-विमान-विशेष (सम १६
घोणस पु [घोनस] एक जात का साँप ; (पउम ३६, सेण पु [सेन] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्म
१०)। एक जैन मुनि, (पउम २०, १७६)।
घोणा स्त्री [घोणा] १ नाक, नासिका , (पाम)। २ घोसण न [घोषण] १ ऊँची आवाज, (सि
घोड़े का नाक, ३ सूअर का मुख-प्रदेश ; (से १, ६४ ; घोसणा, ढिंढोरा पिटा कर जाहिर करना, (सं)।
गउड)। घोसणा स्त्री [घोषणा] ऊपर देखो , (कप्प ;
घोर अक [घुर] निद्रा में घुर् घुर् आवाज करना । घोरंति ; ५१४)।
(गा ८००)। वकृ—घोरंत ; (उ ४१४, उत्त घोसय न [दे] दर्भ का पत्ता, दर्भ रखने का
१०११ टी)। पात्र-विशेष ; (भंत)।
घोर वि [रौ] १ भयानक, भयजनक, विकट ; (सूअ १, ५, घोसाडई स्त्री [घोषातकी] लता-विशेष , (
१ , उप ३४१ ; सुर १, १४१ , प्रासू ११६)। २ ११०)।
निर्दय, निष्ठुर ; (पभ)।
घोरि पु [दे] वृक्ष-पक्षी की एक जाति ; (दे १, १११)।

ई) स्त्री [दि] उदर, वस्तु में होने वाली तटा-विशेष;
ी) (दे २, १११ ; पव १—पत्र ३३)।
वण न [घोषण] घोषणा, डौंडी पिटा कर जाहिर
; (उव २११ टी)।
व्र वि [घोषित] जाहिर किया हुआ; (उव)।

तिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि धमाणवद्दवंकटो
दोहलो तरंगे समत्तो।

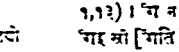

च

च] चतुर्-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष; (प्राप्र; प्राकृ)।
[च] इस अर्थ में प्रयुक्त किया जाता अव्यय;—१
वया; (हुम; हे २,२१७)। २ पुनः, फिर;
न ४, २३ ; ६६ ; प्रासू ६)। ३ अवधारण, निश्चय;
१३)। ४ भेद, विशेष; (सिद्ध १)। ५ अतिशय,
त्कर्ष; (कप्र)। ६ अनुक्ति, समुच्चय; (सिद्ध १)।
१)। ७ पाद-पूर्ति, पद-पूरण; (सिद्ध १)।
स्त्री [त्वक्] चमड़ी, त्वचा; (षड्)।
वि [शक्ति] जो समर्थ हुआ हो, शक्त; (हे ६, ६१)।
देखो चविअ ; (पउम १०३, १२६)।
वि [स्थक्त] मुक्त, परित्यक्त ; (हुआ ३,४६)।
वि [त्यजित] छुड़वाया हुआ, मुक्त कराया हुआ ;
न १११)।
देखो चय=त्यज्।
देखो चु।
} देखो चय=त्यज्।
प्प देखो चेअ; (षड्)।
ई देखो चेअ; (हे २, १२ ; हुआ)।
ई [चैत्र] मास-विशेष, चैत्र मास ;(हे १,११२)।
ा देखो चु।
} देखो चय=त्यज्।
ि (ती) वि [चकित] भीत, त्रासित ; (सुर ३१३)।
ि देखो चु।
वि [चतुर्] चार, संख्या-विशेष ; (उत्त ; कम्म ४,१ ;

जी ३३)। °चालीस सक्रि [चत्वारिंशत्] चौमालीस, ४४ ; (वि ७६ ; १६६)। °कट्ठ न [°काष्ठ] चारों दिशा ; (हुआ)। °कट्ठी स्त्री [°काष्ठी] चौकठ, चौखटा, द्वार के चारों ओर का काठ, द्वार का ढाँचा ; (निचू १)। °कोण वि [°कोण] चार कोण वाला, चतुरस्र ; (पाया १,१३)। °गं न देखो चउक्क=चतुष्क ; (दं ३०)। °गइ स्त्री [गति] नरक, तिर्यंच्, मनुष्य और देव की योनि; (कम्म ४, ६६)। °गाहिम वि [°गाहिक] चारों गति में भ्रमण करने वाला; (श्रा ६)। °गमण न [°गमन] चारों दिशाएँ; (कप्र)। °गुण, °गुण वि [°गुण] चौगुना; (हे १,१७१ ; षड्)। °चत्ता स्त्री [°चत्वारिंशत्] संख्या-विशेष, चौमालीस; (सम)। °चरण पुं [°चरण] चौपाया, चार पैर के जन्तु, पशु ; (उव ७६८ टी ; सुर ४०६)। °चूड पुं [°चूड] विजयार वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ६, ४६)। °ठ्ठि देखो °ट्ठि ; (हे २, ३३)। °ट्ठाणवडिअ वि [°स्थानपतित] चार प्रकार का ; (सम)। °चउइ स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, चौरानवे, ६४; (वि ४४६)। °चउय वि [°नवत] चौरानवाँ, ६४ वाँ ; (पउम ६४, १०६)। °चउवा देखो °चउइ ; (सम ६७ ; श्रा ४४)। °चउ (अप) देखो °चत्त ; (सिद्ध)। °तिंस, °तीस न [°त्रिंशत्] चौंतीस, ३४; (सम; कप्र)। °तीसइम देखो °तीसइम ; (पउम ३४, ६१)। °तीसा स्त्री, देखो °तीस (प्रक)। °तालीस वि [°चत्वारिंश] चौमालीसवाँ, ४४ वाँ ; (पउम ४४, ६८)। °तीसइम वि [°त्रिंश] १ चौंतीसवाँ, ३४ वाँ; (कम्म)। २ न. कोटि निर्णय का लगातार उलटना; (पाया १,१—पत्र ४१)। °दय वि [°द] १ चौथा ; (हे १,१७१)। २ पुं. उदासन; (सम)। °दयंडुय पुं [°दण्डुक] एक एक उदासन ; (सम)। °दयण न [°दयन] एक दिन का उदासन ; (सम)। °दयणिय वि [°दयनिक] जिसने एक उदासन किया हो वह ; (पव ३, ५)। °दयणिया न [°दयनिका] कटुआ के आकार का चतुर्थ शिव, जिसके बाद अवश्य आहार करने का आता है ; (ठ ४४१ ब)। °दसी स्त्री [°दशी] १ चौदश। २ संख्या-विशेष, चौदह तिथि; (ठ ८)। ३ तिथि-विशेष; (सम ६)। °दंत देखो °दंत, (पव)। °दस वि. न. [°दशन्] संख्या-विशेष, चौदह (सम २; कप्र ४४)। °दसपुव्वि पुं [°दशपूर्विन्] चौदह पूर्व ज्ञानों का ज्ञान करने वाला मुनि; (सम २) देखो °दसम;

(णाया १, १४)। °दसहा अ [°दशधा] चौदह प्रकारों से, (भग ६)। °दसी स्त्री [°दशी] तिथि-विशेष, चतुर्दशी; (स्वप्न ७१)। °दंत पु [°दन्त] ऐरावत, इन्द्र का हाथी; (कप्प)। °दस देसो °दस; (भग)। °दसपुव्वि देसो °दसपुव्वि; (भग ६, ४)। °दसम वि [°दश] १ चौदहवाँ, १४ वाँ; (पउम १४, १६८)। २ लगातार ७ दिनों का उपवास, (भग)। °दसी देसो °दसी; (कप्प)। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवाँ, ११४ वाँ; (पउम ११४, १६)। °दह देसो °दस, (सि १६६; ४४३)। °दही देसो °दसो; (प्राय)। °दिसिं अ [°दिश्] चारों दिशाओं की तरफ, चारों दिशाओं में; (भग, महा, ठा ४, २)। °दा अ [°धा] चार प्रकार से, (उवा)। °णाण न [°ज्ञान] मति, श्रुत, अवधि और मन पर्यंत ज्ञान; (भग, महा)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] मति वगैरे चार ज्ञान वाला, (सुपा ८३; ३२०)। °पण्ण देसो °पन्न।, °पण्णासम वि [°पञ्चाश] १ चौवनवाँ, ५४ वाँ; २ न. लगातार छप्पन दिनों का उपवास; (णाया १—पत्र २११)। °पन्न, °पन्नास अक [°पञ्चाशत्] चौवन, ५४, (पउम ३०, १७, सम ७२; कप्प)। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] चौवनवाँ, ५४ वाँ; (पउम ३४, ८८)। °पय देसो °पद्य, (णाया १, ८; जी ३१)। °पाल न [°पाल] सर्वांग देव का प्रहरण-कोश; (राय)। °पइया, °पइयाँ स्त्री [°पदिका] १ छन्द विशेष; (पिंग)। २ अस्त्र-विशेष की एक जाति, (औप)। °पाई स्त्री [°पदी] देखो °पइया; (सुपा १६०)। °पन्न देखो °पन्न; (सम ७२)। °पय पुंस्त्री [°पद] १ चौपाया प्राणी, पशु; (जी ३१)। २ न अर्थ-प्रतिपादक एक विभाग वाला; (विसे ३३६०)। °पह पु [°पथ] चौदहा, चौराहा, चौगल्ला; (सुपा १००)। °पुड वि [°पुट] चार पुट वाला, चौपड़, चौपड, (विपा १,१)। °फाल वि [°फाल] देखो °पुड, (णाया १, १—पत्र ६१)। °बाहु वि [°बाहु] १ चार हाथ वाला, २ पुं. चतुर्भुज, श्रीकृष्ण, (णाट)। °भुज [°भुज] देखो °बाहु, (णाट; सुर १, ३, १)। °भंग पुन [°भङ्ग] चार प्रकार, चार विभाग; (ठा ४, १)। °भंगी स्त्री [°भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग; (भग)। °भाइया स्त्री [°भागिका] चौदह घर का एक मार्ग; (सुपा)। °मट्टिया स्त्री [°मृत्तिका] चारों के साथ कूटी हुई मिट्टी; (निचू १८)। °मंडलग न [°मण्डलक] लग-भगवा, सिर-भाला, (...मासिअ देखो चाउम्मासिअ," (आ ४७)। °मुह, पुं [°मुख] १ ब्रह्मा, विधाता, (स्वप्न २८, ४८)। २ वि. चार मुँह वाला," (औप; सण)। °वग्ग पुन [°वर्ग] चार समुदाय, (निचू १५)। °वण्ण, °वन्न अक [°चतुर्वर्ण] चौवन, पचास और चार, ५४; (सि २१६, ३७२)। °वार वि [°द्वार] चार दरवाजे वाला, (उवा)। °विह वि [°विध] चार प्रकार का, (ठा ३)। °वीस अक [°विंशति] बीस और चार, चौबीस, २४, (सम ४२, इं १; सि ३४)। °वीसइम वि [°विंशतितम] १ चौबीसवाँ; (सम ४०)। २ न. ग्यारह दिनों का लगातार उपवास; °व्वग्ग देखो °वग्ग; (आचा २,२)। °व्वार [°वार] चार बार, चार दफा; (है १, १७१, कुमा)। °व्वीस देखो °वीस; (ठा ४,२)। °व्वीसइम देखो °वीसइम, °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ, साठ और चार, ६४; (कप्प)। °सट्ठिम वि [°षष्टितम] चौसठवाँ, ६४; (सम ४७)। °सट्ठि देखो °सट्ठि; (कम्म)। °साल [°शाल] चार शालाओं से युक्त घर, °हट्ट, °हट्टय पुंन [°हट्ट, °क] चौहटा, चौराहा; (आ २७; सुपा ४६६)। °हत्तर वि [°सप्तति] ७४ वाँ, (पउम ७४, ८१)। °हत्तरि अ [°सप्ततिधा] चौदह, सत्तर और चार, (सि २४६, २६४)। °हा [°धा] चार प्रकार से, (ठा ३,१, जी १६)।

चउक्क न [°चतुष्क] चौहटा, चार वस्तुओं का समूह; (सम ४०, सुर १४, ७८, सुपा १४)। °केण" (आ २३)।

चउक्क [दे. °चतुष्क] चौक, चौराहा, जहाँ मिलता हो वह स्थान; (दे ३, २, पड्; कप्प; औप; कप्प, अणु, कुमा १, ओघ १; सुर १,६) २ आँगन, प्राङ्गण, (सुर २, ७२)।

चउक्कअ पुं [दे] कार्तिकेय, शिव का एक पुत्र, ३

चउक्कर वि [°चतुष्कर] चार हाथ बड़ा, (ठा ८)।

चउक्का स्त्री [दे. चतुष्किका] गली, छोटा चौक ; (दे ३, ७२)।

चउग्गइया स्त्री [दे] नाच-विशेष ; (णाया ७, ८)।

चोट्ट वंश [चतुष्पोल] छन्द-विशेष ; (पिंग)। °गण ; (पिंग)।

चउ वि [चतुर] १ तिगुना, दना, दुगिनार ; (पच्च ; वेणी)। २ त्रिगुना, तिगुनाधारी से ; "किसी सवार दो" (दा ७)।

चंग वि [चतुरङ्ग] १ चार अंग वाला, चार विभाग वाला ; (सैन्य वगैरः) (सण)। २ न. चार अंग, चार प्रकार ; (उत्त ३)।

रंगि वि [चतुरङ्गिन्] चार विभाग वाला, (सैन्य वगैरः); ।—°णी ; (सुपा ४६६)।

रंत वि [चतुरन्त] १ चार पर्यन्त वाला, चार संख्यक हाथ ; २ पुं. संसार ; (औप)। °चक्कवट्टि—°ता [ति] इन्द्रियां, एणी ; (उ ४, १)।

रंस वि [चतुरस्र] चतुष्कोण, चार कोण वाला ; सण ; आच ; (दे १२)।

रंसा स्त्री [चतुरंसा] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

रय पुं [दे] चौक, चतुष्क, गाँव का सभा-स्थान ; सम १३८ दी)।

रस्स देखो चउरंस ; (कित्ति २७१)।

रलिंघ पुं [दे] वासुदेव, राजा शालिवाहन ; (दे ३, ७)।

रवण्ण वि [चतुरपन्न] १ चार हुई है जिसको ऐसा। २ पुं. ब्रह्मा, विधाता ; (गउड)।

रासी) स्त्री [चतुरशीति] संख्या-विशेष, चौरासी,
रासीइ) ८४ ; (जी ४५ ; सण ; उवा ; पउम २०, १०३ ; सम ८०; कप्प)।

रासीइम वि [चतुरशीतितम] चौरासीवाँ, ८४ वाँ ; (पउम ८४, ११२ ; कप्प)।

रासीय सक्त [चतुरशीति] चौरासी ; "चउरासीइं जोणिपमुहसयसहस्से" (पउम ४, ३५)।

रिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] स्पर्श, जिह्वा, नाक और चक्षु इन चार इन्द्रिय वाला ; (जन्तु); (सम ७१, १ ; जी १८)।

रिमा स्त्री [चतुरिमन्] चतुरता, चतुर्य, निपुणता ; (उप ११)।

चउरिया) स्त्री [दे] तन्त्र-मंत्रण, विवाह-कन्या ; गुजराती
चउरी) में 'चेरी' ; (रंभा ; सुपा ५५३)।

चउरुत्तरसय वि [चतुरुत्तरशततम] एकसौ चौथाँ, १०४ वाँ ; (पउम १०४, ३५)।

चउसर वि [दे] चौसर, चार सर वाला (हारादि); (सुपा ५१० ; ५१३)।

चउहार पुं [चतुरोहार] चार प्रकार का आहार, अशन, पान, खादिम और स्वादिम ; "कंतारंमि न मुंचेमि चउहारपरिहारो" (सुपा ५७३)।

चओर पुंस्त्री [दे] पक्ष-विशेष ; "भुवणयलंमि य मोक्खपवेसाए अवरपुसु चंमोरु" (स २५२)।

चओर) पुंस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष ; (पउम १, १ ;
चओरा) सुपा ३७)।

चओवचइय वि [चयोपचयिक] वृद्धि-हानि वाला ; (उप २१८ टी ; आवा)।

चंकम अक [चङ्क्रम्] १ बार बार चलना। २ इधर उधर घूमना। ३ बहुत सोचना। ४ देखा चलना। ५ चलना-फिरना। वकृ—चंकमंत ; (उवा ३०टी ; उप ६८६टी)। हेक—चंकमित्तए ; (स ३६६)। कृ—चंकमियव्व ; (पि ५६६)।

चंकमण न [चङ्क्रमण] १ इधर उधर भ्रमण ; २ बहुत चलना ; ३ बारंबार चलना ; ४ देखा चलना ; ५ चलना, फिरना ; (उप १८६ ; णाया १, १)।

चंकमिय वि [चंकमित] १ जिसने चंक्रमण किया हो वह। २ क्रम देखो ; (उवा ७२८ टी ; निचू १)।

चंकमिर वि [चंकमितृ] चंक्रमण करने वाला ; (सूत्र)।

चंकम्म अक [चंक्रम्] देखो चंकम। वह—चंकम्मंत, चंकम्ममाण ; (ठा ४, ३ ; ६२३ ; उप ६ २३६ ; पउम २, ६ ; कप्प)।

चंकम्मण देखो चंकमण ; (णाया १, १—पत्र ३८)।

चंकम्मिय देखो चंकमिय ; (से ११, ६६)।

चंकार पुं [चकार] चकार, 'च' अक्षर ; (ठा १०)।

चंग वि [दे. चङ्ग] १ सुन्दर, मनोहर, रम्य ; (दे ३, १ ; उप पृ १२६ ; सुपा ३०६ ; कप्प ३६ ; पउम ६, ७ ; कप्प ; णाया ; सण ; भवि)।

चंगेरि पुं [दे] कटुकाष्ठी, काठ का बना हुआ छोटा पात्र-विशेष ; "पंडुरचंगेरि व" [illegible]

चंतिम [illegible]

चंगेरी स्त्री [दे] टोकरी, कञ्चरी, तृण आदि का बना पात्र-विशेष; (विपे ७१०; पण्ह १,१)।

चंच पुं [चञ्च] १ पङ्कप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास; (इक)। २ न. देव-विमान-विशेष; (इक)।

चंचपुड पुं [दे] आघात, अभिघात, "सुरकलणचंचुडेहिं मरणिमलं अभिहणमाणं" (जं २)।

चंचप्पर न [दे] असत्य, झूठ, मृषा; "चंचप्परं न भणिमो" (दे १, ४)।

चंचरीअ पुं [चञ्चरीक] भ्रमर, भमरा; (दे १,६)।

चंचल वि [चञ्चल] १ चपल, चञ्चल; (कप्प; चारु १)। २ पुं. रावण के एक सुभट का नाम, (पउम ५६, ३६)।

चंचला स्त्री [चञ्चला] १ चञ्चल स्त्री। २ छन्द-विशेष; (पिंग)।

चंचलिअ वि [चञ्चलित] चञ्चल किया हुआ, "मणया-चिअचंचे(? च)लिअकेसाए" (विक १६)।

चंचा स्त्री [चञ्चा] १ नरकट की चटाई। २ कमलेन्द की राजधानी, इसी नाम की विशेष; (दीव)।

चंचाल (मा) देखो चंचल; (सण)।

चंचु स्त्री [चञ्चु] चोंच, पक्षी का ठोंठ; (दे १,११)।

चंचुच्चिय न [दे. चञ्चुरित, चञ्चूचित] कुटिल गमन, टेढ़ी चाल; (सौर)।

चंचुइअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित, (कप्प; सौर)।

चंचुअ पुं [चञ्चुक] १ अनार्य देश-विशेष; २ उस देश का रहनेवाला मनुष्य, (पण्ह १,१)।

चंचुर [चञ्चुर] चपल, चंचल; (कप्प)।

चंचू [तन्त्र] छिलका। चंचा; (पउ)।

चंचूर [दिन्] पीसना। चंचा, (पउ)।

चंचूर; (इक)।

चंड [चण्ड] १ प्रचण्ड, उग्र, प्रखर, तीव्र, (कप्प)। २ अति क्रोधी, क्रोध-चण्डा; (उप ३६; सौर)। ३ अति तेजस्वी, न १; १०; पिंग; छाया १,१८)। ४ तेजस्वी, इ ३११)। ५ पुं. राक्षस वंश के एक राजा का ३,२६४)। ६ क्रोध, क्रोध, (उप १)। "किरण दूत, दूत; (उप इ ३११)। "कोसिय पुं [कौशिक] ऐसे मनुष्य, जिसने भगवान् महावीर को उपसर्ग चंड पुं [चण्ड] ईख-विशेष, (इक)।

"पज्जोअ पुं [°प्रद्योत] उज्जयिनी के एक राजा का नाम; (आवम)। °भाणु पुं [°भानु] सूर्य, सूरज, (पाअ ११)। °रुद्द पुं [°रुद्र] प्रकृति-क्रूर एक राजा (आव १७)। °वडिंसय पुं [°वतंसक] (महा)। °वाल पुं [°पाल] देव-विशेष (महा)। °सेण पुं [°सेन] एक राजा का नाम; (कप्प)। न [°लोक] क्रोध-वश कहा हुआ मृषा वचन (संति १०)।

चंडंसु पुं [चण्डांशु] सूर्य, सूरज, रवि; (कप्प)।

चंडमा पुं [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद; (पिंग)।

चंडा स्त्री [चण्डा] १ चमरादि इन्द्र की मध्यम परिषद् की देवी; (ठा ३,१; भग ४,१)। २ भगवान् वासुपूज्य की शासन-देवी; (संति १०)।

चंडातक न [चण्डातक] स्त्री का पहनने का वस्त्र, घाघरा, लहँगा, (दे १,११)।

चंडार पुंन [दे] भण्डार, भाण्डागार; (

चंडाल पुं [चण्डाल] १ वर्णसंकर जाति ब्राह्मणी से उत्पन्न; (आचा; सूय २, ४; उत्त १; मणु)।

चंडालिय वि [चण्डालिक] चण्डाल-संबन्धी, चण्डाल जाति में उत्पन्न; (उत्त १)।

चंडाली स्त्री [चण्डाली] १ चण्डाल-जातीय स्त्री; (पउम ७, १४१)।

चंडिम वि [दे] कृश, छिन्न, काटा हुआ; (दे १, (दे १, १; पट्; सम ७१)।

चंडिक्क पुंन [दे. चाण्डिक्य] रोष, गुस्सा, क्रोध, चंडिक्किअ वि [दे. चाण्डिक्यित] १ रोष-युक्त, रो कार वाला, भयंकर; (छाया १, १; पण्ह १, १; उवा)।

चंडिअ पुं [दे] क्रोध, क्रोध, गुस्सा, २ वि. निपुण, द्रमंत्र; (दे १, १०)।

चंडिम पुंस्त्री [चण्डिमन्] चण्डता, प्रचण्डता, (दे १,

चंडिया स्त्री [चण्डिका] देखो चंडी, (उ १

चंडिल वि [दे] पीन, पुष्ट; (दे १, १)।

चंडिल पुं [चण्डिल] हमाम, नापित, (दे १, १; काम; भा १६१ म)।

चंडी स्त्री [चण्डी] १ क्रोध-युक्त स्त्री; (गा ६०८)। २ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी; (पाम)। ३ वनस्पति-विशेष; (पन्न १)। °देयग वि [°देयक] चण्डी का भक्त; (सुम १, ७)।

चंद पुं [चन्द्र] १ चन्द्र, चन्द्रमा, चाँद; (ठा २, ३; प्राप्र १३; ११; पाम)। २ वृत्त-विशेष; (उत्त ३१८ टी)। ३ रामचन्द्र, दाशरथी राम; (से १, ३४)। ४ राम के एक सुभट का नाम; (पउम ६६, ३८)। ५ रावण का एक सुभट; (पउम ५६, २)। ६ राशि-विशेष; (भवि)। ७ आह्लादक वस्तु; ८ कपूर; ९ स्वर्ण, सोना; १० पानी, जल; (हे २, १६४)। ११ एक जैन आचार्य; (गच्छ ४)। १२ एक द्वीप का नाम, द्वीप-विशेष; (जीव ३)। १३ राधावेध की पुत्तली का वाम नयन, आँख का गोला; (संदि)। १४ न. देव-विमान-विशेष; (सम ८)। १५ रुचक पर्वत का एक शिखर; (दीव)। °अंत देखो °कंत; (विक १२६)। °उत्त देखो °गुत्त; (मुद्रा १६८)। °कंत पुं [°कान्त] १ मणि-विशेष; (स ३६०)। २ न. देव-विमान विशेष; (सम ८)। ३ वि. चन्द्र की तरह आह्लादक; (भवन)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ नगरी-विशेष; (उत्त ६७३)। २ एक कुलकर-पुरुष की पत्नी; (सम १५०)। °कूड न [°कूट] १ देव-विमान-विशेष; (सम ८)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ८)। °गुत्त पुं [°गुप्त] मौर्यवंश का एक स्वनाम-विख्यात राजा; (विसे ८६२)। °चार पुं [°चार] चन्द्र की गति; (चंद १०)। °चूड, °चूल पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा; (पउम ६, ४६; ६४)। °च्छाय पुं [°च्छाय] अंग देश का एक राजा, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी; (दसा १, ८)। °जसा स्त्री [°यशस्] एक कुलकर पुरुष की पत्नी; (सम १५०)। °ज्झय न [°ध्वज] देव-विमान-विशेष; (सम ८)। °णक्खा स्त्री [°नखा] रावण की बहिन का नाम; (पउम १०, १८)। °णह पुं [°नख] रावण का एक सुभट; (पउम ६६, ३१)। °णही देखो °णक्खा; (पउम ७, ६८)। °णागरी स्त्री [°नागरी] जैन मुनि-गण की एक शाखा; (कप्प)। °दंसिणिया स्त्री [°दर्शनिका] उत्सव-विशेष, बच्चे के पहली बार के चन्द्र-दर्शन के उपलक्ष में किया जाता उत्सव; (राज)। °दिण न [°दिन] प्रतिपदादि तिथि; (पंच ६)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष; (जीव ३)। °द्द न [°र्घ] आधा चन्द्र, अष्टमी तिथि का चन्द्र; (जीव ३)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] तप-विशेष; (ठा २, ३)। °पन्नत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ; (ठा २, १—पत्र १२६)। °पव्वय पुं [°पर्वत] वक्षस्कार पर्वत-विशेष; (ठा २, ३)। °पुर न [°पुर] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक विद्याधर-नगर; (इक)। °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष, भगवान् चन्द्रप्रभ की जन्म-भूमि; (पउम २०, ३४)। °प्पभ वि [°प्रभ] १ चन्द्र के तुल्य कान्ति वाला; २ पुं. आठवें जिन-देव का नाम; (धर्म २)। ३ चन्द्रकान्त, मणि-विशेष; (पण्ण १)। ४ एक जैन मुनि; (दंस)। ५ न. देव-विमान-विशेष; (सम ८)। ६ चन्द्र का विंहासन; (पाया २, १)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] १ चन्द्र की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १)। २ मदिरा-विशेष, एक जाति का दारू; (जीव३)। ३ इस नाम की एक राज-कन्या; (उत्त १०३१ टी)। ४ इस नाम की एक गिविका, जिसमें बैठ कर भगवान् शांतिनाथ और महावीर-स्वामी दीक्षा के लिए बाहर निकले थे; (भावन)। °पह देखो °प्पभ; (कप्प; सम ४३)। °भागा स्त्री [°भागा] एक नदी; (ठा ५, ३)। °मंडल पुंन [°मण्डल] १ चन्द्र का मण्डल, चन्द्र का विमान; (जं ७; भग) २ चन्द्र का बिम्ब; (पण्ह १, ४)। °मग्ग पुं [°मार्ग] १ चन्द्र का मण्डल-गति से परिभ्रमण; २ चन्द्र का मण्डल; (सुज्ज ११)। °मणि पुं [°मणि] चन्द्रकान्त, मणि-विशेष; (विक १२६)। °माला स्त्री [°माला] १ चन्द्राकार हार; २ छन्द-विशेष; (पिंग)। °मालिया स्त्री [°मालिका] वही पूर्वोक्त अर्थ; (भौर)। °मुही स्त्री [°मुखी] १ चन्द्र के समान आह्लादक मुख वाली स्त्री; २ सीता-पुत्र कुश की पत्नी; (पउम १०६, १२)। °रह पुं [°रथ] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, १६; ४४)। °रिसि पुं [°ऋषि] एक जैन ग्रन्थकार मुनि; (पंच ५)। °लेस न [°लेश्य] देव-विमान-विशेष; (सम ८)। °लेहा स्त्री [°लेखा] १ चन्द्र की रेखा, चन्द्र-कला। २ एक राज-पत्नी; (ती १०)। °वडिंसग न [°वतंसक] १ चन्द्र के विमान का नाम; (चंद १८)। २ देखो चंड-वडिंसग; (उत १३)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान; (सम ८)। °वयण वि [°वदन] १ चन्द्र के तुल्य आह्लादजनक मुँह वाला; २ पुं. राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति; (पउम ५, २६६)। °विक्कंत पुंन [°विक्रम] चन्द्र का

निरूप-क्षेत्र; (जी १०)। °विमाण न [°विमान] चंद का विमान, (जं ७)। °विलासि वि [°विलासिन्] चन्द के तुल्य मनोहर; (राय)। °वेग पु [°वेग] एक विद्याधर-जोग; (महा)। °संवच्छर पु [°संवत्सर] काल-विशेष, चन्द्र क्रमों से निरूपित संवत्सर, (ठा १०)। °साला स्त्री [°शाला] महालिका, कटारी, (दे ३, ६)। °सालिया स्त्री [°शालिका] महालिका; (पाया १,१)। °सिंग न [°शृङ्ग] देव-विमान विशेष, (सम ८)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देव विमान, (सम ८)। °सिरी स्त्री [°श्री] द्वितीय इक्ष्वाकु पुत्र की माँ का नाम; (आव १)। °सिहर पु [°शिखर] हिमवर पर्वत का एक राजा, (सम १, ८३)। °सूरपन्नत्ति, °सूरपन्नत्तिया स्त्री [°सूरप्रज्ञप्ति] चन्द्र का जन्म होने पर तीसरे दिन जन्मा हुआ चन्द्र और सूर्य का दर्शन, और उसके महोत्सव में किया जाता उत्सव, (भग ११,११, विपा १,२)। °सूरि पु [°सूरि] स्वनाम-विख्यात एक जैन आचार्य, (पउम)। °सेण पु [°सेन] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र १ एक विद्याधर राज कुमार, (महा)। °सेहर पु [°शेखर] १ एक विद्याधर राजा विशेष; (ती १८)। २ महादेव, शिव, (पि ११८)। °हास पु [°हास] वानर विशेष; (सम १४, ४१, पउम ७)।

चंद [वि] [चान्द्र] चन्द संबन्धी, (पंच १२)। कुन्द न [कुन्द] जैन पुराणों का एक वृक्ष; (पण्ण १)। चंदप्पभ देखो चंद-प्पभ, (हे १, १६४)।

चंदमंडल न [दे] चाँद, मंडल, (दे ३, ६)।

चंदप्पभ पु [चन्द्रप्रभ] विद्याधर वंश का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा, (पउम ६, ८१)।

चंदय [चन्दक] चन्द्र का चंद। चिन्ह, °चेंधिय न [°चैत्य] स्वनाम, °सरिसच्छ वि, चंद्रसदृश समानाकृतिवाला" (पंच १२१, निचू ११)।

चंदलेहा स्त्री [दे] १ चन्द्र, शिव, चन्द्रमा, २ चन्द्रमा, (दे १, ६)।

चंदलेहा [चन्द्रलेखा] १ चन्द्रमा के समान गोल तिलक, चन्द्र की (पउम ६)। २ चन्द्र के समान गोल तिलक, चन्द्र की (सम ११, ११ - दे ३,१८)। ३ तिलक हुआ (पउम ६)। ४ चन्द्र किरण, (पव)। ५ एक विद्याधर, (पउम ६)। °चंदा स्त्री [°चन्द्रा] एक विद्याधर, (पउम ६)। °चंदा स्त्री [°चन्द्रा] चन्द्र के समान गोल, (पंच १२)।

[घट] मंगल-कारक घड़ा, (जीव ३)। °बाला एक साध्वी स्त्री, भगवान् महावीर की प्रथम शि °वर पु [°पति] स्वनाम-ख्यात एक राजा, (उ चंदणग पुन [चन्दनक] १ ऊपर देखो। जन्तु-विशेष, जिसके कलेवर को जैन-साधु लोग में रखते हैं, (पण्ह १,१ ; जी १५)। चंदणा स्त्री [चन्दना] भगवान् महावीर की प्रथम चन्दनबाला; (सम ११२ ; कप्प)। चंदणी स्त्री [दे] चन्द्र की पत्नी, रोहिणी; "चं चंदणीजोगो" (महा)।

चंदम पु [चन्द्रमस्] चन्द्रमा; चाँद ; (भग)। चंदवडाया स्त्री [दे] जिसका आधा शरीर कुबड़ा और आ नंगा हो ऐसी स्त्री, (दे ३,७)।

चंदा स्त्री [चन्द्रा] चन्द द्वीप की राजधानी, (जंबू)। चंदाभव पु [चन्द्रातप] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चन्द्र की प्रभा, (प १, १७)। देखो चंदायव। चंदाणण पु [चन्द्रानन] ऐरवत क्षेत्र के प्रथम (सम १५३)।

चंदाणणा स्त्री [चन्द्राननना] १ चन्द्र के तुल्य उन्नत मुख वाली; २ शाश्वती जिन-प्रतिमा-विशेष, चंदाभ वि [चन्द्राभ] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद २ पु. आठवाँ जिनदेव, चन्द्रप्रभ स्वामी, (आव २) नाम का एक राज-कुमार ; (पउम ३, ६६)। ४ न. एक विमान, (सम १४)।

चंदायण न [चान्द्रायण] तप विशेष, (पंच १३) चंदायण न [चन्द्रायण] चन्द्र का ह्रास मास के दोनों और उसमें गिना जाना, (आ १२)। चंदायव देखो चंदाभव। २ आच्छादन विशेष, तंबू चँदवा, (पउ ३, ७२)।

चंदालुआ न [दे] शस्त्र का भाजन-विशेष, (पव १,१, चंदायत्त न [चन्द्रावर्त] एक देव-विमान, (सम ८) चंदावडिंसय देखो चंदग विडंसय, (ठा ८)। चंदिमा स्त्री [चन्द्रिका] चन्द्र की प्रभा, चाँदनी, (ठा ४, ३, सू ७०)।

चंदिय न [दे] कपित्थ, कैथा, चंदिय स्वार्थे क। चंदुत्तर त्रिक, तीन-तीन स्थानों का समूह, (ठा

चंदिम देखो चंदिमा; (प्रौप ; कप्प)। २ एक जैन मुनि; (कप्प)।

चंदिमा स्त्री [चन्द्रिका] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना; (हे १, १८४)।

चंदिमाइय न [चान्द्रिक] 'ज्ञातधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन; (णाह)।

चंदिल पुं [चन्द्रिल] चन्द्र, हरताल; (गा २६३; हे ३,३)।

चंदुत्तरवडिंसग न [चन्द्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान; (सम ८६)।

चंदेरी स्त्री [दे] नगरी-विशेष; (ती ४१)।

चंदोज्ज न [दे] कुंकुम, चन्द्र-विकासी कमल; चंदोज्जय] (दे ३, ४)।

चंदोत्तरण न [चन्द्रोत्तरण] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान; (विपा १, ४—पत्र ६०)।

चंदोयए पुं [चन्द्रोदय] एक गंधर्व-कुमार; (धर्म)।

चंदोवग न [चन्द्रोपक] संस्तारी का एक उपकरण; (ठा ४, ३)।

चंदोवरोग पुं [चन्द्रोपराग] चन्द्र-ग्रहण, चन्द्रमा का ग्रहण, चंद्र-ग्रास; (ठा १०; भग ३, ६)।

चंद्र देखो चंद ; (हे १, ८०; कुमा)।

चंप सक [दृंप्] फूलना, दाखी, इकट्ठा करना। चंपइ; (भग २१)। कर्म—चंपिज्जइ; (हे ४, २६१)।

चंप सक [चर्प्] चर्चा करना। चंपइ ; (प्राप्र)। संकृ—चंपिऊण ; (कप्पा ६४)।

चंपग देखो चंपय ; "अणुद्धरे पडिए, चंपेल्लाडा न चंदए वंके" (प्राप्र ३)।

चंपडग न [दे] प्रहार, थप्पड़ ; "सणसुक्कदंतविगडमुंडिम-गंडविसुद्धिचडुक्कडचंपडगचणुम्मुक्का ..... धूलीलोलंती" (सिरि ८४)।

चंपण न [दे] चौरा, इकट्ठा ; (उत्त १३१ टी)।

चंपय पुं [चम्पक] १ वृक्ष-विशेष, चम्पा का पेड़; (ठा ५१५ ; भवि)। २ देव-विशेष; (जीव ३)। ३ चम्पा का फूल ; (कुमा)। °माला स्त्री [माला] १ छन्द-विशेष; (पिंग)। २ चम्पा के फूलों का हार ; (भवि ३)। °लया स्त्री [लता] १ लताकार चम्पक वृक्ष ; २ चम्पक वृक्ष की शाखा ; (उत्त १ ; औप)। °वण न [वन] चम्पक वृक्षों का प्रधान बगीचा वन ; (णाया १)।

चंपा स्त्री [चम्पा] अंग देश की राजधानी, तत्तत्-विभाग में आवेली 'भागलपुर' कहते हैं ; (विपा १, १ ; कप्प)।

°पुरी स्त्री [°पुरी] इसी अर्थ ; (उत्त न, १८६)।

चंपा स्त्री देखो चंपय। °कुसुम न [°कुसुम] चम्पा का फूल ; (णाया)। °वण्ण वि [°वर्ण] चम्पा के फूल के तुल्य रंग वाला, पीले रंग का। स्त्री—°वण्णी (प्रभा) ; (हे ४, ३३०)।

चंपारण (अप) पुं [चम्पारण्य] १ देश-विशेष, चंपारन, मोतीहारी का प्रदेश ; २ चंपारन का निवासी ; (सिरि)।

चंपिय वि [दे] चौरा हुआ, इकट्ठा हुआ, सटा हुआ ; (सुर १३१ ; १३८)।

चंपिज्जिया स्त्री [चम्पेयीया] जैन मुनि गण की एक शाखा; (कप्प)।

चंभ पुं [दे] हल से विदारित भूमि-रेखा ; (दे ३, १)।

चंकंपा स्त्री [दे] लता, लंबा, चमड़ी ; (दे ३,३)।

चंकिद देखो चाइद ; (कुमा)।

चंकोर पुंस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष, चंकोर पक्षी ; (सुर ४६०)। °री ; (स्वप्न ४८)।

चक्क पुं [चक्र] १ पक्षि-विशेष, चक्रवाक पक्षी ; (पाम ; कुमा ; सण)। "सो इमिणा दुक्खेणं, चक्को इव दिट्ठिउग्गयरवंसो" (उप ७२८ टी) ; "दूरेण माई को पुत्तिआ ; (पत्र १,१) । २ समूह ; (उत्त १६०; कुमा) । ४ अस्त्र-विशेष ; (पउम ७२, ३१ ; हुंडी)। ५ चक्राकार आभूषण; मस्तक का आभरण-विशेष ; (औप,)। ६ व्यूह-विशेष, सैन्य की चक्राकार रचना-विशेष; (राय १, १३; औप)। °कित्ति पुं [°कीर्ति] देव-विशेष, स्वर्गभूमना क्षुद्र का अधिष्ठाता देव (देव)। °जोहि पुं [°योधिन्] १ चक्र से शत्रुनें योद्धा ; (ठा ६)। २ वर्तमान तीर्थ का छठवाँ पूर्वी का राजा ; (सम १)। °ज्झय पुं [°ध्वज] चक्र के निशान वाली ध्वजा ; (उत्त १)। °पहु पुं [°प्रभु] चक्रवर्ती राजा ; (सण)। °पाणि पुं [°पाणि] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्। २ वासुदेव, अर्ध-चक्रवर्ती राजा ; (स्वप्न ७३, ३)। °पुर, °पुरी स्त्री [°पुरी] विंध्य वर्ष की एक नगरी ; (ठा २, ३; इक)। °पहु देखो °पहु ; (भग)। °वर पुं [°वर] सिद्धचक्र, मोक्षमार्ग ; (उत्त ६,१०)। °वाय न [°वात] अन्न-विशेष, चक्रवर्ती राजा का मुख्य भोजन ; (पाअ १,४)। °वइ पुं [°पति] सम्राट् ; (सिरि)। °वट्टि पुं [°वर्तिन्] ८ लाख भूमि का अधिपति, राजा, सम्राट् ; (सिरि ; कुमा ; उत्त ३१ ; पि ; प्राप्र १०४)। °वट्टित्त न [°वर्तित्व] सम्राट्पन, सार्वभौमत्व ; (सुर ४, ८१)।

°यट्टि देखो °यट्ठि, (पि १८६)। °विजय पुं [°विजय] चक्रवर्ती राजा से जीतने योग्य क्षेत्र-विशेष, (ठा ८)। °साला स्त्री [°शाला] वह मकान, जहाँ तिल पीसा जाता हो, तेलिक-दा, (श्रा १०)। °सुद पुं [°सुत, °सुत] भौम पुं [°भौम] स्वनाम-ख्यात एक राजा; (दंस)। °हर पुं [°धर] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्, (पम १२६, राय १, ८१; ४, १६, कप्प)। २ कपड़ेरा, मर्ध-चक्री राजा। (राज)।

चक्कभाव देखो चक्कवाय; (पि ८१)।

चक्कयंग पुं [चक्राङ्ग] चक्र-विशेष; (सुपा १४)।

चक्कयमण न [दे] नदी का फेन; (दे ३, ७)।

चक्कवाइय न [दे] ऊर्मि, तरङ्ग, कल्लोल; (दे ३, ८)।

चक्कम } अक [भ्रम्] घूमना, भटकना, भ्रमण करना।
चक्कमइ } चक्कमइ; (दे ३, ८)। चक्कम्मइ; (दे ४, १६)। देखो—चंकम, (स १७०)।

चक्कमिय वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ; (कुमा)।

चक्कर देखो चक्कल; (कप्प १)।

चक्कल न [दे] कृपाण, खड्ग का अभ्यन्तर भाग; २ दोनों ओष्ठ, होठ का कोना, (दे ३, १०)। ३ वि. चतुर, कुशल, (दे ३, १०। भवि; कप्पा ४; कप्प, पाअ)। ४ विकल, विच्छिन्न, (दे ३, १०, भवि)। ५ १८८, पाअ)। °चित्तिय वि [°चित्रित] गलाकार अंक, काटा हुआ, (सुर १)।

चक्कलई स्त्री [चक्रवाकी] चकवा-पक्षी की मादा; (दस)।

चक्कलग } पुं [चक्रक] चक्र-विशेष, (कप्पा १,
चक्कलय } १, पव १, १, स ३१०; कप्पू; कप्प ६१)।

चक्कलाड न [चक्रवाल] १ चक्रवाल नाम का विशेष नगर, °चक्कलाडपुर" (सुपा १८८)। २ मंडल, चक्राकार पदार्थ, (कप्प ३६, औप, पाअ १, ३६)। ३ चक्रवाल, °चक्कलाडसंठाण" (कप्प ३६), ४ मंडल, चक्राकार वृत्ति; "चक्कलाडसंठाणं पर्व खण्डप्रपातगुहा। विजयक्षेत्र वर्तिनः" (कप्प ८६)। ५ अन्य पर्वत, (राज ४)। ६ कूट, शृङ्ग, आदि,

(आउ)। ७ पुं. पर्वत विशेष; (ठा १० [°विष्कम्भ] चक्राकार घेरा, गोल परिधि ३)। °सामायारी स्त्री [°सामाचारी] (पंचव ४)।

चक्कवाला स्त्री [चक्रवाला] गोल श्रेणी; (ठा ७)।

चक्कवाय न [चक्राक] चक्राकार वस्तु; "चक्कवायसमो मंगो य दीहए" (पण्ण १; पि १(

चक्कवार पुं [चक्रवार] राक्षस वंश का एक राजा, पति; (पउम ६, २६३)। °वडंसय न [°वतंसक] गाड़ी; (दस ६, १)।

चक्कवाड पुं [चक्राभ] सोलहवें जिन-देव का प्रथम शि (सम १६२)।

चक्कवाहिव पुं [चक्राधिप] चक्रवर्ती राजा, सम्राट्; (भ

चक्कवाहियइ पुं [चक्राधिपति] ऊपर देखो; (भ

चक्किअ } वि [चक्रिन्, चक्रिक] १ चक्र धारण क
चक्किय } किए। २ चक्रवर्ती राजा, सम्राट्,

तेली; ४ कुम्हार; (कप्प; औप; आया १,१

°सा स्त्री [°शाला] तेल पेरने की दुकान, (श्रा

चक्किय वि [चकित] सभीत, "समुग्गमीणमा
अपक्खिया केणइ दुप्पएसिया" (उत्त ११)।

चक्किय पुं [चाक्रिक] १ चक्र से लड़ने वाला यो
मनुष्य की एक जाति। (ओप, आया १, १)।

चक्किया वि [शक्नुयात्] सके, कर सके, समर्थ हो
(कप्प; उत्त; पि ४८६)।

चक्की स्त्री [चक्री] छन्द-विशेष, (पिंग)।

चक्कुद्दोहा स्त्री [दे] नदी की एक जाति, (दे १,१)

चक्केसर पुं [चक्रेश्वर] १ चक्रवर्ती राजा, (ठा
१ जिन की तेरहवीं उपासिका का एक जैन श्रावक पुं
(राज)।

चक्केसरी स्त्री [चक्रेश्वरी] १ नवदुर्गा
शस्त्र-देवी; (पंचि ६)। २ एक विद्या-देवी, (

चक्कोडा स्त्री [दे] अग्नि-मंथ, अग्नि-विशेष, (

चक्ख सक [आ+स्वादय्] चखना, चीखना, स्वा
चक्खइ; (पि ३०१)। °वा—अवचक्ख, (भ

चक्खिरूव ; (से १३, ३६)। देर—चक्खिअं ; (काल ४६)।
चक्खिंदिय न [दे] लोचन, आँख ; (दे ३, ६)।
चक्खण न [आस्वादन] आस्वादन, चीखना . (उप पृ ३६३)।
चक्खिय वि [आस्वादित] आस्वादित, चीखा हुआ . (दे ४, २५८ ; गा ६०३ ; वज्जा ४६)।
चक्खिंदिय न [चक्षुरिन्द्रिय] नयनेन्द्रिय, आँख, चक्षु ; (उप २६८, ६३)।
चक्खु पुंन [चक्षुष्] १ आँख, नेत्र, चक्षु , (दे १, ३३ , सुर ३, १४३ ; स्वप्न १)। २ पुं इस नाम का एक कुलकर पुरुष; (पउम ३, ६३)। ३ न. देखो नीचे 'दंसण', (कम्म ३, १७ ; ४, ६)। ४ ज्ञान, बोध ; (ठा ३, ४)। ५ दर्शन, अवलोकन ; (भग)। कंत पुं [कान्त] देव-विशेष, कुबेरतट समुद्र का अधिष्ठाता देव ; (जीव ३)। कंता स्त्री [कान्ता] एक कुलकर पुरुष की पत्नी ; (स्वप्न १४०)। दंसण न [दर्शन] वस्तु से वस्तु का सामान्य ज्ञान ; (स्वप्न १६)। दंसणवडिया स्त्री [दर्शनप्रतिज्ञा] आँख से देखने का नियम, नयनेन्द्रिय का संयम , (निचू ६ ; आव ३, २)। दय वि [दय] ज्ञान-दाता ; (सम १ ; पडि)। पडिलेहा स्त्री [प्रतिलेखा] आँख से देखना ; (निचू १)। परिन्नाण न [परिज्ञान] रूप-विषयक ज्ञान, आँख से होने वाला ज्ञान; (आव)। पह पुं [पथ] नेत्र-मार्ग, नयन-गोचर; (पाह १, ३)। फास पुं [स्पर्श] दर्शन, अवलोकन ; (औप)। भीय वि [भीत] अवलोकन मात्र से ही डरा हुआ , (आव)। म, मंत वि [मत्] १ लोचन-युक्त, आँख वाला ; (विसे)। २ पुं एक कुलकर पुरुष का नाम ; (सम १५०)। लोल वि [लोल] देखने का शौकीन, जिसकी नयनेन्द्रिय संयत न हो वह ; (कस)। लोलुय वि [लोलुप] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (कस)। लोयणपहेस्स वि [लोकनपथ्य] सुन्दर, सुन्दर रूप वाला; (राय; जीव ३)। विसिहय वि [वृत्तिहत] दृष्टि से अवलोकित ; (वव ८)। सस्सव पुं [श्रवस्] सर्प, साँप ; (सुर ३, ११४)।
चक्खुदुह न [दे] अंधापन, कानापा ; (दे ३, ४)।
चक्खुय देखो चक्खुस् ; (भगवती)।
चक्खुरक्खणी स्त्री [दे] तलवा, शरम ; (दे ३, ७)।

चक्खुस् वि [चाक्षुष] आँख से देखने योग्य वस्तु, नयनग्राह्य ; (पउम १, १; विसे ३३११)।
चगोर देखो चकोर ; (प्राकृ)।
चच्च पुं [चर्चा] समालम्भन, चन्दन वगैरः का शरीर में उपलेप ; (दे ६, ७६)।
चच्चर न [चत्वर] चौहटा, चौराहा, चौक ; (गाया १, १ ; पउम १, ३ ; सुर १, ६२; हे २, १२; कुमा)।
चच्चरिय पुं [दे, चच्चरीक] भ्रमर, भवरा ; (षड्)।
चच्चरिया स्त्री [चर्चरिका] १ तृत्य-विशेष ; (रंभा)। २ देखो चच्चरी ; (स ३०७)।
चच्चरी स्त्री [चर्चरी] १ गीत-विशेष, एक प्रकार का गान; "चित्तरहिचच्चरीनंदणवुत्तिउद्धरणमूलाणे" (सुर ३, ५४); "चारुचिचच्चरीलिया" (सुर ५६)। २ गाने वाली टोली, गाने वालों का वृंद ; "पवत्ते मयणमहूसवे किन्नरीसु विचित्तवेसासु नयरचच्चरीसु" , "कइ नीयचच्चरी अम्हाण चच्चरीए समाणत्तं पच्चियइ" (स ४२)। ३ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ४ हाथ की तालों का आवाज; (आव १)।
चच्चस्सा स्त्री [दे] वाद्य-विशेष; "मुरयं चच्चस्सागुं, मुरयं चच्चयावायणगयं" (राय)।
चच्चा स्त्री [दे]:१ शरीर पर सुगन्धि पदार्थ का लगाना, विलेपन ; (दे ३, १६ ; पाम ; जं १ ; गाया १, १ ; राय)। २ नख-प्रहार, हाथ की तालों ; (दे ३,१६; षड्)।
चच्चार सक [उपास्लभ्] उपालम्भ देना, उलहना देना। चच्चारइ ; (षड्)।
चच्चिक्क वि [दे] १ मलिन, विभूषित; "चंदुज्जलचच्चिक्का तिलउ" (दे ३,४)। "तदुपहाउउचच्चिक्को" (पउम ८८१) ; "साहू गुणगणचच्चिक्का" (चउ ३६)। २ लिप्त, विलेपन, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का शरीर पर मलदना; (दे ३,७४) ; "चच्चिक्को" (षड्); "कुंकुमचच्चिक्कदुरिंगणो" (पउम २८,३८); "चिच्च सुवन्नछवसं सुरवंदणयंकचच्चिक्कं" (उप ७६८ टी); " चन्दणेदिरंकचच्चिक्को" (वज्जा ११०)।
चच्चुप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, देना। चच्चुप्पर ; (दे ४,३६)।
चच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना। चच्छइ; (हे ४,१६४)।
चच्छिअ वि [तष्ट] छिला हुआ ; (कुमा)।
चच्चस सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। चच्चइ ; (दे ३, ४ ; षड्)।
चच्चा स्त्री [चर्या] १ आचरण, वर्तन; २ चलन, गमन।

२ परिमाण, संख्या, (विसे २०४४)।
चउविय वि [द्वृत] अवलोकित, देखा हुआ; (महा)।
चउम देखो चउम। (गा१६२)।
चउ सक [दे] काटना, आखेट करना। "न य अलोयिय छिलं चउए" (महा)।
चउ पुं [दे] १ भूख, बुभुक्षा, "जीवंति उवहिदिट्ठिमा, चउ-छिन्ना य जंति" (गुरु ७०)। २ पु. चटक, विद्यार्थी।
चउआला स्त्री [चतुशाला] चटशाला, छोटे बालकों की पाठ-शाला; (दु १)।
चउइ वि. [चतुर्दिन्] चारने वाला, (कप्पू)।
चउड } पु [दे] दाल इत्यादि, दाल की कलछी, परोसने का
चउडुअ } पात्र विशेष, (दे १,१; गा१६१म)।
चउड सक [मा+चद्] चमकना, शोभा देना, आभूषित होना। चउ. (हे ४,१०६)। संकृ—चउडिउं,चउडिऊण, (सुपा ११२, कुमा)।
चउड पु [दे] किला, चारदीवारी, (दे १,१)।
चउडअ पुं [दे] १ चाबुक, कोड़ा, (दे ४,१०६, भवि)। २ दण्ड विशेष, (पउम ७,१६)।
चउडकारि वि [चटत्कारिन्] 'चटु' शब्द करने वाला (अग्नि आदि), (भग)।
चउडा देखो चउड (कप्पू १)।
चउडाल पुं [दे] १ चाण्डाल, नीच, अन्त्य, (पउम ८०, १६, ८८ १, १ चउ ६१)। २ अहीर, आभीर, 'मदया चउडालसंघेण अन्नया एत्थ' (सुर १)।
चउडाल पुं [चटाल] चार-चार मकान, (पिंड १, ६)।
चउडाल्लय सक [चटाल्लयत्] चार-चार मकान बनाना, (पिंड १, ६)।
चउड पुं [चटट] चर्म विशेष, चिकनी के सिलने का कवच, (सुर १, ११०)।
चउय न [चातुर्दत्य] चक्र, क्रम देखना, (ठा १०, ७१८ टी, आव १०, पिंड १४१, वव ४०)।
चउर पुं [चटक] पक्षि विशेष, गौरैया चिड़ी, (दे १, १०७)। देखो—चोड, (दे ८, १६)।
चउरोड देखो चउड, (सुर १, १—वज्जा ६१)।
चउरोडय न [चातुरोदन] व्यञ्जन, (उप १४१)।

चउविय वि [आरोहित] चढ़ाया हुआ, "रणणंभउज्जिएहिं चउविया कण्णमसा १०६-१, सुर १२, ३६; महा)।
चउविय वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ; "चउविय सादरं तमा सोत्ति" (सुपा ३५६)।
चउिम वि [आरूढ] चढ़ा हुआ, आरूढ; १६१, १६६; हे ४, ४४६)।
चउिमार पुं [दे] आटोप, आडम्बर; (दे १
चडु पुं [चटु] १ प्रिय वचन, प्रिय वाक्य; २ आसन; ३ उदर, पेट, ४ पुत्र, प्रिय संभाषण, (हे १, १७, प्राप्र)। °भार वि [°कार करने वाला, खुशामदी, (पाद १, ३)। [°कारक] खुशामदी; (गा ६०६)।
चडुल वि [चटुल] १ चंचल, चपल; (हे पउम ४१, १६)। २ कंप वाला, हिलता हुआ; ६२)।
चडुला स्त्री [दे] रत्न-किंकिण, सोने की मेखला में हुआ रत्न-निर्मित किंकिण; (दे २, ८)।
चडुलातिलय न [दे] ऊपर देखो, (दे २, ८)।
चडुलिया स्त्री [दे] अल्प भाग में जला हुआ धान्य, पाव की भुंजिया, (धर्वि)।
चडु सक [मुद्] मर्दन करना, मसलना। चडइ, (हे ११६)। प्रयो—चडावइ, (सुपा ३३१)।
चडु सक [शिर्] चीरना। चडइ, (हे ४, १८६, ११०)।
चडु सक [मुज्] भोजन करना, खाना। (हे ४, ११०)।
चडु न [दे] नेत्र-पात्र, जिसमें दीपक दिया जाता है रात्री में 'चाडु', (सुपा ३३८, ४६ १)।
चडुग न [भोजन] १ भोजन, खाना। २ खाने की वस्तु-समूह, (कुमा)।
चडुगवत्ती स्त्री [चडुकवर्त्ती] इस नाम की एक म का श्रीनेमिनाथ मुनि ने विरम की चडुगवत्ती नगरी में प्रारंभ चौथम नामक प्रकरण कथ्य रचा था, (सुर १६, १६१)
चडुदिय वि [मृदित] मसला हुआ, विशेष मर्दन किया हुआ, (कुमा)।
चडुदिय वि [शिष्ट] चीरा हुआ, (कुमा)।
चडुय } पु [चटक] चक्र, क्रम विशेष, (ठा १, कुल
चडुयर } ४४०, दे १, ३१)।

चणइया स्त्री [चणकिका] मदर, अन्न-विशेष; (उप ६,३)।
चणग देखो चणअ : (सुपा ६३१ ; सुर ३, १४८)।
°गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष, गौड़ देश का एक ग्राम ; (राज)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, राजपुत्र-नगर का असली नाम ; (राज)।
चत्त पुंन [दे] नई, तकुआ, सूत बनाने का यन्त्र ; (दे ३, १ ; धर्म २)।
चत्त वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ, परित्यक्त ; (पउ २, १ ; कुमा १, १६)।
चत्तर देखो चत्वर ; (वि २६६ ; गाट)।
चत्ता देखो चत्तालीसा ; (हवा)।
चत्ताल वि [चत्वारिंश] चालीसवाँ ; (पउम ४०, १७)।
चत्तालीस न [चत्वारिंशत्] १ चालीस, ४० ; "चत्तालीसं विणयावासमुग्गा पण्णत्ता" (सम ६६ ; कप्प)। २ चालीस वर्ष की उम्र वाला; "चत्तालीसस्स दिन्नायं" (नंदु)।
चत्तालीसा स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस, ४० ; "तीसा चत्तालीसा" (पउम २)।
चत्थरि पुंस्त्री [दे. चस्तरि] हाथ, हाथ्य; (दे ३, २)।
चत्थेटा स्त्री [दे. चपेटा] कशाघात, चपत, तमाचा; (षड्)।
चप्प सक [आ+क्रम्] आक्रमण करना, दबाना। संक्र—चप्पिवि ; (भवि)।
चप्पडग न [दे] कटु-वस्त्र-विशेष; (पव १,३—वृत्त ६३)।
चप्पलय वि [दे] १ अक्षम, असमर्थ ; (कुमा ८, ७८)। २ अनिष्पादी, बहुत झूठ बोलने वाला ; (षड्)।
चप्पिय वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ; (भवि)।
चप्पुडिया } स्त्री [चप्पुटिका] चपटी, अंगुठे के साथ
चप्पुडी } अंगुली की तर्जनी ; (पाया १, ३—पत्र ६१ ; दे ८, ४३)।
चप्फल } न [दे] १ मेखला-विशेष, एक तरह का शिरो-
चप्फलय } भूषण; २ वि. अक्षम, असमर्थ, निष्प्रयोजनी; (दे ३, २० ; हे ३, ३८ ; कुमा ८, २६)।
चमक्क पुं [चमत्कार] विस्मय, आश्चर्य ; "संदेसियदंसचमक्कं" (पाअ ६ टी; उप ७६८ टी)। °कर वि [°कर] विस्मय-जनक ; (सण)।
चमक्क } सक [चमत्+कृ] विस्मित करना, आश्चर्य-
चमक्कर } न्वित करना। चमक्केइ, चमक्करेइ ; (विसे ४१ ; ४८)। वकृ—चमक्करेंत ; (विसे ६६)।
चमक्कार पुं [चमत्कार] आश्चर्य, विस्मय ; (सुर १०, ८ ; वज्जा २४)।
चमक्किअ वि [चमत्कृत] विस्मित, आश्चर्यान्वित ; (सुपा १२२)।
चमढ } सक [भुज्] भोजन करना, खाना। चमढइ ;
चमढ } (षड्)। चमढ ; (हे ४, ११०)।
चमढ सक [दे] १ मर्दन करना, मसलना। २ प्रहार करना। ३ कदर्थन करना, पीड़ना। ४ निन्दा करना। ५ आक्रमण करना। ६ दलित करना, छिन्न करना। कवकृ—चमढिज्जंत ; (भोघ १२८ भा ; हुई १)।
चमढण न [भोजन] भोजन, खाना ; (कुमा)।
चमढण न [दे] १ मर्दन, अवमर्दन ; (भोघ १८७ भा ; स ३२)। २ आक्रमण ; (स ५७६)। ३ कदर्थन, पीड़न ; ४ प्रहार ; (भोघ १८३)। ५ निन्दा, गर्हण ; (भोघ ७६)। ६ वि. जिसकी कदर्थना की जाय वह ; (भोघ २३७)।
चमढणा स्त्री [दे] ऊपर देखो ; (हुई १)।
चमढिय वि [दे] मर्दित, विनाशित ; (पव २)।
चमर पुं [चमर] पशु-विशेष, जिसके बालों का चामर बनता है; "चमरुक्खेवविहिं रएसे" (पउम ८४, १०६ ; पउम १, १)। २ पुं पाँचवें जिनदेव का प्रथम शिष्य; (सम १६२)। ३ दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का इन्द्र ; (ठा २, ३)। °चंच पुं [°चञ्च] चमरेन्द्र का आवास-पर्वत ; (भग १३, ६)। °चंचा स्त्री [°चञ्चा] चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-पुरी विशेष ; (ठाया २)। °पुर न [°पुर] विद्याधरों का नगर-विशेष ; (इक)।
चमर पुंन [चामर] चँवर, चमर, बाल-व्यजन ; (हे १, ६०)। °धारी, °हारी स्त्री [°धारिणी] चमर डोलने वाली स्त्री ; (सुपा ३३६ ; सुर १०, १६७)।
चमरी स्त्री [चमरी] चमर-मृग की मादा ; (हे ७, ४८ ; स ४४१ ; औप ; महा)।
चमस पुंन [चमस] चमचा, कटछी, दर्वी ; (औप)।
चमुक्कार पुं [चमत्कार] १ आश्चर्य, विस्मय ; "देवाणमणुत्तरविमाणवासीणमवि चमुक्कारं" (सुर ११, ६७)। २ बिजली का प्रकाश ; "तव य सिरिचमुक्कारसरिसं पंचमुहत्तणं" (सुर १, ११०)।
चमू स्त्री [चमू] १ सेना, सैन्य, लश्कर ; (प्रभा)। २ सेना-विशेष, जिसमें ८१८ हाथी, ८१८ रथ, २१८०

चय सक [शक्] सहना, समर्थ होना। चत्त; (
८६)। कृ—चयंत. (सूम १, ३, ३; से ६,
चय अक [च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में ज
चयइ, (भवि)। चयंति, (भग)। कृ—चयमान
(कप्प)।
चय पु [चय] १ शरीर, देह, (विसा १, १; उत्त)।
२ समूह, राशि, ढेर; (विसे ३२१६; सुपा ६७१; कुम
३ इकट्ठा होना; (अनु)। ४ वृद्धि, (आचा)।
चय पुं [च्यव] च्यवन, जन्मान्तर-गमन, (ठा ८, सम
चयण न [चयन] १ इकट्ठा करना, (पव २)। २ सह
उपादान; (ठा ३, ४)।
चयण न [त्यजन] त्याग, परित्याग, (सुपा ३
चयण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-गमन; (
पव १६)। २ पतन, गिर जाना। °कप्प पु [°क
पतन-प्रकार, चारित्र वगैरे से गिरने का प्रकार, २ ह
साधुओं का विहार, (गच्छ १, पंचभा)।
चर सक [चर्] १ गमन करना, चलना, जाना। २ सं
करना। ३ सेवना। ४ जानना। चरइ, (उव,
भूका—चरिंसु, (गउड)। भवि—चरिस्स, (पि १
कृ—चरंत, चरमाण, (उत्त २, भग, विपा १,
संकृ—चरिअ, चरिऊण, (नाट—मृच्छ १०, मृक
हेकृ—चरिउं, चरए, (श्रोघ ६५, कप्प)। कृ—चरि
(भग ६, ३३)। प्रयो, कृ—चारियव्व, (
पव ४६७)।
चर पु [चर] १ गमन, गति; २ वर्तन, (दस,
२ दूत, जासूस, (पाम, भवि)।
°चर वि [°चर] चलने वाला, (आचा)।
चरंती स्त्री [चरन्ती] जिस दिशा में भ
ज्ञानी पुरुष विचरते हों वह, (वव १)।
चरग पु [चरक] १ देखो चर=चर। २
मुंड विशेष, पुरुषवेष घूमने वाले भिक्षुओं
(भग; गच्छ २)। ३ भिक्षुओं की एक ज
२०)। ४ दश-मशकादि जन्तु, (राज)।
चरचरा स्त्री [चरचरा] 'चर चर' आवाज, (
चरड पु [चरट] लुटेरों की एक जाति, (धम्म
सुपा ३३२, ३३३)।
चरण न [चरण] १ संयम, चारित्र, व्रत, नियम,
१; प्रव २, विसे १)। २ चरना, पशुओं का

°कोसेय पु [°कोश, °क] १ चमड़े का बना हुआ थैला;
चमड़े से सीया हुआ; (भग ११, ६)। °कोस,
२१, स्वप्न ७०, प्रासू १७१)। °किट्ट वि [°किट्ट]
°कोसेय पु [°कोश, °क] १ चमड़े का बना हुआ थैला;
२ एक तरह का चमड़े का जूता, (ओघ ७१८, आचा
२, २, ३; पव ८)। °कोसिया स्त्री [°कोशिका]
चमड़े की बनी हुई थैली; (सूम २, २)। °खंडिय
वि [°खण्डिक] १ चमड़े का परिधान वाला; २ सत्र
उपकरण चमड़े का ही रखने वाला; (णाया १, १६)।
°ग वि [°क] चमड़े का बना हुआ, चर्ममय, (सूम २,
२)। °चक्खि पु [°पक्षिन्] चमड़े की पाँख वाला
पक्षी; (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °पट्ट पुं [°पट्ट]
चमड़े का पट्टा, वर्ग; (विपा १, ६)। °पाय न
[°पात्र] चमड़े का पात्र; (आचा २, ६, १)। °यर
पु [°कर] मोची, चमार; (स २८६; दे २, ३७)।
°रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती का रत्न-विशेष, जिसके सुबह में
बोये हुए शालि वगैरः उसी दिन पक कर खाने योग्य हो जाते
हैं, (पव २१२)। °वच्छ पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष,
भग ८, ३)।
ट्ठि स्त्री [चर्मयष्टि] चर्म-मय यष्टि, चर्म-दण्ड;
कप्प)।
ट्ठिअ अक [चर्मयष्टीय्] चर्म-यष्टि की तरह आचरण
। कृ—चम्मट्ठिअंत; (कप्प)।
ल पु [चर्मास्थिल] पक्षि-विशेष, (पह १, १)।
पु [चर्मकार] चमार, मोची, (विसे २६८८)।
पु [चर्मकारक] ऊपर देखो; (प्राप)।
ं [चर्मित] चर्म से बाँधा हुआ, चर्म-वेष्टित,
।
[चर्मेष्ट] प्रहरण-विशेष, चमड़े से वेष्टित
आयुध, (पह १, १)।
ज्ज] छोड़ना, त्याग करना। चयइ, (पाम,
कर्म—चइज्जइ, (उव)। कृ—चयंत;
संकृ—चइअ, चइउं, चिच्चा, चइऊण,
ण, चइत्तु; (कुमा; उत्त १८, महा,
कृ—चइयव्व, (सुपा ११६, ४०६,

मङ्गए ; (सुर २, ३)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा; (विंग)। ४ गमन, विहार; (गंदि ; सुम १, १०, २)। ५ देवता, अमर ; (जंबू २)। ६ पद, पैर ; (३,७)। 'करण न [करण] संयम का मूल और उत्तर गुण ; सुम १,१ सम १६४)। 'करणाणुओग पुं [करणानुयोग] संयम के मूल और उत्तर गुणों की व्याख्या ; (निचू १६)। 'कुसील पुं [कुशील] चारित्र को मलिन करने वाला साधु, निर्विवेकी साधु ; (पव २)। 'पाय [नय] क्रिया को मुख्य मानने वाला मत ; (आचा)। 'मोह पुंन [मोह] चरित्र का अवारक कर्म-विशेष ; (कम्म १)।

चरम वि [चरम] १ अन्तिम, अन्त का, पर्यन्तवर्ती ; (ठा २, ४ ; सम ८,३ ; कम्म ३, १७ ; ८, १६ ; १७)। २ अन्तर भव में मुक्ति पाने वाला ; ३ जिसका विनाश अब अन्तिम हो वह ; (ठा २, २)। 'काल पुं [काल] अन्तिम समय ; (पंच ४)। 'जलहि पुं [जलधि] अन्तिम समुद्र, स्वयंभूरमण समुद्र ; (लहुम २)।

चरमंत पुं [चरमान्त] अन्त में अन्तिम, अन्त में प्राप्त-वर्ती, (सम ६६)।

चरय देखो चरग, (औप ; राज १, ६६)।

चरिया देखो चरिया=चरिका ; (गाय)।

चरित्त न [चरित्र] १ चरित्र, आचरण ; २ स्वभाव, प्रकृति ; (सवि ; प्राप्र ४०)। ३ स्वभाव, प्रकृति ; (कुमा)।

चरित्त न [चारित्र] संयम, विरति, व्रत, नियम ; (ठा २, ४ ; ४,४ ; सम)। 'कम्म पुं [कर्मन्] संयम-गुण का प्रतिघातक कर्म ; (पंचसा)। 'मोह पुंन [मोह] चर्म-विरति, संयम का आवारक कर्म ; (कम्म)। 'मोहणिज्ज न [मोहनीय] वही पूर्वोक्त कर्म ; (ठा २, ४)। 'वंतरिय न [न्तरिक] अन्तरिक्ष संयम, अन्तरिक्ष-धर्म ; (पंडि ; सम ८,२)। 'यार पुं [चार] संयम का अनुष्ठान, (पंडि)। 'रिय पुं [र्य] चरित्र से अर्य, विशुद्ध चरित्र वाला, साधु, मुनि ; (पणण १)।

चरित्ति पुंस्त्री [चारित्रिन्] संयम वाला, साधु, मुनि, (ठा ११६ ; पंचव १)।

चरिम देखो चरम ; (सुर १,१० ; औप ; सम , ठा २, ४)।

चरिय पुं [चरक] चरक-मुनि, आचार्य, (औप ; सुर १,१८)।

चरिय न [चरित्र] १ चरित्र, आचरण (औप ; ठा २, ४)। २ ईहित, अभिलषित (सम १)। ३ चरित ग्रन्थ ; (सुर १,८)। ४ देखो चरिया (सम १,)

चरिया स्त्री [चरिका] १ परिव्राजिका, संन्यासिनी ; (औप ११८)। २ स्त्रिया और नगर के बीच का मार्ग ; (सम १३७ , पणण ३,१)।

चरिया स्त्री [चर्या] १ आचरण, अनुष्ठान ; "दुक्करचरिया दुरहियासाणं" (पउम १४, १६२)। २ गमन, गति, विहार; (सुम १, १, ४)।

चरु पुं [चरु] स्थाली-विशेष, पाक-विशेष ; (औप; आचा)। 'चरुनिमाय देखो चरुहाण ; (इक)।

चरुल्लिय न [दे] नख, अस्त्र ; (दे ३, ६)।

चल सक [चल्] १ चलना, गमन करना। २ अक, काँपना, हिलना। चलइ ; (महा ; गउड)। चल—चलंत, चलमाण ; (गा ३६६ ; सुर ३,४० ; सण)। हेक—चलिउं; (गा ४८४)। प्रयो, संक—चलावेइ ; (उव ६, १)।

चल वि [चल] १ चंचल, अस्थिर ; (स ४२० ; वज्जा ६६)। २ पुं. शकट का एक कुसंज ; (पउम ४६, ३८)।

चलचल वि [चलचल] १ चंचल, अस्थिर ; "चलचलइ-कोडिकोडिपरिवाडि नरवाउं वरवरीए" (वज्जा ६०)। २ पुं. पी में बनाई चीज का पहला ढाँचा मात्र ; (निचू ४)।

चलण पुं [चरण] पाँव, पैर, पाद ; (औप ; से ६,१३)। 'मालिया स्त्री [मालिका] पैर का आभूषण-विशेष ; (पणण २, ६ ; औप)। 'वंदण न [वन्दन] पैर पर सिर झुका कर प्रणाम, प्रणाम-विशेष ; (पउम ८, २०६)।

चलण न [चलन] चलना, गति, चाल ; (से ६, १३)।

चलणा स्त्री [चलना] १ चलन, गति ; २ कंप, हिलन ; (सम १६, ६)।

चलणाउह पुं [चरणायुध] कुक्कुट, मुर्गा ; (ठा ३, ३)।

चलणाजोह पुं [दे. चरणायुध] ऊपर देखो ; (पउ)।

चलणिया स्त्री [चलनिका] नीचे देखो ; (औप ३८)।

चलणी स्त्री [चलनी] १ सार्वजनिक का एक उपकरण ; (औप ३१६ सं)। २ पैर ढकने का कपड़ा ; (जीव ३, सम ७, ६)।

चलणुवलण न [दे] चलपटी, चलपटा , (पउम १०१,६)।

चलणेल्ल वि [चलनवत्] चंचल, अस्थिर ; (पउम १११,६)।

चलिंदिय वि [चलेन्द्रिय] इन्द्रिय-विषय ग्रहण में अस्थिर, विषय इन्द्रियों को न ग्रहण कर [illegible] (आचा १, ६, १)।

चलिय न [चलित] १ [illegible] चलना [illegible] ([illegible])। २ चला हुआ [illegible] (आचा)। ३ [illegible] ([illegible])। ४ [illegible] ([illegible])।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] (ठा ४, उ १, सू २१३; ४ ४)।

[illegible] देखो [illegible]।

[illegible] वि [दे] [illegible], (दे ४, १११, पउ)।

[illegible] वि [दे] [illegible] (पउ)।

[illegible] देखो [illegible], (सूत्र १, ४१, ठा ५ ३०)।

[illegible] पुं [[illegible]] [illegible], [illegible]। [illegible], (दे ४, १)। [illegible] —[illegible], (हम्मीर)। [illegible] —[illegible], (भवि)।

[illegible] अक [अस्] [illegible], [illegible] में [illegible], [illegible], (दे ४, १११)। [illegible] —[illegible], (पउ)। [illegible] —[illegible], (ठा १, १)।

[illegible] पुं [[illegible]] [illegible], [illegible], "[illegible]", (ठा १, १४)।

[illegible] पुं [[illegible]] "[illegible]" [illegible], [illegible] विशेष, (ठाण १८६ टी)।

[illegible] न [[illegible]] १ [illegible], [illegible], (सूत्र १, १३६, ७, ८, दे ४)। २ [illegible], [illegible], (सूत्र १)।

[illegible] वि [[illegible]] १ [illegible], [illegible], (सूत्र १२, १३८, ठाण १०१)। २ [illegible], [illegible], (औप)। [illegible] पुं [illegible] का एक [illegible], (पउम ६६, १६)।

[illegible] पुं [दे] [illegible], [illegible], (भा १८)।

[illegible] स्त्री [[illegible]] [illegible], [illegible], (जीव ३)।

[illegible] वि [च्युत] [illegible], [illegible], (कुमा १,१६)।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible], [illegible], (भवि)।

[illegible] स्त्री [[illegible]] [illegible], (पिंड १०—पत्र ६२१)।

[illegible] / [illegible] / [illegible] स्त्री [[illegible]] [illegible], [illegible], (दे १, १४६; कुमा)।

[illegible] स्त्री [दे] १ [illegible], २ [illegible], [illegible], [illegible]; (दे ३, ३)।

[illegible] न [दे] [illegible], [illegible], (दे ३, ३)।

[illegible] देखो [illegible], (प्राकृ)।

[illegible] वि [दे] [illegible], [illegible] से [illegible] हुआ, "[illegible]" (सुपा ४६६)।

[illegible] देखो [illegible], (राज)।

[illegible] / [illegible] वि [[illegible]] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], (ठाण ४, उ १, सू २१३; ठा ४, १)।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible], [illegible], [illegible], (सूत्र १, १३, ३)।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible], [illegible], (सूत्र १, १३, ३)।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible], [illegible], (सूत्र १, १३, ३)।

[illegible] पुं [[illegible]] [illegible], [illegible], "[illegible]" (ठाण)।

[illegible] वि [दे] १ [illegible], [illegible], (दे १, १, [illegible] "[illegible]" ४२, टी)।

[illegible] पुं [दे] एक [illegible] का [illegible], (भवि)।

[illegible] वि [[illegible]] १ [illegible], [illegible], [illegible], (सूत्र १, २१, ११८)। २ [illegible], [illegible], [illegible], (आचा)।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible], (सूत्र १, १११, सूत्र १, १०)। "[illegible]" (पउम ११८, १०)

[illegible] पुं [[illegible]] [illegible], (पउम ६, २११)।

[illegible] न [[illegible]] [illegible], (पिंड ६२१)।

[illegible] वि [[illegible]] [illegible], (औप २)।

[illegible] / [illegible] / [illegible] वि [[illegible]] [illegible], [illegible], (आचा १, ११, [illegible] ४, ११)।

[illegible] न [[illegible]] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], (आचा १, ७, उ ६, १)।

[illegible] न [[illegible]] [illegible], [illegible], [illegible], (ठा ४, उ १, सू २६८, आचा)।

[illegible] पुं [[illegible]] [illegible], [illegible], (औप)।

चाउद्दसिया स्त्री [चातुर्दशिका] तिथि-विशेष, चतुर्दशी, दिन ; "चौद्दसचाउद्दसिया" (उत्त) ।

चाउद्दसी स्त्री [चतुर्दशी] उक्त तिथि ; (भग , ठा ३) ।

चाउप्पय (अप) वि [चतुष्पदत्व] चौपद, पशु, तिर्यंच ; "चाउप्पयचोरेहिं" देखो चउप्पय । (अप ; सुपा ३१६) ।

चाउमास) पुं [चातुर्मास] १ चौमासा, तीन ऋतुओं का समय ; (ठा ४, १) । २ चौमासा, कार्तिक और फाल्गुन मास की पूर्णिमा चतुर्दशी, "पूर्णिमा चाउमासे" (स्थानां १६) ।

चाउम्मासिय वि [चातुर्मासिक] १ चार मास संबन्धी, कि श्रावण से लेकर कार्तिक मास के चार महीने से संबंध रखने वाला ; (दशा १, ४ ; सुपा १४, ३३८) । २ न. पर्व, कार्तिक और फाल्गुन मास की पूर्णिमा चतुर्दशी तिथि, वही दिन ; (ठा ४ ३ , कप्प ३८) ।

उम्मासी स्त्री [चतुर्मासी] चार मास, चौमासा, श्रावण कार्तिक, कार्तिक से फाल्गुन और फाल्गुन से आषाढ़ तक चार महीने ; (पउम ११८, ४८) ।

उम्मासी स्त्री [चातुर्मासी] देखो चाउम्मासिय, पर्व २ ; श्रव) ।

उरंग देखो चउरंग , पउम २, ७६) ।

उरंगि देखो चउरंगि , (भग ; राय १, १—पत्र २) ।

उरंगिज्ज वि [चतुरङ्गीय] १ चार अंगों से संबन्ध रखने वाला ; २ न. उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन ; (उत्त ४) ।

उरंत देखो चउरंत ; (णाभ १ ; ठा ३, १, दे १, ४) ।

उरंत पुं [चातुरन्त] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् ; (पाअ १, ४) । २ न. उत्तम-काष्ठ, चौरी ; (स ७८) ।

उरक्क वि [चातुरस्क्य] चार बार परिणत । 'गोखीर ['गोक्षीर] चार बार परिणत किया हुआ गो-दुग्ध, १ कपिला गौओं का दूध दूसरी गौओं को पिलाया जाय, २ उनका अन्य गौओं को, इस तरह चार बार परिणत हुआ गो-दुग्ध ; (जीव ३)

उरे पुं [दे] चक्रवाक, चातुर ; (दे ३, ८ ; आचा २, १, ३, ६ ; ८, उत्त १३१, ओघ ३४४, सुपा ६३६ ; सुर १०, कप्प) ।

चाउव्वग्ग न [दे] चतुर का समूह, चतुष्टय समूह ; (सिरि १) ।

चाउव्वण्ण) वि [चातुर्वर्ण्य] १ चार वर्ण करना, चार चाउव्वण्णय) प्रकार करना ; २ पुं. साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समूह ; (ठा ४, २—पत्र ३२१) ; "चाउव्वण्णस्स समणसंघस्स" (पउम २०, १२०) । ३ न. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार मनुष्य-जाति ; (भग १५) ।

चाउव्वेअ न [चातुर्वेद्य] १ चार प्रकार की विद्या—न्याय, व्याकरण, साहित्य और धर्म-शास्त्र । २ पुं. चौदे, ब्राह्मणों की एक अल्ल ; "चाउव्वेअकवडुंभए" (सण) ।

चाएंत देखो चायंत ।

चाँडंडा स्त्री [चामुण्डा] स्वनाम-ख्यात देवी ; (हे १, १७१) । 'चाडअ पुं ['चामुक] महादेव, शिव ; (कुमा) ।

चाग देखो चाय=त्याग ; (पंचव १) ।

चागि देखो चाइ ; (उत्त ६ १०६) ।

चाड वि [दे] मायावी, कपटी ; (दे ३, ८) ।

चाडु पुं [चाटु] १ प्रिय वाक्य ; २ खुशामद ; (हे १, ६७ ; प्राप्र) । 'यार वि ['कार] खुशामदी ; (पाअ १, २) ।

चाडुअ न [चाटुक] ऊपर देखो ; (कुमा) ।

चाणक्क पुं [चाणक्य] १ राजा चन्द्रगुप्त का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री ; (सुपा १४४) । २ एक मनुष्य-जाति (भवि) :

चाणक्की स्त्री [चाणक्यी] तिथि-विशेष ; (विचा ४६४ टी)

चाणिक्क देखो चाणक्क ; (श्रावक) ।

चाणूर पुं [चाणूर] मल्ल-विशेष, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था ; (पाअ १, ४ ; सिरि) ।

चामर पुं [चामर] चँवर, वात-व्यजन ; (हे १, ६७) । २ छन्द-विशेष ; (पिंग) । 'गाहि वि ['ग्राहिन्] चामर बींजने वाला नौकर ; स्त्री—णी ; (सवि) । 'छायण न ['च्छायन] स्वाति नक्षत्र का गोत्र ; (इक) । 'द्धय पुं ['ध्वज] चामर-युक्त पताका ; (औप) । 'यार वि ['धार] चामर बींजने वाला ; (पउम ८०, ३८) ।

चामरा स्त्री. ऊपर देखो ; (औप ; वव १ ; भग ८, ३३) ।

चामीअर न [चामीकर] सुवर्ण, सोना ; (पाअ ; सुपा ७७ , णाया १, ४)।
चामुंडा देखो चाँउंडा ; (विसे , पि)।
चाय देखो चय=त्यज्। वकृ—चायंत, चाएंत, सूम १, ३, १ ; पव ३)।
चाय देखो चाव ; (सुपा ६३० , से १४, १६ , पिंग)।
चाय पु [त्याग] १ छोड़ना, परित्याग , (आचा ८ ; पंचव १)। २ दान , (सुर १, ६६)।
चायग) पु [चातक] पक्षि-विशेष, चातक-पक्षी, (सण , चायय) पाअ , दे ६, ६०)।
चार पु [चार] १ गति, गमन , "पायचोरण" (मज , उप पृ १२३ , रयण १६)। २ भ्रमण, परिभ्रमण , (स १६)। ३ चर-पुरुष, जासूस , (विसे १, ३ ; महा , भवि)। ४ कारागार, कैदखाना , (भवि)। ५ संचार, संचरण , (औप)। ६ अनुष्ठान, आचरण , (आचानि ६६ ; महा)। ७ ज्योतिष-क्षेत्र, आकाश , (ठा २, १)।
चार पु [दे] १ वृक्ष-विशेष, पियाल वृक्ष, चिरौंजी का पेड़ ; (दे ३, ११ , अणु , पण्ण १६)। २ बन्धन-स्थान , (दे ३, ११)। ३ इच्छा, अभिलाष ; (दे ३, ११, भवि , सुपा ६११)। ४ न. फल-विशेष, मेवा विशेष ; (पण्ण १६)।
चारकय पु [क्रय] बेचने वाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना , (सुपा ६११)।
चारए देखो चर=चर्।
चारग वि [चारक] देखो चार , (औप , णाया १, १ , पण्ह १, ३ , उप ३६७ टी)। °पाल पु [°पाल] जेलखाना का अध्यक्ष , (विपा १, ६—पत्र ६६)। °पालग पु [°पालक] कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर , (उप ३३७)। °भंड न [°भाण्ड] कैदी को शिक्षा करने का उपकरण ; (विपा १, ६)। °रक्खिय पु [°रक्षित] जेलखाना का अध्यक्ष, जेलर , (उप पृ ३३७)।
चारड पु [दे] ग्रन्थि-च्छेदक, पाकेटमार, चोर-विशेष , (दे ३, ६)।
चारण पु [चारण] १ आकाश में गमन करने की शक्ति वाले जैन मुनियों की एक जाति , (औप ; सुर ३, ६३, सत्ति १६)। २ मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति करने वाले भाट , (उप ७६८ टी ; प्रभा)। ३ एक ऋषि का नाम ; (ठा ६)।
चारणिआ स्त्री [चारणिका] गणित-विशेष, (ठाण ११ टी)।
चारभड पु [चारभट] शूर पुरुष, लड़ैया, (पाअ , सुपा १, २, १, ३ ; कुप्र १)।
चारय देखो चारग ; (सुपा २०७ , स १६)।
चारवाय पु [दे] शीत ऋतु का पवन ; (दे ३, ४४१ ; ४४२ ; हे ४, ३६६)।
चारहड देखो चारभड , (धर्म १२ टी ; मृच्छ)।
चारहडी स्त्री [चारभटी] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति, (पाअ , सुपा १, २, १, ३ ; कुप्र १)।
चारागार न [चारागार] कैदखाना, जेलखाना, (१६, १७)।
चारि स्त्री [चारि] चारा, पशुओं के खाने की घास आदि , (औप २३८)।
चारि वि [चारिन्] १ प्रवृत्ति करने वाला ; (टी , उव , आचा)। २ चलने वाला, गमन-शील, (कप्प)।
चारित्त वि [चारित] १ जिसको चरित्र प्राप्त हुआ (हे २, २७)। २ विज्ञापित, जताया हुआ —पत्र ४६७)।
चारिअ पु [चारिक] १ चर पुरुष, जासूस , (२ , पउम २६, ६६)। "चारदंसि चारिउंसि ; परदारगामिंसि" (विसे २३७१)। २ पंचाय पुरुष, समुदाय का अगुआ , (स ४०६)।
चारित्त देखो चरित्त=चारित्र , (औप ६७७ टी)।
चारित्ति देखो चरित्ति ; (पुप्फ १६४)।
चारियव्व देखो चर=चर्।
चारी स्त्री [चारी] देखो चारि=चारि (२३८ टी)।
चारु वि [चारु] १ सुन्दर, शोभन, प्रवर ; २ पु. तीसरे जिनदेव का प्रथम शिष्य, (सम न. प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष , (जीव १ ,
चारुइणय पु [चारुकिनक] १ देश-विशेष, २ का निवासी, (औप, भग) । स्त्री—°णिया , °णिया , (औप , आचा १, १)।
चारुयच्छि पु. [चारुवतिस] दश-विशेष, ६८, ६४)।
चारुसेणी स्त्री [चारुसेनी] छन्द-विशेष , (पिंग

चाल सक [चालय्] १ चलाना, हिलाना, कँपाना। २ विलय करना। कृ [देश, स ४१४, भग]। वकृ—चालेंत, चालेमाण; (सूत्र ११४, आचा १,) । कवा—चालिउमाण, (आचा १, १) । हेकृ—चालित्तए; (उवा)।

चालण न [चालन] १ चलाना, हिलाना, (रंभा)। २ विलय; (विसे १०८७)।

चालणा स्त्री [चालना] शङ्का, पर्यालोचन, आलोचन, (अनु; कुप्र १)।

चालणिया स्त्री [चालनिका] नींव देखो, (उत्त ११४ टी)।

चालणी स्त्री [चालनी] आटा, छानने का पात्र, (आचा)।

चालवास पुं [देश] गिरि का अपर-विशेष; (दे ३, ८)।

चालिय वि [चालित] चलाया हुआ, हिलाया हुआ; "पुरकरीए चालियाए सियलंबकडयाए" (भग)।

चालिर वि [चालयितृ] १ चलाने वाला। २ चलने वाला; "सासयसयचालुच्छलिरदलिसंसिए देसंमि" (कप्पा ७०)।

चाली स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस, ४०, (उवा)।

चालीस सक [चत्वारिंशत्] चालीस, ४०; (महा; पिंग)। स्त्री—सा, (वि ६)।

चालुक्क पुरुषो [चौलुक्य] १ चालुक्य वंश में उत्पन्न; २ पु. गुजरात का प्रसिद्ध राजा कुमारपाल; (कुमा)।

चाव सक [चर्] चबाना। कृ—चावेयव्व; (उत्त १६, ३८)।

चाव पु [चाप] धनुष, कार्मुक; (स्वप्न ६६)।

चावल न [चापल] चपलता, चंचलता; (अनि २४१)।

चावल्ल न [चापल्य] ऊपर देखो; (स ६२६)।

चावाली स्त्री [चावाली] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक गाँव; (आवम)।

चाविय वि [च्यावित] गवाया हुआ; (पच्छ २, १)।

चावेडी स्त्री [चापेटी] विद्या-विशेष, जिससे दूसरे को लगाया मारने पर विचार आदमी का रोग चला जाता है; (वव ६)।

चावेयव्व देखो चाव=चर्।

चावोण्णय न [चापोन्नत] विमान-विशेष, एक देव-विमान; (सम ३६)।

चास पुं [चाष] पक्षि-विशेष, स्वर्ण-चातक, लटोरका; (पच्छ १, १; पण्ण १७; छाया १, १; ओघ ८४ भा; वव १, १४)।

चास पु [देश] चास, हल विदारित भूमि-रेखा, सेती; (दे ३, १)।

चास सक [चाक्ष्] १ चाहना, वाँछना। २ अपेक्षा करना। ३ मानना। चासइ, चासहि; (भवि; पिंग)।

चासिय वि [चाक्षित] १ चाक्षित, अभिलषित; २ अपेक्षित; ३ मानित; (भवि)।

चाहुआण पुं [चाहुवान] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश; चौहान वंश, २ पुरुष चौहान वंश में उत्पन्न; (सुपा ३१६)। वि देखो चिय। कर्म—चिन्नइ, चिज्जइ, चिज्जंति; (हे ४, २४३ ; भग)।

चिअ म [एव] निश्चय को बतानेवाला अव्यय; "अणुसूअं तं चिअ कामिणीणं" (हे २, १८४; कुमा; मा १६, ४६ ; ई १)।

चिअ म [इव] १—२ उत्प्रेक्षा और उपमा का सूचक अव्यय; (प्राप)।

चिअ वि [चित] १ इकट्ठा किया हुआ; (भग)। २ व्याप्त; (सुपा २४१)। ३ पुष्ट, सांपल; (उत्त ८७६ टी)।

चिआ स्त्री [त्विष्] कान्ति, तेज, प्रभा; (षड्)।

चिआ देखो चियगा; (सुपा २४१; महा)।

चिइ स्त्री [चिति] १ उपचय, पुष्टि, वृद्धि; (पव २)। २ इकट्ठा करना; (उत्त ६)। ३ बुद्धि, मेधा; (प्राम)। ४ भौंत वगैरः बनाना; ५ चिता; (पच्छ १, १—पव ८)। °कम्म न [°कर्मन्] वन्दन, प्रणाम-विशेष; (आव ३)।

चिइ देखो चेइअ; (उत्त १६७ ; चैत्य १२ ; पंचा १)।

चिइगा देखो चियगा; (जं १)।

चिइच्छ सक [चिकित्स्] १ दवा करना, इलाज करना। २ शङ्का करना, संशय करना। चिइच्छइ; (हे ३, २१; ४, २४०)।

चिइच्छय वि [चिकित्सक] १ दवा करने वाला, इलाज करने वाला; २ पुं वैद्य; (मा ३३)।

चिइय देखो चेतिय; "जेय एत्थ सुवरियत्तणेवि सुचिइयजिणिंदवयणेवि" (महा)।

चिउर पुं [चिकुर] १ केश, बाल; (मा १८८)। २ पीत रङ्ग का गन्ध-द्रव्य-विशेष; (पण्ण १७—पव १२८; गंध)।

चिंचइअ वि [मण्डित] शोभित, विभूषित, अलंकृत, (पउम १६, १२, सुपा ८८; महा; पाअ; प्राप; कुमा)।

चिंचइम वि [दे] थकित, थका हुआ, (दे ३, १३)।

चिंचणिआ } स्त्री [दे] देखो चिंचिणी; (कुमा, सुपा १२; चिंचणिगा } ६८३)।

चिंचणी स्त्री [दे] पथिका, मद्य पीने की थाली; (दे ३, १०)।

चिंचा स्त्री [चम्पा] १ तृण की बनाई हुई चटाई वगैरः। °पुरिस पु [°पुरुष] तृण का मनुष्य, जो पशु, पक्षी आदि को डराने के लिए खेतों में गाड़ा जाता है; (सुपा ११४)।

चिंचा स्त्री [दे चिम्बा] इमली का पेड़, (दे ३, १०; पउम; सिरा १, ६; सुपा ११४, ६८३, ६८३)।

चिंचिम वि [मण्डित] भूषित, अलंकृत; (कुमा)।

चिंचिणिआ } स्त्री [दे] इमली का पेड़, (श्रोघ २६; चिंचिणिचिंचा } दे ३, १०; सुपा ६८४; पाअ)।

चिंचिणी

चिंचिन्द सक [मण्डय्] विभूषित करना, अलंकृत करना। चिंचिन्दइ; (हे ४, ११६; षड्)।

चिंचिन्दिअ वि [मण्डित] विभूषित, अलंकृत; (पाअ; कुमा)।

चिंत सक [चिन्तय्] १ चिन्ता करना, विचार करना। २ ध्यान करना। ४ परिहार करना, अपनोद करना। चिंतेइ, चिंतेति; (उव; कुमा)। कर्म—चिंतिज्जइ, चिंतीअइ, चिंतिज्जंति, चिंतिज्जंते, चिंतिज्जमाण, चिंतिज्जमाण; (कुमा, उव, पउम १०, ४; भवि ६०; हे ४, २११; ३१०; सुर ४, २३)। कृ—चिंतणिज्ज, चिंतिअव्व, चिंतेअव्व; (ठा ४, १; उप ७२१, पंचा २, पउम ३१, सुर ४, ६६; हुए ४४६)। वि [चिन्तय] चिन्तनीय, विचारणीय, विचार-योग्य; (८२)। वि [चिन्तक] चिन्ता करने वाला, विचारक, (सुर ३, २११; ३१६ टी)।

चिंतण न [चिन्तन] १ विचार, पर्यालोचन, २ स्मरण, स्मृति; (उप ३२; महा)।

चिंतणा स्त्री [चिन्तना] ऊपर देखो; (ठा ६, ३)।

चिंतणिया स्त्री [चिन्तनिका] याद करना, (ठा ६, ३)।

चिंतय वि [चिन्तक] चिन्ता करने वाला, (सुर १, १)।

चिंतय देखो चिंत = चिंतय्। चिन्तय; (भवि)।

चिंतविय वि [चिन्तित] जिसकी चिंता की गई हो, (भवि)।

चिंता स्त्री [चिन्ता] १ विचार, पर्यालोचन; (कुमा)। २ अफ़सोस, शोक, दिलगीरी, (सुर १, १; सुपा १, १; प्राप ६१)। ३ ध्यान; (आव ४)। ४ स्मृति, स्मरण, (णंदि)। ५ इष्ट-प्राप्ति का संदेह, (हे २, १७४)। °उर वि [°तुर] शोक से व्याकुल, (सुर ६, ११६)। °दिट्ठ वि [°दृष्ट] विचार-पूर्वक देखा हुआ, (पंच)। °भरिअ वि [°भृत] चिन्ता-युक्त; "सकले चिन्तामयं जगत्रिदम्" (गा ११२)। °मणि पु [°मणि] १ मनोवांछित अर्थ को देनेवाला रत्न-विशेष, दिव्य मणि, (महा)। २ वीतशोक नगरी का एक राजा, (पउम २०, १४२)। °र वि [°पर] चिन्ता-मग्न, (पउम १०, १३)।

चिंतायर } वि [चिन्तक] चिन्ता करने वाला, (स्त्री— चिंतायरा } °रा; (सुपा २१)।

चिंतिय वि [चिन्तित] १ विचारित, पर्यालोचित, (आचा १, १, ४, १)। २ याद किया हुआ, स्मृत; (आचा १, १, ४, १)। जिसकी चिन्ता उत्पन्न हुई हो वह, (ओघ ३, भाव)। ४ न. स्मरण, स्मृति; (सम ६, ११, भाव)।

चिंतिर वि [चिन्तयितृ] चिन्ता-शील, चिन्ता करने वाला, (श्रा २७; सण)।

चिंध न [चिह्न] १ चिन्ह, लाञ्छन, निशानी, (हे ४, ४४८; कुमा; आचा १, ११)। २ ध्वजा, पताका, (पउम ६, ६६)। °पट्ट पु [°पट्ट] निशानी का वस्त्र-खण्ड, (आचा १, ४, १, १)। °पुरिस पु [°पुरुष] १ दाढ़ी-मूँछ वगैरे पुरुष के चिह्न वाला मनुष्य; २ पुरुष का वेष धारण करने वाली स्त्री, (उप ३, १)।

चिंधाल वि [चिह्नवत्] चिह्न-युक्त, निशानी वाला, (१०१, ७)।

चिंधाल वि [दे] १ रम्य, सुन्दर, मनोहर; २ मुख्य, प्रधान, प्रवर; (दे ३, २२)।

चिंधिय वि [चिह्नित] चिह्न-युक्त; (पि २६७)।

चिंधुल्लणी स्त्री [दे] स्त्री का पहनने का वस्त्र-विशेष, लहँगा; (दे ३, १३)।

चिकिच्छ देखो चिइच्छ। चिकिच्छामि; (सं ४८६)। कृ—चिकिच्छिअव्व; (मणि १६७)।

चिकुर देखो चिउर; (पि ४०६)।

चिक्क वि [दे] १ स्तोक, थोड़ा, अल्प; २ न. क्षुद्र, छोटा; (षड्)।

चिक्कण वि [चिक्कण] चिकना, स्निग्ध; (पण्ण १, १, सुत्र ११)। २ निबिड, घना; "जं पावं चिक्कयं तए बद्धं" (सुर १४, २०६)। ३ दुर्भेद्य, दुःख से छूटने योग्य; (पण्ह १, १)।

चिक्का स्त्री [दे] १ थोड़ी चीज; २ हलकी मेघ-वृष्टि, सूक्ष्म वर्षा; (दे ३, २१)।

चिक्कार पुं [चीत्कार] चिल्ला, हल्ला-गुल्ला; (सण)।

चिक्किण देखो चिक्कण; (कुमा)।

चिक्खल्लण वि [दे] सहिष्णु, सहन करने वाला; (षड्)।

चिक्खल्ल पुं [दे] कर्दम, पंक, कीचड़; (दे ३, ११; हे ३, १४२; पड्ड १, १)।

चिक्खल्लिय न [चिक्खल्लिक] काठियावाड़ का एक नगर; (ती २)।

चिक्खिल्ल } [दे] देखो चिक्खल्ल; (गा ६७; ३२४;
चिक्खल्ल } ४४६; ६८४; औप)।
चिक्खिल्ल }

चिगिचिगाय अक [चिकचिकाय्] चकचकाहट करना, चमकना। वकृ—चिगिचिगायंत; (सुर ३, ८६)।

चिगिच्छा देखो चिइच्छा; (सिरि ३०)।

चिगिच्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा, इलाज; (उप १३६ टी)।

चिगिच्छय देखो चिइच्छअ; (स २७८; पाया १, १—पत्र १११)।

चिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] दवा, इलाज, इलाज; (स १७)। °संहिया स्त्री (°संहिता) चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक-शास्त्र; (स १७)।

चिंच वि [दे] १ चिकित्सा करने वाला, वैद्य हुई बात करने वाला; (दे ३, ६)। २ न. रम्य, संगीत, गीत; (दे ३, १०)।

चिच्च वि [त्याज्य] छोड़ने योग्य, परिहरणीय; "सव्वकम्माइं वि चिच्चाइं" (सुपा ४६८)।

चिच्चर वि [दे] चिपिट नासिका वाला; (दे ३, ६)।

चिच्चा देखो चय=त्यज्।

चिच्चि पुं [चिच्चि] चीत्कार, चिल्लाहट, मर्मभेदक आवाज; "चिच्चिसद्द—" (विसा १, २—पत्र २६)।

चिच्चि पुं [दे] हुताशन, अग्नि; (दे ३, १०)।

चिट्ठ अक [स्था] बैठना, स्थिति करना। चिट्ठ; (हे ४, १६)। भूका—चिट्ठिंसु; (आचा)। वकृ—चिट्ठंत, चिट्ठेमाण; (कुमा; भग)। संकृ—चिट्ठिउं, चिट्ठिऊण, चिट्ठिण, चिट्ठित्ता, चिट्ठित्ताण; (कम्म; हे ४, १६; राज; पि)। हेकृ—चिट्ठितए; (कम्म)। कृ—चिट्ठणिज्ज, चिट्ठिअव्व; (उप २६४ टी; भग)।

चिट्ठ देखो चेट्ठ। वकृ—चिट्ठमाण; (पंचा २)।

चिट्ठरसु वि [स्थातृ] बैठने वाला; (भग ११, ११; ठा ३)।

चिट्ठण स्त्री [स्थान] स्थिति, बैठना, अवस्थान; (ठा ६)।

चिट्ठा देखो चेट्ठा; (सुर ४, २४६; प्राप्र ११६)।

चिट्ठिय वि [चेष्टित] १ जिसने चेष्टा की हो वह; (पण्ह १, ३; पाया १, १)। २ न. चेष्टा, प्रयत्न; (पण्ह २, ४)।

चिट्ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित, रहा हुआ। २ न. अवस्थान, स्थिति; (चंद १०)।

चिडिंग पुं [चिटिक] पक्षि-विशेष; (पण्ह १, १)।

चिण सक [चि] १ इकट्ठा करना। २ कूट वगैरः तोड़ कर इकट्ठा करना। विण; (हे ४, २३८)। भूका—चिणिंसु; (भग)। भवि—चिणिहिइ; (हे ४, २४३)। कर्म—चिणिज्जइ; (हे ४, २४१)। संकृ—चिणिऊण, चिणेऊण; (षड्)।

चिण देखो चयण; (भा १८)।

चिणिय वि [चित] इकट्ठा किया हुआ; (सुपा ३२१; कुमा)।

चिणोट्ठी स्त्री [दे] गुंजा, घुंघची, लाल रंग की, घुंघची में 'चणोठी'; (दे ३, १२)।

चिण्ण वि [जीर्ण] १ आचरित, अनुष्ठित; (उप ११)। २ संगीतकृत, गाया; (उप ३१)। ३ [illegible], क्षय; (उप ११)।

चिण्ह न [चिह्न] निशानी, लांछन ; (हे १, ६० ; गउड) ।

चित्त सक [चित्रय्] चित्र बनाना, तसवीर खींचना । विनेय, (महा) । कर्म— चित्तिज्जंत ; (उप पृ ३४१) ।

चित्त न [चित्त] १ मन, अन्त-करण, हृदय, (ठा ४, १ ; प्राप्र ६१ ; १६६) । २ ज्ञान, चेतना, (आचा) । ३ बुद्धि, मति, (आचा ४) । ४ अभिप्राय, आशय, (आचा) । ५ लावण्य, स्नान ; (अणु) । °ण्णु वि [°ज्ञ] दिल का जानकार, (उप पृ १७६) । °निवाइ वि [°निपातिन्] अभिप्राय के अनुसार बरतने वाला, (आचा) । °मंत वि [°वत्] सजीव वस्तु, (ठाम ३६, आचा) ।

चित्त देखो चारुत्त=चैत्र, (रंभा, अं २ ; कप्प) ।

चित्त न [चित्र] १ छवि, आलेख्य, तसवीर, (सुर १, ८६, सण ११६) । २ आश्चर्य, विस्मय, (उप पृ ३०) । ३ काष्ठ-विशेष, (अनु ६) । ४ वि. विलक्षण, प्रकार का, विचित्र, नानाविध, (ठा १०) । ६ अद्भुत, आश्चर्य-जनक, (विपा १, ६, कप्प) । ७ कबरा, चितकबरा ; (आया १, ८) । ८ पुं एक लोकपाल, (ठा ४, १—पत्र १६७) । ६ पर्वत-विशेष ; (पद्म १, १—पत्र ६१) । १० चित्रक, चिता, रसायन-विशेष, (आया १, १—पत्र ६४) । ११ नक्षत्र-विशेष, चित्रा नक्षत्र, "इत्थो चित्ता य तहा, दस बुद्धिगराइं नाणाय" (सम १०) । °उत्त पुं [°गुप्त] अग्नक्षेत्र के एक भावी जिन-देव, (सम १५४) । °कणगा स्त्री [°कनका] देवी-विशेष, एक दिग्-कुमारी देवी ; (ठा ४, १) । °कम्म न [°कर्मन्] आश्चर्य, छवि, तसवीर ; (णा ६१२) । °कर देखो °गर ; (अणु) । °कह वि [°कथ] नाना प्रकार की कथा कहने वाला ; (उप ३) । °कूड पुं [°कूट] १ मेरु-पर्वत के ऊपर स्थित एक वक्षस्कार-पर्वत, (ठा ४) । २ पर्वत-विशेष, (पद्म ३३, ६) । ३ वक्षस्कार-विशेष, जो अपरविदेह में "विद्युत्प्रभ" नाम से प्रसिद्ध है ; (स्थान ६४) । ४ जिनप्रासाद-विशेष ; (ठा २, ३) । °कूडा स्त्री [°कूटा] छन्द-विशेष, (अजि १) । °गर पुं [°कर] चितेरा, चित्रकार, (सुर १, ८) । °गुत्ता स्त्री [°गुप्ता] १ वर्तमान-अवसर्पिणी की एक जैन महासती, (ठा ४, ३) । २ [illegible]

देवी-विशेष ; (ठा ८) । °पक्ख पुं [देव-नामक इन्द्र का एक लोकपाल, देव-विशेष, २ क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष, °फल, °फलग, °फलय न [°फलक] तख्ता, (महा ; भग १६ ; पि ६१६) । [°भित्ति] १ चित्र वाली भींत, २ स्त्री की ८) । °यर देखो °गर, (णाया १, ८) । [°रस] भोजन देने वाली कल्पवृक्षों की एक १७ ; पउम १०२, १२१) । °लेहा स्त्री [छन्द-विशेष ; (अजि १३) । °संभूय न [तोय] चित्र और संभूत नामक चाण्डाल विशेष के बाला उत्तराध्ययनसूत्र का एक अध्ययन ; (उत्त °सभा स्त्री [°सभा] तसवीर वाला गृह, (आचा ८) । °साला स्त्री [°शाला] चित्र-गृह, (३३२) ।

चित्तंग पुं [चित्राङ्ग] पुष्प देने वाले कल्प-वृक्षों की जाति, (सम १७) ।

चित्तग देखो चित्त=चित्र, (उप पृ ३०) ।

चित्तट्ठिअ वि [स्थ] परितोषित, तुष्ट किया हुआ, (१२) ।

चित्तदाउ पुं [देव] मनु-पटल, मनुष्य, (दे ३, १२) ।

चित्तपरिच्छेय वि [देय] लघु, छोटा, (भग ७, ६) ।

चित्तय देखो चित्त=चित्र, (पाम) ।

चित्तल वि [देय] १ मण्डित, विभूषित ; २ रमणीय, (दे ३, ४) ।

चित्तल वि [चित्रल] १ चितला, कबरा, चितकबरा (पाम) । २ जंगली पशु-विशेष, हरिण के आकार का द्विखुरा पशु-विशेष, (जीव १, पत्र १, १) ।

चित्तलिअ पुंस्त्री [चित्रलित्] सौत की एक जाति, (ठा ४, ३) ।

चित्तलिअ वि [चित्रलित, चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ, "पत्तं चित्तं विमहदे कोइ चेहाहि चित्तलिअं" (गा १०८)

चित्तविसम्भ वि [देय] परितर्पित, (षड्) ।

चित्ता स्त्री [चित्रा] १ नक्षत्र विशेष, (सम २, १) विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी, (ठा ४, १) । ३ [illegible] एक लोकपाल की स्त्री, देवी-विशेष, (ठा ४, १) । ४ मात्रा-विशेष, (सुर १०, १२१) ।

पुं [चिन्तिन्] चिन्तक, चिंतेरा; (कम्म १, २३)।
ग्र वि [चिन्तित] चिन्त-युक्त किया हुआ और; ...उत्त ३६१ टी; दे १, ७६)।
या स्त्री [चिन्तिका] सी-चिन्ता, अपर-चिंता से भाव. ...त ११)।
ं स्त्री [चैत्री] चैत्र मास की पूर्णिमा, (इक)।
चेय } वि [दे] निर्लक्षित, विलक्षित (दे ३, ...चिय } ५३; पिंग; भवि)।
देसी चिण्ण; (सुर ४, ...भवि)।
पडय पुं [दे] अग्र चिन्ह, (दसा ६)।
पण पुं [दे] १ केदार, क्यारी; २ क्यारी बनने का प्रदेश, केदारे का प्रदेश, खेत-प्रदेश, (सग ६, ७)।
ग्र न [चिबुक] ठोड़ के नीचे का भाग, (दसा)।
ड न [चिर्भट] खीरा, ककड़ी जैसा फल, गुजराती "चीभडुं"; (दे १, १४८)।
डिया स्त्री [चिर्भटिका] १ ककड़ी-खीरा, ककड़ी का ...। २ मत्स्य की एक जाति, (जीव १)।
भड देखो चिब्भड, (सुर १३०, पाम)।
ट्ठ } वि [चिपिट] चपटा, बैठा हुआ (नाट); ...ट्ठ } (रयणा १, ८, वि २०७; २८८)।
पण वि [दे] लेपन लेपाने-वाला, पुतनिया; (दे ३, ११; ...)।
का } स्त्री [चिता] मुर्दे को फूंकने के लिए चुनी हुई ...गा } लकड़ियों का ढेर, (पाअ १,३—पत्र ४१; सुर ...; स ४१६)।
त्त देखो चित्त, (सग ३, ४, १०, २; कप्प; ...त्त १)।
त्त वि [दे] १ अनिच्छुक, अकामी; (ठा ३, ३)। २ ...त्तिअ, राग-जनक; (औप)। ३ न. प्रीति, रुचि; ...अनिति का अभाव; (ठा ३, ३—पत्र १८७)।
यग देखो चियगा; (पउम ६१, २३)।
याग } देखो चाय=त्याग; (ठा ४, १, सम १६)।
याय }
र न [चिर] १ दीर्घ काल, बहुत काल (स्वप्न ८३; ...१४७)। २ विलम्ब, देरी (ग ३८)। ३ वि. ...र्घ काल तक रहने वाला "द्विवर्षस्थितिपर्यंतमा चिरा ...कर्म जायते" कर्मप्र ३१) आत्र वि ...कारक } विलम्ब करने वाला (ग ३८)। "जीवि

वि [जीवित्] दीर्घ काल तक जीने वाला, (पि ४६७)।
जीविअ वि [जीवित] दीर्घ काल तक जीया हुआ, बहु; (काम २, ३८)। ...ट्ठिइ, ...ट्ठिय, ...ट्ठिय वि [...स्थितिक] लम्बा आयुष्य वाला, दीर्घ काल तक रहने वाला; (भग; सूअ १, ५, १)। "एवाइं चामाइं कुसीलधम्मं चिरट्ठिईयं" (सूअ १, ५, २)।
राय पुं [राज] बहु काल, दीर्घ काल; (आचा)।
चिर अक [चिरय्] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। चिरअइ (शौ); (वि ४६०)।
चिरं अ [चिरम्] दीर्घ काल तक, अनेक समय तक; (स्वप्न २६; जी ४८)। ...तण वि [...तन] पुराना, बहुत काल का; (महा)।
चिरउडी स्त्री [दे] वर्ण-माला, अक्षरावली; "चिरउडिए अक्खाणं लोआ लाएहि गंथकम्महिआ" (दे १, ८१)।
चिरहिहिल्ल [दे] देखो चिरिहिहिल्ल; (पाम)।
चिरया स्त्री [दे] कुटी, झोंपड़ी; (दे ३, ११)।
चिरस्स अ [चिरस्य] बहुत काल तक; (उत्तर १७६; कुमा)।
चिराअ देखो चिर=चिरय्। चिराअइ; (स १२६)। चिराअमि; (मै ६३)। भवि—चिराएस्सं; (गा २०)। वह—चिराअमाण; (नाट—मालती ३७)।
चिराइय वि [चिरादिक] पुराना, प्राचीन; (काया १, १; औप)।
चिराईय वि [चिरातीत] पुराना, प्राचीन; (विसा १,१)।
चिराणय (अप) वि [...न्तन] पुरातन, प्राचीन; (भवि)।
चिरादण वि [चिरन्तन] ऊपर देखो; (हे ३)।
चिराव अक [चिरय्] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। ३ सक. विलम्ब कराना, देर करना चिरावइ; (भवि)। चिरावेइ; (कुप्र)। "मा मे चिरावेहि" (पउम ३, १२६)।
चिरावित वि [चिरायित] १ जिसने विलम्ब किया हो वह; २ विलम्बित, रोका गया। ३ न. विलम्ब, देरी; "भणिओ चंडालाए किं अज्ज चिरावियं सामि!" (पउम १०५, १०१)।
चिरिंचिरा स्त्री [दे] लतपाग, वृष्टि; (दे ३, १३)।
चिरिंचिरिका स्त्री [दे] १ पक्षी करने का वर्ण ...द, २ अल्प वृष्टि; ३ प्रातःकाल, सुबह (...)।
चिरिंचिरा [दे] देखो चिरिंचिरा ...)।

चिरिडी देखो चिरडी ; (गा १६१ अ) ।
चिरिट्टिल्ल न [दे] दधि, दही ; (दे ३, १४) ।
चिरिहिट्टी स्त्री [दे] गुञ्जा; घुंघची, लाल रत्ती ; (दे ३, ११) ।
चिलाअ पुं [किरात] १ अनार्य देश-विशेष, १ किरात देश में रहने वाली म्लेच्छ-जाति, भिल्ल, पुलिंद; (दे १, १८१ ; १६४ ; पद्म १, १ ; औप ; सुमा) । २ धन सम्बन्धी का एक दास—नौकर, (आया १, १८) । °यारया स्त्री [किरातिका] किरात देश की रहने वाली स्त्री ; (आया १, १) ।
चिलाई स्त्री [किराती] ऊपर देखो ; (इक) । °पुत्त पुं [°पुत्र] एक शबरी-पुत्र और जैन-महर्षि , (पडि , आया १, १८) ।
चिलिचिलिआ स्त्री [दे] धारा, दृष्टि; (षड्) ।
चिलिचिल्ल } चिलिच्चील } वि [दे] आर्द्र, गिला, (पाअ १, २—पत्र ४६ , दे ३, ११) ।
चिलिण [दे] देखो चिल्लीण ; " एक्कासणंजमम्मि य चिलिणे मंदन्नहाणो " (श्रोप १६६) ।
चिलिमिणी } चिलिमिलिआ } चिलिमिलिया } चिलिमिली } स्त्री [दे] यवनिका, परदा, माच्छादन-पट, (श्रोप ६४ भा ; सम १, १, ४८ ; कप्प , श्रोप ७८, ८०) ।
चिलीण न [दे] मछली, मेढा, मत्स्य-भूत , " सज्जंति चिलीणे दंडियाम्मि वग्गुरपडे मंचू " (उप १०३१ टी) ।
चिल्ल पुं [दे] १ बाल, बच्चा, लड़का , (दे ३, १०) । २ केश, सिर , (श्राम) ।
चिल्ल पुं [चिल्ल] १ वृक्ष-विशेष , (राज) । २ न. वृक्ष विशेष ,
" इह इयणि रहा, वसणमणसु चिल्लरिक्खा । हा पुत्त चिल्लरुक्खू, मंच इमा तिहयमा " (पउम ६६, १६) ।
चिल्लअ न [दे] देखो चिल्लय , अनर्थ , " मंचाइ-चिल्लउ देहि केहिमि अत्थ-समत्थहो देवमाहि " (भवि १८ ; श्रौप) ।
चिल्लय न [दे] देखो चिल्लिय ; (पद्म १, ४—पत्र ७१) ।
चिल्लर [दे] देखो चिल्लिर (दे), (श्राचा १, १, १) ।
चिल्लणा स्त्री [चिल्लणा] एक सती पत्नी ; (पडि) ।
चिल्लल पुं [चिल्वल] १ अनार्य देश का निवासी ; (इक) ।
चिल्लल पुंस्त्री [दे] १ आर्द्र पशु-विशेष, १, १—पत्र ७ ; आया १, १—पत्र (१) °लिया; (पण्ण ११) । २ न. आर्द्र छोटा तलाव आदि, (आया १, १—पत्र (१) । मान, चमड़ा ; (आया १, १६—पत्र १११, ६ , ८, ८ ; पाम) ।
चिल्लिय वि [दे] १ लीन, आसक्त; (आया १, १ ; औप , स्वप्न) । देदीप्यमान ; (आया १, १ ; औप , स्वप्न) ।
चिल्लिरि पुं [दे] मराक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-भेद, (१, ११) ।
चिल्लूर न [दे] सुगत, एक प्रकार की मोटी रोटी जैसा आदि अन्न कूटे जाते है , (दे ३, ११)
चिल्लेय पुं [दे] चक्र-मार्ग, पहिये की लकीर, 'चीलो' ; (सुपा १८०) ।
चिविट } चिविड } वि [चिपिट] चिपटा, बैठा हुआ (नाक) , " चिविडनासा " (वि १ १७, ३१, गउड) ।
चिविडा स्त्री [चिपिटा] गन्ध-द्रव्य-विशेष, ७१) ।
चिविड देखो चिविट ; (सुर १३, १८१) ।
चिहुर पुं [चिकुर] केश, बाल , (पाम, सुपा १८०) ।
चीअ } चीम } देखो चोरम , (दे १, १६१ ; कर्प १०; (दियों का ढेर , " चीए चंपुल्ल व मल्लिअ कर्प (गा १०४) ।
चीड देखो चोरम , (सुर ३, ७६) ।
चीण वि [चीन] १ छोटा, क्षुद्र, "चीणचिल्लिअवत्थं (आया १, ८—पत्र १११) । २ पुं. म्लेच्छ देश , (पद्म १, १ ; स ४४३) । ३ चीन देश का निवासी, चीना , (पद्म १, १) । ४ चीनी

है क एक देश ; (स्थ) । "चंचाकूरं छुविऊणं" (महा) । 'चंचुइ [चंचु] चंचु देश में होने वाला वस्त्र-विशेष ; (पण्ण १, ४) । 'चिंचिइ न [चिञ्चिट] वृक्ष-विशेष ; (स्थ, पण्ण १७) ।

चंचु) पुं [चौलोमु क] १ कीट-विशेष, जिसके चंचुय) रुएंदुओं से वस्त्र बनता है ; (पूज १) । २ देश का वस्त्र-विशेष ; "चंचुयदुगुल्लकिसयविराइयं" (सुपा ३४ ; स्थ ; कुमा) ।

चंची स्त्री. देखो चांची = चिता ; "चंचाए पक्खित्तिं तत्तो चिंचे उत्तारो" (सुर ६, १८८) ।

चंचर [चीर] वस्त्र-फाड़, कपड़े का टुकड़ा ; (ओघ ६३ ; स्थ ११ ; सुर ३६१) । 'कंडूसगचट्ट पुं [कण्डूसकचट्ट] जैन साधुओं का एक उपकरण, गंदेलण का पात्र-विशेष (निचू १) ।

चंचइ पुं [चौरिक] चोर देखो ; (पाअ २) ।

चंचेय पुं [चौरिक] १ गच्छ में पले हुए चोरों को पकड़ने वाला भिक्षु ; २ छोटा-बड़ा कपड़ा पहनने वाली एक साधु-जाति ; (दसा १, १६—पत्र १६३) ।

चंचिया स्त्री [चौरिका] चोरी देखो ; (सुर ८, १७८) ।

चंची स्त्री [चीरी] १ वस्त्र-फाड़, वस्त्र का टुकड़ा ; "तीए चिंचयखंडाइं चीरिउं घोलेइ" (सुर ३, १७४) । २ वृक्ष-विशेष, मलिंदु ; (हम्मीर ; दे १, २६) ।

चंची स्त्री [दे] मस्ती, माटा, शस्त्र-विशेष ; (दे ३, ८) ।

चंचुअ न [चौचूर] वस्त्र, कपड़ा ; (सुर ८, १७८ ; उप ३) ।

चंचुडी स्त्री [दे] चीत्कार, चिल्लाहट, पुकार, हाय-तौबा ; (सुर १०, १७२) ।

चंचुआ स्त्री [दे] तुलसी का वृक्ष-विशेष ; (दे ३, १४ ; ८) ।

चंचुइअ [च्युत] १ मरा, जन्मान्तर में जाता । २ गिरता । ३—चइअलि ; (कम्म) । संकृ—चइऊण, चइत्ता, चइय ; (उत्त ६ ; उप ८ ; महा) । कृ—चइयव्व ; (उप ३, ३) ।

चंचुइअ [च्युत] मरा, उतरा । तुभ ; (हे. ४७) ।

चंचुइअ वि [च्युत] १ च्युत, मरा, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाता, (भग ; महा ; उप ३, १) । २ विनष्ट, "चुअचरित्तसुत्तो" (मालि १८) । ३ भ्रष्ट, पतित ; (गाथा १, ३) ।

चंचुइअ वि [च्यवित] च्यवन, मरण ; (राज) ।

चंचुच्चुअ पुं [दे] देवता, भवनेश, मुख्य का सूचक ; (दे ३, १६) ।

चंचुच्चुअ पुं [चुञ्चुक] १ म्लेच्छ देश विशेष ; २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जाति ; (इक) ।

चंचुच्चुण पुं [चुञ्चुन] म्लेच्छ जाति-विशेष, एक वैश्य-जाति ; (उप ६—पत्र ३१८) ।

चंचुचुणिआ वि [दे] १ चलित, गत ; २ च्युत, भ्रष्ट ; (दे ३, २३) ।

चंचुचुणिआ स्त्री [दे] १ गेंदुरी का प्रतिबिंब ; २ स्खलन, गति, संचलन ; ३ इसी का भेद ; ४ थूत्कार विशेष, सुरिरियम् ; ५ थूक, थूक फेंक-विशेष ; (दे ३, २३) ।

चंचुमालि वि [दे] १ मत्त, मातली, दीर्घमूछी ; (दे ३, १८) ।

चंचुलि पुं [दे] १ चन्दु, चौंच ; २ तुण्डक, पक्षि, एक हाथ का संतुदाकार ; (दे ३, २३) ।

चंचुलिअ वि [दे] १ अवनामित, निमित, २ न. वृक्ष, स्तूपदृक्ष ; (दे ३, २३) ।

चंचुलिपूर पुं [दे] तुण्डक, तुन्दु, पक्षि ; (दे ३, १८) ।

चंचुल्ल वि [दे] परिणोमित, मुखाया हुआ ; (दे ३, १६) ।

चंचुल्लिअ वि [दे] मुख हुआ, परिणोमित ; "चुल्लिआल्लं एवं, मा मन्नउ हला दुरत्तु" (सुपा ३४६) ।

चंचूसक [त्रि] कृत कौर को तोड़ कर इकट्ठा करना । वह—चंचूसंत ; (कुमा ३३१) ।

चंचोडी स्त्री [दे] थोड़ा पानी वाला अल्प जलाशय ; (दसा १, १—पत्र ३३) ।

चंचुपालय [दे] देखो चुण्णालय ;

"ठाव व सेवालु ठिमी, चंचुपालेसरे सिलायलए ।
चुंचाइए पेच्छइ, निवडंतं रयणपडलिदं"

(पउम २६, ८०) ।

चंचुय सक [चुम्ब्] चुम्बन करना । चुंचइ ; (हे ४, २३६) । वकृ—चुंचंत ; (गा १७१ ; ३१६) । कवकृ—चुंचिज्जंत ; (से १, ३२) । संकृ—चुंचिवि (अप) ; (हे ४, ४३६) । कृ—चुंचिअव्व ; (गा ८६) ।

चुंचुय न [चुम्बन] चुम्बन, चुम्बा, चूमा ; (गा २१३ ; कम्म) ।

चुंबिअ वि [चुम्बित] १ चुम्बा लिया हुआ, इत-चुम्बन, २ न. चुम्बन, चुम्बा ; (द ६, ६८)।
चुंबिर वि [चुम्बितृ] चुम्बन करने वाला, (भवि)।
चुंभल पु [दे] शेखर, अवतंस, शिरो-भूषण ; (दे ३, १६)।
चुक्क अक [भ्रंश्] १ चूकना, भूल करना। २ भ्रष्ट होना, रहित होना, वञ्चित होना। ३ सक. नष्ट करना, खण्डन करना। चुक्कइ, (हे ४, १७७, पड्)। "सो सव्वविरइवाई, चुक्कइ देसं च सव्वं च" (छिये २६८४)।
चुक्क वि [भ्रष्ट] १ चूका हुआ, भूला हुआ, विस्मृत, "चुक्कसंकेआ", "चुक्कविणअम्मि" (गा ३१८, १६६)। २ भ्रष्ट, वञ्चित, रहित, "दसणमेत्तपसण्णे चुक्का सि मुहाण वहुमाण" (गा ४६६, चउ ३६ ; सुपा ८७)। ३ मनोहित, व-ख्याल, (से १, ६)।
चुक्क पु [दे] मुष्टि, मुट्ठी, (दे ३, १४)।
चुक्कार पु [दे] आवाज, शब्द, (से १३, २५)।
चुक्कुड पु [दे] छाग, बकरा, अज, (दे ३, १६)।
चुक्ख [दे] देखो चोक्ख, (सुक्ष ४६)।
चुच्चुय } न [चुचुक] स्तन का अग्र भाग, थन का वृन्त,
चुच्चुय } (पाद १, ४, गाय)।
चुच्छ वि [तुच्छ] १ अल्प, थोड़ा, हलका, २ हीन, जघन्य, नगण्य ; (हे १, २०४, पड्)।
चुज्ज न [दे] आश्चर्य ; (दे ३, १४, सट्टि ८३)।
चुडण न [दे] जीर्णता, सड़ जाना, (ओघ ३४६)।
चुडलिअ न [दे] गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अलात की तरह खड़ा रख कर वन्दन करना, (गुभा २६)।
चुडली [दे] देखो चुडुली, (पव २)।
चुडुप्प न [दे] १ खाल उतारना, (दे ३, ३)। २ चमड़ी, त्वचा ; (पाअ)।
चुडुप्पा स्त्री [दे] त्वचा, चमड़ी, खाल, (दे ३, ३)।
चुडुल्ली स्त्री [दे] उल्का, अलात, उल्मुक, (दे ३, १५, पाअ, सुर १३, १६६ ; स १४१)।
चुण सक [चि] चुनना, पक्षीओं का खाना। चुणइ ; (हे ४,२३८)। "काओ लिंबोदलिं चुणइ" (सुक्ष ८६)।
चुण्ण पु [दे] १ आवेदन ; २ काल, कच्चा ; ३ छन्द, ४ अरुचि, भोजन की अप्रीति, ५ व्यक्तिर, गन्धद्रव्य, ६ अल्प, थोड़ा ; ७ मुष्क, त्वक्, ८ आघ्रान, सूँघना, (दे ३, ११)।

चुण्णिअ वि [दे] विदारित, धारण किया
चुण्ण सक [चूर्णय्] चूरना, टुकड़े टु
चुण्णिय ; (राज)।
चुण्ण पुन [चूर्ण] १ चूर्ण, चूर, बुकनी, (कुमा १ ; हे १, ८४ ; आचा)। २ (आचा २, १, १)। ३ धूली, रज, रेणु ; ४ गन्ध-द्रव्य की रज, बुकनी, (भग ३, ७) (हे १, ८४ ; विपा १, २)। ६ वनौषध किया जाता द्रव्य-मिश्रण ; (णाया १, १४)।
न [°कोसक] भक्ष्य-विशेष, (पिंड १, ६)
चुण्ण न [चौर्ण] पद-विशेष, गद्योत्तरवर्ती पद्य शब्द ; (दसनि २)।
चुण्णइअ वि [दे] चूर्णादित, चूरन से भरा ; कि चूर्ण फेंका गया हो वह, (दे ३, १७, पाअ)।
चुण्णा स्त्री [चूर्णा] छन्द-विशेष, वृत्त-विशेष ; (पि
चुण्णाआ स्त्री [दे] कला, विज्ञान, (दे ३, ११)।
चुण्णासी स्त्री [दे] दासी, नौकरानी, (दे ३, ११
चुण्णि स्त्री [चूर्णि] ग्रन्थ की टीका-विशेष, (
चुण्णिअ वि [चूर्णित] १ चूर चूर किया हुआ ; २ धूली से व्याप्त ; (दे ३, १७)।
चुण्णिआ स्त्री [चूर्णिका] भेद-विशेष, एक ज्ञा दृश्यमात्र, जैसे विमान का अवयव अलग २ होत (पण्ण ११)।
चुद्दस देखो चउ-द्दस, (सुर ८, ११८)।
चुन्न देखो चुण्ण ; (कुमा, टा ३, ४, प्रामू १८ १, पभा ३१)।
चुन्निअ देखो चुण्णिअ, (पाद १, ४)।
चुन्निआ देखो चुण्णिआ, (भास ७)।
चुप्प वि [दे] स-स्नेह, स्निग्ध, (दे ३, १५
चुप्पल पु [दे] शेखर, अवतंस, (दे ३, १६)
चुप्पलिअ न [दे] नया रंगा हुआ कपड़ा, (दे ३
चुप्पालय पुं [दे] गवाक्ष, वातायन, (दे ३, १०
चुरिम न [दे] खाद्य विशेष, (पव ४)।
चुलचुल अक [चुलचुलाय्] उत्कण्ठित होना, होना। वकृ—चुलचुलंत, (गा ४८१)।
चुलणी स्त्री [चुलनी] १ द्रुपद राजा की स्त्री, (१, १६, उप ६४८ टी)। २

मद्दा)। °पिय पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक चचा श्वशुर ; (उवा)।

°सी स्त्री [°चतुरशीति] चौरासी, अस्सी और चार, ८४, मद्दा ; जी ४७)। "चुलसीइ नागसुवन्नाणं बावत्तरीए पुराणं" (भग)।

°सीइ देखो चुलसी ; (पउम २०, १०२ ; जं २)।

°सेणिया स्त्री [°चुलिकावाला] क्षुद्र-विशेष ; (पिंग)।

°सुय पुं [°चुलुक] चुल्लू, पात्र, एक हाथ का संपुटाकार ; (दे ३, १८ ; सुपा २१६ ; प्रासू ६७)।

°सुल अक [स्खन्द्] फरकना, थोड़ा हिलना। °सुलइ ; (हे ४, १२७)।

°सुलिअ वि [स्खन्दित] १ फरका हुआ, कुछ हिला हुआ, २ न. स्फुरण, स्पन्दन ; (पाअ)।

°सुण पुं [दे] ठग, अज, बकरा ; (दे ३, १६)।

°सुल पुं [दे] १ शिशु, बालक ; २ दास, नौकर ; (दे ३, १२)। ३ वि. छोटा लघु ; (ठा २, ३)। °ताय पुं °तात] पिता का छोटा भाई, चाचा ; (वि ३२६)।

°पिउ पुं [°पितृ] चाचा, पिता का छोटा भाई ; (विपा १, ३)। °माउया स्त्री [°मातृ] १ छोटी माँ, माता की छोटी सपत्नी, विमाता-विशेष ; (ठा २६४ टी ; पाया १, १ ; विपा १, ३)। २ चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री ; (विपा १, ३ —पत्र ४०)। °सयग, °सयय पुं [°शतक] भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासकों में से एक ; (उवा)। °हिमवंत पुं [°हिमवन्] छोटा हिमवान् पर्वत, पर्वत-विशेष ; (ठा २, ३ ; सम १२ ; इक)। °हिमवंतकूड न [°हिमवत्कूट] १ क्षुद्र हिमवान् पर्वत का शिखर-विशेष; २ पुं. उसका अधिपति देव-विशेष; (जंबू)। °हिमवंतगिरिकुमार पुं [°हिमवद्गिरिकुमार] देव-विशेष, जो क्षुद्र हिमवत्कूट का अधिष्ठायक है ; (जं ४)।

°हुल्लग [दे] देखो चोल्लक ; (भाक)।

°हुल्लि) स्त्री [°चुल्लि, °ल्ली] चूल्हा, जिसमें आग रख कर
°हुल्ली) रसोई की जाती है वह; (दे १,८७; सुर ३,१०३)।

°हुल्ली स्त्री [दे] शिशा, पाषाय-खण्ड ; (दे ३, १६)।

°हुल्लोडय पुं [दे] बड़ा भाई; (दे ३, १७)।

°हूम पुं [दे] स्तन-शिखा, थन का अग्र भाग ; (दे ३,१८)।

°हूम पुं [°चूत] १ वृक्ष-विशेष, आम, आम का पाठ ; (पउम ; मग; सुर ३, ४८)। २ देव-विशेष ; (जीव ३)।

°चइंसग न [°चतंसक] विमान का अवतंस-विशेष ; (सम)। °चइंसा स्त्री [°चतंसा] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; जीव ३)।

°चूआ स्त्री [°चूता] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष ; (इक ; ठा ४, १)।

°चूड पुं [दे] चूहा, बालु-भूषय, वलभावासी ; (दे ३, १८ ; ७, ५२ ; ५६ ; पाअ)।

°चूडा देखो चूला; (सुर २, २४१ ; गउड ; पाया १,१ ; सुपा १०४)।

°चूडुल्लअ (अप) देखो चूड ; (हे ४, ३६६)।

°चूर सक [°चूरय्, °चूर्णय्] खंड करना, तोड़ना, टुकड़े टुकड़े करना। °चूरेमि ; (धर्म ६ टी)। भवि—°चूरइस्सं ; (वि ५३८)। वकृ—°चूरंत; (सुपा २६१ ; ५६०)।

°चूर (अप) पुं [°चूर्ण] चूर, मुष्टुर ; "जिह गिरसिंगहु पडिम सिल,;भन्नइ चूह कोर" (हे ४, ३३७)।

°चूरिअ वि [°चूर्ण, °चूर्णित] चूर चूर किया हुआ, टुकड़े टुकड़े किया हुआ ; (भवि)।

°चूल देखो चूला। °मणि न [°मणि] विद्याधरों का एक नगर ; (इक)।

°चूलअ [दे] देखो चूड ; (नाट)।

°चूला स्त्री [°चूडा] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा ; (पाअ) । २ शिखर, टोंच; "भवि चउह मेरुचूला" (उत्त ७२८ टी)। ३ मयूर-शिखा ; ४ कुक्कुट-शिखा ; ५ शेर की केसर ; ६ कुंभ वगैरः का अग्र भाग ; ७ विभूषण, अलंकार ;

"तिविहा य दव्वचूला, सचित्ता मीसगा य अच्चित्ता।
कुक्कुड सीह मोरसिहा, चूलामणि अग्गकूडादी ॥
चूला विनूसणंति य, सिहरंति य होंति एगट्ठा" (निचू १)।

८ अधिक मास ; ९ अधिक वर्ष ; १० ग्रन्थ का परिशिष्ट ; (दसचू १)। °कम्म न [°कर्मन्] संस्कार-विशेष, मुण्डन ; (भावन)। °मणि पुंस्त्री [°मणि] १ सिर का सर्वोत्तम आभूषण विशेष,; मुकुट-रत्न, शिरो-मणि ; (औप ; राय) । २ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ ; "तित्थचूलामणि नमो ते" (धर्म १)।

°चूलिय पुं [°चूलिक] १ अनार्य देश-विशेष ; २ उस देश का निवासी ; (पउम १, १)। ३ ऋत. संख्या विशेष, चुलिकांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (इक ; ठा ३, ४) स्त्री—°या ; (राय)।

मक [चेष्ट्] प्रयत्न करना, आचरण करना। चेट्ठ—माण ; (कप्प)।
देवा चिट्ठ=स्था ; (दे १, १७४)।
ा न [स्थान] स्थिति, अवस्थान ; (कप्प ४)।
सा [चेष्टा] प्रयत्न, आचरण; (ठा ३, १ ; सुर २, ९)।
२ देवी [चिट्ठिय=चेष्टित ; (औप ; महा)।
पुं [दे] बाल, कुमार, शिशु ; (दे ३, १० ; णाया १ ; सूत्र १)।
पुं [चेट, °क] १ दास, नौकर, (औप, कप्प)। २ वृत्त-विशेष, वैशालिका नगरी का एक स्वनामप्रसिद्ध राजा; (भग ७, ९; महा)। ३ एक देवता, देव की एक जघन्य जाति ; (सुपा २१७)।
ा स्त्री [चेटिका] दासी, नौकरानी, (भग ९, ३३ ; ६)।
ा स्त्री [चेटी] ऊपर देखो ; (आचार)।
ा स्त्री [दे] कुमारी, बाला, लड़की; (पाअ)।
न [चैत्य] चैत्य-विशेष ; (षड्)।
पुं [चैत्र] १ मास-विशेष, चैत्र मास ; (सम २८ ; १, १४२)। २ जैन मुनियों का एक गच्छ ; (कुछ ६)।
देखो चेइ ; (सण)।
स्स पुं [चेदीश] चेदि देश का राजा ; (सण)।
ा वि [चेतक] ज्ञाता, देने वाला ; (ठा ६६७)।
ण पुं [चेतन] १ आत्मा, जीव, प्राणी ; (ठा ४, ४)। वि. चेतना वाला, ज्ञान वाला ; " भुवि चेदणं च किमस्स " (सिरि १८४६)।
णा स्त्री [चेतना] ज्ञान, चेत, चैतन्य, सुध, ख्याल; (आव ; सुर ४, २४६)।
ण्ण न [चैतन्य] ऊपर देखो ; (सिरि ४७६ ; सुपा २० ; सुर १४, ८)।
स देखो चेअ=चेतस् ;
" ईयदासेस आविट्ठं, कतुमावित्तचेयसे।
से अत्तरायं चेएइ, महामोहं पकुव्वइ " (सम ६१)।
ा देखो चेयणा , " पत्तेक्समायाओ, न रयणित्तं व समुदए पा " (सिरि १६६२)।
ण न [चेल] वस्त्र, कपड़ा ; (आचा ; औप)।
ण्ण न [°कर्ण] व्यञ्जन-विशेष, एक तरह का पंखा ; (स ६४६)। °गोल न [°गोल] वस्त्र का गेंद, कन्दुक ; (सूत्र १, ४, २)। °घर न [°गृह] तम्बू, पट-मण्डप, शामियाना ; (स ६३७)।
चेलय न [दे] तुला-पात्र; " दिट्ठीतुलाए भुवणं, तुलंति जे चित्तचेलए निहियं " (वज्जा ६६)।
चेलिय देखो चेल; " रयणकंचणचेलियचंदुज्जलमसरिया" (पउम ६६, २६ ; आचा)।
चेलुक्ख न [दे] मुसल, मूसल ; (दे ३, ११)।
चेल्ल } [दे] देखो चिल्ल (दे) ; (पउम ६७, १३;
चेल्लय } १६ ; स ४६६ ; दसनि १ ; उत्त २६८)।
चेल्लग } [दे] देखो चिल्लग ; (पव्व १, ४—पत्र ६८;
चेल्लय } तो ३३)।
चेव अ [एव, चैव] १ अवधारण-सूचक अव्यय, निश्चय-दर्शक शब्द ; " जो कुणइ परस्स दुहं पावइ तं चेव सो अप्पं-पुयं " (प्राप्र २६ ; महा)। " अवहारणे चेवसद्दो वं " (सिरि ३६६५)। २ पाद-पूरक अव्यय ; (पउम ८, ८८)।
चेव अ [इव] सादृश्य-द्योतक अव्यय ; " पेच्छइ गयहरवसहं सरसरिवं चेव तेएसं" (पउम ३, ४; उत्त १८, ३)।
चो देखो चउ ; (हे १, १७१ ; कुमा ; सम ६० ; औप; भग ; णाया १, १ ; १४ ; विपा १, १ ; सुर १४, ६७)। °आला स्त्री [°चत्वारिंशत्] चालीस और चार, ४४ ; (सिरि २३०४)। °चट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौंसठ, ६४ ; (कम्म)। °चत्तरि स्त्री [°सप्तति] :स्तर और चार, ७४ ; (सम ८४)।
चोअ सक [चोदय्] १ प्रेरणा करना। २ कहना। चोएइ (उत्त ; स १५)। कवक—चोइज्जंत, चोइज्जमाण; (सुर २, १० ; णाया १, १६)। संकृ—चोइऊण ; (महा)।
चोअग वि [चोदक] प्रेरक, प्रश्न-कर्ता, पूर्व-पक्षी ; (अणु)।
चोअण न [चोदन] प्रेरणा, प्रेरणा ; (भग ३६ ; उत्त ३८)।
चोइअ वि [चोदित] प्रेरित, (स १५ ; सुपा १६० ; औप; महा)।
चोक्क [दे] देखो चुक्क = (दे), (महा)।

चोक्ख वि [दे] चोखा, शुद्ध, शुचि, पवित्र ; (पाया १, १ ; दा १४२ टी , सूद १ ; भग ६, ३३ ; राय ; औप)। चोक्खा स्त्री [चोक्षा] परिव्राजिका-विशेष, इस नाम की एक मन्यासिनी ; (पाया १, ८)।

चोज्ज न [दे] आश्चर्य, विस्मय ; (दे ३, १४ ; सुर ३, ४ ; सुपा १०१ ; सट्ठि १६६ ; महा)।

चोज्जय न [चौर्य] चोरी, चोर-कर्म , "तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबंभसेवणं " (उत्त ३५, ३ ; पाया १, १८)।

चोज्जा न [चोद्य] १ प्रश्न, पृच्छा , २ आश्चर्य, अद्भुत, ३ वि. प्रेरणा-योग्य , (ठा ४•६)।

चोट्टी स्त्री [दे] चोटी, शिखा , (दे ३, १)।

चोड्ड न [दे] कुल, पक्ष और पत्नी का बन्धन , (विक १८)।

चोड्ड पु [दे] विल्व, वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़; (दे ३, १६)।

चोप्पण न [दे] १ कलह, झगड़ा ; (निचू २०)। २ इन्द्रियदमन आदि आत्म्य धर्म , (सूम २, २)।

चोप्पल } पुंन [दे] प्रतोद, आयत-दण्ड, (दे ३, १६; पाअ)।
चोप्पलय }

चोप्पड [दे] देखो चोय ; (पव्व २, ६—पत्र १६०)।

चोप्पडग देखो चोप्पय ; (आचा ४ भा)।

चोप्पड सक [अभ्यञ्ज्] स्निग्ध करना, घी तेल वगैरः लगाना। चोप्पडइ, (दे ४, १६१) । वकृ—चोप्पडमाण ; (सुपा)।

चोप्पडग न [अभ्यङ्ग] घी, तैल वगैरः स्निग्ध वस्तु ; " मेद-चसवस चोप्पडगाईहिं " (सुपा ४३०)।

चोप्पाल न [दे] मण्डपस्थ, बरामदा, (अ १)।

चोप्पेहुच्च वि [दे] स्निग्ध, स्नेह वाला, प्रेम-युक्त, (दे ३, १६)।

चोय } न [दे] त्वचा, छाल, (पव्व २, ६—पत्र १६०
चोयग } टी)। २ गन्ध द्रव्य- का चूरा ; (निचू १६ ; अणु १, १, १०)। ३ अन्य-अन्य विशेष ; (अणु , जीव १ ; राय)।

चोयग देखो चोयय ; (कप्पि)।

चोयणा [चोदना] प्रेरणा , (ठा ११ ; उत्त १४८ टी)।

चोर पु [चोर] तस्कर, एसे का चन चुराने वाला, (दे ३, ११० , पव्व १, ३)। चोरंड पु [चोरण्ड] सिंह में रहने वाला , (सो १०)।

चोरंकार पु [चौर्यकार] चोर, तस्क
थूलमदत्तं तयं वज्जे " (सुपा ३३४)
चोरग वि [चोरक] १ चुराने वाला
विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४)।
चोरण न [चोरण] १ चोरी, चुराना ; (
२ वि. चोर, चोरी करने वाला ; (भवि)
चोरली स्त्री [दे] श्रावण मास की कृष्ण च
१६)।
चोराग पु [चोराक] सन्निवेश-विशेष, इस न
गाँव ; (आवम)।
चोरासी } देखो चउरासी , (पि ४३६ ;
चोरासीइ }
चोरिअ न [चौर्य] चोरी, अपहरण, (हे १,
१ ; आचा ६१ ; सुपा ३७१)।
चोरिअ वि [चौरिक] १ चोरी करने वाला, (
२ पु. चर, जासूस ; (पह १, १)।
चोरिअ वि [चोरित] चुराया हुआ , (सिरि ८१
चोरिआ स्त्री [चौर्य, चौरिका] चोरी, अपहरण, (
कुल, हे १, ३१ , सुर ६ , १७८)।
चोरिक्क न [चौरिक्य] ऊपर देखो , (पह १,
चोरी स्त्री [चोरी] चोरी, अपहरण , (ठा १०)।
चोल वि [दे] १ वामन, कुब्ज , (दे ३, १८)।
पुराण-चिर, जिरण ; (पव ६१)। ३ न वस्त्र
मञ्जिष्ठा ; (उत्त ६, ४)। °पट्ट पु [पट्ट]
का कपड़ा-वस्त्र ; (ओघ १४)। °य पु [क]
रंग ; (उत्त ६, ४)।
चोल पु [चोल] देश-विशेष, द्रविड और कर्णाट
देश ; (सिंह ; सण)।
चोलग न [दे] कवच, वर्म , (भाट)।
चोलग } न [चोल, क] संस्कार-विशेष, मुण्डन,
चोलय } चूलाकर्म बालायं चोलयं नाम " (उत्त
१, १)।
चोल्लुक्क देखो चालुक्क , (सी ६)।
चोल्लोयणया } न [चूलोपनयन] १ चूलाकर्म
चोल्लोयणय } विशेष, मुण्डन, (आचा १, १—अ
चोल्लोवणयण } २ शिखा धारण, चूडा धारण,
११—पत्र ३४४ , औप)।
चोल्लक [दे]

कौसल्या। पुं [दे] १ कौसल; (उत्त ३१ ; भाग, कौसल्या) पुं ३ ' । २ पु. पुरुष, राजा, नाम (उत्त ३१)।

कौसल्या पुं [दे] कौसल, कौसल, कौसल, " या ब्रह्म स्वयमेव कौसल्या " (कौसल्या पुत्र ३ ') ।

कौसल्यक देखो कौसल्य = मनु । कौसल्या, (भट्)।

क्य क [क्य] आवश्यक-पूर्वक करना, (कि २, १२८, इत्त, भट्)।

क्रियय देखो क्रियाक्रिय, (कि २, १२८ ; पृत्त ।।

क्ष्वेड्य, देखो क्ष्वेडाक्ष्य । कि २३, (' ११ ')।

क्ष्वेड्य ।

इस निघण्टुसमुद्देशमें अकारादिक्रमसे वर्णोंके शब्द लिखे हैं।

ख

ख ६ [ख] १ शून्य-वाचक अव्यय शब्द-विशेष, (अम, प्रभा)। २ आकाश, स्वर्ग ; " ख ख में ब्रह्मांड ख ख में " (कबीर)।

ख वि. क [खन्] खनन-क्रिया, खोद, " ख ख क्रियाको क्रिया-सम्बन्धिनी " (भट्ट ६ ; भट्ट ११, भाग १, ८)। 'उत्खनन' वि ['उत्खननन'] खोद कर निकाल हुआ ; (पृत्त १०६, ४८)। 'कखन' न ['कर्मन्'] ७ प्रकार के कर्म. ये प्रकारों के कर्मोंके हैं, यथा—खनन, खनन, खनन, खनन, इत्त और खनित्र, (निघ् २३)। 'खकाय' न ['काय'] ७ प्रकार के जीव, पृथिवी, अप्, तेज, वायु, वन स्पति और त्रस जीव, (भट्ट ; पंच ११)। 'खुण, 'खुण वि ['खुण'] खुदा ; (ख ६, वि २७०)। 'खचरा पुं ['चरण'] देव, स्वर्ग; (इत्त)। 'खजीव-निकाय पुं ['जीवनिकाय'] देखो 'खकाय; (भट्ट)। 'खनन, 'खनन' न ['खनित्र'] खनन-क्रिया, खनने, ११ ' ख ६८, खनि १०-। 'खनिन' संख ['त्रिंशत्'] खनन-क्रिया तीस ३१ . ख । 'खनिनम' वि ['त्रिंशत्तम'] उनतीसवाँ, पृत्त ८१ ४३, भाग ३१ ' इस वि ब ['पंचत्रिंशत्'] खनन, खनन। 'इसहा म ['पंचत्रिंशत्'] खनन प्रकार का ; (ख ४)। 'द्विनि न ['द्विनि'] दो खिन्न—पूर्ण, खनित, खन्न, खनित, खन्न और खनित्र ; (भट्ट)। 'द्वा म ['द्वा'] दो प्रकार का ; (ख्य १, ३८)। 'नेखा, 'नुखा, 'नुखड़ देखो 'नखड़ा; (ख्य ३, ४ ; ११ ; ख्य ४०)। 'नखड़य वि ['नखड़'] खनने, ११ वें ; (ख्य ११, ४०)। 'पखन, पखन संख ['पञ्चाशत्'] खनन, ११ ; (ख्य ; ख्य ४१)। 'पखम वि ['पञ्चाशत्तम'] खनने ; (ख्य ११, ४८)। 'भाख पुं ['भाग'] खनने हिस्सा ; (वि १४०)। 'भासा स्त्री ['भाषा'] प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, गौणसेनी, वैदर्भिका और मागधी ये छः भाषाएं ; (रंभ)। 'भासिय, 'भासिय वि ['षाण्मासिक'] छः मास में होने वाला, छः मास संबन्धी ; (ख्य २१ ; भौग)। 'खसिम वि ['वार्षिक'] एक वर्ष की उम्र वाला; (वर्ष २१)। 'खीस देखो 'खवीस, (विंश)। 'खिह वि ['विध'] एक प्रकार का ; (ख्य ; ख्य ३)। 'खीस संख ['विंशति'] खनने, बीस और दो ; (ख्य ४१)। 'खीसम वि ['विंशतितम'] १ खनने बाद तिनका उत्तरा ; (पत्त १, १)। 'खहि स्त्री ['यष्टि'] खनन-क्रिया, खन और दो ; (ख्य २, १८)। 'खत्थरि स्त्री ['खनति'] खिन; (ख्य २, १२)। 'हा देखो 'दा ; (ख्य १, ६ ; ८)।

खं देखो खवि = खवि ; (ख १२)।

खइय वि [खचित] जड़ा, मण्डित, विभूषित; (हे २, १२ ; षट्)।

खइल) वि [दे] विरल, थोड़ा, दुर्लभ्य ; (षिंग ; हे ३, खइल्ल) २४ ; ख ३२० ; वज्जा ४ ; पाम ; दुआ)।

खइल्ल वि [दे] खा, खाया, खाया ; (हे ३, २५)।

खइल्ल पुं [खदिर] १ खैर, खैरा, खाख ; (ख १ ; षट्) १ खैर, खदिर ; (हे २, १११ ; षट्)। २ अकाश, आकाशन; (ख १ ; ठ २, १)।

खइलत्थ वि [खदिरस्थ] १ अखंडित, संपूर्ण अवयव से विशिष्ट ; २ खण्ड-रहित, अखण्ड ; (ठ ८, १ ; ६ ; ७)।

खइलदूअ देखो खदूअ, (राज, विपे २६०-)।

खंडुई स्त्री [दे] अविस्तृत, खंड-विशेष, देखाँच ; (हे २, १४)।

छंट पु [दे] छींटा, जल का छींटा, जल-कण, २ वि. गीला, जल्दी करने वाला; (दे २, ३३)।

छंट सक [सिच्] सींचना। छंटइ; (सुपा २६८)।

छंटण न [सेचन] सिंचन, सिंचना; (सुपा १३६; हुमा)।

छंटा स्त्री [दे] देखो छंट; (पाम)।

छंटिअ वि [सिक्त] सींचा हुआ; (सुपा १३८)।

छंड देखो छड्=मुच्। छंडइ; (आरा ३२; मरि)।

छंडिअ वि [दे] छन्न, ढका, (षड्)।

छंडिअ वि [मुक्त] छोड़ा हुआ, त्यक्त; (आरा; मरण)।

छंद सक [छन्द्] १ चाहना, वाञ्छना। २ अनुज्ञा देना, अर्जी देना। ३ विसर्जन देना। कर्म—

"अवरण्हकालसमए वारिणिवेहि सुविसाला।
कज्जं कुणिहिइ व छंदिज्जसावि मेच्छंति" (उव)।

भवि—छंदिम; (उव १०)।

छंद पुन [छन्द] १ इच्छा, मरजी, अभिलाषा; (आचा, ओ २०१, स २१६, उव, प्राप्र ११)। २ अभिप्राय, आशय, (आचा, भग)। ३ वशता, आधीनता; (उव ४; हे १, ११)। °चारि वि [°चारिन्] स्वच्छन्दी, स्वैरी, (उव ८६ टी)। °यत्त वि [°यत्] स्वैरी, (मरि)। °णुवत्तण न [°नुवर्तन] मरजी के अनुसार बरताव; (उव १४)। °णुवत्तय वि [°नुवर्तक] मरजी का अनुसरण करने वाला, (आचा १, ३)।

छंद पुन [छन्दस्] १ स्वच्छन्दता, स्वैरिता, (उव ४)। २ अभिप्राय, इच्छा, ३ आशय, अभिप्राय, (सुअ १, १, १, आचा, हे १, ११)। ४ छन्द-शास्त्र, (सुपा १८०, प्रौप)। ५ वेद, छन्द, (कप्पा ४)। °णुग वि [°ग] छन्द का अनुकरण, (सूत्र)।

छंदण न [वन्दन] वन्दन, प्रणाम, नमस्कार; (सुपा ४)।

छंदणा स्त्री [छन्दना] १ निमन्त्रण; (पंचा १२)। २ प्रार्थना, (कुप्र १)।

छंदा स्त्री [छन्दा] पंचमी का एक भेद, आगे का दूसरे के अभिप्राय जितने के लिए हुआ संलाप; (ठा २, १; पव्वा)।

छंदिअ वि [छन्दित] अनुज्ञात, अनुज्ञा, (भवि १८०)। २ निमन्त्रित, (सिरि १)।

°इच्छ वि [°इच्छ] स्वच्छन्दी, (आचा, प्रौप ११६)।

छक्क वि [षट्क] छक्का, छ का समूह, "छक्कसमं भरकता" (सुपा ५१६; सम ३१)।

छग देखो छ=षष्; (कम्म ४)।

छग न [दे] पुरीष, विष्ठा; (पव्व १, ३—गा ४; भग ७२)।

छगण न [दे] गोमय, गोबर; (उत्त ३६ टी, पव्व १; सिरि १२)।

छगणिया स्त्री [दे] गोइंठा, कंडा; (अनु १)।

छगल पुस्त्री [छागल] अज, बकरा; (पव्व १, भोज)। °स्त्री; (दे २, ८४)। °पुर [°पुर] नगर-विशेष; (उप १०)।

छग्ग देखो छक्क; (दं ११)।

छग्गुरु पुं [षड्गुरु] १ एक सौ और अस्सी डिग्री उपवास; २ तीन दिनों का उपवास; (उप २, १)।

छच्छुंदरपुन [दे] छुछुन्दर, मूषे की एक जाति, (पव्व १)।

छज्जअ सक [राज्] शोभना, चमकना। छज्जए; (हे ४, २५६)।

छज्जिअ वि [राजित] शोभित, चमका, (कुप्र)।

छज्जिआ स्त्री [दे] पुत्र-पात्र, बघोरी, (ण ३३)।

छट्ठा [दे] देखो छंटा, (षड्)।

छट्ठ वि [षष्ठ] १ छठवाँ, (सम १०४, हे १, १११) २ न. लगातार दो दिनों का उपवास, (सुर ४, ३१)। °क्खमण न [°क्षमण, °क्षपण] लगातार दो दिनों का उपवास; (भग ६, उप पृ ३४१)। [°क्षपक, °क्षायक] दो दो दिनों का लगातार उपवास करने वाला साधु, (उप ६२२)। °भत्त न [°भक्त] लगातार दो दिनों का उपवास, (पंचा ३)। [°भक्तिक] लगातार दो दिनों का उपवास करने वाला, (पव्व १, १)।

छट्ठी स्त्री [षष्ठी] १ तिथि-विशेष, (सम २३)। विभक्ति-विशेष, संबन्ध-विभक्ति, (भवि, हे १, ११)। २ जन्म के बाद छठवें दिन किया जाता उत्सव विशेष, (सुर १६,

छड सक [मा+रुह्] आरूढ होना, चढ़ना। छडइ; (हे ४, ११)।

छडच्छर पुं [दे] स्वर, अक्षर, (दे १, ११)।

छडछडा स्त्री [छटच्छटा] सूर्य होने के समय होने वाले प्रकाश का अल्पतर प्रकाश, (पव्व १, ५ पव्व ११६)।

छडा स्त्री [दे] शिशु, बिल्ली, (दे ३, ३०)।

छड्डा सी [छड्डा] १ समूह, परम्परा ; (सुर ४, २४३ ; वा १२) । २ छींड़ा, पानी का बुंद ; (पाम) ।

छड्डाल वि [छड्डावन्] छड्डा वाला ; (पउम ३६,१८) ।

छड्डुअ [छर्दय्, मुच्] १ वमन करना । २ छोड़ना, त्याग करना । ३ टालना, गिराना । छड्डइ ; (हे ३, ३६ ; ४, ६१ ; महा ; उव) । कर्म—छड्डिज्जइ ; (वि २६१) । वकृ—छड्डंत ; (भग) । संकृ—छड्डेउं मुणीए सोयं जह पिय दुरुज्झआरो" (विस १४७१), छड्डित्तु ; (वव २) ।

छड्डण न [छर्दन, मोचन] १ परित्याग, विमोचन ; (उप १७६ ; संघ ८६) । २ वमन, वान्ति ; (विपा १, ८) ।

छड्डण न [छर्दन, मोचन] १ छुड़वाना, मुक्त करवाना । २ वमन कराना । ३ वमन कराने वाला ; ४ छुड़ाने वाला ; (कुमा) ।

छड्डय वि [छर्दक, मोचक] त्याग कराने वाला, त्यागक ; (दे २, ६२) ।

छड्डावण देखो छड्डण ; (सुपा ६१७) ।

छड्डाविय वि [छर्दित, मोचित] १ वमन कराया हुआ ; २ छुड़वाया हुआ ; (भावप ; हे १) ।

छड्डि स्त्री [छर्दि] वमन का रोग ; (पउ ; हे २, ३६) ।

छड्डि स्त्री [छर्दिस्] छि, धृग ; 'ओ जग्गह परछड्डि, सा निवडाए कि सुपह' (महा) ।

छड्डिय) वि [छर्दित, मुक्त] १ वान्त, वमन
छड्डियल्लिय) किया हुआ । २ त्यक्त, मुक्त ; (विसे २६०६ ; दे १, ४६ ; औप) ।

छण सक [क्षण्] हिंसा करना । छंए ; (आचा) । प्रयो—छणावेइ ; (वि ३१८) ।

छण पुं [क्षण] १ उत्सव, मद ; (हे २, १०) । २ हिंसा ; (आचा) । °चंद पुं [चन्द्र] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्रमा ; (स ३७१) । °ससि पुं [शशिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ ; (सुपा ३०६) ।

छणग न [क्षणन] हिंसन, हिंसा, (आचा) ।

छणिंदु पुं [क्षणेन्दु] शरद ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्र ; (सुपा ३३ ; ४०४) ।

छण्ण वि [छन्न] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ ; (कुमा १, प्राप) । २ आच्छादित, ढका हुआ ; (गा १८०) । ३ न माया, कपट, (सुम १, २, २) । ४ निर्जन, विजन, रहस् ; ५ क्रि. वि. गुप्त रीति से, प्रच्छन्न रूप से ;

"सं छण्णं मायरियं, तइया जणपाए जोव्वणमएण ।
तं पडिव(? वडि) ज्जइ इहिं सुणहिं सीलं चयंतेहिं"
(उप ७२८ टी) ।

छण्णालय न [द्वेषणालक] त्रिकाष्ठिक, तिपाई, संन्यासियों का एक उपकरण ; (भग ; औप ; णाया १, १) ।

छत्त न [छत्र] छाता, आतपत्र ; (णाया १, १ ; प्राप्र ६२) । °धार पुं [धार] छाता धारण करने वाला नौकर ; (जोर ३) । °पडागा स्त्री [°पताका] १ छत्र-युक्त ध्वज ; २ छत्र के ऊपर की पताका ; (औप) । °पलासय न [°पलाशक] कृतमंगला नगरी का एक चैत्य ; (भग) । °भंग पुं [भङ्ग] राज-नाश, वृत्त-मरण ; (राज) । °हार देखो °धार ; (भावप) । °हच्छत्त न [°तिच्छत्र] १ छत्र के ऊपर का छाता ; (सम १३७) । २ पुं. ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध योग-विशेष ; (सुज्ज १२) ।

छत्त पुं [छात्र] विद्यार्थी, अभ्यासी ; (उप पृ ३३१ ; १६६ टी) ।

छत्तइया स्त्री [छत्रान्तिका] परिषद्-विशेष, सभा-विशेष ; (ठा ३ १) ।

छत्तच्छय (अप) पुं [सप्तच्छद] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन ; (सण) ।

छत्तवन्न न [दे] घास, तृण ; (पाम) ।

छत्तवण्ण देखो छत्तिवण्ण ; (प्राप्र) ।

छत्ता स्त्री [छत्रा] नगरी-विशेष ; (भावप) ।

छत्तार पुं [छत्रकार] छाता बनाने वाला कारीगर ; (पव्व १) ।

छत्ताह पुं [छत्राभ] वृक्ष-विशेष ; "पग्गहइ तिसंझं, साहे पियए सिवंजुत्ताहे" (सम १६२) ।

छत्ति वि [छत्रिन्] छत्र-युक्त, छाता वाला ; (भास ३३) ।

छत्तिवण्ण पुं [सप्तपर्ण] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन, (हे १, २६६ ; कुमा) ।

छत्तोय पुं [छत्रौक] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष, (पव्व १—पत्र ३६) ।

छत्तोव पुं [छत्रोप] वृक्ष-विशेष ; (औप ; अंत) ।

छत्तोह पुं [छत्रौघ] वृक्ष-विशेष ; (औप ; पव्व १—पत्र ३१ ; भग) ।

छद्दण देखो छड्डण ; (राज) ।

छद्दी स्त्री [दे] शय्या, बिछौना ; (दे [illegible]) ।

छन्न देखो छण्ण ; (कप्प ; उव [illegible] ८२) ।

छप्पइगिल्ल वि [षट्पदिकावत्] यूका-युक्त, यूका वाला, (वृह ३)।

छप्पइया स्त्री [षट्पदिका] यूका, जूं; (ओघ ७१४)।

छप्पंती स्त्री [दे] लिखन-विशेष, जिसमें पद्म लिखा जाता है, (दे ३, २५)।

छप्पण } वि [दे षट्प्रक्रक] विदग्ध, चतुर, चालाक;
छप्पण्णय } (दे ३, २४ , पाम , वज्जा ६८)।

छप्पत्तिआ स्त्री [दे] १ चपत, थप्पड़, तमाचा , २ चपाती, रोटी, फुलका ;

"छप्पत्तिआवि खज्जइ, निप्पत्ते पुत्ति ! एत्थ को देसो ? । निप्पुरिसेवि रमिज्जइ, परपुरिसविवज्जिए गामे "
(गा ८८७)।

छप्पन्न [दे] देखो छप्पण्ण ; (जय ६)।

छप्पय पु [षट्पद] १ भ्रमर, भमरा, (हे १, २६६ , जीव ३)। २ वि. छः स्थान वाला ; ३ छः प्रकार का ; (विसे २८६१)। ४ न. छन्द-विशेष , (पिंग)।

छब्बय न [दे] बांस-पिटक, धो वगैरः को छानने का उपकरण विशेष , " सुइगाईमक्काइएहिं सत्तगं च नाऊणं । गालेज्ज छब्बएण " (ओघ ५५८)।

छब्भामरी स्त्री [षड्भ्रामरी] एक प्रकार की वीणा ; (णाया १, १७—पत्र २२६)।

छब्भच्छभ सक [छभच्छभाय्] 'छभ् छभ्' आवाज करना, गरम चीज पर दिया जाता पानी का आवाज। छभच्छभइ , (वज्जा ८८)।

छभं देखो छमा। °रुह पु [°रुह] वृक्ष, पेड़, दरख्त, (कुमा)।

छभलय पु [दे] सारच्छद, वृक्ष-विशेष, सतौना ; (दे ३, २५)।

छमा स्त्री [क्षमा, क्ष्मा] पृथिवी, धरित्री, भूमि , (हे २, १८)। °हर पु [°धर] पर्वत, पहाड़, (षड्)। देखो छभं।

छमी स्त्री [शमी] वृक्ष-विशेष, अग्नि-गर्भ वृक्ष, (हे १, २६६)।

छम्म देखो छउम, (हे २, १११, षड् , पउम ४०, ५, सण)।

छम्मुह पु [षण्मुख] १ स्कन्द, कार्तिकेय ; (हे १, २६६)। २ भगवान् विमलनाथ का अधिष्ठायक देव , (संति ८)।

छय न [छद] १ पर्ण, पत्ती, पत्र , (औप)। २ आवरण, आच्छादन , (से ६, ४७)।

छय न [क्षत] १ व्रण, घाव; (हे २, १७)। २ पीड़ित, क्षत , (सूम १, २, २)।

छयल्ल [दे] देखो छइल्ल ; (रंभा)।

छर पु [स्फर] मुट्ठी-मुष्टि, तलवार का हाथा ; (सण ४)। °प्पहार न [°प्रहार] मुट्ठी-दिखावा (जं २)।

छल सक [छलय्] ठगना, वञ्चना। छलिज्जेज्ज, (भवि २१३)। सह—छलिउं, छलिऊण, (महा)। हेकृ छलेउं, (भवि १४)।

छल न [छल] १ कपट, माया ; (उत्त)। २ व्याज, बहाना (पाअ ; प्रासू ११४)। ३ अर्थ-विघात, वचन-विघात का वचन-युद्ध: (सम १, १२)। °पयत्त [°प्रयत्न] छल, वचन-विघात, (सूम १, १२)।

छलंस वि [षडस्र] षट्-कोण, छह कोण वाला, (इक)।

छलण न [छलन] ठगाई, वञ्चना , (सुर ६, १८१)।

छलणा स्त्री [छलना] १ ठगाई, वञ्चना , (संबोध उत्त ७७६)। २ छल, माया, कपट ; (विसे २५४१)।

छलत्थ वि [षडर्थ] छह अर्थ वाला , (विसे ६०१)।

छलसीइ स्त्री [षडशीति] संख्या-विशेष, अस्सी और छह, ८६ , (भग)।

छलसीइ स्त्री. ऊपर देखो, (सम ६२)।

छलिअ वि [छलित] १ वञ्चित, विप्रतारित, ठगा हुआ (भवि , महा)। २ शृङ्गार-काव्य , ३ चोर का एक तस्कर-संज्ञा , (राज)।

छलिअ वि [दे] विदग्ध, चालाक, चतुर , (दे ३, ११ पाम)।

छलिअ न [छलिक] नाट्य-विशेष , (ठा ४)।

छलिअ वि [स्खलित] स्खलना-प्राप्त , (ओघ ७०५)।

छलिया देखो छालिया , " चोप्पाकूर छलियाणरइ " (महा)।

छलुअ } पु [षड्लूक] वैशेषिक मत-प्रवर्तक ऋषि (कप्प , ठा ७, विसे २२०१), " छलूएणं पयत्थोवएसणाओ छलूउत्ति " (विसे २४५५)।
छलूग }
छलूअ }

छल्ली स्त्री [दे] त्वचा, वल्कल, छाल , (दे ३, २१, १३ , गा ११६ , ठा ४, १ , णाया १, १३)।

छल्लुय देखो छलुअ , (पि १४८)।

छव देखो छिव। छवेमि , (सुपा ६७१)।

छवडी स्त्री [दे] चर्म, चाम, चमड़ा, (दे ३, २१)।

वे स्त्री [छवि] १ कान्ति, तेज ; (कुमा ; पाम) । २ रंग, वर्ण ; (पउ १, १) । ३ चर्म, चमड़ी ; (पाम; सण ३) । ४ अवयव ; (पंडि) । ५ अंगों, वर्णांगों; (उप ४, १) । ६ अलङ्कार-विशेष ; (अणु) । °च्छेअ [°च्छेद] अङ्ग के विच्छेद, अवयव-कर्तन ; (पंडि) । °च्छेयण न [°च्छेदन] अंग-च्छेद ; (पउ १, १) । °त्ताण न [°त्राण] चमड़ी का आच्छादन, कवच, वर्म ; (उत्त २) ।

छेअ वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ ; (आ २७) ।

छेअ [दे] देखो छइअ ; (राज) ।

छेअ वि [दे] सिद्ध, आच्छादित ; (गउड) ।

छेअ (अप) देखो छ=पञ्च ; (वि ४४१) ।

छेअर वि [पञ्चसप्तत] छहत्तरवाँ, ७६ वाँ ; (पउम ६, २७) ।

छेइअ वि [छादित] आच्छादित, ढका हुआ ; (पउम १३, ६४ ; कुमा) ।

छेइर वि [छादयत्] छाया वाला, कान्ति-युक्त ; (हे १, १६८ ; षड्) ।

छेल्ल पुं [दे] १ प्रवीण, दीनक; "जंकरणं तह छेल्लत्थं च तं सुणेज्जाहि" (वव ७ ; दे ३, ३६) । २ वि. सदृश, तुल्य, तुल्य ; ३ ऊर्ध्व, ऊपरी ; (दे ३, ३६) । ४ सुन्दर, भला, रुचिकर ; (दे ३, ३६ ; षड्) ।

छेव देखो छाया ; (षड्) ।

छो स्त्री [दे] माता, देवी, देवता ; (दे ३, २६) ।

छोलिय वि [छाद्मस्थिक] केवलज्ञान उत्पन्न होने पहले की अवस्था में उत्पन्न, सर्वज्ञता की पूर्वावस्था से सम्बन्ध रखने वाला ; (सम ११ ; पणण ३६) ।

छोवग वि [छायोपग] १ छाया-युक्त, छाया वाला ; (आचा) ; २ पुं. सेवनीय पुरुष, माननीय पुरुष ; (ठा ४, ३) ।

छोल वि [छागल] १ अज-संबन्धी ; (ठा ५, ३) । पुं. अज, बकरा ; स्त्री— °ली ; (वि २३१) ।

छोलिय पुं [छागलिक] छगों से आजीविका करने वाला, अजा-पालक ; (विपा १, ४) ।

छ्म न [दे] १ धान्य वगैरः का मरडा ; (दे ३, ३४) । गोबर, गोबर ; (दे ३, ३४ ; सुर १२, १४ ; दर्शा ७ ; जीव १) । ३ वस्त्र, कपड़ा ; (दे ३,३४ ; जीव३) ।

छ्मण न [दे] छन्ना, गालन ; " मुणिउदएणअउअछ्मणाइं दयामो होइ न्हाणाइं" (संदि ४६ टी) ।

छाणवइ (अप) देखो छण्णवइ ; (सिरि) ।

छाणी स्त्री [दे] १ धान्य वगैरः का मरडा ; २ वस्त्र, कपड़ा ; (दे ३,३४) । ३ गोबर, गोबर ; (दे ३, ३४ ; धर्म २) ।

छाय सक [छादय्] आच्छादन करना, ढकना । छायइ ; (हे ४, २१) । वकृ—छायंत ; (पउम ७, १४) ।

छाय वि [दे] १ कुण्ठित, भूथा ; (दे ३, ३३ ; पाम उप ७६८ टी ; ओघ २६० भा) । २ कृश, दुर्बल ; (दे ३, ३३ ; पाम) ।

छायंसि वि [छायावत्] कान्तिमान्, तेजस्वी ; (सम १५२) ।

छायण न [छादन] आच्छादन, ढकना ; (सिरि ; महा ; सं ११) ।

छायणिया) स्त्री [दे] डेरा, पड़ाव, छावनी ; " तो तत्थेव
छायणी) ठिओ एसो कुविओ गिहछायणिं " (आ १२ ; महा) ।

छाया स्त्री [छाया] १ आतप का अभाव; छाँही; (पाम) । २ कान्ति, प्रभा, दीप्ति; (हे १, २४८ ; औप ; पाम) । ३ गोलाः (औप) । ४ प्रतिबिम्ब, परछाईं; (आचू ११४ ; उत्त २) । ५ धूप-रहित स्थान, आतप देश ; (ठा २, ४) । °गइ स्त्री [°गति] १ छाया के अनुसार गमन ; २ छाया के अवलम्बन से गति ; (पव्व १६) । °पास पुं [°पार्श्व] हिमाचल पर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्ति ; (ती ४६) ।

छाया स्त्री [दे] १ कीर्ति, यश, ख्याति ; २ भ्रमरी, भमरी ; (दे ३, ३४) ।

छायाजुत्त वि [छायावत्] छाया-वाला, छाया-युक्त । स्त्री—°इत्तिआ ; (हे २, २०३) ।

छायाला स्त्री [षट्चत्वारिंशत्] छियालीस, चालीस और छः, ४६ ; (सम) ।

छायालीस अक. ऊर देखो; (सम ६६ ; कप्प) ।

छायालीस वि [षट्चत्वारिंश] छियालीसवाँ, ४६वाँ ; (पउम ४६, ६६) ।

छार वि [क्षार] १ गिरने वाला, झरने वाला ; २ सार, उत्कृष्ट-रस वाला; ३ पुं. लवण, नमक, निमक; ४ सज्जी, सज्जी-खार; ५ धूल; (हे २, १७ ; प्राप्र) । ६ भस्म, भूति; (विसे १२१६; स ४४; प्रासू १४६; दर्शा १,३) । ७ भस्मक, अजीर्णरोग; (जीव ३) ।

छार पुं [दे] मच्छमण्डल, मालुक; (दे ३, २६)।
छारय देखो छार, (आ २७)।
छारय न [दे] १ इक्षु आदि रस, ऊख की छाल, (ठा ३, ३४)। २ मुकुल, कली; (दे ३, ३४, पाम)।
छाल पुं [छाग] अज, बकरा, (हे १, १६१)।
छालिया स्त्री [छागिका] अजा, छागी, (सुर ७, ३०, सण)।
छाली स्त्री [छागी] ऊपर देखो, (प्रामा)।
छाव पुं [शाव] बालक, बच्चा, शिशु, (हे १, २६६, प्राप्र; षड् १)।
छावण देखो छायण, (कुप्र १)।
छावट्ठि स्त्री [षट्षष्टि] छाछठ, छियासठ, ६६, (सम ७८; पिंड २७६ १)।
छावत्तरि स्त्री [षट्सप्तति] छिहत्तर, सत्तर और छ, ७६; (पउम १०२, ८६, सम ८६)। °म वि [°तम] छिहत्तरवाँ, (भग)।
छावलिय वि [षडावलिक] छः आवलिका-परिमित समय वाला; (पिंड ६३१)।
छावट्ठ वि [षट्षष्ट] छियासठवाँ, (पउम ६६, ३७)।
छावी स्त्री [दे] छाल, त्वक्, मद्य, (दे ३, २६)।
छासीइ स्त्री [षडशीति] छियासी, अस्सी और छ। °म वि [°तम] छियासीवाँ, ८६ वाँ; (पउम ८६, ७४)।
छाहत्तरि (अप) देखो छायत्तरि; (पि २४६)।
छाहा } स्त्री [छाया] १ छाँही, आतप का अभाव, २
छाहिया } प्रतिबिम्ब, परछाईं; (षड्, प्राप, सुर २,
छाही } १४७; ६, ६६; हे १, २४६, गा १४)।
छाही स्त्री [दे] गगन, आकाश। °मणि पुं [°मणि] सूर्य, सूरज; (दे ३, २६)।
छिअ देखो छीअ; (दे ८, ७२; प्रामा)।
छिंछई स्त्री [दे] अस्सी, बुलडा; (हे २, १७४, गा २०१; २६०; पाम)।
छिंछाखेल्ल न [दे] क्रीडा-विशेष, चक्षु-स्थगन की क्रीडा, (दे ३, १०)।
छिंछय पुं [दे] १ देह, शरीर; २ आर, उत्तरि; ३ न. फल-विशेष, लकुच-फल; (दे ३, ३६)।
छिंछोली स्त्री [दे] छोटा जल प्रवाह, (दे ३, २७; पाम)।
छिंड न [दे] १ कूप, कोटी; (दे ३, ३६; पाम)। २ अन्न, छाज; ३ कूप-तट; (दे ३, ३६)।
छिंडिआ स्त्री [दे] १ बाड़ का छिद्र; २ आतः, "छिंडिआओ जिणायतणम्मि" (पव १८८, आ)।
छिंडी स्त्री [दे] बाड़ का छिद्र, (आचा १, २—३, ३)।
छिंद सक [छिद्] छेदना, विच्छेद करना। छिंद, (महा)। भवि—छेच्छं; (हे ३, १७१)। कर्म छिज्जइ; (महा)। वकृ—छिंदमाण; (आचा १, १)। कर्म छिज्जंत, छिज्जमाण, (आ ६; विसे १, सक—छिंदिऊण, छिंदित्ता, छिंदिउं, छेत्तूण; (पि ५८६; भग १४, ८, पि ३०१, २, महा)। कृ—छिंदियव्व; (पव ६, हेकृ—छेत्तुं; (आचा)।
छिंदण न [छेदन] छेद, खण्डन, कर्तन, (आ भा)।
छिंदायण न [छेदन] कटवाना, दूसरे द्वारा छेदन (सूत्रनि ७)।
छिंदाविय वि [छेदित] विच्छिन्न कराया गया, (उप
छिंपय पुं [छिंपक] कपड़ा छापने का काम करने (१, ६८, पाम)।
छिक्क न [दे] शुल्क, छींक, (दे ३, ३६; कुप्र)।
छिक्क वि [दे, छुप्त] स्पृष्ट, छुआ हुआ, (३, हे २, १३८, से ३, ४६, स ४४८)। °पोदिका [°प्ररोदिका] वनस्पति-विशेष, (पिंड १०६)।
छिक्कार वि [छीत्कृत] छी छी आवाज से अवज्ञा वोरमुणिमा छिक्कारिक्का फारवा तुरिय" (सोप ११
छिक्कंत वि [दे] छींक करता हुआ, (सुपा ११
छिक्का स्त्री [दे] छिक्का, छींक, (स ३३३)।
छिक्कारिअ वि [छीत्कारित] छी छी आवाज अवज्ञा आवाज से बुलाया हुआ, (सोप १२८
छिक्किय न [दे] छींकना, छींक करना, (स ११
छिक्कोभण वि [दे] असहन, असहिष्णु, (३
छिक्कोट्टली स्त्री [दे] १ पैर का आघात, धान्य का मलना; २ गोहूम का टुकड़ा, (दे ३, ३७)।
छिक्कोलिअ वि [दे] तनु, पतला, कृश, (३
छिक्कोवण [दे] देखो छिक्कोभण, (३
छिच्चोलय पुं [दे] देखो छिच्चोलग, (पाम)।
छिच्छई देखो छिंछई; (षड्)।
छिच्छय देखो छिंछय, (षड्)।

छि अ [हे] विकल्पार्थक [ ] (हे २, १७४ ; षड्) ।
छिअ वि [छिन्न] (सुर १, ३) । ३ केश, विशेष, जिनका, (पण्ह १, ४ ; ओघ ४१ भा, स १७१) ।
छिअंत वि [छिद्यमान] काट जाता, टूटता होता : (छेदसुत्ताणि, पञ्चकल्पभाष्ये गुर्वक्षरे" स ३८१) ।
छिअंत) देखो छिंद ।
छिअमाण)
छिउ न [छिद्र] १ छिद्र, बिल, (पउम २०, ११२, श्रु ७, उप ६ १३८) । २ अवकाश, अवसर : (पउम १,) । ३ दूषण, दोष, (सुपा ३६०) । 'पाणि पु पाणि] एक प्रकार का जैन साधु, (आचा २,१, ३) । छिआ देखो छिन्न । (भग १, १८ ; सुअ १, ८) ।
छिआ पु [हे] जय, उत्तरी, (हे २, २१ ; षड्) ।
छिआछोइअ न [हि] स्पृष्ट, छुआ, जाती, (हे २,२१) ।
छिआवड वि [हे] देखो छिन्न । (पउम) ।
छिआ स्त्री [हे] छाली, छुटका, (हे २, २१) ।
छिआल पु [हि] जय, उत्तरी, (हे २, २१, षड्, उत्त २७) ।
छिआलिआ) स्त्री [हे] छाली, छुटका, पुच्छली ;
छिआली) (पिण्ड ५१, हे २, २१) ।
छिउल्लिआ स्त्री [हे] दूर्वा, घास : (हे २, २६) । न देखो छिन्न=छेदक : (औप ; उत्त ८३ टी ; सू ३०) ।
छिउ वि [हे] स्पृष्ट, छुआ हुआ ; (हे २, २७ ; ग १३ ; उप १०४ ; पउम) ।
छिंदर [हे] देखो छेदण (स ८ ; २२३ ; उप ६ १३७ ; ३३० टी) ।
छिंदि स्त्री [छिन्दि] छेद, विच्छेद, खण्डन : (विसे १४८८ ; अजि ६) ।
छिंद देखो छिंद ; (आचा १,२ ; उत्त १,१ ; पउम १४,६) ।
छिंदु पु [हे] छोटी नाली; (हे २, २६) ।
छिंदिय वि [छिन्दित] छिन्न-भिन्न, छिन्न काटा ; (गउड) ।
छिन्न वि [छिन्न] १ खण्डित, कुटित, छेद-युक्त ; (भग ; पण्ण १४६) । २ निर्णीत, निश्चित; (सूत्र १) । ३ न. छेद, खण्ड; (उत्त १६) । 'गंथ वि [ग्रन्थ] ग्रन्थि-रहित, ग्रन्थि-युक्त ; (पण्ह २, १) । २ पु. तपस्वी, साधु, मुनि, निर्ग्रन्थ , (उत्त ६) । 'चेउय पु [चैत्य] जिन-विशेष, प्रथम सूत्र की दूसरी सूत्र की कालिका में स्थित प्रसिद्ध कल्पा मत ; (दसनि) । 'जाणंतर वि [ज्ञानान्तर] अन्य-विशेष, उसी जैसा, अन्य प्रकार : कुछ भी न हो ऐसा समझ; (सूत्र १) । 'भइअ वि [भदन्त] जिस जीव का संसार के संबंध में कुछ जीव बाकी न हो : (निचू १०) । 'भिन्न वि [भिन्न] काट कर बाँधे गए की नौका होने वाली बनस्पति ; (जीव १० ; पण्ण १) ।
छिन्न न [छिन्न] उत्तरी, सीमा । 'दूर न [दूर] सीमा २ अत्यन्त अन्त काल ; (विसे १, ३ ; गच्छा १, १८) ।
छिन्न न [हे] १ सिक्का, सीमा, (हे २,३६ ; सुअ ११६) । २ पुच्छ, दाहपूछ ; (हे २, ३६ ; पाम) ।
छिन्नंत देखो छिन्न=स्पृष्ट ।
छिन्नंसी स्त्री [हे] १ अन्त-विशेष ; २ उत्तम-विशेष ; (हे २, ३१) ।
छिन्नंदूर न [हे] १ सीमान्त-काल, सीमा-काल ; २ वि. विलम्ब, कठिन ; (हे २, ३८) ।
छिन्नाल पु [हे] कुत्सित बैल, खसी में लगा हुआ बैल ; (हे २, २८) ।
छिन्नालुअ न [हे] पृष्ठ, दाहपूछ ; (हे २, २६) ।
छिन्निंडी स्त्री [हे] १ अन्त-विशेष ; २ उत्तम-विशेष ; ३ वि, विलम्ब, कठिन ; (हे २, ३७) ।
छिन्निअ वि [हे] खण्डित, कटा हुआ, टूटा हुआ; (प्राप्र) ।
छिन्नीर न [हे] पलाल, तृण ; (हे २, २८) ।
छिन्नोल्ली स्त्री [हे] अजादि की विष्ठा ; (निचू १) ।
छिमिछिमिछिमि अक [छिमिछिमाय] जिस जिस आवाज करना । वक्र—छिमिछिमिछिमिंत ; (पउम २६, ४८) ।
छिर न स्त्री [शिरा] नस, नाड़ी, रग ; (उत्त २, १ ; हे १, २६६) ।
छिरि पु [हे] मालूक का आवाज; (पउम ८४, ८५) ।
छिल्ल न [हे] १ छिद्र, बिल ; (हे २, ३६ ; षड्) । २ कुटी, कुटिया, छोटा घर; ३ बाड़ का छिद्र; (हे २,३६) । ४ पलाश का पेड़ ; (ती ८) ।
छिल्लर न [हे] पल्वल, छोटा तलाब ; (हे २, २८ ; सुर ४, २२६) ।
छिल्ली स्त्री [हे] शिखा, चाटी ; (हे २, २७) ।
छिव अक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना । छिव ; (हे ४, १८२) । कर्म—छिप्पइ, छिविज्जइ ; (हे ४, २६७) ।

कह—छिंपंत, (गा २१६)। कह—छिप्पंत, छिविज्जमान, (कुमा ; गा ४४३ ; स ६३२ ; श्रा १२)।

छिंड [दे] देखो छेड्ड ; (कम्म २, ४)।

छिंपण न [स्वर्पण] स्वर्ण, छूना, (उप १८७ टी, ७०)।

छिंपा स्त्री [दे] रजक का, धोबना चाबुक, "छिंपारहारे व" (कप्पा १, २—पत्र ८६ ; पाद १, ३ ; विपा १, ६)।

छिंपाडिआ } स्त्री [दे] १ वस्त्र बनेर. की फली, सीम,
छिंपाडी } (अप)। २ पुस्तक विशेष, पाने पन्ने वाला अँक पुस्तक, जिसके पन्ने विशेष लंबे और कम चौड़ाई ऐसा पुस्तक ; (अ ८, १, पा ८०)।

छिंपिअ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ; (दे १, २७)। २ स्पर्श, छूना, (दे १, ८)।

छिंपिअ न [दे] हँस का टुकड़ा, (दे १, २७)।

छिंपोल्लअ [दे] देखो छिप्पोल्लअ, (गा ६०६ अ)।

छिंभ वि [दे] कृत्रिम, बनावटी, (दे १, २७)।

छिंभोल्लअ न [दे] १ निरर्थक मुख-निर्हण, अकिंचित्कर मुख विकार-विशेष, २ निर्हणित मुख ; (दे १, १८)।

छिंह सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। छिंहइ, (हे ४, १८१)।

छिंहर न [शिखर] मद्य की शिखा, (आया १, १—पत्र १० टी)।

छिंहरअ पु [दे] रस का बना हुआ मिष्टान्न, दधिघृत, गुड़ादि से बना मिष्टान्न करते हैं, (दे १, २६)।

छिंहरि १ [शिखरिन्] १ मद्य, मार। २ वि मद्य-शिखा का बना हुआ, (कप्पा १, १—पत्र ६७२)।

छिंहली स्त्री [दे] शिखा, चोटी, (दुर्ग ४)।

छिंहाअ [स्पृश्य] स्पृश्य, अभिषव्य, (ठाण, ३, १, १२८—पत्र)।

छिंहिल्लिअ न [दे] दधि, दही, (दे १, १०)।

छिअ वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ, (कप्पा)।

छिअ [क्षुत] छिंक, छींक, (दे १, १३१ ; २, १० ; पाअ १४१, पडि)। °क—°भा, (आचा २०)।

छिअ वि [क्षुत] छींक करता ; (आचा २, १, १)।

छिअ [अक्ष] कपर्दक, दाम, दुर्बल ; (हे २, १ ; षड्)।

छिअ [अक्ष] १ अक्ष, धुरा ; २ कुल, वंश ; (हे २, १६०)। °विणिग्गय वि [°विनिर्गत] कुल-दूषक, (कम्म १—पत्र १६)।

छीरल पुं [क्षीरल] दाय से चलने वाला एक जन्तु, साँप की एक जाति, (पण्ह १, १)।

छीवोल्लभ [दे] देखो छिप्पोल्ल ; (गा ६०१)।

छुअ सक [क्षुद्] १ पीसना। २ पीलना। कर्म—छुअ, (कम्म ६, ६)। कवह—छुअमाण ; (संथा ६०)।

छुभ देखो छोभ ; (प्राप्र)।

छुई स्त्री [दे] बजाना, चक-चहूकि, (दे १, १०)।

छुंछुई स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच का पेड़, (दे १, १ ; ३, २१)।

छुंछुमुसय न [दे] रणरणक, उत्सुकता, उत्कण्ठा, (३, २१)।

छुंद सक [आ+क्रम्] आक्रमण करना। छुंदइ, (१६० ; षड्)।

छुंद वि [दे] बहु, प्रभूत ; (दे १, १०)।

छुक्कारण न [धिक्कारण] धिक्कारना, धि

छुच्छ वि [तुच्छ] तुच्छ, तुच्छ, हलका, (खलादि को बुलाने को आवाज करना। छुच्छुक्कारे

छुच्छुमाण देखो छु।

छुट्ट सक [छुट्] छूटना, बन्धन-मुक्त होना। छु छुट्ट, (धम्म ६ टी)।

छुट्ट वि [छुटित] छूटा हुआ, बन्धन-मुक्त, (सूअ ८२)।

छुट्ट वि [दे] छोटा, लघु, (पाअ)।

छुट्टण न [छोटन] छुटकारा, मुक्ति, (श्रा १०)

छुट्टि वि [दे] १ त्रिक, २ त्रिक, केश हुआ,

छुट्टु अ [दे] १ यदि, जो, (हे ४, १८५, २ शीघ्र, तुरन्त, (हे ४, ४०१)।

छुड्डिया स्त्री [क्षुद्रिका] अभरण विशेष, (पव १, पर १६२ टी)।

छुण्ण वि [क्षुण्ण] १ पूर्णित, चूर २ पिसा हुआ पिसा, निष्पेषित, ३ अभ्यस्त, (हे २, १०, छ

छुत्त वि [छुप्त] स्पृष्ट, छुआ हुआ, (हे २, ११८, छ

छुत्ति स्त्री [दे] छूत, अशौच, (सूअ ८८)।

छुद्दोय पुं [दे] १ शिशु, बच्चा, बालक, २ बन्दर ; (दे १, १८)।

छुद्दिया देखो छुड्डिया, (पव १

खुड देखो खुड । (प्रयो) ।
खुड वि [दे] छिन्न, छेदित । (षड्) ।
खुड देखो खुड । (उत्त ३६, ६) ।
खुडग देखो खुड्ग । (उत्त ३६, ६) ।
खुडिय देखो खुड ।
खुण्ण सक [क्षुण्ण] कूटना, पिसना, हिंसा । खुण्णिज्जा । (पि ६६) ।
खुत्तय [दे] देखो छोत्तय । (दे ३, ३३) ।
खुद्द देखो खुड्ड । खुद्दय, खुद्दिय, ° कम्म ; (स्वप्न ७०) ।
खुद्द—खुधिता ; (पि ६६) ।
खुधा देखो छुधा, (स्वप्न ५) ।
खुन्न सक [क्षुद्] १ पीस डालना, संचूर्ण । २ देश करना, छेदना । ३ कृश करना, ° क्य ११ , पयड १८,२८) ।
खुप्प पु [क्षुद्र] १ कुश, कपिल का भक्त । २ शत्रु का नाश, क्षय ; ३ कृतघ्नविशेष, मनुष्य । ४ कपट, छल, वंचन ; (दे ३, ५४ , प्रभा) । ५ न दुष्टविशेष, (पण्ण १) । खुप्पय न [गूढक] कपिल की कुश वगैरः रखने की थैली, (निच १) । खुप्पा न [क्षुत्पा] अजीर्ण , (कप्प) ।
खुभिअ पु [दे] कपिल, हरिभद्र । (दे ३, ३१) ।
खुभ्भय पु [दे क्षुब्धक] कपिल, हरिभद्र, (दे ३,३१) ।
खुरिआ स्त्री [दे] कुदिका, निहाई , (दे ३, ३१) ।
खुरिआ) स्त्री [क्षुरिका] छुरी, चाकू ; (सण ; सुख ३८१ , से १४७) ।
खुरिय वि [क्षुरित] १ काटा ; २ छिन्न ; (पण्ण २८,२८) ।
खुरी स्त्री [क्षुरी] छुरी, चाकू , (दे ३, ४ ; प्रासू ६६) ।
खुल्ल देखो खुड्ड ; (सुपा ६६६) ।
खुव सक [क्षुप्] स्पर्श करना, छूना । कर्म—खुप्पंत, खुविज्जंत ; (कि ४, २४६) । कवकृ—खुप्पंत , (उत्त ३३६ ; ३३८ टी) ।
खुह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना । खुहइ ; (उव ; हे ४, १८३) । संकृ—खोदूण, खोदूणं, (स ८६ ; विसे ३०१) ।
खुहा स्त्री [क्षुधा] १ भूख, पीडुः ; (हे १, २६६ ; कुमा) । २ तृष्णा, महान पेटरोग का एकेक प्रकार-विशेष, वृद्धि ; (हे १, ३८ ; कुमा) । °हर पु [°कर] चन्द्र, कपूर ; (षड्) ।
खुहा स्त्री [क्षुधा] भूख भूख, बुभुक्षा (हे १, ११ , हे १, ८०) ।
खुहाइअ वि [क्षुधित] भूखा, बुभुक्षित (पाअ) ।
खुहाउल वि [क्षुधाकुल] क्षुधा देखो ; (सण १८१) ।
खुहाउ वि [क्षुधावत्] क्षुधा देखो ; (उत्त २ १६ ; १८ टी) ।
खुहिअ वि [क्षुभित] क्षुधा देखो ; (उत ; उत ३२८ टी ; प्रभू १८०) ।
खुहिय वि [दे] खिन्न, पीडित, (हे २, ३२ ; १३७ , कुप्र) ।
खुहिल्ल न [दे] पर्वत का परिवेष्टन ; (षड्) ।
खेअ सक [खेदय्] १ खिन्न करना । २ तोड़ डालना, देवकरना । कर्म—खेइज्जंति, (वि ६४३) । संकृ—खेएत्ता; (सण) ।
खेअ पु [दे] १ अन्न, धान्य, धनधान्य ; (दे ३, ३८ ; पाअ ; से ७, ४८ ; कप्प १, ३६) । २ देवता, परि का छोटा भाई ; (दे ३, ३८) । ३ एक देश, एक भाग ; (से १, ७) । ४ निर्वेदभाव ; (कप्प ४, ८२) ।
खेअ वि [खेक] निपुण, चतुर, कुशलवान ; (पाअ ; प्रभू १७२ ; मौप ; गाया १, १) । °यरिय पु [°चार्य] निमित्तशास्त्र, कलाचार्य ; (सण ३, ८) ।
खेअ पु [खेद] १ नाश, विनाश ; "विसज्जदेहो कलं लहू" (कुप्र ६, १६४) । २ रुदन, विलाप ; (से १, ७) । ३ दैन्य, कार्पण्य ; "जोएहेअं" (सण १६३ ; से ७, ४८) । ४ छः जैन आगम-ग्रन्थ, वे ये हैं ;—निशीथसूत्र, महानिशीथसूत्र, दशा-श्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहारसूत्र, पञ्चकल्पसूत्र; (वि से २३६६) । ५ जिस विधान, अनुष्ठान किया हुआ अंग; (वि ७, ४८) । ६ कर्म, स्नायुतन्तु ; (पंचा १६) । ७ प्रायश्चित्त विशेष ; (ठा ४,१) । ८ बुद्धि-परीक्षा का एक अंग, धर्म-बुद्धि जानने का एक लक्षण, विशेष कर आचरण ; "सो देवगए सुव्वति" (पंचव ३) । °सिरिह न [°शिरोभ] प्रायश्चित्त विशेष ; (ठा १०) ।
खेअण न [छेदन] देश करने वाला, काटने वाला, खेअग) (सण ; विसे ३१३) ।
खेअण न [छेदन] १ खनन, कर्षण, हिंसा करना; (उत्त ३६; प्रासू ६४०) । २ कर्म, स्नायुतन्तु, हाड ; (आचा) । ३ नख, हथियार; (सूम २, ३) । ४ निशाचक्र वचन; (वृ ६ १) । ५ मुख्य अवयव; (बृह १) । ६ जल-जंतु विशेष ; (उत्त ३, ३) ।
खेओवट्ठावण न [छेदोपस्थापन] जैन संयम-विशेष, बड़ी दीक्षा , (सम ३६ , पंचा १९) ।
खेओवट्ठावणिय न [छेदोपस्थापनीय] क्षुधा देखो , (उत्त

छेंछई [दे] देखो छिछई, (गा ३०१)।
छेंड [दे] देखो छिंड ; (दे ३, ३५)।
छेंडा स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी, २ नवमालिका, लता-विशेष, (दे ३, ३६)।
छेंडी स्त्री [दे] छोटी गली, छोटा रास्ता, (दे ३, ३१)।
छेग देखो छेअ=छेक ; (दे ३, ४७)।
छेज्ज देखो छिज्ज ; (दस २, महा)।
छेण पु [दे] स्तेन, चोर ; (षड्)।
छेत्त देखो खेत्त ; (गा ६ ; उप ३६७ टी, स १६४, भवि)।
छेत्तर न [दे] शूर्प वगैरः पुराना गृहोपकरण, (दे ३, ३२)।
छेत्तसोवणय न [दे] खेत में जागना ; (दे ३, ३२)।
छेत्तु वि [छेत्त] छेदने वाला, काटने वाला, (आचा)।
छेद देखो छेअ=छेदय्। कर्म—छेदीअमाण ; (पि ५४३)। संकृ—छेदिऊण, छेदेत्ता ; (पि ५८६, भग)।
छेद देखो छेअ=छेद ; (पउम ४४, ६७ ; औप ; कप्प १)।
छेदअ वि [छेदक] छेदने वाला ; (पि २३३)।
छेदोवट्ठावणिय देखो छेओवट्ठावणिय, (ठा ३, ४)।
छेय पु [दे] १ स्थासक, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का विलेपन, २ चोर, चोरी करने वाला ; (दे ३, ३६)।
छेप्प न [दे, क्षेप] पुच्छ, लाङ्गूल ; (गा ६२ ; विपा १, २ ; गउड)।
छेमय पुं [दे] चन्दन आदि का विलेपन, स्थासक, (दे ३,३२)।
छेल, छेलग, छेलय पुंस्त्री [दे] अज, छाग, बकरा ; (दे ३, ३२ ; स १६०)। स्त्री—°लिआ, °ली ; (पि २३१ ; पाह १, १—पत्र १४)।
छेलायण न [दे] १ उत्कृष्ट हर्ष-ध्वनि ; २ बाल-क्रीडन, ३ चीत्कार, ध्वनि-विशेष, "छेलायणमुक्किट्ठाइ बालकीलायणं च सेंटाइ" (आवम)।
छेलिय न [दे] सेल्लित, चीत्कार करना, अव्यक्त ध्वनि-विशेष, (पाह १, ३ ; विसे ६०१)।
छेली स्त्री [दे] थोड़े फूल वाली माला, (दे ३, ३१)।
छेवग न [दे] मरी वगैरः फैली हुई बिमारी, (कप्प ५ ; निचू १)।
छेवट्ट, छेवट्ठ न [दे, सेवार्त्त, छेदवृत्त] १ संहनन-विशेष, शरीर-रचना-विशेष, जिसमें मर्कट-बन्ध, वेष्टन, और खीला न हो कर यों ही हड्डियाँ आपस में जुड़ी हों ऐसी शरीर-रचना ; (कम्म ४, ८ ; १४६ ; भग ; कम्म १, ३६)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पूर्वोक्त संहनन की प्राप्ति होती है। कर्म, (कम्म १, ३६)।
छेवाडो [दे] देखो छिवाडो ; (पि ८० ; निचू १ जीव ३)।
छेह पु [दे, क्षेप] प्रेरण, क्षेपण ; "तो वसणिक्खेवो आवलिरुम्भमाणदिट्ठिच्छेहा" (से ४, १७)।
छेहत्तरि (अप) देखो छाहत्तरि ; (पिंग)।
छोइम पुं [दे] दास, नौकर ; (दे ३, ३३)।
छोइआ स्त्री [दे] छिलका, छिलका वगैरः को छाड़, (ठा ४ टी), "उच्छुवंड पत्थिए छोइयं पणामेइ" (सूत्र)।
छोड सक [छोटय्] छोड़ना, बन्धन से मुक्त करना। छोडेइ, (भवि ; महा)। संकृ—छोडिवि, (सुपा १८
छोडावित वि [छोटित] छुड़वाया हुआ, छुड़वा कराया हुआ ; (स ६२)।
छोडि स्त्री [दे] छोटी, लघु, क्षुद्र ; (पिंग)।
छोडिअ वि [छोटित] १ छोड़ा हुआ, बन्धन-मुक्त हुआ, "वच्चामो छोडिओ गंठी" (सुपा ६०४, ३१ २ पठित, आहृत ; (पाह १, ४—पत्र ७८)।
छोडिअ देखो फोडिअ ; (औप)।
छोडूण } देखो छुह।
छोडूणं }
छोम्म पु [दे] निर्गुण, खल, दुर्जन ; (दे ३, ३१) देखो छोभ।
छोम्म वि [क्षोम्य] क्षोभ-योग्य, क्षोभणीय, "दुग्गे परिवज्जिया य छोभा(? क्खा) सिप्पकज्जासमक्खे वज्जिया" (पाह १, ३—पत्र ५५)।
छोम्मत्थ वि [दे] अप्रिय, अनिष्ट, (दे ३, ३३)।
छोम्मारत्ती स्त्री [दे] १ अस्पृश्या, छूने को अयोग्य, डूंध्या, अप्रीतिकर स्त्री ; (दे ३, ३६)।
छोभ [दे] देखो छोअम ; (द ३, ३२ टि)। २ हाथ, दोनों ; (पाह १, ३—पत्र ५५)। ३ स्थान, कलक-आरोपण, दोषारोप, (बृह १, ४ ४ न. वन्दन-विशेष, दो क्षमाश्रमण-रूप वन्दन, (सुपा ५ ५ आहृत : "कोवेण धमधमंतो दंतच्छोभे य दइ आ (महा)।
छोभ देखो छउम ; (आया १, ६—पत्र १६०)।
छोयर पुं [दे] छोरा, लड़का, छोकरा, (उप पृ ३१५)।
छोलिअ देखो छोडिअ=छोटित, (पिंग)।

ईसर पुं [ईश्वर] ऐश्वर्य, प्रभुत्व, दृष्टान्त, (पउ)। ईसर—कुल न [°कुल] (हे १, ३३)।

ईसरिय न [ईश्वरिक] ऐश्वर्य, विशिष्ट दृष्टान्त, (स्वप्न १, १)।

ईसिअर वि [ईषत्] किंचित् ऊनता वाला, कुछ-कुछ भिन्न हुआ, (उप १३५)।

ईह पुं [ईह] १ स्मृति, मति, ज्ञान, २ विचार (ठा ३, ३६)। ३ आकांक्षा; "ईह य मी आगमिस्सं, एस जो देव दंसणकिंखिणी" (आक)।

ईहा पुं [ईहा] १ चेष्टा, कांक्षा, "ईहादिट्ठिकोडुम्मय-भावणा" (सुर ३१८)। २ विचार (सुर ४१२)।

ईहिय वि [ईहित] चेष्टा-प्राप्त, प्राप्त हुआ, अनुभव किया गया, (उप १३७ टी)।

इस विनिपातश्रमदमहर्षणयमिन छलाग्रहोत्सर्गकरो पवासमो नरो मो स्मरो।

उ

उ पुं [उ] वनस्पतीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राकृ; प्रयो)।

उ अ [यत्] जो, जो कोई; (ठा ३, १; जी ८, कुमा; गा १०६)।

उ वि [°ज] उत्पन्न; "आयारपरायणो हवइ विणेयगेरहओ दहओ" (गा ४६६)। "आरंभज"—(आचा)।

उअड अक [उद्वृत्] स्नान करना, गोता करना। उअडइ; (हे ४, १७० , षड्)। वकृ—उअडंत; (हे ४, १७०)। प्रयो—उअडावेति; (दुमा)।

उअल वि [दे] उल्ल, आर्द्रचित्त; (षड्)।

उइ पुं [यति] १ साधु, जितेन्द्रिय, संन्यासी; (औप; सुर ४४४)। २ छन्द-शास्त्र में प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, कविता का विश्राम-स्थान, (पिंग १ टी)।

उइ अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त, (आचा)।

उइ अ [यदि] यदि, जो, (कम्म १४४ विरु १, १)। वि अ [अपि] जो भी, (भग)।

उउ म [यत्र] जहां, जिस स्थान में ; (षड्)।

उउ वि [उदित्] जीतने वाला, विजयी; (दुमा)।

उउआ अ [यदा] जिस समय, जब कभी, (उत्त ; हे ३, ६६)।

उउग्गा स्त्री [यदृच्छा] १ स्वतन्त्रता ; २ स्वेच्छाचार; (गच्छ)।

उउग्ग वि [जैत्र] १ जित-देव का भक्त, जितेन्द्र, २ जिन भगवान् का, जितेन्द्र से संबन्ध रखने वाला; (विसे ३८३ ; धर्म २ टी; सुर ८, ६४)। स्त्री—°ग्गा; (पंचा ३)।

उउण वि [जयिन्] जीतने वाला; "सयलजयउउणेणं" (उत्त ; सुपा १, १—पव ३१)।

उउण वि [जयिन्] वेग वाला, वेग-युक्त, स्फूर्ति-युक्त; "उउणउच्चायवायउड्डाणनिव्वेगाहिं " (औप)।

उउल वि [जैत्र] १ जीतने वाला, विजयी; (उत्त १)। २ पुं. सूर्य-विशेष; (सूक्त)।

उउला देखो जय=जि।

उउय वि [जयिक] जयकर, विजयी; (सुपा १, ८—पव १३३)।

उउय वि [यष्टृ] याग करने वाला; "तुब्भे उउया जलाय" (उत्त १५, ३८)।

उउयव्व देखो जय=यत्।

उउया अ [यदिया] अथवा, या; (उत्त १)।

उउस (अप) वि [यादृश] जैसा, जिस तरह का; (षड्)।

उउ न [जतु] लाक्षा, लाख; (उत्त ४, ४ ; उत्त ६ २४)।

उउ पुं [यदु] १ स्वतन्त्र-स्थान एक राजा; २ प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश ; (उत्त)। °णंदण पुं [°नन्दन] १ यदु-वंशीय, यदुवंश में उत्पन्न। २ श्रीकृष्ण ; (उत्त)।

उउपु पुं [यजुर्] वेद-विशेष, यजुर्वेद , (भग)।

उउपुप पुं [यमुन] स्वतन्त्र-प्रसिद्ध एक राजा ; (उत्त ४५७)।

उउणा
उउ णा
उउ णा } स्त्री [यमुना] भारत की एक प्रसिद्ध नदी ; (उत्त १, २ ; हे १, ४ ; १७८)।

उउमो अ [यतः] १ क्योंकि, कारण कि ; (आचा २८)। २ जिससे, जहां से; (ओघ ८२, १४८)।

उं अ [यत्] १ क्योंकि, कारण कि ; २ वाक्यान्तर का संबन्ध-सूचक अव्यय , (हे १, २४ ; महा ; गा ६६)। किंचि अ [किञ्चित्] १ जो कुछ, जो कोई; (पंचा ; स्वप्न १, ३)। २ अल्प, अपूर्ण, तुच्छ, कदाचित् (पंचव)।

जंकयसुकय वि [दे] अल्प सुकृत से प्राप्त, थोड़े उपकार से अधीन होने वाला ; (दे ३, ४६)।

जंगम वि [जंगम] १ चलने वाला, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में जा सकता हो वह ; (ठा ६ ; भवि)। २ छन्द विशेष ; (पिंग)।

जंगल पु [जङ्गल] १ देश-विशेष, सामान्य देश ; (कुमा ; सण ६७ टी)। २ निर्जल प्रदेश ; (बृह १)। ३ न. मांस, "गयकुंभविआरियमोत्तिएहि जं जगउ किणइ" (वज्जा ४२)।

जंगा स्त्री [दे] गोचर-भूमि, पशुओं को चरने की जगह ; (दे ३, ४०)।

जंगिम वि [जाङ्गमिक] १ जंगम वस्तु से सम्बन्ध रखने वाला, जंगम-संबन्धी। २ न. जंगम जीवों के रोम का बना हुआ कपड़ा ; (ठा ३, ३ ; ५, ३ ; कप्प)।

जंगुलि स्त्री [जाङ्गुलि] विष उतारने का मन्त्र, विद्या ; (ती ४६)।

जंगुलिय पु [जाङ्गुलिक] गारुडिक, विष-मन्त्र का जानकार, (पउम १०६, ६७)।

जंगोल अंत [जाङ्गुल] विष-चिकित्सक तन्त्र, विष-विद्या, आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें विष की चिकित्सा का प्रतिपादन है, (निचा १, ७—पत्र ७६)। स्त्री—°लो ; (ठा ८)।

जंघा स्त्री [जङ्घा] जाँघ, जानु के नीचे का भाग ; (आचा ; कप्प)। °चर वि [°चर] पादचारी, पैर से चलने वाला ; (भग)। °चारण पु [°चारण] एक प्रकार के जैन मुनि, जो अपने लब्धिबल से आकाश में गमन कर सकते हैं ; (भग २०, ८ ; पव ६७)। °संतारिम वि [°संतार्य] जंघा तक पानी वाला जलाशय ; (आचा २, ३, २)।

जंघाछेअ पु [दे] चत्वर, चौक ; (दे ३, ४३)।

जंघामय } वि [दे] जलज, जल-गामी, वेग से जाने
जंघासुअ } वाला ; (दे ३, ४२ ; षड्)।

जंत सक [यन्त्र्] १ वश करना, काबू में करना। २ जकड़ना, बाँधना ; (उप पृ १३१)।

जंत न [यन्त्र] १ कल, युक्ति-पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिए यंत्र-विशेष, शिल्प-यन्त्र, अस्त्र-यन्त्र आदि (सं ३, सण ६६४ ; पि, भग, कुमा)। २ शरीर, रक्षा करने के लिए किया जाता लोह-पंजर, (कप्प १, २)। ३ संनाह, सिरस्त्राण ; (राय)। °धर पु [°धर] यंत्र का जानकार ; (कप्प १, २)। °पीडनकर्मन् [°पीडनकर्मन्] यन्त्र द्वारा तिल, ईख आदि पेरने का धंधा ; (पडि)। °पुरिस पुं [°पुरुष] कृत्रिम पुरुष, यन्त्र से पुरुष की चेष्टा करने वाला पुतला ; (सूक्र) °वाडचुल्लो स्त्री [°पाटचुल्ली] इक्षु-रस को पकाने की बड़ी चुल्हा ; (ठा ८—पत्र ४१७)। °हरय [°गृह] यन्त्र-गृह, पानी का फव्वारा वाला स्थान ; (कुमा)।

जंत देखो जा = या।

जंतण न [यन्त्रण] १ नियन्त्रण, संयमन, बन्धन। २ रोकने वाला, प्रतिरोधक, (से ४, ४६)।

जंतिअ पु [यान्त्रिक] यन्त्र-कर्म करने वाला, कल चलाने वाला ; (गा ६६४)।

जंतिअ वि [यन्त्रित] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ ; (पि ६२, १४६)।

जंतु पु [जन्तु] जीव, प्राणी ; (उत्त १ ; सम)।

जंतुग न [जन्तुक] जलाशय में होने वाला तृण-विशेष (पण्ह २, ३— पत्र १२२)।

जंप सक [जल्प्] बोलना, कहना। जंपइ ; (हे ४, १४२) वकृ—जंपंत, जंपमाण ; (महा ; गा १६८ ; हे २)। संकृ—जंपिऊण, जंपिऊणं, जंपिय ; (गा महा)। हेकृ—जंपिउं ; (महा)। कृ—जंपिअव्व (गा २४२)।

जंपण न [जल्पन] उक्ति, कथन ; (श्रा १२ ; कप्पू)।

जंपण न [दे] १ अकीर्ति, अपयश, २ युद्ध, युद्ध ; (दे ३, ४१ ; भवि)।

जंपय वि [जल्पक] बोलने वाला, भाषक ; (सूत्र १ ३)।

जंपाण न [जम्पान] १ वाहन-विशेष, सुखासन, शिबिका विशेष ; (ठा ४, ३ , औप , सुपा ३६३ , उप ६११) २ पादचान, रथ-यान ; (सुपा २१६)।

जंपिउअर वि [दे] जिसको देवे उसी का खाने का (दे ३, ४४ ; पाअ)।

जंपिय वि [जल्पित] कथित, उक्त ; (आचा ११०)।

जंपिर देखो जंप।

जंपिर वि [जल्पितृ] १ अत्याक, बकवादी, (हे २, १४६) २ बोलने वाला, भाषक ; (हे २, १४६ , श्रा २७ ; पाअ १६२ ; सुपा ४०२)।

जंपिरसंपिरगिर } वि [दे] जिसको देखे उसीको बकवाद
जंपिरुंपिरगिर } करने वाला ; (षड् ; दे ३, ४६)।

जंबवई स्त्री [जाम्बवती] श्रीकृष्ण की एक पत्नी; (अंत १४; भवू १)।

जंबाल न [दे] १ जंबाल, सैवाल, जलमल. सिवार; (दे ३, ४२ ; पाम)।

जंबाल पुंन [जम्बाल] १ कर्दम, कादा, पंक; (पव्र; उप ३, ३)। २ जगत्, गर्भ-वेष्टन चर्म; (सूप्र १, ७)।

जंबीरिय (प्र) न [जम्बीर] नींबु, फल-विशेष; (सण)।

जंबु पुं [जम्बु] १ जम्बुक, सियार; " उद्दमुद्दुल्लपजंबुगव्वं" (पउम १०५, ६७)। २ एक प्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी के शिष्य, अन्तिम केवली; (कप्प; वसु; सिरि १, १)। ३ न. जम्बू वृक्ष का फल; (श्रा ३६)।

जंबु देखो जंबू; (कप्प; हम्मी; इक; पउम ५८, २२; से १३, ८६)।

जंबुअ पुं [दे] १ बेलका वृक्ष; २ पक्षिभेद, टिट्टिभ; (दे ३, ५२)।

जंबुक) पुं [जम्बुक] १ सियार, गीदड़; (प्रासू १७१;
जंबुग) उप ७६८ टी; पउम १०५, ६४)। २ जम्बू वृक्ष का फल, जामुन; (सुपा २२६)।

जंबुल पुं [दे] १ बालीय वृक्ष; २ न. मद्य-भाजन, सुरा-पात्र; (दे ३, ४१)।

जंबुल्ल वि [दे] जल्पक, बकवाद, बकवादी; (पाम)।

जंबुवई देखो जंबवई; (भंत; पउ)।

जंबू स्त्री [जम्बू] १ वृक्ष-विशेष, जामुन का पेड़; (णाया १, १; औप)। २ जंबू वृक्ष के आकार का एक स्वतन्त्र शाश्वत पदार्थ, सुदर्शन, जिसके कारण यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता है; (जं १)। ३ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी का मुख्य शिष्य; (जं १)।

जंबूदीव पुं [द्वीप] मध्यम विशेष, द्वीप-विशेष, जिस द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप, जिसमें यह भारत आदि क्षेत्र वर्तमान हैं; (जं १; इक)। जंबूदीवग-वि [द्वीपक] जम्बू-द्वीप-संबन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न; (ठा ४, २; ६)।

जंबूदीवपण्णत्ति स्त्री [द्वीपप्रज्ञप्ति] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें जंबूद्वीप का वर्णन है; (जं १)। जंबूद, जंबूद न [पीठ] सुदर्शना-जम्बू का अधिष्ठान-प्रदेश; (जं ४; इक)। जंबुर न [पुर] नगर-विशेष; (इक)।

जंबूलि पुं [जाम्बूलिन्] देवता का एक पुत्र, गरुड़ का एक पुत्र; (पउम ५६, २१, से १३, ८६)।

जंबूवर न [जम्बूवर] विमान नाम विशेष, (इक)।

जंबूसंड पुं [खण्ड] ग्राम-विशेष; (आवम)। जंबूसामि पुं [स्वामिन्] सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष; (आवम)।

जंबूह पुं [जम्बूक] सियार, गीदड़; (भवि ७८ भा)।

जंबूणय न [जाम्बूनद] १ सुवर्ण, सोना; (सम ६६; पउम ६, १२६)। २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा; (पउम ४८, ६८)।

जंबूलय पुंन [जम्बूलक] उदक-भाजन विशेष; (उक)।

जंभ पुं [दे] तुप, धान्य वगैरः का छिलका; (दे ३, ४०)।

जंभंत देखो जंभा=जृम्भ्।

जंभग वि [जृम्भक] १ जँभाई लेने वाला। २ पुं. व्यन्तर-देवों की एक जाति; (कप्प; सुपा ४०)।

जंभणजंभण
जंभणजंभण
जंभणय } वि [दे] स्वच्छन्द-भोगी, जो मरजी में आवे वह भोगने वाला; (षड्; दे ३, ४४)।

जंभणी स्त्री [जृम्भणी] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-विशेष; (सूप्र २, २ ; पउम ७, १४४)।

जंभय देखो जंभग; (णाया १, १ ; भवि; सण १४, ८)।

जंभल पुं [दे] जड़, मूर्ख, मन्द; (दे ३, ४१)।

जंभा स्त्री [जृम्भा] जँभाई, जृम्भण; (सिरि १, ८)।

जंभा
जंभाअ
जंभाअ } अक [जृम्भ्] जँभाई लेना। जंभाइ, जंभाअइ; (हे ४, ११७ ; २४० ; प्राप्र ; षड्)। कर्म—जंभिज्जइ, जंभाअंते; (सण ६४१ ; से ७, ६६ ; कप्प)।

जंभाइअ न [जृम्भित] जँभाई, जृम्भा; (षड्)।

जंभिय न [जृम्भित] १ जँभाई, जृम्भा। २ पुं. ग्राम-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था; यह गाँव पावानगर पहाड़ के पास की ऋजुवालिका नदी के किनारे पर था; (कप्प)।

जक्कर पुं [यक्ष] १ व्यन्तर देवों की एक जाति; (पव्र १, ८ ; औप)। २ धनेरा, कुबेर, वसुपति; (राज)। ३ एक विद्याधर-राजा, जो रावण का सौतेला भाई था; (पउम ८, १०२)। ४ द्वीप-विशेष; ५ समुद्र-विशेष; (सूप्र २०)। ६ यज्ञ, पूजा; " कइ आगंतुगदेवय जक्कुद्दिट्ठेण पसरदप्पेण " (सिरि १८३ अ)।

जक्कड पुं [कर्दम] १ केला, मेला, कचरा, कूड़ा और कचरों का समूह विशेष; (राज)। २ द्वीप-विशेष; ३ समुद्र-विशेष; (सूप्र २०)। जक्ख पुं [यक्ष] वाणव्यंतर, देव-कुल विशेष; (जीव ३, उ २)। जक्खय पुं [नायक]

यक्षों का अधिपति, कुबेर, (अणु)। °दित्त न [°दीप्त] देखो नीचे °दित्तय; (पउ २६)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] महर्षि स्थूलभद्र की बहिन, एक जैन साध्वी; (पडि)। °भद्द पु [°भद्र] यक्षद्वीप का अधिपति देव-विशेष, (चंद २०)। °मंडलपविभत्ति स्त्री [°मण्डलप्रविभक्ति] एक तरह का नाच; (राय)। °मह पु [°मह] यक्ष के लिए किया जाता महोत्सव, (आचा २, १, २)। °महाभद्द पु [°महाभद्र] यक्ष द्वीप का अधिपति देव; (चंद २०)। °महावर पु [°महावर] यक्ष समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष, (चंद २०)। °राय पु [°राज] १ यक्षों का राजा, कुबेर। २ प्रधान यक्ष; (सुपा ४६१)। ३ एक विद्याधर राजा, (पउम ८, १२४)। °वर पुं [°वर] यक्ष-समुद्र का अधिपति देव-विशेष, (चंद २०)। °विट्ठ वि [°विष्ट] यक्ष का आवेश वाला, यक्षाधिष्ठित; (ठा ५, १, वव २)। °दित्तय, °दित्तिय न [°दीपक] १ बर्फी २ किसी दिशा में बिजली के समान जो प्रकाश होता है वह, आकाश में व्यन्तर-कृत अग्नि-दीपन; (भग ३, ६; पव ७)। २ आकाश में दिखता अग्नि-युक्त विमान; (जीव ३)। °वेस पुं [°वेश] यक्ष-कृत आवेश, यक्ष का मनुष्य-शरीर में प्रवेश; (ठा २, १)। °हिव पु [°धिप] १ वैश्रमण, कुबेर, यक्ष-राज। २ एक विद्याधर राजा, (पउम ८, ११३)। °हिवइ पु [°धिपति] देखो पूर्वोक्त अर्थ; (पाअ; पउम ८, ११६)।

जक्खरत्ति स्त्री [दे. यक्षरात्रि] दीपालिका, दीवाली, कार्तिक वदि अमस का पर्व, (दे ३, ४३)।

जक्खा स्त्री [यक्षा] एक प्रसिद्ध जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी; (पडि)।

जक्खिंद पु [यक्षेन्द्र] १ यक्षों का स्वामी, यक्षों का राजा, (ठा ४, १)। २ भगवान् अजित का शासनाधिष्ठायक देव, (पव २६, सति ८)।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] १ यक्ष-योनिक स्त्री, देवियों की एक जाति, (अणु)। २ भगवान् अरिष्टनेमि की प्रथम शिष्या, (सम १५२)।

जक्खी स्त्री [यक्षी] स्त्री-विशेष; (सिरि ४१४ टी)।

जक्खुत्तम पु [यक्षोत्तम] यक्ष-देवों की एक आन्तर जाति (पण्ण १)

जक्खेस पु [यक्षेश] १ यक्षों का स्वामी। २ अभिनन्दन का शासन-यक्ष; (सति ७)।

जग न [यकृत्] पेट की दक्षिण-ग्रन्थि; (पंड १, १

जग पुं [दे] जन्तु, जीव, प्राणी; "पुढो भिक्खू" (सूअ १, ७, २०)।

जग न [जगत्] जग, संसार, दुनियाँ, (स २७१, १२१)। °गुरु पुं [°गुरु] १ जगत् में श्रेष्ठ पुरुष; २ जगत् का पूज्य; ३ जिन-देव, तीर्थंकर, २१, पचा ४)। °जीवण वि [°जीवन] १ जीवनेवाला; २ पुं. जिन-देव; (राज)। [°नाथ] जगत् का पालक, परमेश्वर, जिन-देव। °पियामह पुं [°पितामह] १ ब्रह्मा, विरंचि। देव; (णंदि)। °प्पगास वि [°प्रकाश] प्रकाश करने वाला, जगत्प्रकाशक; (पउम ३३, °प्पहाण न [°प्रधान] जगत् में श्रेष्ठ, (गउड)

जगई स्त्री [जगती] १ प्राकार, किला, दुर्ग, (वेस ६१)। २ पृथिवी, (उत्त १)।

जगजग अक [चकास्] चमकना, दीपना। स जगंत, जगजगेंत; (पउम ७७, ३३, १४, १

जगड सक [दे] १ झगड़ना, झगड़ा करना, कलह कदर्थन करना, पीड़ना। ३ उठाना, आदृत करना। जगडंत, (भवि)। कवकृ— जगडिज्जंत, ८२, ६, राज)।

जगडण न [दे] नीचे देखो, (उव)।

जगडणा स्त्री [दे] १ झगड़ा, कलह। २ कदर्थ "सेण चिय वम्मदणायगस्सु जगजगडणापयम्म ६३० टी)।

जगडिअ वि [दे] विडंबित, कदर्थित, (दे ३, ६७; उव)।

जगर पु [जगर] संनाह, कवच, वर्म, (ठा ३,

जगल्ल न [दे] १ पट्ट वाली महिला, महिला भाग; (दे ३, ४१)। २ ईख का महिला भाग; (दे ३, ४१, पाअ)।

जगार पु [दे] राव, यवागू, (पव ४)।

जगार पु [जकार] 'ज' अक्षर, 'ज' वर्ण, (

जगार पु [यत्कार] 'यत्' शब्द, लगारेण निद्देसो कीरइ" (निचू १)।

ारी स्त्री [जगारी] अन्न-विशेष, एक प्रकार का धान्य ; "अवरं जोयणसयमुवसुजगारीए" (पंचा १)।

ुसम वि [जगदुसम] जगत्-श्रेष्ठ, जगत् में प्रधान ; (पाअ ३, ४)।

ा अक [जागृ] १ जागना, नींद से उठना। २ सावधान होना, सचेतन होना। जग्गइ, जग्गिमो ; (हे ४, ८० ; ३ ; प्राप्र ६८)। वकृ—जग्गंत ; (सुपा १८५)। कृ—जग्गाअव्व , (वि ६६६)।

ण न [जागरण] जागना, निद्रा-त्याग, (प्रति १०६)।

गविअ वि [जागरित] जगाया हुआ, नींद से उठाया हुआ ; (सुपा ३३१)।

गह पुं [यद्ग्रह] जो ग्रास हो उसे ग्रहण करने की इच्छा ; "ग्रस्या ग्रासो यद्ग्रहो यद्ग्राह्यं" (भाषा)।

गाविअ देखो जागरिअ ; (से १०, ६६)।

गाह देखो जग्गह ; (भाक)।

गेअ वि [जागृत] जगा हुआ, त्यक्त-निद्र ; (गा ३८६ ; स ; सुपा ६६३)।

गेर वि [जागरित्] १ जागने वाला ; २ सावधान रहने वाला ; (सुपा २१८)।

ग्ग न [जघन] कमर के नीचे का भाग, ऊरु-स्थल ; (कप्र ; औप)।

घ पुं [हे] पुरुष, मनुष्य, आदमी ; (हे ३, ४०)।

घ वि [जाघ्य] १ उत्तम जाति वाला, कुलीन, श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर ; (राजा १, १ ; श्रा १२ ; सुपा ७७ ; कप्र) । २ बलवान्, महत्तम ; (तंदु)। ३ सजातीय, विजाति-विलक्षण ; सुंदर, शुद्ध ; (जंबू ३)।

च्चंजण न [जात्यञ्जन] १ श्रेष्ठ अञ्जन ; (राजा १, १)। २ मर्दित अञ्जन, तैल कोरः से मर्दित अञ्जन ; (कप्र)।

च्चंदण न [हे] १ अगरु, सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के रूप में आता है ; २ कुंकुम, केसर ; (हे ३, ५२)।

च्चंध वि [जात्यन्ध] जन्म से अन्धा ; (सुपा ३६६)।

च्चमणिअ) वि [जात्यन्वित] सुन्दर में उत्पन्न, श्रेष्ठ

च्चमणिय) जाति का ; (सूप १, १० ; बृह ३)।

च्चास पुं [जात्यश्व, जात्याश्व] उत्तम जाति का घोड़ा ; (पउम ५४, २६)।

च्चिअ (अप) वि [जात्य] उत्तम जाति का ; (षड्)।

च्चिर न [यच्चिर] जहाँ तक, जितने समय तक ; (वव ७)।

जच्छ सक [यम्] १ उपरम करना, विराम करना। २ देना, दान करना। जच्छइ ; (हे ४, २१६ ; कुमा)।

जच्छंद वि [दे] स्वच्छन्द, स्वैर ; (दे ३, ४३ ; षड्)।

जज्ज देखो जय=यद्। वकृ—जज्जमाण; (षड्—यद् ७२)।

जज्जु देखो जउ=यद्ग्रह ; (राजा १, ६ ; मग)।

जज्ज वि [जय्य] जो जीता जा सके वह, जीतने को शक्य; (हे २, २४)।

जज्जर वि [जर्जर] जीर्ण, शक्तिहीन, खोखला, जीर्ण ; (गा १०१ ; सुर ३, १३६)।

जज्जर सक [जर्जरय्] जीर्ण करना, खोखला करना। कवकृ—जज्जरिज्जंत, जज्जरिज्जमाण ; (षड्—भवि ३३ ; सुपा ८४)।

जज्जरिय वि [जर्जरित] जीर्ण किया गया, छिद्रित, खोखला किया हुआ ; (उप ४, ४ ; सुर ३, १६६ ; कप्र)।

जट्ट पुं [जर्त] १ देश-विशेष ; (सवि)। २ उस देश का निवासी ; (हे २, ३०)।

जट्ठ वि [इष्ट] यजन किया हुआ, यज्ञ किया हुआ ; (स ५५)।

जट्ठि स्त्री [यष्टि] लकड़ी ; "जट्ठिमुट्ठिवज्जहोगेहिं" (महा; प्राप्र)।

जड वि [जड] १ अचेतन, चेतन-रहित पदार्थ ; २ मूर्ख, मामूली, विवेक-शून्य ; (पाअ ; प्राप्र ७१)। ३ निर्गिर, जाड़े से ठंडा होकर चलने की अनिच्छु; (पाअ)।

जड देखो जड ; (षड्)।

जड) स्त्री [जटा] लटे हुए बाल, मिले हुए बाल ; (हेका

जडा) २६७ ; सुपा २६१)। °धर वि [°धर] १ जटा को धारण करने वाला। २ पुं. जटा-धारी तापस, संन्यासी ; (पउम ३६, ७६)। °धारि पुं [°धारिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ ; (पउम ३३, १)।

जडाउ) पुं [जटायु] स्वनाम-प्रसिद्ध एक पक्षि-विशेष ;

जडाउण) (पउम ४४, ६६ ; ४०)।

जडागि पुं [जटाकिन्] ऊपर देखो ; (पउम ४१, ६६)।

जडाल वि [जटावत्] जटा-युक्त, जटा-धारी ; (हे २, १६८)।

जडासुर पुं [जटासुर] असुर-विशेष ; (वेणी १०७)।

जडि वि [जटिन्] १ जटा वाला, जटा-युक्त; २ पुं जटाधारी तापस ; (औप ; सम १००)।

जाडम वि [दे.जटित] जटित, जड़ा हुआ, खचित, संलग्न; (दे २, ४१ ; महा ; पाम) ।
जडिम पुंस्त्री [जडिमन्] जड़ता, जड़त्व, जाड्य, (सुपा ६) ।
जडियाल्लय) पुं [दे.जटिकादिलक] ग्रह-विशेष, ग्रहा-
जडियाल्लय) धिष्ठायक देव-विशेष, (ठा २, ३, चंद २०) ।
जडिल वि [जटिल] १ जटा-वाला, जटा-युक्त ; (उवा ; हुमा २, ३६) । २ व्याप्त, खचित, "उल्लसियपहलजालो-लिवडिए जणे पेसणो वा" (सुपा ४६६) । ३ पु. सिंह, केसरी ; ४ जटामांसी तारा ; (हे १, १६४ ; भग १५ ; पव ६४) ।
जडिलय पु [दे] गरुड, ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २०) ।
जडिलिय) वि [जटिलित] जटिल किया हुआ, जटा-
जडिलिल्ल) युक्त किया हुआ ; (सुपा १२६ ; २६६) ।
जड्ड न [जाड्य] जड़ता, जड़त्व ; (उप ३२० टी, सार्ध ११०) ।
जड्ड देखो जड ; (पव १०७ ; पंचमा) ।
जड्ड पुं [दे] हाथी, हस्ती, (ओघ २३८ ; बृह १) ।
जड्डा स्त्री [दे] जाड़, शीत ; (सुर १३, २१६; पिंग) ।
जड्ड वि [त्यक्त] परित्यक्त, मुक्त, वर्जित ; (हे ४, २६८ ; ओघ ६०) "जड्डि न सम्मत्तजुत्तो" (सत्त ७१ टी) ।
जढर) न [जठर] पेट, उदर, (हे १, २५४ ; प्राप्र, जढल) षड्) ।
जण सक [जनय्] उत्पन्न करना, पैदा करना । जणेइ, जणंति, (प्रभू १६ ; १०८, महा) । जणयंति, (भवि) । कर्म—जणंत, जणेमाण ; (सुर १३, २१, ६३६ ; उत्त) ।
जण पुं [जन] १ मनुष्य, मानव, आदमी, लोग, व्यक्ति, (ओघ, भवि ; हुमा ; प्रभू ६, ६६ ; स्वप्न १६) । २ देशवासी मनुष्य ; (सूत्र १, १, २) । ३ समुदाय, वर्ग, समूह ; (कुप्र, पंचा ४) । ४ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ; "जेण सुहकम्मजणयं" (विसे २१०) । °जत्ता स्त्री [°यात्रा] जन-प्रयाण, जन-गति, "जणजत्तादिवसं इंद अवरं अंग मया" (धर्म ४) । °ट्ठाण न [°स्थान] १ दासदासियों, पशुओं का रहने का स्थान ; २ देश-विशेष, अनार्य देश ; (ती २८) । °वय १ [°पति] मनुष्यों का मुखिया ; (ओघ) । °वय पुं [°व्रज] मनुष्य-समूह ; (पउम ४, ६) । [°वाद] १ जन-श्रुति, किंवदन्ती ; (सुपा ३ २ मनुष्यों की आपस में चर्चा, (ओघ) । ३ लोक में निन्दा ; "जणवायभएणं" (भग °स्सुइ स्त्री [°श्रुति] किंवदन्ती । °वा [°पवाद] लोक में निन्दा ; (गा ४८४) ।
जणइ स्त्री [जनिका] उत्पादिका, उत्पन्न करने (कुमा) ।
जणइउ) पुं [जनयितृ] १ जनक, पिता, (।
जणइत्तु) २ वि. उत्पादक, उत्पन्न करने वाला ४, ४) ।
जणउत्त पुं [दे] ग्राम का प्रधान पुरुष, गाँव का (दे ३, ५२ ; षड्) । २ विट, भाण्ड ; (दे ३,
जणंगम पुं [जनङ्गम] चाण्डाल, "रायाणो इव कमणा य जणंगमा" (उप १०३१ टी ; पाम) ।
जणग देखो जणय ; (भग ; उप पृ २१६ ; सुर ३,
जणण न [जनन] १ जन्म देना, उत्पन्न करना करना ; (सुपा ६६७ ; सुर ३, ६, ह ६७) । उत्पादक, जनक ; (उर ६, ६ ; कुमा, भवि), मणसायजणणा " (वसु) ।
जणणि) स्त्री [जननि, °नी] १ माता, अम्बा ;
जणणी) ३, २६ ; महा ; पाम) । २ उत्प वाली स्त्री, उत्पादिका ; (कुमा) ।
जणद्दण पुं [जनार्दन] श्रीकृष्ण, विष्णु, (टी, पिंग) ।
जणमेजय पुं [जनमेजय] स्वनाम-प्रसिद्ध रा चार १२) ।
जणय वि [जनक] १ उत्पादक, उत्पन्न करने "दिट्ठिविसं विसुयाणं सव्वं सव्वस्स जणयए" (प्रभू २ पुं. पिता, बाप, (पाम ; सुर ३, २६ ; प्रभू ३ देखो जण=जन ; (सूत्र १, ६) । ४ का एक राजा, राजा जनक, सीता का पिता ; (पउ ६ पुं. ब. माता-पिता, मा-बाप, "जं किर कई तायजायाइं कुणंति तं सव्वं" (सुपा २६६ ; ६ °जणया स्त्री [°जनया] राजा जनक की पुत्री, रामचन्द्र की पत्नी, सीता, जानकी ; (से १, °दुहिया, °धूया (°दुहितृ) वही अर्थ, (पउ ११ ; ८८, ४) । °णंदण पुं [°नन्दन] राम

ता पुत्र, मामाजत्त ; (पउम ६६, २६)। जेट्ठिणी सी [ज्येष्ठिनी] सीता, रामपत्नी, जानकी; (पउम ६४, ४६)। जेट्ठिणी सी [ज्येष्ठिनी] बड़ी अर्थ; (पउम ४६, १८)। णिवतणया सी [नृपतनया] राजा जनक की पुत्री, सीता ; (पउम ४८, ६०)। पुत्ती सी [पुत्री] वही अर्थ ; (स्फर ७८)। सुअ पुं [सुत] जनक राजा का पुत्र, भामण्डल ; (पउम ६६, २८)। सुआ सी [सुता] जानकी, सीता ; (पउम ३४, ६२ ; से ३, ३८ ; १०, ३)।

जायंगया सी [जनकात्मजा] जानकी, सीता, राजा जनक की पुत्री ; (पउम ४१, ७८)।

जायव पुं [जनपद] १ देश, राष्ट्र, जनस्थान, लोकस्थान ; (औप)। २ देश-निवासी जन-समूह ; (पाअ १, ३ ; आचा)।

जायव वि [जानपद] देश में उत्पन्न, देश का निवासी; (आचा)।

जि (अप) अ [इव] तरह, मानिंद, जैसा ; (हे ४, ४४४ ; षड्)।

जिअ वि [जनित] उत्पादित, उत्पन्न किया हुआ ; (पाअ)।

जिणी सी [जनी] माँ, माता, जननी ; (गाथा २—स ३६३ ; पउम १६, ७३)।

जु देखो जणि ; (हे ४, ४४६; कुमा . षड्)।

जुअकलिआ सी [जनीत्कलिका] मनुष्यों का छोटा समूह ; (भग)।

जुम्मि सी [जनीमि] मनुष्यों की सेना, (भग)।

जेमाण देखो जम = जन्।

जेयर (अप) वि [जनक] १ उत्पादक, पैदा करने वाला ; २ पुं पिता, बाप ; (भवि)।

जेयरि (अप) सी [जननी] माता, माँ ; (भवि)।

जण्ण पुं [यज्ञ] १ यज्ञ, याग, जाग, क्रतु ; (प्रभ ; स ३३०)। २ देव-पूजा ; ३ श्राद्ध ; (ओघ ३)। ४. जाग वि [यागिन्] यज्ञ करने वाला ; (औप ; निचू १)। जण्णज्ज वि [यज्ञीय] १ यज्ञ-संबन्धी, यज्ञ का ; २ पुं 'उत्तराध्ययन सूत्र' का एक प्रकरण ; (उत्त २५)। जण्णत्थ न [अन्यत्र] १ यज्ञ का स्थान ; २ अन्य स्थान, अन्यत्र (से १०)। जण्ण न [युग्म] यज्ञ का उपाय ; (उत्त २५)। जण्णवाड पुं [यज्ञवाट] यज्ञ-स्थान; (ठा २२७)। जण्णसेट्ठ पुं [श्रेष्ठ] श्रेष्ठ यज्ञ, उत्तम याग ; (उत्त १२)।

जण्णय देखो जण्ण ; (प्राकृ)।

जण्णयत्ता सी [देशयात्रा] यात्रा, विहार की यात्रा, यज्ञ के साधियों का गमन ; (उत्त ६६४)।

जण्णसेणी सी [याज्ञसेनी] द्रौपदी, पाण्डव-पत्नी ; वेणी २७)।

जण्णहर पुं [दे] लग्न-मण्डप, दुल्हा मण्डप ; (षड्)।

जण्णिय पुं [याज्ञिक] याजक, यज्ञ करने वाला; (आवम)।

जण्णोवइय) न [यज्ञोपवीत] यज्ञ-सूत्र, जनेऊ ; (उत्त जण्णोवईय) २ ; आचा)।

जण्णोहण पुं [दे] गजसंघ, विवाह ; (दे ३, ४३)।

जण्ह न [दे] १ छोटी स्थाली; २ वि कृष्ण, काले रंग का; (दे ३, ५१)।

जण्हई सी [जाह्नवी] गंगा नदी, भागीरथी ; (अनु ६)।

जण्हली सी [दे] नदी, नाला, इजलस्रोत ; (दे ३, ४०)।

जण्हवी सी [जाह्नवी] १ सगर चक्रवर्ती की एक पत्नी, भगीरथ की जननी ; (पउम ५, १०१)। २ गङ्गा नदी, भागीरथी ; (पउम ४१, ५१; कुमा)।

जण्हु पुं [जह्नु] सगर-चक्रवर्ती एक राजा ; (प्राकृ; हे ३, ७५)। सुआ स्त्री [सुता] गङ्गा नदी, भागीरथी, (पाअ)।

जण्हुआ सी [दे] जङ्घा, पुतली ; (पाअ)।

जत्त देखो जय=यत्। नवि—नवियत्ति ; (सिरि १, १२)।

जत्त पुं [यत्न] उद्यम, उद्यम, चेष्टा ; (ठा ४ ; ८)।

जत्ता सी [यात्रा] १ देवोत्सव-मेला, देवोत्सव ; (ठा ४, १, औप)। २ गमन, गति ; " जत्तत्थि ते भन्ते " (भगवती ; औप)। ३ देव-पूजा के निमित्त किया जाने वाला उत्सव-विशेष, महोत्सव, रथयात्रा आदि, " इ, अर्थ यात्रा निष्पन्नयोर्यत्तयोः " (सिद्ध ३, ३८)। ४ निर्वाह-साधन, वृत्ति-साधन ; (पव्वा ३)। ५ मुख प्रसन्नता ; (उत्त १८, १०)।

जत्ति सी [दे] १ विस्तार ; २ मेला, मुकाम ; "जत्तिमित्तं च कज्जं च कहिअं" (उत्त २८)।

जत्तिय वि यावत्] जितना ; (पाअ १४१; भवि) जत्तो देखो जओ ; (हे २, १६०)।

जय वि [यमित] नियन्त्रित, संयमित, वश में किया हुआ; (कि ११, ४१ ; सुर ३)।

जया देखो जइआ। पि १७८ ; २४१)।

जयं [जयु] ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी का नाम; (इक)।

जय अक [जन्] उत्पन्न होना। जज्जए ; (हि ४, १३६)। वकृ—जज्जंत, (सुपा), "जज्जंतए जोणी, दुक्खेण य वड्ढए विंदो" (सुपा ३८)।

जय अक [जम्] खाना, भक्षण करना। जज्जए ; (पउ)।

जय पुं [जनयतु] जनक, उत्पादक, (ठा ६ ; भग ; प्रभु ६०)। °पय न [°जनयत्] जनक, उत्पादक, (हि २, १४८; ठा १, १ ; सुर १, ६)।

जया सक [याच्या] प्रार्थना करना। (उप पृ ३७६)।

जय [जि] १ जीतना। २ अक. उत्कृष्टता से वर्तना। ३ (सक)। जयदि ; (स ३८)। संकृ—°जइत्ता, (ठ ६)।

जय [यज्] १ पूजा करना। २ दान करना। जयइ, (उत्त २५, ४)। वकृ—जयमाण ; (भवि १३६)।

जय [यत्] १ यत्न करना, चेष्टा करना। २ स्वात्मा में उपयोग करना। जयइ , (उत्त)। संवि—जयि; (भग)। वकृ—जयंत, जयमाण ; (स ७ ; ओघ २१ ; औप १२४ ; पुप्फ २४१)। हे—यव्व ; (उव ; सुर १, ३४)।

न [जगत्] जगत्, दुनिया, संसार ; (प्रभु १६६ ; ६, १)। °त्तय न [°त्रय] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ; (सुर ७६ ; ६५)। °नाह पुं [°नाथ] परमात्मा ; (पउम ८६, ६६)। °पहु पुं [°प्रभु] देखो ; (सुर २८ ; ८६)। °पिंद वि [°पिन्द] तू को आनन्द देने वाला ; (पउम ११७, ६)।

वि [यत] १ संयत, नियन्त्रित ; (भग ६५)। २ योग रखने वाला, स्वात्मा रखने वाला ; (उत्त १ ; आव)। ३ न. छठवाँ सुर-स्वप्नक ; (कप्प ४, ४८)। ४ दक्ष, प्रवीण, कुशलता ; (आचा १, १—अ ३३), "सव्व चोरं जयं विदुं" (दस ४)।

पुं [जय] वेग, शीघ्र-गमन, दौड़ ; (पाम)।

पुं [जय] १ जय, जीत, शत्रु का पराभव ; (औप ; ठा)। २ स्वनाम-ख्यात एक चक्रवर्ती राजा ; (सम ३६२)। ३ न [पुर] नगर-विशेष ; (ठ ६)। °कम्मा स्त्री [°कर्मा] विजय-विशेष ; (पउम ७, १३६)। °घोस पुं [°घोष] १ जयध्वनि ; २ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि; (उत्त २५)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ विजय की बारहवीं शताब्दी का एक राजा; २ पन्द्रहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य ; (रयण ६४)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] शत्रु पर चढ़ाई ; (सुर ३४१)। °पडाया स्त्री [°पताका] विजय का झंडा ; (ठा १२)। °पुर देखो °उर ; (वसु)। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] एक सती-स्त्री ; (इक)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] जय-लक्ष्मी, विजय-श्री ; (हे ४, ३१ ; कुमा ७४३)। °वंत वि [°वत्] जय-शील, विजयी ; (पउम ६८, ४६)। °वल्लह पुं [°वल्लभ] वृक्ष-विशेष ; (पंड १)। °संध पुं [°सन्ध] पुरातन-प्रसिद्ध राजा का एक मन्त्री ; (भवि ४)। °संधि पुं [°सन्धि] बड़ी पुरानी अर्क ; (भवि ४)। °सद्द पुं [°शब्द] विजय-सूचक आवाज; (औप)। °सिंह पुं [°सिंह] १ सिंहल द्वीप का एक राजा ; (रयण ४१)। २ विजय की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा, सिद्धराज जयसिंह का दूसरा नाम "सिद्धराज" था ; "जेण जयसिंहदेवो गया सरिज्जय खयदेवसिंघो" (सुपा १०८००)। ३ स्वनाम-ख्यात जैनाचार्य विशेष ; (सुपा ६६८), "सिरिजयसिंहो सूरी सव्वसमीहाउलिम सुतित्थी" (सुपा १०८७२)। °सिरी स्त्री [°श्री] विजय-श्री, जय-लक्ष्मी ; (भवप्र)। °सेण पुं [°सेन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा ; (महा)। °वह वि [°वह] १ जय को वहन करने वाला, विजयी ; (पउम ७०, ७ ; सुपा २३४)। २ विद्याधर-नगर विशेष ; (इक)। °वहपुर न [°वह-पुर] एक विद्याधर-नगर; (इक)। °वास न [°वास] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात नगर ; (इक)।

जय पुंस्त्री [जया] तिथि-विशेष— तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि ; (जं १)।

जयं देखो जयाअन्दा। °णाभि अ [°भृति] जब से, जिस समय से ; (स ३६६)।

जयंत पुं [जयन्त] १ इन्द्र का पुत्र; (पाम)। २ एक मानी बनदेव ; (सम १५४)। ३ एक जैन मुनि, जो वज्र-सेन मुनि के तृतीय शिष्य थे ; (कप्प)। ४ इस नाम के देव-विमान में रहने वाली एक उत्तम देव-जाति ; (सम ४६)। ५ उत्सर्पिणी की अवसर्पिणी के परिवर्तन द्वारा का एक अतिवृष्टा देव ; (ठा ४, २)। ६ न. देव-विमान विशेष ; (सम ४६)।

७ जम्बूद्वीप की जगती का पश्चिम द्वार; (ठा ४, २)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर; (ठा ४)।

जयंती स्त्री [जयन्ती] १ वनस्पति-विशेष; (पण्ण १)। २ भगवान् महावीर की माता; (सम १५२)। ३ विदेह वर्ष की एक नगरी, (ठा २, ३)। ४ अंगारक-नामक ग्रह की एक अग्र-महिषी; (ठा ४, १)। ५ जम्बूद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८)। ६ भगवान् महावीर की एक उपासिका, (भग १२, २)। ७ भगवान् महावीर के आठवें गणधर की माता; (आव)। ८ अञ्जनक पर्वत की एक वापी; (ती २०)। ९ नवमी तिथि, (जं ७)। १० जैन दीक्षितों की एक शाला, (कप्प)।

जयण न [यजन] १ याग, पूजा, २ अभय-दान; (पञ्ह २, १)।

जयण न [यतन] १ यत्न, प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम; "जयणाए धम्मचरिअं" (अनु)। २ यत्ना, प्राणी की रक्षा; (पञ्ह २, १)।

जयण वि [जयन] वेग वाला, वेग-युक्त; (कप्प)।

जयण न [जयन] १ जीत, विजय; (सुपा २६८, कप्प)। २ वि. जीतने वाला, (कप्प)।

जयणा स्त्री [यतना] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश; (निचू १)। २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग; (दस ४)। ३ इत्यादि, जिससे जीव को दुःख न हो इस तरह प्रवृत्ति करने का कथन, (निचू १, पि ६०; ओघ)।

जयद्दह पुं [जयद्रथ] सिन्धु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था; (माया १, ११)।

जया अ [यदा] जिस समय, जिस काल; (कप्प; काल)।

जया स्त्री [जया] १ सिद्धि-विशेष; (पडम ४, १४१)। २ चतुर्थ चक्रवर्ती राजा की अग्र-महिषी; (सम १५२)। ३ भगवान् वासुपूज्य की स्वनाम-ख्यात माता; (सम १५१)। ४ तिथि-विशेष—द्वितीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि; (सुज्ज १०)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन देवी, (सं ६)। ६ औषधि-विशेष; (राज)।

जयिअ देखो जइअ=जयित्; (कप्प १, ८)।

जर अक [जृ] जीर्ण होना, पुराना होना, बूढ़ा होना; जरइ; (हे ४, २३४)। वकृ—जरंत, जरमाण, (हे ४, २३०)। भूक—जरिअ; (अभि ८८)।

जर पुं [ज्वर] रोग-विशेष, बुखार; (कुमा)।

जर पु [जर] १ रावण का एक सुभट; (पउम ५७) २ वि. जीर्ण, पुराना; (दे ३, ५६)।

जर वि [जरत्] जीर्ण, पुराना, वृद्ध, बूढ़ा, (कुमा; ६६; १०४)। स्त्री—°री; (कुमा; सण ४७२ ब)। पु [°गव] बूढ़ा बैल; (बृह १, अनु ४)। °गवी [°गवी] बूढ़ी गौ; (ठा ४६२)। °गु पुं [°गु] बूढ़ा बैल, २ स्त्री. बूढ़ी गौ; "जिणया य जरग्गवो चरिया" (उप ३३, १६)।

जर° देखो जरा; (कुमा; अंत १६; वज्ज ७)।

जरंड वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा, (दे ३, ४०)।

जरग्ग वि [जरत्क] जीर्ण, पुराना, (अनु ६)।

जरठ वि [जरठ] १ कठिन, परुष; २ जीर्ण, पु (णाया १, १—पत्र ६)। देखो—जरढ।

जरड वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा; (दे ३, ४०)।

जरढ देखो जरठ, (वि १६८; से १०, ३८)। प्रौढ, मजबूत, (से १, ४३)।

जरय पुं [जरक] रत्नप्रभा नामक नरक-पृथ्वी के नरकावास; (ठा ६— पत्र ३६५)। °भद्द पु [° नरकावास-विशेष, (ठा ६)। °यस पु [° नरकावास-विशेष, (ठा ६)। °यसिंह पु [° नरकावास-विशेष; (ठा ६)।

जरल्लिअ } वि [दे] ग्रामीण, मारव, (दे ३,
जरल्लिय }

जरा स्त्री [जरा] बुढ़ापा, वृद्धत्व, (आचा; ... ११४)। °कुमार पु [°कुमार] श्रीकृष्ण ... भाई, (अंत)। °संध पु [°सन्ध] राजगृह ... राजा, नवमें प्रतिवासुदेव, जिनको श्री कृष्ण वासुदेव ... था; (सम १५३)। °सिंध पु [°सिन्ध] ... अर्व; (पण्ण १, ४—पत्र ७२)। सिंधु पु [° वही पूर्वोक्त अर्व, (आया १, १६—पत्र २०... ५, १६६)।

जराहिरण (अप) देखो जरूहरण, (सिरि)।

जरि वि [जरिन्] बुढ़ापा वाला, वृद्ध अवस्था ... २०२)।

जरि वि [जरिन] जरा-युक्त, वृद्ध, ... ६०; उप ३, १)।

जरिअ वि [जरित] जरा-युक्त, बुढ़ापा ... सुपा २८२)।

अउ अव्य [उत्] १ जल्पना, दम्भ होना। २ चमत्कार। उदा; (महा)। वह—अउंतेण ; (उदा; का २६४)। हेम— अउिउं; (महा)। प्रयो, वह—अउिंत ; (महानि ७)।

अउ देखो अड ; (भा १२ ; आव ४)।

अउअ न [आद्य] आदना, मन्दता , " अउअं मंदत्तणेवा" (सूर्य ७३ ; से १, २४)।

अउड पुं [उपल] वैडूर्यरत्न, चमकीला ; (सुम १, ६, १०)।

अउल न [अल] १ पानी, इलाज ; (सुम १, ६, १ ; जी २)। २ अउलकल्प-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ८, १)। 'कंत पुं [कान्त] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति ; (पण्ण १, कुम्मा १४)। २ इन्द्र-विशेष, दक्षिणार्द्ध-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र ; (ठा २, ३)। ३ अउलकल्प इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ८, १)। 'कालकाल पु [कालकाल] हृद से आठवाँ पानी , (पण्ण)। 'कित्ति पुंस्त्री [कीर्ति] पानी का हाथी, अउ-अउ विशेष ; (महा)। 'कुलेय पुं [कुलेय] कच्छप वंश की एक जाति, (गउड)। 'कोडा, कोला स्त्री [कोडा] पानी में की जाती क्रीड़ा, जल-क्रीड़ा, (पण्ण १, २)। 'केलि स्त्री [केलि] जल-क्रीड़ा ; (हुआ)। 'खर देखो 'खर ; (कप्प ; हे १, १७७)। 'खार पुं [खार] पानी में खारापन, (कप्प २, ६, ११)। 'खारण पुं [खारण] जिसके प्रभाव से पानी में भी भूमि की तरह चलना हो सके ऐसी अतौकिक शक्ति रखने वाला मुनि ; (पण्ण १)। 'चारि पुं [चारिन्] पानी में रहने वाला जंतु, (जी १०)। 'चारिया स्त्री [चारिका] स्थूल जलचर-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति; (पण्ण १)। 'छत्त न [छत्र] पानी का छत्र, पानी का पतला, (मुद्रा)। 'णाह पु [नाथ] समुद्र, सागर ; (हम्मीर ४१ टी)। 'णिहि पु [निधि] समुद्र, सागर ; (गउड)। 'णोली स्त्री [नीली] सेवार , (हे १, ४१)। 'तुसार पु [तुषार] पानी का बिन्दु , (पण्ण)। 'थलिणी स्त्री [स्थलिनी] स्थल-विशेष , (पण्ण १, १३३)। 'दु पु [द्रु] पेड़, वृक्ष (सुर १२३, पउ १८)। 'दार स्त्री [द्वार] पानी के भीतर का मुख्य स्थान ; सुर १३३)। 'दिहि देखो 'णिहि ; (हम्मीर ४१)। 'दुम पु [द्रुम] १ वृक्ष विशेष, चतुरिन्द्रिय-जातीय एक जाति का जीव विशेष (ठा १, १)। २ अउलकल्प-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। 'पउम न [पद्म] कमल, पद्म ; (पण्ण १२, ३१ ; औप ; पण्ण १)। 'पउमोदर ; (कप्प ; गउड ; से १, २४)। 'पर पुंस्त्री [चर] जल में रहने वाला प्राणि जन्तु; (जी २०) ; स्त्री—री ; (जीव २)। 'पिंकु पुं [पिङ्कु] पक्षि-विशेष, टेंक-पक्षी; (ठा ४ ४२; गउड)। 'पक्खस पुं [राक्षस] राक्षस की एक जाति ; (पण्ण १)। 'पमण न [रमण] जल-क्रीड़ा, जल-केलि ; (णाया १, १३)। 'पय पुं [पय] अउलकल्प-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ८, १)। 'पासि पुं [पाशि] समुद्र, सागर ; (सुपा १६४ ; ठा २ ४ टी)। 'पुप्फ पुंन [पुष्प] पानी में पैदा होने वाली वनस्पति ; (पण्ण १)। 'पुंछ पुं [पुच्छ] अउलकल्प-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, ८)। 'पिप्पिल न [पिप्पिल] पानी में उत्पन्न होने वाली वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)। 'पायस पुंस्त्री [पायस] जलकौआ, पक्षि-विशेष ; (हुआ)। 'पासि पुं [पाशिन्] १ पानी में रहने वाला ; २ पु, जलचरों की एक जाति, जो पानी में ही निवास करते हैं ; (औप)। 'पाह पुं [पाथ] १ मेघ, अभ्र ; (ठा ४ ३१ ; सुर ७८)। २ जलचर-विशेष ; (पण्ण ७८, १)। 'बिंदुय पुं [बिन्दुक] पानी का बिन्दु, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; (पण्ण १)। 'बिंबिय पुं [बिम्बिक] १ इन्द्रवारुणी का एक स्वल्पजलाश्रय साग ; (ठा ८)। २ स्थूल कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति, (अंग १)। 'भय न [भय] कमल, पद्म ; (उत्त १०३१ टी)। 'भायण न [भाजन] घड़ा, पानी रखने का बर्तन ; (आचा)। 'मुय न [मुक] १ मेघ। २ अउलकल्प-नामक इन्द्र का एक लोकपाल ; (ठा ४, १)। 'मेंढ पु [मेण्ढ] समुद्र के किनारे का पर्वत ; (उत्त ३६ टी)। 'हत्थि पु [हस्तिन्] अउलकल्प, पानी का एक जन्तु (पण्ण)। 'हर पु [धर] १ मेघ, अभ्र ; (सुर ३, १०४ ; हे १, ३३)। २ एक विशाल वृक्ष ; (पण्ण ७१, ३१)। हर पु [धर] जलाधार ; (गउड)। 'हर न [गृह] समुद्र, सागर ; (हे १, ३३)। 'हरण न [हरण] १ पानी में बहाना ; (पण्ण)। २ जल-विशेष ; (पिंड)। 'हि पु [धि] १ समुद्र, सागर ; (सुर ३३३)। २ बड़ा जलाशय, (हि १४३) 'हिवइ पु [हिपति] समुद्र, सागर (से १, २)।

जलइय पु [जलकित] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोक-पाल, (ठा ४, १—पत्र १६८)।

जलंजलि पु [जलाञ्जलि] तर्पण, दोनों हाथों में लिया हुआ जल, (सुर ३, ६१ ; कप्र)।

जलग पु [ज्वलक] अग्नि, आग, (पिंड)।

जलजलिंत वि [जाज्वल्यमान] देदीप्यमान, चमकता, (कप्र)।

जलण पु [ज्वलन] १ अग्नि, वह्नि, (उप ६४८ टी)। २ देवों की एक जाति, अग्निकुमार-नामक देव-जाति, (पण्ह १, ४)। ३ वि. जलता हुआ, ४ चमकता, देदीप्यमान, "एईए जलणजलणोवमाए" (उप ६४८ टी)। ५ जलाने वाला ; (सुम १, १, ४)। ६ न. अग्नि सुलगाना; (पण्ह १, ३)। ७ जलाना, भस्म करना, (गच्छ २)। °जडि पु [°जटिन्] विद्याधर वंश का एक राजा; (पउम ५, ४६)। °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक प्राचीन कवि, (गउड)।

जलाघण न [ज्वालन] जलाना, दग्ध करना; (पण्ह १, १)।

जलिअ वि [ज्वलित] १ जला हुआ, प्रदीप्त, (सुम १, ५, १)। २ उज्ज्वल, कान्ति-युक्त ; (पण्ह २, ५)।

जलूगा स्त्री [जलौकस्] १ जन्तु-विशेष, जोंक, जलिका, जलूया जल का कीड़ा ; (पउम १, २४ ; पण्ह १, १)। २ पक्षि-विशेष ; (जीव १)।

जलूसग पु [दे] रोग-विशेष; (उप पृ ३३२)।

जलोयर न [जलोदर] रोग-विशेष, जलन्धर, जटराम ; (सण)।

जलोयरि वि [जलोदरिन्] जलन्धर रोग से पीड़ित, (राज)।

जलोया देखो जलूया ; (जी १५)।

जल्ल पुं [दे. जल्ल] १ शरीर का मैल, सूखा पसीना ; (सम १० ; ४०; ओघ)। २ नट की एक जाति, रस्सी पर खेल करने वाला नट, (पण्ह २, ४ ; ओघ, णाया १, १)। ३ बन्दी, विरद पाठक, (णाया १, १)। ४ एक म्लेच्छ देश ; ५ उस देश में रहने वाली म्लेच्छ जाति, (पण्ह १, १—पत्र १४)।

जल्लार पु [जल्लार] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक अनार्य देश, २ जल्लार देश का निवासी, (इक)।

जल्लिय न [दे. जल्लिक] शरीर का मैल ; (उत्त २४)।

जल्लोसहि स्त्री [दे. जल्लौषधि] एक तरह की आश्चर्यजनक शक्ति, जिसके प्रभाव से शरीर के मैल [illegible] होता है, (पण्ह २, १ ; विसे ७१६)।

जव सक [यापय्] १ गमन कराना, भेजना। २ करना। जवइ ; (हे ४, ६०)। हेकृ—[illegible] (सुम १, ३, २)। कृ—जवणिज्ज, [illegible] (णाया १, ५, हे १, २४८)।

जव सक [जप्] जाप करना, बार बार मन्त्र [illegible] का नाम स्मरण करना, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण जवइ, (रंभा)। "जपति तत्रभवान् [illegible] सुविहिताग्रो" (सुपा २०२)। कृ—जप्पंत, जप्पिअव्व, जप्पेअव्व ; (सुर १३, १८६)।

जव पु [जप] जाप, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण, मन ही मन देवता का नाम-स्मरण ; (पण्ह २, १२०)।

जव पु [यव] १ अन्न-विशेष ; (णाया १, १ ; ८)। २ परिमाण-विशेष, आठ यूका का माप, °णाली स्त्री [°नाली] वह नाली जिसमें यव हों; (आचू १)। °मज्झ न [°मध्य] १ (पउम २२, २४)। २ आठ यूका का एक [illegible] २५)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] व्रत विशेष; (ठा ४, १)। °राय पु [°राज] (कुमा १)। वंसा स्त्री [°वंशा] वनस्पति (पण्ण १)।

जव पु [जव] वेग, दौड़, शीघ्र गति, (कुमा

जवजव पु [यवयव] अन्न-विशेष, एक तरह का (ठा ३, १)।

जवण न [दे] हल की शिखा, हल की चोटी ४१)।

जवण न [जपन] जाप, पुनः पुनः मन्त्र का " अहिणा दट्ठस्स जए को कालो मन्त्रजप्पम्मि" ६० ; म ६)।

जवण वि [जवन] १ वेग से जाने वाला, टी)। २ पु. वेग, शीघ्र गति, (आवम)।

जवण पु [यवन] १ म्लेच्छ देश-विशेष, ६४)। २ उस देश में रहने वाली मनुष्य-जा १, १)। ३ यवन देश का राजा, (कुमा

जवण न [यापन] निर्वाह, गुजारा, (उत्त

जवणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो, (पव २

णलिया स्त्री [यवनालिका] स्त्रि-विशेष (राज)।
णालिया स्त्री [यवनालिका] कन्या का अन्तःपुर, अन्तः)।
णेत्ता स्त्री [यवनिका] परदा, (दे ८, १ , गउड)।
णेरज्ज देखो जव = यवन्।
णी स्त्री [यवनी] १ परदा, आच्छादक पट (ठ २,)। २ संयत्रिका, दुर्गा; (कप्पि १)।
णी स्त्री [यावनी] १ यवन की स्त्री। २ यवन की लि; (सण ३४, विसे ४६ ८ टी)।
णीअ देखो जय = यवन्।
यमाण पुं [दे] जलद अभ्र का वायु-विशेष, प्रलय; (गउड)।
य) पुं [दे] यव का अङ्कुर, (ठ ३, ४२)।
ग्य)
ली स्त्री [दे] जव, वेग , " गच्छति गगनेऽनेन सुग्रीवाहिरुता जवात् " (सुग्रा ३७६)।
वग्य [दे] देखो जवग्य , (पण्हा ८)।
स न [यवस] १ तृण, घास ; " सिंहेव जवसस्थिम्" ठा ४२८ टी ; उप पृ ८४)। २ मूँग वगैरः धान्य; आचा २, ३, २ ।
सा स्त्री [जपा] १ वनस्पति-विशेष, जवा पुष्प की वृक्ष; गुड़हल का फूल , (कुमा)।
सास पुं [यवास] वृक्ष-विशेष, एक पुष्प वाला वृक्ष-भेद , " पाडलि जवासा (श्रा २३ ; पण्ह १)। जवासकुसुमं इव " (पण्ह १)।
र) वि [जवित्] १ वेग वाला, वेग-युक्त; (सुपा ण (११२)। २ अश्व, घोड़ा , (राज)।
य वि [यापित] १ नमित, झुकाया हुआ; २ यापित; कुमा)।
ा पुं [यशस्] १ कीर्ति, प्रख्याति, सुख्याति; (औप ; ठा)। २ संयम, त्याग, विरति , (पव १ ; ठा २)। ३ क्रिया , (ठा ३)। ४ भगवान् ऋषभनाथ का प्रथम शिष्य ; (सम ११२)। ५ वान् पार्श्वनाथ का आठवाँ प्रधान शिष्य ; (कप्प)।
कित्ति स्त्री [कीर्ति] सुख्याति, सुप्रसिद्धि; (सुपा १, ६; च १)। भद्द पुं [भद्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन चार्य , (कप्प सार्य १३)। म, मंत वि [वत्] १ यशस्वी, प्रख्यात, कीर्ति वाला ; (पण्ह १, ४)। २ पुं स्वनाम-प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुष ; (सम १५०)।
यं स्त्री [यवी] १ द्रविड़ देशवर्ती मथुरा-राज की माता ; (सम ११२)। २ तृतीया, अष्टमी और अयोदशी की गति; (चंद १०)। यम्म पुं [यर्मन्] स्वनाम-ख्यात दुर्ग-विशेष; (गउड)। याय पुं [याद] साधु-वाद, अभिनन्दन, प्रशंसा ; (उप ६८६ टी)। विजय पुं [विजय] विजय की अठारहवीं शताब्दी का एक जैन सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार, न्यायाचार्य श्रीमान् यशोविजय उपाध्याय; (राज)। हर पुं [धर] १ भारतवर्ष का भावी कालिक अठारहवाँ जिन-देव ; (पव ८)। २ भारत वर्ष के एक भावी जिन-देव ; (पव ४६)। ३ एक राज-कुमार ; (भत्त)। ४ पद्म का पाँचवाँ शिष्य ; (जं ७)। ५ वि. यश को धारण करने वाला, यशस्वी ; (जीव ३)। देखो जसो।
जसद पुं [जसद] धातु-विशेष, जस्ता; (राज)।
जसा स्त्री [यशा] कपिलमुनि की माता; (उत्त ८)।
जसो देखो जस। आ स्त्री [दा] १ नन्द-नामक गोप की पत्नी ; (ग्रा ११२; ६१०)। २ भगवान् महावीर की पत्नी; (कप्प)। कामि वि [कामिन्] यश चाहने वाला, (उत्त २)। कित्तिनाम न [कीर्तिनामन्] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से सुयश फैलता है ; (सम ६७)। धर पुं [धर] १ अगस्त्य के अश्व-सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १)। २ न. ग्रैवेयक देवलोक का प्रस्तट ; (इक)। हरा स्त्री [धरा] १ दक्षिण रुचक पर्वत पर रहने वाली एक दिशा-कुमारी देवी; (ठा ८)। २ जम्बू-वृक्ष विशेष, सुदर्शना; (जीव ३)। ३ पद्म की चौथी गति; (जो ४)।
जह सक [हा] त्याग देना, छोड़ देना। जहइ ; (वि ६७)। वकृ—जहंत; (उव ३)। कृ—जहणिज्ज; (राज)। संक—जहित्ता; (वि ६८२)।
जह अ [यत्र] जहाँ, जिसमें ; (हे २, १६१)।
जह अ [यथा] जिस तरह से, जैसे ; (ठा ३, १ ; स्वप्न ८०)। कम न [क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम ; (पंचा ६)। खाय देखो अहक्खाय (आचा)। ठिइय वि [स्थित] यथास्थित, १, १६२ ; सुपा ६७)। त्थ वि [, सत्य ; (पंचा १४)। त्थनाम वि ; नाम के

गुण बला, अनर्थ, (श्रा १६)। °त्थवाइ वि [°र्थवादिन्] सत्य बोलने वाला; (सुर १४, १६)। °त्थ न [यथातथ्य] वास्तविकता, सत्यता; (राज)। °दिट्ठ न [°दृष्ट] इच्छा के अनुसार, (सुपा १६२)। °थट्ठिय वि [°स्थित] सत्य, यथार्थ, (सुपा ६२६)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] विधि के अनुसार, "नहगामिणिपमुहाओ अट्ठविहा नक्खित्तदेवीओ" (सुर ३, २८)। °संख न [°संख्य] संख्या के क्रम से, क्रमानुसार, (णाट)। देखो जहा=यथा।

जहण न [जघन] कमर के नीचे का भाग, (गा १६६, कप्पा १, ६)।

जहणगोह पु [दे] ऊद, जल, जाँघ, (द ३, ४४)।

जहणपुरय } न [दे] आँगन, जघनाशुक, स्त्री को
जहणपुरिय } पहनने का वस्त्र विशेष, (दे ३, ४६; पउ)।

जहण्ण } वि [जघन्य] निकृष्ट, हीन, अधम, नीच, (सम ८,
जहन्न } भग, ठा १, १, जी ३८, दं ६)।

जहा देखो अह=हा। जहाह, (सि ३६०)। संकृ—जहारिअ, जहारिआ, (सम १, २, १, सि ४६१)।

जहा देखो अह=यथा, (हे १, ६७; कुमा) °जुत्त वि [°युक्त] यथोचित, योग्य, (सुर ३, १०१)। °जेट्ठ न [°ज्येष्ठ] ज्येष्ठता के क्रम से, (अनु)। °णामय वि [°नामक] जिसका नाम न कहा गया हो, अनिर्दिष्ट-नामा, कोई, (आचा २)। °तच्चय न [°तथ्य] सत्य, वास्तविक, (कप्पा)। °तह न [°तथ] सत्य, वास्तविक, (राज)। °तहत्त न [°तथात्व] १ वास्तविकता, सत्यता, "आणाए मामगं धम्मं एस उत्तरवादे इहमाणवाणं वियाहिए" (सम १, ६)। २ 'सूयगडंग' सूत्र का एक अध्ययन, (सम १, २३)। °पवत्तिकरण न [°प्रवृत्तिकरण] अन्तर का परिणाम विशेष, (आचा)। °भूय वि [°भूत] सत्य, वास्तविक, (आचा १, १)। °मणुन्निया स्त्री [°मनोज्ञता] इच्छा के क्रम से, मनोज्ञता के अनुसार (ठा)। °मइ देखो अह=यथा। °मिल न [°मिल] जैसे तैसे हो वैसे, बराबर, (सम २८)। °मुहिय वि [°मुखित] मुँह के अनुसार, (पंचा १)।

जहाजाय वि [दे, यथाजात] नग्न, मूर्ख, बेवकूफ; (द ३, ४१, पिंड १, ६)।

जहि } देखो अह=यत्र, (हे २, १८१, सम, सुर १, १३१,
जहिं } कुमा)।

जहिच्छ न [यथेच्छ] इच्छा के अनुसार। (सुर १ पिंग)।

जहिच्छिय न [यथेप्सित] इच्छानुसार, इच्छित (पंचा १)।

जहिच्छिया स्त्री [यदृच्छा] मरजी, स्वेच्छा, स्वच्छन्द (गा ४६३; विसे ३१६; सम ३३२)।

जहिट्ठिर पु [युधिष्ठिर] पाण्डु-राजा का ज्येष्ठ पाण्डव, (हे १, १०७; प्राप्र)।

जहिमा स्त्री [दे] विरुद्ध पुरुष की बनाई हुई कथा, (दे ३, ४२)।

जहुट्ठिल देखो जहिट्ठिल; (हे १, ६६; १०१)

जहुत्त न [यथोक्त] कथनानुसार, (पंचा)।

जहेअ अ [यथैव] जैसे ही, (से ६, १६)।

जहेच्छ देखो जहिच्छ, (गा ८८२)।

जहोइय न [यथोदित] कथितानुसार, (धर्म २)।

जहोइय } न [यथोचित] योग्यता के अनुसार,
जहोचिय } ८, ६, सुपा ४७१)।

जा अक [जन] उत्पन्न होना। जामा, (हे ४, २६१) वकृ—जायंत, (कुमा)। संकृ—"एवं जाइ निब्भिन्नाणा पुणो पुणो जाइउं च मरिउं च" (सम ११)।

जा सक [या] १ जाना, गमन करना। २ प्राप्त करना, जानना। जाइ, (सुपा ३०१)। जंति, (भग)। जाव, (सुर ३, १४३; १०, ११७)। वकृ—जायंत, (पंच १, ४)।

जा देखो जाय=यावत्, (हे १, २७१, कुमा, सुर १२८)।

जाअर देखो जागर, (सुपा १८७)।

जाइ स्त्री [जाति] १ कुल विशेष, मातृपक्ष, (ठा ७, सामान्य नैयायिकों के मत से एक धर्म विशेष, २ सदृश जैसे मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व, (विसे ११० ३ जन्म कुल, गोत्र, वंश, कुक्षि, (ठा ४, २, सूत्र कुमा)। ४ उत्पत्ति, जन्म, (उत्त ३, पंचा)। ५ ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति, (उत्त ३)। ६ मालती, जूही का पेड़; (पणण १)। ७ मद विशेष, १, २)। आजीव पु [आजीव] जाति के बताकर भिक्षा प्राप्त करना, (ठा ५, ३)। °वंत पु [°वत्] सात वर्ष का हाथी, (कुमा)

२) । °नाम न [नामन्] कर्म-विशेष, । स ६१) । °पण्णवणा स्त्री [प्रज्ञप्ति] जाति के भेदों से कथित सूत्र : (उत्त ३) । °फल न [°फल] १ वह विशेष; २ फल-विशेष, जायफल, एक गर्म मसाला; (सुर १३,३३; स्वप्न) । °मंत वि [मत्त] उच्च जाति का; (आचा २, ४, ३)। °मय पु [°मद] जाति का अभिमान । ठा १०) । °यत्तिया स्त्री [पत्रिका] १ सुगन्धि पत्र वाला वृक्ष-विशेष ; २ फल-विशेष, एक गर्म मसाला , (सुख) । °सर पुं [स्मर] १ पूर्व जन्म की स्मृति, २ वि पूर्व जन्म का स्मरण करने वाला, पूर्व-जन्म का ज्ञान वाला; " जाइसरो मरने इमाई नवलद्ध संजमपालयाए " (सुर ४, २०८) । °सरण न [स्मरण] पूर्व जन्म की स्मृति, (उत्त १६) । °स्सर देखो °सर. (कप्प; विसे १६७१; उप २२० टी) ।

जाइ देखो जाया ; (षड्) ।

जाइ स्त्री [दे] १ मदिरा, सुरा, दारू, (दे ३, ४४) । २ मदिरा-विशेष; (विपा १, २) ।

जाइ वि [याचिन्] प्रार्थिन, माँगा हुआ; (ठा ४, ३) ।

जाइअ वि [याचित] प्रार्थित, माँगा हुआ; (विसे २५०४; गा १६४) ।

जाइच्छिय वि [यादृच्छिक] स्वेच्छा-निर्मित ; (विसे २४) ।

जाइज्जंत देखो जाय=याच् ।

जाइज्जंत) देखो जाय=याच् ।

जाइज्जमाण)

जाइणी स्त्री [याकिनी] एक जैन साध्वी, जिससे सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्रसूरि अपनी धर्म-माता समझते थे ; (उप १०३६) ।

जाउ अ [जातु] किसी तरह ; (उप ५८७) । कण्ण पुं [°कर्ण] पूर्वभद्रपदा नक्षत्र का गोत्र ; (इक) ।

जाउया स्त्री [यातृका] देवर-पत्नी, पति के छोटे भाई की स्त्री ; (गाया १, १६) ।

जाउर पुं [दे] कपित्थ वृक्ष ; (दे ३, ४४) ।

जाउल पुं [जातुल] वल्ली-विशेष; (पण्ण १ —पत्र ३२)।

जाउहाण पु [यातुधान] राक्षस ; (उप १०३१ टी ; पाम) ।

जाग पुं [याग] १ यज्ञ, अध्वर, होम, हवन ; (पउम १४, ४२ ; स १७१) । २ देव-पूजा ; (गाया १, १)।

जागर अक [जागृ] जागना, निद्रा-त्याग करना । जागरइ; (षड्) । वकृ—जागरमाण ; (विसे २७१८)। हेकृ—जागरित्तए, जागरित्तए ; (कप्प ; कम) ।

जागर वि [जागर] १ जागने वाला, जागरा ; (आचा ; कप्प ; श्रा २४) । २ पुं जागरण, निद्रा-त्याग ; (सुपा १८०; भग १२, २ ; सुर १३, ६७) ।

जागरइत्तु वि [जागरित्तृ] जागने वाला ; (श्रा २३) ।

जागरिअ वि [जागृत] जागा हुआ, निद्रा-रहित, प्रबुद्ध ; (गाया १, १६ ; श्रा २४) ।

जागरिअ वि [जागरिक] निद्रा-रहित ; (भग १२,२) ।

जागरिया स्त्री [जागरिका, जागर्या] जागरण, निद्रा-त्याग; (गाया १, १ ; औप) ।

जाडी स्त्री [दे] गुल्म; लता-प्रताल ; (दे ३, ४५) ।

जाण सक [ज्ञा] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना । जाणइ; (हे ४, ७) । वकृ—जाणंत, जाणमाण; (कप्प; विपा १, १) । संकृ—जाणिऊण, जाणित्ता, जाणित्तु; (पि ५८६; महा; भग)। हेकृ—जाणिउं; (पि ५७६) । कृ—जाणियव्व ; (भग ; अंत १२)।

जाण पुंन [यान] १ रथादि वाहन, सवारी ; (औप ; पाअ ३, ५ ; ठा ८, ३) । २ यान-पात्र, नौका, जहाज ; "जाणं संसारसमुद्दतारणे बंधुरं जाणं" (पुप्फ ३७) । ३ गमन, गति ; (राज) । °पत्त, °पत्त न [°पात्र] जहाज, नौका; (नमि ५ ; सुर १३, ३१)। °साला स्त्री [°शाला] १ तबेला; २ वाहन बनाने का कारखाना; (औप; आचा २,२,२)।

जाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, समझ ; (भग ; कुमा) ।

जाण वि [जानत्] जानता हुआ ; "जाणं काएण वाउट्ठी" (सूअ १, ५, १) । "आसुप्पेण जाणया" (आचा) ।

जाणई स्त्री [जानकी] सीता, राम-पत्नी ; (पउम १०६, १८ ; से ६, ६) ।

जाणग वि [ज्ञायक] जानकार, ज्ञानी, जानने वाला; (सूअ १, १, १ ; महा ; सुर १०, ६५) ।

जाणगी देखो जाणई ; (पउम ११७, १८) ।

जाणण न [दे] वमन, गुजरातीमें " जान" ; "जो तदवत्थाए समुचिमोति जाणणाइओ" (उप ५६७ टी) ।

जाणण न [ज्ञान] जानना, जानकारी, समझ, बोध; (हे ४, ७; उप पृ २३; सुपा ४१६; सुर १०, ७१; स्वप्न १४; महा)।

जाणणया) स्त्री. ऊपर देखो; (उप ५१६ ; विसे २१४८;
जाणणा) अणु ; आवू ३) ।

जाणय देखो जाणग ; (भग , महा) ।
जाणय वि [ज्ञापक] जनाने वाला, समझाने-वाला, (औप) ।
जाणया स्त्री [ज्ञान] ज्ञान, समझ , जानकारी , "एएसि पयाण जाणयाए सवणयाए" (भग) ।
जाणवय वि [जानपद] १ देश में उत्पन्न, देश-सम्बन्धी, (भग , णाया १, १—पत्र १) ।
जाणाव सक [ज्ञापय्] ज्ञान कराना, जनाना । जाणावइ, जाणावेइ , (कुमा . महा) । हेकृ – जाणाविउं, जाणावेउं , (वि ५५१) । कृ—जाणावेयव्व , (उप पृ २२) ।
जाणावण न [ज्ञापन] ज्ञापन, बोधन , (पउम ११, ८८, सुपा ६०६) ।
जाणावणा) स्त्री [ज्ञापनी] विद्या-विशेष , (उप पृ
जाणावणी) ४२, महा) ।
जाणाविय वि [ज्ञापित] जनाया, विज्ञापित, मालूम कराया, निवेदित , (सुपा ३५६ , आवम) ।
जाणि वि [ज्ञानिन्] ज्ञाता, जानकार ; (कुमा) ।
जाणिअ वि [ज्ञात] जाना हुआ, विदित ; (सुर ४, २१४, ७, २६) ।
जाणु न [जानु] १ घुटना, घुटना ; २ ऊरु और जंघा का मध्य भाग, (तंदु; निर १, ३ , णाया १, १) ।
जाणु) वि [ज्ञायक] जानने वाला, ज्ञाता, जानकार ,
जाणुअ) (ठा ३, ४ , णाया १, १३) ।
जाणे अ [जाने] उत्प्रेक्षा-सूचक अव्यय, मानो , (अभि १६०) ।
जाम सक [मृज्] मार्जन करना, साफ करना । जामइ , (नाट—प्राय ८० टी) ।
जाम पु [याम] १ प्रहर, तीन घण्टा का समय, (सम ४८, सुर ३, २४२) । २ यम, अहिंसा आदि पाँच व्रत , ३ उस विशेष, आठ से बनीस, बत्तीस सत्ताईस और सात से अधिक वर्षों की उम्र ; (आचा) । ४ वि यम-सम्बन्धी, जमराज का , (सुपा ४०६) । °ट्ठ वि [°स्थ] १ प्रहर वाला; (हे २, १६६) । २ पु. प्रहरिक, पहरेदार, कोतवाल, (सुपा ६) । °दिसा स्त्री [°दिश्] दक्षिण दिशा , (सुपा ४०६) । °वई स्त्री [°पती] रात्रि, रात ; (गउड) ।
जाम देखो जाय = यावत् , (भग ३३) ।
जामाउ) पु [जामातृ, °क] जमाता, लड़की का पति ,
जामाउय) (पउम ८१, ४ , हे १, १३१ ; गा ६८२) ।
जामि स्त्री [जामि, यामि] बहिन, भगिनी ; (गउ) ।
जामिग पुं [यामिक] प्राहरिक, पहरेदार, (उप ८३३) ।
जामिणी स्त्री [यामिनी] रात्रि, रात ; (उप ३२८ टी) ।
जामिल्ल देखो जामिग ; (सुपा १४६ ; १६१) ।
जाय सक [याच्] प्रार्थना करना, माँगना । वकृ –जायंत, (पड्ह १, ३) । कवकृ- –जाइज्जंत, (पउम ६, ६८)
जाय सक [यातय्] पीड़ना, यन्त्रणा करना । वकृ. (उव) । कवकृ –जाइज्जंत, (पड्ह १, १) ।
जाय देखो जाग , (णाया १, १) ।
जाय वि [जात] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो, (ठा ६) । २ न समूह, संघात; (दस ४) । ३ भेद, प्रकार ; (ठा १ निचू १६) । ४ वि. प्रवृत्त, (औप) । ५ पुं. लक्ष्य पु (भग ६, ३३ , सुपा २७६) । ६ न बच्चा, संतान " जाय तीए जइ कहवि जायए पुन्नजोगेण " (सुपा ३६८ ७ जन्म, उत्पत्ति, (णाया १, १) । कम्म न [°कर्म] १ प्रसूति-कर्म , (णाया १, १) । २ संस्कार-विशेष (कप्प) । °तेय पु [°तेजस्] अग्नि, वह्नि, (सम ३० °निद्दुया स्त्री [°निद्रुता] मृत-वत्सा स्त्री ; (विपा १, १ वि [°मूक] जन्म से मूक; (विपा १, १) । °रूव न [१ सुवर्ण, सोना, (औप) । २ रूप्य, चाँदी, (उप ३६ ३ सुवर्ण-निर्मित ; (सम ६५) । °वेय पु [°वेदस्] अग्नि, वह्नि ; (उप २२) ।
जाय वि [यात] गत, गया हुआ , (सूअ १, ३, १) २ प्राप्त , (सूअ १, १०) । ३ न गमन, गति, (आव
जायग वि [याचक] १ माँगने वाला , २ पु भिक्षु (श्रा २३ ; सुपा ४१०) ।
जायग वि [याजक] यज्ञ करने वाला , (उप २१, १)
जायण न [याचन] याचना, प्रार्थना , (श्रा १ प्रति ६१) ।
जायण न [यातन] कदर्थन, पीड़न , (पड्ह १, ३)
जायणया) स्त्री [याचना] याचना, प्रार्थना, माँग
जायणा) (उप पृ ३०२ , सम ४० , स २६१) ।
जायणा स्त्री [यातना] कदर्थना, पीड़ा, (पड्ह १, १
जायणी स्त्री [याचनी] प्रार्थना की भाषा , (ठा ४,
जायव पुंस्त्री [यादव] यदुवंश में उत्पन्न, यदुवंशी (णाया १, १६ , पउम २०, ५६) ।
जाया स्त्री [जाया] स्त्री, औरत, (गा ६, सुपा ३८८
जाया देखो जत्ता ; (पव्वू २, ४ , अ १, ७) ।

जाया स्त्री [जाया] स्त्री, पत्नी; (हेम १, ४; षड्)।

जायाय पु [जायायिन्] स्त्री-वाला, गृहस्थ (हेम २६, १)।

जार पुं [जार] १ उपपति, (हे १, १७) । २ स्त्री का स्वकीय-जित्व, (हेम ३)।

जारिच्छ वि [यादृश] जैसा वैसा, (प्राकृ)।

जारिस वि [यादृश] जैसा, जिस प्रकार का, (हे १,१८७)।

जारिसंकाल न [जारिसकाल] स्त्री-जित्व के वर्णित संबंध का एक प्रकार है (हे ३)।

जाल सक [ज्वालय्] जलाना, दग्ध करना। "तो कुम्मिकुलसहस्सं जालेमि निरवेक्खं" (सण)। संकृ जालेवि, (सण)।

जाल न [जाल] १ समूह, समवाय (सुर ४, १३१, ८ १४३)। २ झरना का समूह, झरनाजित्व, (राज)। ३ कपड़ों आदि जिसमें से मुख दिखाई, गवाक्ष-जित्व; (कुमा, स्वप्न १, १)। ४ मछली पकड़ने की जाल, फन्दा-जित्व, (पाअ १, १; ४)। ५ पेड़ का अवयव-जित्व, (कुमा)। कडग पुं [कटक] १ संक्षिप्त गवाक्षों का समूह २ संक्षिप्त गवाक्ष-समूह से अलंकृत प्रदेश, (हे ३)। घरय न [गृहक] संक्षिप्त गवाक्ष वाला मकान; (राज; स्वप्न १, २)। पंजर न [पञ्जर] गवाक्ष; (हे ३)। हत्थ देखो घरय, (कुमा)।

जाल पुं [ज्वाल] ज्वाला, अग्नि-जित्व; (सुर ३, १०८; हे १,)।

जालंतर न [जालान्तर] संक्षिप्त गवाक्ष का मध्यभाग; (सण १३७)।

जालंधर पुं [जालन्धर] १ पंजाब का एक प्रसिद्ध प्रदेश-जित्व महर; (भवि)। २ न. गोत्र-जित्व; (कप्प)।

जालंधरायण न [जालन्धरायण] गोत्र-जित्व; (आचा २, ३)।

जालअ देखो जाल = जाल; (पाअ १, १; ४; कुमा; स्वप्न १, १)।

जालघडिआ स्त्री [दे] चक्रवाल, मण्डलिका; (दे ३,४६)।

जालय देखो जाल = जाल; (गउड)।

जाला स्त्री [ज्वाला] १ अग्नि की शिखा; (आचा; सुर २, २४६)। २ सप्तम चक्रवर्ती की माता; (सम १५१)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ की शासन-देवी; (संति ३)।

जालाअ प [यष्ट] जिस प्रकार, जिस तरह से; "अम्हे जालाअ सुत्ता, जालाअ ते सव्वुट्ठिआ देवदत्ता" (हे ३,१३६)।

जालाउ पुं [जालायुष्] द्वीन्द्रिय जन्तु-जित्व; (राज)।

जालाव सक [ज्वालय्] जलाना, दग्ध करना। वकृ जालावंत; (सण)।

जालाविअ वि [ज्वालित] जलाया हुआ; (सुर १०८)।

जालि पुं [जालि] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी; (अनु १)। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र, जिसने दीक्षा ले कर शत्रुञ्जय पर्वत पर मुक्ति पाई थी; (अंत १४)।

जालिय पुं [जालिक] जाल-जीवी, बधुरिक; (गउड)।

जालिय वि [ज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ; (उप; उप ५६० टी)।

जालिया स्त्री [जालिका] १ कन्दुक; (पव १, १—पव ६४; गउड)। २ वृत्त; (राज)।

जालुग्गाल पुं [जालोद्गाल] मछली पकड़ने का साधन-जित्व; (अभि १८३)।

जाव सक [यापय्] १ गमन करना, गुजरना। २ व्यतीत करना। जावइ; (आचा)। जावेइ; (हे ४, ९०)। जावए; (सूत्र १, १, ३)।

जाव अ [यावत्] इस अर्थ का सूचक अव्यय; — १ परिमाण; २ मर्यादा; ३ अवधारण, निश्चय; "जावइयं परिमाणं मज्जायावहारणे वेइ" (विसे ३६१६; स्वप्न १, ४)। जावंत की न [जावंत] जितना परिमाण; (आचा)। जो—वो; (विसे ३६१८; औप)। जावंतिय वि [जावंतिक] यावत्काल-संबन्धी; (सं ४४१)। देखो जावं।

जाव पुं [जाप] मन्त्र की मन में बार बार आवृत्ति का स्मरण, मन्त्र का उच्चारण; (सुर ६, १४९; सुपा १७१)।

जावइ पुं [दे] वृक्ष-जित्व; (पव १—पव ३४)।

जावइअ वि [यावत्] जितना; "जावइआ वयणपहा" (सम्म १४८; भत्त ८४)।

जावं देखो जाव; (पिंड ६८, ६०)। जाव अ [तावत्] १ मर्यादा-जित्व; २ मुकाबला; (उ १०)।

जावंत देखो जावइअ; (सम १, १)।

२३७)। °पएसिय वि [प्रादेशिक] सम संख्या प्रदेशों से निष्पन्न, (भग २५, ४)।

जुम्ह' स [युष्मत्] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम; "जुम्हदम्हपयरण" (हे १, २५६)।

जुरुमिल्ल वि [दे] गहन, निबिड, सान्द्र, "दुरुजुरुमिल्ला-वन्य" (द ३, ४७)।

जुव पु [युवन्] जवान, तरुण, (कुमा)। °राय पु [°राज] गद्दी का वारस राज-कुमार, भावी राजा, (सुर २, १७६; अभि ८२)।

जुवइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री; (हे १, ४, औप; गउड, प्राप्र ६३, कुमा)।

जुवंगव पु [युवगव] तरुण बैल, (आचा २, ४, २)।

जुवरज्ज न [यौवराज्य] १ युवराजपन, (उप २११ टी, सुर १६, १२७)। २ राजा के मरने पर जबतक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तबतक का राज्य, (आचा २, ३, १)। ३ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य, (बृह १)।

जुवल देखो जुगल, (स ४७८, पउम ६६, २३)।

जुवलिय देखो जुगलिय; (भग; औप)।

जुवाण देखो जुव, (पउम ३,१४६; णाया १,१; कुमा)।

जुवाणी देखो जुवई, (पउम ८, १८४)।

जुव्वण } देखो जोव्वण, (प्राप्र ४६; ११६)। "पउम
जुव्वणत्त } चिय बालत्त, तओ कुमरत्तजुव्वणत्ताइं" (सुपा २४३)।

जुसिअ वि [जुष्ट] सेवित, "पाएण देव लोगो उवगारिसु परिविए व जुसिए वा" (उप ४, ४)।

जुहिट्ठिर } देखो जहिट्ठिल; (पिंग, उप १४८ टी,
हट्ठिल } णाया १, १६—पव २०८, २२६)।
जुहिट्ठिल }

जुहु सक [हु] १ देना, अर्पण करना। २ हवन करना, होम करना। जुहुणामि, (ठा ७—पत्र ३८१; पि ५०१)।

जूअ न [द्यूत] जुआ, द्यूत, (पाअ)। °कर वि [°कर] जुआरी, जुए का खिलाड़ी; (सुपा ५२२)। °कार वि [°कार] वही पूर्वोक्त अर्थ; (णाया १, १८)। °कारि वि [°कारिन्] जुआरी; (महा)। °केलि स्त्री [°केलि] द्यूत-क्रीडा; (रयण ४८)। °खलय न [°खलक] जुआ खेलने का स्थान; (रयण)। देखो °केलि; (रयण ४०)।

जूअ पु [यूप] १ जमा, खूप, लाठी का बनाया हुआ जो बैल कोल्हू पर बाँधा जाता है; (उप पृ ११३)। २ यज्ञ-विशेष, "जूअसएणं जूयइ सहस्सं च उत्तरेहिं" (ठा)। ३ यज्ञ-स्तम्भ, (अ ३)। ४ एक अनाज का नाम, (अ ३)। ५ एक अनार्य देश, (अ १०१)।

जूअय पु [दे] चातक पक्षी, (दे ३, ४०)।

जूआग पु [यूपक] देखो जूअ=यूप; (सम ७१)।

जूआय पु [दे] सन्ध्या की प्रभा और चन्द्र की उस प्रभा का मिश्रण, (ठा १०)।

जूआ स्त्री [यूका] १ जूँ, चीलड़, खून चूसने-वाला, (हे १, ११)। २ परिमाण-विशेष, आठ लिक्षा का एक माप, (अनु ६, इक)। °सेज्जायर वि [शय्यातर] जूओं को स्थान देने वाला, (भग १६)।

जूआर वि [द्यूतकार] जूआरी, जुए का खेलाड़ी; (स्वप्न ४८, सुपा ४००)।

जूआरि } वि [द्यूतकारिन्] जूआ खेलने वाला, जूआ-
जूआरिय } खोरी, (द ६३, सुपा ४००, ४८८, स १६०)।

जूड पु [जूट] बुन्दल, केश-कलाप, (हे ४, २४, षड्; कुमा)।

जूर अक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना। जूरइ, (हे ४, १३६, षड्)।

जूर अक [खिद्] खेद करना, अफसोस करना। जूरइ, (हे ४, १३१, षड्)। जूर, (कुमा)। भवि—जूरिहि, (हे ३, १६३)। वकृ—जूरंत, (हे ३, १६३)।

जूर अक [जूर्] १ झुरना, सूखना। २ सक, वध करना, हिंसा करना; (राज)।

जूरण न [जूरण] १ सूखना, झुरना। २ निन्दा, गर्हा; (राज)।

जूरव सक [यच्च्] दान करना, वरना। जूरवइ, (हे ४, ६१)।

जूरवण वि [यच्चन] दान करने वाला, (कुमा)।

जूरावण न [जूरण] झुराना, शोषण; (भग ३, १)।

जूराविअ वि [क्रोधित] क्रुद्ध किया हुआ, कोपित; (कुमा)।

जूरिअ वि [खिन्न] खेद-प्राप्त, (पाअ)।

जूरुमिल्लय वि [दे] गहन, निबिड, सान्द्र, (दे ३, ४७)।

जूल देखो जूर=क्रुध्। जूल; (गा ३५४)।

जूव देखो जूअ = द्यूत ; (गाथा १, २—पत्र ७६)।
जूव) देखो जूअ = द्यूत ; (श्रु ; उ ४, २)।
जूवय)
जूस देखो जूस . (उ २, १ ; कप्प)।
जूस पुं [यूष] दाल, मूँग वगैरः का रसदार, कढ़ी ; (ओघ १४४ , उ २, १)।
जूसव वि [दे] इच्छित, वाँछा हुआ : (षड्)।
जूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा : (कप्प)।
जूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित . (उ २, १)। २ प्रीत, खुश : (कप्प)।
जूह न [यूथ] समूह, झुण्ड : (उ १० ; सं ६४८)। °वइ पुं [°पति] समूह का अधिपति, यूथ का नायक : (से ६, ६८ ; स्वप्न १, १ ; सुपा १३४)। °हिव पुं [°धिप] पूर्वोक्त ही अर्थ . (सं ६४८)। °हिवइ पु [°धिपति] यूथ-नायक : (उत्त ११)।
जूहिय वि [यूथिक] यूथ में उत्पन्न : (आचा २, २)।
जूहिया स्त्री [यूथिका] लता-विशेष, जूही का पेड़ (पाअ १ ; पउम ६३, ७६)।
जूही स्त्री [यूथी] लता-विशेष, मालती लता ; (पाअ)।
जे अ, १ पक्ष-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; (हे २,२१७)। २ अवधारण-सूचक अव्यय : (उत्त)।
जेउ वि [जेतृ] जीतने वाला, विजेता . (सम २०, २)।
जेउआण
जेउं
जेऊण
देखो जिण=जि।
जेकार पुं [जयकार] 'जय जय' शब्द, स्तुति ; "हुति देवाण जेकारा" (सं ३३२)।
जेट्ठ देखो जिट्ठ=ज्येष्ठ ; (हे २, १७२ ; स्वप्न ; उत्त)।
जेट्ठ देखो जिट्ठ = जैत्र ; (स्वप्न)।
जेट्ठा देखो जिट्ठा, (स्वप्न ; श्रावक ४)। °मूल पुं [°मूल] देव नाम ; (सिरि ; स्वप्न ९, १३)। °मूली स्त्री [°मूली] देव नाम की पुत्रिका ; (सुज्ज १०)।
जेण म [येन] तृतीया-सूचक अव्यय; "अत्थमं जेण कम्मवसा" (हे २, १८३ ; कुमा)।
जेत देखो जइत्त ; (वि ६९)।
जेत्तिअ) वि [यावत्] जितना ; (हे २, १८४ ; सं ७६; जेत्तिल) गउड)।
जेत्तुल) (अप) जितना देखो ; (हे ४, ४१६)।
जेत्तुल)
जेद्दह देखो जेत्तिअ; (हे २, १८७ ; प्राप्र)।
जेम सक [जिमं, भुज्] भोजन करना। जेमइ; (हे ४, ११०; षड्)। वकृ—जेमंत; (पउम १०३, ८६)।
जेम (अप) म [यथा] जैसे, जिस तरह से ; (सुपा ३८३ ; भवि)।
जेमण) न [जेमन] जीमन, भोजन ; (ओघ ८८ जेमणग) भाप)।
जेमणय न [दे] दक्षिण अंग , गुजराती में 'जमणु'; (दे ३, ८८)।
जेमावण न [जेमन] भोजन कराना, खिलाना ; (सम ११, ११)।
जेमाविय वि [जेमित] भोजित, जिसको भोजन कराया गया हो वह ; (उत्त १३८ टी)।
जेमिय वि [जेमित] जीमा हुआ, जिसने भोजन किया हो वह ; (गाथा १, १—पत्र ४१ टी)।
जेयव्व देखो जिण=जि।
जेव देखो एव=एव ; (कप्प ; कप्पू)।
जेवँ (अप) देखो जिवँ ; (हे ४, ३८७)।
जेवड (अप) देखो जेत्तिअ ; (हे ४, ४०७)।
जेव्व देखो एव=एव; (वि ; स्वप्न)।
जेह (अप) वि [यादृश] जैसा; (हे ४,४०२; षड्)।
जेहिल पुं [जेहिल] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (कप्प)।
जो) सक [द्रक्] देखना। जोइ; (कप्प)। "एत्थ हु जोअ) वंकगई, जोअइ तुह संदुरं रेल" (सुर ३, १२६)। जोएवि ; (स ३५१)। कर्म— जोइज्जइ; (स्वप्न ३२)। वक—जोअंत ; (पउम ११ टी; स्वप्न ; सुर १०, २४४)। कवृ—जोइज्जंत; (सुर ८७)।
जोअ सक [द्युत्] प्रकाशित होना, चमकना। जोअइ ; (प्राकृ)। भूत—जोइंसु ; (भग)। वक—जोअंत; (कुमा ; स्वप्न)।
जोअ सक [द्योतय्] प्रकाशित करना। जोअइ ; (सूत्र १, ६, १, १३)। "किमत्थि व सिरं पुरा कयाइंपि जेण जोइयं" (सुर ३,११)। जोएज्जा ; (सिरि ३१२)।
जोअ सक [द्योतय्] जोड़ना, युक्त करना। वकृ ; (स्वप्न)। कृ—जोइयव्व, जोएयव्व, जोअणिय, जोअणिज्ज-

जोअ पु [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा, (दे ३, ४८)। २ युगल, युग्म; (आया १, १ टी—पत्र ४३)।

जोअ देखो जोग, (अभि २५; स ३६१, कुमा)।

°चडय न [°चटक] चूर्ण-विशेष, पाचक चूर्ण, हाजमा, (स ५६२)।

जोअंगण [दे] देखो जोइंगण, (भवि)।

जोअग वि [द्योतक] १ प्रकाशने वाला। २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध निपात विशेष; पर; (विसे १००३)।

जोअड पु [दे] सपोत, कीट विशेष, (पउ)।

जोअण न [दे] लोचन नेत्र, चक्षु; (दे ३, ५०)।

जोअण न [योजन] १ परिमाण विशेष, चार कोश; (भग, इक)। २ संबन्ध, संयोग, जोड़ना, (पण्ह १, १)।

जोअण न [यौवन] युवावस्था, तरुणता, (उप १४२ टी, गा १६०)।

जोअणा स्त्री [योजना] जोड़ना, संयोग करना, (उप पृ २२१)।

जोआ स्त्री [द्यो] १ स्वर्ग, २ आकाश, (पउ)।

जोआवइत्तु वि [योजयितृ] जोड़ने वाला, संयुक्त करने वाला (ठा ४, ३)।

जोइ वि [योगिन्] १ युक्त, संयोग वाला। २ चित्त-निरोध करने वाला, समाधि लगाने वाला, ३ पु मुनि, यति, साधु, (सुपा २११, २१०)। ४ रामचन्द्र का स्वनाम-ख्यात एक सुभट, (पउम ६०, १०)।

जोइ पु [ज्योतिस्] १ प्रकाश, तेज, (भग, ठा ४, ३)। २ अग्नि, वह्नि, "सरिसं जहा पडियं जोइमज्झे" (सूअ १, १३)। ३ प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु, "जहा हि अंधे सह जोइणावी" (सूअ १, १२)। ४ अग्नि का काम करने वाला कलास, (पव १०)। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ, (चउ १)। ६ इन्द्र, ७ इन्द्र-पुत्र, ८ प्रतिइन्द्र-पुत्र, ९ सत्कर्म-कारक; (ठा ४, ३)। १० स्वर्ग; ११ यह कील का विमान, (राज)। १२ ज्योतिष्क देव, (ठा ३, ३)। °अंग पु [°अङ्ग] अग्नि कुमार देव वगैरह देव-देवी विशेष; (ठा १०)। °अस्स न [°अस्त्र] अस्त्र की एक जाति, (आया १, १)। देखो जोइस=ज्योतिस्।

जोइअ पु [दे] कीट-विशेष, पतंग; (दे ३, ५०)।

जोइअ वि [द्रुत] उड़ा हुआ, तिरोहित, (सुर १, १०३, वज्जा ८६)।

जोइअ वि [योजित] जोड़ा हुआ; (स २६४)।

जोइअ देखो जोगिय; (राज)।

जोइंगण पु [दे] कीट-विशेष, इन्द्र-गोप; (दे ३, ५०)।

जोइक्क पुन [ज्योतिष्क] प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु, "किं सुरस्स दंसणाहिगमे जाइक्कंतरं गवेसीयदि" (सक)।

जोइक्ख पु [दे, ज्योतिष्क] १ प्रदीप, दीपक; (दे ४, ४६, पव ४; धर्म ७)। २ प्रदीप आदि का प्रकाश, (ओघ ६६३)।

जोइणी स्त्री [योगिनी] १ योगिनी, सन्यासिनी। २ प्रकार की देवी, ये चौसठ हैं; (सति ११)।

जोइर वि [दे] स्खलित, (दे ३, ४६)।

जोइस न [दे] नक्षत्र; (दे ३, ४६)।

जोइस देखो जोइ=ज्योतिस्, (चउ १; कप्प; १८७०, जो १, ठा ६)। °राय पु [°राज] सूर्य, २ चन्द्र; (चउ १)। °लय पु [°लय] आदि देव, (उत्त ३६)।

जोइस पु [ज्योतिष] १ देवों की एक जाति, सूर्य, ग्रह आदि, (कप्प, ओप, दंड २०)। २ न सूर्य आदि का विमान, (ति १२, जी १)। ३ शास्त्र विशेष, ग्रह शास्त्र, (उत्त २)। ४ सूर्य आदि का चक्र; ५ सूर्य आदि का मार्ग, आकाश, "जे गहा जोइसम्मि चरंति" (पणण २)।

जोइस पु [ज्यौतिष] १ सूर्य, चन्द्र आदि देवों की एक जाति, (कप्प; पंचा २)। २ वि ज्योतिष शास्त्र का जानकार, जानकी, (सुपा १६६)।

जोइसिअ वि [ज्यौतिषिक] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवज्ञ, जोशी, (स २२; सुर ४, १००; सुपा २०१)। २ सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव, (ओप; जी १, पणण २)। °राय पु [°राज] १ सूर्य, २ चन्द्रमा; (पणण २)।

जोइसिंद पु [ज्योतिरिन्द्र] १ सूर्य, २ चन्द्रमा; (ठा १)।

जोइसिण पु [ज्यौत्स्न] शुक्ल पक्ष, (आ ४)।

जोइसिणा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र की प्रभा, चन्द्रिका (ठा २, ४)। °पक्ख पु [°पक्ष] शुक्ल पक्ष, (सुर १४)। °भा स्त्री [°भा] चन्द्र की एक अग्रमहिषी (भग १०)।

[illegible]ओसिअ ४ [उपोषित] उप [illegible] ...

[illegible]ओसिअ ५ [दे] [illegible] ...

[illegible]ओसेअ [illegible] ...

[illegible]ओसेअ ६ [औषेचित] [illegible] ...

[illegible]ओसेअर ६ [औषेचितर] [illegible] ...

[illegible]ओसेअर [illegible] ...

[illegible]ओसेअ वि [दे] [illegible] ...

[illegible]ओसेअ पु [ओस] १

जोण्हाल वि [ज्योत्स्नावत्] ज्योत्स्ना वाला, चन्द्रिका-युक्त, (हे २, १५६)।

जोत्त) न [योक्त्र,°क] जोत, रस्सी या चमड़े का लम्बा,
जोत्तय) जिसमें बैल या घोड़ा, गाड़ी या हल में जोता जाता है, (पण्ह २, ५, गा ६६२)।

जोव देखो जोअ=दृश्। जोवइ; (महा, भवि)।

जोव पु [देश] १ बिन्दु, २ वि स्तोक, थोड़ा; (दे ३, ५२)।

जोवण न [देश] १ यन्त्र, कल, 'आउज्जोवण' (ओघ ६० भा)। २ धान्य का मर्दन, अन्न-मलन, (ओघ ६० भा)।

जोवारि स्त्री [देश] अन्न-विशेष, जुआरि, (दे ३, ५०)।

जोवित्र वि [द्रुष्ट] विलोकित, (स १०७)।

जोव्वण न [यौवन] १ तारुण्य, जवानी; (प्राप्र; कप्प)। २ मध्य भाग; (से ९, १)।

जोव्वणगेर) न [देश] वय-परिणाम, वृद्धत्व, बुढ़ापा,
जोव्वणगेय) "जोव्वणगेर तरुणत्तणे वि विज्जिए दियाण पुरिसाण" (दे ३, ५१)।

जोव्वणिया स्त्री [यौवनिका] यौवन, जवानी, (राय)।

जोव्वणोवय न [देश] बुढ़ापा, वृद्धत्व, जरा, (दे ३, ५१)।

जोस देखो जुस=जुष्। वकृ—जोसंत, (राज)। प्रयो—सक—जोसियाण, (वव ७)।

जोसिअ वि [जुष्ट] सेवित; (सूअ १, २, ३)।

जोसिआ स्त्री [योषित्] स्त्री, महिला, नारी, (वट्ट, धर्म २)।

जोसिणी देखो जोण्हा; (अभि ३१०)।

जोह अक [युध्] लड़ना। जोहइ; (भवि)।

जोह पु [योध] सुभट, योद्धा, (ओप, कुमा)। °ट्ठाण न [°स्थान] सुभटों का युद्ध-कालीन शरीर-विन्यास, अंग-रचना विशेष; (रा १; निचू २०)।

जोहणा देखो जोण्हा; (मै ७१)।

जोहि वि [योधिन्] लड़ने वाला, लड़वैया, (ओप)।

जोहिया स्त्री [योधिका] जन्तु-विशेष, हाथ से चलने वाली एक प्रकार की सर्प-जाति; (जीव १)।

°ञ्जेव) देखो एव=एव; (पि २३, ८५)।
°ञ्जेअ)

ञ्झड देखो झड। ञ्झडप्प, (हे ४, १३० टि)।

ञ्झडुरावित्र वि [देश] निराशित, निराश-प्राय, (दे

इस त्रिभाषाश्लोकमहार्णवमें अकारादि सकलना सोलहवें तरंगों समाप्त।

झ

झ पु [झ] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष, (प्राप्र)। २ ध्यान, (विसे ३१६८)।

झंकार पु [झङ्कार] नूपुर वगैरः का आवाज, (१८, पडि, गण)।

झंकारिअ न [देश] अवचयन, कूत करीब (दे ३, ५६)।

झंख अक [सं+तप्] सन्ता होना, संताप करना। (हे ४, १४०)।

झंख अक [वि+लप्] विलाप करना, बकवाद करना, (हे ४, १४८)। वकृ—झंखंत, ("धणनासाभा गहिउंभूमा झंखइ नरस! एस धु। सोमोवि भणइ झंखसि तुमंव बहुलाइगहगहिओ" (
झंख सक [उपा + लभ्] उपालंभ देना, उलहना देना (हे ४, १५६)।

झंख अक [निर्+श्वस्] निःश्वास लेना। झंख ४, २०१)।

झंख वि [देश] तुष्ट, संतुष्ट, खुश, (दे ३, ५६)।

झंखण न [उपालम्भ] उपालम्भ, उलहना, (झंख

झंखर पु [देश] शुष्क तरु, सूखा पेड़, (दे ३, ५४)।

झंखरिअ [देश] देखो झंकारिअ, (दे ३, ५६)।

झंखावण वि [संतापक] संताप करने वाला, (झंख

झंखिर वि [निःश्वसितृ] निःश्वास लेने वाला (७, ४४)।

झंझ पु [झञ्झ] कलह, झगड़ा, (सम ५०)। [°कर] कलहकारी, फूट कराने वाला (सूअ [°पत्त वि [°प्राप्त] क्लेश-प्राप्त, (सूअ १, १३

झंझण) अक [झंझणाय्] मन मन शब्द
झंझणअक) झनझनाना, (गा ६७६ अ)। झंझ (पिंग)।

संकप्पा स्त्री [सङ्कल्पा] स्मर्त्य स्मर्त्य शब्द ; (गउड)।
संकमा स्त्री [सङ्क्रमा] १ प्रकार वस्तु-विशेष ; (सण १७०, सण)। २ कवड़, कपेरा, लगाड़ा ; (उव ; हे १)। ३ सेवा, दास ; ४ देखो. सुक्का ; (सुम १, १३)। ५ वृक्षा होना ; (स्थान २, ३, २)। ६ व्याकुलता, व्यग्रता ; (आचा)।
संकिण्ण वि [सङ्किर्ण] दुषित, मूला ; (आचा १,१)।
संकुड अक [सङ्कुच्] सुकना, सिकना। सकृत ; (हे ४, १६१)।
संकुड अक [सङ्कुच्] सुकुचाना करना। वह—संकेलसि-मसाइसकलियं मन्थियं गहिउ ' ; सुपा ४२६)।
संकुण न [श्रमण] पर्यटन परिभ्रमण ; (कुमा)।
संकुलिआ स्त्री [दे] चमगादड़, वृक्षिल पक्षी ; (दे ३, ४४)।
संकुसिअ वि [दे] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहत ; (दे ३, ४४)।
संकुसी स्त्री [दे] टेढ़ा किन्तु कुँची कला-कलाम; (दे ३, ४३)।
संकुली स्त्री [दे] अन्तरी, कुलटा ; (दे ३, ४४)।
संकुसु पु [दे] पक्ष-विशेष, पीलु का पेड़ ; (दे ३, ४३)।
संकुली स्त्री [दे] अन्तरी, कुलटा ; २ लोहा, लेख, द ३, ६५)।
संकुसिअ वि [दे] उद्यत, पताकित ; (षट्)।
संख सक [शंस्] पूजना, सिकना। संखइ , (हे ४,१६१)।
संख सक [आ+च्छादय्] ढँकना, आच्छादन करना, रक्षण। संखइ ; (पिंग)। वह—संखिऊण, संखिवि ; (कुमा ; भवि)।
संखण न [श्रमण] परिश्रम, पर्यटन , (कुमा)।
संखणी स्त्री [दे] दक्ष, क्रिया के बाद; (दे ३, ४४; पाम)।
संखा स्त्री [सङ्ख्या] गणित कृत्य, समाधान; (सुर १६८)।
संखित्त वि [दे] १ संकुचित, दबा हुआ, २ पतित, भ्रान्त ; (दे ३, ६१)।
संखित्त वि [आच्छादित] ढका हुआ, वह किया हुआ ; (पिंग)। "पडिवन्नो संखित्तो मणि" (महा), "तमो एवं भगवता सव्वसंवरसंवुडेणं संखित्तं सुसंवुडं सुसाध्वं साहरेत्ता" (आवनि ४)
संखित्त न [दे] वस्तीर, लोक-विस्तार; (दे ३, ४; भवि); जाव देखो संख-विखित्त्। वह—संखेवं ; (उव ६३)।
संखुड पु [दे] स्नान, कलह ; (सुर ३४६ ; ३४७)।
संखुली स्त्री [दे] अन्तरी ; (दिव १७१)।
संखुल्ल पु [सङ्कर] १ वाद्य-विशेष, शंख ; २ पक्ष, पीलु ; ३ कीट-सुरा, ४ नट-विशेष, (वि ३१८)।
संखुरिय वि [सङ्कीर्ण] वाद्य-विशेष के शब्द से युक्त ; (उत्त १०)।
संखुड्डी स्त्री [दे] दूसरे के स्पर्श को रोकने के लिए चांडाल-लोक जो लकड़ी अपने पास रखते हैं वह ; (दे ३, ४४)।
संखुड अक [शद्] १ सड़ना, पके फल आदि का गिरना, टपकना। २ होन होना। ३ सक, सकट मारना, गिराना। सखुड ; (हे ४, १३०)। वह—संखुडंत ; (कुमा)। कवह—"वायासु संखुडंताहिं मडिज्जंता" (आव १)। संह—"संखिडिऊण पत्तेयिल्ला, पुणोवि जायंति तरुगणे तुरियं। धीगत्थि धणत्थिस्सी, संखुडि न हु दुल्लहा एवं" (उत्त ७२८ टी)।
संखुडिअ वि [संखुडित] शीघ्र, जल्दी, तुरंत ; (उत्त ७२८ टी ; सण)।
संखुण्ण वि [दे] शीघ्रता, जल्दी ; (उत्त पृ ११० ; रंभा)।
संखुप्प सक [आ+छिद्] काटना, सकट मारना, छीलना। संखुप्पसि ; (भवि)। संह—संखुप्पिवि ; (भवि)।
संखुप्पड न [दे] सकट, संछिति, शीघ्र ; (हे ४, ३८८)।
संखुप्पिअ वि [आच्छिन्न] छीला हुआ ; (भवि)।
संखुडि म [संखुडित] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त ; "संखुडि आवसह पुणो" (सण ८१३)।
संखुडिअ वि [दे] १ निर्धन, दीना, मुन्न ; (सण २३०)। २ भग्न, छिन्न ; (षट्)। ३ सड़ा हुआ, गिरा हुआ, "कच्छाओ संखुडियं फलं" (पउम ८६, १५)।
संखुडित्ति देखो संखुडि ; (सुर २, ८)।
संखुडिल देखो संखुडि ; (हे १, १८४)।
संखुडी स्त्री [दे] सिक्कड़ कृत्रि, गुलामी में 'साकी'; (दे ३,४३)।
संखुण सक [जुगुप्स्] घृणा करना। संखुणइ ; (षट्)।
संखुणअण अक [संखुणयाय्] 'संख संख' अवाज करना। वह—संखुणअंत ; (प्राप)।
संखुणअणिअ वि [संखुणयित] संख संख अवाज करना; (पिंग)।
संखुणअण देखो संखुणअण। संखुणइ ; (कप्पू ६६)।
संखुणअणारव पुं [संखुणयारव] 'संख संख' अवाज ; (सण)।
संखुणअणिअ देखो संखुणअणिअ ; (सुपा ४०)।
संखुलि देखो संखुडि ; (रंभा)।
संखुलि देखो संखुडि ; (हे १, ६१ ; षट् ; सण ; सुर ३, ६)।
संखुल्ल वि [दे] शठ, संख दुष्ट ; २ लुब्ध ; (दे ३, ६१)।

अडिअ वि [दे] पर्यस्त, उल्लिखित ; (षड्)।
अड्ड देखो अड्ड। अड्डा, (षड्)।
अडाल न [दे] इन्द्रजाल, माया-जाल, (दे ३, ५३)।
अड्ड पुंस्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका, (हे २, २७ ; कौ)। स्त्री—ड्डा ; (कौ)।
अड्ड सक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना, गिरना। अड्डइ, (हे ४, १७१)। वकृ—अड्डंत ; (कुमा ; सुर ३, १०)।
अड्ड सक [क्रम्] भर करना। अड्डइ ; (हे ४, ७८ ; षड्)। हे—अड्डेउ ; (कुप्र ५)।
अडंक) पुं [दे] तृण का बनाया हुआ पुरुष, बिजूका ; (दे अडंत) ३, ५५)।
अडार वि [त्मारक] चिन्तन करने वाला, ध्यान करने वाला ; "अडारं करणं अडारं पमाणं णाणगुणाणं" (तंदु)।
अडाहड पुं [अडाहड] निर्झर आदि का 'झर झर' आवाज ; (सुर ३, १०)।
अडाहा न [डाहन] जलाना, टपकना, फल, (वव १)।
अडाहा स्त्री [डाहा] ऊपर देखो, (आचा)।
अडि न [दे] मूलोच्छेद, (दे ३, ५८)।
अडिअ वि [डित] टपका हुआ, गिरा हुआ, पतित, (उत्त, सुर १, १०)।
अडिअ वि [दे] मस्त, मदोन्मत्त, (दे ३, ५८)।
अडियंबिल वि [दृढ] जला हुआ, कर्मभूत, "जयगुरुगुरु-गिरिजलणडियकम्मंधणं तित्थं" (सुपा ६५, हे ४, ३६८)।
अडुअडु अक [आटयत्] अकड़ना, ऐंठना, टेढ़ा होना। वकृ—अडुअडुंत, (भवि)।
अडुअडुआ स्त्री [दे] अकड़ी, ऐंठन, पेचा, (दे ३, ५६)।
अडुअडु देखो अडुअडु। अडुअडु, (सुपा, १८६)। वकृ—अडुअडुंत, (सुर १८)।
अडुआ स्त्री [दे] घुटनों के बल चलने वाला बालक, घुटरुवन चलने वाला बच्चा, (दे ३, ५३, कुप्र)।
अडुक्कि) वि [दे] ढका, आच्छादित हुआ (दे ३, ५१), अडुक्कि)
अडुक्का) स्त्री [अडुक्का] बकरा आदि को बांधने का खूंटा (दे ३, ५३ सुर ८, ७६ कुप्र)।
अडुक्कि वि [दे] बांधा, बंधा हुआ, बद्ध।
अडुक्का स्त्री [डुक्का] १ बकरा आदि को बांधने का खूंटा (दे ३, ५१), २ बकरा, बकरी। (पिंड ५८८)।

अडुल्ल पुं [ऋक्ष] १ मत्स्य, मछली ; (पाह १, १)। °चिंधय पु [°चिह्नक] कामदेव, स्मर ; (इक)।
अडुस पु [दे] १ अयश, अपकीर्ति ; २ तट, किनारा ; ३ तटस्थ, मध्यस्थ ; ४ दीर्घ-गंभीर, लम्बा और गहरा (दे ३, ६०)। ५ टेढ़ा से छिन्न ; (दे ३, ६० ; अडुसय पु [ऋक्षक] छोटा मत्स्य ; (दे ३, ५१)।
अडुसर पुन [दे] शब्द विशेष, आयुध विशेष, "अ सव्वल—" (पउम ८, ६५)।
अडिअ वि [दे] १ पर्यस्त, उल्लिखित ; २ आकृष्ट आकोश किया गया हो वह ; (दे ३, ६२)।
अडिंध पु [ऋक्षचिह्न] काम, स्मर ; (कुमा)।
अडुर न [दे] १ ताम्बूल, पान ; (दे ३, ६१ ; २ मद्य ; (दे ३, ६१)।
अढा सक [ध्यै] चिन्ता करना, ध्यान करना। अढाअइ, (हे ४, ६)। वकृ—अढायंत, अढा (प्राकृ, महा)। संकृ—अढाऊणं, (आचा १ हे—अढाइत्तए ; (कप्प)। कृ—अढायव्व, ढेय यव्व, अढाएयव्व, (कुमा ; आचा ७८ ; आ १० ; सुर १४, ८४)।
अढाइ वि [ध्यायिन्] चिन्तन करने वाला, ध्या वाला, (आचा)।
अढाउ वि [ध्यातृ] ध्यान करने वाला, चिन्तक, (आ
अढाड न [दे अढाड] १ लता-वान, निकुञ्ज, झाड़ी, ३, ६२ ; २, ८४, पाअ, सुर ३, २१३)। १ पर, "आमलो अढाडेमम्मि" (ठा १, ११)। "तए पासाडअढाडएसु इमम्मि पएसे णिक्खिप्पो पयत्तेण १४४)।
अढाडुअ न [अढाटन] १ नाश, क्षय, नष्ट होना, २ मारना, (सूत्र)।
अढाडुल न [दे] कपास का खेत, कपास, (दे ३, ६२)।
अढाडुवण अक [अढाटन] नष्ट होना, क्षय होना, मर जाना। अढाडुवइ, (सुपा ३०३)।
अढाण पुन [ध्यान] १ चिन्ता, विचार, उत्कट समाधि योग ; (आचा १, ८ १, ३, २१)। एक ही वस्तु में मन का स्थिर हो जाना, (ठा १ ; ४ मन आदि की अच्छी या बुरी (पिंड ३०२१, ठा ४,

सायंतरिया स्त्री [ध्यानान्तरिका] १ वह ध्यान जो सब ध्यान, जो समय जिसमें प्रथम ध्यान की समाप्ति हुई हो और दूसरे का प्रारम्भ उसके न किया गया हो और अन्य अनेक ध्यान करने के बाकी हों। (ठा ६, सम ६ ; ४)। २ एक ध्यान समाप्त होने पर नये ध्यानों में किसी एक को प्रथम प्रारम्भ करने का विचार ; (कुछ १)।

झाणि वि [ध्यानिन्] ध्यान करने वाला (आचा २८)।

झाम सक [दह्] जलाना, दाह देना, दग्ध करना। झामइ (सुअ २, ३, ११)। कर्म—झामिज्जइ ; (सुअ २, २, ४४)। प्रयो—झामावेइ (सुअ २, २, ४४)।

झाम वि [दे] दग्ध, जला हुआ (अच्चा २, १, १)।

झंडिल न [°स्थण्डिल] दग्ध भूमि (आचा २, १, १)।

झाम वि [ध्याम] अनुज्ज्वल, फल १,२—पत्र ४०)।

झामण न [दे] जलाना, ग्राम जलाना, प्रदीपन, (ठा २)।

झामर वि [दे] दग्ध, बुझा (द ३, ४१)।

झामल न [दे] १ आँख का एक प्रकार का रोग, मुखपाकी में "झिमली"। २ वि. झामर रोग वाला ; (ठा ५,१—पत्र ३०४ टी ; ओघ १२)।

झामिअ वि [दे] दग्ध, प्रज्वलित ; (द ३, ४१ ; षड् ; आगम)। २ म्लानेन्द्रिय, कृश किया हुआ, ३ अदृष्टिकृत ; "झामइत्ता सयमेव लोयं तु, अन्नेसिमा लोय" (सूत्रकृ १६)।

झाय वि [ध्मात] मन्दीकृत, क्षय, (संक्षि)।

झायत्थ देखो झा।

झारुआ स्त्री [दे] कीर्ति, क्षुद्र जन्तु-विशेष ; (द ३, ४७)।

झावण न [ध्मापन] दग्धं, झामण (गउड)।

झावणा न [ध्मापना] दाह, जलाना, अग्नि-संस्कार ; (आचा)।

झिंखण न [दे] खेद करना ; (उत्त १ ४१ टी)।

झिंखिर वि [दे] बकवादी, लोलभाषक, दोषकथिन्दा ; (द ३, ४४)।

झिंगिर) पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, इन्द्रिय जीव की
झिंगिरिड) एक जाति ; (जीव १)।

झिंझिअ वि [दे] क्षुब्धित, क्षुण्ण ; (कुछ ६)।

झिंझिया) स्त्री [दे] एक प्रकार का पङ्ख, तरुण-विशेष (उत्त
झिंझिरी) १०३६ टी ; आचा २, १, ८ ; कुछ १)।

झिज्जंत) वि [क्षीयमाण] जो क्षय को प्राप्त होता
झिज्जमाण) हो, दुबला होता हुआ ; ठि ५,१८; उत्त ३२८ टी ; हस)।

झिणा देखो झीण ; (से १, ३१ ; कुमा)।

झिमिय) न [दे] सर्दी के अवयवों की जड़ता; (आचा)।
झिमिम्मिय)

झिया देखो झा। झियाइ ; (हेका ; भग; कस ; पि ४७८)। कर्म—झियायमाण ; (णाया १,१—पत्र २८ ; ३०)।

झिरिडि न [दे] जीर्ण कूप, पुराना इनारा ; (दे ३, ४७)।

झिल्लिअ वि [दे] लीला हुआ, पकड़ी हुई वह वस्तु जो करण से गिरती हो; (कुछ १७८)।

झिल्ल सक [स्ना] कीर्तन, स्नान करना। झिल्लइ ; (कुमा)।

झिल्लिरिआ स्त्री [झिल्लिका] कीट-विशेष, इन्द्रिय जीव की एक जाति ; (पण्ण ; पण्ण १)।

झिल्लिरिरिआ स्त्री [दे] १ चींटी-नामक कृमि ; २ मकड़, मच्छड़ ; (दे ३, ३३)।

झिल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने की एक तरह की जाल ; (विपा १, ८—पत्र ८१)।

झिल्ली स्त्री [दे] लहरी, तरंग ; (गउड)।

झिल्ली स्त्री [झिल्ली] १ वनस्पति-विशेष; (पण्ण १ ; उत्त १०३१ टी)। २ कीट-विशेष ; (ठा ४६४)।

झीण वि [क्षीण] दुर्बल, कृश ; (दे २, ३ ; पाम)।

झीम न [दे] १ अंग, अवयव ; २ कीट, कीड़ा ; (दे ३, ६१)।

झीरा स्त्री [दे] लज्जा, शरम ; (दे ३, ४७)।

झुंख पुं [दे] तुच्छ-नामक कीट ; (दे ३, ४८)।

झुंझिय वि [दे] १ क्षुब्धित, क्षुण्ण ; (कुछ १, ३—पत्र ४६)। २ क्षुण्ण हुआ, क्षुब्ध हुआ ; (भग १६, ४)।

झुंझुमुसय न [दे] लता का दुग्ध ; (दे ३, ४८)।

झुंटण न [दे] १ प्रकार, (दे ३,४८)। २ पशु-विशेष, जो समुद्र के शरीर की सर्दी से जीता है और जिसका मेद खाद के लिये बहु-मूल्य है ; (उत्त ३३१)।

झुंडुआ स्त्री [दे] लंपटा, वृद्ध-कुटिनी, वृद्ध-स्त्रियों का ; (दे ५, ४१६ ; ४१८)।

झुंबण न [दे] प्रच्छन्न ; (भग १, १)।

झुसिर देखो जुसिर = सुर। झुसिरा ; (पि ३१४)। कर्म—झुसिरेइ ; (हे ४, ३७१)।

झुसिर वि [दे] सूत्र, असंबद्ध, असत्य ; (दे ३, ४८)।

झुण सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना। भुक्ख, (हे ४, ४, सुपा ३१८)।
झुणि पु [ध्वनि] शब्द, आवाज, (हे १, ४२; षड्, कुमा)।
झुणिअ वि [जुगुप्सित] निन्दित, घृणित, (कुमा)।
झुत्ती स्त्री [दे] छेद, विवर; (द ३, ४८)।
झुमुझुमुमय न [दे] मन का दुःख; (द ३, ४८)।
झुल्ल अक [अन्दोल्] झूलना, डोलना, लटकना। वकृ—झुल्लंत; (सुपा ३१७)।
झुल्लण स्त्रीन [दे] छन्द विशेष। स्त्री—णा (पिंग)।
झुल्लुरी स्त्री [दे] गुल्म, लता, गाछ, (द ६, ४८)।
झुस देखो झूस। सक—झुसिता, (पि २०६)।
झुसणा देखो झूसणा, (गउड)।
झुसिय देखो झूसिय, (कुमा २)।
झुसिर न [शुषिर] १ रन्ध्र, छेद, पोल, सूखी जगह, (णाया १, ८, सुपा ६२०)। २ वि. पोला, टूँठा, (ठा २, २; णाया १, २, पंह १, २)।
झूर सक [स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। झूरइ, (हे ४, ७४)। वकृ—झूरंत, (कुमा)।
झूर सक [जुगुप्स्] निन्दा करना, घृणा करना। "निरयमणोहमगमइ, दिट्ठीए तस्स रूवगुणरिद्धि।
इदो वि देवगाया, झूरइ नियमेण नियकम्म" (रयण ४)।
झूर अक [शि] झुकना, क्षीण होना, सूखना। वकृ—झूरंत, झूरमाण; (गण, उप पृ २७)।
झूर वि [दे] कुटिल, वक्र, टेढ़ा, (दे ३, ४६)।
झूरिय वि [स्मृत] चिन्तित, याद किया हुआ, (भवि)।
झूस सक [जुष्] १ सेवा करना। २ प्रीति करना। ३ क्षीण करना, सुखाना। वकृ—झूसमाण, (आचू)। संकृ—झूसित्ता, झूसित्ताणं, झूसेत्ता; (ओघ, पि ५८३; अंत २७)।
झूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा, आराधना, (नव, अंत, ओघ; णाया १, १)।
झूसरिअ वि [दे] १ अत्यर्थ, अत्यन्त; २ स्वच्छ, निर्मल, (दे ३, ६२)।
झूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित, आराधित, (णाया १, १, ओघ)। २ क्षपित, क्षिप्त, परित्यक्त, (उवा; ठा २, २)।
झेडुअ पु [दे] कन्दुक, गेंद, (दे ३, ४६)।
झेय देखो झा।

झेर पु [दे] पुराना पेड़, (दे ३, ४६)।
झोंडलिआ स्त्री [दे] शाक के समान एक वनस्पति, (दे ३, ६०)।
झोंटी स्त्री [दे] अर्ध-मुण्डी, भैंगा की एक जाति, (श्रा १)।
झोड सक [शाटय्] पेड़ आदि से पत्र आदि को तोड़ना, (पि ३२६)।
झोड न [दे] १ पेड़ आदि से पत्र आदि का तोड़ना, २ पत्र, (णाया १, १६—पत्र १७१)।
झोडण न [शाटन] पातन, गिराना; (पंच ३, २३)।
झोडिय पु [दे] १ नग्न, अल्प-वस्त्र। २ मुंडे सिर का, (दे ३, ४६)।
झोडिअ पु [दे] व्याध, शिकारी, बहेलिया; (दे ३, ४)।
झोलिआ) स्त्री [दे. झोलिका] झोली, थैली, झोला
झोल्लिआ) (दे ३, ४६, सुख ३, ४)।
झोस देखो झूस। झोसेइ, (भवि)। वकृ—झोसंत, झोसेमाण, (सुपा २६; आचू)। संकृ—"संवेइत्ता झोसित्ता निज्जरेइ तु" (सुर ६, २४६)।
झोस सक (गवेषय्) खोजना, अन्वेषण करना। झोसे, (वव ३)।
झोस पु [दे] झड़ना, दूर करना, (ठा ६, ३)।
झोसण न [दे] गवेषण, मार्गण, "अभोगणं ति वा मग्गणं ति वा झोसणं ति वा एगट्ठं" (वव ३)।
झोसणा देखो झूसणा, (सम ११६, भग)।
झोसिअ देखो झूसिय, (आचा १ ४, २६८)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि झकारस्स-
संकलणा समत्तिमा नत्ता समत्ता।

ट

ट पु [ट] मूर्धन्य-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण विशेष (प्रभा, पि
टंक पु [टङ्क] १ तलवार आदि का अग्र भाग, (सुर १—पत्र १८)। २ एक प्रकार का सिरका, (आचा सुख १, ६१३)। ३ एक दिशा में स्थित पर्वत, (आचा १

ठाण पु [स्थान] १ स्थान, जगह, २ अवस्था, दशा, ३ स्थानांग सूत्र का चौथा अंग, ४ प्रतिज्ञा, नियम, ५ कायोत्सर्ग, ध्यान आदि के लिये खड़ा रहना, ६ पैर, ७ घर, मकान, ८ शरीर, देह, ९ आसन, बैठक, १० मोक्ष, मुक्ति, ११ संख्या, गिनती, १२ वेश्या का अड्डा, १३ वेश्या का घर, १४ वेश्या का धंधा, १५ वेश्या का पेशा, १६ वेश्या का व्यवसाय, १७ वेश्या का कर्म, १८ वेश्या का काम, १९ वेश्या का रोजगार, २० वेश्या का धर्म, २१ वेश्या का आचार, २२ वेश्या का व्रत, २३ वेश्या का नियम, २४ वेश्या का कर्तव्य, २५ वेश्या का कार्य, २६ वेश्या का अभ्यास, २७ वेश्या का शील, २८ वेश्या का स्वभाव, २९ वेश्या का गुण, ३० वेश्या का लक्षण, ३१ वेश्या का चिह्न, ३२ वेश्या का भाव, ३३ वेश्या का रूप, ३४ वेश्या का वेष, ३५ वेश्या का आकार, ३६ वेश्या का प्रकार, ३७ वेश्या का ढंग, ३८ वेश्या का तरीका, ३९ वेश्या का ढर्रा, ४० वेश्या का चलन, ४१ वेश्या का रिवाज, ४२ वेश्या का दस्तूर, ४३ वेश्या का कायदा, ४४ वेश्या का कानून, ४५ वेश्या का नियम, ४६ वेश्या का विधान, ४७ वेश्या का संविधान, ४८ वेश्या का संस्थान, ४९ वेश्या का संगठन, ५० वेश्या का संघटन, ५१ वेश्या का संघ, ५२ वेश्या का समाज, ५३ वेश्या का समूह, ५४ वेश्या का समुदाय, ५५ वेश्या का वर्ग, ५६ वेश्या का दल, ५७ वेश्या का गण, ५८ वेश्या का गुट, ५९ वेश्या का गिरोह, ६० वेश्या का जत्था, ६१ वेश्या का जमघट, ६२ वेश्या का जमाव, ६३ वेश्या का जमावड़ा, ६४ वेश्या का जमाड़ा, ६५ वेश्या का जमाड़ा, ६६ वेश्या का जमाड़ा, ६७ वेश्या का जमाड़ा, ६८ वेश्या का जमाड़ा, ६९ वेश्या का जमाड़ा, ७० वेश्या का जमाड़ा, ७१ वेश्या का जमाड़ा, ७२ वेश्या का जमाड़ा, ७३ वेश्या का जमाड़ा, ७४ वेश्या का जमाड़ा, ७५ वेश्या का जमाड़ा, ७६ वेश्या का जमाड़ा, ७७ वेश्या का जमाड़ा, ७८ वेश्या का जमाड़ा, ७९ वेश्या का जमाड़ा, ८० वेश्या का जमाड़ा, ८१ वेश्या का जमाड़ा, ८२ वेश्या का जमाड़ा, ८३ वेश्या का जमाड़ा, ८४ वेश्या का जमाड़ा, ८५ वेश्या का जमाड़ा, ८६ वेश्या का जमाड़ा, ८७ वेश्या का जमाड़ा, ८८ वेश्या का जमाड़ा, ८९ वेश्या का जमाड़ा, ९० वेश्या का जमाड़ा, ९१ वेश्या का जमाड़ा, ९२ वेश्या का जमाड़ा, ९३ वेश्या का जमाड़ा, ९४ वेश्या का जमाड़ा, ९५ वेश्या का जमाड़ा, ९६ वेश्या का जमाड़ा, ९७ वेश्या का जमाड़ा, ९८ वेश्या का जमाड़ा, ९९ वेश्या का जमाड़ा, १०० वेश्या का जमाड़ा।

ठाणंग पु [स्थानाङ्ग] स्थानांग सूत्र का चौथा अंग, (ठा १)।

ठाणाइय वि [स्थानातिग] स्थान से अतिक्रान्त, (ठा ४, १)।

ठाणाइय वि [स्थानातीत] स्थान से अतीत, (ठा ४,

ठेक्कर न [दे] स्थान, प्रदेश ; (दे ४,३)।
ठोक्कण) न [दे] दाल नापने का बरतन, (दे ४,४)।
ठोक्कणय)
ठोणिआ स्त्री [दे] टोपी, सिर पर रखने का सिया हुआ एक प्रकार का वस्त्र, (सुपा २६३)।
ठोप्प पु [दे] अष्टि-विशेष, (ग ४६१)।
ठोप्पर पुन [दे] शिरस्त्राण-विशेष, टोपा, (सिंह)।
ठोल्ल पु [दे] १ गजेन्द्र, जन्तु-विशेष, २ शिलाच, (द ४, ४, प्रभा १८२)। °गइ स्त्री [°गति] गुरु-वन्दन का एक दोष, (पव २)। °गइ वि [°गति] प्रशस्त आकार वाला, (राज)।
ठोल्लय पु [दे] मधूक, वृक्ष विशेष, महुआ का पेड़, (दे ४,४)।

इस निशीथाध्ययनसूत्रमहार्णवसिन्धु ठकारशब्दरत्नकलशो अष्टादशमो तरंगो समाप्तः।

ड

ड पु [ड] मूर्धन्य अल्पप्राण व्यञ्जन वर्ण-विशेष, (प्राप्रा, प्राप)।
डअ वि [दे] १ उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ, २ पु आकाश, (दे ४, ५)।
डइअ वि [व्यावर्तित] १ व्यावर्तित, हटा हुआ, २ बन्द किया हुआ, रुका हुआ, (ग १०३)।
डइअ देखो डविअ, (सिंह)।
डइअल्ल देखो डविअल्ल, (उत्त)।
डंक देखो डंकल्लय। कर्म—डंकिज्जइ, (भ २, ६)।
डंक देखो डंकल्लय, (हे २, ६, षड्)।
डंकुर) पु [डङ्कुर] १ अंकुर, अंखुवा, प्ररोह, (ग
डंकूर) ६८८, सुपा ६१२, सुर ६८)। २ प्रथम कोंपल का अंकुर, बालक, मुखिया, (श्रावक)।
डंड पु [दण्ड] दण्ड, मूर्धा, बालक, (ठा ३, ३८, कुमा)।
डंडिअ वि [दे] दृप्त, दर्प युक्त, विडम्बित, (सुपा १२८)।
डंडिल देखो डण्डिल, (ठा ६ ३८८)।
डंडुर पु [दे] मेघ, मेघ का अंश, घड़े के ऊपर बनाया हुआ मिट्टी का ढक्कन (वर्ग ४)।
डंडुल्ल वि [दृप्तवत्] दर्पवाला, कुत्सित, जड़ (उ ३६, वज्जा ६२)।
डंप्प वि [स्थाप्य] स्थापनीय, स्थापन करने लायक (ओघ ६)।
डंय सक [स्थगय्] बन्द करना, रोकना। डंयि, डंयिऊण (उ १०८)।
डंयण [स्थगन] १ रुकाव, अटकाव। २ वि रोकने वाला स्त्री—°णी ; (उप ६६६)।
डंरिम वि [दे] १ गौरवित, २ ऊर्ध्व-स्थित, (दे ४, ६)।
डंलिय वि [दे] खाली, शून्य, रिक्त किया गया, (कुप्र ४)।
डंडल्ल वि [दे] निर्धन, धन-रहित, दरिद्र ; (दे ४, ६)।
डंव सक [स्थापय्] स्थापन करना। डंवइ, डंवेइ, (भवि कप्प, महा)। डंवे, (भग)। वकृ—डंवंत, (ठा ६३)। संकृ—डंविउं, डंविऊण, डंविता, डंवेत्ता, (पि ५७६, ५८६, ५८२, प्राप्र २७, पि ८८)।
डंवण न [स्थापन] स्थापन, संस्थापन, (ठा ३, १)।
डंवणा स्त्री [स्थापना] १ प्रतिकृति, बिंब, मूर्ति आदि (ठा २, ४, १० ; अणु)। २ स्थापन, न्यास, (ठा ३)। ३ सांकेतिक वस्तु, मुख्य वस्तु के अभाव की स्थिति में जिस किसी चीज में उसका संकेत किया जाय वह वस्तु, (विसे २६२७)। ४ जैन साधुओं का भिक्षा एक दोष, साधु को भिक्षा न देने के लिए रची हुई (ठा ३, ४—पत्र १५६)। ५ अनुज्ञा, सम्मति, (ठा ६ पर्युषणा, आठ दिनों का जैन पर्व-विशेष, (सिंह १ °कुल पुन [°कुल] भिक्षा के लिए प्रतिषिद्ध कुल, (४)। °णय पु [°नय] स्थापना का हेतु प्रधान वाला नय ; (राज)। °पुरिस पु [°पुरुष] मुख्य मूर्ति या चित्र, (ठा ३, १ ; सूत्र १, ४, १)। °य पु [°चार्य] जिस वस्तु में आचार्य का संकल्प आय वह वस्तु, (पंच २)। °सच्च न [°सत्य] स्थापना-विषयक सत्य, जैसे जिन भगवान् की मूर्ति के कहना यह स्थापना-सत्य है, (ठा १०, पण्ण ११)।
डंवणी स्त्री [स्थापनी] न्यास, न्यास रूप से रखा हुआ (ओघ १४)। °मोस पु [°मोष] न्यास की चोरी, का अपलाप, " डंवणिमोसेहा, डावंतस्स अवलवंतस्स (ओघ १४)।
डंविअ वि [स्थापित] रखा हुआ, संस्थापित, (ठा ४, २)।

ठविआ स्त्री [दे] प्रतिमा, मूर्ति, प्रतिकृति । (उत्त ८, ६) ।
ठविर देखो थविर । वि १६६ ।
ठा अक [स्था] ठहरना, स्थिर होना, रुकना, गति का प्रतिबन्ध करना । ठाइ, ठाअइ । (हे ४, १६, षड्) । कर—ठाविअ-भाण ; (उत्त १३० टी) । संकृ —ठाइऊण, ठाऊण ; (वि ३०१ ; पंचा १८) । हेकृ —ठाणिरं, ठाउं । (कम्म ४) । कृ—ठाणिज्ज, ठायव्व, ठाएयव्व । (पंचा १, १८ ; सुख ३०३, सुर ३, ३३) ।
ठाइ वि [स्थायिन्] रहने वाला, स्थिर होने वाला (औप, कम्म) ।
ठाएयव्व देखो ठा ।
ठाएयव्व देखो ठाय ।
ठाण पु [दे] मान, गर्व, अभिमान । (दे ४, ६) ।
ठाण पुन [स्थान] १ स्थिति, अवस्थान, गति की निवृत्ति, (सुअ १, ६, १, भू १) । २ स्थान-प्राप्ति, (कम्म १) । ३ निवास, रहना, (सुअ १, ११ ; निचू १) । ४ कारण, निमित्त, हेतु, (सुअ १, १, २ ; ठा ३, ४) । ५ पर्यटक आदि आलय, (राज) । ६ प्रकार, भेद; (ठा १०; भग ४) । ७ पद, जगह ; (ठा १०) । ८ गुण, पर्याय, धर्म, (ठा ६, ३, भग ४) । ९ आश्रय, आधार, वसति, मकान, घर, (ठा ४, ३) । १० तृतीय जैन अङ्ग-ग्रन्थ, 'ठाणांग' सूत्र (ठा १) । ११ 'ठाणांग' सूत्र का अध्ययन, परिच्छेद, (ठा १ ; २ ; ३, ४ ; ६) । १२ कायोत्सर्ग ; (औप) । अहं वि [भ्रष्ट] १ अपने जगह से च्युत, (दसा १,६) । २ स्थान से पतित ; (हेदु) । 'इय वि ['यित] कायोत्सर्ग करने वाला ; (औप) । 'यिय न ['यित] ऊँचा स्थान ; (सूत्र ६) ।
ठाणि वि [स्थानिन्] स्थान वाला, स्थान-युक्त ; (सुअ १, २; ठा) ।
ठाणिज्ज देखो ठा ।
ठाणिज्ज वि [दे] १ सौमित्र, सम्बन्धि, (दे ४, ६) । २ न. सौत्र ; (षड्) ।
ठाणुक्कडिय) वि [स्थानोत्कटुक] १ उत्कटुक आसन
ठाणुक्कुडुय) वाला; (पव २, १; भग) । २ न. आसन-विशेष ; (हस) ।
ठाणु देखो स्थाणु । खंड न ['खण्ड] १ स्थाणु का अवयव. २ वि स्थाणु की तरह ऊँचा और स्थिर रहा हुआ, स्खलित नहीं होने वाला ; (दसा १, १—पत्र ६६) ।

ठाम (अप) देखो ठाण ; (पिंग ; भवि) ।
ठाय ।
ठाय सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना । ठावे, ठावेइ; (वि ६१३ ; कम्म, महा) । वकृ—ठावेंत, ठावेंत ; (पव २०, सुख ८८) । संकृ - ठावेत्ता, ठावेत्ता ; (कम्म, महा) । कृ—ठाएयव्व , (सुख ६८१) ।
ठायण न [स्थापन] स्थापन, रचना, (पंचा ३३) ।
ठायणया) देखो ठवणा , (उत्त २८८ ; ठा १ ; सूत्र ४) ।
ठायणा)
ठायय वि [स्थायक] स्थापन करने वाला; (राजा १, १८; सुख २३४) ।
ठायर वि [स्थायर] रहने वाला, स्थायी ; (अच्चु १३) ।
ठाविअ वि [स्थापित] स्थापित, रखा हुआ ; (ठा ३, १ ; श्रा १२; महा) ।
ठाविउ वि [स्थापयितृ] स्थापन देखो ; (ठा ३, १) ।
ठिअंब न [दे] ऊर्ध्व, ऊँचा ; (दे ४, ६) ।
ठिइ स्त्री [स्थिति] १ अवस्था, दशा, मर्यादा, नियम ; "जयविहि एसा" (ठा ४, १ ; उत्त ७३८ टी) । २ स्थान, आश्रय ; (कम्म २) । ३ अवस्था, दशा ; (जी ४८) । ४ आयु, उम्र, काल-मर्यादा ; (भग १४, ६ ; सम ३१; पंचा ४ ; औप) । 'वसय पुं ['क्षय] आयु का क्षय, मरण ; (विसे २, १) । 'घडिया देखो 'घडिया; (कम्म) । 'बंध पुं ['बन्ध] कर्म-बन्ध की काल-मर्यादा ; (कम्म ४, ८२) । 'घडिया स्त्री ['घटिका] पुत्र-जन्म-संबन्धी उत्सव-विशेष ; (णाया १, १) ।
ठिइक न [दे] पुत्र-चिह्न ; (दे ४, ६) ।
ठिइकरिआ स्त्री [दे] ठिकरी, घड़ा का टुकड़ा ; (श्रा १४) ।
ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित ; (ठा ३, ४) । २ व्यवस्थित, नियमित ; (सुअ १, ६) । ३ खड़ा ; (भग ६, ३३) । ४ निश्चल, बैठा हुआ ; (निचू १ ; प्रार ; कुमा) ।
ठिर देखो थिर ; (मच्चु १ ; गा १३१ अ) ।
ठिविय न [दे] १ ऊर्ध्व, ऊँचा; २ निष्ठ, समीप ; ३ हिक्का, हिचकी ; (दे ४, ६) ।
ठिव्व सक [वि+ष्ठिव्] फेंकना । संकृ—ठिविऊण ; (सुख १६) ।
ठीण वि [स्त्यान] १ जमा हुआ (पुद्गल आदि) ; (कुमा) । २ ध्वनि-कारक, आवाज करने वाला ; ३ न. अन्धकार ; ४ आलस्य , ५ प्रतिध्वनि , (दे १, ४८, २, ३३) ।

ठुंठ पुंन [दे] ठूँठा, स्थाणु, (जं १)।
ठेर पुंस्त्री [स्थविर] वृद्ध, बूढ़ा; (गा ८८३ अ, वि११६), "पउरजुवाणो गामो, मउमासो जामणा पई ठेरो। जुण्णपुरा साहोणा, अवई मा होउ किं मरउ?" (गा १६७)। स्त्री—°री; (गा ६५४ अ)।
ठोड पुं [दे] १ जोतिषी, दैवज्ञ, २ पुरोहित, (सुपा ५५२)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि टयाराइसद्द-संकलणा एगूणवीसइमो तरंगो समत्तो।

ड

ड पुं [ड] मूर्धन्य-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष; (प्राप्र; प्राप)।
डओयर न [दकोदर] पेट का रोग-विशेष, जलोदर, (निचू १)।
डंक पु [दे] १ डंक, वृश्चिक आदि का काँटा, (पण्ह १,१)। २ दंश-स्थान, जहाँ पर वृश्चिक आदि डसा हो; "जह सत्थ-सरोग्गयविसं निहंभित्तु डक्काणिति" (सुपा ६०६)।
डंगा स्त्री [दे] डाँग, लाठी, यष्टि; (सुपा २३८, ३८८, ५४६)।
डंड देखो दंड; (हे १, १२७, प्राप्र)।
डंड न [दे] वस्त्र के सीए हुए टुकड़े; (दे ४, ७)।
डंडय पुं [दे] रथ्या, सड़क्का; (दे ४, ८)।
डंडारण्ण न [दण्डारण्य] दक्षिण की एक प्रसिद्ध जंगल, दण्डकारण्य; (पउम ६८, ४१)।
डंडि } स्त्री [दे] सीए हुए वस्त्र-खण्ड; (दे ४, ७, पण्ह
डंडी } १, ३)।
डंबर पुं [दे] धर्म, गरमी, प्रस्वेद; (दे ४, ८)।
डंबर पु [डम्बर] आडम्बर, आटोप; (उप १४२ टी; पिंग)।
डंभ देखो दंभ; (हे १, २१७)।
डंभण न [दम्भन] दाग़ने का शस्त्र-विशेष; (विपा १, ६)।
डंभणया } स्त्री [दम्भना] १ दागना। २ माया, कपट,
डंभणा } दम्भ, वञ्चना; (उप पृ ३१६, पण्ह २,१)।
डंभिअ पुं [दे] जुआरी, जुए का खेलाड़ी; (दे ४, ८)।
डंभिअ वि [दाम्भिक] वञ्चक, मायावी, कपटी; (कुमा, षड्)।
डंस सक [दंश्] डसना, काटना। डंसइ, डंसए, (भवि)।
डंस पुं [दंश] क्षुद्र जन्तु विशेष, डाँस; (जी १)।
डक्क वि [दष्ट] डसा हुआ, दाँत से कटा हुआ; (विपा १, २; गा ५३१)।
डक्क वि [दे] दग्ध, गृहीत, दाँत से उठाया; (दे ४,१)।
डक्क सील [डक्क] वाद्य-विशेष; (सुपा १६६)।
डगण न [दे] यान-विशेष; (राज)।
डगमग अक [दे] चलित होना, हिलना, काँपना। डगमगंत (पिंग)।
डगल न [दे] १ फल का टुकड़ा; (निचू १५)। २ पाषाण वगैरः का टुकड़ा, (ओघ ३१६; ७८ भा)।
डग्गल पु [दे] घर के ऊपर का भूमि-तल; (दे ४,८)।
डज्झ
डज्झंत
डज्झमाण } देखो डह।
डट्ठ देखो डक्क=दष्ट, (हे १, २१७)।
डड्ढ वि [दग्ध] प्रज्वलित, जला हुआ, (हे १, २१७, गा १४६)।
डड्ढाडो स्त्री [दे] दव-मार्ग आग का रास्ता; (दे ४,८)।
डप्फ न [दे] सेल्ल, कुन्त, आयुध-विशेष, (दे ४, ९)।
डब्भ पुं [दर्भ] डाभ, कुश, तृण विशेष; (हे १, २१७)।
डमडम अक [डमडमाय्] 'डम डम' आवाज करना, डमरू आदि का आवाज होना। वकृ—डमडमंत, (सुपा १६१)।
डमडमिय वि [डमडमायित] जिसने 'डम डम' आवाज किया हो वह, (सुपा १६१, २३८)।
डमर पुंन [डमर] १ राष्ट्र का भीतरी या बाह्य विप्लव, बाहरी या भीतरी उपद्रव, (ठाणा १, १, सं २; पाअ, औप)। २ कलह, लड़ाई, विग्रह; (पण्ह १,३; दे ८,११)।
डमरुअ } पुंन [डमरुक] वाद्य-विशेष, कपालिक देव
डमरुग } के बजाने का बाजा, (दे २, ८२; पंचा १, २३; सुपा १०६; षड्)।
डर अक [त्रस्] डरना, भय-भीत होना। डरइ, (हे ४,१८९)।
डर पु [दर] डर, भय, भीति; (हे १, २१७, षड्)।
डरिअ वि [त्रस्त] भय-भीत, डरा हुआ, (कुमा, ६६६; सण)।
डल्ल पु [दे] लोष्ट, ढेला; (दे ४, ७)।
डल्ल सक [पा] पीना। डल्लइ; (दे ४,१०)।

डम्फ) न [दे] तिनिश, डाला, टोकरी, बाँस का बना हुआ डलिया। पान-सुपारी रखने का पात्र, (दे ४, ३ अम्फ)।

डम्भिर वि [दाम्भिक] दंभी करने वाला, (कुमा)।

डय सक [आ+रुह] आरूढ़ करना, सवार करना, (षड्)।

डयण पु [दे] बाम हस्त, बायाँ हाथ, गुजरातो में 'डाबो', (दे ४, ६)।

डर देखो डुर। डरइ, (हे ४, २१८ ; वि २२१)।

डरिअ—डरिअ वि [दृप्त] १ दर्प, दीप्त या कदना, (हे १, २१७)। २ दीप्त, (कुमा)।

डरिअ वि [दृष्ट] डरा हुआ, काटा हुआ, (सुर ४४८, सुर ६, १८६)।

डह सक [दह्] जलाना, भस्म करना। डहइ, डहए, (हे ४, २१८ ; षड् , मद्रा , हस)। भवि डहिहिइ, (हे ४, २४६)। कवकृ—डज्झंत, डज्झमाण, (सम १३२ ; उप पृ ३३ ; सुपा ८४)। हेकृ—डहिउं, (पउम ३१, १७)। कृ— डज्झ , (ठा ३, १ , हस १०)।

डहण न [दहन] १ जलाना, भस्म करना ; (कुप्र १)। २ पु. अग्नि, वह्नि, (कुमा)। ३ वि. जलाने वाला ; "जस्स सुहदुहहेऊ अन्नो जलणो पयाइइ" (आचा ८४)। डहर पु [दे] १ शिशु, बालक, बच्चा ; (दे ५, ८ ; पाअ ; पव ३ ; दस ६, १, सुअ १, २, १ ; २, ३, ३१, २२ ; ३१)। २ वि. लघु, छोटा, क्षुद्र, (आचा १७८, २६० भा)। डहगाम पु [ग्राम] छोटा गाँव; (वव ७)।

डहरिया स्त्री [दे] जन्म से अठारह वर्ष तक की लड़की ; (वव ४)।

डहरी स्त्री [दे] अलिन्जर, मिट्टी का घड़ा ; (दे ४, ७)।

डाअल न [दे] लाचन, भौंग, नेत्र ; (दे ४, ६)।

डाइणी स्त्री [डाकिनी] १ डाकिन, टायन, चुड़ैल, प्रेतिनी; २ जंतर-मंतर जानने वाली स्त्री ; (पउम १,३ ; सुपा ६०६; स ३०७ ; मद्रा,)।

डाउ पु [दे] १ फलिहसक वृक्ष, एक जाति का पेड़ ; २ वनस्पति की एक तरह की प्रतिमा ; (दे ४, १२)।

डाग पुंन [दे] भाजी, पत्राकार तरकारी ; (भग ७, १० ; हस १ ; पव २)।

डाइणी देखो डाइणी, (८म १, ३, ४)।

डामर वि [डामर] भयंकर ; "डमरसिरदसणवाडोवडामणे" (सुपा १६१)। २ पु. स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम २०, ३१)।

डामरिय वि [डामरिक] लड़ाई करने वाला, विग्रह-कारक, (पव १, २)।

डाय [दे] देखो डाग ; (गउड)।

डायाल न [दे] हर्म-तल, प्रासाद-भूमि ; (आचा २, २,१)।

डाल अंत [दे] १ डाल, शाखा, टहनी ; (सुपा १४० ; पंचा १६ ; भवि ; हे ४, ४४१)। २ शाखा का एक देश; (आचा २, १, १०)। स्त्री—लिआ ; (मद्रा ; पाअ ; पउम २६)। लो ; (हे ४,८ ; पच्च १० ; सण, निचू १)।

डाव पु [दे] बाम हस्त, बायाँ हाथ ; गुजरातो में 'डावो' (दे ४, ६)।

डाह देखो दाह ; (हे १,२१७ ; गा २२६ ; ३३६ ; कुमा)।

डाहर पु [दे] देश-विशेष ; (निचू)।

डाहाल पु [दे] देश-विशेष ; (सुपा २६३)।

डाहिण देखो दाहिण; (गा ७७७ ; निचू)।

डिअत्तो स्त्री [दे] स्वप्ना, संभा, पूँटी ; (दे ४, ६)।

डिंडिव वि [दे] जल में पतित ; (षड्)।

डिंडिम न [डिण्डिम] ढुंढ़ढ़ा, ढुंग्गा, वाद्य-विशेष ; (सुर ६,१८१)।

डिंडिलिअ न [दे] १ मलि-खचित वस्त्र, तैल-सिक्त से स्नात कपड़ा ; २ स्खलित हस्त ; (दे ४, १०)।

डिंडी स्त्री [दे] सोए हुए वस्त्र गाय ; (दे ४, ७)। २ बंध पु [बन्ध] गर्भ-संभव ; (निचू ११)।

डिंडीर पुंन [डिण्डीर] समुद्र का फेन, समुद्र-फेन ; (उप ७२८ टी ; सुपा २२२)।

डिंडिम वि [दे] जल-पतित, पानी में गिरा हुआ ; (दे ४, ६)।

डिंब पुंन [डिम्ब] १ भय, डर ; (से २, १६)। २ विघ्न, अन्तराय ; (गाया १, १—पत्र ६ ; औप)। ३ विप्लव, उपद्रव ; (जं २)।

डिंभ अक [स्रंस्] १ नीचे गिरना। २ भ्रष्ट होना, नष्ट होना। डिंभइ ; (हे ४, १६७ ; षड्)। वकृ—डिंभंत ; (कुमा ७, ४९)।

डिंभ पुंन [डिम्भ] बालक, बच्चा, शिशु ; (पाअ ; हे १, २०२ ; मुद्रा ; सुपा १६)। "अह-दुरिअमाई तह भुक्किवाई जह चिंतिआई डिंभाई" (विवे १११)।

ढक्कर पु [दे] शिकार, (द ४, १६ ; पाअ)। २ ईर्ष्या, द्वेष, (दे ४, १६)।

ढल्ल अक [दे] १ ढलना, नीचे पड़ना, गिरना। २ झुकना। कर्म - ढल्लंत, (कुमा)। "ढल्लंतनेयचामरकलोला" (उप ६८६ टी)।

ढलिय वि [दे] झुका हुआ, (उप पृ ११८)।

ढाल सक [दे] १ डालना, नीचे गिराना। २ झुकाना, चामर करने का कोई अंग। ढालइ, (सुपा ४७)।

ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ, "सीसाओ ढालिओ सुरं" (सुर ३, २१८)।

ढाव पु [दे] आवद्ध, निर्बन्ध, (कुमा)।

ढिंक पु [ढिङ्क] पक्षि-विशेष, (पाअ १, १—गउ ८)।

ढिंकण) वि [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, गो आदि को लगने
ढिंकुण) वाला कीट विशेष, (राज, जी १८)।

ढिंग देखो ढिक, (राज)।

ढिंढय वि [दे] अन्न से पोषित, (द ४, १६)।

ढिक्कर सक [गर्ज्] गर्व का गर्जना। ढिक्करइ, (हे ४, ३२)। वकृ - ढिक्करमाण, (कुमा)।

ढिक्करिय न [दे] सिंह, हाथी, सदा ; (दे ४, १६)।

ढिक्किरिय न [गर्जित] गर्व की गर्जना, (महा)।

ढिक्किरिय न [ढिक्किरिक] देव विमान विशेष, (इक)।

ढिक्कुल सक [दे] फेंकना, डालना, (वि १६०)।

ढिल्ली स्त्री [ढिल्ली] भारतवर्ष का प्राचीन और अधुनातन राज्य धानी, दिल्ली शहर, (सिंह)। °नाह पु [°नाथ] दिल्ली का राजा, (कुमा)।

ढुंढुल्ल सक [ढुण्ढ्] ढूंढना, खोजना, चाहना। ढुंढुल्लइ, (हे ४, १६१)। ढुंढुल्लिऊ ; (कुमा)।

ढुंढुल्लण सक [गवेषय्] ढूंढना, खोजना, अन्वेषण करना। ढुंढुल्लए, (हे ४, १६२)।

ढुंढुल्लण न [गवेषण] खोज, अन्वेषण ; (कुमा)।

ढुंढुल्लिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, ढूंढा हुआ, (राज)।

ढुक्क सक [ढौक्] १ भेंट करना, अर्पण करना। २ उपस्थित करना। ३ सक संगत होना, पहुँचना। ४ मिलना। कर्म—ढुक्कंत, (सिरि)। कवकृ—ढुक्कंत, (उप ६८६ टी, सिरि)।

ढुक्क वि [दे ढौकित] १ उपस्थित ; (स २६१)। २ प्राप्त, (सिरि)। ३ प्रवृत्त, "सिरिं ढुक्का" (स ७२, सण, कुमा)।

ढुक्किअ वि [ढौकित] ऊपर देखो ; (सिरि)।

ढुम) सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। ढुमइ
ढुस) (हे ४, १६१ ; कुमा)।

ढेंक पुं [ढेङ्क] पक्षि-विशेष, (दसवै ३४)।

ढेंका स्त्री [दे] १ दर्भ, सुशी ; २ डेकुला, डेकरा, (दे ४, १७)।

ढेंकिय देखो ढिक्किय ; (राज)।

ढेंकी स्त्री [दे] बलाका, बक-पङ्क्ति, (दे ४,१६)।

ढेंकुण पु [दे] मत्कुण, खटमल ; (दे ४, १६)।

ढेंढिअ वि [दे] धूपित, धूप दिया हुआ ; (दे ४,१७)।

ढेणियालग) पुस्त्री [ढेणिकालक] पक्षि-विशेष,
ढेणियालय) १, १)। स्त्री—°लिया ; (सुर १

ढेरुल्ल वि [दे] निर्धन, दरिद्र ; (दे ४, १६)।

ढोअ देखो ढुक्क = ढौक्। ढोएज्जइ ; (महा)।

ढोइय वि [ढौकित] १ भेंट किया हुआ ; २ किया हुआ ; (महा, सुपा १६८ ; भवि)।

ढोयर वि [दे] भ्रमण-शील, घूमने वाला ; (दे ४, १७)।

ढक्कोल्ल पु [दे] १ ढोल, पटह ; २ देश-विशेष, जिसकी धानी धौलपुर है ; (सिंह)।

ढोयण) न [ढौकन, °क] १ भेंट करना,
ढोवणय) (कुमा)। २ उपहार, भेंट, (सुपा ६०

ढोविय वि [ढौकित] उपस्थापित, उपस्थित, (स ५०८)।

इस सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ढकारादि संकलणो एक्कवीसइमो तरंगो समत्तो।

ण तथा न

ण पु [ण, न] व्यञ्जन वर्ण विशेष, इसका उच्चारण मूर्धा है, इसलिए यह मूर्धन्य कहलाता है, (ठा, प
ण अ [न] निषेधार्थक अव्यय, नहीं, मा, [प्रा
२ ; प्रयू १६६)। °उण, °उणा, °उणाइ, °
[°पुव्व] न नु, नहीं हि ; (हे १, ६२ ; षड्)।
°पालोगपाय वि [°आलिखदालोकपादि] पाद
पादक नहीं है ऐसा मानने वाला ; (उप ८)।
ण न [नद्] वद ; (हे १, ७०, कुमा)।

[इदम्] वा, इव (हे ३, ११७ ; उव ६६० , सा १ ; १६१)।

पं [इं] अव्यय पश्चिम, दिक्षण , (कुमा १,८८)। देखो पच्चत्थम , (सा १००० ; स्वप्न-मैत्र ४१)।

पंच पुं ['पञ्च'] वृक्षराज का एक विख्यात नाम, जो पाँच प्रकार का कहा जाता है, जिसको आम्रवृक्ष देखो कहते हैं , (स्वप्न—मैत्र १२६)।

पंच. १ निपात-सूचक अव्यय ; 'पाँच शब्द' (हे २, ८४ ; षड्)। २ निषेधार्थक अव्यय ; 'न सत्य नेत्र हो' (सुर ३, २०६)।

देखो णं ;(षड्द , हे १,८ २,सा १६७; सुर १३,३६)। पंइ वि [नयिक] नय-युक्त, नयिकाय-विषय वाला , स्वप्न ४०)।

पं देखो णो-णं।

पांसय न [दे] पानी में होने वाला फल-विशेष , (दे , २३)।

पंसु [नदी] नदी, पर्वत आदि से निकला वह मोटा जो कूड़ा वहा नदी में आकर मिले , (हे १, २२६ ; प्राम)। कच्छ पुं ['कच्छ'] नदी के किनारे पर की झाड़ी ; छाया १, १)। 'गाम पु [ग्राम] नदी के किनारे स्थित गाँव ; (प्राम)। 'णाह पुं ['नाथ] समुद्र, सागर ; (उप ७२८ टी)। 'यर पुं ['पति] समुद्र, सागर; पउ १, ३)। 'संचार पु ['सञ्चार] नदी उतरना, दूसरे आदि में नदी पार जाना ; (गाज)। 'सोत पुं 'स्रोतस्] नदी का प्रवाह; (प्राम ; हे १, ४)।

इ (अव) देखो इव ; (कुमा)।

इअ न [नयुत] 'नयुतांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक)।

इअंग न [नयुताङ्ग] 'नयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह ; (ठा २, ४ ; इक)।

इए स्त्री [नवति] संख्या-विशेष, नब्बे, ९० ; (सम ९४)। इअय वि [नवत] ९० वाँ ; (पउम ९०, ३१)।

उल पुं [नकुल] १ न्यौला, (पण्ह १, १ , जी २३)। २ पाँचवाँ पाण्डव ; (छाया १, १६)।

उली स्त्री [नकुली] विद्या-विशेष, सर्व-विद्या को प्रतिघात विद्या ; (गाज)।

इं अ. १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (हे ४, २८३ , छाया ; पडि)। २ प्रश्न-सूचक अव्यय ; ३ समुच्चय-द्योतक अव्यय ; (गाज)।

पं (सौ) देखो पयु ; (हे ४, २८३)।

पं (अव) देखो इव ; (हे ४, ४०४ ; स्वप्न ; छाया ; पडि)।

पंगच्च वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ ; (षड्)।

पंगर पुं [दे] नगर, जहाज को उलट-पलट में घुसने के लिए पानी में जो लम्बी आदि डाली जाती है वह; (उप ७२८ टी ; सुर १३, १६३ ; स २०२)।

पंगर) न [लाङ्गूल] हल, जिससे खेत जोता और बोया पंगल) जाता है ; (पउम ७२, ७३ ; पण्ह १,४; पाम)।

पंगुल पुं [दे] पत्थु, चौथ ; "जहाउसो सो।- नहसंसेसु पहरु, दसाणणे विहलक्खपव्वे" (पउम ४४, ४०)।

पंगुलि पुं [लाङ्गुलिन्] बन्दर, हनी ; (कुमा)।

पंगुलिय पुं [लाङ्गूलिक] हल के आकार वाले आम-विशेष को धारण करने वाला सुमट ; (कप्प ; औप)।

पंगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ, पूँछ; (ठा ४,२; हे १,२६६)।

पंगूलि वि [लाङ्गूलिन्] १ लम्बी पूँछ वाला; २ पुं. बन्दर, बन्दर ; (कुमा)।

पंगोल देखो पंगूल ; (छाया १, ३ ; वि १३७)।

पंगोलि) पुं [लाङ्गूलिन्, 'क] १ मनुष्यों-विशेष; २ पंगोलिय) उनका निवासी मनुष्य ; (वि १३७ ; ठा ४,३)।

पंचग न [दे] वस्त्र, कपड़ा ; (कस ; आव ६)।

पंद अक [नन्द्] १ सुख होना, आनन्दित होना। २ समृद्ध होना। पंदइ, पंदए ; (षड्)। कवकृ—पंदिज्जमाण ; (औप)। कृ—पंदिअव्व, पंदेयव्व ; (षड्)।

पंद पुं [नन्द] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर का एक राजा ; (मुद्रा १६८ ; पंदि)। २ भरत क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव ; (सम १५४)। ३ भरत क्षेत्र में होने वाले नवमें तीर्थंकर का पूर्व-भवीय नाम ; (सम १५४)। ४ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि ; (पउम २०, २०)। ५. स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी ; (सुख ६३८)। ६ न. देव-विमान विशेष ; (सम २६)। ७ लोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन ; (छाया १, १—पत्र ४३ टी)। ८ वि. समृद्ध होने वाला; (औप)। 'कंद न ['कान्द] देव-विमान विशेष; (सम २६)। 'कूड न ['कूट] एक देव-विमान ; (सम २६)। 'उकय न ['ध्वज] एक देव-विमान; (सम २६)। 'पभ न ['प्रभ] देव-विमान विशेष ; (सम २६)। 'मई स्त्री ['मती] एक अन्य-

वृ) स्त्री, (अन्त २६, राज)। °मित्त पु [°मित्र] भरतक्षेत्र में होने वाला द्वितीय वासुदेव, (सम १५४)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान, (सम २६)। °वई स्त्री [°वती] १ सातवें वासुदेव की माता, (पउम २०, १८६)। २ रतिकर पर्वत पर स्थित एक देव-नगरी, (ठाण)। °वण्ण न [°वर्ण] देव-विमान विशेष; (सम २६)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान, (सम २६)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] देव-विमान विशेष, (सम २६)। °सिरी स्त्री [°श्री] स्वनाम-ख्यात एक अग्रि-कन्या; (ती ३०)। °सेणिया स्त्री [°सेनिका] एक जैन साध्वी, (अंत २६)।

णंद न [दे] १ ऊख पेलने का कोल्हू, २ कुआ, पाल-विशेष, (दे ४, ४६)।

णंदग पु [नन्दक] वासुदेव का खड्ग, (पाह १, ४)।

णंदण पु [नन्दन] १ पुत्र, लड़का, (गा ६०२)। २ राम का एक स्वनाम-ख्यात सुभट, (पउम ६७, १०)। ३ स्वनाम-ख्यात एक अनगार; (सम ६३)। ४ भारतवर्ष का नवमी सातवाँ वासुदेव, (सम १५४)। ५ स्वनाम-प्रसिद्ध एक श्रेष्ठी; (उप ६६०)। ६ श्रेणिक राजा का एक पुत्र, (निर १, २)। ७ मेरु पर्वत पर स्थित एक प्रसिद्ध वन; (ठा २, ३; इक)। ८ एक चैत्य; (भग ३, १)। ९ वृद्धि, (पाह १, ४)। १० नगर-विशेष, (उप ७१८ टी)। °कर वि [°कर] वृद्धि-कारक, °कूड न [°कूट] नन्दन वन का शिखर; (राज)। °भद्द पु [°भद्र] एक जैन मुनि; (कप्प)। °वण न [°वन] १ स्वनाम-ख्यात एक वन जो मेरु पर्वत पर स्थित है, (सम ६२)। २ देवन-विशेष, (निर १, ५)।

णंदय पु [दे] कूप, नौका, दाव; (दे ४, १६)।

णंदया स्त्री [नन्दा] लड़की, पुत्री; (पाम)।

णंदावत्तग पु [नन्दावर्तक] पक्षी की एक जाति, (पण्ण १, १)।

णंदा स्त्री [नन्दा] १ भगवान् आदिनाथ की एक पत्नी; (पउम ३,११२)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी और अभयकुमार की माता, (आवम १, १)। ३ भगवान् श्री नेमिनाथ की माता; (सम १५१)। ४ भगवान् महावीर के अन्य भगवान्-समय समय की माता; (आवम)। ५ स्वनाम-ख्यात एक नदी, (पउम ८८, १०)। ६ जम्बू-द्वीप-स्थित पूर्व महाविदेह की एक विजय, (ठा ८)। ७ ऐरवत-क्षेत्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी; (ठा ८, २)। ८ एक पुष्करिणी; (ठा ४, ३)। ९ ज्योतिष-शास्त्र में तिथि-विशेष—प्रथमा, षष्ठी और एकादशी तिथि,

णंदा स्त्री [दे] गौ, गाय, (दे ४, ३८)।

णंदावत्त पु [नन्दावर्त्त] १ एक प्रकार का स्वस्तिक (पा ६२)। २ क्षुद्र जन्तु की एक जाति, (जीव १) न. देव-विमान विशेष, (सम २६)।

णंदि पुंस्त्री [नन्दि] १ बारह प्रकार के वाद्यों का आवाज; (पाह २, ६; णंदि)। २ प्रमोद (पाह ६, २)। ३ मतिज्ञान आदि पाँचों ज्ञान; (णंदि) वाञ्छित अर्थ की प्राप्ति, ५ मंगल, (बृह १; णंदि) ६ समृद्धि; (अणु)। ७ जैन आगम ग्रन्थ (णंदि)। ८ वाञ्छा, अभिलाष, चाह, (आव ९ गान्धार ग्राम की एक मूर्छना, (ठा ७)। स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार; (विपा १, १) एक जैन मुनि, जो आगे आगामी भव में बलदेव होगा; (पउम २०, १९०)। ११ बृहत् शिला २०, ४२)। °आवत्त देखो °यावत्त, (इक) पु [°वृद्ध] एक प्राचीन ऋषि का नाम; (कप्प)। °कर, वि [°कर] मङ्गल-कारक, (कप्प १, १)। °गाम पु [°ग्राम] ग्राम विशेष; (आवम १)। °घोस पु [°घोष] १ बारह प्रकार का आवाज, (णंदि)। २ न देव-विमान विशे १७)। °चुण्णग न [°चूर्णक] हाथ पर लगाने प्रकार का चूर्ण, (सुअ १, ४, २)। °तूर न एक साथ बजाये जाने वाले बारह तरह के बाजे; (°पुर न [°पुर] साकेत्य देश का एक प्रा १०२१ टी)। °फल पु [°फल] वृक्ष-विशे १, ८; १६)। °भाण न [°भाजन] (बृह १) °मित्त पु [°मित्र] १ दशवें (राज)। २ एक राज कुमार, जिसने भगवान् के पास दीक्षा ली थी, (आवम १, ८)। [°मुहूर्त्त] एक प्रकार का मुहूर्त्त, काल विशे °मुह न [°मुख] पक्षि विशेष, (राज)। (पउम ११८, ११७)। °यावत्त पु [° स्वस्तिक विशेष, (अभि, पाह १, ८)। २ देव, (ठा ८, १)। ३ क्षुद्र जन्तु-विशे ४ न देव-विमान विशेष, (राज)। °वड

दसाओ का स्वतन्त्र-रूपसे एक शास्त्र, (राज १, १६—सम १०८)। °णाय पुं [°नाथ] १ दिगम्बर मत का देव, (सम्मत्त १, ४)। २ दिगम्बर मुनि। °णिवह पुं [°निवह] समूह, (पाअ)। °णिवासिणी स्त्री [°निवासिनी] देवी-विशेष, (पउम ५)। °णिवेअणा [°निवेदना] (४८)। °णिवेयण पुं [°निवेदन] १ भगवान् महावीर का एक श्रावक, (कप्प)। २ एक देव, (कप्प)। ३ एक शास्त्र-ग्रन्थ, (सुज्ज ८८)। °णिवेयणा स्त्री [°निवेदना] १ एक दिक्कुमारी देवी, (ठा ८)। २ एक प्रकार की नदी; (ठा ४, २)। °णिवेय पुं [°निवेद] १ एक वर्ष में उत्पन्न चतुर्थ जिन-देव, (सम १५३)। २ एक जैन मुनि; (कप्प)। ३ एक शास्त्र-ग्रन्थ, (ठा १०)। ४ स्वतन्त्र-रूपसे एक जैन मुनि, (ठा)। ५ देव-विशेष; (राज)। °णिवेया स्त्री [°निवेदा] १ पुष्करिणी-विशेष; (जीव ३)। २ एक दिक्कुमारी देवी, (देवी)। °णिवेयिया स्त्री [°निवेदिका] राजा अशोक की एक पत्नी; (पउम)। °णिस्सर पुं [°निस्सर] १ देव-विशेष; (राज)। २ आगे प्रकाश के बादलों का एक ही साथ आवाज; (जीव ३)।

दिन्न न [दे] सिंह की विष्ठा; (दे ४, १६)।

दिन्न वि [दत्त] १ दिया हुआ, (औप)। २ जैन मुनि-विशेष; (कप्प)।

दिन्निअ पुं [दे] सिंह, सिंहा; (दे ४, १६)।

दिन्निज्ज न [नन्दीय] जैन मुनियों का एक कुल; (कप्प)।

दिन्निणी स्त्री [नन्दिनी] पुत्री, लड़की; (पउम ४८, २)।

दिप्प पुं [पितृ] भगवान् महावीर का एक स्वतन्त्र-रूपसे शास्त्र; (ठा)।

दिन्नी स्त्री [दे] गौ, गैया; (दे ४, १८; पाम)।

दिन्नो देखो दिन्नि; (महा; औप ३२१ मा; पउम १, १; औप; सम १५२; सुपा)।

दिन्नो स्त्री [दे] गौ, गैया; (दे ४, १८; पाम)।

दिन्नोसर पुं [नन्दीश्वर] स्वतन्त्र प्रसिद्ध एक द्वीप; (राजा १, ८; महा)। °वर पुं [°वर] नन्दीश्वर द्वीप; (ठा ४, ३)। °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष; (जीव ३)।

दिन्नुत्तर पुं [नन्दोत्तर] देव-विशेष, नागकुमार के भूतानन्द-नामक इन्द्र के रथ सैन्य का अधिपति देव; (ठा ५, १; इक) °वडिंसग न [°वतंसक] एक देव-विमान, (सम २६)।

दिन्नुत्तरा स्त्री [नन्दोत्तरा] १ रुचिक शैलक पर्वत पर रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी; (ठा ८; इक)। २ कृष्ण-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी; (जीव ३)। ३ पुष्करिणी-विशेष, (ठा ४, २)। ४ राजा श्रेणिक की एक पत्नी; (अनु १)।

दिन्न न पु [णकार, नकार] 'ण' या 'न' अक्षर, (विसे २८८७)।

दिन्नइ पुं [नक] १ जलजन्तु-विशेष, ग्राह, नाका; (पण्ह १, १; कुमा)। २ राक्षस का एक स्वतन्त्र-रूपसे सुभट; (पउम ५६, १८)।

दिन्नइ पु [दे] १ नाक, नासिका; (दे ४, ४६; विसे १, १; औप)। २ वि. मूक, वाचा-शक्ति से रहित; (दे ४, ४६)। °सिरा स्त्री [°सिरा] नाक का छिद्र; (पाम)।

दिन्नक्खत्तर पु [नक्षत्रेश्वर] १ राजस; २ घर; ३ विद्वान; ४ वि. रात्रि में घूमने फिरने वाला; (हे १, १७७)।

दिन्नग पुं [नग] मेघ, नागरा; (हे २, ६६; प्राप्र)। °अ वि [°ज] मेघ से उत्पन्न; (गा ६७१)। °आउह पुं [°आयुध] सिंह, मृगारि; (कुमा)।

दिन्नक्खत्त पुं [नक्षत्र] कृत्तिका, अश्विनी, मृगशीर्ष आदि ज्योतिश्चक्र-विशेष; (पाम; कप्प; इक; सुज १०)। °दमण पुं [°दमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश; (पउम ५, २१६)। °मास पुं [°मास] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध समय-मान विशेष; (सुज १)। °मुह न [°मुख] चन्द्र, चाँद; (राज)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध वर्ष-विशेष; (ठा ६)।

दिन्नक्खत्त वि [नाक्षत्र] नक्षत्र-संबन्धी; (जं ७)।

दिन्नक्खत्तजोमि पुं [दे नक्षत्रयोनि] विष्णु, नारायण; (दे ४, २२)।

दिन्नक्खत्तजोय न [दे] नक्षत्र और केतुके निश्चलने का समय-विशेष; (बृह १)।

दिन्नक्खि वि [नखिन्] सुन्दर नख वाला; (बृह १)।

दिन्नग देखो णय=नग; (पिंड १, ४; उप ३६६ टी; सुर ३, ३४)। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत; (ठा ६)। [°वर] पुं [°वर] श्रेष्ठ पर्वत; (राजा १, १)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] मेरु पर्वत; (पउम ३, ७६)।

दिन्नगर न [नकर, नगर] शहर, पुर; (बृह १; कप्प; सुर ३, २०)। °गुत्तिय, °गोत्तिय पुं [°गुप्तिक] नगर

रक्षक, कोटवाल, दरोगा ; (णाया १, १८, औप, पद्म १, २, णाया १, २)। °घाय पु [°घात] शहर में लूट-पाट, (णाया १, १८)। °णिद्धमण न [°निर्धमन] नगर का पानी जाने का रास्ता, मोरी, नाला, (णाया १, २)। °रक्खिय पु [°रक्षिक] देखो °गुत्तिय ; (निचू ४)। °वास पु [°वास] राज-धानी, पाट-नगर ; (ज १ – पत्र ७४)।

णगरी देखो णयरी ; (राज)।

णगाणिआ स्त्री [नगानिका] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

णगिंद पु [नगेन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत ; (पउम ६७, २७)। २ मेरु पर्वत, (सूअ १, ६)।

णगिण वि [नग्न] नंगा वस्त्र-रहित, (आचा, उप पृ ३६३)।

णग्ग वि [नग्न] नंगा, वस्त्र रहित, (प्रभ, दे ४, २८)। °इ पु [°जित्] गन्धार देश का एक स्वनाम-ख्यात राजा, (औप, महा)।

णग्गउ वि [दे] निर्गत, बाहर निकला हुआ, (पड्—पृष्ठ १८१)।

णग्गोह पु [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, वड़ का पेड़, (पाअ ; सुर १, २०५)। °परिमंडल न [°परिमण्डल] संस्थान-विशेष, शरीर का आकार-विशेष ; (ठा ६)।

णघुस पु [नघुष] स्वनाम-ख्यात एक राजा ; (पउम २२, ५५)।

णचिरा देखो अइरा = अचिरात् ; (वि ३६५)।

णच्च अक [नृत्] नाचना, नृत्य करना। णच्चइ ; (षड्)। वकृ—णच्चंत, णच्चमाण, (सुर २, ७५ ; ३, ७७)। हेकृ—णच्चिउं, (गा १६१)। कृ—णच्चियव्व, (पउम ८०, ३२)। प्रयो, वकृ—णच्चाविज्जंत, (स २६)।

णच्चण न [नृत्य] जानकारी, पंडिताई ; (कुमा)।

णच्च न [नृत्य] नाच, नृत्य, (दे ६, ८)।

णच्चग वि [नर्तक] १ नाचने वाला। २ पु नट, नचवैया, (वव ६)।

णच्चण न [नर्तन] नाच, नृत्य ; (कप्प)।

णच्चणी स्त्री [नर्तनी] नाचने वाली स्त्री ; (कुमा ; कप्प, सुपा १६६)।

णच्चा } देखो णा=ज्ञा।
णच्चाण }

णच्चाविअ वि [नर्तित] नचाया हुआ ; (भाव २६५ ; उप ६)।

णच्चासन्न न [नात्यासन्न] अति समीप में नहीं (ठा १, १)।

णच्चिर वि [नर्तितृ] नचवैया, नाचने वाला, नर्तक (गा ४२०, सुपा ६४, कुमा)।

णच्चिर वि [दे] रमण-शील ; (दे ४, १८)।

णच्चुण्ह वि [नात्युष्ण] जो अति गरम न हो, (ठा

णज्ज सक [ज्ञा] जानना। णज्जइ, (प्राप)।

णज्जंत } देखो णा=ज्ञा।
णज्जमाण }

णज्जर वि [दे] मलिन, मैला ; (दे ४, १६)।

णज्झर वि [दे] विगत, निर्गत, (दे ४, १६)।

णट्ट अक [नट्] १ नाचना। २ सक, हिंसा करना, (हे ४, २३०)।

णट्ट पु [नट] नर्तकों की एक जाति ; "णच्च पमाणति विया" (रंभा ; मण, कप्प)।

णट्ट न [नाट्य] नृत्य, गीत और वाद्य ; नट-कर्म, (ठा १, ३, सम ८३)। °पाल पु [°पाल] नाट्य-रस का धार, (आचू १)। °मालय पु [°मालक] देव खण्डप्रपात गुहा का अधिष्ठायक देव, (ठा २, ३)। ° पु [°चार्य] सूत्रधार, (मा ४)।

णट्ट न [नृत्य] नाच, नृत्य, (से १, ८, कप्प)

णट्टअ न [नाट्यक] देखो णट्ट=नाट्य ; (मा ४)

णट्टअ } वि [नर्तक] नाचने वाला, नचवैया, (
णट्टग } णाया १, १ ; औप)। स्त्री—ई, (२, ३० ; कुमा)।

णट्टार पु [नाट्यकार] नाट्य करने वाला ; (

णट्टावअ वि [नर्तक] नचाने वाला, (कप्प)।

णट्टिया स्त्री [नर्तिका] नटी, नर्तकी, नाचने वा (महा)।

णट्टुमत्त पु [नर्तुमत्त] स्वनाम-ख्यात एक विद्याध

णट्ठ वि [नष्ट] १ नट, अपगत, नाश-प्राप्त, (३, ३ ; प्रास् ८६)। २ अहोरात्र का सत्तरहवाँ (राज)। °सुइअ वि [°श्रुतिक] १ जो अधि हो ; (णाया १, १ – पत्र ६३)। २ शास्त्र के ज्ञान से रहित, (राज)।

णट्ठय वि [नष्टवत्] १ नाश-प्राप्त। २ न अहोरात्र एक मुहूर्त ; (राज)।

ड अक [गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक विकल करना। दाह, दंडति; (हे ४, १६०; कुमा)। कर्म—ण्डिज्जइ; (गा ७७)। कवक—णडिज्जंत; (कुमा ३३८)।

ड देखो णल=नड; (हे २, १०२)।

ड पुं [नट] १ नर्तकों की एक जाति, नट; (हे १, १६६; प्राप्र)। °खइया स्त्री [°खादिका] नाटक-विशेष, नट की तरह कूदने का अनुकरण; (उप ४, ४)।

डाल न [ललाट] माथा, कपाल; (हे १, ८७; २६७; षड)।

डालिआ स्त्री [ललाटिका] ललाट-गहना, कपाल में पहनने आदि का विशेषण; (कुमा)।

डाविअ वि [गोपित] १ व्याकुल किया हुआ, २ विकल किया हुआ; (कुमा ३२६)।

डिअ वि [गुपित] व्याकुल; (से १०, ७०; सण)।

डिअ वि [ट] १ वञ्चित, विप्रतारित; (हे ४, १६)। २ खेदित, विकल किया हुआ; (हे ४, १६; षड, काप्र १,२)।

डी स्त्री [नटी] १ नट की स्त्री; (गा ६; उप ६)। २ नृत्ति-विशेष; (विसे ४१४ टी)। ३ नाचने वाली स्त्री; (बृह ३)।

डुली स्त्री [दे] कच्छप, कछुआ; (दे ४, २०)।

डुरी स्त्री [दे] नेत्र, नेत्रक; (दे ४, २०)।

डूल न [दे] १ रत, मैथुन; २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस; (दे ४, ४७)।

डूडुली देखो पडुली; (दे ४, २०)।

डेंदा स्त्री [ननान्दृ] पतिकी बहिन; (षट्, हे ३,३६)।

डेम [नेनु] इस अर्थ का सूचक अव्यय;—१ अवधारण, निश्चय; (प्राप्र १६१; नेमि १)। २ आमंत्रण; ३ विदूषक; ४ प्रश्न; (उव; सण; प्रति ६६)।

डोम पुं [दे] १ कुल, कुर्मी; २ दुर्जन, खल; ३ बड़ा भाई; (दे ४, ४६)।

त न [नवन्] संख्या, संख; (षट १०)।

त देखो पातु; "पंचमीचेवितिसिनिसुतरादिसुक्कम्मतीसिं" (कुमा ६)।

तंचर देखो पक्कंचर; (कुमा; सि २७०)।

तण न [नर्तन] नाच, नृत्य; (सण—भवि ८०)।

तिअ पुं [नप्तृक] १ पौत्र, पुत्र का पुत्र; २ दौहित्र, पुत्री का पुत्र; (हे १, ११७; कुमा)।

तित्रिआ) स्त्री [नप्त्री] १ पुत्र की पुत्री; (कुमा)।
तत्ती) २ पुत्री की पुत्री; (राज)।

तु) पुं [नप्तृ, °क] देखो पत्तिअ; (सिद्ध २, १;
तुअ) हे १, १३७; कुमा १६२; सिरा १, ३)।

तुआ देखो पत्तिआ; (हे १; सिरा १, ३)।

तुइणी स्त्री [नप्तृकिनी] १ पौत्र की स्त्री; २ दौहित्र की स्त्री; (सिरा १, ३)।

तुई देखो पत्ती; (सिरा १, ३; कम)।

तुणिआ देखो पत्तिआ; (हम ७, १६)।

त्थ वि [न्यस्त] स्थापित, लिखित; (पाया १, १; ३; सिरा ६१६)।

त्थण न [दे] नाक में छिद्र करना; (कुप्र १४, ४१)।

त्थया स्त्री [दे] नासा-रन्ध्र; (दे ४, १७; उवा)।

त्थि अ [नास्ति] अभाव-सूचक अव्यय; (कम; उवा; सम्म ३६)।

त्थिअ वि [नास्तिक] १ परलोक आदि नहीं मानने वाला; (प्राक)। २ पुं. नास्तिक-मत का प्रवर्तक, चार्वाक।

°वाय पुं [°वाद] नास्तिक-दर्शन; (उप १३२ टी)।

दद सक [नद्] नाद करना, आवाज करना। वकृ—°दंत; (सम ६० ; गाउ—मृच्छ १६६)।

द पुं [नद] नाद, आवाज, शब्द; "गहेल्ल सद्दो मारुअ विस्सर णई नई" (सम ६०)।

दी देखो णई; (से ६, ६६; पव ११)।

दिअ वि [दे] दुःखित; (दे ४, २०)।

दिअ न [नर्दित] शब्द, आवाज, शब्द; (राज)।

दिअ वि [नद्ध] १ परिहित; (सा ६२० ; पउम ७, ६२; कुप्र ३६६)। २ निबन्धित; (कुप्र ३६६)।

दिअ वि [दे] मत्त; (दे ४, १८)।

दिअव्वय न [दे] १ अ-कृत, कृत्य का अभाव; २ निष्ठा; (दे ४, ४७)।

दिअहुत्त वि [अनुद्यत] अ-कर्तव्य; (सण्ड)।

दिअहुप्पन्न वि [अनुत्पन्न] अनुत्पन्न होना; (सण्ड)।

दुंस
दुंसग
दुंसय
पुंस
पुंसग
पुंसय } पुं [नपुंसक] नपुंसक, क्लीव, नामर्द; (श्रेणि २१; सा १६; उ ३, १; सम ३७; अ-हम)। °वेय पुं [°वेद] क्लीवत्व, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के साथ की इच्छा होती है; (उत्त)।

पक्क सक [हन] आच्छा। मारना; (प्राप्र)।

पक्क देखो णक्कन्; (हे १, १८७; कुमा; षड)।

णलिण न [नलिन] १ रक्त कमल ; (राय ; भग १० ; पाअ)। २ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष, (ठा २, ३)। ३ 'नलिनाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, (ठा २, ४ ; इक)। ४ देव विमान विशेष, (सम ३३, ३६)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर, (दीव)। °कूड पु [°कूट] रुचकवर-पर्वत विशेष, (ठा २, ३)। °गुम्म न [°गुल्म] १ देव विमान-विशेष, (सम ३६)। २ वृक्ष-विशेष, (ठा ८)। ३ अध्ययन विशेष ; (आव ४)। ४ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, (राज)। °दंती स्त्री [°दन्ती] विद्युत् वर्ष का एक विजय, प्रदेश विशेष, (ठा २, ३)।

णलिणंग न [नलिनाङ्ग] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, (ठा २, ४, इक)।

णलिणि } स्त्री [नलिनी] कमलिनी, पद्मिनी ; (पाअ,
णलिणी } आचा १, १)। °गुम्म देखो णलिण गुम्म, (निर १, १, विसे)। °वण न [°वन] उद्यान विशेष, (आचा २)।

णलिणोदग पु [नलिनोदक] समुद्र विशेष, (दीव)।

णल्लेय न [दे] १ वृत्ति विशेष, बाड़ का छिद्र, २ प्रयोजन, ३ निमित्त, कारण ; ४ वि. कर्मिष्ठ, कोच वाला, (दे ४, ४६)।

णव देखो णम। णवइ, (पउ ; हे ४, १६८, २२६)।

णव वि [नव] नया, नूतन, नवीन, (गउड, प्राप्र ७१)। °वहुया, °वहू स्त्री [°वधू] नवोढा, दुलहिन; (हेका ६१; सुर ३, ६२)

णव त्रि. ब. [नवन्] संख्या-विशेष, नव, ६, (ठा ६)। °इ स्त्री [°ति] संख्या-विशेष नब्बे, ६०, (सण)। °ग न [°क] नव का समुदाय, (दं ३८)। । °जोयणिय वि [°योजनिक] नव योजन का परिमाण वाला, (ठा ६)। °णउइ, °नउइ स्त्री [°नवति] संख्या विशेष, निन्यानवे, ६६ ; (सम ६६; १००)। °नउय वि [°नवत] ६६ वाँ ; (पउम ६६, ७५)। °नवइ देखो °णउइ, (कम्म १, ३०)। °नवमिया स्त्री [°नवमिका] जैन साधु का व्रत-विशेष, (सम ८८)। °म वि [°म] नववाँ ; (उवा)। °मी स्त्री [°मी] तिथि-विशेष, पक्ष का नववाँ दिवस ; (सम १६)। °मोपक्ख पु [°मोपक्ष] आठवाँ दिन, अष्टमी ; (जं २)।

णवकार देखो णमोक्कार, (सट्ठि १, वेरा १०)।

णवण्ण (अप) वि [नव] अनेक, बहुत, बहु, (भवि ४११)। स्त्री—°ण्णी ; (हे ४, ४२०)।

णवणीअ पुन [नवनीत] माखन, मक्खन, (पाअ प्रभा)। " णवणीअमउअ गत्ता " (उत्त १८)।

णवणीइया स्त्री [नवनीतिका] बलवती-क्रिया, (पि

णवमालिया स्त्री [नवमालिका] पुष्प वृक्ष विशेष, मेवार ; (कप्प)।

णवमिया स्त्री [नवमिका] १ रुचक पर्वत वासी एक दिक्कुमारी देवी, (ठा ८)। २ महाहिमवन्त की एक अग्र-महिषी, (ठा ४, १)। ३ एक पटरानी ; (ठा ८)।

णवय देखो णयय ; (आचा १, १०)।

णवयार देखो णमोक्कार ; (पंचा १, वि ३०६)।

णवर } अ. १ केवल, फक्त ; (हे २, १८०, कुमा
णवरं } उवा ; सुपा ८, जी ३७, गा १६)। २ बाद में, (हे २, १८८ ; प्राप्र)।

णवरंग } पु [नवराङ्ग, °क] १ नूतन रङ्ग, का
णवरंगय } ३, ६२)। २ छन्द-विशेष, (पिं
कौसुम्भ रङ्ग का वस्त्र, (गउड; गा २४१, सुर १,
पाअ)।

णवरि } देखो णवर ; (हे २, १८८ ; हे ४
णवरिअ } प्राप्र ; सुर, २६ ; ६२ ; गा १७२)।

णवरिअ न [दे] सहज, अन्दरी, तुरन्त, (दे ४, पाअ)।

णवरुआ स्त्री [दे] वह वस्त्र, जिसमें पति के मरने पर उसे नहीं बताने वाली स्त्री पछाड़ खा कर गिर जाती है ; (दे ४, ३१)।

णवलअ देखो णव = नव, (हे १, १६६; कुमा, ग दो)।

णवसिअ न [दे] उपाधिक, मनौती, (दे ४, पाअ ; वज्जा ८६)।

णवा स्त्री [नवा] १ नवोढा, दुलहिन, २ युवति स्त्री १, ३, ६)। ३ जिसको दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए साध्वी, (वव ४)। ४ अ. प्रश्नार्थक अव्यय, (रयण ६७)।

...क्ष, १ वैक्रियशरीरयुक्त प्राणी, 'णर-र' देखो; ...१, १४८; कप्प) । २ विद्याधरों का एक वंश, ...स्त्री) । ...देखो; सणिच्चर-चर ...३, १५६ ; भवि) ।

...ि वि [नगर] नगर-स्थित, नगर ...(कप्पा १, १, ३) ।

...रवर्ग वि [नगरनारायण] नगरी ...(पउम ८८, १०) ।

...रुद्दय (प्रा) देखो णारय=नारक । (सुपा) ।

...ल्ली स्त्री [नवोढा] नव-विवाहित स्त्री, नूतनस्त्रि, (कप्प ७) ।

...वरण न [दे] दीपक, दीया (दे ४, २३) ।

...ई पुं [दे] आसुरी, सींग का बना हुआ , (दे ४, १२) । ...वि [नवत्व] नूतन, नया, नवीन , (श्रा २१) । ...ि देखो णाइ=इव ।

...ाउल पुं [दे] १ ईश्वर, धनाढ्य, मानी, २ विदेशी का , सूत का सदागर , (दे ४, २३) ।

...ाव [नि+आव] स्थापन करना । संवेज्ज, (विसे ३)। कर्म—...व्वए, (विसे २७०) । संकृ —...विऊण ३६०८) ।

...ाव [नञ्] मानना, पसन्द करना । ...व, (विग)। ...ा न [ज्ञपन] ज्ञापन, ज्ञपना; (जीव १) ।

...ी स्त्री [दे] नव, नारी ; "...ण्णिअंकरणे हट्ठट्ठचरं ...म सम्मत्तनंदं" (सुपा ३४६) ।

...ि वि [नष्ट] नाश-प्राप्त , (कुमा) ।

...व देखो नव=नवन् । ...व्वइ, णव्वए; (पउ ; कुमा) । ...—णव्वंत, णव्वमाण ; (श्रा १६ ; सुपा २१६) ।

...वर वि [नम्बर] निर्धन, संपुर, नाग पाने वाला; "सप्प...णाइ' रुवाइ'" (सुपा २४३) ।

...सा स्त्री [नासा] नासिका, घ्राणेन्द्रिय, (नाट-मृच्छ ६२) । देखो णक्क ; (गण ६० ; कुमा) ।

...ा न [नभस्] १ आकाश, गगन ; (प्राप्र; हे १, ३२)। पुं, श्रावण मास ; (दे ३, १६) । ...ंचर वि [...चर] आकाश में विचरने वाला ; (से १४, ३८) । २ पुं, ...धर, आकाश-विहारी मनुष्य ; (सुर ६, १८६) । ...उमंडिय न [वैतुमण्डित] विद्याधरों का एक नगर ; (इक) । ...गामा स्त्री [...गमा] आकाश-गामिनी विद्या ; (सुर १३, १८६) । ...गामिणी स्त्री [...गामिनी] आकाश-गामी विद्या ; (सुर ३, २८) । ...चर देखो ...अर; (उप ७ टी) । ...च्छेइणय न [...च्छेदनक] नख उतारने का शस्त्र , (आचा २, १, ७ १) । ...तिलय न [तिलक] १ नभ-तिलक, २ सुवर्ण-तिलक ; (पउम ५५, ११) । ...दाउज पुं [...दायज] दूध-पिलाई ; (सुर ६, २६)। ...सिर न [...शिरस्] नख का अग्र भाग; (भग ५, ४)। ...सिहा स्त्री [...शिखा] नख का अग्र भाग; (कप्प) । ...सेण पुं [...सेन] राजा उग्रसेन का एक पुत्र; (अंत) । ...हवणी स्त्री [...हवनी] नख उतारने का शस्त्र ; (दुर्ग ३) ।

णाउर पुं [दे] चूर, क्लन्त ; (दे ४, २०) ।

णाअर पुं [नागर] नग, नगपति ; (सुर ११ ; ६०६) ।

णाइण्ण पुं [दे] नदी, नद काला जन्तु, भगर; (कप्पा १२)।

णाइणी स्त्री [दे] नदी, नद काला का मादा, (कप्पा ३)।

णाइणाल पुं [नागनिल] नद काला भगर जन्तु; (उप ६३० टी) ।

णाइरी स्त्री [दे] चुरिका, छुरी ; (दे ८, २०) ।

णाइल्लसी स्त्री [दे] लिपुट, बिस्तरा; (दे ४, २२) ।

णाइ पुं [नन्दिन्] नद-प्रधान जन्तु, भगर जन्तु; (कप्पु)।

णाइ अ [नहि] निषेधार्थक अव्यय, नहीं, (स्वप्न ४१; सिंग; गण) ।

णाउ अ [नगरतु] ऊपर देखो; (नाट —मृच्छ २८१; गाथा १, ६) ।

णा सक [ज्ञा] जानना, समझना । भवि—णाहिइ ; (विसे १०१३) । णाहिति; (वि ६३४) । कर्म—ण्णइ, णज्जइ; हे ४, २५१) । कृ—णायव्व, णेअ; (भग; जी ६ ; सुर ४, ७० ; दं २ ; हे २, १६३ ; नव ३१) ।

णा अ [न] निषेध-सूचक अव्यय; (गउड) ।

णाअक्क (अप) देखो णायग; (सिंग) ।

णाइ पुं [ज्ञाति] इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न क्षत्रिय-विशेष । °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर ; (आचा) । °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्री महावीर ; (आचा) ।

णाइ स्त्री [ज्ञाति] १ नात, स्वजन जाति ; (पउम १००, ११ ; भवि ; उवा) । २ माता-पिता आदि स्वजन, सगा ; (णाया १, १) । ३ ज्ञान, बोध ; (आचा ; ठा ५, ३) ।

णाइ (अप) देखो इव; (कुमा) ।

णाइ (अप) नीचे देखो ; (भवि) ।

णाइं देखो णा=न ; (हे २, १६० ; उवा) ।

णाइणी (अप) स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी; (भवि)।

कुमार देवों का राजा, नागेन्द्र ; (ओघ)। °कुमार पु [°कुमार] नवम जिन ; (पउम २०, १०)। °काय पु [°काय] दिव्य अस्त्र विशेष ; (जोइ ३)। °केउ पु [°केतु] नाग द्वीप का अधिष्ठाता देव ; (सुज्ज १९)। °गण पु [°गण] जैन मुनियों का एक कुल, (कप्प)। °गुत्त पु [°गुप्त] नागद्वीप का एक अधिष्ठायक देव (सुज्ज १९)। °गुहावइ पु [°गुहावती] नाग नगर का अधिपति (सुज्ज १९ ; १६)। °जिण पु [°जित] जैन एक जैन मुनि जो आर्य महागिरि के शिष्य थे, [°] °दत्त पु [°दत्त] नागकुमार देवों का स्वामी, इन्द्र (पउम ३, १४७)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] कन्या विशेष (ठा ८)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] कन्या विशेष, (पउम ९)। °दर पु [°दर] नाग समूह का अधिपति हाथी, (ओघ)। °दीव पु [°द्वीप] नाग समूह का (सुज्ज १९)। °दीवी स्त्री [°दीवी] द्वीप (ठाण)। °दीवी स्त्री [°द्वीपी] द्वीप विशेष (उप ६४८ टी)। °दुम्म न [°द्रुम] नाग (अनु)। °देव पु [°देव] एक जैन मुनि, (आवम)। °दिन्न पु [°दिन्न] जैन मुनि, (कप्प)।

नागनिय न [नागरक] नागरा, नगरवास। (कुव)

नागर वि [नागर] १ नगर-संबन्धी, २ चतुर, (सुर १, ६६ ; महा)।

नागरिअ पु [नागरिक] नगर का रहने वाला

नागरिआ स्त्री [नागरिका] नगर में रहने वाली स्त्री (महा)।

नागरी स्त्री [नागरी] १ नगर में रहने वाली [illegible] २ नगर देवी का [illegible] (सुपा ४०, ६३६)।

नागिंद पु [नागेन्द्र] १ नाग देवों का इन्द्र [illegible] (सुपा ४०, ६३६)।

नागिंदय देश नागदह, (राज)।

नागी स्त्री [नागी] नागिन, नागिनी, [illegible] °नागिंद देखो नागिंद, (कुमा १, ६)।

नागुब्भव वि [नागोद्भव] नाग से उत्पन्न [illegible] (कुमा १, १, ७१)।

नागुव्विवी स्त्री [नागोर्विवी] १ नागिन,

नाग [illegible] ३ [३] नाग द्वारा स्वीकार करने का [illegible] (सुर १०१, ३३६)।

नाग [illegible] [नागित] १ ज्ञात, विदित, सूचना दिया [illegible] (ठा ३ [illegible] ४, ४, (दसा १, १)। २ [illegible], ३ [illegible], (पिंड)।

नाग [illegible] [नागिल] १ एक जैन मुनि, (कप्प)। [illegible] (सुपा ११८, ११७)। २ [illegible] (कुमा)।

नाग [illegible] [नागिला] जैन मुनियों का एक शाखा, [illegible]

नाग [illegible] (नागिलिया) [illegible]

नाग [illegible] [नागेन्द्र] [illegible] (उप ६४८ टी)।

नाग [illegible] [नाघ] [illegible], [illegible] (हे ४, ४१

णाय]

न [नाटक] १ नाटक, अभिनय, नाट्यक्रिया ; (बृह १ ; सुपा १ ; ३६६ ; सार्ध ६५) । २ (बृह १) में विजने में उपयुक्त काव्य ; (हे ४, २७०) ।

देसी षाडाल ; (गउड) ।

डी [नाडी] १ रज्जु, वस्त्रा ; २ नाड़ी, नल, सिरा ;

ा) ।

ाडी [नाडी] कान देखो ; (हे १, २०२) ।

ाडिय पुं [नाडीक] वनस्पति-विशेष ; (सण १०, ७) ।

ाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, चैतन्य, बुद्धि ; (भग ८,२ ; ठा २. ४२ ; कुप्र ; प्राप्र २८) । °धर वि [°धर] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् ; (सुपा ६०८) । °पवाय न [°प्रवाद] जैन सम्प्रदाय-विशेष, पाँचवाँ पूर्व ; (सम ३६) ।

°भायार देखो °यार ; (पि) । °वंत वि [°वत्] ज्ञानी, विद्वान् ; (पि ३४८ ; आचा) । °यार पुं [°चार] ज्ञान-विषयक आसेवन वर्ग ; (पव ४४) ।

°यरणिज्ज न [°चरणीय] अनन्त ज्ञान अर्थ ; (सम ६६ ; औप) ।

णाणक } न [दे] सिक्का, मुद्रा ; (मृच्छ १७ ; गउड) ।
णाणग }

णात न [नानात्व] भेद, विशेष, अन्तर ; (आचा ६१८) ।

णाता स्त्री [नानाता] जुदा होना ; (विसे २१८१) ।

णापा म [नाना] अनेक, जुदा जुदा ; (ठा ३ ; भग ८६) । °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, विविध ; (औप ३ ; सुर ४, २४६ ; दं १३) ।

ी वि [ज्ञानिन्] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् ; (आचा ; १) ।

ंदिय देखो णाइय ; (कम) ।

ांदि पुं [नान्दि] १ स्वजन-सम्बन्धी एवं कुटुम्बपुरुष, नगरान् ; २ नगरी का एक आदर ; (कप्प) । °मंदइय पुं [°नान्दीक] नगरान् ; (पउम ४, ६८) ।

राम क [नमन्] १ स्नान, तौल करना । २ उपस्थान-ना । ३ आदर करना, सत्कार ; (हेका ४६) । देखो—

णामधेय ; (विसे २६६०) ।

ंद (विसे १) ।

णाम पुं [नाम] १ परिणाम, भाव ; (भग २५, ५) । २ नमन ; (विसे २१७६) ।

णाम म [नाम] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ संभावना ; (से ६, ४) । २ आमन्त्रण, संबोधन ; (बृह ३ ; उवा १) । ३ प्रसिद्धि, ख्याति ; (कप्प) । ४ अनुज्ञा, अनुमति ; (पिंड) । ५—६ वाक्यालंकार और पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है ; (ठा ४, १ ; राज) ।

णाम न [नामन्] नाम, आख्या, अभिधान ; (विसे १, १ ; विसे ३६) । °कम्म न [कर्मन्] कर्म-विशेष, विचित्र परिणाम का कारण-भूत कर्म ; (सम ७७) । °चिज्ज, ° धेज्ज, °धेय न [°धेय] नाम, आख्या ; (कप्प ; सम ७१ ; पउम ४, ८०) । °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर ; (इक) । °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] नाम से अङ्कित मुद्रा ; (पउम ६, ३२) । °सच्च वि [°सत्य] नाम-मात्र से सच्चा, नामधारी ; (ठा १०) । °हेज्ज देखो °धेय ; (पउम २०, १७८ ; स्वप्न ४३) ।

णामण न [नमन] नमाना, नीचा करना ; (विसे ३००) ।

णाममंतक्ख पुं [दे] अक्षराभ्यास, सुनाद ; (सार्ध ८०) ।

णामिय वि [नमित] नमाया हुआ ; (सार्ध ८०) ।

णामिय न [नामिक] वाचक नाम, पद ; (विसे १००३) ।

णामुक्कसिअ } न [दे] कार्य, काम, काज ; (हे २,
णामोक्कसिअ } १७४ ; हे ४, २५) ।

णाय वि [दे] गर्हित, अभिमानी ; (दे ४, २३) ।

णाय देखो णाग ; (पाअ ७७७ ; कप्प ; औप ; गउड ; पञ्चा १४ ; सुपा ६३६ ; पउम २१. ४८) ।

णाय पुं [नाद] शब्द, आवाज, ध्वनि ; (औप ; पउम १२, १८ ; सण २१३) ।

णाय पुं [न्याय] १ सत्य, नीति ; (औप ; स १४६ ; आचा) । २ उपपत्ति, प्रमाण ; (पंचा ४ ; विसे) । °कारि वि [°कारिन्] न्याय-कर्ता ; (आवम) । °कारि वि [°कार] १ न्याय-कर्ता । २ पुं. न्यायाधीश ; (श्रा १४) । °गय वि [°गत] १ न्याय का जानकार ; (उप ३४८) । °वंत वि [°वत्] न्याय का जानकार ; (पउम) ।

णाय पु [नाक] स्वर्ग, देवलोक ; (उप ; सुर १२) । २ हस्तिबन्धनी, रस्सा, गड़ हाथियों का ; (श्रा १४ पु बंधनविशेष ; (उप १) । ४ कर्दमविशेष, (६ ; कप्प) । ६ न. उपकरण, साधन, (उप, स्था

°कुमार पुं [°कुमार] ऋषभ-वंशीय राज-पुत्र ; (णाया १, ८) । °कुल न [°कुल] वंश-विशेष ; (णाया १, २) । °कुलवर पुं [°कुलवर] भगवान् श्रीमहावीर, (भग) । °कुलवंदण पुं [°कुलवन्दन] भगवान् श्रीमहावीर ; (पाह १, १) । °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्रीमहावीर, (भग) । °मुणि पुं [°मुनि] भगवान् श्रीमहावीर ; (पाह २, १) । °विहि पुंस्त्री [°विधि] माता या पिता के द्वारा सम्बन्ध, संस्कार, (सुर ६) । संड न [°षण्ड] उत्तम विशेष, जो भगवान् श्रीमहावीर देव ने दीक्षा ली थी ; (भग २, ३, १) । °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्रीमहावीर । °सुय न [°श्रुत] ज्ञाताधर्मकथा अङ्ग जैन आगम-ग्रन्थ, (भग, सुर १, ८) । °धम्मकहा स्त्री [°धर्मकथा] जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (सम १) ।

णायग पुं [ज्ञायक] जैन, मुनिराज, मुमुक्षु, (उप ६४८ टी, कप्प, सम १, सुपा २२) ।

णायग पुं [दे] समुद्र मार्ग से व्यापार करने वाला वणिक् ; "णायगा णिवाय सुद्धा जाणि नाम नावा" (उप६४७ टी)

णायर देखो णागर ; (महा ; सुपा १८८) ।

णायरिअ देखो णागरिअ, (सुर १४, १३३) । स्त्री—आ ; (भवि) ।

णायरी देखो णागरी ; (भवि) ।

णायव्व देखो णाअव्व ।

णार पुं [णार] अपूर्ण जल-पृथिवी का एक प्रस्थट, (इक) ।

णारइअ वि [नारकिक] १ नरक पृथिवी में उत्पन्न ; २ पुं नरक का जीव ; (हे १, ७८) ।

णारंग पुं [नारङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, नारंगी का वृक्ष ; २ न. फल-विशेष, नारंगी फल, संतरा ; (पउम ४१, ६ ; सुपा ४१० ; ६११, महा, हम्मीर) ।

णारय देखो णारअ = नारक ; (सिरि १२००) ।

णारय देखो णारद ; (पउम ६१) ।

णारदीअ वि [नारदीय] नारद-संबन्धी ; (पउम ६१) ।

णारद पुं [नारद] १ मुनि-विशेष, नारद ऋषि ; (सम १५८, ठा ६-३ टी) । २ भावी जैन तीर्थंकर देव विशेष ; (ठा ७) ।

णारय वि [नारक] १ नरक में उत्पन्न, नरक-संबन्धी, "णारय कुल्ल" (सुर १६१) । २ पुं नरक में उत्पन्न जीव, नरक का जीव, (सम) ।

णारसिंह वि [नारसिंह] नरसिंह-संबन्धी, (हे टी) ।

णाराय देखो णराअ ; (हे १, ६७ ; उवा, स्त्री अजि १४) । °वज्ज न [°वज्र] संहनन-विशेष ; (ठा २, १०६) ।

णारायण पुं [नारायण] १ विष्णु, श्रीकृष्ण, (हे ६२२) । २ भावी-चक्रवर्ती राजा, (पउम ४, १०७, २०) ।

णारायणी स्त्री [नारायणी] देवी-विशेष, दुर्गा, (गउड) ।

णारि देखो णारी, (कप्प ; राज) । °कंता स्त्री [नारी-विशेष ; (सम २७ ; ठा २, ३) ।

णारिएर) पुं [नारिकेर] १ नारियल का पेड़, २ णारिएल) पेड़ का फल ; (अभि १३० ; सि ११) देखो णालिएर ।

णारिंग न [नारिङ्ग] नारंगी का फल, मीठा नींबू, नींबू, (कप्पू) ।

णारी स्त्री [नारी] १ स्त्री, औरत, जनाना, (हेका २२८, प्रासू ६२ ; १५६) । २ नदी (इक) । °कंतप्पवाय पुं [°कान्तप्रवाद] विद्या-विशेष, (ठा २, ३) । देखो णारि ।

णारुह पुं [दे] कुआर, गर्भाकार स्थान, (षड्) ।

णारोह पुं [दे] १ शिव, सींग आदि का अग्र भाग ; २ कुआर, गर्भाकार स्थान, (दे ४, २१) ।

णाल न [नाल] १ कमल-दण्ड, (से १, १८) गर्भ का आवरण ; (उप ६७४) ।

णालंदइज्ज वि [नालन्दीय] १ नालन्दा-संबन्धी नालंदा के समीप में प्रतिपादित अध्ययन-विशेष, "सूय का सातवाँ अध्ययन ; (सूय २, ७) ।

णालंदा स्त्री [नालन्दा] राजगृह नगर का एक (कप्प ; सूय २, ७) ।

णालंदिअ न [दे] अन्तर्गृह, घर-अन्दर, वि णालंदि पुं [दे] कुआर, गर्भ-स्थान, (दे ६, णालंदा) स्त्री [नादि] नदी, नद, सिंधु, (दे णादि) कुमा) ।

णालिअ वि [दे] शून्य, रिक्त हुआ ; (षड्) ।

णालिअर पुं [दे] सूर, सूर्य, आदित्य, (दे ६, ११

देखो पारिणय । (दे ३, १० ; पउम ३, २७) ।
पुं [छोर] देखो-णिय ; (कम्म १, १६) ।
ा स्त्री [नालिका] १ बन्दूक विशेष ; (दे २,३) ।
क, घड़ी, काल मापने का एक साधन ; (पाम;
२,२०) । ३ अपने शरीर से चार अंगुल लम्बा तालो ;
य ३६) । ४ यन्त्र-विशेष, एक साधन का कूआ ;
ौ ; सण ६, ७) । सेहा स्त्री [क्रोडा] एक
ह का वृक्ष ; (प्रौत) ।
लिए देखो पारिणय । (सण १, ६) ।
लिपरी स्त्री [नालिकेरी] नलिका का गाछ ; (सट्ठ ,
रि १२६) ।
ाली स्त्री [नाली] १ वनस्पति-विशेष, एक दव ,
(पण्ण १) । २ घटिका, घड़ी ; (जंबू ३) ।
ाली स्त्री [नाडी] नाड़ी, नस, सिरा ; (विपा १, १) ।
ालोय वि [नालीय] नाल-संबन्धी ; (आचा) ।
ावइ (अप) देखो डूब ; (हे ४, ४४८ ; भवि) ।
ावण न [दे] दान, विसर्ग ; (पउ १.२—पत्र ५३) । °वाणिय
ावा स्त्री [नौ] नौका, जहाज ; (सग ; दया) । °वाणिय
पुं [°वाणिज] नदी नदी में व्यापार करने वाला वणिक् ;
(आचा १, ८) ।
ावायुय पुं [दे] चुहड़, चुण्टू ; "दिट्ठे णावायुएहिं आया-
सं" (कुप्र १) ।
ाविय पुं [नाविक] नाई, हजाम ; (हे १, २३० ; कुमा ;
पउ) । °साला स्त्री [°शाला] नाइयों का मठ ;
(आ १२) ।
ाविय पुं [नाविक] जहाज चलाने वाला, नौका हाँकने
वाला ; (दया १, ६ ; सुर १३, ३१) ।
ास देखो णास । °वाय ; (पउ ; महा) । कृ—°णासियव्व ;
°वेउं ; (सुर १, २०२ ; २, २५) । कृ—°णासियव्व ;
(सुर ७, १२६) ।
ासण सक [नाशय्] नाश करना । °वाय ; (हे ४,
३१) । °वाय ; (महा ; उव) ।
ास पुं [नाश] नाश, ध्वंस ; (प्रापू १६३ ; पाम) ।
°सील वि [°कृ] नाश-शील ; (सुर १२, १६४) ।
°वास पुं [°वास] १ स्थान ; (ठा ६६ ; उव ३०२) ।
२ घरद्वार ; रहने योग्य घर आदि ; (उव ७१८ टी ;

णासग वि [नाशक] नाश करने वाला ; (सुर १, ६८) ।
णासण न [नाशन] १ पलायन, भगदड़ ; (धर्मवि) । २
वि. नाश करने वाला ; (से ३, ३७ ; सण २२) । °सी—
पो ; (से ३, ३७) ।
णासण न [न्यासन] स्थापन, अवस्थापन ; (अनु) ।
णासणा स्त्री [नाशना] विनाश ; (विसे २३६) ।
णासणा सक [नाशय्] नाश करना । °वासइ ; (हे४, ३१) ।
णासय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ, भगाया हुआ ;
(उव ३६७ टी ; कुमा) ।
णासा स्त्री [नासा] नाक, घ्राणेन्द्रिय ; (सा २२ ; आचा ;
उवा) ।
णासि वि [नाशिन्] विनश्वर, नष्ट होने वाला ; (विसे
१८८१) ।
णासिक्क न [नासिक्य] दक्षिण भारत का एक स्वर्णाल-
प्रसिद्ध नगर जो आज कल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है ;
(उव पृ २१३ ; १४१ टी) ।
णासिगा स्त्री [नासिका] नाक, घ्राणेन्द्रिय ; (महा) ।
णासिय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ ; (महा) ।
णासियव्व देखो णास = नश् ।
णासिरं वि [नशितृ] नष्ट होने वाला, विनश्वर ; (कुमा) ।
णासीकय वि [न्यासीकृत] धरोहर रूप में रक्खा हुआ ;
(आ १४) ।
णासेक्क देखो णासिक्क ; (उव १४१) ।
णाह पुं [नाथ] स्वामी, मालिक ; (कुमा ; प्रापू १२ ; ६६) ।
णाहल पुं [लाहल] नेवला की एक जाति ; (हे १, २६६ ;
कुमा) ।
णाहि देखो णाभि ; (कुमा ; कप्पू) । °रहु पुं [°रथ]
राजा, चतुर्दश ; (अनु ३६) ।
णाहिं (अप) अ [नहि] नहीं, नहीं ; (हे ४, ४१८ ;
कुमा ; भवि) ।
णाहिणाम न [दि] विवक्षित के बीच की संज्ञा ; (हे ४, २४
णाहिय वि [नास्तिक] १ परलोक आदि का नहीं मा
वाद ; २ पुं. नास्तिक मत का प्रवर्तक । °वाह, °वादि
[°वादिन्] नास्तिक मत का अनुयायी ; (सुर ६,
८ १६४) । °वाय पुं [°वाद] नास्तिक दर्शन ; (सम्म
८ १६४) ।
णाहिविच्छेअ) पुं [दे] जल, कूएं के नीचे का
णाहीविच्छेअ) (हे ४, २४) ।

णि अ [नि] इन अर्थों का सूचक अव्यय ; —१ निश्चय, (उत्त १)। २ नियमन, नियम ; (ठा १०)। ३ आधिक्य, अतिशय, (उत्त १, विपा १, ६)। ४ अधो-भाग, नीचे, (सण)। ५ निधान, ६ संशय ; ७ आदर, ८ उपरम, विराम ; ९ अन्तर्भाव, समावेश, १० समीपता, निकटता ; ११ क्षेप, निन्दा ; १२ बन्धन ; १३ निश्चय, १४ दान, १५ राशि, समूह, १६ मुक्ति, मोक्ष ; (हे २, २१७ ; २१८)। १७ अभिमुखता, समुचितता, (सुम १,६)। १८ अल्पता, लघुता, (पण्ह १, ४)।

णि अ [निर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ निश्चय, (उत्त ६)। २ आधिक्य, अतिशय, (उत्त १)। ३ प्रति-षेध, निषेध, (सम १३७, सुपा १६८)। ४ बहिर्भाव ; ५ निर्गमन, निष्क्रमण, (ठा ३, १, सुपा १३)।

णिअ सक [दृश्] देखना। णिअइ, (पड्, हे ४,१८१)। कृ—णिअंत, (कुमा ; महा, सुपा २६६)। संकृ—णिएउं ; (भवि)।

णिअ वि [निज] आत्मीय, स्वकीय, (गा १५० ; कुमा, सुपा ११)।

णिअ वि [नीत] ले जाया गया ; (से ५, ६ ; सण)।

णिअ वि [नीच] नीच, जघन्य, निकृष्ट ; (कम्म ३, ३)।

णिअइ स्त्री [निकृति] माया, कपट, (पण्ह १, २)।

णिअइ स्त्री [नियति] १ नियतपन, भवितव्यता, नियमितता ; (सूम १, १, ३)। २ अवश्य-भाविता, (ठा ४, ४, सूम १, १, २)। °पज्जय पु [°पर्यय] पर्याय-विशेष, (जीव ३)। °वाइ वि [°वादिन्] 'सब कुछ भवितव्यता के अनुसार ही हुआ करता है, प्रयत्न वगैरः अकिञ्चित्कर हैं' ऐसा मानने वाला, (राज)।

णिअइअ वि [नियन्त्रित] १ बँधा हुआ, जकड़ा हुआ। २ न. आचार-कौशल्य नियम-विशेष ; (ठा १०)।

णिअड वि [निर्ग्रन्थ] १ धन रहित। २ पुं. जैन मुनि, संयत, यति ; (भग ; ठा ३, १, ५, २)। ३ जिन भग-वान् ; (सूम १, ६)।

णिअंठि देखो णिग्गंथी। °पुत्त पु [°पुत्र] १ एक मिथ्यात्व-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सच्चकि था ; (ठा १०)। २ एक जैन मुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था, (भग ६, ८)।

णिअंठिअ वि [नैर्ग्रन्थिक] १-निर्ग्रन्थ-संबन्धी ; २ जिन दर्शन-संबन्धी। भा—°या, "एगा आया णिअंठिआ"

णिअंठी देखो णिग्गंथी ; (ठा ६)।

णिअंतिय वि [नियन्त्रित] संयमित, अवरुद्ध हुआ, (महा ; सण)।

णिअंतुअ न [दे] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ४, १८)।

णिअंब पु [नितम्ब] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का नि-म्नभाग ; (आचा ४०)। २ स्त्री की कमर का पीछे का भाग, कमर के नीचे का भाग, (कुमा ; गउड)। ३ पर्वत (से ८, १०१)। ४ कटी-प्रदेश, कमर, (उप)।

णिअंबिणी स्त्री [नितम्बिनी] १ सुन्दर स्त्री, २ स्त्री, महिला, (कप्पू, पाअ, सुपा ३१८

णिअंस सक [नि + यंस्] पहनना। णिअंसइ, (सङ्क्षि—णिअंसित्ता ; (जीव ३ ; पि ७४)। णिअंसावेइ ; (पि ७४)।

णिअंसण न [दे. नियंसन] वस्त्र, कपड़ा, (दे ; गा ३६१, पाअ ; गउड ; पण्ह १, ३, सुपा हेका ३१)।

णिअक्क सक [दृश्] देखना। णिअक्कइ, (प्रा

णिअक्कल वि [दे] वर्तुल, गोलाकार करने ; ३६ ; पाअ)।

णिअग वि [निजक] आत्मीय, स्वकीय, (उवा)

णिअच्छ सक [दृश्] देखना। णिअच्छइ, (हे ४ वकृ—णिअच्छंत, णिअच्छमाण, (गा २१८ गा ६००)। संकृ—णिअच्छिऊण, णिअ (सुर १, १४७, कुमा)। कृ—णिअच्छिअव्व, (

णिअच्छ सक [नि+यम्] १ नियमन करना करना। २ अवश्य प्राप्त करना। ३ जानना। संकृ—च्छइत्ता ; (सूत्र १, १, १ ; २)।

णिअच्छिअ वि [दृष्ट] देखा हुआ, (पाअ)।

णिअट्ट अक [नि+वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना, णिअट्टइ ; (सण)। वकृ—णिअट्टमाण, (भ

णिअट्ट सक [निर् + यूह्] बनाना, रचना, निर्माण (औप)।

णिअट्ट सक [नि + अर्द्] अनुसरण करना, (औ

णिअट्ट पुं [निवर्त] व्यावर्तन, निवृत्ति, "अविरय (आचा)।

णिअट्ट वि [निवृत्त] व्यावृत्त, पीछे हटा हुआ,

णिआ° देखो णिअय=(दे)। °वाइ वि [°वादिन्] नित्य-वादी, पदार्थ को नित्य मानने वाला; (ठा ८)।
णिआइय देखो णिकाइय, (सूअ १, ६)।
णिआग पुं [नियाग] १ नित्य याग; २ नित्यचा पूजा; ३ मोक्ष, मुक्ति, (आचा, सूअ १, १, २)। ४ न. आमन्त्रण दे कर जो भिक्षा दी जाय वह, (दस ३)।
णिआग देखो णाय=न्याय; (आचा)।
णिआण न [निदान] १ कारण, हेतु, "अहा अन्नं णियाण महंतो विसामा" (स ३६०; पाअ; आया १, १३)। २ किसी अनानुष्ठान को फल-प्राप्ति का अभिलाष संकल्प-विशेष, (श्रा ३३; ठा १०)। ३ मूल कारण, (आचा)। °कड वि [°कृत्] जिसने अपने शुभानुष्ठान के फल का अभिलाष किया हो वह; (सम १५३)। °कारि वि [°कारिन्] वही अनन्तर उक्त अर्थ; (ठा ६)।
णिआण न [निपान] कूप या तलाव के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुंड, आहाव, हौदो, "पएमणं पएहट्ट पएमाग पएसहं पएनियाण" (उप ७२८ टी)।
णिआणिआ स्त्री [दे] खराब तृणों का उन्मूलन, (दे ४, ३६)।
णिआम देखो णिअम=नियमय्। संकृ—उवसग्गा णियामित्ता आमोक्खाए परिव्वए" (सूअ १, ३, ३)।
णिआमग } वि [नियामक] नियम-कर्ता, नियन्ता, (सुपा
णिआमय } ३१६)। २ निर्णायक, विनिगमक, (विसे ३४७०, स १७०)।
णिआमिअ वि [नियमित] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित; (स २६३)।
णिआरइ सक [काणेक्षित् कृ] कानी नजर से देखना। णिआरइ; (हे ४, ६६)।
णिआरिअ वि [काणेक्षितकृत] १ कानी नजर से देखा हुआ, आधी नजर से देखा हुआ। २ न. आधी नजर से निरीक्षण; (कुमा)।
णिआह पुं [निदाघ] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म ऋतु, २ उष्ण, गर्म, गरमी; (गउड)।
णिइअ } वि [दे. नित्य, नैत्यिक] नित्य, शाश्वत, अविनश्वर;
णिइय } (पंच २, ४—पत्र १८१; सूअ १, १, ४; २, ४; संबोध; आचा; सम ११२)।
णिइअ वि [निवृत्त] परिवेष्टित, परिवेष्ठित; (हे १,
णिइअ वि [निपुण] सुनिपुण, सुनिपुण; (आचा १,
णिइंचिअ वि [निकुञ्चित] संकुचित, सकुड़ा हुआ, मुड़ा हुआ; (गा ५६३; से ६, १६; पाअ; स ३
णिइंज सक [नि+युज्] जोड़ना, संयुक्त करना, कार्य में लगाना। कर्म—णिइंजामि, (विसे
वकृ—णिइंजमाण; (सूअ १, १०)। सं
णिइंजिऊण, णिइंजिय; (स १०८; महा)। हे
णिइंजियव्व, णिइंजेयव्व; (उप पृ १०; कुमा)।
णिइंज पुं [निकुञ्ज] १ गहन, लता आदि से ढंका (कुमा; गा २१७)। २ गह्वर; (हे ६, १२३)
णिइंभ पुं [निकुम्भ] कुम्भकर्ण का एक पुत्र; (हे १
णिइंभिला स्त्री [निकुम्भिला] यज्ञ-स्थान; (हे १
णिइक्क वि [दे] तृष्णीक, मौन रहने वाला; (दे २७, पाअ)।
णिइक्कण पुं [दे] १ वायस, काक, कौआ; २ वाक्-शक्ति से हीन; (दे ४, ५१)।
णिइक्कम वि [निष्क्रम] उद्यम-रहित, अकर्मा, (सू १, २)।
णिइड्ड सक [मस्ज्, नि+मज्ज्] मग्न होना, डूबना, णिइड्ढइ; (हे ४,१०१)। वकृ—णिइड्ढमाण, (से
णिइड्ढ वि [मग्न, निमज्जित] डूबा हुआ, निमग्न, (से १५; १६, ७४)।
णिइण वि [निपुण] १ दक्ष, चतुर, कुशल; (कप्प स्वप्न ५३; प्राप्र ११; जी ६)। २ सूक्ष्म, जो बुद्धि से जाना जा सके, (जी २, राय)। ३ दक्षता से, चतुराई से, कुशलता से, (ओव २)।
णिइण वि [निर्गुण] १ निर्गत गुण वाला; २ निर्गुण से युक्त, (राज)। ३ सुनिश्चित, विनिर्णीत, (पंचा
णिइणिय वि [नैपुणिक] निपुण, दक्ष, चतुर; (ठा
णिइत्त वि [नियुक्त] १ व्यापारित, कार्य में लगा हुआ; (पचा ८)। २ निबद्ध, (विसे
णिइत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, सिद्ध, (उत्त १
णिइत्तेअ देखो णिइंज=नि+युज्।
णिइद्ध न [नियुद्ध] बाहु-युद्ध, कुश्ती, (उप १३
णिउर पुं [निकुर] वृन्द-विशेष, (आचा १,६—
णिउर न [नूपुर] स्त्री के पाँव का एक आभरण, (
१२३; कुमा)।

—णिकाय]

वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ ; २ जीर्ण, पुराना; (पाम ; सुर ३, ६८) ।

ंथ न [निकुरम्ब] समूह, जत्था ; (पाम ; सुर ३, ६८ ; गा ४८६ ; सुपा ४५४) ।

उरंथ न [निकुरुम्ब] समूह, जत्था ; (म ४३७, ४८६ भ ; पि १७७) ।

डल पुं [दे] गाँठ, गठरी ; "एवं बहु भणिऊणं समप्पिओ विनिउडेणं" (महा) ।

ूढ वि [निगूढ] गुप्त, प्रच्छन्न ; (अच्चु ४५) ।

एकल देखो णिमल्ल=निज ; (आवम) ।

ोअ सक [नि+योजय्] किसी कार्य में लगाना ; (नाट—विक्र ६) ।

ोएदि (शौ) ; (नाट—विक्र ६) ।

ोअ देखो णिओग ; (से ८, २६ ; अभि २७ ; सण ; (३४८) । १० आज्ञा, आदेश ; (म ३१४) ।

ोइअ वि [नियोजित] नियुक्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ ; (म ४४२ ; अभि ६६) ।

ोग पुं [नियोग] १ नियम, आवश्यक कर्तव्य ; (विसे ८७६ ; पंचव ४) । २ सम्बन्ध, निमोजन ; (हम्मीर १) । ३ अनुयोग, सूत्र की व्याख्या ; (विसे) । ४ व्यापार, कार्य ; (दव २) । ५ अधिकार-क्षेत्र ; (महा) । ६ राजा, (ठा २, १) । ७ गाँव, ग्राम ; ८ क्षेत्र, (बृह १) । ९ संयम, त्याग ; (सूअ १, १६) ।

ो णिओअ । 'पुर न ['पुर] १ राजधानी ; २ देश, (उप ७६८ ; सुपा ५७६) ।

ट्ठ ; ३ राज्य ; (जीव) ।

ोगि वि [नियोगिन्] नियोग-विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञा, अधिकारी ; (सुपा ३७१) ।

ोग्गिय देखो णिओइय ; (आवम) ।

ंत) देखो णीअन्त ।

ंतण)

ंद सक [निन्द्] निन्दा करना, जुगुप्सा करना ; णिंदसि, (पि) । वकृ—णिंदंत ; (भा ३६) । कवृ—णिंदिज्जंत ; (सुपा ३६३) । संकृ—णिंदित्ता, णिंदिअ ; (आचा २, ३, १ ; भा ४०) । हेकृ—णिंदिउं, णिंदित्तए ; (दस ; ठ ३, १) । कृ—णिंदियव्व, णिंदणिज्ज ; (पव २, १ ; उप १०३१ टी ; दसा १, ३) ।

ंद वि [निन्द्य] निन्दा-योग्य, निन्दनीय ; (भवि १) ।

ंद (अप) स्त्री [नाद] ध्वनि, शब्द ; (भवि) ।

णिंदण न [निन्दन] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा ; (उप ४४६ ; ७२८ टी) ।

णिंदणा स्त्री [निन्दना] निन्दा, जुगुप्सा ; (औप ; ओघ ७८१ ; पव २, १) ।

णिंदय वि [निन्दक] निन्दा करने वाला ; (पउम ६०, २१) ।

णिंदा स्त्री [निन्दा] घृणा, जुगुप्सा ; (आचा ४) । (गा २६७ ; प्राप्र १५८) ।

णिंदिअ वि [निन्दित] जिसकी निन्दा की गई हो वह ;

णिंदिणी स्त्री [दे] कुत्सित तृणों का उन्मूलन ; (दे ४, ३५) ।

णिंदु स्त्री [निन्दु] मृत-वत्सा स्त्री, जिसके बच्चे जीवित न रहते हों ऐसी स्त्री ; (अंत ७ ; श्रा १६) ।

णिंब पुं [निम्ब] नीम का पेड़ ; (हे १, २३० ; प्राप्र ३६) ।

णिंबोलिया स्त्री [निम्बगुलिका] नीम का फल ; (श्राद्ध १, १६) ।

णिकर पुं [निकर] समूह, जत्था, राशि ; (कप्प) ।

णिकरण न [निकरण] १ निश्चय, निर्णय ; २ निकर, दुःख-उत्पादन ; (आचा) ।

णिकरिय वि [निकरित] सारीकृत, सर्वथा संशोधित ; (औप) ।

णिकाइय वि [निकाचित] १ व्यवस्थापित, नियमित (णंदि) । २ अत्यन्त निबिड़ रूप से बँधा हुआ (कर्म) (ठा ४, ३ ; सुपा ५७६) । ३ न. कर्मों का निबिड़ रूप से बन्धन (ठा ४, २) ।

णिकाम न [निकाम] १ निश्चय, निर्णय ; २ अत्यन्त ; (सूअ १, १०) ।

णिकाय सक [नि+काचय्] १ नियमन करना, नियम करना । २ निबिड़ रूप में बाँधना । ३ निश्चय देना । इति ; (भग) । भूका—णिकाइंसु ; (भग ; सूअ २, भवि—णिकाइस्संति ; (भग) । संकृ—णिकाइत्ता (आचा) ।

णिकाय पुं [निकाय] १ समूह, जत्था, वृंद, वर्ग, (अप ४०७ ; विसे ८०० ; दं २८) । २ मेघ (आचा) । ३ अवयव, अवयव करने वाला शिव ; (अनु) । 'काय पुं [°काय] जीव-प्रकार के जीवों का समूह ; (दस ४) ।

णिकाय पु [निकाय] निमन्त्रण, न्योता ; (सम २१)।
णिकायणा स्त्री [निकाचना] १ करण-विशेष, जिससे कर्म का निबिड़ बन्ध होता है ; (विसे २६१६ टी ; भग)। २ निबिड़ बन्धन , ३ दान, दिलाना , (राज)।
णिकिंत सक [नि + कृत्] काटना, छेदना। णिकिंतइ ; (पुक्ख ३३७ , उत्त)। णिकिंतए , (उत्त ; काल)।
णिकिंतण वि [निकर्तक] काट डालने वाला, (काल)।
णिकुट्ट सक [नि + कुट्ट] १ कूटना। २ काटना। णिकुट्टेइ, णिकुट्टामि ; (उत्त)।
णिकुणिय वि [निकुणित] टेढ़ा किया हुआ, वक्र किया हुआ; (दे १, ८८)।
णिकेय पु [निकेत] घर, आश्रय, निवास-स्थान ; (णाया १ ११ , उत्त २ ; आचा)।
णिकेयण न [निकेतन] ऊपर देखो , (सुर १३, २१ ; महा)।
णिकोय पु [निकोच] संकोच, लिहाज ; (दे ७, १६)।
णिक्क वि [दे] मुनिर्मल, सर्वथा मल-रहित; (आचा १,१)।
णिक्कइअव वि [निष्कैतव] १ कपट-रहित, निर्मायी , (कुमा)। २ कपट का अभाव, निष्कपटता , (गा ८६)।
णिक्कइअव वि [निष्कृत] १ आवरण रहित , (औप)। २ उपकार रहित , (स्थ १३०)।
णिक्कइसिय न [निष्काङ्क्षित] १ आकांक्षा का अभाव , २ दर्शनान्तर की अनिच्छा , (उत्त २ , पडि)।
णिक्कइसिय वि [निष्काङ्क्षित,क] १ आकांक्षा-रहित; २ दर्शनान्तर के पक्षपात से रहित , (सूय २, ७ , औप , स्व)।
णिक्कंचण वि [निष्काञ्चन] सुवर्ण-रहित, धन-रहित , निर्धन ; (सूय १,८)।
णिक्कंटय वि [निष्कण्टक] कण्टक-रहित, शत्रु-रहित ; (सूय २,८)।
णिक्कंद वि [निष्क्रन्द) १ क्रन्दन-रहित, रुदन वर्जित, २ शब्द-रहित , (सूय १,८)।
णिक्कंप वि [निष्कम्प] १ निश्चल, अत्यन्त स्थिरता वाला , (दे ७, ३६)। २ जिसने शैलेशी अवस्था को प्राप्त किया है, सुदृढ़ ध्यान में स्थित ; (कप्प)।
णिक्कंपय वि [निष्कम्पक] अत्यन्त ही निश्चल ; (उत्त ३, १)।
णिक्कंबिल पु [निष्कम्बिल] कम्बल-रहित प्रदेश , (उत्त १,१)।
णिक्कंप वि [निष्कम्प] कम्प-रहित, स्थिर, (ठा १। अभि २०१)।
णिक्कज्ज वि [दे] अनवस्थित, चपल; (दे ८,११, सूत्र
णिक्कट्ठ वि [निष्कृष्ट] क्रूर, दुर्वृत्त, दोषी ; (उत्त, पत्र २७१)।
णिक्कड्ड वि [दे] १ कठिन; (दे ४, २६)। २ पुं निर्णय ; (पड्)।
णिक्कड्ढिय वि [निष्कृष्ट, निष्कर्षित] बाहर खींचा हुआ ; बाहर निकाला हुआ ; (स ६०, २१५)।
णिक्कण वि [निष्कण] धान्य-कण-रहित, अकण (विपा १, ३)।
णिक्कम अक [निर् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ ले लेना, संन्यास लेना। णिक्कमामि ; (पि ४८१)। णिक्कमंत , (हेका ३३२ , मुद्रा ८२)।
णिक्कम पु [निष्क्रम] नीचे देखो , (नाट—मुद्रा ११
णिक्कमण न [निष्क्रमण] १ निर्गमन, बाहर निकलना (मुद्रा २२४)। २ दीक्षा, संन्यास , (आचा)।
णिक्कम्म वि [निष्कर्मन्] १ कार्य-रहित, निष्क्रिय (ठा १६६)। २ मोक्ष, मुक्ति; ३ संवर, कर्मों का निरोध (आचा)।
णिक्कय पुं [निष्क्रय] १ बदला, उपकार , (३४१ , पउम ७ , १२६)। २ मूल्य, कीमत, मजदूरी, (२, ४)।
णिक्करुण वि [निष्करुण] करुणा रहित, दयाहीन (नाट—मालती ३२)।
णिक्कल वि [निष्कल] कला-रहित , (सुज्ज १)।
णिक्कल वि [दे] संबन्धों से रहित, (सुपा १ ; महा
णिक्कलंक वि [निष्कलङ्क] कलङ्क-रहित, निर्दोष, ४१८ , महा , सुपा २५३)।
णिक्कलुण देखो णिक्करुण , (पणह १, १)।
णिक्कलुस वि [निष्कलुष] १ निर्दोष, निर्मल ; २ पाप, उपद्रव-रहित , (से १२, ३४)।
णिक्कवड वि [निष्कपट] कपट-रहित, (ठा ४,
णिक्कसाय वि [निष्कषाय] कषाय-रहित, (ठा ४, २)।
णिक्कस [निर् + कष्] निकालना, बाहर निकालना, बाहर—णिक्कसिज्जंत , (उत्त १)।
णिक्कसण न [निष्कसन] निर्गमन , (सूत्र १,

णिक्कलण न [निष्कलन] १ कलन, गिनना, गणना, संख्यान-क्रिया ; (कुप्र) । २ दु. कलन क्षेत्र के लिए अनर्थ करना, कलन-क्रिया ; (कुप्र) ।

णिक्का स्त्री [नौका] नाव, जहाज, (कुप्र) । (स्वप्न ५३१) ।

णिक्कास वि [निष्काश] प्रकाशक, (कुप्र) ।

णिक्कारण वि [निष्कारण] १ कारण-रहित, अकारण ; (सुर २, ३६) । २ विना किसी कारण ; (भग) ।

णिक्कारणिय वि [निष्कारणिक] कारण-रहित, हेतु-शून्य ; (कप्प ५) ।

णिक्कालेइ सक [निर्+कालयति] बाहर निकालना । णिक्कालेऊण, (सुपा १३) ।

णिक्कासिय वि [निष्कासित] बाहर निकाला हुआ ; (राज) ।

णिक्किंचण वि [निष्किञ्चन] निर्धन, अकिंचन, परिग्रह-रहित, (कुप्र) ।

णिक्किट्ठ वि [निकृष्ट] अधम, नीच, हीन, जघन्य, "अनिष्टविकल्पनिकृष्ट" इत्यादि (ओघ १४, २३, सुर ४, ११९, सुपा १४८) ।

णिक्किण सक [निर्+क्री] खरीद करना, खरीदना । णिक्किणामि, (कुप्र) ।

णिक्किलिम्म वि [निष्किल्विष] अकलुष, अमल, स्वच्छ, विशुद्ध ; (उप ६८६ टी) ।

णिक्किव वि [निष्कृप] कृपा-रहित, निर्दय, क्रूर ; (पउम ७० ; सुपा ४०६) ।

णिक्कीलिय वि [निष्कीलित] गलत, त्रुटित, (पि २७१) ।

णिक्कुड पुं [निष्कुट] कपट, छल, (राज) ।

णिक्कुल वि [दे] जल हुआ, विनष्ट ; (दे १ ४) ।

णिक्कुलय न [निष्कोटक] कण्टक-विशेष, (पाअ १, ३—३) ।

णिक्कूड सक [निर्+कारय्] १ दूर करना । २ पत्र आदि के गुच्छे का तोड़ना । ३ पत्र आदि का तोड़ना । णिक्कूडिऊण ; (कुप्र १) ।

णिक्कारण न [निष्कारण] १ पत्र आदि के गुच्छे का तोड़ना ; २ पत्र आदि का तोड़ना ; (कुप्र १) ।

णिक्कूल पुं [दे] १ जल, २ सुरभि, कल्पवृक्ष ; (दे ३, ७७) ।

णिक्कूल पुं [निष्कूल] वेतस, नद्दर, तुला, दवरा ; (हे २, ८७) ।

णिक्कूलंत देखा णिक्कंत ; (सुपा १, ८ ; सम १४९ ; कप्प) ।

णिक्कलंक वि [निष्कलङ्क] कलङ्क-रहित ; (सार्ध ८८) ।

णिक्कलंकिय वि [निष्कलङ्कित] कलङ्क-रहित, कलङ्क-मुक्त ; (सुपा ४८) ।

णिक्कलुण वि [निष्करुण] १ करुणा-रहित, निर्दय, क्रूर । २ निःस्नेह ; (सुपा ३१२) ।

णिक्कलुस वि [निष्कलुष] १ कलुष-रहित, निर्मल । २ दोष-रहित, संक्लेश-रहित ; (भग) ।

णिक्कलुसया स्त्री [निष्कलुषता] १ कलुष-रहितता, निर्मलता । २ संक्लेश-रहितता ; (भग) ।

णिक्कलुसिय वि [निष्कलुषित] कलुष-रहित ; (कप्प) । °मि—णिक्कलुसिमि, (कप्प) । °मो—णिक्कलुसिमो, (कप्प) । °मा—णिक्कलुसिमा, (कप्प) । °मे—णिक्कलुसिमे, (कप्प) । °मु—णिक्कलुसिमु, (कप्प) । °मं—णिक्कलुसिमं, (कप्प) । °मेण—णिक्कलुसिमेण ; (कप्प) । °मस्स—णिक्कलुसिमस्स, (कप्प) । °मम्मि—णिक्कलुसिमम्मि, (कप्प) । °मस्सि—णिक्कलुसिमस्सि, (कप्प) । °मेसु—णिक्कलुसिमेसु, (कप्प) । °माणं—णिक्कलुसिमाणं, (कप्प) । °माणो—णिक्कलुसिमाणो, (कप्प) । °माणे—णिक्कलुसिमाणे ; (कप्प) । °माणस्स—णिक्कलुसिमाणस्स ; (कप्प) । °माणम्मि—णिक्कलुसिमाणम्मि ; (कप्प) । °माणेसु—णिक्कलुसिमाणेसु ; (कप्प) । °माणाणं—णिक्कलुसिमाणाणं ; (कप्प) । °माणाणि—णिक्कलुसिमाणाणि ; (कप्प) । °माणाणे—णिक्कलुसिमाणाणे ; (कप्प) । °माणाणस्स—णिक्कलुसिमाणाणस्स ; (कप्प) । °माणाणम्मि—णिक्कलुसिमाणाणम्मि ; (कप्प) । °माणाणेसु—णिक्कलुसिमाणाणेसु ; (कप्प) ।

णिक्कलुसीकरण न [निष्कलुषीकरण] १ कलुष-रहित करना, निर्मल करना । २ दोष-रहित करना ; (कप्प) ।

णिक्कलुसीकरेमाण वि [निष्कलुषीकुर्वत्] १ कलुष-रहित करता, निर्मल करता । २ दोष-रहित करता ; (कप्प) ।

णिक्कलुसीकरेमाणी स्त्री [निष्कलुषीकुर्वती] १ कलुष-रहित करती, निर्मल करती । २ दोष-रहित करती ; (कप्प) ।

णिक्कलुसीकरेमाणे वि [निष्कलुषीकुर्वत्] १ कलुष-रहित करता, निर्मल करता । २ दोष-रहित करता ; (कप्प) ।

णिक्कलुसीकरेमाणेसु वि [निष्कलुषीकुर्वत्सु] १ कलुष-रहित करते, निर्मल करते । २ दोष-रहित करते ; (कप्प) ।

णिक्कलुसीकरेमाणो वि [निष्कलुषीकुर्वत्] १ कलुष-रहित करता, निर्मल करता । २ दोष-रहित करता ; (कप्प) ।

णिक्कलुसीकरेमाणोसु वि [निष्कलुषीकुर्वत्सु] १ कलुष-रहित करते, निर्मल करते । २ दोष-रहित करते ; (कप्प) ।

णिक्कलुसीकरेमाणं

णिक्खुत्त न [दे] निश्चित, निश्चय, अवश्य ; "पत्ते विणासकाले नासइ बुद्धी नराण निक्खुत्तं" (पउम ५३, १३८), 'वच्च दाहामि निक्खुत्तं" (पउम १०,८५)।

णिक्खुरिअ वि [दे] अ दृढ, अ-स्थिर ; (दे ४, ४०)।

णिक्खेड पु [निष्खेट] अवमान, तिरस्कार, दुरदा, (सुपा २७६)।

णिक्खेत्तव्व देखो णिक्खिव=नि + क्षिप्।

णिक्खेव पु [निक्षेप] १ न्यास, स्थापन, (अणु)। २ परित्याग, मोचन, (आचा २, १, १, १)। ३ धरोहर, धन आदि जमा रखना, (पउम ६२, ६)।

णिक्खेवण न [निक्षेपण] १ निक्षेप, स्थापन, (पव ६)। २ व्यवस्थापन, नियमन, (विसे ६१२)।

णिक्खेवणया) स्त्री [निक्षेपणता] स्थापना, विन्यास,
णिक्खेवणा) (उवा, कप्प)।

णिक्खेवय पु [निक्षेपक] निगमन, उपसंहार, (बृह १)।

णिक्खेविय वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित, २ मुक्त, परित्यक्त, (सण)।

णिक्खेविय वि [निक्षेपित] ऊपर देना ; (भवि)।

णिक्खोभ) पु [निःक्षोभ] क्षोभ-रहित, निष्कम्प ; (सम
णिक्खोह) १०६, चउ ४०)।

णिखव्व न [निखर्व] संख्या-विशेष, सौ खर्व, (राज)।

णिखिल वि [निखिल] सर्व, सकल, सब, (अणु; नाट - महावीर ६७)।

णिगंठ देखो णिअंठ; (विसे १३३०)।

णिगढ पु [दे] घर्म, घाम, गरमी, (दे ४, २७)।

णिगद सक [नि + गद्] १ कहना। २ पढ़ना, अभ्यास करना। वकृ—णिगदमाण, (विसे ८५०)।

णिगम पुं [निगम] १ प्रकृष्ट बोध ; (विसे २१८७)। २ व्यापार-प्रधान स्थान, जहाँ व्यापारी, विशेष संख्या में रहते हों ऐसा शहर आदि, (पण्ह १,३; औप ; आचा)। ३ व्यापारि-समूह, (सम ५१)।

णिगमण न [निगमन] अनुमान प्रमाण का एक अवयव, उपसंहार ; (दसनि १)।

णिगमिअ वि [दे] निवासित, (षड्)।

णिगर पु [निकर] समूह, राशि, अन्थी, (विसा १, ६, उवा)।

णिगरण न [निकरण] कारण, हेतु ; (भग ७,७)।

णिगरिअ वि [निकरित] सर्वथा शोधित ; (पण्ह १,४)।

णिगल देखो णिअल। २ बेड़ी के आकार का मौक्तिक-आभूषण विशेष, ; (औप)।

णिगलिय देखो णिगरिय, (अं २)।

णिगाम न [निकाम] अत्यन्त, अतिशय ; (आचा १६)।

णिगाम पु [निकर्ष] परस्पर समीक्षण, विचार (भग २५, ७)।

णिगिण्हिअव्व देखो णिगिण्ह।

णिगुढ देखो णिक्किट्ठ, (सुपा १८३)।

णिगिण वि [नग्न] नग्न, नंगा, (आचा १, २, ७, १, पि १३३)।

णिगिण्ह सक [नि + ग्रह्] १ निग्रह करना, दमन करना। २ रोकना। ३ ग्रह् वैसा करना। संकृ—णिगिण्हिअ, णिग्घेउं, (कप्प ; राज)। कृ—णिगिण्हियव्व ; (उप पृ

णिगुंज सक [नि + गुञ्ज्] १ गूँजना, अव्यक्त करना। २ नीचे नमना। वकृ—णिगुंजमाण १, ६ –पत्र १६७)।

णिगुंज देखो णिउञ्ज = निकुञ्ज, (आचा)।

णिगुण वि [निर्गुण] गुण-रहित, (पण्ह १, ३)

णिगुरंब देखो णिउरंब, (पण्ह १, ४)।

णिगूढ वि [निगूढ] १ गुप्त, प्रच्छन्न, (कप्प) मौनी, मौन रहने वाला, (राज)।

णिगूह सक [नि + गुह्] छिपाना, गोपन करना। (उव, महा)। णिगूहति, (संक्षि ३२)। णिगूहिऊण ; (स ३३६)।

णिगूहण न [निगूहन] गोपन, छिपना ; (पंचा १

णिगूहिअ वि [निगूहित] छिपाया हुआ, गोपित। ५१८)।

णिगोअ पु [निगोद] अनन्त जीवों का एक साधारण विशेष, (भग, पण्ण १)। °जीव पु [°जीव] का जीव, (भग २५, ६, कम्म ४, ८५)।

णिग्ग देखो णिग्गम = निर् + गम्। वकृ—णिग्ग (भवि)।

णिग्गंठिद (सौ) वि [निर्ग्रथित] गुन्थित, ग्रथित, (५११)।

णिग्गंतुं) देखो णिग्गम = निर् + गम्।
णिग्गंतूण)

य देवी णिर्ऋति ; (भौ ; भोय ३२८ : प्राप्र १३६ ;
६, ३) ।
गंथ वि [नैर्ग्रन्थ] निर्ग्रन्थ-संबन्धी ; (गाया १,
३ ; ठवा) ।
गंथी स्त्री [निर्ग्रन्थी] जैन साध्वी ; (गाया १, १,
१४ ; ठवा ; कप्प ; भौप) ।
णिगच्छ } अक [निर् + गम्] बाहर निकलना । णिग-
णिगम) च्छइ ; (ठवा ; कप्प) । वकृ—णिगच्छंत,
णिगच्छमाण, णिगमंत, णिगममाण ; (सुपा ३३० ; गाया १,
१ ; सुपा ३६६) । संकृ—णिगच्छित्ता, णिगंतूण,
(कप्प ; स १७) । हेकृ—णिगंतुं ; (ठव ७२८ टी) ।
णिगम पुं [निगम] १ उत्पत्ति, जन्म ; (विसे १६३६) ।
२ बाहर निकलना ; (सं ६, ३८ ; ठव पृ ३३२) । ३
द्वार, दरवाजा ; (सं २, २) । ४ प्रस्थान, प्रयाण ; (बृह १) ।
(सं ८, ३३) । ५ प्रस्थान, बाहर निकलना ;
मण न [निर्गमन] १ निःसरण, बाहर निकलना ; २
गया १, २ ; सुपा ३३३ ; मग) । २ पलायन, भाग जाना ; ३
परमप्प ; (वव १) ।
ग्गमित्त वि [निर्गमित्र] बाहर निकाला हुआ, निस्सारित ;
(श्रा १६) ।
णिगय वि [निर्गत] निःसृत, बाहर निकला हुआ ; (विसे
१५४० ; ठवा) । °जस वि [°यशस्] जिसका यश
बाहर में फैला हो ; (गाया १, १८) । °पोय वि
[°प्रोद] जिसकी सुतल्य खूब फैली हो ; (पउम) ।
णिगय वि [निर्गज] हाथी-रहित ; (भवि) ।
णिगह देखो णिग्गह । कृ—णिगहियव्व ; (सुर
५८०) ।
णिग्गह पुं [निग्रह] १ दण्ड, निग्रा ; (प्राप्र १७० ; श्राव
६) । २ निरोध, अवरोध, रुकावट ; (भग ७, ६) । ३
वश करना, कब्जे में रखना, नियमन ; (प्राप्र ८८) । °ट्ठाण
न [°स्थान] न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध प्रतिज्ञा-हानि आदि परा-
जय-स्थान ; (ठा १ ; सूम १, १२) ।
णिग्गहण न [निग्रहण] १ निग्रा, निग्रा, दण्ड ; (सूम
१, ७) । २ दमन, नियमन, नियन्त्रण ; (प्राप्र ३३३) ।
णिग्गहिय वि [निगृहीत] १ जिसका निग्रह किया गया हो
वह ; (सं ११४) । २ पराजित, पराभूत ; (आचा) ।
णिग्गा स्त्री [दे] हरिद्रा, हल्दी ; (दे ४, २४) ।
णिग्गाहि वि [निग्राहिन्] निग्रह करने वाला ; (उत
२६, २) ।
णिग्गिण्ण वि [दे. निर्गीर्ण] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ ;
(दे ४, ३६ ; पाम) । २ वान्त, वमन किया हुआ ; (से
५, २६) ।
णिग्गिण्ह देखो णिगिण्ह । णिग्गिण्हामि ; (विसे २४८२) ।
णिग्गिलिय वि [निर्गलित] वान्त, वमन किया हुआ ;
(स ३६८) ।
णिग्गुंडी स्त्री [निर्गुण्डी] भावप्रि विशेष, वनस्पति संभालू ;
(पण्ण १) ।
णिग्गुण वि [निर्गुण] गुण-रहित, गुण-हीन ; (गा२०३ ;
ठव ; पण्ह १, २ ; ठव ७२८ टी) ।
णिग्गुणय } न [नैर्गुण्य] गुण-रहितपन, गुण-हीनता,
णिग्गुन्न } निर्गुणत्व ; (वसु ; मन १४) ।
णिग्गूढ वि [निर्गूढ] स्थिर रूप में स्थापित ; (सुम्र१,७) ।
णिग्गोह पुं [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, वड़ का पेड़ ; (पउम
२०, ३६ ; पड़) । °परिमंडल न [°परिमण्डल]
शरीर-संस्थान विशेष, वटाकार शरीर का आकार ; (सम
१४८ ; ठा ६) ।
णिग्घंट } देखो णिघंटु ; (कप्प) ।
णिग्घंटु }
णिग्घट्ट वि [दे] कुशल, निपुण, चतुर ; (दे ४, ३४) ।
णिग्घण देखो णिग्घिण ; (विक १०२) ।
णिग्घत्तिय वि [दे] क्षिप्त, फेंका हुआ ; (पाम) ।
णिग्घाइय वि [निर्घातित] १ आघात-प्राप्त, आहत ;
व्याकुल, विलीन ; (गाया १, १३) । २ वि
सुखसन्निवायविनिर्मित धर्मांश" (सुपा ३) । ३ व्यवस्था
का मिश्रण ; (स ३७६ ; उप) । ४ विनाश ; (सूम १, १४
गर्हणा ; (ठा १०) । ५ विनाश ; (सूम १, १४
णिग्घायण न [निर्घातन] नाश, विनाश, उच्छे
(पंचा ; सुपा ६०३) ।
णिग्घिण वि [निर्घृण] निर्दय, क्रूरता-रहित, (सा
पण्ह १, १ ; सुर २, ६१) ।
णिग्घेड देखो णिघेड ।
णिग्घोस पुं [निर्घोष] नगर आदि का एक भाग ;
१ ; स्थ १३३) ।

णिघंटु पु [निघण्टु] शब्द कोश, नाम संग्रह, (औप, भग)।
णिघस पु [निकष] १ कसौटी का पत्थर, (भग)। २ कसौटी पर की जाती सुवर्ण की रेखा, (सुपा ३६१)।
णिचय पु [निचय] १ समूह, राशि, २ उपचय, पुष्टि, (प्रश्न १०१, स ३६६, भाषा, महा)।
णिचिअ वि [निचित] १ व्याप्त, भरपूर, (अजि ६)। २ निर्मित, पुष्ट, (भग)।
णिचुअ पु [निचुल] हिज्जल-विशेष, वंजुल वृक्ष, (स १११, कुमा)।
णिच्च वि [नित्य] १ अविनश्वर, शाश्वत; (आचा; औप)। २ न निरन्तर, सर्वदा, हमेशा, (महा, प्रभू १४, १०१)। °उच्चणिय वि [°क्षणिक] निरन्तर उत्पन्न करने वाला, (आचा १, ४)। °मंडिया स्त्री [मण्डिता] अन्न वृक्ष विशेष, (इक)। वाय पु ['वाद] पदार्थों का नित्य मानने वाला मत; "सुहदुक्खसंपओगे न पुणइ णिच्चवायावयंमि" (सम १८)। सील न ['शील] सदा, सर्वदा, निरन्तर, (महा)। लोअ, °लोग, °लोय पु [लोक] १ एक विशाल क्षेत्र, (पउम ६, ५२)। २ महाविशाल देव-विशेष, (ठा २, ३)। ३ न नगर विशेष, (पउम ६, ५२, ६३)। ०वि सदा प्रकाश वाला, (कप्प)।
णिच्चक्ख देखो णीच = नीच, (सम ६५)।
णिच्चक्खु वि [निश्चक्षुष्] चक्षु-रहित, नेत्र हीन, अन्धा, (पाअ ८२, ६१)।
णिच्चट्ठ (अप) वि [गाढ] सख्त, निविड, (हे ४, ४२२)।
णिच्चड देखो णिच्चल, (प्रति २१; सि ३०१)।
णिच्चर देखो णिच्चल, (हे ४, ३ टि)।
णिच्चाड सक [क्षर] झरना, टपकना, चूना। णिच्चाडइ, (हे ४, १०३)। प्रयो णिच्चाडावइ, (कुमा)।
णिच्चाड सक [नुद] दूर करना, हटाना, दूर करने की प्रेरणा करना। णिच्चाडइ, (हे ४, १२ टि)। भूका —णिच्चाडिअ, (कुमा)।
णिच्चाड वि [निष्पाट] निर्दय, क्रूर, भयंकर, (ठा ७, ३, पव ४१, ४२)। °चरिय न [°चरित] दुष्टता, भयंकरता, (पव ४१, ४२)।
णिच्चिंत वि [निश्चिन्त] चिन्ता-रहित, बेफिक्र, (सिरि ४३; प्रभू ३२, सुपा ३२०)।
णिच्चिट्ठ वि [निश्चेष्ट] चेष्टा-रहित, (सुपा १०)।
णिच्चिट्ठ (अप) वि [°क] निश्चिन्त, (सि ३०१)।
णिच्चुज्जोअ } वि [नित्योद्योत] १ सदा प्रकाश
णिच्चुज्जोय } युक्त। २ पु. ग्रह-विशेष, अंगारक विशेष, (ठा २, ३)। ३ न. एक विशाल नगर, (ति
णिच्चुद्ध वि [दे] १ उद्धत, बाहर निकला हुआ; (ग २ निर्दय, दया-हीन; (पाम)।
णिच्चुव्विग्ग वि [नित्योद्विग्न] सदा खिन्न; (ठा २)।
णिच्चेट्ठ देखो णिच्चिट्ठ, (भाया १, २; सुपा ३,१)।
णिच्चेयण वि [निश्चेतन] चेतना-रहित, (महा)।
णिच्चोउया स्त्री [नित्यर्तुका] हमेशा रजस्वला होने वाली स्त्री, (ठा ५, २)।
णिच्चोरिअ न [निश्चौर्य] १ चोरी का अभाव। २ चोरी-रहित, (उत्त १३६ टी)।
णिच्छइय वि [नैश्चयिक] १ निश्चय-संबन्धी। २ निश्चय नय, द्रव्यार्थिक नय, परिणाम नय; (विसे)।
णिच्छउम वि [निश्छद्मन्] १ कपट रहित, सरल, (गण ८, सुपा ३६०)। २ किसी प्रकार का कपट; (पि ६१)।
णिच्छक्क वि [दे] १ निर्लज्ज, बेशरम, धृष्ट; (सूत्र ४)। २ मर्यादा को नहीं जानने वाला, अमर्याद, (राज)।
णिच्छम देखो णिच्छउम, (उत्त, सार १४६)।
णिच्छय सक [निर्+धि] निश्चय करना, निर्णय करना। वकृ णिच्छयमाण, (उत्त ३२८ टी)।
णिच्छय पु [निश्चय] १ निश्चय, निर्णय, (भग, १०१)। २ नियम, अभिलाषा, (राज)। ३ विशेष, द्रव्यार्थिक नय, वास्तविक पदार्थ को ही मानने वाला परिणाम-नय; (पंचा ४, पंचा १३)। °कहा स्त्री [°कथा] आगम, (निचू ५)।
णिच्छल्ल सक [छिद्] छेदना, काटना। णिच्छल्लइ, (हे ४, १२४)।
णिच्छल्लिअ वि [छिन्न] काटा हुआ, (कुमा, महा)।
णिच्छाय वि [निश्छाय] कान्ति-रहित, म्लान वर्ण, (ठा १, २)।
णिच्छायण वि [निश्छादक] आच्छादन-रहित, "णिच्छायणकुडंबिणो" (आचा २, १)।

णिच्छिट्ठ वि [निश्छिष्ट] क्षिप्तयुक्त ; (गाया १, ६ ; ...
...ड २११ टी) ।
णिच्छिण्ण वि [निश्छिन्न] कृपाकृत, कटा हुआ, ...
...कटा हुआ ; (विपे २७३) ।
...र देखो णिच्छिट्ठ ; (स ३६०) ।
...य वि [निश्चित] निश्चित, निर्णीत, अवधारित ; ...
...या १, १ ; सट) ।
...तोर वि [निःशोर] शोकरहित, दुःखवर्जित; (कप्र १॥
...ठुंड वि [दे] निर्लज्ज, बेशरम, (दे ४, ३३) ।
...ठुड वि [निष्ठुटित] निर्गत, हटा हुआ ; (सुर ६, ...
२०) ।
...ठुम सक [नि + ष्ठिव्] १ थूकना, निष्ठीवन । २ ...
...फेंकना । णिट्ठुमइ ; (भग) । कर्म—णिट्ठुमिज्जइ ; (वि ...
११) । कारण—णिट्ठुमावेइ । (भग ; विपा १, १) । संकृ—
णिट्ठुमित्ता, णिट्ठुमित्तं । (भग ; विपा १, १) । प्रयो ...
णिट्ठुमिअ ना, णिट्ठुमिउं । (भग ; विपा १, १) । प्रयो ...
णिट्ठुमेत्तए । (कप्पा १, ८) ।
णिट्ठुमण न [निष्ठेवन] निष्ठीवन, निष्ठेवण . (निचू ...
१) ।
णिट्ठुमावित्त वि [निष्ठेवित] निष्ठीवित, थूकवा निकाला ...
हुआ ; (कप्पा १, ८) ।
णिट्ठुहणा स्त्री [निष्ठेवना] थूकना निकालने की क्रिया, ...
निष्ठीवन ; (कप्प १, १८ टी—पत्र २००) ।
णिट्ठुहिअ वि [निष्ठित] १ उद्गत, निर्गत ; (ठा ४, ...
१) । २ फेंका हुआ, क्षिप्त, प्रक्षिप्त ; ३ निष्ठीवित, ...
निष्ठीवित; (कप्प १, ८ —पत्र १४१, १, ३१ —पत्र १६६) ।
णिट्ठुहिअ न [निष्ठ्यूत] थूक, खखार, (विपे ६०१) ।
णिट्ठुहेत्तए [निष्ठोक्तुम्] थूकने के लिए ...
(कप्प) ।
णिट्ठुहेत्ता सक [निष्ठोक्त्वा] थूक फेंककर ; (कप्प १, ...
१९—पत्र १६६) ।
णिट्ठुहेत्तु सक [निष्ठोक्तु] थूकना, थूक फेंकना ...
(पिंड १) । संकृ—णिट्ठुहेत्तुआण ...
१) । कर्म—णिट्ठुहेज्जमाण ; (भग) ।

णिज्जंतिय वि [नियन्त्रित] नियमित, अनुशासित ; (सुर ...
३, ४) ।
णिज्जिण देखो णिज्जिण्ण ; (उत्त ४, १) ।
णिज्जिण्ण देखो णिज्जिण्ण ; (निचू १२) ।
णिज्जुद्धर देखो णिज्जुद्ध ; (निचू १२) ।
णिज्जोअण न [नियोजन] नियुक्ति, कार्य में लगाना, प्रवर्तन ; (उत्त १७६ टी) ।
णिज्जोइय देखो णिज्जोइय ; (उत्त १७६ टी) ।
णिज्ज वि [दे] सूना, सोया हुआ ; (दे ४, २५ ; पड्) ।
णिज्जंत देखो णीअ ।
णिज्जण वि [निर्जन] १ विजन, सदुजनवर्जित; २ न. एकान्त-स्थान; (गउड) ।
णिज्जप्प वि [निर्याप्य] १ निर्वेद-कारक, २ निर्वेद, ...
बल को नहीं बढ़ाने वाला ; " अन्नविसंसिणमुक्कडदिअस्स ...
पगासंकप्पं " (पाद ३, ६) ।
णिज्जर सक [निर् + जृ] १ क्षय करना, नाश करना । ...
कर्म-पुद्गलों का आत्म से अलग करना । णिज्जरेइ, णिज्जरेंति ; (भग ; उत्त ४, १) । भूकृ—णिज्जरिय, णि-
ज्जरेंसु ; (वि ६७६ ; भग) । संकृ—णिज्जरित्ता ...
(उत्त ४, १) । कर्म—णिज्जरिज्जमाण ; (भग १८, ...
कारण—णिज्जरावेइ ; (उत्त १० ; भग) ।
णिज्जरण न [निर्जरण] देखो देखो ; (प्रौप) ।
णिज्जरणा स्त्री [निर्जरणा] १ क्षय, क्षय, २ कर्म-क्षय ; ३ जिसके द्वारा कर्म का क्षय हो वह क्रिया ...
१, सुत्र १४, ६६) ।
णिज्जरा स्त्री [निर्जरा] कर्म-क्षय, कर्म-निर्जरा; ...
पद २४) ।
णिज्जरिय वि [निर्जरित] क्षीण, विनाशप्राप्त ; ...
णिज्जरावग वि [निर्जरापक] १ निर्जरा करने वाला ...
पद, आत्मप्रदेश से कर्म के अलग होने में कारण ...
कर्म पुद्गलों को, जो कर्म के साथ आत्मप्रदेश ...
आत्म के विशेष क्षय के कि जिसके द्वारा वे कर्म निर्जरा ...
८ ; भग १६, ८) ।
णिज्जरावणा स्त्री [निर्जरापना] १ निर्जरा, ...
णिज्जरावय देखो णिज्जरावग ; (कप्प २८ ...
णिज्जरा सक [निर् + क्षर] क्षरण करना, निर्झरण ...
(कप्प) । कर्म—णिज्जरिज्जमाण ; (...
णिज्जरापमाण, (स ६, ३) ।

णिज्जाण न [निर्याण] १ बाहर निकलना, निर्गम ; (ठा ६, ३) । २ आवृत्ति-रहित गमन, (औप) । ३ मोक्ष, मुक्ति ; (आव ४) ।

णिज्जाणिय वि [नैर्याणिक] निर्याण-संबन्धी, निर्गम-संबन्धी ; (भग १३, ६ ; निचू ८) ।

णिज्जामग) पु [निर्यामक] कर्णधार, जहाज का नियन्ता ; (विसे २६५६ , आया १, १५ ; औप , सुर १३, ४८) ।
णिज्जामय)

णिज्जामिय वि [निर्यामित] पार पहुँचाया हुआ, तारित, (महा) ।

णिज्जाय पु [दे] उपकार ; (दे ४, ३८) ।

णिज्जाय वि [निर्यात] निर्गत, निःसृत ; (वसु ; उप पृ २८६) ।

णिज्जायण न [निर्यातन] वैर-शुद्धि, बदला , (महा) ।

णिज्जायणा स्त्री [निर्यातना] ऊपर देखो ; (उप ४३१टी) ।

णिज्जावय देखो णिज्जामय ; (भवि) ।

णिज्जास पु [निर्यास] वृक्षों का रस, गोंद ; (सुपा २, १) ।

णिज्जिअ वि [निर्जित] जीता हुआ, पराभूत ; (आचा १८ भा टी ; सुर ६, ३६ , औप) ।

णिज्जिण सक [निर्+जि] जीतना, पराभव करना । निज्जियइ ; (भवि) । संकृ—णिज्जिणिऊण ; (महा) ।

णिज्जिणिय देखो णिज्जिअ ; (सुपा ३६) ।

णिज्जिण्ण) वि [निर्जीर्ण] नाश-प्राप्त, क्षीण , (भग , णिज्जिन्न) ठा ४, १) ।

णिज्जीव वि [निर्जीव] जीव-रहित, चेतना-वर्जित , (औप , श्रा १० ; महा) ।

णिज्जुत्त वि [निर्युक्त] १ संबद्ध, संयुक्त ; (विसे १०८६ ; आचा १ भा) ; २ स्थिर, अर्पित ; (औप) । ३ प्रकल्पित, प्रतिपादित ; (आवम) ।

णिज्जुत्ति स्त्री [निर्युक्ति] व्याख्या, विवरण, टीका ; (विसे ६६६ , आव २ , गण १०७) ।

णिज्जुद्ध देखो णिज्जुज्झ , (स ४७०) ।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] १ निःसारित, निष्कासित ; (आया १, १—पत्र १८) २ अ-मनोज्ञ, अ-सु-दर, (औप ६४८) । ३ उद्धृत, सन्दर्भ में अवतारित ; (दसनि १) ।

णिज्जूह सक [निर्+यूह्] १ परित्याग करना । २ स्थापना, निर्माण करना । कर्म—णिज्जूहिअइ ; (वि २२१) । हेकृ—णिज्जूहिउं ; (वव २) ।

णिज्जूह पुं [दे. निर्यूह] १ नीम, छत्ति, ... (दे ४, २८ ; ग १०६) । २ गवाक्ष, चक्र, जाव चिंतए मंती निज्जूहंमि" (धर्म ३ टी ; वव ३ द्वार के पास का काष्ठ-विशेष ; (आया १, १—प पण्ह १, १) । ४ द्वार, दरवाजा , (सुर ३, ८

णिज्जूहणया) स्त्री [निर्यूहणा] १ निःसारण, णिज्जूहणा) निकालना ; (वव १) । २ नि (ठा ४, २) । ३ विरचना, निर्माण ; (विसे ३

णिज्जोअ पुं [दे] १ प्रकर, राशि ; १ पुष्पों का (दे ४, ३३) ।

णिज्जोअ) पुं [दे. निर्योग] परिकर, सामग्री ; णिज्जोग) ज्जोगो" (ओघ ६६८ ; आया १, १—प

णिज्जोमि पु [दे] रज्जु, रस्सी ; (दे ४, ३१) ।

णिज्झर अक [झि] क्षीण होना । णिज्झरइ ; २० ; पड्) । वकृ—णिज्झरंत, (कुमा ६, ३

णिज्झर वि [दे] जीर्ण, पुराना ; (दे ४, ३६)

णिज्झर पुं [निर्झर] झरना, पहाड से गिरता प्रवाह ; (हे १, ६८ ; २, ६०) ।

णिज्झरण न [निर्झरण] ऊपर देखो ; (पउम सुर ६, ६४ ; सुपा ३६६) ।

णिज्झरणी स्त्री [निर्झरिणी] नदी, तरंगिणी ,

णिज्झा सक [नि+ध्यै] देखना, निरीक्षण करना णिज्झाअइ , (हे ४, ६) । वकृ—णिज्झाअंत एमाण ; (भा ४ , आचा २, ३,१) । संकृ- ऊण, णिज्झाइत्ता ; (महा , आचा) ।

णिज्झा सक [निर्+ध्यै] विशेष चिन्तन करना णिज्झाइत्ता ; (आचा) ।

णिज्झाइ वि [निध्यायिन्] देखने वाला , (

णिज्झाउ वि [निध्यातृ] देखने वाला, (उत्त १६ ; गम १५) ।

णिज्झाउ वि [निध्यातृ] अतिशय चिन्तन (ठा ६) ।

णिज्झाय वि [निध्यात] १ दृष्ट, विलोकित धम्म ४६) । २ अ दर्शन, निरीक्षण , (महा—

णिज्झाडिय वि [निर्झाटित] विनाशित , (उ

णिज्झाय वि [दे] निर्दय, दया-रहित , (वि

ण्य वि [निश्चान] दृढ, विश्वासित ; (सुर १, ; सुर १४८)।
ण्ण वि [दे] जीर्ण, पुराना ; (दे ४, २६)।
ोड सक [छिद्] छेदना, काटना। णिल्लोडइ ; ४, १२४)।
ोडण न [छेदन] छेदन, कर्तन ; (कुमा)।
ोल्लु वि [निर्लोपयितृ] लोप करने वाला, का लोप करने वाला ; (आचा)।
वि [दे] १ दरिद्र-भिक्षु, २ विरस, अन्त्यान्त, ४, ६०)।
ण्ण वि [निष्ठङ्कित] निश्चित, अवधारित ; (सुपा)।
ण्ण अक [खद्] उपकरण, खना ; णिट्ठुभइ ; (दे ४,)।
ण्ण वि [क्षरित] टपका हुआ ; (पाम)।
अक [वि+गल्] गल जाना, नष्ट होना। णिट्ठ- (दे ४, १७५)।
ट्ठा णिट्ठा+ट्ठा+सदा। निष्ठ ; (भवि)।
)सक [नि+स्थापयत्] १ समाप्त करना, पूर्ण करना।) २ अन्त करना, खत्म करना। ३ विशेष रूप से स्त करना, स्थिर करना। भूका—णिट्ठवेसु ; (भग १)। संकृ—णिट्ठविअ ; (विसे)। कृ—ट्ठवणिज्ज ; (उत्त ५६.७ टी)।
ण्ण न [निष्ठापन] १ अन्त करना, समाप्ति। २ नाश-कारक, खत्म करने वाला ; (सुपा १६१;)। ३ समाप्त करने वाला ; (ओ ६)।
ण्ण वि [निष्ठापक] समाप्त करने वाला ; (भग ६)।
वेअ वि [निष्ठापित] १ समाप्त किया हुआ ; (पंचव । २ विनाशित ; (स ६, १)।
अक [नि+स्था] खत्म होना, समाप्त होना। ट्ठ ; (विसे ६२७)।
ी [निष्ठा] अन्त, अवसान, समाप्ति ; (विसे ३३ ; सुपा १३)। २ सद्भाव, (आचा १)। °भासि [°भाषिन्] निश्चय-पूर्वक बोलने वाला, निश्चय-पूर्वक ण करने वाला ; (आचा)।
ाण न [निष्ठान] १ दृढ़ करना, अवधारण ; (ठा ४, २ २, ४)। २ समाप्ति ; वि १ ; (कहा [कथा] मल-कथा विशेष, दही बनाने व्यञ्जन की बनावटी; (ठा ४, २)।
णिट्ठाण देखो णिट्ठवण ; (सुपा ३६७)।
णिट्ठिय वि [निष्ठित] १ समाप्त किया हुआ, पूर्ण किया हुआ; (उत्त १०३१ टी; कम्म ४, ७४)। २ नष्ट किया हुआ, विनाशित ; (सुपा ४४६)। ३ स्थिर ; (से १, ७)। ४ निश्चय, निर्द ; (आचा २, १, ६)। ५ पूर्ण भोला, मुग्धि ; (आचा)। °ट्ठ वि [°र्थ] कृतकृत्य ; (पव ३६)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] मुमुक्षु, मोक्ष का इच्छुक ; (आचा)।
णिट्ठिय वि [नैष्ठिक] निश्चय-कुशल, निष्ठा वाला ; (पव २, ३)।
णिट्ठीव पुं [निष्ठीव] थूक, मुँह का पानी ; (रंभा)।
णिट्ठीवय वि [निष्ठीवक] थूकने वाला ; (पव १, १ ; आव)।
णिट्ठुर) वि [निष्ठुर] निर्दय, क्रूर, कठिन ; (आव ; हे
णिट्ठूल) १, २५४ ; पाम ; गउड)।
णिट्ठुवण न [निष्ठीवन] १ थूक, खखार ; (कप्प १)। २ वि. थूकने वाला ; (ठा ६, १)।
णिट्ठुह अक [नि+स्तम्] निश्चल होना, निश्चेष्ट होना ; स्तब्ध होना। णिट्ठुहइ ; (हे ४, ६७ ; षड्)।
णिट्ठुह वि [दे] स्तब्ध, निश्चेष्ट ; (दे ४, ३३)।
णिट्ठुहण न [दे.निष्ठीवन] थूक, मुँह का पानी, खखार ; (महा)।
णिट्ठुहावय वि [निष्ठम्भक] निश्चेष्ट करने वाला, स्तब्ध करने वाला ; (कुमा)।
णिड्डिअ वि [दे] थूक, निष्ठीवन, खखार ; (दे ४, ४१)।
णिड्ड पुं [दे] विनाश, गायब ; (दे ४, २६)।
णिड्डल) न [ललाट] माथा, ललाट ; (वि २६०; डाल) पउम १००, ६७ ; सुपा २८)।
णिड्ड न [नीड] पक्षि-गृह ; (पाम)।
णिड्डहण न [निर्दहन] जला देना ; (उत्त ५६३ टी)।
णिड्डुह देखो णिट्ठुह, णिट्ठुहइ, (कुमा, षड्)।
णिणाय पुं [निनाद] शब्द, भव्य ध्वनि, (स्वप्न १, ३०; स ६, ३०)।

णिम्न वि [निम्न] १ नीचा, आखात, (उप १२, उप १०३१ टी)। २ निचे, नीचे, अधः, (हे १, ४१)।

णिम्नयन्तु वि [निःसारयति] बहार निकालता है ; "दुक्खाओ दुक्खं णिम्नयन्ति, वहिरा वा णिम्नयन्तु" (आचा १,३,१)।

णिम्नगा स्त्री [निम्नगा] नदी, सरितस्विनी, (पण्ण १, पत्र २, ४)।

णिम्नन्थु वि [निर्ग्रन्थ] नग्न-साधु, (सुर ८, ६२)।

णिम्नन्थ पु [निर्ग्रन्थ] १ निरपेक्ष, असांसारिक, (हे १, ६३)। २ जैनेतर, (सुपा ६६)।

णिम्नन्थया देखो णिग्गन्थया, (पव)।

णिम्नन्थार वि [निर्ग्रन्थकार] साधु सा निर्ग्रंथ, (भग १६)।

णिम्नन्थाला स्त्री [दे] चक्षु, आँख, (दे ४, ३६)।

णिम्नन्थास सक [निर्+भासय्] विनाश करना। वह—णिम्नन्थासिंसु (सुपा ६६४)।

णिम्नन्थास पु [निर्भास] विनाश, (भवि)।

णिम्नन्थासिय वि [निर्भासित] विनाशित, (सुर ३, १११, भवि)।

णिम्निन्द वि [निर्निद्र] निद्रा-रहित, (णाया ६६६)।

णिम्निम्मय वि [निर्निर्मद] १ मिथ्या-रहित, २ घमंड-रहित, ३ अनुद्धत (श्र ६, ३)।

णिम्नम्मव वि [निर्मित] निर्मित, बनाया किया हुआ, (पव १६)।

णिम्नुत्तचत्त वि [निस्त्रात्रक] ऊँचा-नीचा, विषम, (भवि २०६)।

णिम्नोद वि [निर्नोद] प्रेरणा-रहित, (हे ४, ३६०, सुर ३, १२२, पउ)।

णिम्नोहया स [निर्नोदिका] निर्नोदित, (स्वप्न ३६)।

णिम्पन्न, ण [निष्पन्न] १ सम्पन्न या आरब्ध कार्य का पूर्ण होना, निष्पन्न, निष्पादन, (आचा १० भा, उप ६०, औप)। २ अवस्था, (श्र ६)।

णिम्पज्ज सक [निः+पद्] आरम्भ करना; निष्पन्न, (पिंड २१६, हे ४, २३०)। कर्म—णिम्पज्जइ (औ)। (कर्म—पिंड ३२)। वकृ—णिम्पज्जन्त, णिम्पज्जमाण, (ठा २।१ टी, सुर ३, १०१)।

णिम्पज्जिय वि [निष्पन्न सक] आरम्भ किया हुआ, पूर्ण किया हुआ, (भग ८०, औप)।

णिम्पज्जिया देखो णिप्पज्जिया (पिंड)।

णिम्पडिकम्म वि [निष्प्रतिकर्म] प्रतिकार-रहित, (ठा ३, ३)।

णिम्पडिवक्ख वि [निष्प्रतिपक्ष] अद्वितीय, अनुपम, (सुर ३, ६)।

णिम्पडिसेह वि [निष्प्रतिषेध] अनिवार्य, (सुर ३, २४२)।

णिम्पडिसेहया स्त्री [निष्प्रतिषेधता] अनिवार्यता, (सुर ३, २४२)।

णिम्पत्त वि [निष्पात्र] पात्र-रहित, (पव ३)।

णिम्पत्ति स्त्री [निष्पत्ति] १ समाप्ति, पूर्णता, (सुर ३, २४२)। २ उत्पत्ति, (सुपा ६६)।

णिम्पन्न वि [निष्पन्न] १ सम्पन्न, समाप्त, पूर्ण किया हुआ, (सुर ३, २४२)। २ उत्पन्न, (सुपा ६६)। ३ निश्चित, (सुपा ६६)। ४ सिद्ध, (सुपा ६६)। ५ तैयार, (सुपा ६६)। ६ निष्पादित, (सुपा ६६)। ७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १० निष्पन्न, (सुपा ६६)। ११ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १२ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १३ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १४ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १५ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १६ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। २० निष्पन्न, (सुपा ६६)। २१ निष्पन्न, (सुपा ६६)। २२ निष्पन्न, (सुपा ६६)। २३ निष्पन्न, (सुपा ६६)। २४ निष्पन्न, (सुपा ६६)। २५ निष्पन्न, (सुपा ६६)। २६ निष्पन्न, (सुपा ६६)। २७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। २८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। २९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३० निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३१ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३२ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३३ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३४ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३५ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३६ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ३९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४० निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४१ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४२ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४३ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४४ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४५ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४६ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ४९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५० निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५१ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५२ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५३ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५४ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५५ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५६ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ५९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६० निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६१ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६२ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६३ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६४ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६५ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६६ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ६९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७० निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७१ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७२ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७३ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७४ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७५ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७६ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ७९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८० निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८१ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८२ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८३ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८४ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८५ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८६ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ८९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९० निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९१ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९२ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९३ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९४ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९५ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९६ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९७ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९८ निष्पन्न, (सुपा ६६)। ९९ निष्पन्न, (सुपा ६६)। १०० निष्पन्न, (सुपा ६६)।

णिम्पन्नया स्त्री [निष्पन्नता] सम्पन्नता, पूर्णता, (उप ६०, उप ६०३ टी)।

णिम्पन्नाय वि [निष्पन्नाय] सम्पन्न, पूर्ण किया हुआ, (उप ६०, उप ६०३ टी)।

णिम्पन्नोदय वि [निष्पन्नोदय] सम्पन्न, पूर्ण किया हुआ, (उप ६०, उप ६०३ टी)।

णिम्पय वि [निष्पद] पद-रहित, (पव ३)।

णिम्पयार वि [निष्प्रकार] प्रकार-रहित, (पव ३)।

णिम्पयारय वि [निष्प्रकारक] प्रकार-रहित, (पव ३)।

णिम्पयारया स्त्री [निष्प्रकारता] प्रकार-रहितता, (पव ३)।

णिम्पयारिय वि [निष्प्रकारित] प्रकार-रहित किया हुआ, (पव ३)।

णिम्पलिय वि [निष्पलित] पलित-रहित, (पव ३)।

णिम्पलिवय वि [निष्पलिवत] पलित-रहित, (पव ३)।

णिम्पलिवया स्त्री [निष्पलिवता] पलित-रहितता, (पव ३)।

णिम्पलिवयाय वि [निष्पलिवताय] पलित-रहित किया हुआ, (पव ३)।

णिम्पलिवयाया स्त्री [निष्पलिवताया

णिस्स]
स्सार] १ कृतकृत्य, कृतार्थ, २ स्वस्थ, स्वस्थ, ...स्स १, ६ दी—पत्र १६१ ; उप्र १, १३, ३, ११६) ।
[निस्सास] एक प्रकार का छन्द, एक लक्षण (पिंग) ।
की [निस्सासा] एक लक्षण, एक पद्धति, ...
ण वि [निस्सासिय] बकाया हुआ, रहित, ...
...ण ; सुर ४४६) ।
...ण) व [निस्सीम] १ असीम, अपरिमित ; ...ण) ।
...विश्व हो वर, "पृथिव्यिव्या सस्सुर" (स १६१) । २ जिसकी ...वरसमुद्दो" (स १३६) । ३ जिसकी ...ण स्स [निःस्नेह] १ स्नेहरहित, कठोर, हृदय-...ण । २ निस्सार । विशेष्य । (पिंग) । वह—निस्नेह (सुपा ८६) ।
...हणण न [निहरण] १ उच्चारण, प्रकाशन ; (अनि ...१०१) । २ तिरस्कार, (उप १०) ।
...हसिय वि [निहसित] प्रहसित, खिल्लया हुआ ; "पुव्व विणिद्दिट्ठं निहसियं मया तीए" (सुर १, ८२ ; उप ६६७ ; गाथा ४०) ।
...हसिरण देखो निहरण ; (उप ; उप १०८) ।
निहा स्त्री [दे] १ वेदना-विशेष, हृदय-व्यापक वेदना ; (...१६, ६) । २ जलते हुए भी की जाती प्रवृत्ति-हिंसा ; (पिंड) ।
...हाण देखो निहाण ; (विपा १, १ ; भवि १६ ; नट—देखो ३३) ।
...हाया देखो निद्दा ; (कप्प ३६) ।
निहाय पुं [निदाघ] १ घर्म, घाम, ताप । २ ग्रीष्म-ऋतु, ...सखी की सौरभि । ३ जेठ मास ; (भग ६) ।
निहाह पुं [निदाघ] असाधारण दाह ; (भग ६) ।
निहित्तिय वि [निहित्तिक] १ प्रदर्शित ; २ दक्ष, कुशल ; (पउम ६, १४६) ।
निहुंभण न [निहाध्यान] निद्रा में होता ध्यान, दुर्ध्यान-विशेष ; (आउ) ।
निहुंद वि [निर्द्वन्द्व] द्वन्द्व-रहित, क्लेश-वर्जित ; (सुपा ४६६) ।
निहुंभ वि [निर्दम्भ] दम्भ-रहित, कपट-रहित ; (सुर १४,) ।
निहुडी (भग) देखो निहा = निद्रा ; (विपा १, ६) ।
निहुअ वि [निर्दग्ध] १ उत्तप्त हुआ, अत्यन्त तप्त हुआ ; (सुर १४, १६ ; भवि १६) । २ पुं. वृक्ष-विशेष, (पउम ३३, ३३) । ३ अत्यन्त अत्यन्त अन्तर्दृष्टियों का एक अनुभव-दशा, (उप १) । "भाव पुं [भाव] अनुभव-विशेष, एक अनुभव-दशा ; (उप १) । "पयत्त पुं [प्रयत्न] अनुभव-विशेष ; (उप १) । "सिट्ठ पुं [शिष्ट] अनुभव-विशेष ; (उप १) ।
निहुय वि [निर्दय] दया-हीन, करुणा-रहित, निष्ठुर ; (पउम १, १, गउड) ।
निहुयण न [निर्दलन] १ मर्दन, विनाश ; (भवि) । २ वि. मर्दन करने वाला ; (वज्जा ४१) ।
निहुलिअ वि [निर्दलित] मर्दित, विनाशित ; (पाअ ; सुर ६, २११ ; गाथा ७६) ।
निहुव सक [निर् + हु] अलग देना, अस्वीकार करना ; निह्नव ; (भग ; उव) । विशेषरूप ; (नि २२२) ।
निहुवण न [निर् + हु] निद्रा लेना, सोना ; (भग ; उव) । वह—निहावर्तन ; (से १, ६६) ।
निहुवी स्त्री [निद्रा] १ निद्रा, नींद ; (स्वप्न ६८ ; कप्प) । २ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें एकाध आवाज देने पर आदमी जाग उठे ; (कम्म १, ११) । °अंत वि [°अन्त] ...निद्रा-युक्त, निद्रित ; (से १, ६८) । °करी [°करिन्] स्तब्ध-विशेष, वह निद्रा जिसमें बड़ी मुश्किल से आदमी उठाया जा सके ; (कम्म १, ११ ; सम १) । °यल, °लु वि [°पत्र] निद्रा वाला ; (संक्षि २०; वि ६८६) । °यय वि [°प्रद] निद्रा देने वाला ; (से १, ४२) ।
निहाय वि [निद्रात] जो नींद में हो ; (से १, ६) ।
निहाय वि [निर्दाय] अग्नि-रहित ; (से १, ६) ।
निहाय वि [निर्दाय] दाय-रहित, वैकुण्ठ धन से (से १, ६८) ।
निहारअ वि [निद्रित] निद्रा-युक्त ; (महा) ।
निहाणी स्त्री [निद्राणी] विशेषरूप निद्रा ; (कप्प ३६) ।
निहाया देखो निद्रा ; (कप्प ३६) ।
निहारिअ वि [निर्दारित] खण्डित, विदारित ; ८३ ; १३, ६६) ।

णिण्ण वि [निम्न] १ नीचा, अवस्थान ; (उत्त १२ ; उव १०३१ टी) । २ निवि, नीचे, अधः, (हे २, ४२)।

णिण्णक्कंदु कि [निःसारयति] बाहर निकालता है ; "ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्कंदु" (आचा २,२,१)।

णिण्णगा स्त्री [निम्नगा] नदी, सरितस्विनी , (पण्ण १; पण्ह २, ४)।

णिण्णट्ठ वि [निर्नष्ट] नाश-प्राप्त ; (सुर ६, ६२)।

णिण्णय पु [निर्णय] १ निश्चय, अवधारण , (हे १, ६३)। २ फैसला ; (सुपा ६६)।

णिण्णया देखो णिण्णगा , (पाअ)।

णिण्णार वि [निर्नगर] नगर से निर्गत ; (भग १५)।

णिण्णाला स्त्री [दे] चन्दु, चोंच , (दे ४, ३६)।

णिण्णास सक [निर्+नाशय्] विनाश करना। वकृ—णिण्णासिंत , (सुपा ६६४)।

णिण्णास पुं [निर्णाश] विनाश ; (भवि)।

णिण्णासिय वि [निर्णाशित] विनाशित ; (सुर ३, २३१ , भवि)।

णिण्णिद्द वि [निर्निद्र] निद्रा-रहित ; (गा ६६६)।

णिण्णिमेस वि [निर्निमेष] १ निमेष-रहित , २ चंचलता-रहित ; ३ अनुरागी , (ठा ५, २)।

णिण्णीअ वि [निर्णीत] निश्चित, तय किया हुआ, (श्रा १२)।

णिण्णुण्णअ वि [निम्नोन्नत] ऊँचा-नीचा, विषम , (अभि २०६)।

णिण्णेह वि [निःस्नेह] स्नेह-रहित , (हे ४, ३६७ , सुर ३, २२२ ; महा)।

णिण्हइया स्त्री [निह्नविका] लिपि-विशेष ; (सम ३५)।

णिण्हग पुं [निह्नव] १ सत्य का अपलाप करने वाला, मिथ्यावादी , (ओघ ४० भा , टा ७ ; ओप)। २ अपलाप , (सूत्र ४१)।

णिण्हव सक [नि+ह्नु] अपलाप करना। णिण्हवइ ; (विस २२६६ ; हे ४, २३८)। कर्म—णिण्हवीअदि (शौ) ; (नाट—रत्ना ३६)। वकृ—णिण्हवत, णिण्हवेमाण ; (उव २११ टी , सुर ३, २०१)।

णिण्हवग वि [निह्नवक] अपलाप करने वाला ; (ओघ ४८ भा)।

णिण्हवण न [निह्नवन] अपलाप, (विपा १, २ ; उव)।

णिण्हविद देखो णिण्हुविद ; (नाट—रत्ना २६६)।

णिण्हुय वि [निह्नुत] अपलपित ; (सुर १४)।

णिण्हुव देखो णिण्हव=नि+ह्नु । कर्म—णिण्हुविज्जंत (सि ३३०)।

णिण्हुविद (शौ) वि [नि+ह्नुत] अपलपित, छिपा ; णिनिय देखो णिच्चय, (आचा ; ठा १०)।

णिन्तुडिअ वि [निर्तुटित] टूटा हुआ, छिन्न ; (अनु)

णित्त देश, पोत ; (पाअ ; सुपा २६१ ; सण)

णित्तम वि [निस्तमस्] १ अन्धकार-रहित ; रहित , (अजि ८)।

णित्तल वि [दे] अनिष्ठुर, (भग १६)।

णित्ति (अप) देखो णीइ ; (भवि)।

णित्तिंस वि [निस्त्रिंश] निर्दय, करुणा-हीन ; (सुर णित्तिरट्ठि वि [दे] निरन्तर, अव्यवहित, (दे णित्तिरडिअ वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ ; (दे णित्तुप्प वि [दे] स्नेह-रहित, घृत आदि से वर्जित, णित्तुल वि [निस्तुल] १ निरुपम, अप्रतिम ; ५३)। २ निवि, अनाधारण रूप से ; "अत्थइ मगनि" (सुपा ३४५)।

णित्तुस वि [निस्तुष] तुष-रहित, विशुद्ध ; (पिंड उव १७६ टी)।

णित्तेय वि [निस्तेजस्] तेज-रहित ; (आचा १,१

णित्थणण न [निस्तनन] विलाप सूचक ध्वनि, २, २३३)।

णित्थर सक [निर्+तृ] पार करना, पार उतरना। रे , (सुपा ४४६) । "णित्थरति खलु कामगणि उज्जामयगुणेण महण्णवं" (स १६३) । कवृ—रिज्जत ; (राज)। कृ—णित्थरियव्व ; (३ ; सुपा १२६)।

णित्थरण न [निस्तरण] पार-गमन, पार-प्राप्ति ; (४ ; उव १३४ टी)।

णित्थरिअ देखो णित्थिण्ण, (उव १३४ टी)।

णित्थाण वि [निःस्थान] स्थान-रहित, स्थ (आचा १, १८)।

णित्थाम वि [निःस्थामन्] निर्बल, मन्द, (पंच सुपा ४८६)।

णित्थार सक [निर्+तारय्] १ पार उतारना, २ बचाना, छुटकारा देना। णित्थारसु , (काल)।

र पुं [निस्तार] १ छुटकारा, मुक्ति; २ समाप्त, रक्षा; ...
...; (स्वप्न १, ६ टी—पत्र १६६ ; सुर १, ६१; ७, ...
...; सुपा २६६)।
...रण वि [निस्तारक] पार उतारने वाला, पार उतारने ...
...ता ; (स १२३)।
...त्थारणा स्त्री [निस्तारणा] पार-उतार, पार पहुँचना; ...
...ं ३)।
...त्थारिय वि [निस्तारित] बचाया हुआ, रक्षित, उद्...
...धृत ; (रयण ; सुपा ४४६)।
...णिप्पण्ण) व [निर्निर्णय] १ निर्णय, पार-प्राप्त ;
...णिण्णय) "णिण्णिया सुत्तं" (ती ३६७)। २ जिसने
पार किया हो वह, "णिण्णिया अत्थया गहीं" (सुर ८, ८६)।
"णिण्णियसत्तुणो" (स १३८)।
...णिद्दंस सक [निस्+दर्शय्] १ दिखाना, दिखलाना। २ दिखना। णिद्दिसः (सिंग)। वह—णिद्दं-
(सुपा ८६)।
...णिद्दंसण न [निदर्शन] १ दृष्टान्त, दृष्टान्त; (श्रावे
२०३)। २ दिखना ; (उप १०)।
...णिद्दंसिय वि [निदर्शित] प्रदर्शित, दिखाया हुआ ; "एवं
विधिकिंकर णिद्दिसिमि जिणवरो मए देवं" (सुर ६, ८२ ; उप
६६७ ; सार्ध ४०)।
...णिद्दारिसण देखो णिद्दंसण ; (उप ; उप ३८४)।
...णिद्दारिसणा स्त्री [निर्दर्शना] १ देखना-विशेष, ध्यान-पूर्वक देखना ; (...
...६)। २ जलते हुए भी की जाती प्रवृत्ति-रहित ;
...दंट)।
...णिद्दाण देखो णिद्दाय ; (निचू १, १; पंच १६; श्रुत—
...ती ३३)।
...णिद्दाया देखो णिदा ; (पउम ३६)।
...णिदाह पुं [निदाघ] १ ग्रीष्म, घाम, ताप। २ ग्रीष्म-काल,
गरमी की मौसिम। ३ जेठ मास ; (भग ४)।
णिद्दाह पुं [निदाह] अत्यधिक दाह (भग ५)।
णिद्दिसिय वि [निर्दिशित] १ प्रदर्शित ; २ कथित, कथित;
(भग ६, १४६)।
णिद्दुक्खाण न [निर्दुःखान] दुःख से छूटने का स्थान,
दुर्घटना-विशेष; (भग)।
णिद्दंद वि [निर्द्वन्द्व] झगड़ा-रहित, झंझट-रहित ; (उत्त
४६६)।

णिद्दंभ वि [निर्दम्भ] दम्भ-रहित, कपट-रहित ; (सुपा
१४७)।
णिद्दड्ढी (शौ) देखो णिद्दा = निद्रा ; (नि १६६)।
णिद्दड्ढ वि [निर्दग्ध] १ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ ;
(सुर १४, १६ ; मंत १५)। २ पुं. द्वीन्द्रिय, (पउम
३२, २२)। ३ रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी का एक नरका-
वास ; (इक ६)। "णिद्दड्ढ पुं [मध्य] नरकावास विशेष,
एक नरक-प्रदेश ; (इक ६)। "णिद्दड्ढ पुं [चतुर्थ] नरका-
वास-विशेष ; (इक ६)। "णिद्दड्ढ पुं [चतुरिष्ट] नरक-
प्रदेश विशेष ; (इक ६)।
णिद्दय वि [निर्दय] दया-हीन, करुणा-रहित, निष्ठुर ; (पड्ड
१, १ ; गउड)।
णिद्दलण न [निर्दलन] १ मर्दन, विदारण ; (आचा)।
२ वि. मर्दन करने वाला ; (वव ४२)।
णिद्दलिअ वि [निर्दलित] मर्दित, विदारित ; (पाम ; सुर
६, २२२ ; कुमा ७६)।
णिद्दह सक [निर्+दह्] जला देना, भस्म करना ; [नि-
दह ; (महा ; उव)। णिद्दहेज्जा ; (वि २२२)।
णिद्दा स्त्री [निद्रा] १ निद्रा, नींद ; (स्वप्न ६८ ; कप्प)।
२ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें एकाध अवयव हलने पर ही
मनुष्य जाग उठे; (कम्म १, ११)। "अंत वि [वत्]
निद्रा-युक्त, निद्रित ; (से १, ६६)। "करी स्त्री
[करी] तद्रा-विशेष; (दे ७, ३४)। "णिद्दा
स्त्री [निद्रा] निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें बड़ी कठिनता
से मनुष्य उठाया जा सके ; (कम्म १, ११ ; कम्म १५)
"ल, लु वि [वत्] निद्रा वाला;(संक्षिप्त; वि ६६६; प्र
"वस वि [प्रद] निद्रा देने वाला ; (से १, ६२)।
णिद्दाय वि [निद्रात] जो नींद में हो ; (से १, ६८)।
णिद्दाय वि [निर्दाय] दया-रहित, देखें पत्र में दि
णिद्दाय वि [निर्दाय] दान-रहित, देखें पत्र में दि
(से १, ६६)।
णिद्दारिअ वि [निर्दारित] छिन्न-भिन्न ; (महा)।
णिद्दाणी स्त्री [निद्राणी] विनोदी-विशेष; (कम्म
णिद्दाया देखो णिदा ; (पउम ३६)।
णिद्दारिअ वि [निर्धारित] स्थिर, निश्चित ;
८४ ; १३, ६६)।

णिप्फज्ज अक [निर्+पद्] नीपजना, सिद्ध होना । णिप्फज्जइ ; (स ६१६)। वकृ—णिप्फज्जमाण ; (पण्ह १, ४)।

णिप्फडिअ वि [निष्फटित] १ विशीर्ण ; २ जिसका विस्तार खिंचने पर न हो ; ३ अङ्कुश-रहित ; (उप १२८ टी)।

णिप्फण्ण वि [निष्पन्न] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध ; (से १,११ , महा)।

णिप्फत्ति स्त्री [निष्पत्ति] निष्पादन, सिद्धि , (उव ; उप २८० टी , सार्ध १०६)।

णिप्फन्न देखो णिप्फण्ण ; (कप्प , आया १, १६)।

णिप्फरिस वि [दे] निर्दय, दया-हीन, (दे ४, ३७)।

णिप्फल वि [निष्फल] फल-रहित, निरर्थक , (से १४, २६ , सण ११६)।

णिप्फलाभ देखो णिप्फाय , (आचा)।

णिप्फलीकरण देखो णिप्फाय।

णिप्फाइय वि [निष्पादित] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ , (विसे ७ टी, उप २११ टी ; महा)।

णिप्फाय सक [निर्+पादय्] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना । संकृ—णिप्फाइऊण ; (पंचा ७)।

णिप्फायग वि [निष्पादक] नीपजाने वाला, बनाने वाला, सिद्ध करने वाला , (विसे ४८१ , ठा ६ , उप ८२८)।

णिप्फायण न [निष्पादन] नीपजाना, निर्माण, कृति , (आचा ४)।

णिप्फाय पु [निष्पाव] धान्य-विशेष, बल्ल , (हे १, ४३; कप्प १ , ठा ६, ३ ; पि १८)।

णिप्फिड अक [नि+स्फिट्] बहुत निकलना । वकृ—णिप्फिडत , (स ६०८)।

णिप्फिडिअ वि [निस्फिटित] निर्गत, बहुत निकला हुआ ; (पाअ १, २१० , ८०, १०)।

णिप्फुर पु [निष्पुर] द्रव्य, वैभव , (सण)।

णिप्फेड पु [निष्फेट] निर्गम, बहुत निकलना, (ठा ४ २१२)।

णिप्फेडिअ वि [निष्फेटित] १ निष्कासित, निकाला हुआ ; (सूत्र १, २)। २ बनाया हुआ, बनाया हुआ ; (कुप्र २११)। ३ अलग, छोड़ा हुआ ; (ठा ३, ४)।

णिप्फेस पु [दे] हठ, निर्बन्ध, आग्रह, दुराग्रह ; (दे ४, १६)।

णिप्फेस्स पुं [निष्पेष] १ पेरणा, पीलना ; २ श्रम, (२, ५३)।

णिबंध सक [नि+बन्ध्] १ बाँधना । २ करना । (भग)।

णिबंध पुंन [निबन्ध] १ संबन्ध, संयोग ; (विसे ३८) २ आग्रह, हठ ; (महा)। " णिबन्धाभि" (पि ३८)।

णिबंधण न [निबन्धन] कारण, प्रयोजन, निमित्त ; (प्राप्र ६६)।

णिबद्ध वि [निबद्ध] १ बँधा हुआ ; (महा) । २ संबद्ध ; (से ६, ४४)।

णिबिड वि [निबिड] सान्द्र, घना, गाढ़ ; (महा ; पि ३८)।

णिबिडिय वि [निबिडित] निबिड किया हुआ ; (महा)।

णिबुक्क [दे] देखो णिब्बुक्क ; (पण्ह १, १—पत्र २)।

णिबुड अक [नि+मज्ज्] निमग्न होना, डूबना । वकृ—णिबुडिज्जंत, णिबुडमाण, (भक्त ६१ ; महा)।

णिबुड वि [निमग्न] डूबा हुआ, निमग्न ; (महा ; पि ३, ६१ , ४, ८०)।

णिबुड्डण न [निमज्जन] डूबना, निमज्जन ; (पाअ ४३)।

णिबोल देखो णिबुड=नि+मज्ज् । वकृ—णिबोलंत (राज)।

णिबोह पु [निबोध] १ प्रकृष्ट बोध, उत्तम ज्ञान ; प्रकार का बोध ; (विसे २१८७)।

णिबोहण न [निबोधन] प्रबोध, समझाना ; (पाअ ६२)।

णिब्बंध पु [निर्बन्ध] आग्रह ; (सण ६७ ; १, ८)।

णिब्बंधण न [निर्बन्धन] निबन्धन, हेतु, कारण , " णिब्बन्धणमिब्बंधस्स धर्म " (काल)।

णिब्बल वि [निर्बल] बल-रहित, दुर्बल , (कुप्र)।

णिब्बहिम [निर्बहिस्] अ बहुत बाहर ; (सूत्र १—अ)।

णिब्बाहिर वि [निर्बाह्य] बहुत बाहर का, दूरवर्ती " संजयणिब्बाहिरा जाया " (उव)।

णिब्बुक्क वि [दे] १ निर्गुण, गुण-रहित । २ निर्धन , " णिब्बुक्कणिक्कारव—" (पण्ह १, २—पत्र ४१)।

णिब्बुड देखो णिबुड= निमग्न ; (से ३६० , महा)।

णिब्बोलण देखो णिब्बुड्डण , (उप १०१)।

जप न [दे] पश्चात्ताप के पश्चात् पर जो दोष पूर्व सेवन ; (पच्चा ३३) ।
त वि [निर्भ्रान्त] निःसंदेह, संशय-रहित ; (सिरि १४) ।
मा व [दे] उपरान्त, अनन्तर ; (दे ४, ३४) ।
ग्ग वि [निर्मार्ग्य] मार्ग-रहित, अन्वेषण-रहित ; (उप ६४८ टी) ।
च्छ सक [निर्+मत्सर्] १ तिरस्कार करना, अनादर करना, अवहेलना करना, आक्रोश-पूर्वक अपमान करना । २ छेदना, विच्छेद करना ; (कुमा १, १८ ; उवा) । —णिम्मच्छिअ ; (भवि—भविष्य १७१) ।
च्छण न [निर्भर्त्सन] तिरस्कार, अपमान, परुष वचन ; वेदना ; (पउ १, २ ; गउड) ।
च्छणा स्त्री [निर्भर्त्सना] ऊपर देखो ; (भग १५ ; औप १, १६) ।
च्छिअ वि [निर्भर्त्सित] अपमानित, अवहेलित ; (सुर ८, ८८ ; सुपा ४०७) ।
ण्ण वि [निर्भय] भय-रहित, निडर ; (कुमा १, ४ ; पि) ।
र सक [निर्+भृ] भरना, पूर्ण करना । कवक—भरेंत ; (से १५, ७४) ।
र वि [निर्भर] १ पूर्ण, भरपूर ; (से १०, १७) । २ एक, पेखने वाला ; (कुमा) । ३ त्रिवि. पूर्ण रूप से ; "वेओ व दिग्भरं दरिसइ" (भवि) ।
रिअ सक [निर्+भिद्] तोड़ना, विदारण करना । कवक—णिब्भिज्जंत, णिब्भिज्जमाण ; (से १४, २६ ; भग ५ २ ; जीव ३) ।
भेच्च वि [नर्भीक] भय-रहित, निडर ; (सुपा ३१ ; २४६ ; २७६) ।
भेज्जंत) देखो णिब्भिंद ।
भेज्जमाण)
भेट्ट वि [दे] आक्रान्त ; (भवि) ।
भेयण वि [निर्भिन्न] १ विदारित, तोड़ा हुआ ; (भवि) । २ विद्ध ; (से ६, ३४) ।
भोअ वि [निर्भोक] भय-रहित ; (से १३, ७०) ।
मुग्ग वि [दे] मग्न, खचित ; (दे ४, ३२) ।
मेय पुं [निर्भेद] भेदन, विदारण ; (सुपा ३१७) ।
मेयण न [निर्भेदन] ऊपर देखो ; (सुर ३, ६६) ।
म देखो णिहणिम ; (ठा ; जं ३) ।
णिमंग पुं [निमङ्ग] मज्जन, स्नान, वेदन ; (राज) ।
णिमाल सक [नि+भालय्] देखना, निरीक्षण करना । णिमालेहि ; (भवि) । वकृ—णिमालयंत ; (उप पृ ६३) । कवक—णिमालिज्जंत ; (उप ६८६ टी) ।
णिमालिय वि [निभालित] दृष्ट, निरीक्षित ; (उप पृ ६८) ।
णिमित्त) देखो णिहुअ ; (पंच २, ३ ; भग ८००) ।
णिमुअ)
णिमेल सक [निर्+मेलय्] बाहर करना । कवक—णिमेलंत ; (पंच १, ३—पत्र ४६) ।
णिमेलण न [दे] गृह, घर, स्थान ; (कस) ।
णिम सक [नि+मस्] स्थापन करना । णिमे ; (हेम, १२८ ; षड्) । रिणे ; (पि ११८) । वकृ—णिमेंत ; (से १, ४१) ।
णिमंत सक [नि+मन्त्रय्] निमन्त्रण देना, न्यौता देना । णिमंतेइ ; (महा) । वकृ—णिमंतेमाण ; (भवि ३, १, ३) । संकृ—णिमंतिऊण ; (महा) ।
णिमंतण न [निमन्त्रण] निमन्त्रण, न्यौता ; (उवपृ११३) ।
णिमंतणा स्त्री [निमन्त्रणा] ऊपर देखो ; (पंचा १२) ।
णिमंतिय वि [निमन्त्रित] जिसको न्यौता दिया गया हो वह ; (महा) ।
णिमग्ग वि [निमग्न] डूबा हुआ ; (पउम १०६, ४ ; औप) । °जल्ल स्त्री [°जला] नदी-विशेष ; (जं ३) ।
णिमज्ज अक [नि+मस्ज्] डूबना, निमज्जन करना । णिमज्जइ ; (पि ११८) । वकृ—णिमज्जंत ; (गा ६०६ ; सुपा ८४) ।
णिमज्जग वि [निमज्जक] १ निमज्जन करने वाला । पुं बलात्कारगणी तापसविशेष, जो स्नान के लिए थोड़े समय तक जलाशय में निमग्न रहते हैं ; (औप) ।
णिमज्जण न [निमज्जन] डूबना, जल-प्रवेश ; (सुपा ३६४) ।
णिमाणिअ देखो णिम्माणिअ=निर्मानित ; (भवि) ।
णिमिअ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित ; (कुमा ; से १, ४२ ; स ६ ; ७६० ; सुर) ।
णिमिअ वि [दे] आक्रान्त, दबा हुआ ; (षड्) ।
णिमिण देखो णिम्माण=निर्माण ; (कम्म १, २१) ।
णिमित्त न [निमित्त] १ कारण, हेतु ; (प्रभु १०४) । २ कारण-विशेष, सहकारि-कारण ; (सुपा २, २) । ३ शास्त्र-विशेष, भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र ; (सण १६ ; सुर

णिप्फज्ज अक [निर्+पद्] नीपजना, सिद्ध होना। णिप्फज्जइ ; (स ६१६)। वकृ—णिप्फज्जमाण ; (पण्ह १, ४)।

णिप्फडिअ वि [निष्फटित] १ विशीर्ण ; २ जिसका मिजाज ठिकाने पर न हो ; ३ अनुकूल-रहित ; (उप १४८ टी)।

णिप्फण्ण वि [निष्पन्न] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध, (से २,१२ ; महा)।

णिप्फत्ति स्त्री [निष्पत्ति] निष्पादन, सिद्धि ; (उव ; उप २८० टी ; सार्ध १०६)।

णिप्फन्न देखो णिप्फण्ण ; (कप्प ; सामा १, १६)।

णिप्फरिस वि [दे] निर्दय, दया-हीन; (दे ४, ३७)।

णिप्फल वि [निष्फल] फल-रहित, निरर्थक ; (से १४, २६ ; गा १३६)।

णिप्फाअ देखो णिप्फाव ; (प्राप्र)।

णिप्फाइअण देखो णिप्फाय।

णिप्फाइय वि [निष्पादित] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ ; (सिरि ७ टी, उप २११ टी ; महा)।

णिप्फाय सक [निर्+पादय्] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना। संकृ—णिप्फाइऊण ; (पंचा ७)।

णिप्फायग वि [निष्पादक] नीपजाने वाला, बनाने वाला, सिद्ध करने वाला ; (सिरि ४८३ ; ठा ६ ; उप ८२८)।

णिप्फायण न [निष्पादन] नीपजाना, निर्माण, कृति ; (आव ४)।

णिप्फाव पुं [निष्पाव] धान्य-विशेष, वल्ल ; (दे २, ५३; पणण १ ; ठा ५, ३ ; श्रा १८)।

णिप्फिड अक [नि+स्फिट्] बाहर निकलना। वकृ—णिप्फिडंत ; (स ६७४)।

णिप्फिडिअ वि [निस्फिटित] निर्गत, बाहर निकला हुआ; (पउम ६, १२७ ; ८०, ६०)।

णिप्फुर पु [निस्फुर] प्रभा, तेज ; (गउड)।

णिप्फेड पुं [निस्फेट] निर्गमन, बाहर निकलना, (उप पृ २६२)।

णिप्फेडिय वि [निस्फेटित] १ निस्सारित, निष्कासित ; (सूम २, २)। २ भगाया हुआ, भसाया हुआ ; (पुप्फ १२६)। ३ मसला, छीना हुआ ; (ठा ३, ४)।

णिप्फेस पुं [दे] शब्द-निर्गम, आवाज निकलना ; (दे ४, २६)।

णिप्फेस पुं [निष्पेष] १ पेषण, पीसना ; २ संघर्ष, (ठा २, ३)।

णिबंध सक [नि+बन्ध्] १ बाँधना। २ करना। निबंधइ (भग)।

णिबंध पुं [निबन्ध] १ सम्बन्ध, संयोग ; (सिरि ३६८) २ आग्रह हठ, (महा)। "णिबन्धाहि" (सिरि ३६८)।

णिबंधण न [निबन्धन] कारण, प्रयोजन, निमित्त ; (पाअ प्राप्र ६६)।

णिबद्ध वि [निबद्ध] १ बाँधा हुआ ; (महा) । २ व्याप्त संबद्ध, (से ६, ४४)।

णिबिड वि [निबिड] सान्द्र, घना, गाढ़, (गउड ; कुमा)

णिबिडिय वि [निबिडित] निबिड किया हुआ ; (कप्प)

णिबुक्क [दे] देखो णिब्बुक्क, (पण्ह १,३—पत्र ४६)

णिबुड अक [नि+मस्ज्] निमज्जन करना, डूबना। वकृ—णिबुड्डिज्जंत, णिबुड्डमाण, (मन्नु ६१ ; उव)

णिबुड वि [निमग्न] डूबा हुआ, निमग्न, (गा १०१ ; ३ १, ६१ ; ४, ८०)।

णिबुड्डण न [निमज्जन] डूबना, निमज्जन ; (पउम १० ४२)।

णिबोल देखो णिबुड=नि+मज्ज्। वकृ—णिबोलिज्जमाण (राज)।

णिबोह पु [निबोध] १ प्रकृष्ट बोध, उत्तम ज्ञान ; २ अमुक प्रकार का बोध ; (सिरि २१८७)।

णिबोहण न [निबोधन] प्रबोध, समझाना ; (पउम १०१ ६१)।

णिब्बंध पुं [निर्बन्ध] आग्रह, (गा ६७६, महा ; ३ १, ८)।

णिब्बंधण न [निर्बन्धन] निबन्धन, हेतु, कारण, "सुरियेयनिब्बंधणं धणं" (काल)।

णिब्बल वि [निर्बल] बल-रहित, दुर्बल, (आचा)।

णिब्बहि अ [निर्बहिस्] अत्यन्त बाहर; (ठा ६—पत्र २६१)

णिब्बाहिर वि [निर्बाह्य] बाहर का, बाहर गया हुआ "संजमनिब्बाहिरा आया" (उव)।

णिब्बुक्क वि [दे] १ निर्मूल, मूल-रहित। २ विवि. भग्न। "णिब्बुक्कछिण्णपय—" (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

णिब्बुड देखो णिबुड= निमग्न ; (स ३६०, गउड)।

णिब्भंछण देखो णिब्भच्छण ; (उव ३०२)।

निर्मंडन न [दे] पकवान्न के पकने पर उस पर शक्कर आदि का लेप; (पव्व ३३)।
निर्मंत्र वि [निर्मन्त्र] मंत्र-रहित, मंत्र-वर्जित; (उप ४, ३४ (आगम न [दे] दर्पण, आईना; (दे ४, ३४)।
निर्मग वि [निर्मार्ग] मार्ग-रहित, रास्ता-रहित, (उप ३१८ टी; सुपा ३८१)।
निर्मच्छ सक [निर्+मत्सय्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना, अनादर-पूर्वक अस्वीकार करना। २ कर्मवाच्य, निर्मच्छेजइ; (पव्व १, १८, ३८)। हेकृ—निर्मच्छिउं; (श्रा—भावणा १११)।
निर्मच्छण न [निर्मत्सन] तिरस्कार, अपमान, परम वचन से अवहेलना; (पव्व १, ३ ; श्रा ४)।
निर्मच्छणा स्त्री [निर्मत्सना] ऊपर देखो; (भग १२, उपा १, १६)।
निर्मच्छिअ वि [निर्मत्सित] अपमानित, अवहेलित; (श्रा ४८८; सुपा ४०७)।
निर्मम्म वि [निर्मर्म] मर्म-रहित, निडर; (उत्त्रा १, ४; महा)।
निर्मर सक [निर्+भृ] भरना, पूर्ण करना। कर्मवा—निम्मरेंति; (से १६, ७४)।
निर्मर वि [निर्भर] १ पूर्ण, भरपूर; (से १०, १७)। २ आलस, बेहदपने वाला; (उपा)। ३ स्त्रि. पूर्ण रूप से; "कीरे व निम्मरं कीरइ" (आचा)।
निर्मल सक [निर्+मिद्] तोड़ना, विदारण करना। कर्मवा—निम्मिज्जंत, निम्मिज्जमाण; (से १४, २६, गउड १२ ३; जंबू ३)।
निर्मिच्च वि [नर्मीक] मर्म-रहित, निडर; (सुपा ३४३; ३४६; ३७६)।
निर्मिज्जंत देखो निम्मिंद।
निर्मिज्जमाण)
निर्मिंद वि [दे] आक्रान्त; (भवि)।
निर्मिण्ण वि [निर्भिन्न] १ विदारित, तोड़ा हुआ; (पाअ)। २ विद्ध; (से ६, ३४)।
निर्मीक वि [निर्भीक] भय-रहित; (से १३, ७०)।
निर्मुक्क वि [दे] मत्त, खचित; (दे ४, ३१)।
निर्मेय पुं [निर्भेद] भेदन, विदारण; (सुपा ३३७)।
निर्मेयण न [निर्भेदन] ऊपर देखो; (सुर ३, ६६)।
निर्मेर देखो निद्धंधस; (उत्त ; जं ३)।
निर्मोग पुं [निर्भोग] मज्जन, स्नान, नहाना; (राज)।
निर्मोल सक [निर्+मालय्] देखना, निरीक्षण करना। निम्मोलेहि, (आगम)। वकृ—निम्मोलयंत; (उपदे ६१)। कवकृ—निम्मोलिज्जंत; (उप ६८६ टी)।
निर्मोलिय वि [निर्मोलित] दृष्ट, निरीक्षित; (उपदे ६८)।
निर्मोस) देखो निम्हुअ; (पव्व ३, ३ ; गा ८००)।
निर्मोसय)
निर्मोल्ल सक [निर्+मोलय्] बाहर करना। कवकृ—निम्मोल्लंत; (पव्व १, ३—पत्र ४६)।
निर्मोवण न [दे] दृढ़, घन, स्थान; (कस)।
निर्यम सक [नि+यम्] स्थापन करना। निय्यइ; (हेम, १६६ ; पड्)। निंयेइ; (वि ११८)। वकृ—निर्यंत; (से १, ४१)।
निर्यंत सक [नि+मन्त्रय्] निमन्त्रण देना, न्यौता देना। निंयेइ; (महा)। वकृ—निर्यंतमाण; (आचा २, १, ३)। संकृ—निर्यंतिऊण; (महा)।
निर्यंतण न [निमन्त्रण] निमन्त्रण, न्यौता; (उपदे ११३)।
निर्यंतणा स्त्री [निमन्त्रणा] ऊपर देखो; (पंचा १२)।
निर्यंतिय वि [निमन्त्रित] जिसको न्यौता दिया गया हो वह; (महा)।
निरग्ग वि [निरग्र] हृष्टा-हृष्टा; (पउम १०६, ४ ; औप)। °ज्जया स्त्री [°जला] नदी-विशेष; (जं ३)।
निरज्ज सक [नि+मस्ज्] डूबना, निमज्जन करना। निरज्जइ; (वि ११८)। वकृ—निरज्जंत; (गा ६०६; सुपा ६४)।
निरज्जग वि [निरज्जक] १ निमज्जन करने वाला। पुं. वनस्पतिभेदों तालाब-विशेष, जो स्नान के लिए थोड़े समय तक उपयोग में लिया रहते हैं; (औप)।
निरज्जण न [निरज्जन] डूबना, जल-प्रवेश; (सुपा ३६४)।
निरणिय वि देखो निम्मणिय=निर्मापित; (भवि)।
निरत्थ वि [व्यस्त] व्यर्थ, निष्फल; (हेका; से १,४१; स ६ ; ७६०; सण)।
निरय वि [दे] आक्रान्त, दबाया हुआ; (षड्)।
निरय देखो निम्मय=निर्मय; (श्रुप १, २६)।
निरय न [निरय] १ नरक, दुःख; (प्रमु १०४)। २ नरक-विशेष, सप्तविध नरकों में से एक नरक; (सूत्र १, ५)। ३ नरक-विशेष, सप्तविध नरकों में से एक नरक; (सम्मत्त १६ भा;

ठा ८) । ४ अतीन्द्रिय ज्ञान में कारण-भूत पदार्थ; (ठा ८)। ५ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष; (ठा ३, ४)। °पिंड पुं [°पिण्ड] मक्खन आदि बनता कर प्राप्त की हुई भिक्षा; (आचा २, १, ६)।

णिमित्तिअ देखो णेमित्तिअ; (सुपा ४०२)।

णिमिल्ल अक [नि+मील्] आँख मूँदना, आँख मींचना। णिमिल्लइ; (हे ४, २३२)।

णिमिल्ल वि [निमीलित] जिसने नेत्र बंद किया हो, मुदित-नेत्र; (से ६, ६१; ११, ५०)।

णिमिल्लण देखो णिमीलण; (राज)।

णिमिस पु [निमिष] नेत्र-संकोच, अक्षि-मीलन, (गा ३८५; सुपा २१६; गउड)।

णिमीलण न [निमीलन] अक्षि-संकोच; (गा ३६७; सूम १, ५, १, १२ टी)।

णिमीलिअ वि [निमीलित] मुद्रित-(नेत्र); (गा ११३; से ६, ८६; महा)।

णिमोस न [निमिष] एक विद्याधर-नगर; (इक)।

णिमे सक [नि+मा] स्थापन करना। णिमेसि, (गउड)।

णिमेण न [दे] स्थान, जगह, (दे ४, ३७)।

णिमेल स्त्री [दे] दन्त-माल; (दे ४, ३०)। स्त्री—°ला, (दे ४, ३०)।

णिमेस पु [निमेष] निमीलन, अक्षि-संकोच; (भा १६; उव)।

णिमेसि देखो णिमे।

णिमेसि वि [निमेषिन्] आँख मूँदने वाला, (सुपा ४४)।

णिम्म सक [निर्+मा] बनाना, निर्माण करना। णिम्मइ; (षड्)। णिम्मेइ, (धर्म ११ टी)। कवकृ—णिम्माअंत, (नाट—मालती ५४)।

णिम्मअ वि [निर्मित] रचित, कृत; (गा ६०० ; ६०० अ)।

णिम्मंथण न [निर्मथन] १ विनाश। २ वि. विनाशक; "तह य पयडसु णिग्गं अणत्थणिम्मंथणं तित्थ" (सुपा ७१)।

णिम्मंस वि [निर्मांस] मांस-रहित, शुष्क, (आया १, १; भग)।

णिम्मंसा स्त्री [दे] देवी-विशेष, चामुण्डा; (दे ४, ३५)।

णिम्मंसु वि [दे. निःश्मश्रु] तरुण, जवान, युवा; (दे ४, ३२)।

णिम्मच्छिअ देखो णिम्मच्छिम = निर्मत्सिक; (नाट)।

णिम्मच्छ सक [नि+प्रक्ष] विलेपन करना, (भवि)।

णिम्मच्छण न [निष्प्रक्षण] विलेपन; (भवि)।

णिम्मच्छर वि [निर्मात्सर्य] मात्सर्य-रहित, (उप ६ ८४)।

णिम्मच्छिअ वि [निष्प्रक्षित] विलिप्त; (भवि)।

णिम्मच्छिम न [निर्मांसिक] १ अहिंसा, विजन, निर्जनता; (अभि १८)।

णिम्मज्जाय वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, (उप ६ ८४)।

णिम्मज्जिय वि [निर्मार्जित] उज्ज्वल, (उप ६ ८४)।

णिम्मणुय वि [निर्मनुज] मनुष्य-रहित; (उप ६ ८४)।

णिम्मद्दग वि [निर्मर्दक] १ निष्ठुर, निर्दय। २ पुं. चोरों की एक जाति; (पण्ह १, ३)।

णिम्मद्दिय वि [निर्मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो, (पण्ह १, ३)।

णिम्मम वि [निर्मम] १ ममता-रहित, निस्पृह, (से ६६; सुपा १४०)। २ पुं. भारत-वर्ष के एक देव; (सम १५४)।

णिम्मय वि [दे] गत, गया हुआ; (दे ४, ३)।

णिम्मल वि [निर्मल] मल-रहित, विशुद्ध; (प्राप्र १३१)। २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट, (ठा १०)। ३ न. देव का उच्छिष्ट द्रव्य; (पिंड ९२)।

णिम्मव सक [निर्+मा] बनाना, रचना, करना, (हे ४, १६, षड्)। कर्म—णिम्मविज्जति, (कप्प)।

णिम्मवेइ सक [निर्+मापय्] बनवाना, करवाना, (हे ४, ४; कुमा)।

णिम्मवेत्तु वि [निर्मापयितृ] बनवाने वाला, (हे ४, ४)।

णिम्मवण न [निर्माण] रचना, कृति; (उप ६४ सुपा २३, ६६; ३०६)।

णिम्मवण न [निर्मापण] बनवाना, करवाना, (कप्प)।

णिम्मविअ वि [निर्मित] बनाया हुआ, रचित, (हे १०१; कुर १६, ११)।

णिम्मविअ वि [निर्मापित] बनवाया हुआ; (कुमा)।

णिम्मह सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ अक देखो णिम्महइ; (हे ४, १६२)। कवकृ—णिम्मइंत, (सम्मत्त ६३, १५, ५३; स १३६)।

इ पुं [निर्मथ] १ विन्ध्य ; २ वि. विनाशक ; (भवि ।
ुअण न [निर्मथन] १ विनाश ; २ वि. विनाशक-कारक, (भवि) । स्त्री—थणी ; (सुर १६, १८४) ।
ंथिअ वि [मथ] मथा हुआ ; (कुमा) ।
ंथिअ वि [निर्मथित] विनाशित ; (हेका ६०) ।
ंथेअ देखो निम्म ।
ंथ्य देखो निम्माय ; (वि ६६१) ।
ंथ्य सक [निर्+मा] बनाना, करना, रचना । निम्मा-(हे ४, १६; षड् ; प्राप्र) ।
ंथ्य न [निर्माण] १ रचना, बनावट, कृति ; २ कर्म-य, दर्शन के अनुमेयाङ्ग के निर्णय में नियामक कर्म-ण ; (सम्म ६७) ।
ंथ्य वि [निर्माण] मान-रहित ; (भवि ३, ४६) ।
ंथ्यय वि [निर्मायक] निर्माण-कर्ता, बनाने वाला ; (भवि ३, ४६) ।
ंथविअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ ; (कुमा) ।
ंथविअ वि [निर्मानित] अपमानित, तिरस्कृत ; (भवि) ।
ंथणुस वि [निर्माणुष] मनुष्य-रहित, (सुपा ४४४) । स्त्री ; (महा) ।
ंथाय वि [निर्मात] १ रचित, विहित, कृत ; (उव ; कुमा १४) । २ निपुण, अभ्यस्त, कुशल ; (औप; भवि) । "णहिएक्कस्सेव निम्माया परिवाड्या" (सुर १२,४१)।
ंथाव सक [निर्+मापय्] बनवाना, करवाना । ंथावइ; (सट्ट) । हे—निम्मावित्त; (सुम २,१,२२) ।
ंथाविय वि [निर्मापित] बनवाया हुआ, कारित ; (सुपा ४०) ।
ंथिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ ; (उव ८ ; ११७) । °वाइ वि [°वादिन्] जगत् को ईश्व-रादि से बनाने वाला ; (उव ८) ।
ंथिम वि [निर्मिम] १ मिला हुआ, मिश्रित । चल्ली [°चल्ली] अव्यन्त नजदीक का स्वजन, जैसे माता, बहिन, भगिनी, पुत्र और पुत्री ; (वव १०) ।
ंथुंस वि [दे] श्मश्रु-रहित, दाढ़ी-मूँछ वर्जित; (षड्)।
ंथुक्क वि [निर्मुक्त] मुक्त किया गया ; (सुपा १७३) ।
ंथुक्क पुं [निर्मोक्ष] मुक्ति, छुटकारा ; (विसे २४६८) ।
ंथुल वि [निर्मूल] मूल-रहित, जिसका मूल काटा गया है ; (सुपा ५३६) ।
ंथेर वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज ; (ठा ३, १ ; औप ; सुर ६) ।
ंथोअ पुं [निर्मोक] कञ्चुक, सर्प की त्वचा ; (हे २, १८२; मन १९०, हे १, ६०) ।
ंथोअणी स्त्री [निर्मोचनी] कञ्चुक, निर्मोक ; (उत्त १४, ३४) ।
ंथोअण न [निर्मोचन] विनाश ; (भवि ६१) ।
ंथोल्ल वि [निर्मूल्य] मूल्य-रहित ; (कुमा)।
ंथोह वि [निर्मोह] मोह-रहित; (कुमा ; श्रा १२) ।
ंथोह स्त्री [निर्मोह] मूर्छा-नवत् का अपिधायक देव ; (ठा ३, ३) ।
ंदिआयार वि [निरतिचार] अतिचार-रहित, दूषण-वर्जित ; (सुपा १००) ।
ंदिसय वि [निरतिशय] अत्यन्त, सर्वाधिक ; (कप्र) । ंदिसयार देखो णिरइयार ; (सुपा १०० ; रंभा १८) ।
ंदुंस वि [निरदुंश] अदंश-रहित, स्वच्छन्दी ; (कुमा; श्रा २८) ।
ंदेग वि [निरुद्वेग] निर्लेप, क्षोभ-रहित ; (औप ; उत्त ; दसा १, ११—पत्र १७१) ।
ंदेगी स्त्री [दे] सिर का अवगुण्ठन, घूँघट ; (दे ४, ३१ ; ठा, ३०) ।
ंदेजण वि [निरुद्वेजन] निर्लेप, क्षोभ-रहित; (सं ६८२; कप्र)।
ंदेय वि [निरुद्वेक] अन्तर-रहित ; (उप १०३१ टी)।
ंदेर वि [निरन्तर] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित ; (गउड ; हे १, १४) ।
ंदेराय वि [निरन्तराय] १ निर्विघ्न, निर्बाध ; २ व्यवधान-रहित, सतत ; "धम्मं करेह विगउं च निरन्तराय" (पउम ७४, ६७) ।
ंदेरिय वि [निरन्तरित] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित; (जंबू ३) ।
ंदिरंध वि [नीरन्ध्र] छिद्र-रहित ; (विसे ६७) ।
ंदिरंबर वि [निरम्बर] वस्त्र-रहित, नंगा ; (आवनि) ।
ंदिरंभा स्त्री [निरम्भा] एक इन्द्राणी, वैरोचन इन्द्र की एक अग्र-महिषी ; (ठा ६, १ ; इक) ।
ंदिरंस वि [निरंश] अंश-रहित, अखंड, संपूर्ण ; (विसे) ।
ंदिरक्ख पुं [दे] १ चोर, स्तेन ; २ शत्रु, वैरी ; ३ वि. स्निग्ध ; (दे ७, ७८) ।
ंदिरक्किय वि [निरीक्षित] अवलोकित, निरस्त ; (उत्त ६, ४६)।
ंदिरक्ख सक [निर्+ईक्ष्] निरीक्षण करना, देखना ।

णिरक्खइ ; (हे ४, ४१८)। "तोवि ताव दिट्ठीए णिरिक्खिज्जा" (महा)।
णिरक्खर वि [निरक्षर] मूर्ख, ज्ञान-रहित ; (कप्प ; वज्जा १५८)।
णिरग्गल वि [निरर्गल] १ रुकावट से रहित ; (सुपा १६२ ; ४७१)। २ स्वच्छन्दी, स्वैरी, निरंकुश, (पाम)।
णिरञ्जण वि [निरञ्जन] अंजन-रहित ; (उव)।
णिरट्ठ) वि [निरर्थ, °क] १ निरर्थक, निष्प्रयोजन,
णिरट्ठग) निकम्मा ; (उत्त २०)। २ न. प्रयोजन का अभाव, "णिरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो" (उत्त २,४२)।
णिरण वि [निरृण] ऋण-रहित, करज से मुक्त ; (सुपा ६६३ , ६६६)।
णिरणास देखो णिरिणास = नश्। णिरणासइ ; (हे ४,१७८)
णिरणुकंप वि [निरनुकम्प] अनुकम्पा-रहित, निर्दय ; (आया १, २ ; सूत्र १)।
णिरणुक्कोस वि [निरनुक्रोश] निर्दय, दया शून्य ; (आया १, २ ; प्रासु ६८)।
णिरणुताव वि [निरनुताप] पश्चात्ताप रहित ; (आया १,२)।
णिरणुतावि वि [निरनुतापिन्] पश्चात्ताप-वर्जित ; (पव २७४)।
णिरत्थ वि [निरस्त] अपास्त, निराकृत ; (कम्म ८)।
णिरत्थ) वि [निरर्थ, °क] अपार्थक, निष्कर्मा, निष्प्र-
णिरत्थग) योजन ; (दे ४, १६ ; पउम ६६, ४ ; पण्ह
णिरत्थय) १, २ ; उव , सं ४१)।
णिरप्प अक [स्था] बैठना। णिरप्पइ ; (हे ४, १६)। भूअ—णिरप्पीअ ; (कुमा)।
णिरप्प पुं [दे] १ पृष्ठ, पीठ। २ वि. उद्वेष्टित, (दे ४,४६)।
णिरभिग्गह वि [निरभिग्रह] अभिग्रह-रहित ;(आचा १)।
णिरभिराम वि [निरभिराम] असुन्दर, अचारु, (पण्ह १,३)।
णिरभिलप्प वि [निरभिलाप्य] अनिर्वचनीय, वाणी से बतलाने को अशक्य ; (विसे ४८८)।
णिरभिस्संग वि [निरभिष्वङ्ग] आसक्ति-रहित, निःस्पृह (पंचा २, ६)।
णिरय पुं [निरय] १ नरक, पाप-भोग-स्थान ; (ठा ४, १; आचा ; सुपा १४०)। २ नरक-स्थित जीव, नारक, (ठा १०)। °पाल पुं [°पाल] देव-विशेष, (ठा ४,१)। °पविभत्ति स्त्री [°प्रविभक्ति] १ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष; (निर १, १)। २ नरक-विभाग; (पंचभा)। ३ नरक जीवों को दुःख देने वाले देवों की एक जाति, परमाधार्मिक देव ; (सम
णिरय वि [निरत] आसक्त, तत्पर, तल्लीन, (उव ; सुपा २६)।
णिरय वि [नीरजस्] रजो-रहित, निर्मल , (८७८)।
णिरय सक [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना। णिरयइ
णिरय सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना। णिरयइ
णिरयक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित, निरपे (निसे ७ टी)।
णिरयकंख वि [निरयकाङ्क्ष] स्पृहा-रहित, (औप)।
णिरयकंखि वि [निरयकाङ्क्षिन्] निःस्पृह, (स
णिरयगाह वि [निरयगाह] अवगाहन-रहित, (
णिरयग्गह वि [निरयग्रह] निरंकुश, स्वच्छन्द (पाम)।
णिरयच्च वि [निरपत्य] अपत्य-रहित, निःसं सम १६०)।
णिरयज्ज वि [निरवद्य] निर्दोष, विशुद्ध; (सुर ८, १८३)।
णिरयणाम देखो णिरोणाम; (उव)।
णिरयवक्ख देखो णिरवक्ख ; (आचा १, ६३)।
णिरयवय वि [निरवयव] अवयव-रहित, निर
णिरयवास वि [निरवकाश] अवकाश रहित,
णिरयराह वि [निरपराध] अपराध-रहित, बेगुन
णिरयराहि वि [निरपराधिन्] ऊपर देखो,
णिरयलंब वि [निरवलम्ब] सहारा रहित; (
णिरयलाव वि [निरपलाप] १ अपलाप-रहि बात को प्रकट नहीं करने वाला, दूसरे को नहीं (सम ५७)।
णिरयसंक वि [निरवशङ्क] दुःशङ्का-वर्जित
णिरयसर वि [निरवसर] अवसर-रहित ; (
णिरयसाण वि [निरवसान] अन्त-रहित, (
णिरयसेस वि [निरवशेष] सब, समस्त , (षड् ; से १, १७)।
णिरयाय वि [निरपाय] १ उपद्रव-रहित, निर्दोष, विशुद्ध ; (आचा १६ ; सुपा १७१)।

णिरास वि [दे] दुःखित, कृश ; (षड्)।
णिरासंस वि [निराशंस] आकाङ्क्षा-रहित, निरीह ; (सुपा ६२१)।
णिरासय वि [निराश्रय] निराधार; (कप्पो १६२)।
णिरासव वि [निरास्रव] आश्रव-रहित, कर्म-बन्धन के कारणों से रहित ; (पव २, १)।
णिराह वि [दे] निर्दय, निष्करुण ; (दे ४, ३७)।
णिरिक्ख वि [दे] अवलोकित, बाकी रखा हुआ ; (दे ४, ३८)।
णिरिक्ख वि [दे] नग्न, नंगा हुआ ; (दे ४, ३९)।
णिरिंगी [दे] देखो चीरिंगी ; (गउड)।
णिरिक्खण वि [निरिक्षण] ईक्षण-रहित ; (मृग ७, १)।
णिरिक्खण सक [निर्+ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना। णिरिक्खइ, णिरिक्खए, (भग ; महा)। कर्म—णिरिक्खीअ, णिरिक्खिज्जमाण ; (भग, उप ३११ टी)। संकृ—णिरिक्खिऊण ; (भग)। हे—णिरिक्खणिज्जं ; (कप्पू)।
णिरिक्खण न [निरीक्षण] अवलोकन, (ठा १२०)।
णिरिक्खणा स्त्री [निरीक्षणा] अवलोकन, प्रतिलेखना ; (आव ३)।
णिरिक्खिअ वि [निरीक्षित] अवलोकित, दृष्ट ; (कप्पू ; पउम ४८, ४८)।
णिरिक्खिअ सक [निर्+क्षी] १ अवलोकन करना। २ भक्ष करना। णिरिक्खए, (हे ४, २३)।
णिरिक्खिअ वि [निर्क्षीण] अवलोकित, प्रतिलिखित (हुआ)।
णिरिक्खिअ वि [निरञ्जन] अञ्जन-रहित, उज्ज्वल ; (उप ३, १ टी—पव १२०)।
णिरिक्खिअ सक [रञ्ज्] रंगना। णिरिक्खिए ; (हे ४, १६९)।
णिरिक्खिअ सक [लिप्] लेपना। णिरिक्खिए, (हे ४, १८६)।
णिरिक्खिअ सक [लस्] प्रकाशित करना, चमकाना। णिरिक्खए, (हे ४, १८८, हुआ)।
णिरिक्खिअंसिअ वि [अंस] कंधा हुआ, कंधा, (हुआ)।
णिरिक्खिअसिअ वि [सित] बँधा हुआ ; (हुआ)।
णिरिक्खिअ सक [लिप्] लेपना। णिरिक्खिए ; (हे ४, १८६)।
णिरिक्खिअ वि [निरीक्षित] देखा हुआ, दृष्ट ; (हुआ)।
णिरिक्खी स्त्री [निरीक्षी] एक देवी का नाम, (कप्प)।
णिरिच्छ वि [दे] निरीह, निःस्पृह, (हुआ, हुआ ११२)।
णिरिण न [दे] अरण्य, जंगल ; (दे ४, ३०)।
णिरिणी स्त्री [दे] अरण्य, जंगल ; (दे ४, ३०)।
णिरिद्ध वि [दे] दरिद्र, निर्धन ; (दे ४, ३१)।
णिरिद्ध वि [निरिद्ध] निरुद्ध, रोका हुआ ; (दे ४, ३१)।
णिरिद्धण न [दे] दारिद्र्य, निर्धनता ; (दे ४, ३१)।
णिरिद्धण न [निरिन्धन] इन्धन-रहित ; (मृग ७, १)।
णिरिद्धिअ वि [दे] दरिद्र, निर्धन ; (दे ४, ३१)।
णिरिद्धिअ वि [निरिद्ध] निरुद्ध, रोका हुआ ; (दे ४, ३१)।
णिरिद्धिअ वि [निरिन्धित] इन्धन-रहित ; (मृग ७, १

निरुत्तिल वि [निरुत्तिल] अनुपधि के अनुसार विशेष अर्थ किया जाय वह शब्द ; (अनु)।
निरुदर वि [निरुदर] उदर से रहित, क्षुद्र । स्त्री—री; (पउ १, ४)।
निरुद्ध वि [निरुद्ध] १ रोका हुआ, (स्वप्न १, १)। २ अवरुद्ध, आच्छादित ; (सुअ १, २, ३)। ३ पु. मरण की एक अवधि ; (कम्म)।
निरुद्धव } देखो निरुंभ।
निरुद्धंत }
निरुद्धि पुंस्त्री [द्वि] कुम्भार की आहरनी वगैरह एक जन्तु ; (दे ४, १७)।
निरुवकिट्ठ देखो निरुवक्किट्ठ ; (भग)।
निरुवक्कम वि [निरुपक्रम] १ जो कम न किया जा सके वह (अनुत्त); (सुर २, १३२, सुपा २०४)। २ दीर्घ-रहित, अनाय ; " निरुवक्कमाउनिरुद्धमसंकेज्जवासजीवियस्सवी " (सुर ३१)।
निरुवक्कय वि [द्वि] अनकृत, नहीं किया हुआ; (दे ४, ४१)।
निरुवकिट्ठ वि [निरुपकिष्ट] क्लेश-वर्जित, दुःख-रहित; (भग २६, ७)।
निरुवक्लेस वि [निरुपक्लेश] संक्लेश आदि क्लेशों से रहित, (उप ७)।
निरुवगारि वि [निरुपकारिन्] उपकार को नहीं मानने वाला, प्रत्युपकार नहीं करने वाला; (भग)।
निरुवग्गह वि [निरुपग्रह] उपकार नहीं करने वाला; (उप ४, ३)।
निरुवट्ठाणि वि [निरुपस्थानिन्] निरर्थक, आडम्बरी; (भाव)।
निरुवद्दव वि [निरुपद्रव] उपद्रव-रहित, आबाधा-वर्जित ; (औप)।
निरुवम वि [निरुपम] अनुपम, अनुत्तर ; (औप ; महा)।
निरुवयरिय वि [निरुपचरित] वास्तविक, तथ्य; (आचा १, २)।
निरुवयार वि [निरुपकार] उपकार-रहित; (उव)।
निरुवलेव वि [निरुपलेप] लेप-वर्जित, अ-दित; (कम्म)। "रयणेहिं निरुवलेवा" (पउम १४, ६४)।
निरुवसग्ग वि [निरुपसर्ग] १ उपसर्ग-रहित, उपद्रव-वर्जित; (सुअ १८७)। २ पु. मोक्ष, मुक्ति; (पंचा ; धर्म २)। ३ न. उपसर्ग का अभाव ; (ठा ३)।
निरुवहय वि [निरुपहत] १ उपघात-रहित, अक्षत ; (भग ७, १)। २ स्खलना से शून्य, अ-स्खलित; (सुअ २६८)।
निरुवहि वि [निरुपधि] माया-रहित, निष्कपट; (दसनि-१)।
निरुवहार सक [हृ] हरण करना। निरुवहरे ; (हे ४, २०६)।
निरुवहारिम वि [गृहीत] उपात्त, गृहीत; (कुमा)।
निरुवालंभ वि [निरुपालम्भ] उपालम्भ-शून्य ; (पंचा)।
निरुविग्ग वि [निरुद्विग्न] उद्वेग-रहित ; (पाचा १, १—पत्र ६)।
निरुस्साह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन; (सुअ १,४,१)।
निरूव सक [नि+रूपय] १ विचार कर कहना। २ देखना। ४ दिखलाना। ५ स्वीकार करना। निरूवेइ; (महा)। कर्म—निरूविउंत, निरूवमाण; (सुर १४, २०६ ; इक २७६)। संकृ—निरूविऊण; (पंचा ८)। हेकृ—निरूवियव्व; (पंचा ११)। हेकृ—निरूविउं; (सुअ २०८)।
निरूवण न [निरूपण] १ निर्देश, निरीक्षण ; (ठा ३३०)। २ वि. दिखलाने वाला। स्त्री—णी; (पंचा ११, २२)।
निरूवणया स्त्री [निरूपणा] निरूपण ; (ठा ३३०)।
निरूवावित्त वि [निरूपित] प्रेरित, जिस की खोज कराई गई हो वह ; (स ६३६; ७४३)।
निरूविम वि [निरूपित] १ देखा हुआ ; (हे १३, १३; सुअ १२३)। २ आलोचना कर कहा हुआ ; ३ विवेचित, प्रतिपादित; (हे ३, ४०)। ४ दिखलाया हुआ; ५ गवेषित; (प्राकृ)।
निरूसुय वि [निरुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित ; (गउड)।
निरूह पुं [निरूह] अनुवासना-विशेष, एक तरह का विरेचन; (पाचा १, १३)।
निरेय वि [निरेजस्] निष्कंप, स्थिर; (भग २६, ४)।
निरेयण वि [निरेजन] निश्चल, स्थिर ; (कम्म ; औप)।
निरोयाम पुं [निरयनाम] नक्षत्र-रहित, अनियत, अदीर्घ;(ठा)।
निरोय वि [नीरोग] रोग-रहित ; (औप; पाचा १, १)।
निरोव पुं [द्वि] आदेश, आज्ञा, हुक्म ; (सुअ १२४)।
निरोवयार वि [निरुपकार] उपकार को नहीं मानने वाला; (ओघ ११३ भा)।
निरोवयारि वि [निरुपकारिन्] ऊपर देखो ; (उव)।
निरोविम देखो निरूविम ; (सुअ ४६६ ; महा)।

णिरोह पुं [निरोध] रुकावट, रोकना, (औ ४, १, औप, पाअ)।
णिरोहग वि [निरोधक] रोकने वाला ; (रंभा)।
णिरोहण न [निरोधन] रुकावट , (पाअ १, १)।
णिल्लंक पुं [दे] पतिगृह, निकेतन, ग्रहण-पात्र; (दे ४,३१)।
णिलय पुं [निलय] घर, स्थान, आश्रय ; (से २, २ ; गा ४२१ ; पाअ)।
णिलयण न [निलयन] वसति, स्थान ; (विसे)।
णिलाड न [ललाट] भाल, कपाल ; (कुमा)।
णिलिअ देखो णिलीअ। णिलिअइ ; (षड्)।
णिलिंत नीचे देखो।
णिलिज्ज } सक [नि+ली] १ आलेष करना, भेंटना।
णिलीअ } २ दूर करना। ३ अक. छिप जाना। णिलिज्जइ, णिलीअइ ; (हे ४, ५५)। णिलिज्जिऊआ ; (कप्प)। वकृ—णिलिंत, णिलिज्जमाण, णिलीअंत, णिलीअमाण (कप्प , सुम २, १ ; कुमा प ४७४)।
णिलीअर वि [निलेतृ] आलेष करने वाला, भेंटने वाला, (कुमा)।
णिलुक्क देखो णिलीअ। णिलुक्कइ; (हे ४, ५५ , षड्)। वकृ—णिलुक्कंत ; (कुमा)।
णिलुक्क स० [तुद्] तोड़ना। णिलुक्कइ; (हे ४, ११६)।
णिलुक्क वि [दे. निलीन] १ निलीन, खूब छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त, तिरोहित ; (आया १, ८ ; से १६, २ ; गा ६४ ; सुर ६, ६ ; उव ; सुपा ६४०)। २ लीन, आसक्त ; (विसे ६०)।
णिलुक्कण न [निलयन] छिपना; (उप्र २१२)।
णिल्लंक [दे] देखो णिलंक ; (दे ४, ३१)।
णिल्लंछण न [निर्लाञ्छन] शरीर के किसी अवयव का छेदन, (उवा ; पडि)।
णिल्लच्छ देखो णेल्लच्छ ; (पि ६६)।
णिल्लच्छण वि [निर्लक्षण] १ मूर्ख, विवेकशून्य, (उप ७६७ टी)। २ अपलक्षण वाला, खराब ; (भा १२)।
णिल्लज्ज वि [निर्लज्ज] लज्जा-रहित ; (हे २,१६७; २००)
णिल्लज्जिम पुंस्त्री [निर्लज्जिमन्] निर्लज्जपन, बेशरमी ; (हे १, ३६)। स्त्री—°मा ; (हे १, ३६)।
णिल्लस अक [उत्+लस्] उल्लसना, विकसना। णिल्लसइ ; (हे ४, २०२)।
णिल्लसिअ वि [उल्लसित] उल्लास-युक्त, विकसित ; (कुमा)।
णिल्लसिअ वि [दे] निर्मल, निःशूक, निर्भय, (दे ४,३१)
णिल्लालिअ वि [निर्लालित] भी भावित, बहुत लिप्त हुआ ; (आया १, १ ; ८—पत्र १११ ; सुर १२, १११, मद्य)।
णिल्लुंछ सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना। णिल्लुंछइ (हे ४, ६१)।
णिल्लुंछिअ वि [मुक्त] त्यक्त, छोड़ा हुआ ; (कुमा)।
णिल्लुक्क वि [निर्लुंप्त] विनाशित ; (सिरि ११)।
णिल्लूर सक [छिद्] छेदन करना, काटना। णिल्लूरइ (हे ४, ११४)। णिल्लूरह; (आचा ६८)।
णिल्लूरण न [छेदन] छेद, विच्छेद ; (कुमा)।
णिल्लूरिय वि [छिन्न] काटा हुआ, विच्छिन्न, "कइ-विद्दुमाइयणिल्लुरियदविससंकडलं" (पउम ८, २१८)।
णिल्लेव वि [निर्लेप] लेप-रहित ; (विसे ३०८१)।
णिल्लेवग पुं [निर्लेपक] रजक, धोबी ; (आचा)।
णिल्लेवण न [निर्लेपन] १ मल को दूर करना, (ठा १)। २ वि. निर्लेप, लेप-रहित, (ओघ १६ भा)। °काल पुं [°काल] वह काल, जिस समय नरक में से भी नारक जीव न हो ; (भग)।
णिल्लेविअ वि [निर्लेपित] १ लेप-रहित किया हुआ ; २ बिलकुल लुप्त किया हुआ ; (भग)।
णिल्लेहण न [निर्लेखन] उत्खनन, पोंछना ; (ठा २, ३, २)।
णिल्लोम } वि [निर्लोम] लोम-रहित, रोम-शून्य ; (उप
णिल्लोह } ३६१ ; ठा १२ ; भवि)।
णिव पुं [नृप] राजा, नरेश ; (कुमा ; स्वप्न ४०)। °तणय वि [°संबन्धिन्] राज संबन्धी, राजकीय; (सुर ३१६)।
णिवइ पुं [नृपति] ऊपर देखो ; (ठा ३, १ ; पउम १०, ६)। °मग्ग पुं [°मार्ग] राज-मार्ग, आदिर सड़क, (पउम ७६, १६)।
णिवइअ वि [निपतित] १ नीचे गिरा हुआ ; (आचा ६ ७)। २ एक प्रकार का विष ; (ठा ४, ४)।
णिवइत्तु वि [निपतितृ] नीचे गिरने वाला ; (ठा ४, ४)।
णिवच्छण न [दे] अवतारण, उतरना ; (दे ४, ४०)।
णिवज्ज अक [निर्+पद्] निष्पन्न होना, नीपजना, बनना। णिवज्जइ ; (षड्)।

ज्झ क [नि+ध्यै] ध्यान करना, चिन्तन करना । -ज्झाअ, (उप ६०१)। -ज्झाइअ, (उ ६०१)। देखो—णिज्झाअ, (उ ६०१)। देखो—णिज्झाअ (उ ६०१)।

ज्झर [नि+झर्] १ झरना होना, गिरना, टपकना । २ क—णिज्झरेइ, (गाथा ११६)।

ज्झरि [निर्झरिन्] १ निर्झर, बड़ा झरना, प्रसिद्ध निर्झर । -णिज्झरी ; (हे ४, ३३१)।

ज्झरिअ न [निर्झरित] १ निर्झर, प्रसिद्ध निर्झर । सहसा बाहर आया हुआ जल का प्रवाह, (कप्प १, १—४)।

ज्झल क [नि+ध्यै] ध्यान करना, चिन्तन करना । -णिज्झाअ ; (उप ; षड् ; भग)। वह -णिज्झाएज्ज, णिज्झाएज्जा ; (भग ३४ ; भग ३, १३५)। संकृ—णिज्झाइअ, णिज्झाइत्ता ; (हे ४, ३३१ ; कप्प)।

ज्झयण न [निध्यायन] ध्यान-चिन्तन, (कम्म)।

ज्झविअ वि [निर्वापित] बुझाया हुआ ; (से १४, ७ ; गा ३३४ ; उप पृ ३६)।

ज्झाडिअ वि [निर्वापित] बुझाया हुआ करना ; (सुपा ; सण)।

ज्झत्त वि [निर्ध्यप्त] १ देखा हुआ ; (भग ; संथा ; ७२)। २ पुं. धर्मध्यान-विशेष, जिसमें धर्म आदि के प्रकार का ध्यान न किया जाता हो वह कायोत्सर्ग ; (आव ५)। 'णिज्झप्प पुं [निर्ध्यप्त] जिसमें आर्त व रौद्र ध्यान किया जाय वह कायोत्सर्ग ; (आव ५)।

ज्झप्पुस्सिग्ग पुं [निर्ध्यप्तोत्सर्ग] कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान किया जाता हो वह कायोत्सर्ग ; (आव ५)।

ज्झल देखो णिज्झट्ट = नि+झट् । वह—णिज्झलमाण ; (पउ १)। क—णिज्झलीअ ; (नाट—मृच्छ १०८)। वकृ—णिज्झलेंति ; (वि ११२)।

ज्झल देखो णिज्झट्ट—निज्झ ; (पउ ; कप्प)।

ज्झलण देखो णिज्झट्टण ; (भग ; हे २, १० ; कुमा)।

ज्झलय वि [निर्झलक] १ कर्मरूप आने वाला, लौटने वाला । २ लौटाने वाला, वापिस करने वाला ; (हे २, १० ; स)।

ज्झत्ति स्त्री [निर्वृत्ति] निर्वाण ; (उत्त)।

ज्झत्तिअ वि [निर्वर्तित] रोका हुआ, प्रतिषिद्ध ; (स ११४)।

ज्झत्तिअ वि [निर्वर्तित] निवर्तित ; "निर्वर्तित सत्पुरुषः" (स ११३)।

ज्झत्ति देखो णिज्झत्ति ; (पंचा ८)।

ज्झत्तण देखो णिज्झत्तण ; (स ४१०)।

ज्झत्तय देखो णिज्झट्ट । णिज्झत्तअ, णिज्झत्तय ; (कप्प ; उप १, ४)। वकृ—णिज्झत्तंत, णिज्झत्तमाण, (उप १४१ टी; सुर ४, ६४ ; कप्प)।

ज्झत्तय पुं [निर्यात] अंधेरा निकल जाना, अन्धकार-क्षय, (सुर ११, १४४)।

ज्झत्तण पुं [निर्यापन] वध-विशेष, (उप १०३१ टी)।

ज्झत्तय क [नि+यम्] नियम करना, संकल्प । णिज्झत्त ; (भग)। वह—णिज्झत्तंत, (सुपा २१६)। संकृ—णिज्झत्तिऊण, (सुपा ४८१)।

ज्झत्तण न [नियमन] यम, संकल्प ; (प्रभा १३६ ; भग ; सुपा २००)।

ज्झत्तिअ वि [नियमित] जिसने नियम किया हो वह ; (भग)।

ज्झत्तिर वि [नियमितृ] नियम करने वाला ; (सवृह)।

ज्झत्ति सक [गम्] जाना, गमन करना । णिज्झइ ; (हे ४, ११२)।

ज्झत्तव सक [नश्] भागना, पलायन करना । णिज्झइ ; (हे ४, १७८)।

ज्झत्तव सक [पिष्] पीसना । णिज्झइ ; (हे ४, १८६ ; षड्)।

ज्झत्तह पुंन [निवह] समूह, राशि, जत्था ; (से २, ४२ ; सुर ३, २३; प्राप्र १४४), "मच्छर ता पत्तनिवहं" (वज्जा १६२)।

ज्झत्तह पुं [दे] सम्पत्ति, वैभव; (दे ४, २६)।

ज्झत्तहिअ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त ; (कुमा)।

ज्झत्तहिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ; (कुमा)।

ज्झत्ताअ वि [निपातिन्] गिरने वाला ; (भवा)।

ज्झत्ताड सक [नि+पातय्] नीचे गिराना । निवाडेइ ; (स ६२०)। वकृ— णिवाडयंत, (स ६८६)। संकृ—णिवाडेऊणा ; (जीव ३)।

ज्झत्ताडिय वि [निपातित] नीचे गिराया हुआ; (भग)।

ज्झत्ताडिर वि [निपातयितृ] नीचे गिराने वाला; (सूत्र)।

ज्झत्ताण न [निपान] कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जलकुण्ड ; (स ३१२)।

णिव्वर सक [छिद्] छेदन करना, काटना। णिव्वरइ; (हे ४, १२४)।
णिव्वरण न [कथन] दुःख-निवेदन; (गा २५५)।
णिव्वरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ, खण्डित; (कुमा)।
णिव्वल सक [मुच्] दुःख को छोड़ना। णिव्वलेइ; (हे ४, ६१)।
णिव्वल अक [निर्+पद्] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना। णिव्वलइ; (हे ४, १२८)।
णिव्वल देखो णिव्वल=वर्। णिव्वलइ; (हे ४, १७२ टि)।
णिव्वल देखो णिव्वड=भू। वकृ—णिव्वलंत, णिव्वलमाण; (से १, ३६ ; ७, ४२)।
णिव्वलिअ वि [दे] १ जल-धौत, पानी से धोया हुआ; २ दूरीकृत; ३ निर्वृत्त, विमुक्त; (दे ४, ६१)।
णिव्वव सक [निर्+वापय्] ठंडा करना, बुझाना। णिव्ववेइ; (स ४६६)। णिव्ववसु; (काल)। वकृ—णिव्ववंत; (सुपा २१६)। कृ—णिव्ववियव्व; (सुपा २६०)।
णिव्ववण न [निर्वापण] १ बुझाना, शान्त करना; २ वि. शान्त करने वाला, तृषा को बुझाने वाला; (सुर ३, २३७)।
णिव्ववित वि [निर्वापित] बुझाया हुआ, ठंडा किया हुआ, (सुर ३, ७४)।
णिव्वह अक [निर्+वह्] १ निभना, निर्वाह करना, पार करना। २ आजीविका चलाना। णिव्वहइ; (स १०६; कुमा ६)। कर्म—णिव्वुव्वइ; (सि ४४१)। वकृ—णिव्वहंत, (सुर १२; सुपा ३३)। कृ—णिव्वहियव्व; (सुपा १०६)।
णिव्वह अक [उद्+वह्] १ पालन करना। २ आदर करना। णिव्वहइ; (षड्)।
णिव्वहण न [निर्वहण] निर्वाह, (सुपा १०६; सुर ३०६)।
णिव्वहिअ वि [दे] विरह, सताया; (दे ४, ३६)।
णिव्वा अक [वि+अम्] विश्राम करना। णिव्वाइ; (हे ४, १६६)। वकृ—णिव्वाअंत, (से ८, ८)।
णिव्वाअणसील वि [निर्वापणशील] बुझाने-शान्त करने का स्वभाव वाला; (औप)।
णिव्वाआवण वि [निर्वापयत्] १ बुझाने-शान्त करने वाला; (कप्प १, १ ; ठा ; पव १)। २ न. बुझाने का भाव; (कप्प १)।
णिव्वाआवणा स्त्री [निर्वापणा] वही क्रिया-देखो; (कप्प १, १ ; ठा ५, १ ; पव ५, १४६)।
णिव्वाण न [निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष, निर्वृति; (१६७६)। २ सुख, चैन, शान्ति, दुःख निवृत्ति; "वामणो निव्वाणं सुंदरि निस्संसयं कुणइ" (वज्जा ४८ ; पउम ४६, १६)। ३ बुझाना, विध्यापन, (ठा ४)। वि. बुझा हुआ; "जह दीवो निव्वाणो" (विसे ३३१० ; कुप्र ६१)। ४ पुं. ऐरवत वर्ष में होने वाले एक जिन का नाम, (सम १५४)।
णिव्वाण न [दे] दुःख-कथन; (दे ४, ११)।
णिव्वाणि पुं [निर्वाणिन्] भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल में संजात एक जिन देव; (पव ७)।
णिव्वाणी स्त्री [निर्वाणी] भगवान् श्री शान्तिनाथ की शासन-देवी; (संति १ ; १०)।
णिव्वाय वि [निर्वात] वायु-रहित, (सुर ३, २४)।
णिव्वाय वि [विश्रान्त] १ जिसने विश्राम लिया हो, (कुमा)। २ मुक्ति, निर्वृत; (से ११, ११)।
णिव्वाय वि [निर्वात] वायु-रहित, (सण ; औप)।
णिव्वालिय वि [भावित] पृथक् किया हुआ; (सुर ४, ५४)।
णिव्वाव देखो णिव्वय। णिव्वावेमि; (श ; महा—णिव्वाविऊण; (निचू १)।
णिव्वाव पुं [निर्वाप] बौद्ध आगम का एक ग्रन्थ (निचू १)। °कहा स्त्री [°कथा] एक ग्रन्थ कथा; (ठा ४, २)।
णिव्वावयसील (णो) वि [निर्वापकशील] बुझाने वाला; (सि ६००)।
णिव्वावण न [निर्वापण] बुझाना, विध्यापन, शान्त करना; (ठा ४, १)।
णिव्वावणा स्त्री [निर्वापणा] बुझाना, शान्ति; (सण)।
णिव्वाविय वि [निर्वापित] ठंडा किया हुआ; (कप्प १, १ ; दस ६, १)।
णिव्वासण न [निर्वासन] देश-निकाल; (सुर १४, ६३४; कुप्र १४१)।
णिव्वासणा स्त्री [निर्वासना] ऊपर देखो; (सुर ४, ५१)।

वाह पुं [निर्वाह] १ निभाना, पार-प्राप्ति। २ जीविका, जीवन-सामग्री, "निव्वाह हिंदि दाउ च" (सुर ४८८)।

निव्वाहग वि [निर्वाहक] निर्वाह करने वाला (पंच)।

निव्वाहण न [निर्वाहण] १ निर्वाह, निभाव ; (सुपा ३६४)। २ निर्वाह-कारण (राज)।

निव्वाहिम वि [निर्वाहित] अनिर्वाहित, बिताया हुआ, गुजारा हुआ ; (से ८, ४०)।

निव्वाहिय वि [निर्व्यायिक] व्यभिचार-रहित, संशय-रहित (से ८, ४२)।

निव्विआर वि [निर्विकार] विकार-रहित ; (गा ६०६)।

निव्विइच्छ वि [निर्विकल्पिक] १ पूर्व आदि दिशाओं के ख्याल से रहित ; (औप) । २ प्रत्याख्यान-विशेष, जिसमें पूर्व आदि दिशाओं का ख्याल किया जाता है (पव ४ ; पंच ५)।

निव्विइगिच्छ वि [निर्विचिकित्स] फल-प्राप्ति में संदेह-रहित ; (कुप्र ; धर्म २)।

निव्विइगिच्छ न [निर्विचिकित्स] फल-प्राप्ति में संदेह का अभाव ; (उत्त २८)।

निव्विइगिच्छा स्त्री [निर्विचिकित्सा] फल-प्राप्ति में संदेह-रहित ; (औप ; पंचा)।

निव्विइच्छ (कप्प) वि [निर्विकल्प] १ संदेह-रहित, निःसंशय ; (कप्प ; सम्म ३३)। २ भेद-रहित ; (सम्म ३३)।

निव्विइत्तिअ देखो निव्विइय ; (पउ २)।

निव्विइय वि [निर्विद्य] खिन्न-रहित, कायोत्सर्ग ; (सुपा ३८७ ; श्रा ७)।

निव्विउत्त वि [निर्विवेचित] विभक्त-रहित, विभक्त ; (सुर ७, १२३)।

निव्विउत्त सक [निर्+विवृत्] निर्णय करना, विचार करना। निव्विउत्तेऊआ : (उव)।

निव्विट्ठ वि [दे] दलित, मर्दित ; (दे ४, ३४)।

निव्विट्ठ वि [निर्विष्ट] ठगाया, अनर्थित, पीड़ित ; (पाअ ; भवि)। कारय न [°कारित] वैसा काम में प्रतिबन्धित एक तप का भेद ; (श्रावक ; हक)।

निव्विण्ण वि [निर्विण्ण] निर्वेद-प्राप्त, खिन्न ; (महा)।

निव्वित्त वि [दे] सो कर उठा हुआ ; (दे ४, ३२)। निव्वित्ति देखो निव्वत्ति। २ इन्द्रिय का आकार, इन्द्रिय-विशेष ; (विसे २६६४)।

निव्विदुगुंछ वि [निर्विजुगुप्स] घृणा-रहित ; (धर्म १)।

निव्विदुगुंछ वि [निर्विजुगुप्सु] घृणा-रहित ; (उव)।

निव्विन्न देखो निव्विण्ण ; (उत्त १)।

निव्विभाग वि [निर्विभाग] विभाग-रहित ; (उत्त १)।

निव्विसय वि [निर्विजन] १ मनुष्य-रहित, २ न. एकान्त स्थल ; (सुर ८, ४२)।

निव्विर वि [दे] विलिप्त, लेप्त हुआ ; "अइचिक्किरसलाए" (गा ७२८ टि)।

निव्विराम वि [निर्विराम] विराम-रहित ; (उत्त पृ १८३)।

निव्विलंबंकि वि [निर्विलम्ब] विलम्ब-रहित, शीघ्र ; (सुपा २५४ ; कुप्र ६२)।

निव्विवेअ वि [निर्विवेक] विवेक-शून्य ; (सुपा ३२३ ; ६०० ; गउड ; सुर ८, १८१)।

निव्विवेस सक [निर्+विश्] त्याग करना ; निव्विवेज्जा ; (कस)। वक —निव्वि तंत ; (गउ)।

निव्विस वि [निर्विष] विष-रहित ; (औप)।

निव्विसंक वि [निर्विशङ्क] संदेह-रहित, निर्भय ; (सुर १२, १८)।

निव्विसमाण न [निर्विशमान] १ चारित्र-विशेष ; (ठा ३, ४)। २ वि. उक्त चारित्र का पालने वाला ; (ठा ५, ३)। °कप्पट्ठिय स्त्री [°कल्पस्थिति] चारित्र-विशेष की मर्यादा (कप्प)।

निव्विसय वि [निर्विषय] १ विषयों की अभिलाषा-रहित ; (उत्त १४)। २ अनर्थक, निष्फल ; (पंचा ८२६)। ३ देश से बाहर किया हुआ, जिसको निकाले की सजा दी हो वह ; (सुर ८, ३८ ; सुपा ६६)।

निव्विसिट्ठ वि [निर्विशिष्ट] विशेष-रहित, साधारण (उत्त ३३० टी)।

निव्विसी स्त्री [निर्विधी] एक अौषधि ; (ती ६)।

निव्विसेस वि [निर्विशेष] १ विशेष-रहित ; (सम्म ६८ ; कप्प ६८)। २ अभाव ; (न २३ ; सम्म ६८ ; कप्प ६८)। ३ जो दूसरा न हो ; (से १४, ६५)।

निव्वुअ वि [निर्वृत] निर्वृति-प्राप्त ; (सम ६१

णिव्वुइ स्त्री [निर्वृति] १ निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति ; (कुमा ; प्राप्र १६४)। २ मन की स्वस्थता, निश्चिन्तता ; (सुर ४, ८६)। ३-सुत, दु ब-निवृति ; (आप ४)। ४ जैन साधुओं की एक शाखा , (कप्प)। ५ एक राजकन्या ; (उप ६३६)। °कर वि [°कर] निर्वृतिजनक , (पणह १)। °जणय वि [°जनक] निर्वृति का उत्पादक ; (ठा ४२१)।

णिव्वुड देखो णिव्वुअ , (कुमा ; आचा)।

णिव्वुड देखो णिवुड=नि+मज्ज्। वकृ—णिव्वुडमाण ; (राज)।

णिव्वुड वि [निर्व्यूढ] निर्वाहित, निभाया हुआ, (ठा ३२)।

णिव्वुत्त देखो णिवुत्त , (ठा १५५)।

णिव्वुत्त देखो णिव्वत्त=निर्वृत्त ; (पिंग)।

णिव्वुत्ति देखो णिव्वत्ति , (ठा ८२८)।

णिव्वुद देखो णिव्वुअ ; (सण्णि ६)।

णिव्वुम° देखो णिव्वह=निर् + वह।

णिव्वूढ वि [निर्व्यूढ] १ जिसका निर्वाह किया गया हो वह, २ कृत, विहित, निर्मित , (ठा २५५; से १, ४६)। ३ जिसने निर्वाह किया हो वह, पर-प्राप्त ; (विसे ४४)। ४ लब्ध, परिभुक्त; (से ५, ६२)। ५ बाहर निकाला हुआ, निस्सारित, "णिव्वूढा य वणिया तओ आहरणमासमाणत्ता" (उप १३१ टी)।

णिव्वूढ वि [दे] १ स्तब्ध; (दे ४, ३३)। २ न. घर का पश्चिम आँगन ; (दे ४, २६)।

णिव्वेअ पु [निर्वेद] १ खेद, विरक्ति ; (कुमा, प्र ६२)। २ संसार की निर्गुणता का अवधारण ; (उप ६८६)।

णिव्वेअण न [निर्वेदन] १ खेद, वैराग्य। २ वि. वैराग्यजनक। स्त्री—°णी ; (ठा ४, २)।

णिव्वेढ सक [निर्+वेष्टय्] १ नाश करना, क्षय करना। २ घेरना। ३ बाँधना। वकृ—णिव्वेढंत ; (विसे २७४६ ; आचा २, ३, २)।

णिव्वेढ सक [निर्+वेष्टय्] मजबूती से वेष्टन करना। णिव्वेढिज्ज, णिव्वेढेज्ज ; (आचा २, ३, २, २, पि ३०४)।

णिव्वेढ वि [दे] नग्न, नंगा ; (दे ४, ३८)।

णिव्वेर वि [निर्वैर] वैर-रहित ; (अच्चु ६६)।

णिव्वेरिअ वि [दे] १ निर्दय, निष्करुण ; २ अत्यन्त, अधिक ; (दे ४, ३७)।

णिव्वेल्ल अक [निर्+वेल्ल्] फूलना। णिव्वेल्लइ (पि १०७)।

णिव्वेलिअ वि [निर्वेल्लित] प्रस्फुरित, स्पन्दित, (से ११, १६)।

णिव्वेस वि [निर्द्वेष] द्वेष-रहित , (से १५, ८५)।

णिव्वेस पु [निर्वेश] १ लाभ, प्राप्ति ; (ठा ३, २)। २ व्यवस्था , "जम्मणा कलिमलं कहो कलयलु व णिव्वेसं" (अच्चु १८)।

णिव्वोड्डव्व वि [निर्वाढव्य] निर्वाह करने, (भग ६)।

णिव्वोल सक [क्वथ्] कोयले से हाँडी को मलिन करना। णिव्वोलइ , (हे ४, ६६)।

णिव्वोलण न [करण] कोयले से हाँडी का मलिन करना, (कुमा)।

णिस' देखो णिसा , (कुमा . पउम १२, ६५)।

णिस सक [नि+अस्] स्थापन करना। णिसइ , (औप)

णिसंत वि [निशान्त] १ श्रुत, सुना हुआ , (ठा १, १; ४, उ३)। २ अत्यन्त ठंडा, (आचा)। ३ रात्रिक आगमन, प्रभात, "जहा णिसंते तारगच्चिमालो, पभासई केवलभारहं तु" (दस ६, १, १)।

णिसंस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय , (सुपा ४०६)।

णिसग्ग पु [निसर्ग] १ स्वभाव, प्रकृति , (ठा २, १, कुप्र १४८)। २ निसर्जन, त्याग, (विसे)।

णिसग्ग वि [नैसर्ग] स्वभाव से होने वाला, स्वाभाविक ; (सुपा ६४८)।

णिसग्गिय वि [नैसर्गिक] स्वाभाविक ; (सण)।

णिसज्जा स्त्री [निषद्या] १ आसन , (दस ६)। २ उपवेशन, बैठना; (वव ४)। देखो णिसिज्जा।

णिसट्ठ वि [निसृष्ट] १ निकाला हुआ, त्यक्त ; (सुपा १, १६)। २ दत्त, दिया हुआ , (णाया १, १—पत्र ७१)।

णिसट्ठ वि [दे] प्रचुर, बहुत , (आप ८७)।

णिसट्ठ (आप) वि [निषण्ण] बैठा हुआ ; (सण)।

णिसढ पु [निषध] १ हरिवर्ष क्षेत्र से उत्तर में स्थित एक पर्वत , (ठा २, ३)। २ रामण सेवार एक वानर, राम-सैनिक ; (से ४, १०)। ३ बैल, साँड , (सुपा ४)। ४ वसुदेव का एक पुत्र, (निर १, १, उत्त १७१)। ५ देश-विशेष ; ६ निषध देश का राजा , (कुमा)। ७ स्व विशेष ; (हे १, २२६ ; प्राप्र)। °कूड न [°कूट

निस्सरण न [निःसरण] १ निर्गम, निकास (सुर ३, ७; सुपा ३१६; ४४१; ५२७; सण) । २ मोक्ष, मुक्ति (सुपा ४) ।

निस्सरणी स्त्री [निःसरणी] १ सीढ़ी, निसेनी (सुर १०८; सुपा ३१६; ४४१; ५२७; सण) । २ मोक्ष, मुक्ति (सुपा ४) ।

निस्सरिय वि [निःसृत] १ निर्गत, (भवि ३, ३८) ।

निस्सरिर वि [निःसरिन्] १ निर्गमन करनेवाला, (हे ४, ३०) ।

निस्सल्ल वि [निःशल्य] १ शल्य-रहित, (सुपा ३, १) ।

निस्सह वि [निःसह] १ शक्ति-रहित, असमर्थ; (सुर ३, ७८) । २ असहिष्णु, क्षमा-रहित; (सुर १, ७) । ३ कष्ट-सहिष्णु, (सुर ३, ७८) ।

निस्सहाव वि [निःस्वभाव] १ स्वभाव-रहित, (सुर ३, ७८) । २ असत्य, मिथ्या; (सुर ३, ७८) ।

निस्सहि देखो निसीहि । °कड वि [°कृत] निसीहि-युक्त किया हुआ; (सण) ।

निस्सहि देखो निस्सह; (पउ) ।

निस्सा स्त्री [निश्रा] १ आश्रय, सहारा; (कुमा, प्राप्र ६६) २ पंखे का डण्डा, सिरा; (उत्त) । °अर पुं [°कर] पंखा, पंखा; (हे १, ८; षड्) । °अरद्द पुं [°चरेन्द्र] राजाओं का राजा, राजाधिराज; (स ७, ६८) । °नाह पुं [°नाथ] चमर, पंखा; (पाअ ४१६) । °लट्ठ न [°यष्टि] डिंडा-युक्त, पंखे का पंखड़ा, डण्डा; (उत्त) । °वइ पुं [°पति] चमर, पंखा; (गउड) । देखो निसि ।

निस्साण वि [निःस्वान] शब्द का अभाव, चैतन्य, संज्ञा का अभाव; संकृ —निस्साणिऊण; (स १४३) ।

निस्साण न [निशाण] शस्त्र, एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किया जाता है; (गउड; सुर ३८) ।

निस्सामिय वि [निःस्वामिक] शस्त्र दिया हुआ, पत्थर पर तेज किया हुआ; (सुर ६६) ।

निस्साम देखो निस्सम । निस्सर; (भवि) । वकृ—निस्सामेंत; (सुर ३, ७८) । संकृ —निस्सामिऊण, निस्सामित्ता; (भवि; उव २) ।

निस्साम वि [निःश्याम] अतिशय-श्यामल, निर्मल; (से ६, ४७) ।

निस्सामण देखो निस्समण; (सुर ३३) ।

निस्सामिय वि [हे. निशामित] १ सुना, आकर्णित; (हे ४, २७; षड्; सण २६) । २ दत्तचित्त, दत्तावधान हुआ; ३ निश्चल हुआ, संकल्पित; "निस्सामियो व्व सयलोओ" (स ३६८) ।

निस्सामिर वि [निशामयितृ] सुनने वाला; (सण) ।

निस्साय वि [दे] अनुचर; (दे ८, ३४) ।

निस्साय वि [निशात] शस्त्र दिया हुआ, तीक्ष्ण; (प्राप्र)।

निस्साय पुं [निषाद] १ चण्डाल; (दे ४, ३६) । २ म्लेच्छ-विशेष; (इक) ।

निस्सारंत वि [निःसारयत्] निकाल रहा, बाहर करता; (सण)।

निस्सास सक [निर्+श्वासय्] निःश्वास डालना । वकृ—निस्सासयंत; (पउम ६१, ३३) ।

निस्सास देखो नीसास; (सिरि) ।

निसि देखो निसा; (हे १, ८; ३१; षड्; महा; सुर १, २७) । °यल न [°तल] छत; (सिरि) । °यल न [°अङ्क] रात्रि-भोजन; (सिरि ७८७) । °मुह न [°मुख] रात्रि-भोजन; (सुपा ४८६) ।

निसिअ देखो निसाअ । तिसिअ; (सण; कम) । संकृ—निसिअ; (कम) ।

निसिअ वि [निशित] शस्त्र दिया हुआ, तीक्ष्ण; (से ६, ४८; महा; हे ४, ३३०) ।

निसिअक सक [नि+सिच्] प्रवेश करना, डालना । संकृ —निसिअिकिऊण; (भाषा) ।

निसिअड्डा देखो निसअड्डा; (कम; सम ३६; ज ६,१) । ३ उदयस्थ, सायुज्य का स्थान; (पंच ४) ।

निसिअकमाण देखो निसेह=नि+सिध् ।

निसिट्ठ वि [निसृष्ट] १ बाहर निकाला हुआ; (सण १०) । २ दत्त, प्रदत्त; (भाषा) । ३ अनुज्ञात; (हे २) । ४ बनाया हुआ । विशे. "अन्नहाहं...पडमो निट्ठो निसिट्ठ दसणेहिं" (उव ६०६ टी) ।

निसिद्ध वि [निषिद्ध] प्रतिषिद्ध, निवारित; (पंचा १२)।

निसिर सक [नि+सृज्] १ बाहर निकालना । २ देना, स्थान करना । ३ करना । तिसिरइ; (भाल ६; भग) । "सिरसाहडाउ । निसिरंति जे न दंडं, तेवि हु सामंतिणि निआयं" (सुर १५, २३४) । कर्म—निसिरिज्जइ, निसिरिज्जए; (विसे ३६०) । वकृ—निसिरंत; (वि २३६) । कवकृ—निसिरिज्जमाण; (वि २३६) । संकृ—निसिरित्ता; (वि २३६) । प्रयो—निसिरावेंति; (वि २३६) ।

णिसिरण न [निसर्जन] १ निस्सारण; (भग २०)। २ त्याग; (आचा १, १६)।

णिसिरणया } स्त्री [निसर्जना] १ त्याग, दान; (आचा
णिसिरणा } १, १, १०)। २ निस्सारण, निष्कासन; (भग)।

णिसिरम्म अक [नि + पद्] बैठना। णिसीअइ, (भग)। वकृ—णिसीअंत, णिसीअमाण, (भग ११, ६; सूअ १, १, २)। संकृ—णिसीइत्ता; (कप्प)। हेकृ—णिसीइत्तए, (कप्प)। कृ—णिसीइयव्व; (णाया १, १, भग)।

णिसीअण न [निषदन] उपवेशन, बैठना, (उत्त २६ टी, स १८०)।

णिसीअणया न [निषादन] बैठाना, (कप्प ८, २६ टी)।

णिसीढ देखो णिसट्ठ=निषीद; (हे १, २११, कुमा)।

णिसीयण देखो णिसीअण, (औप)।

णिसीयाइ पुं [निषाद] १ अन्त्य जाति; (हे १, २११, कुमा)। २ प्रकाश का अभाव; (निचू १)। ३ न जैन आगम ग्रन्थ विशेष, (चंदि)।

णिसीरि पुं [नृसिंह] उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य, (कुमा)।

णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] १ स्वाध्याय भूमि, अध्ययन-स्थान, (आचा २, २, २)। २ पाठ समय के लिए उत्तम स्थान; (भग १८, १०)। ३ आचाराङ्ग सूत्र का एक अध्ययन; (आचा २, २, २)।

णिसीहिया स्त्री [नैषेधिकी] १ स्वाध्याय-भूमि, (सम ४०)। २ पाप-क्रिया का त्याग; (पंचा, कुमा)। ३ व्याख्यान्त के लिए जो अक्षर (ठा १०)। देखो णिसेहिया।

णिसीहिणी स्त्री [निशीथिनी] रात्रि, रात, (उत्त ३३)। °णाह पुं [नाथ] चन्द्रमा, (हम)।

णिसुढ वि [दे] निपुण, अत्यन्त, (हे ४, २०, सुर १, १६६; २, २१६, महा, पउम)।

णिसुंढ पुं [निषुम्ब] रावण का एक सुभट, (पउम ५६, ७६)।

णिसुंभ सक [नि + शुम्भ्] मार डालना, अत्यन्त दुःख देना। वकृ—णिसुंभंत, णिसुंभमाण, (स ६, ६६; १८, १, पि ६३८)।

णिसुंभ पुं [निशुम्भ] १ अत्यन्त-अत्यन्त एक राक्षस, एक प्रतिवासुदेव, (पउम ६, १६६; सम १११)। २ जैन भिक्षु, (निचू)।

णिसुंभण न [निशुम्भन] १ मर्दन, अत्यन्त दुःख देना। वि, मार डालने वाला; (सूअ १, ६, १)।

णिसुंभा स्त्री [निशुम्भा] रावण-रक्षित एक नगरी, (णाया २; इक)।

णिसुंभिअ वि [निशुम्भित] निपातित, अत्यन्त दुःख दिया हुआ, (पउम ४६०)।

णिसुट्ठ } वि [दे] ऊपर देखो, (हे ४, २५८; षड्)।
णिसुट्ठिअ }

णिसुड देखो णिसुढ=नम्। निपुण; (षड्)।

णिसुड्ढ देखो णिसुट्ठ; (हे ४, २५८ टि)।

णिसुढ अक [नम्] भार से आक्रान्त होकर नीचे नमना, णिसुढइ, (हे ४, १५८)।

णिसुढ सक [नि + शुम्भ्] मारना, मार डालना। वकृ—णिसुढिज्जंत, (स ३, ६७)।

णिसुढिअ वि [नत] भार से नमा हुआ, (पउम)।

णिसुढिअ वि [निशुम्भित] निपातित; (से १२)।

णिसुढिर वि [नम्र] भार से नमा हुआ; (हेका)।

णिसुण सक [नि + श्रु] सुनना, श्रवण करना। णिसुणेइ, णिसुणेमि, (सण, महा, सुपा १२८)। णिसुणंत, णिसुणमाण, (सुपा १०२, सुर ११, १ कवकृ—णिसुणिज्जंत, (सुपा ४६, रयण ६८)। णिसुणिउ, णिसुणिऊण, णिसुणिऊणं, (सुपा महा, पि ६८६)।

णिसुद्ध वि [दे] १ पालित, पोषित हुआ, (दे ६, पाम, स ६, ६८)।

णिसुब्भंत देखो णिसुंभ=नि + शुम्भ्।

णिसूण देखो णिसूण, (सुपा २००)।

णिसूढ देखो णिसुढ=नि+शुभ्। हेकृ—णिसूढिउं, (उप ३३६)।

णिसेअया देखो णिसेज्जा, (उत्त, पडि ६०)।

णिसेगि देखो णिसेलि, (सुर १२, ११०)।

णिसेग पुं [निषेक] १ कर्म-पुद्गलों की स्थिति विशेष, (कम्म ६) २ सेचन, सींचना, "जा णवरं णिसेगाभावकालमेत्तेण परिहीणा णिसेगट्ठिदि" (सुपा ३६६)। "दंसणमोहणिसेगं" (सुपा ३०)।

णिसेव सक [नि+सेव्] १ बार बार करना, अत्यन्त अभ्यास करना। णिसेवइ, णिसेवए, (महा, उप ३१)। २ नि

आय ; स्त्र) । °दाय—निर्वेदायेदं, स्त्र २६ । । °दि—निर्वेदिन् , स्त्र ३१) ।

निर्वेदय वि [निर्वेदक] १ खेद पैदा करने वाला । २ आश्चर्य करने वाला ; (पणह १, १) ।

निर्वेदि वि [निर्वेदिन्] खेद देने , (स ९०) ।

निर्वेदिय वि [निर्वेदित] १ खिन्न, उद्विग्न , (आचा । २ आश्चर्य , (उत्त २० । ।

निर्वेद स्त्र [निर्+विद्] खेद ; वैराग्य, विरक्ति, संसार । निर्वेद ; (दे ८, ९३) । °कर—निर्वेदकरणकथा , (सूत्र १, ६) । °कहा—निर्वेदिनी , (स ५१८ । । °णी "निर्वेदिनीया सर्वत्र अत्र " (स ५१) ।

निर्वेय वि [निर्वेद] १ उत्पन्न नियत , (उत्त , उव्व ९८१) । २ अवसर ; (आचा २ । ।

निर्वेयण न [निर्वेदन] निवारण , (आचा) ।

निर्वेयणा स्त्री [निर्वेदना] निवारण ; आचा १) ।

निर्वेयिया देखो निव्वाहिअ=निर्वेदित । १ दुखित, व्यथित, २ स्वजनादि ; ३ खेदके का स्थान , ४ निवारा, दूर करने का काम ; (स्त्र) ।

निर्वेय वि [निर्वेद्य] निर्वेद, खेदरहित , (पंच १ । °यर वि [°कर] १ निर्वेदकारक । २ कर्म का दूर करने वाला; (आचा १, ४, १) ।

निर्वेयंक वु [दे] निर्वेद , (दे ४, ३२) ।

निर्वेयंक वि [निःशङ्क] १ शङ्कारहित , (सूत्र २, ७ ; स्त्र) । २ न. शङ्का का अभाव ; (पंचा ८) ।

निर्वेयंकिय वि [निःशङ्कित] १ शङ्कारहित ; (ओघ ४१ भा ; स्त्र १, ३) । २ न. शङ्का का अभाव , (उत्त २८) ।

निर्वेयंग वि [निःशङ्क] शङ्कारहित ; (सूत्र १४०) ।

निर्वेयंचार वि [निःसंचार] संचाररहित, गमनागमन-रहित ; (सूत्र १, ८) ।

निर्वेयंजम वि [निस्संयम] संयमरहित ; (पडम २, ५) ।

निर्वेयंत वि [निःशान्त] प्रशान्त, अत्यन्त शान्त ; (स्त्र) ।

निर्वेयंद देखो णीयंद ; (पाअ १, १ ; गउड—णालवी ३१) ।

निर्वेयंदेह वि [निस्संदेह] संदेहरहित, निःसंशय ; (कुल) ।

निर्वेयंधि वि [निस्सन्धि] सन्धिरहित, सँधा से रहित ; (पउम १, १) ।

निर्वेयंस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय ; महा) ।

निर्वेयंस वि [निःशंस] श्लाघारहित , (पंच १, ६) ।

निर्वेयंसय वि [निःसंशय] १ संदेहरहित । २ निश्चित, निःसंदेह, निस्संशय ; (ठाण १८४ ; स्त्र) ।

निर्वेयंसय वु [निःसंशय] १ संदेहरहित । २ निश्चित, निःसंदेह, निस्संशय ; (स्त्र) ।

निर्वेयंसिय वु [निःसंशय] १ संदेहरहित । २ निश्चित, निःसंदेह, निस्संशय ; (स्त्र) ।

निर्वेयग वु [निःस्वत] नाग, अजगर ; (कुल २७) ।

निर्वेयगय वि [निःसंग] संगरहित ; (सूत्र १, ६, ३) ।

निर्वेयल वि [निःसत्त्व] धैर्यरहित, सत्त्वहीन, (सूत्र १६६) ।

निर्वेयल्ल देखो निव्वलय ; (स्त्र ४) ।

निर्वेयव्व अक [निर्+श्रम्] थकना ; वह—निव्वयंति, (से ६, ३८) ।

निर्वेयार अक [निर्+सृ] बाहर निकलना । निस्सर ; (स्त्र) । वह—निव्वरंत ; (स्त्र—चैत्र ३८) ।

निर्वेयरण न [निःसरण] निर्गम, बाहर निकलना ; (उत्त ६, १) ।

निर्वेयरण वि [निःसारण] सारणरहित, असारणीय ; (पउम ३३, ३१) ।

निर्वेयरिय वि [दे] जला, निरस्त हुआ ; (दे ४, ४०) ।

निर्वेयलुक वि [निःसार] सत्त्वरहित ; (उत्त १३० ; दे १, ७) ।

निर्वेयस अक [निर्+श्वस्] निःश्वास लेना । निस्सर, निस्सरति ; (स्त्र) । वह—निस्सरिउज्जमाण; (ठाण १०) ।

निर्वेयह वि [निःसह] असह, असक्त ; (दे ७, १३ ; ८३ ; कुमा) ।

निर्वेयहा स्त्री [निद्रा] १ आत्मज्ञान, आश्रय, सहारा ; (उप ६, ३) । २ अपेक्षा ; (उव १३० टी) । ३ पर्वतपर ; (पव ३) ।

निर्वेयाअ न [निद्राल] निद्रा, अवलम्बन ; (पंच १, ३) । °पय न [°पद] आश्रय ; (पिंड १) ।

निर्वेयार सक [निर्+सारय्] बाहर निकालना । निस्सारय ; (कुल १४४) ।

निर्वेयार) वि [निःसार] १ सारहीन, निरर्थक ; (अणु ; निर्वेयारग) सुख १, १ ; आचा) । २ जीर्ण, पुराना; (आचा) ।

निर्वेयारय वि [निःसारक] निकालने वाला ; (उव १३० टी) ।

निर्वेयारिय वि [निःसारित] १ निकाला हुआ ; २ अवहित, अर्क दिया हुआ ; (सूत्र १, १४) ।

निर्वेयास वु [निःश्वास] निःश्वास, नाक का श्वास ; (स्त्र) । २ कालज्ञान विशेष ; (इक) । ३ प्रश्नशास्त्र प्रसिद्ध ;(स्त्र) ।

निर्वेयाहार वि [निःसाहार] निराहार, आहाररहित, (स्त्र) ।

णीसरण न [निःसरण] निर्गमन ; (से ६, १८)।
णीसरिअ वि [निःसृत] निर्गत, निर्यात ; (सुपा २४७)।
णीसल वि [निःशल] १ निश्चल, स्थिर ; २ कपटा-रहित, उत्तान, सपाट ; "नीसलनिच्चियदायएहिं मइयवउक्किएहिं" (सुर ३, ७२)।
णीसल्ल वि [निःशल्य] शल्य-रहित ; (भवि)।
णीसव सक [नि+श्रावय्] निर्जरा करना, क्षय करना। वकृ—नीसवमाण, (विसे २७४६)।
णीसवग देखो णीसवय ; (आवम)।
णीसवत्त वि [निःसपत्न] शत्रु-रहित, विपक्ष-रहित, (मृच्छ ८; पि २७६)।
णीसवय वि [निश्रावक] निर्जरा करने वाला; (विसे २७४६)।
णीसस अक [निर्+श्वस्] नीसास लेना, श्वास को नीचा करना। णीससइ, (षड्)। वकृ—णीससंत, णीससमाण, (गा ३३ ; कुप्र ४३ , आचा २,२,३)। संकृ—णीससिअ, णीससिऊण, (नाट ; महा)।
णीससण न [नि श्वसन] नि श्वास; (कुमा)।
णीससिअ न [निःश्वसित] नि श्वास ; (से १, ३८)।
णीसह वि [नि.सह] मन्द, अशक्त, (हे १,१३; कुमा)।
णीसह वि [निःशाख] शाखा-रहित, (गा २३०)।
णीसा स्त्री [दे] पीसने का पत्थर (दस ६, १)।
णीसा देखो णिस्सा, (कप्प)।
णीसामण्ण } वि [नि सामान्य] १ असाधारण, (गउड,
णीसामन्न } सुपा ६१ ; हे २, २१२)। २ गुरु, (पाम)।
णीसार सक [निर्+सारय्] बाहर निकालना। णीसारइ, (भवि)। कर्म—नीसारिज्जइ ; (कुप्र १४०)।
णीसार पु [दे] मण्डप ; (दे ४, ४१)।
णीसार वि [नि सार] सार-रहित, फल्गु, (से ३,४८)।
णीसारण न [नि.सारण] निष्कासन, बाहर निकालना ; (सुर १६, २०१)।
णीसारय वि [नि सारक] बाहर निकालने वाला, (से ३, ४८)।
णीसारिय वि [नि सारित] निष्कासित; (सुर ६,१८८)।
णीसास देखो णिस्सास ; (हे १, ६३ ; कुमा ; प्राप्र)।
णीसास } वि [नि श्वास,क] नि श्वास लेने वाला ;
णीसासय } (विसे २७१६ ; २७१४)।
णीसाहार देखो णिस्साहार ; "नीसाहारा य पत्र मू (सुर ७, २३)।
णिसित्त वि [निःसिक्त] अत्यन्त सिक्त, (षड्)
णीसीमिअ वि [दे] निर्वासित, देश-बाहर किया हु (दे ४, ४२)।
णीसेयस देखो णिस्सेयस ; (जीव ३)।
णीसेणि स्त्री [निःश्रेणि] सीढ़ी ; (सुर १३, १६
णीसेस देखो णिस्सेस ; (गउड ; उव)।
णीहडु अ [निष्काल कर, (आचा २, ६, २)।
णीहड वि [निर्हृत] १ निर्गत, निर्यात ; (आचा २, १)। २ बाहर निकाला हुआ ; (बृह १; कस)।
णीहडिया स्त्री [निर्हृतिका] अन्य स्थान में ले जाया द्रव्य, (बृह २)।
णीहम्म अक [निर्+हम्] निकलना। णीहम्मइ ; (४, १६२)।
णीहम्मिअ वि [निर्हम्मित] निर्गत, नि सृत ; (दे ४, ४१
णीहर अक [निर्+ सृ] १ बाहर निकलना। णीहरइ (हे ४, ७६)। वकृ—नीहरंत ; (सुपा ४८१) संकृ—णीहरिअ ; (निचू ६)। कृ—णीहरियव्व (सुपा ६६०)।
णीहर अक [आ+क्रन्द्] आक्रन्द करना, चिल्लाना णीहरइ, (हे ४, १३१)।
णीहर अक [निर्+हृद्] प्रतिध्वनि करना। वकृ—णीहरं णीहरिअंत ; (से ६, ११, २, ३१)।
णीहर सक [निर्+सारय्] बाहर निकालना। हेकृ—णीह रित्तए, (भग ६, ४)। कृ— णीहरियव्व, (कु ४८२)।
णीहर अक [निर्+हृ] पाखाना जाना, पुरीषोत्सर्ग करना। णीहरइ ; (हे ४, २६६)।
णीहरण न [निस्सरण, निर्हरण] १ निर्गमन, निर्यम, बाहर निकालना, (विपा १,३, आचा १, १४)। २ परित्याग (निचू १)। ३ अपनयन, (सूअ २, २)।
णीहरिअ देखो णीहर = निर् + सृ।
णीहरिअ वि (नि सृत) निर्गत, निर्यात, (सुर १, १६, ३, ७६ ; पाअ)।
णीहरिअ वि [निर्हादित] प्रतिध्वनित, (स १६, १२२)।

णोरिअ न [दे] रूप, आकार, गढ़न, (दे ४, ४२)।
णोरिअअ देखो णोरिअ=णि + अट्ठ।
णोलग्ग पु [णीलाग्र] १ तिल का पेड़; (श्रुत्व १२, सण ३३ ; पव) । २ तिल का मुख का कुम्हला . . . सण ६०)।
णोलाय न [निम्लातक] निलाक , (उप ३, ४)।
णोलिरि वि [निर्लोलिन्] १ निकलने वाला ; २ फैलने वाला ; "णोलिरसुकुमालसोमं" (कुमा, सण ६०)।
णोलिरि वि [निर्लोलिन्] पास आने वाला, घुसने वाला ; (उप १० ; वि ४०६)।
णोवहिअ देखो निहाहिअ , (उप ३, ४, औप, राजा १, १)।
णोवहु वि [दे] अनिच्छावान्, कुछ भी नहीं चाहने वाला ; "परमत्तणोवहुणा" (आवनि ७८७)। देखो—णिच्छुह।
णु क [नु] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अनंतर आदि ; २ वितर्क ; (ग ३४६) । ३ विधि , (सण) । ४ प्रश्न ; ५ विकल्प ; ६ अनुज्ञा , ७ हेतु, प्रयोजन ; ८ अवधारण, ९ अनुनय, अनुरोध ; १० आक्षेप, वर्जाना, (गउड; दे १, २१७ ; ३१८)।
णुअ वि [अक] जानकार ; (गा ४०६)।
णुक्कार पुं [नुकार] 'नुनु' ऐसा आवाज ; (सण)।
णुण्णिय वि [दे] बन्द किया हुआ, मुंदित ; "कंठिया गेण्ह दुविह, णुण्णिय से वयणं, णिल्ला य हवइ" (सं ६८६)।
णुत्त वि [नुत्त] १ प्रेरित ; २ क्षिप्त, फेंका हुआ ; (से ३, ११)।
णुम सक [नि+अम्] स्थापन करना। णुमइ ; (हे ४, १६६)।
णुम सक [छादय्] ढकना, आच्छादन करना। णुमइ ; (हे ४, २१)।
णुमज्ज अक [नि+मज्ज्] बैठना। णुमज्जइ ; (षड्)।
णुमज्ज अक [नि+मज्ज्] डूबना। णुमज्जइ ; (हे ४,६४)।
णुमज्जण न [निमज्जन] डूबना ; (राज)।
णुमण्ण वि [निमग्न] बैठा हुआ, लीन ; (हे १, णुमग्ग) ६४ ; १७४)।
णुमिअ वि [न्यस्त] स्थापित ; (कुमा)।
णुमिअ वि [छादित] ढका हुआ ; (कुमा)।
णुल्ल देखो णोल्ल। णुल्लइ ; (वि २४४)।
णुवण्ण वि [दे] सुप्त, सोया हुआ ; (दे ४, २१)।
णुवण्ण वि [निपण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट ; (गउड ; गाथा १,६; स २४२)। "णवण्णि णुवण्णा" (उप ६८६ टी)।
णुसज्ज सक [प्र+काशय्] प्रकाशित करना। णुसाइ ; (हे ४, ४६)। वकृ—णुसज्जंत ; (कुमा)।
णुसा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू, पुत्र की भार्या ; (प्रवो १०६)।
णूउर देखो णिउर=नूपुर ; (षड् ; हे १, १२३)।
णूण वि [नूत] नम्र, झुका ; (उप पृ ११६)।
णूण) अ [नूनम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१
णूणं) निश्चय, अवधारण; २ तर्क, विचार; ३ हेतु ; प्रयोजन; ४ उत्प्रास ; ५ प्रश्न ; (हे १, २६ ; प्राप्र ; कुमा ; सण ; प्राप्र १२ ; कुप्र १ ; भा १२)।
णूपुर देखो णूउर ; (पाअ ११)।
णूम सक [छादय्] १ ढकना, छिपाना। णूमइ ; (हे ४, २१)। णूमेहि ; (गाथा १, १६)। वकृ—णूमंत ; (गा ८६)।
णूम न [छादन] १ प्रच्छादन, छिपाना ; २ अपवर, कूट ; (पण्ह १, २) । ३ माया, कपट ; (सम ७१) । ४ प्रच्छन्न स्थान, गुप्त कोना ; (सूम १, ३,३ ; सम १२, ६) । ५ अन्धकार, गाढ अन्धकार ; (राज)।
णूमिअ वि [छादित] ढका हुआ, छिपाया हुआ ; (से १, ३२ ; पाम ; कुमा)।
णूमिअ वि [दे] फेंका हुआ; (उप पृ ३८३)।
णूला स्त्री [दे] शाखा, डाल ; (दे ४, ४३)।
णे अ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त होना अव्यय ; (राज)।
णेअ देखो णा=ज्ञा।
णेअ देखो णी=नी।
णेअ वि [नैक] अनेक, बहुत ; (पउम ६४, ६१)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का ; (पउम ११३, ६२)।
णेअ अ [नैव] नहीं ही, कदापि नहीं ; (से ४, ३० ; गा १३६ ; गउड ; सुर ३, १८६ ; सण)।
णेअत्त देखो णी=नी।
णेआइअ) वि [नैयायिक, न्याय्य] न्याय से अनुमोदित,
णेआउअ) न्यायानुसार, न्यायोचित ; " णेआइअस्स मग्गस्स दुवे अवयवे वदे " (सम ६१ ; औप ; पण्ह २, १)।

णेआवण न [नायन] अन्य-द्वारा नयन, पहुँचाना ; (उप ७८६)।
णेआविअ वि [नायित] अन्य द्वारा से जाया गया, पहुँचाया हुआ, (स ४२; कुप्र २०७)।
णेउ वि [नेतृ] नेता, नायक, (पउम १४, ६२, सम १, १, १)।
णेउआण } देखो णी=नी।
णेउं }
णेउइ पुं [दे] मनुष्य, मिहना, (दे ४, ४४)।
णेउण न [नैपुण] निपुणता, चतुराई ; (अभि १३२)।
णेउणिअ वि [नैपुणिक] १ निपुण, चतुर ; (ठा ६)। २ न. अनुयोग-नामक पूर्व-ग्रन्थ की एक वस्तु, (विसे २११०)।
णेउण्ण } न [नैपुण्य] निपुणता, चतुराई ; (दस ६, २, सुपा १६१)।
णेउल्ल }
णेउर न [नूपुर] स्त्री के पाँव का एक आभूषण, (हे १, १२१, सा १८८)।
णेउरिल्ल वि [नूपुरवत्] नूपुर वाला ; (वि १२६, गउड)।
णेउल्ल } देखो णी=नी।
णेउं }
णेउं देखो णी=नय्।
णेक्कंत देखो णिक्कंत ; (ठा ११)।
णेग देखो णेअ=नैक, (कुमा, पच्च १, ३)।
णेगम पुं [नैगम] १ वस्तु के एक अंश को स्वीकारने वाला पक्ष-विशेष, नय-विशेष, (ठा ७)। २ वणिक्, व्यापारी, "णिच्चम्मि णेगमाणं न इमं सम्मंपि पण्णामोत्ति। णेगमणयस्स एसो, जेण इमा अत्थसत्ता सत्तिओ" (ठा २७)। ३ न. व्यापार का स्थान ; (अणु १, १, १)।
णेगुण्ण न [नैर्गुण्य] निर्गुणता, निःसारता, (भग ११३)।
णेच्चइअ पुं [नैत्यिक] चाकर का व्यापारी, (ठा ७)।
णेच्चइअ वि [नैत्यिक] नित्यकर्म-सम्बन्धी, नित्यकर्मी, मुद्रु, (विसे २८२)।
णेच्चंत वि [नैत्यत्] नहीं चलता हुआ ; (विसे २०१)।
णेच्चंतिअ वि [नैत्यिक] दृष्ट का अतिक्रम, अनतिक्रम, (ठाण १)।
णेच्चिअ वि [नैत्यिक] नित्यकर्मी ; (पच्च १, १)।
णेच्च देखो णिच्च, (कुमा, हे १, १०६)।
णेच्चुत्ती स्त्री [दे] रात का अन्त-विभाग, (दे ७, ८१)।
णेडु देखो णिडु ; (हे २, ६६ ; प्राप्र ; षड्)।
णेडुरिआ स्त्री [दे] भादवा मास की शुक्ल चतुर्थी का उत्सव ; (दे ४, ४६)।
णेत्त पुन [नेत्र] नयन, आँख, चक्षु ; (हे १, ११, प्रासू ३)।
णेत्ता देखो णित्ता ; (वि १६२ ; नाट)।
णेपाल देखो णेवाल ; (उप पृ ३६७)।
णेम न [नेम] १ अर्ध, आधा ; (प्राप्र)। २ जल ; (पाह १, ३ ; भग)।
णेम न [दे] कार्य, काज ; (राज)।
णेम देखो णेम्म=दे ; (पाह २, ४ टी—पत्र ११)।
णेमाल पुं ब. [नेपाल] एक भारतीय देश, नेपाल, (६८, ६४)।
णेमि पुं [नेमि] १ स्वनाम-ख्यात एक जिन-देव, तीर्थंकर, (सम ४२ ; कप्प)। २ चक्र की धार, (ठा २, २, सम ४२)। ३ चक्र परिधि, चक्र का (जीव ३)। ४ आचार्य हेमचन्द्र के गुरु (कुप्र २०)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक (सार्ध १२)।
णेमित्त देखो णिमित्त ; (आवम)।
णेमित्ति वि [नैमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का (सुर १, १४४ ; सुपा १६४)।
णेमित्तिअ } वि [नैमित्तिक] १ निमित्त-शास्त्र
णेमित्तिग } रखने वाला, (सुर ६, १७७)। २ निमित्त से होने वाला, कारण से किया जाता, कार्य "उक्कारणो णेमित्तिगमो अभो भणिओ" (ठा ६ १०७)। ३ निमित्त शास्त्र का जानकार, (सुर १, ४ न. निमित्त शास्त्र, (ठा ६)।
णेमी स्त्री [नेमी] चक्र-धारा, (दे १, १०६)।
णेम्म वि [दे.नित्य] तुल्य, समान, समान, (पाह १, ११०)।
णेम्म देखो णेम=नेम, (पाह १, ६ ; कप्प ६५
णेयइअ वि [नैयिक] १ नरक-संबन्धी, नारक, (दे १, ७६)। २ पुं. नरक का जीव, नारक, (सम २, विसे १, १०)।
णेरई स्त्री [नैर्ऋती] दक्षिण और पश्चिम के कोण (सुपा ६८, ठा १०)।
णेरत्त न [नैरक्त] १ व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ का (भग)। २ वि. निरुक्त शास्त्र का जानकार, [illegible]

... द्वार का घर,
... ३३३२०, (दे ६, ७)।
... ११, ११८)। २ मध्य-
... वैचारिक न [°वैचारिक]
... विचार, (गौड़)।
... पु [तालपुलीयक] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १)।
तंबूलाय देखो तिंदूसय, (सुर १३, १६७)।
तंब पु [स्तम्ब] तृणादि का गुच्छा ; (हे २, ४६ , कुमा)।
तंब न [ताम्र] १ धातु-विशेष, ताँबा ; (विपा १, ६ ; हे २, ४६)। २ पु वर्ण-विशेष ; ३ वि. अरुण वर्ण वाला, (पण्ण १७ ; औप)। °चूल पु [°चूड] कुक्कुट, मुर्गा, (सुर ३, ६१)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] एक नदी का नाम , (कप्पू)। °सिह पु [°शिख] कुक्कुट, मुर्गा, (पाम)।
तंबकरोड पुन [दे] ताम्र वर्ण वाला द्रव्य-विशेष, (पण्ण १७)।
तंबकिमि पु [दे] कीट-विशेष, इन्द्रगोप; (दे ६, ६; षड्)।
तंबकुसुम पुन [दे] वृक्ष-विशेष, कुरुवक, कटसरैया ; (दे ६, ६ ; षड्)। २ कुरण्टक वृक्ष , (षड्)।
तंबकक न [दे] वाद्य-विशेष , अणाहयतंतीकंसु वज्जंतेसु (ती १६)।
तंबचिल्लपाडिया स्त्री [दे] ताम्र वर्ण का द्रव्य-विशेष ; (पण्ण १७)।
तंबट्टकारी स्त्री [दे] शेफालिका, पुष्प प्रधान लता-विशेष , (दे ६, ४)।
तंबरत्ती स्त्री [दे] गेहूँ में कृमि की छाया ; (ध ६, ६)।
तंबा स्त्री [दे] गौ, धेनु, गैया ; (दे ६, १ ; गा ४६० ; पाम ; वज्जा २४)।
तंबाय पुं [ताम्राक] मान्नाय ग्राम-विशेष , (राज)।
तंबिम पुस्त्री [ताम्रत्व] अरुणता, ईषद् रक्तता , (गउड)।
तंबिय न [तात्त्रिक] परिव्राजक का पहनने का एक उपकरण ; (औप)।
तंबिर वि [दे] ताम्र वर्ण वाला ; (हे २,६६; गउड; भवि)।
तंबिरा [दे] देखो तंबरत्ती ; (दे ६, ६)।
तंबुक्कय न [दे] वाद्य-विशेष, "पुक्खरतुडुक्कतंबुक्कएहिं" (सुपा ६०)।
तंबोल पुं [ताम्बोल] पान, (हे २, १२४ ; कुमा)।
तंबोलिअ पु [ताम्बूलिक] तमोली, पान बेचने ... (श्रा १२)।
तंबोली स्त्री [ताम्बूली] पान का गाछ ; (षड्; ...
तंस देखो थंभ ; (षड्)।
तंस वि [त्र्यस्र] त्रि-कोण, तीन कोन वाला ... २६ ; गउड , टा १ ; गा १० ; प्राप्र ; भाक...
तक्क सक [तर्क्] तर्क करना, अनुमान ... करना । तक्कमि, (मै १३)। संकृ —तक्किऊ...
तक्क न [तक्र] मठा, छाँछ ; (ओघ ८० ; ... उप पृ ११६)।
तक्क पुं [तर्क] १ विमर्श, विचार, अनुसन्धान ... १२ ; टा ६)। २ न्याय-शास्त्र ; (सुपा ...
तक्कणा स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाष ; (दे ...
तक्कय वि [तर्कक] तर्क करने वाला ; (...
तक्कर पु [तस्कर] चोर ; (हे २, ४ ; ...
तक्कलि) स्त्री [दे] वलयाकार वृक्ष-विशेष ; ...
तक्कली)
तक्का स्त्री [तर्क] देखो तक्क=तर्क, (ठा १, ... १३; भाचा)।
तक्काल त्रिवि [तत्काल] उसी समय ; (कुमा)।
तक्किअ वि [तार्किक] तर्क शास्त्र का जानकार ; (... १०१)।
तक्किआण देखो तक्क=तर्क् ।
तक्कु पुं [तर्कु] सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, ... (दे ३, १)।
तक्कुअ पु [दे] स्वजन-वर्ग , "सम्माणिया सयल... बंदिया नायरया, परिमाणिया तक्कुयजणा सि" (सुर...
तक्कल सक [तक्ष्] छिलना, काटना । तक्कइ ; (हे ४, १६८)। कर्म —तक्किज्जइ ; (कुप ... वढ—तक्खमाण , (मनु)।
तक्ख पुं [ताक्ष्र्य] गरुड़ पक्षी, (पाम)।
तक्खग पुं [तक्षक] १ लकड़ी काटने वाला, बढ़ई, ... कर्मा , शिल्पी विशेष , (हे ३, ५६ , षड्)। °सि... [°शिला] प्राचीन ऐतिहासिक नगर, जो पहले गन्धा... राजधानी थी, यह नगर पंजाब में है , (पउम ... कुप ५३)।
तक्खग पुं [तक्षक] १-२ ऊपर देखो। ३ सर्प... सर्प-राज , (उप ६१६)।

तक्खण न [तक्षण] १ तत्काल, उसी समय, (उप ४, ४)। २ क्रिवि. संप्रति. तुरन्त ; (पाम)।

तक्खय देखो तक्खया ; (स ३०६ ; कुप्र १३८)।

तक्खाण देखो तक्ख=तक्षन् ; (हे ३, ५६ ; षड्)।

तगर देखो दगर ; (पण्ह २, ५)।

तगरा स्त्री [तगरा] संविवेना-विशेष, (स ४६८)।

तग्ग न [दे] मुख-कटकुल, घास का कचरा, (दे ४, १, गउड)।

तग्गंधिय वि [तद्गन्धिक] उसके समान गंध वाला ; (प्राप्र ३४)।

तच्च वि [तृतीय] तीसरा; (सम ८, उवा)।

तच्च न [तत्त्व] सार, परमार्थ ; (आचा ; आग ११६)। °वाय पुं [°वाद] १ तत्त्व-वाद, परमार्थ-चर्चा। २ दृष्टिवाद, जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, (ठा १०)।

तच्च न [तथ्य] १ सच, सचाई, (हे २, २१ ; उत्त २८)। २ वि. वास्तविक, सच्चा, (उत्त ३)। °त्थ पुं [°र्थ] सच्चा हकीकत ; (पउम ३, ९३)। °वाय पु [°वाद] देखो ऊपर °वाय ; (ठा १०)।

तच्चं अ [त्रिः] तीन बार ; (भग ; सुर २, २६)।

तच्चित्त वि [तच्चित्त] उसी में जिसका मन लगा हो वह, तल्लीन ; (विपा १, २)।

तच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना। तच्छइ ; (हे ४, १६४; षड्)। संक—तच्छिअ; (सुम १, ५,१)। वकृ—तच्छिज्जंत ; (सुर १, २८)।

तच्छण सौत्र [तक्षण] छिलना, कतरना ; (पण्ह १. १)। °णी—णा ; (पाचा १, १३)।

तच्छिंड वि [दे] कराल, भयंकर ; (दे ४, ३)।

तच्छिज्जंत देखो तच्छ।

तच्छिल्ल वि [दे] तत्पर ; (षड्)।

तज्जा देखो तया=त्वच् ; (दे १, १११)।

तज्ज सक [तर्जय्] तर्जन करना, भर्त्सन करना। तज्जइ ; (भवि)। तज्जेइ ; (पाचा १, १८)। वकृ—तज्जंत, तज्जिंत तज्जयंत, तज्जमाण, तज्जेमाण; (भवि; सुर १२, २३३; पाचा १, ८; गाज; विपा १, १—पत्र ११)। कवकृ—तज्जिज्जंत ; (ठा ६ पृ १३४ ; ठा १४६ टी)।

तज्जण न [तर्जन] भर्त्सन, तिरस्कार ; (औप; ठा ; पउम ६६, ६३)।

तज्जणा स्त्री [तर्जना] ऊपर देखो; (पण्ह २,१ ; सुपा १)।

तज्जणी स्त्री [तर्जनी] प्रथम अंगुली ; (सुपा १ ; हम्मी)।

तज्जाय वि [तज्जात] समान जाति वाला, तुल्य-जातीय ; (आचा ४)।

तज्जातिअ } वि [तर्जित] तर्जित, भर्त्सित ; (स १३२;
तज्जिअ } सुपा २६३ ; भवि)।

तज्जित }
तज्जिज्जंत } देखो तज्ज।
तज्जेमाण }

तट्ठट्ठ न [दे] आभरण, आभूषण ;
" सरिसं सरिसं वालत्तणम्मि तणुवाइ तट्ठवाई।
भवहरिणि निवसरामो होरेइ रहस्मि किल्लंतो"
(सुपा ३६६)।

तट्टी स्त्री [दे] कृति, वाट ; (दे ५, १)।

तट्ठ वि [त्रस्त] १ डरा हुआ, भीत ; (हे २, १३६ ; कुमा)। २ न. मुहूर्त-विशेष, ; (सम ५१)।

तट्ठ वि [तप्त] छिला हुआ ; (सुम १, ७)।

तट्ठव न [त्रस्तप] मुहूर्त-विशेष ; (सम ५१)।

तट्ठि पुं [त्वष्टृ] १ तक्षक, बढ़ईकर्मा ; (गउड)। २ नक्षत्र-विशेष का अधिष्ठायक देव ; (ठा २, ३)।

तड सक [तड्] १ विलाप करना। २ करना। तडइ ; (हे ४, १३७)।

तड पुंन [तट] किनारा, तीर ; (पाम ; कुमा)। °त्थ वि [°स्थ] १ मध्यस्थ, पक्षपात-हीन ; २ सभीप स्थित; (कुमा; दे ३, ६०)।

तडउडा [दे] देखो तडवडा ; (जीव ३; जं १)।

तडकडिअ वि [दे] अलंकृत ; (षड्)।

तडक्कार पुं [तटत्कार] चमडारा; "तडित्तडक्कारो "(सुपा १३३)।

तडतडा अक [तडतडाय्] तड तड आवाज करना। वकृ—तडतडंत, तडतडेंत, तडयडंत ; (गाज ; पाचा १, ६ ; सुपा १७६)।

तडतडा स्त्री [तडतडा] तड तड आवाज; (स २४७)।

तडप्फड } अक [दे] तड़फना, तड़फड़ाना, व्याकुल होना।
तडफड } तड़फड़ाहट ; (कुमा ; हे ४, ३६६ ; विवे १०२)। तड़फड़ाते ; (सुर ३, १४८)। वकृ—तडप्फडंत, तडफडंत ; (उप ७६८ टी ; सुर १२, १६४ ; सुपा १७६ ; कुप्र २६)।

तइकडिअ वि [दे] १ तट पर के बलित, तटस्थापित हुआ, तटस्थ (दे १, ६ ; ८८)।
तइल्ल वि [दे] तृप्ति, तृप्त हुआ, (दे १, ७)।
तइल्ल वि [दे] विस्मयान्वित, आश्चर्य युक्त, (सण्हि १, ७)।
तइवइ देखो तयवइ।
तइवया स्त्री [दे] तप विशेष, आदमी का वेष, (दे १, ६)।
तइस्स, ए [तदीय] उसका, उसका, (ठा ११०, तइस्सए ; पि ३१२ ३८०)।
तउ स्त्री [तदुक] आलय, घर (पाअ)। °घड पुं [°घट] मिट्टी का घड़ा (सुर ०)। °चेअ पुं [°चैत्य] तदाकार बनाया हुआ चैत्य (उप ६, ६६)। °चेय पुं [°चैत्य] तदाकार बनाया हुआ चैत्य (पाअ ६, १८)।
तउअ वि [तदुक] तदाकार, तदाकार बनाया हुआ (पाअ, ठाणा १, ४६ १३१)।
तउआ स्त्री [तदुक] मिट्टी का घड़ा, (पाअ)।
तउइअ वि [दे] तिरस्कृत, अपमानित (ग ३३, ६०)।
तउइआ स्त्री [तदुकिका] मिट्टी का घड़ा, (पाअ)।
तउइल्ल वि [दे] १ तिरस्कृत, अपमानित २ दुखित, पीड़ित, पराभव को प्राप्त हुआ (ग ३३, ६)। २ दुख के कारण कृश, (ग ३३, ६०)।
तउ न [तपो] तप विशेष (विपा १, १, अनु ६)।
तउ, अ [तत] १ उसके बाद, २ अथवा। तुम, तउ तुम्ह ४ ११० । अवा तहोत्तम ३८०)।
तउत्तिअ वि [तावत्] उतना, जितना हुआ, (पाअ, तउत्तिअ अवा ४, ६६)।
तउत्तिय वि [तावत्] उतना, जितना हुआ, (पाअ, ठाणा १, ४६)।
तउम्ह न [तपो] तप विशेष, (विपा १, १, अनु ६)।
तउल न [दे] तराजू, तुला (दे ६, ७)।
तउल न [तुल] तराजू, तुला, तौल, तुलना ; (सुर ३, ६६)। °धर पुं [°धर] तराजू को धारण करने वाला, (आचा २, १, ६, ३)। °धरिअ वि [°धरित] तराजू से तौला हुआ, (आचा २, १, ६, ३)।
तउलिअ वि [तुलित] तौला हुआ, तुलित, (पाअ, सुर ३, ६६)।
तउलिअ वि [दे] तिरस्कृत, अपमानित, (दे ६, ७)।
तउलिअ वि [तुलित] तौला हुआ, तुलित, (पाअ, सुर ३, ६६)।
तउलिआ स्त्री [तुला] तराजू, तुला, (पाअ)।
तउलिआ स्त्री [दे] तिरस्कार, अपमान, (दे ६, ७)।
तउलिज्ज वि [तुल्य] तौलने योग्य, तुलनीय, (पाअ)।
तउलिय वि [तुलित] तौला हुआ, तुलित, (पाअ, सुर ३, ६६)।
तउलिय वि [दे] तिरस्कृत, अपमानित, (दे ६, ७)।
तउलिया स्त्री [तुला] तराजू, तुला, (पाअ)।
तउलिया स्त्री [दे] तिरस्कार, अपमान, (दे ६, ७)।
तउलेअव्व वि [तोलयितव्य] तौलने योग्य, (पाअ)।
तउलेइ सक [तोलयति] तौलता है, (पाअ)।
तउलेऊण संकृ [तोलयित्वा] तौलकर, (पाअ)।
तउलेज्जा वि [तुल्य] तौलने योग्य, तुलनीय, (पाअ)।
तउलेत्ता संकृ [तोलयित्वा] तौलकर, (पाअ)।
तउलेमाण वि [तोलयत्] तौलता हुआ, (पाअ)।
तउलेसि सक [तोलयसि] तू तौलता है, (पाअ)।
तउलेहि सक [तोलय] तौल, (पाअ)।
तउलेहिसि सक [तोलयिष्यसि] तू तौलेगा, (पाअ)।
तउलेहिसु सक [तोलय] तौल, (पाअ)।
तउलेहिहिसि सक [तोलयिष्यसि] तू तौलेगा, (पाअ)।
तउलेहिहिसु सक [तोलय] तौल, (पाअ)।
तउलेहिहिसु

तत्पुरुषक वि [तत्पुरुष] तत्पुरुष विषयक हुआ (पाक)।
तत्पुरुष देखो तत्पुरुष (भग)।
तत्पुरुषी } देखो तत्पुरुष (ठा ४ - १)। स्त्री
तत्पुरुषीया }
तत्प्र सी [तत्प्र] तत्परता, दत्तचित्तता (उत्त २६, पाअ ; ५)। २ ईश्वरप्राप्ति-अनन्य वृत्ति, (उत्त २६)। अ वि [ज] १ तत्पर के सम्बन्ध , २ तत्पर पुरुष । [ज] ' अवस्था सी [अवस्था] ईश्वरप्राप्ति-तत्पर वृत्तिवाली, जिस का मुख्य ध्येय ईश्वर है, सिद्धि-विशेष (भग ११)। [पर] देखो [तत्प्र] देखो, गाअ ; उत्त ८८ ; ८९)।
तत्पुरुष देखो तत्पुरुष ; गाअ)।
तत्पेय (अप) क्रि, तिर्, तुमर्न् (हे ४, ४४८ ; कुमा)।
तत्पेसि पुं [दे] तृणजाति (दे ४, ३ ; पाअ)।
तत्पोक्य पु [तात्पोक्य] पाक, रसोइ ; (पाअ ; स ५६ ; गाअ)।
तत्प्राय वि [दे] अधिक, विशेष (दे ४, ३ ; पाअ , गाअ ; कुमा ; दे ३, ३१ ; ११, १२८)।
तत्प्रभ सी [तृष्णा] १ प्यास, तिरसा (पाअ)। २ तृष्णा, लालसा (उत्त २, ३ ; औप)। तृ, तृप्त वि [वत्] तृप्त हुआ, धराया, "तत्प्रकृतृप्त" (कप्र ८, ८ ; ८, ४७)।
तत्र देखो तत्र=तत्रा , (उत्त ४, ४)।
तत्र न [तत्त्व] तत्त्व स्वरूप, तत्त्व, यथार्थ , (उत्त ३३८ टी ; पुरु ३३०)। ॰ ज्ञ [ज्ञ] वस्तुतत्त्व (उत्त ८८६)। ॰ प्रभु वि [प्रभु] तत्त्व का ज्ञानवान् (पंचा १)।
तत्त वि [तप्त] गरम किया हुआ , (गाअ १२८ , सिरि १, ६ ; दे ३, १०५)। आया सी [आया] नदी-विशेष ; (दे ३, ३)।
तत्त न [तत्त्व] वर्ण। भव, हीन वि. [भवत्] तुच्छ जैसा आत्म ; (वि २२३ , अभि ५६)।
तत्ति सी [तृप्ति] तृप्ति, संतोष, (कुमा ; कम २६)। २ तृप्त वि [मत्] तृप्ति-युक्त ; (गाअ)।
तत्ति सी [दे] १ आतंक, दुःख ; (दे ४, २० ; षड्)। २ अनादर ; (दे ४, २०)। ३ चिन्ता, विचार ; (गा २, ४३ ; ३०३ अ ; सुर २३० ; २८०)। ४ वार्ता, बात ; (गा २ ; वज्जा २)। ५ कार्य, प्रयोजन ; (पाअ १, २ ; कप्र १)।
तत्तिय वि [तावत्] उतना ; (प्रभु १४६)।
तत्तिल , वि [दे] अल्प ; (षड् ; दे ४, ३, स ४४१ ; प्राप्र तत्तिल्ल) , (ठा ४)।
तत्तु अ देखो तत्थ=तत्र, (हे ४, ४०८, कुमा)।
तत्तुडिअ न [दे] कुश, संस्तर ; (दे ४, ६)।
तत्तुल्लि पि [दे] संलग्न , (षड्)।
तत्तो अ तत्थो ; (उत्त , ओ ७८)। ॰ मुह वि [मुख] जिसका मुँह उस तरफ हो गया , (सुर ३, १३४)।
तत्तोहुत्त न [दे] तत्त्वभिमुख, उसकी तरफ ; (गउड)।
तत्थ अ [तत्र] वहाँ, उसमें , (हे २, १६१)। ॰ भव वि [भवत्] उस ऐसे अर्थ ; (वि २२३)। ॰ वि [स्थ] वहाँ का रहने वाला , (उत्त ३३ ; ओ)।
तत्थय वि [अस्मत्] मेरा ; (हे २, १६१ ; कुमा)।
तत्थरि पु [प्रस्तरि] तत्त्वविशेष , "तत्थरिमाण द्वीपा गोदत्त नामक पुरी" (प्रभु ४)।
तत्था देखो तथा=तत्रा , (भग ८२६)।
तत्थीय वि [त्वदीय] तुम्हारा ; (भवि)।
तत्थो देखो तओ ; (हे २, १६०)।
तत्थिअत्थ न [दे] वृत्त, वार्त्त ; (दे ४, ८)।
तत्थिअम्ब } न [दे] प्रतिदिन, अनुदिन, हमेशा ; (दे
तत्थिअम्मिअ } ४, ८ ; गउड ; पाअ)।
तत्थिअह
तत्थिय पु [तत्थित] १ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष ; (पणह २, २ ; सिरि १००३)। २ तत्थित प्रत्यय की प्रकृति का वाच्यभूत अर्थ ; (अणु)।
तत्था देखो तहा ; (उत्त ३, १ ; ७)।
तत्तय देखो तत्तय ; (सुर १४, १७४)।
तत्तहा देखो तत्तहा ; (सुर १, २०३ ; कुमा)।
तत्तप्प सक [तप्] १ तप करना। २ भोग, गरम होना। तत्तइ, तत्तेति ; (सिरि ; प्राप्र ४३)।
तत्तप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना। वकृ -तत्तप्पमाण ; (सुर १६, १६)। हेकृ—"न इमो जीवो सक्को तत्तेउं कामभोगेहिं" (भाव ५०)। कृ—तत्तेयव्व ; (सुर २३३)।
तत्तय न [तत्त्व] सच्चा, विशेषता ; (पाअ)। अ वि [ग] सच्चा पन जाने वाला, सोने वाला ; (पणह १, २)।
तत्तय पुंन [तप्त] तेली, छोटी कड़ाही ; (पणह १, १ ; सिरि ७०६)।
तत्तयविसम वि [तत्त्वातिक] उस पक्ष का ; (भग ३३)।
तत्तयज्ज न [तात्पर्य] तात्पर्य ; (गउड)।

तप्पण न [तर्पण] १ गरतु, सतुमा ; (पाह २, ६) । २ क्रीन तृप्ति-करण, प्रीणन ; (सुपा ११३) । ३ स्निग्ध वस्तु से शरीर की मालिश , (आया १, १३)।

तप्पभिई अ [तत्प्रभृति] तबसे, तबसे लेकर , (कप्प ; आया १, १) ।

तप्पमाण देखो तप्प=तर्पय् ।

तप्पर वि [तत्पर] आसक्त , (दे ६, २०) ।

तप्पुरिस पु [तत्पुरुष] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष, (अणु) ।

तप्पेयव्व देखो तप्प=तर्पय् ।

तब्भत्तिय वि [तद्भक्तिक] उस का सेवक , (भग ६, ७)।

तब्भव पु [तद्भव] वही जन्म, इस जन्म के समान पर-जन्म । °मरण न [°मरण] वह मरण जिससे इस जन्म के समान ही परलोक में भी जन्म हो, बड़ा मनुष्य होनेसे आगामी जन्म में भी जिसका मनुष्य ही होना, मरण, (भग २१, १) ।

तब्भारिय पु [तद्भार्य] दास, नौकर, कर्मचारी, कर्मकर ; (भग ३, ७) ।

तब्भारिय पु [तद्भारिक] ऊपर देखो , (भग ३, ७) ।

तब्भूय वि [तद्भूत] उसी भूमि में उत्पन्न ; (बृह १) ।

तम पु [दे] शाक, भक्षण , (दे ६, १) ।

तम पुन [तमस्] १ अन्धकार , २ अज्ञान , (हे १, ३१ ; प्रि ८०६ , औप ; पर्व २) । °तम पु [°तम] सातवीं नरक-पृथिवी का जीव , (कम्म ६; पंच ५) । °तमप्पभा स्त्री [°तमप्रभा] सातवीं नरक-पृथिवी , (अणु) । °तमा स्त्री [°तमा] सातवीं नरक-पृथिवी ; (सम ६६ ; ठा ७) । तिमिर न [तिमिर] १ अन्धकार ; (बृह ४) । २ अज्ञान ; (पिंड) । ३ अन्धकार-समूह ; (बृह ४) । °पभा स्त्री [°प्रभा] छठवीं नरक-पृथिवी ; (पणण १) ।

तमग पु [तमङ्ग] मगरमच्छ, घर का बगड़ा , (सुर १३, १६६) ।

तमंधयार पु [तमोन्धकार] प्रबल अन्धकार; (पउम १७, १०) ।

तमग न [दे] चुल्हा, जिसमें आग रख कर रसोई की जाती है वह ; (दे ६, २) ।

तमतमि पुस्त्री [दे] १ मुख, दंष ; २ मूर्ख, मुग्ध-विशेष की संज्ञा , (दे ६, २०) ।

तमतम न [तमस्] अन्धकार ; " तमतमे मे दिसा ण " (कप्प ३१ ८) ।

तमतमा स्त्री [तमस्वती] घोर अन्धकार वाली रा (बृह १) ।

तमा स्त्री [तमा] १ छठवीं नरक-पृथिवी, (सम ६६ ; ठा ७) । २ अर्धरात्रि ; (ठा १०) ।

तमाड सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना । तमाडइ , (हे ४, ३०) । वकृ—तमाडंत, (कुमा) ।

तमाल पु [तमाल] १ वृक्ष-विशेष ; (उत्त १०३१ ; पि मत ४२) । २ न. तमाल वृक्ष का फूल ; (से १, ३१)

तमिस न [तमिस्र] १ अन्धकार ; (सूअ १, ४, १ °गुहा स्त्री [°गुहा] गुफा-विशेष, (इक) ।

तमिसंधयार पु [तमिस्रान्धकार] प्रबल अन्धकार (सूअ १, ५, १) ।

तमिस्स देखो तमिस ; (दे २, २६) ।

तमी स्त्री [तमी] रात्रि, रात ; (गउड) ।

तमुक्काय पुं [तमस्काय] अन्धकार-प्रधान । (ठा ५,

तमुय वि [तमस्] १ जन्मान्ध, जात्यन्ध ; २ अत्य अज्ञानी , (सूअ २, २) ।

तमोकलिय वि [तम कालिक] प्रकाश किया करने वा (सूअ २, २) ।

तामअक [तम्] खेद करना । तम्मइ ; (भा ८८) ।

तम्मण वि [तन्मनस्] तल्लीन, तन्निष्ठ, (प्रि १, २) ।

तम्मय वि [तन्मय] १ तल्लीन, तत्पर । २ उसका भेद (पण्ह १, १) ।

तम्मि न [दे] वस्त्र, कपड़ा ; (गउड) ।

तम्मिर वि [तमिर] खेद करने वाला ; (भा ८८) ।

तय वि [तत] विस्तार-युक्त ; (दे १, ४६ ; से २, ३ महा) । २ न. वाद्य-विशेष ; (ठा २, ३) ।

तय न [त्रय] तीन का समूह, त्रिक ; " काउत्तय मे मयं " (चउ ८५ ; भा २८) ।

तय° देखो तया=तदा । °प्पभिइ अ [°प्रभृति] त (स ३१६) ।

तय° देखो तया=त्वद् । °वसाय वि [°वाद] त्व सने वाला, (उत्त ४, १) ।

तया अ [तदा] उस समय , (कुमा) ।

तया स्त्री [त्वच्] १ त्वचा, छाल, चमड़ी ; (भग ३ २ दन्तपंक्ति ; (भग ८१) । °मंत वि [°मत्]

सम्भव [सम्भव] १ उत्पत्ति, जन्म ; २ संभावना ; ३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ११ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १०० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ;

सम्भवित्र न [सम्भवित्र] उत्पत्ति स्थान, जन्म ।

सम्भाषण न [सम्भाषण] बातचीत, वार्तालाप । (हि ०, ०, ०) ।

सम्भाषणीय वि [सम्भाषणीय] बातचीत करने योग्य । (हि ०, ०, ०) ।

सम्भाषा स्त्री [सम्भाषा] बातचीत, वार्तालाप । (हि ०, ०, ०) ।

सम्भाषित वि [सम्भाषित] जिससे बातचीत की गई हो । (हि ०, ०, ०) ।

सम्भाषी वि [सम्भाषिन्] बातचीत करने वाला । (हि ०, ०, ०) ।

सम्भिद स्त्री [सम्भिद] १ विदारण, फाड़ना ; २ भेदन, छेदन ; ३ नाश, ध्वंस । (हि ०, ०, ०) ।

सम्भिन्न वि [सम्भिन्न] १ विदारित, फाड़ा हुआ ; २ भेदित, छेदित ; ३ नष्ट, ध्वंस । (हि ०, ०, ०) ।

सम्भृत वि [सम्भृत] १ पूर्ण, भरा हुआ ; २ धारण किया हुआ ; ३ उत्पन्न, पैदा ; ४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ११ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १०० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ;

सम्भृति स्त्री [सम्भृति] १ धारण, पोषण ; २ उत्पत्ति, जन्म ; ३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ११ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; २९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ३९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ४९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ५९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ६९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ७९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ८९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९१ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९२ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९३ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९४ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९५ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९६ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९७ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९८ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; ९९ [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ; १०० [विशेष] शंकर की एक मूर्ति ;

सम्भृतात्मा पुं [सम्भृतात्मन्] परमात्मा, ईश्वर ।

सम्भृतात्मन् पुं [सम्भृतात्मन्] परमात्मा, ईश्वर ।

सम्भृतात्मा

तलाई स्त्री [तलागिका] छोटा तालाब; (कुमा)।
तलाग } न [तडाग] तालाब, सरोवर, (पा
तलाय } १, २०२; प्राप्र; भवि १, ८; उप)।
तलार पुं [दे] नगर रक्षक, कोतवाल; (दे २, ३
२३२; २६१; पउ; कुप २६२)।
तलारक्खण पुं [दे.तलारक्ष] ऊपर देखो, (भवि)।
तलाव देखो तलाग; (उप; ति २१२)।
तलिअ वि [तलित] भूना हुआ, तला हुआ; (ति
तलिआ } न [दे] उपानह, जूता; (ओघ ३३
तलिया } भुव १)।
तलिण वि [तलिन] १ प्रतनु, सूक्ष्म, बारीक, (
ठ, औप; दे ६, ६)। २ शुष्क, सूखा; (दे
३ दुर्बल; (गाम)।
तलिमा पुंन [दे] १ शय्या, बिछौना; (दे ६, १०;
आचा १,११ -पत्र २०१; २०२; गउड)। २
फर्श वगैरह जमीन; (दे ६, २०; गाम)। ३ घ-
की भूमि, ४ बाग भवन, क्रीडा-गृह; ५ भाण्ड, बर्तन
भाजन; (दे ६, २०)।
तलिमा स्त्री [तलिमा] ऊपर देखो; (ति ३८६
भवि)।
तलुण देखो तरुण; (आचा १, ११; गाम, पृ ११)।
तलेर [दे] देखो तलार; (भवि)।
तल्ल न [दे] १ पत्र, छोटा पात्र; (दे ६, ३०)
२ तल-विशेष, थप्पड़; (दे ६, ११, पाअ १, ३)।
शय्या, बिछौना; (दे ६, ११, पउ)।
तल्लक्ख पुं [तलक्ष] ऊपर देखो, (गाम)।
तल्लट्ठ न [दे] शय्या, बिछौना; (दे ६, २)।
तल्लिच्छड्ड वि [दे] शय्या, तल्लीन, (दे ६, ३, पा
१, १३, गाम)।
तल्लिच्छ } वि [तल्लिप्सु] जानी में हाथों के पंजों के
तल्लिच्छय } तलवाला, तालवाला, (ठाम १, २, पत्र
तल्लीणचित्तिअ वि [दे] तल्लीन, तन्मय, आसक्त हृदय
"तल्लीण मणे तिम्मे आसत्तहिअए लग्गचित्ते" (दे
८६)।
तव अक [तप्] १ तपना, गरम होना। २ सक
करना। तवइ, (हे ४, २३३, सण ४४६)। कृ
तवीअ, (भग)। तवइत्ता, (भग)।
तव [तपस] तपस्या करना। तवइ, (भवि)।

तव न [तपस] तपश्चर्या, तपश्चर्या ... तप १२ ... ३२ ; प्राकृ ६२) । तवस्सि पु ['तपस्विन्] तपस्वी, तपश्चर्या ... तपस्वी (पाअ ; ...) । तवा पु ['तप] सूर्य ... (उत्त ...) । तवाय, 'तपाक न ['तापक] १ तपश्चर्या, तप ... सुख १, १, ३, पत्र ६ ३८० ; ओघ ३४३) । २ ताप का कारण, तपने का काम, ... (स्थानां वि ['तापिन्] तपाया हुआ, तापने ... ६, ... ठाणं तवी ।

तव देखो भव ; (हे १ ४६ ; षड् ...) ।

तवइया पु [तपस्क] पक्षि-विशेष, तीतर ... (पव्वा) ।

'तविमलि न ['प्रतिमल्लिन्] प्रतिस्पर्धि-विशेष, ... (सम) ।

तवण पुं [तपन] १ सूर्य, सूरज ... (उत्त १०३१ टी, सुर ३१६) । २ नरक का एक प्रस्तर, सुरंग ... (ठा १२, पत्र ६) । ३ न. तिलक-विशेष, (हेम) ।

तवणा स्त्री [तपना] आतापना ... (पव्वा ४१३) ।

तवणिज्ज न [तपनीय] सुवर्ण, सोना, (पाअ १, ४, सुर ३६) ।

तवणी स्त्री [दे] १ भवन, मकान-योग्य भूमि ; (दे ३, १ ; सुर ३ ४८, ... ६३) । २ धान्य को ऐंठ से काट कर अलग अलग करने की क्रिया, (सुपा ३४६) । ३ दाल, पूआ आदि पकाने का पात्र, (दे ३, ५६) ।

तवणीय देखो तवणिज्ज, (सुपा ४८) ।

तवमाण देखो तव=तप् ।

तवय वि [दे] व्याकुल, किसी कार्य में लगा हुआ ; (दे ३, २) ।

तवय पुं [तपक] तवा, भूनने का भाजन, (विपा १, ३ ; सुपा ११८ ; पाम) ।

तवस्सि वि [तपस्विन्] १ तपस्या करने वाला ; (सम ६१ ; उत्त ८३३ टी) । २ पुं. साधु, मुनि, कवि, (स्वप्न १८) ।

तविय वि [तप्त] तपा हुआ, गरम ; (हे २, ३०५ ; पाम) ।

तविय वि [तापित] १ गरम किया हुआ, २ संतापित ; "एवाए को न तविओ, जयम्मि तव्वीए सव्वहा" (सुपा ३०४ ; महा ; विंग) ।

तविया स्त्री [तापिका] तवा का हाथा, (दे १, ११३) ।

तवु देखो तउ ; (पउम ११८, ८) ।

तव्व देखो तव्वो, (हेका) ।

तव्वो वगै तव्व=तव्य् । 'कम्म न ['कर्मन्] तपःकर्म, ... (पव ११) । धण पुं ['धन] मुनि, मुनि, (प्रक) । 'धर पु [धर] तपस्वी, मुनि ; (पउम २०, १६६ ; १०३, १०८) । धण न [धन] मुनि का आभूषण ; (उत्त २४६, पउम १६) ।

तव्वणिय वि [दे] मैला, कैदी, बुद्ध-शासन का अनुयायी ; "तव्वणियाण बिंबं बिसयसुहुज्झियमत्तवत्थीणं" (सिरि १०८१) ।

तव्वत्तिल्ल वि [दे नूतनार्थवत्तिक] नूतन अर्थ में स्थित ; (उत्त ६ ३६८) ।

तव्विट्ठ वि [तद्विध] उसी प्रकार का ; (भग) ।

तस अक [त्रस्] डरना, भय पाना । तसइ ; (हे४, १६८) । कृ तसियव्व ; (उत्त ३३६ टी) ।

तस पुं [त्रस] १ स्पर्श-इन्द्रिय के अधिक इन्द्रिय वाला जंतु, द्वीन्द्रिय आदि प्राणी ; (जीव १ ; जी २) । २ एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने आने की शक्ति वाला प्राणी ; (निचू १२) । 'काय पुं ['कायिक] जंगम प्राणी, द्वीन्द्रियादि जीव ; (पच्च १, १) । 'काय पुं ['काय] १ त्रसात्मा ; (दश १, १) । २ जंगम प्राणी, (आचा) । 'नाम न [नामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव त्रसकाय में उत्पन्न होता है ; (कम्म १ ; सम ६७) । 'रेणु पु [रेणु] परिमाण-विशेष, बत्तीस हजार सात सौ अस्सी परमाणुओं का एक परिमाण ; (अनु ; पव २६४) । 'वाहया स्त्री ['पादिका] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष ; (जीव १) ।

तसण न [त्रसन] १ स्पन्दन, चलन, हिलन ; (राज) । २ पटाखा ; (सूत्र १, ७) ।

तसर देखो टसर ; (कप्प) ।

तसिअ वि [दे] शुष्क, सूखा ; (दे ५, २) ।

तसिअ वि [तृषित] तृषातुर, पिपासित ; (स्वप्न ८४) ।

तसिअ वि [त्रस्त] भीत, डरा हुआ ; (जीव ३ ; महा) ।

तसियव्व देखो तस=त्रस् ।

तसेयर वि [त्रसेतर] एकेन्द्रिय जीव, स्थावर प्राणी, (सुपा १६८) ।

तह अ [तथा] उसी तरह ; (उषा ; आचा १६ ; स्वप्न १०) । २ और, तथा ; (हे १, ६७) । ३ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय ; (निचू १) । 'कार पुं ['कार] 'तथा' शब्द का उच्चारण ; (उत्त २६) । 'णाण वि

[°ज्ञान] प्रश्न के उत्तर को जानने वाला ; (ठा ६) । २ न. सत्य ज्ञान ; (ठा १०) । °त्ति अ [इति] स्वीकार-द्योतक अव्यय, वैसा ही (जैसा आप फरमाते हैं) ; (णाया १, १) । °य अ [°च] १ उक्त अर्थ की दृढ़ता-सूचक अव्यय ; २ समुच्चय-सूचक अव्यय , (पंचा २) । °वि अ [°पि] तो भी ; (गउड) । °विह वि [°विध] उस प्रकार का , (सुपा ४५६) । देखो तहा ।

तह वि [तथ्य] तथ्य, सत्य, सच्चा, (सूअ १, १३) ।

तह पु [तथ] आज्ञा-कारक, दास, नौकर , (ठा ४, २—पत्र २१३) ।

तह देखो तह=तथा , (औप) ।

तहरी स्त्री [दे] पङ्क वाली मुर्गी , (दे ५, २) ।

तहल्लिआ स्त्री [दे] गो-वाट, गौओं का बाड़ा ; (दे ५, ८)।

तहा देखो तह=तथा , (कुमा , गउड , आचा ; सुर ३, २७)। °गय पुं [°गत] १ मुक्त आत्मा , २ सर्वज्ञ ; (आचा) । °भूय वि [°भूत] उस प्रकार का , (पउम २२, ६६) । °रूव वि [°रूप] उस प्रकार का, (भग १५) । °वि वि [°वित्] १ निपुण, चतुर, २ पु. सर्वज्ञ ; (सूअ १, ४, १)। °हि अ [°हि] वह इस प्रकार ; (उप ६८६ टी) ।

तहि देखो तह=तथा ;(गा ८७८ , उत्त ६) ।

तहि) अ [तत्र] वहां, उसमें , (गा २०६ ; प्राप्र , गा
तहिं) २३४ , ऊह १०५) ।

तहिय वि [तथ्य] सत्य, सच्चा, वास्तविक , (णाया १, १२)।

तहियं अ [तत्र] वहां, उसमें , (विसे २७८) ।

तहेय) अ [तथैव] उसी तरह, उसी प्रकार , (कुमा ;
तहेव) षड्) ।

ता अ [तद्] उससे, उस कारण से ; (हे ४, २७८ , गा ४६ ; ६७ ; उव) ।

ता देखो ताव=तावत् ; (हे १, २७१ ; गा १४१ , २०१)।

ता अ [तदा] तब, उस समय ; (रंभा ; कुमा , सण) ।

ता अ [तर्हि] तो, तब, (रंभा, कुमा) ।

ता स्त्री [तां] लक्ष्मी ; (सुर १६, ४८) ।

तां न [तद्] वह । °गंध पुं [°गन्ध] १ उसका गन्ध , २ उसके गन्ध के समान गन्ध, (पण्ण १७) । °फास पुं [°स्पर्श] १ उसका स्पर्श ; २ वैसा स्पर्श ; (पण्ण १७) । °रस पु [°रस] १ वह स्वाद, २ वैसा स्वाद ; (पण्ण १७)। °रूव न [°रूप] १ वह रूप, २ वैसा रूप ; (पण्ण १७—पत्र ३१२) ।

ताअ देखो ताव=ताप ; (गा ७६७ ; ८१४ ; देवेन्द्र०)।

ताअ पु [तात] १ ताऊ, पिता, बाप ; (सुर १, १३१, उत्त १४) । २ पुत्र, बच्चा , (सूअ १, ३, २) ।

ताअ सक [त्रै] रक्षण करना । कृ—तायव्व ; (कप्र)।

ताइ वि [त्यागिन्] त्याग करने वाला ; (ठा २, १)।

ताइ वि [तायिन्] रक्षक, परिपालक ; (उत्त ८)।

ताइ वि [तापिन्] ताप-युक्त ; (सूअ १, १६)।

ताइ वि [त्रायिन्] रक्षक, रक्षण करने वाला ; (उ २१, २२) ।

ताइअ वि [त्रात] रक्षित ; (उव) ।

ताउं (अप) देखो ताव=तावत् ; (कुमा) ।

ताउटा (पै) देखो दाढा ; (हे ४, ३२६) ।

ताड सक [ताडय्] १ ताडन करना, पीटना । २ प्रेरक करना, आघात करना । ३ गुणाकर करना । ताडइ, (हे ४, २७) । भवि—ताडइस्सं; (पि २४०) । कर्म—ताडिंत; (काल) । कवकृ—ताडिज्जमाण, ताडीअमाण ; (सुपा २६ ; पि २४० ; अभि १२१)। हेकृ—ताडिउं , (कप्र) । कृ—ताडिअ ; (उप ६८६ टी)।

ताड पु [ताल] ताड का वृक्ष (स २५६)।

ताडंक पु [ताडङ्क] कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल, (दे ६, ६३ ; कप्र ; कुमा)।

ताडण न [ताडन] १ ताडन, पीटना ; (उप ६८६ टी, गा ६४६) । २ प्रेरणा, आघात , (से १२, ८३)।

ताडाविय वि [ताडित] पीटवाया गया ; (सुपा २८८)।

ताडिअ देखो ताड=ताडय् ।

ताडिअ वि [ताडित] १ जिसका ताडन किया गया हो वह, पीटा हुआ ; (पाअ) । २ जिसका गुणाकार किया गया हो वह, "इक्कारसाईं सा करणकारणाणुमइताडिआ होइ" (भग)।

ताडिअय न [दे] रोदन, रोना , (दे ६, १०) ।

ताडिज्जमाण देखो ताड=ताडय् ।

ताडी स्त्री [ताडी] वृक्ष-विशेष , (गउड) ।

ताडीअंत) देखो ताड=ताडय् ।
ताडीअमाण)

ताण न [त्राण] १ शरण, रक्षण करना , (सुपा ६०४)। २ रक्षण ; (सम ५१) ।

ताण पुं [तान] संगीत-प्रसिद्ध स्वर-विशेष, "ताणा एगग्गया" (अणु) ।

तामिअ वि [तामित] बना हुआ ; (सं १६) ।
तामिस देखो तामिस ; (गा ७३८, प्रामा ३४) ।
तामेउं देखो तम्मेऊण् । दंसण ; (गा ८६३) ।
तामेल (अप) देखो ताव+इच्छ् ; (हे ४, ४०६ ; भवि) ।
तामेर वि [देसी] रक्त, लाल ; (दे ६, १०, पउम) ।
तामरस न [तामरस] कमल, पद्म, (दे ६, १०, पउम) ।
तामरस न [देसी] पानी में उत्पन्न होने वाला पुष्प; (दे ६, १०) ।
तामलि पुं [तामलि] भवनपति-देवों का एक आवास, (भग ३, १ ; श्रा ६) ।
तामलित्ति की [ताम्रलिप्ति] एक प्राचीन नगरी, बंग देश की एक राजधानी ; (उप ६८७ ; सण ३, १ ; पव्वा १) ।
तामलित्तिया की [ताम्रलिप्तिका] जैन मुनि-वंश की एक शाखा ; (कप्प) ।
तामस वि [तामस] अंधेरा वाला, (पउम ८, ६० ; कुप्र ३५८) । २ न [तस्त्र] काला वर्ण का अन्न-विशेष, (पउम ८, ६०) ।
तामहि (अप) देखो ताव+इच्छ् , (पउ ; भवि ; सि ४६१ ; हे ४, ४०६) ।
तायंसिया पुं [त्रायस्त्रिंशक] गुरु-स्थानीय देव-जाति, (ठा ३, १ ; कप्प) ।
तायत्तीसा की [त्रयस्त्रिंशत्] १ संख्या-विशेष, तेतीस, तेतीस संख्या वाला, तेतीसवाँ ; (ठा ३, १ ; सम ३३ ; कप्प) । २ तेतीस संख्या वाली ; (सम ३३) ।
तायव्व देखो ताव+अव्वै ।
तार वि [तार] १ निर्मल, स्वच्छ ; (से ६, ४२) । २ ऊँचा, उच्चतर, ऊँचे स्वर का ; (पउम) । ३ ऊँचे ऊँचा, (से १, ४) । ४ ऊँचे ऊँचा स्वर ; (गउड ; सं ४६४) । ५ ऊँचा, ऊँची ; (सं ३) । ६ पुं. वानर-विशेष ; (से १, ३४) । ७ स्त्री की 'चनी' गुप्त-कथा ; (अनु ४) ।
तारंस न [तारस्] तारा-समूह ; (से ६, ४२) ।
तारग वि [तारक] तारने वाला, पार उतारने वाला, (उप ६ ३३) । २ पुं. द्वार-विशेष, द्वितीय प्रतिहारदेव ; (पउम ६, ११६) । ३ पूर्व की ओर का द्वार ; (ठा १) ।
तारया की [तारका] १ नक्षत्र ; (सूक्र २, १) । २ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक पटरानी ; (ठा ४, १) । देखो तारया ।
तारय न [तारक] १ पार उतारण ; (उप ३६७) । २ तारने वाला ; (उप ४१७) ।

तारत्तर पुं [देसी] मुहूर्त ; (दे ६, १०) ।
तारय देखो तारग ; (स्वप्न १ ; प्रामा १०१) । ३ किरीट ; (पिंड) ।
तारया देखो तारगा । २ नक्षत्र की दशा ; (गा ६१८ ; २६४) ।
तारा की [तारा] १ नक्षत्र की पुत्री ; (गा ६११ ; से १, ३४) । २ नक्षत्र ; (ठा ४, १ ; से १, ३४) । ३ सुग्रीव की पत्नी, (से १, ३४) । ४ पुष्कल चक्रवर्ती की माता ; (स्वप्न) । ५ नर्मदा-किनारे ; (ठा १०) । ६ बैलों की चाल (कुप्र ४८३) । 'उर' न ['पुर'] तारंगा (कुप्र ४८३) । 'चंद' पुं ['चन्द्र'] एक राजकुमार (धर्म ३२ टी) । 'तणय' पुं ['तनय'] बुध, बहुगद ; (से १३, ८७) । 'पह' पुं ['पथ'] आकाश ; (भवि) । 'पहु' पुं ['प्रभु'] चन्द्रमा ; (उप ६८७ टी) । मैत्री की [मैत्री] नक्षत्रवर्ग मित्रता ; (कप्प) । 'रयण न ['रत्न'] अनंतनाथ का चरित्र, (कुप्र १८०) । 'वइ ['पति] चन्द्रमा, (गउड) ।
तारिम वि [तारिम] तरणीय, तैरने योग्य ; (आचा ६२)
तारिय वि [तारित] पार उतारा हुआ ; (भवि) ।
तारिया की [तारिका] तारा के आकार की एक प्रकार की बिन्दु, बिन्दी, टिकिया ; "तिलिकरंडतारियाउल्लं" (सुपा ३, ७१) ।
तारिस वि [तादृश] वैसा, उस तरह का ; (कप्प ; प्रासू ६) । स्त्री —सी ; (प्रासू १२६) ।
तारुण्ण } न [तारुण्य] तरुणता, यौवन ; (गउड ; कप्पू ;
तारुन्न } कुप्र ; कुप्र ३१६) ।
ताल देखो ताड=ताडय् । ताडेइ ; (सि ३४०) । कर्म—तालेमाण ; (सिरि १, १) । कृदंत—ताडिउज्जंत, ताडिउज्जमाण , (पउम ११८, १० ; सि ४४०) ।
ताल सक [तालय्] ताना तानना, शब्द करना । कर्म—तालेवि ; (कुप्र ४२८) ।
ताल पुं [ताल] १ हस्त-विशेष ; (पणह १, ४) । २ वृक्ष-विशेष, वृक्षों का ; (पणह १, १) । ३ ताली ; (कुप्र ३) । ४ घंटा, टंकार ; (दे ६, ११) । ५ वृक्ष-समूह ; (स्वप्न) । ६ अनंतनाथ का एक उत्सव ; (सम ८, १) । ७ ताल, हस्त शब्द करने की क्रिया ; (उप ३३३) । ८ ताड वृक्ष का फल ; (उ

(कुमा ; प्राप्र ८६ ; सं १)। °लोअण पुं [°लोचन] महादेव, शिव ; (श्रा २८ ; पउम ५, १२२ ; पिंग)। °लोअपुज्ज पुं [°लोकपूज्य] धातकीखण्ड के विदेह में उत्पन्न एक जिनदेव , (पउम ७५, ३१)। °लोई स्त्री [°लोकी] देखो °लोअ ; (गउड ; भत १४२)। °लोग देखो °लोअ ; (उप पृ ३)। °वई स्त्री [°पदी] १ तीन पदों का समूह। २ भूमि में तीन बार पाँव का न्यास ; (औप)। ३ गति-विशेष ; (अंत १६)। °वग्ग पु [°वर्ग] १ धर्म, अर्थ और काम ये तीन पुरुषार्थ ; (ठा ४, ४—पव २८३ ; स ७०३ ; उप पृ २०७)। २ लोक, वेद और समय इन तीन का वर्ग , ३ सूत्र, अर्थ और उन दोनों का समूह ; (आचू १ , आवम)। °वण्ण पु [°पर्ण] पलाश वृक्ष ; (कुमा)। °वरिस वि [°वर्ष] तीन वर्ष की अवस्था वाला ; (पव ३)। °वलि स्त्री [°वलि] चमड़ी की तीन रेखाएं , (कप्पू)। °वलिय वि [°वलिक] तीन रेखा वाला , (राय)। °वली देखो °वलि ; (गा २७८ , औप)। °वट्ठ पु [°पृष्ठ] भरतक्षेत्र के भावी नवम वासुदेव , (सम १५४)। °वय न [°पद] तीन पाँव वाला , (दे ८, १)। °वहआ स्त्री [°पथगा] गंगा नदी , (से ६, ८ ; अच्चु ३)। °वायणा स्त्री [°पातना] देखो °पायण ; (पव्व १, १)। °विट्ठ, °विट्ठु पुं [°पृष्ठ, °विष्णु] भरतक्षेत्र में उत्पन्न प्रथम अर्ध-चक्रवर्ती राजा का नाम ; (सम ८८ ; पउम ५, १५६)। °विह वि [°विध] तीन प्रकार का ; (उवा ; जी १० ; नव ३)। °विहार पुं [°विहार] राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ पाटण का एक जैन मन्दिर , (कुप्र १४४)। °संकु पु [°शङ्कु] सूर्यवंशीय एक राजा ; (अभि ८२)। °सज्झ न [°सन्ध्य] प्रभात, मध्याह्न और सायंकाल का समय ; (सुर ११, १०६)। °सट्ठ वि [°षष्ट] तेसठवाँ, ६३ वाँ ; (पउम ६३, ७३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] तेसठ, ६३ , (भवि)। °सत्त वि, ब [°सप्तन्] एकवीस ; (श्रा ६)। °सत्तखुत्तो अ [°सप्तकृत्वस्] एकवीस बार ; (आया १, ६ , सुपा ४६६)। °समइय वि [°सामयिक] तीन समय में उत्पन्न होने वाला, तीन समय की अवधि वाला ; (ठा ३, ४)। °सरय न [°सरक] तीन लड़ वाला हार ; (आया १, १ ; औप ; महा)। २ बाण-विशेष ; (पउम ६१, ४४)। °सरा स्त्री [°सरा] मछली पकड़ने की जाल-विशेष ; (विपा १, ८)। °सरिय न [°सरिक] १ तीन लड़ वाला हार ; (कप्प)। २ बाण-विशेष , (पउम ११३, ११)। ३ वि, बाण-विशेष-धारी (पउम १०२, १२३)। °सीस पु [°शीर्ष] देव विशेष ; (दीव)। °सूल न [°शूल] शस्त्र-विशेष , (पउम १२, ३४ ; स ६६६)। °सूलपाणि पुं [°शूलपाणि] १ महादेव, शिव। २ त्रिशूल को हाथ में धारण करने वाला सुभट ; (पउम ५६, ३५)। °सूलिया स्त्री [°शूलिका] छोटा त्रिशूल ; (सूत्र १, ६, १)। °हत्तर वि [°सप्तन] तिहत्तरवाँ, ७३ वाँ; (पउम ७३, १)। °हा अ [°धा] तीन प्रकार से ; (पि ४६१ , भग)। °हुअण, °हुण, °हुवण न [°भुवन] तीन जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक ; (कुमा ; सुर १, ८ ; प्राप्र ४६ ; भग १६)। २ राजा कुमारपाल के पिता का नाम ; (कुप्र १४४)। °हुअणपाल पुं [°भुवनपाल] राजा कुमारपाल का पिता ; (कुप्र १४४)। °हुअणालंकार [°भुवनालंकार] रावण के पट्टहस्ती का नाम ; (पउम ८२, १२२)। °हुणविहार पु [°भुवनविहार] गुजरात पाटण में राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ एक जैन मंदिर (कुप्र १४४)। देखो तेंअ।

°ति देखो इअ = इति ; (कुमा ; कम्म २, १२ ; ११)।

तिअ न [त्रिक] १ तीन का समुदाय ; (आ १, ३ टी)। २ वह जगह जहाँ तीन रास्ते मिलते हों , (१, ६१)। °संजअ पुं [°संयत] एक राजर्षि ; (५, ५१)। देखो तिग।

तिअ वि [त्रिज] तीन से उत्पन्न होने वाला ; (राय)।

तिअंकर पुं [त्रिकंकर] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (ती

तिअग न [त्रिकक] तीन का समुदाय ; (विसे २६२१)।

तिअडा स्त्री [त्रिजटा] स्वनाम-ख्यात एक राक्षसी , (११, ८७)।

तिअभंगी स्त्री [त्रिभङ्गी] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तिअय न [त्रितय] तीन का समूह ; (विसे १४११)।

तिअलुक्क } न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—स्वर्ग, मर्त्य और
तिअलोय } पाताल लोक ; (धर्मा ६०, लहुअ ३)।

तिअस पुं [त्रिदश] देव, देवता ; (कुमा ; सुर १, ६)।

°गअ पुं [°गज] । ऐरावण हाथी, इन्द्र का हाथी, (६, ६१)। °नाह पु [°नाथ] इन्द्र ; (उप ६८६ टी ; सुपा ४४)। °पहु पु [°प्रभु] इन्द्र, देव वाचक ;

(अणु, भग १४, ६), "तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे" (कप्प)। °गइ स्त्री [°गति] १ तिर्यग्-योनि, (ठा ६, ३)। २ वक्र गति, टेढ़ी चाल, कुटिल गमन, (चंद २)। °जंभग पुं [°जृम्भक] देवों की एक जाति ; (कप्प)। °जोणि स्त्री [°योनि] पशु, पक्षी आदि का उत्पत्ति-स्थान ; (महा)। °जोणिअ वि [°योनिक] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न, (सम २ ; भग ; जीव १ ; ठा ३, १)। °जोणिणी स्त्री [°योनिका] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न स्त्री जन्तु, तिर्यक् स्त्री ; (पण्ण १७—पत्र ५०३)। °दिसा दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व आदि दिशा; (आचा; उवा)। °पव्वय पुं [°पर्वत] बीच में पड़ता पहाड़, मार्गविरोधक पर्वत ; (भग १४, ६)। °भित्ति स्त्री [°भित्ति] बीच की भींत ; (आचा)। °लोग पु [°लोक] मर्त्य लोक, मध्य लोक ; (ठा ६, ३)। °वसइ स्त्री [°वसति] तिर्यग्-योनि, (पण्ह १, १)।

तिरिच्छ वि [तिरश्चीन] १ तिर्यग् गत ; (राज)। २ तिर्यक्-सम्बन्धी ; (उत्त २१, १६)।

तिरिच्छि देखो तिरिअ ; (हे २, १४३, षड्)।

तिरिच्छी स्त्री [तिरश्ची] तिर्यक्-स्त्री ; (कुमा)।

तिरिड पुं [देसी] एक जाति का पेड़, तिमिर वृक्ष; (दे ६, ११)।

तिरिडिअ वि [देसी] १ तिमिर-युक्त; २ विचित्र, (दे ६, २१)।

तिरिडि पुं [देसी] उष्ण वात, गरम पवन ; (दे ६, १२)।

तिरिच्चि (मा) देखो तिरिच्छि ; (हे ४, २६६)।

तिरीड पुन [किरीट] मुकुट, सिर का आभूषण ; (पण्ह १, ४ ; सम ११३)।

तिरीड पु [तिरोट] वृक्ष-विशेष ; (बृह १)। °पट्टय न [°पट्टक] वृक्ष-विशेष की छाल का बना हुआ कपड़ा ; (ठा ६, ३—पत्र ३३८)।

तिरीडि वि [किरीटिन्] मुकुट-युक्त, मुकुट-विभूषित ; (उत्त ६, १०)।

तिरोभाव पु [तिरोभाव] लय, अन्तर्धान ; (विसे २६६६)।

तिरोहर वि [देसी] वृष्टि से अन्तर्हित, बाड़ से व्यवहित ; (दे ६, १३)।

तिरोहिअ वि [तिरोहित] अन्तर्हित, आच्छादित ; (राज)।

तिल्ल पुं [तिल] १ स्वनाम-प्रसिद्ध अन्न-विशेष ; (गा ६६६ ; आचा १, १ ; प्रभु ३४; १०८)। २ ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °कुट्टी स्त्री [°कुट्टी] तिल की बनी हुई एक भोज्य वस्तु, (धर्म °पप्पडिया स्त्री [°पर्पटिका] तिल की बनी हुई एक भोज्य ; (पण्ण १)। °पुप्फवण्ण पुं [°पुष्पवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष ; ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। °भल्ली स्त्री [°भल्ली] एक खाद्य वस्तु ; (धर्म १ °संगलिया स्त्री [°संगलिका] तिल की पपड़ी ; (१६)। °सक्कुलिया स्त्री [°शष्कुलिका] तिल की बनी हुई खाद्य वस्तु-विशेष ; (राज)।

तिलइअ वि [तिलकित] तिलक की तरह आचरित, तिलक किया हुआ ; " जयजयसद्दतिलइओ मंगलउग्गुसो " (धर्म)।

तिलंग पुं [तिलङ्ग] देश-विशेष, एक आर्यदेश (कुमा ; इक)।

तिलग } पु [तिलक] १ वृक्ष-विशेष ; (सम १११
तिलय } औप ; कप्प ; णाया १, ६ ; उत्त ३८६ टी; १६)। २ एक प्रतिवासुदेव राजा, भरतक्षेत्र में उस पहला प्रतिवासुदेव ; (सम १५४)। ३ द्वीप-विशेष समुद्र-विशेष ; (राज)। ४ न. पुष्प-विशेष, (कुम ६ टीका, ललाट में किया जाता चन्दन आदि का चिह्न, (धर्मा ६)। ७ एक विद्याधर-नगर; (इक)।

तिलितिलय पु [दे] जल-जन्तु विशेष; (कप्प)।

तिलिम अक [दे] बाष्प-विशेष; (सुपा २४१ ; सण स्त्री —°मा; (सुर ३, १८)।

तिलुक्क न [त्रैलोक्य] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक, (२३)।

तिलेल्ल न [तिलतैल] तिल का तेल ; (कुमा)।

तिलोक्क देखो तिलुक्क ; (सुर १, ६२)।

तिलोत्तमा स्त्री [तिलोत्तमा] एक स्वर्गीय अप्सरा ; (७६८ टी ; महा)।

तिलोदग } न [तिलोदक] तिल का धोवन ; (कप्प
तिलोदय } कप्प)।

तिल्ल न [तैल] तैल, तेल, (सूत्र ३५, कुप्र ३००)।

तिल्ल न [तिल्ल] छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तिल्लग वि [तैलक] तेल बेचने वाला ; (बृह १)।

तिल्लोदा स्त्री [तैलोदा] नदी-विशेष ; (ठाणं १)।

तिवं (अप) देखो तहा ; (हे ४, ३६७)।

तिवग्गणी स्त्री [त्रिवर्गा] एक महौषधि, (तो २)।

तिविडा स्त्री [दे] सूची, सूई ; (दे ६, १२)।

तिविडी स्त्री [दे] पुटिका, छोटा पुड़ा ; (दे ६, १२)।

तुरंगम वि [तुरङ्गम] १ प्रबल, प्रचण्ड, दुर्दम्य ; (भग १५ ; औप)। २ पैर, मकान्त ; (सुम १, ५, १)। ३ गत, चेष्टा ; (पणह १, १)। ४ निकर, समूह ; (भग ८, ४)। ५ प्रहृष्ट, प्रकर्ष-युक्त ; (दसा १,१—पत्र ४)।

तुरंत वि [दे. तौर] १ तुरन्त, जो कल्पित से अधिक हो ; (दि ६,११; सुम १,३,३ ; १० ६, १; २,६; श्रावक)। अव्यय क्रियाविशेषण अपर्ण : (दे ६, १५; धर्म २ ; औप ; दे १, ३, पंच १५ ; श्रावक ६ ; कप्र)।

तुरंगा स्त्री [त्रिशला] भगवान् महावीर की माता का नाम: (सम १५१)। °सुअ पुं [°सुत] भगवान् महावीर ; (पउम १, ३३)।

तुरा स्त्री [तृषा] प्यास, पिपासा ; (सुर ८, २०८ ; श्रा)।

तुराइय) वि [तृषित] तृषातुर, प्यासा : (भग ; कप्र ; सण) पउम १, ४ ; सुर १, १८६)।

तुरिअ पुं न. [त्रिंशिरस्] १ देव-विमान ; (पउम ८०, ५)। २ पुं. दैत्य-विशेष ; (पउम ६८, ४६)। ३ राक्षस का एक पुत्र ; (दे १२, ५१)।

तुरंगुत्त देखो तौरंगुत्त ; (राज)।

तुरंड (अप) देखो तुरंग ; (हेम)।

तुरि पुंस्त्री [तिथि] पंचमी आदि कालिक से युक्त काल, दिन, तिथि ; (संद १० ; ठि १८०)।

तुरिअ वि [तृतीय] तीसरा ; (सम १४०; ठाणं ३०)।

तुरिअ वि [त्वरित] १ शीघ्रता हुआ, वेगी हुआ; (सुर ४४६; सण)। २ पुं. मृग-कवि ; (अ ३, ४)।

तुरिअ पुं [तैलिल] ओषधि-प्रसिद्ध वनस्पति-विशेष ; (विपा १,४८)।

तुरिअ न [तौरस] घोड़े, अश्व-विशेष: (दे २, ३६ ; सण)।

तुरिअ वि [तौरित] मारा, पीटा ; (सुर ३७१)।

तुरिअ अक [शक्] समर्थ होना। तुरिउं ; (हे४, ८४)।

तुरिअ सक [तौरय्] त्वरा करना, परिहार करना। तुरिउं, तुरिए ; (हे४, ८४ ; षड्)। संकृ—तुरिऊणं ; (श्रा)।

तुरिअ पुंस्त्री [तौर] त्वरा, वेग, शीघ्र ; (स्थान ११६ ; श्रावक ८० ; ठा ४, १ ; कप्र)।

तुरिअंग वि [तौरिताङ्ग] शीघ्रगामी ; (आचा)।

तुरिअ वि [तौरित] त्वरित, परिपूर्ण किया हुआ ; (पंच १)।

तुरिया स्त्री [दे] घर रखने का पैटा, बाजरि (?) ; "पेडिक्कोस पासच्चं वत्तुरए, संचिन्ने तौरियाए" (सण१७)।

तुरिय न [त्रिंशत्] १ संख्या विशेष, तीस ; २ तीस-संख्या वाला ; (महा ; भवि)।

तुरीसआ) स्त्री [त्रिंशत्] आप देखो ; (संक्षि २१)।

तुरीसइ) त्रिंशत्तम वि [°त्तम] तीस वर्ष की उम्र का ; (पउम २, २८)।

तुरीसइम वि [त्रिंश] १ तीसवाँ ; (पउम २०, ६८)। २ तात्कालिक चौदह दिनों का समाह ; (दसा १, १)।

तुरीसगुत्त पुं [तिष्यगुप्त] एक प्राचीन आचार्य-विशेष, जिसने ऋजुसूत्र प्रदेश में जीव की सत्ता का पन्थ चलाया था; (ठा७)।

तुरीसभद्द पुं [तिष्यभद्र] एक जैन मुनि : (कप्र)।

तुरीसम वि [त्रिंश] तीसवाँ ; (भवि)।

तुरीसा स्त्री देखो तीस ; (हे १, ८२)।

तुरीसिया स्त्री [त्रिंशिका] तीस वर्ष के उम्र की स्त्री: (ठा७)।

तुरु म [तु] इस अर्थों का सूचक अव्यय:—१ निश्चय, मेद, विशेष ; (श्रा २७ ; दिवे ३०३५)। २ अवधारण, नियम ; (सुम १, २, २)। ३ समुच्चय ; (सुम १, १, १)। ४ काकु, खेद ; (विसे १)। ५ पादपूरक अव्यय ; (दिवे ३०३५ ; पंचा ४)।

तुरुअ सक [तुद्] व्यथा करना, पीड़ा करना। तुरुइ ; (षड्)। प्रयो. संक—तुवावइत्ता ; (अ ३, २)।

तुरुक्ख पुं [तुरुष्क] धान्य-विशेष, रहर : (जं १)।

तुरुक्ख अक [त्वर्] त्वरा करना। तुरुक्ख ; (भा ६०२)।

तुरुंज वि [तुङ्ग] १ ऊँचा, उच्च ; (भग २६६ ; औप)। २ पुं. छन्द-विशेष ; (पिंग)।

तुरुंगार पुं [तुङ्गार] अग्नि कोण का पवन ; (भगवती)।

तुरुंगिम पुंस्त्री [तुङ्गिमन्] ऊँचाई, उच्चत्व ; (सुर १२४; कप्र १५० ; कप्र ; सण)।

तुरुंबिय पुं [तुम्बिक] १ अन्न-विशेष ; (भग)। २ पर्वत-विशेष, "तहे तुरुंबिरिहरे संतु सिवं दंत लाह" (सुर १०२)। ३ पुंस्त्री, गोत्र-विशेष में उत्पन्न ; "जलाई तुरुंबि देव" (दंति)।

तुरुंबिया स्त्री [तुम्बिका] अन्नो-विशेष ; (भग)।

तुरुंबियायण न [तुम्बिकायन] एक गोत्र का नाम ; (कप्र)।

तुरुंगी स्त्री [दे] १ रात्रि, रात ; (दे १, १४)। २ अनुचर-विशेष ; "अहिसमणुतुरुंगिए—" (कप्र)।

तुरुंबीय पुं [तुरुम्बीय] अन्न-विशेष ; (

तुरुक्क न [दे] वस्त्र-विशेष, (सिरि ८७)।
तुरुक्कय न [तुरुष्क] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप करने में काम आता है, सिन्दूक, (स्वप्न १३७, आया १, १, पएम १, ११, औप)।
तुरुक्की स्त्री [तुरुष्की] लिपि-विशेष ; (सिरि ४६४ टी)।
तुरुमणी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (भग ६१)।
तुरेंत) देखो तुर।
तुरेंताण)
तुर्र अक [तोरय्] १ तोड़ना। २ उखाड़ना। ३ ठीक २ देखना। कवा। तुरइ, तुरेइ, (हे ४, २६ ; षड् ; कप्पू १८८)। कर्म—तुरिज्जंत, (निचू)। संकृ—तुरेऊण ; (सुर १)। हेकृ—तुरेत्तए, (भग ६, २६)।
तुरंत देखो तुरा ; (गाया २१)।
तुरंतया देखो तुरा, तुरय गा (अच्चु ८०)।
तुरगा न [दे] अश्वशालीय न्याय, (दे ६, १६ ; से ४, १०)।
तुरगया स्त्री [दे] यदृच्छा, स्वैरिता, स्वेच्छा, (सिरि ३६)।
तुरगम न [तुरगम] तीव्रता, तेजस्व, (कप्पू ; कप्पा १६७)।
तुरगमा स्त्री [तुरगमा] तीव्रता, तेजस्व, (उप पृ २७४ ; स ६३१)।
तुरय वि [तोरक] तोड़ने वाला, (सुपा १३७)।
तुरयसिक्खा स्त्री [तुरगशिक्षा] अश्व विद्या ; (कुमा)।
तुरयी स्त्री [दे तुरया] वीणा-विशेष, तुरही, (दे ६, १४, कप्प १, उप ८ ; पाम)।
तुरा स्त्री [तुरा] १ शीघ्रता, (सुपा ३६)। २ शीघ्र, तेज, तीव्र का भाव, (सुपा ३६० ; गा १३१)। ३ उच्चय, समूह, (कप्पू १, २)। °मण वि [°मनस्] शीघ्र-दृष्टि व शीघ्र, अस्थिर ; (सूत्र ६)।
तुरिअ वि [तुरित] १ उतरा हुआ, ऊँचा किया हुआ, (वे ६, २०)। २ शीघ्र किया हुआ, (उप ३५)। ३ शुद्ध किया हुआ, (राज)।
तुरिअत्त देखो तुरा।
तुरिअ वि [तूर्य] श्रेष्ठ, प्रशंसनीय ; (भग ; कप्पू १२ ; १६८)।
तुरिअ अक [त्वर्] शीघ्र करना, जल्दी करना। तुरिअ ; हे ४, १०१। संकृ—तुरिऊण, (हे ४, १०१)। तुरंत, वकृ—तुरिअमाण ; (भवि—कप्प १०)।
तुरिअ पुं [तुरग] १ अश्व-विशेष, घोड़ा या ; (हे १, १६) २ वि. शीघ्र या करने वाला, फौरन, (हे ८, ११)।
तुरिया देखो तुरा ; (नाट—मालवी २७)।
तुरिरी स्त्री [तुरिरी] अस्त्र-विशेष, अरहर ; (आ १८, ३१८)।
तुस पुं [तुष] १ कोद्रव आदि तुच्छ धान्य ; (ठा ८) २ धान्य का छिलका, भूसी ; (दे १, ३१)।
तुसली स्त्री [दे] धान्य विशेष ; " तं कणयं तो तुसली वायइ सो किलिबि वरवीयं " (सुपा ३४६), " तेणं जंतीए तुसली अणुगच्छाया " (सुपा ११६)।
तुसार न [तुषार] हिम, बर्फ ; (पाम)। °कर [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा ; (सुपा ३३)।
तुसिणिय) वि [तुष्णीक] मौनी, चुप, बकवास
तुसिणीय) (गाया १, १—पत्र २८ ; ठा १, ३)।
तुसिय पु [तुषित] लोकान्तिक देवों की एक जाती, (गाया १, ८ ; सम ८५)।
तुसेल्लदंड न [दे] दाह, लकड़ी, काष्ठ ; (दे १, १६)।
तुसोदग) न [तुषोदक] ओदि आदि का धोवन
तुसोदय) (राज ; कप्प)।
तुस्सव देखो तूस=तुष्। तुस्सइ ; (सिरि ६३२)।
तुह न [त्वत्] तुम। °त्तण वि [°संबन्धिन्] तुमसे संबन्ध रखने वाला, (सुपा ५६२)।
तुहार (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा ; (हे ४, ४२०)।
तुहिण न [तुहिन] हिम, तुषार ; (पाअ)। °गिरि [°गिरि] हिमाचल पर्वत ; (गउड)। °कर पु [°कर] चन्द्रमा ; (कप्पू)। °गिरि देखो °हरि ; (सुपा ६८)। °हरि पु [°हरि] हिमालय पर्वत ; (सुपा ८८)।
तूअ पु [दे] हंस का काम करने वाला ; (दे ३, ५)।
तूण पुंन [तूण] इषुधि, भाथा, तरकस, (हे १, १४७ ; कुमा)।
तूणइल्ल पु [तूणादृत्] तूण-तरकस बाण बनाने का (पाअ ३, ४ ; औप ; कप्प)।
तूणा) स्त्री [तूणा] १ वाद्य-विशेष ; (राय, जं
तूणि) इषुधि, भाथा ; (ज २ ; ति ११०)।
तूर देखो तुरय। तूरइ ; (हे ४, १०१ ; षड्)। तूरंत, तूरेंत, तूरमाण, तूरेमाण, (हे ४, १०१ ; षड्)।
तूर पुंन [तूर्य] वाद्य, बाजा ; (हे २, ६१ ; कप्पू)। °वइ पु [°पति] नदी का तुम्बुरु ; (सुर १)।

थक्क वि [स्थित] रहा हुआ; (कुमा; वज्जा ३८; सुपा २३७; भारा ७७; गदि ६)।
थक्क पुं [दे] १ अवसर, प्रस्ताव, समय; (दे ६, २४; वव ६; महा; विसे २०६३)। २ थका हुआ, श्रान्त; "थक्कं सव्वसरीरं हियए सूलं सुसूसइ एत्र" (सुर ७, १८६; ४, १६६)।
थक्किअ वि [श्रान्त] थका हुआ, (पिंग)।
थग देखो थय=स्थगय्। भवि—थगइस्सं; (पि २२१)।
थगण न [स्थगन] पिधान, संवरण, आच्छादन; (दे २, ८३; ठा ४, ४)।
थगथग अक [थगथगाय्] धड़कना, काँपना। वकृ—थगथगिंत; (महा)।
थगिय वि [स्थगित] पिहित, आच्छादित, आवृत; (दस ६, १; आवम)।
थगिय देखो थइअ। °गाहि पुं [°ग्राहिन्] ताम्बूल-वाहक नौकर; (सुपा ३३६)।
थग्गया स्त्री [दे] चंचु, चोंच; (दे ६, २६)।
थग्घ पुं [दे] थाह, तला, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त; (दे ६, २४)।
थग्घा स्त्री [दे] ऊपर देखो; (पाअ)।
थट्ट पुंन [दे] १ ठठ, समूह, यूथ, जत्था; "दुद्धरतुरंगथट्टा" (सुपा २८८), "विहडइ लहु दुहनिद्दोघट्टथट्ट" (लहुम ४)। २ ठाठ, सजधज, आडम्बर; (भवि)।
थट्टि स्त्री [दे] पशु, जानवर; (दे ६, २४)।
थड पुन [दे] ठठ, यूथ, समूह; (भवि)।
थड्ड वि [स्तब्ध] १ निश्चल; २ अभिमानी, गर्विष्ठ; (सुपा ४३७; ६८२)।
थड्डिअ वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ। २ स्तब्ध, निश्चल। ३ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, अकड़ रह कर गुरु को किया जाता प्रणाम, (गुभा २३)।
थण अक [स्तन्] १ गरजना। २ आक्रन्द करना, चिल्लाना। ३ आक्रोश करना। ४ जोर से नीसास लेना। वकृ—थणंत, (गा २६०)।
थण पु [स्तन] थन, कुच, पयोधर; (आचा; कुमा, कप्र १६१)। °जीवि वि [°जीविन्] स्तन-पान पर निभने वाला बालक; (श्रा १४)। °घडी स्त्री [°घटी] बड़े स्तन वाली, (गउड)। °विसारि वि [°विसारिन्] स्तन पर फैलने वाला, (गउड)। °सुत्त न [°सूत्र] उर-सूत्र; (दे)। °हर पुं [°भर] स्तन का बोझ, (कुमा १, १८६)।
थणंधय पुं [स्तनन्धय] स्तन-पान करने वाला छोटा बच्चा; "नियय थणं धयंतं थणंधयं इंदि निच्चेए" (सुर १०, ३७; मन्नु ६१)।
थणण न [स्तनन] १ गर्जन, गरजना; (सुअ १, ६, २ आक्रन्द, चिल्लाहट, (सुअ १, ६, १)। ३ आक्रोश की मार, (राज)। ४ आवाज वाला नीसास; (सुअ १, ३, ३)
थणिय न [स्तनित] १ मेघ का गर्जन; (कम्म ४, ६; ५, २७)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट; (सम १११)। पुं भवनपति देवों की एक जाति, (ओप; पव १, १) °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति, (ठा १, १)।
थणिल्ल वि [स्तनवत्] स्तन वाला; (कप्पू)।
थणुल्लअ पुं [स्तनक] छोटा स्तन, (गउड)।
थण्णु देखो थाणु; (गा ४२२)।
थत्तिभ न [दे] विश्राम; (दे ६, २६)।
थद्ध देखो थड्ड; (सम ५१; गा ३०४; वज्जा १०)।
थन्न न [स्तन्य] स्तन का दूध। °जीवि वि [°जीविन्] छोटा बच्चा; (सुपा ६१६)।
थप्पण न [स्थापन] न्यास, न्यसन; (कुप्र ११)।
थप्पिअ वि [स्थापित] रक्खा हुआ, न्यस्त, (पिंग)।
थम्भर पुं [दे] अयोध्या नगरी के समीप का एक ग्राम; (१ ११)।
थमिअ वि [दे] विस्मित; (दे ६, २६)।
थय सक [स्थगय्] आच्छादन करना, आवृत करना, ढकना थएइ, थएसु; (पि ३०६; गा ६०६)। भवि—थइस्सं (गा ३१४)। हेकृ—थइउं; (गा ३६४)।
थय वि [स्तृत] व्याप्त, भरपूर; (से १, १)।
थय पु [स्तव] स्तुति, स्तवन, गुण-कीर्तन; (भवि; सं ४४)।
थयण न [स्तवन] ऊपर देखो; "थुइथयथवरूवनमंसणाइं एगट्ठियाणि एयाइं" (आव २)।
थर पु [दे] दही की तर, दही ऊपर की मलाई, (दे ६, १)
थरत्थर } थरथर } अक [दे] थरथरना, काँपना। थरत्थरेइ, थरहरइ, (सुर ६६, पि २००; ३ ७, ६, गा १६६)। वकृ—थरथरंत, थर

राअंत, थरथराअमाण, थरथरेंत ; (ओघ ४७० ; वि ११८ ; नट—मालती ५५ ; पउम ३१, ४४) ।
थरहरिअ वि [दे] कम्पित ; (दे ५, २७ ; भवि ; सुर १, ७ ; सुपा २१ ; जय १०) ।
थर पुं [दे.स्तर] खड्ग-मुष्टि ; (दे ५, २४) ।
थरुकिण पुं [थरुकिन] १ देश-विशेष; २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी। स्त्री—°णिआ; (इक) ।
थल न [स्थल] १ भूमि, जगह, सूखी जमीन ; (कुमा ; उप ६८६ टी) । २ प्राप्त होते समय सुने हुए मुँह को फाँक, सुने हुए मुँह की खाली जगह; (धर्व ७) । °इल्ल वि [°वत्] स्थल-युक्त ; (गउड) । °कुक्कुडियंड न [°कुक्कुडयण्ड] स्थल-प्रदेश के लिए सुखा हुआ मुख; (धर्व ७) । °चार पुं [°चार] जमीन में चलना; (आचा) । °नलिणी स्त्री [°नलिनी] जमीन में होने वाला कमल का गाछ; (कुमा) । °य वि [°ज] जमीन में उत्पन्न होने वाला ; (पिंड १; पउम १२, ३७) । °यर वि [°चर] १ जमीन पर चलने वाला ; २ जमीन पर चलने वाला पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्राणी; (जीव ३; जी २०; औप) । स्त्री—°री; (जीव ३) ।
थलय पुं [दे] मंडप, तृणादि-निर्मित गृह; (दे ५, २५) ।
थलहिआ) स्त्री [दे] सूतक-स्मारक, शव को गाड़ कर उस
थलहिया) पर किया जाता एक प्रकार का चबूतरा; (स ७१६ ; ७६७) ।
थली स्त्री [स्थली] जल-शून्य भू-भाग; (कुमा ; पाअ) ।
°ओडय पुं [°घोटक] पशु-विशेष; (धर्व ७) ।
थल्लिया स्त्री [दे.स्थालिका] थलिया, छोटा थाल, भोजन करने का बरतन; (पउम २०, १६६) ।
थव सक [स्तु] स्तुति करना। थव—थवंत; (नाट) ।
थव देखो थय=स्तव; (हे २, ४६ ; सुपा ४४६) ।
थव पुं [दे] पशु, जानवर ; (दे ५, २४) ।
थवइ पुं [स्थपति] बढ़ई, बढ़ई ; (दे २, २२) ।
थवइय वि [स्तवकिन्] स्तवक वाला, गुच्छ-युक्त; (काया १, १; औप) ।
थवइल्ल वि [दे] जाँघ फैला कर बैठा हुआ ; (दे ५,२६)।
थवइल्ल पुं [दे] थोक, समूह, जत्था; " तस्स कुलवहुयए थवइल्ला सयसोक्खाय" (वज्जा ६६) ।
थवण देखो थयण ; (आव २) ।
थवणिया स्त्री [स्थापनिका] न्यास, जमा रखी हुई वस्तु; "कन्नगंनूमातिवयणियमवहारकूडलिहियं" (सुपा २७६)।
थवय पुं [स्तवक] फूल आदि का गुच्छ ; (दे २, १०३ ; पाअ)।
थविआ स्त्री [दे] प्रसेविका, बीच्चा के अन्त में लगाया जाता छोटा काष्ठ-विशेष ; (दे २, २५) ।
थविय वि [स्थापित] न्यस्त, निहित ; (भवि) ।
थविय वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, स्तवित ; (सुपा ३४३) ।
थवी [दे] देखो थविआ : (दे २, २५) ।
थस) वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, २५) ।
थसल)
थह पुं [दे] निश्चय, आश्चय, स्थान; (दे ५, २५) ।
था देखो ठा । थाइ; (भवि) । भवि—थाहिइ; (पि५२४)। वकृ—थंत ; (पउम१४, १३४ ; भवि)। संकृ—थाऊण ; (हे४, १६) ।
थाइ वि [स्थायिन्] रहने वाला । °णी स्त्री [°नी] वर्ष वर्ष पर प्रसव करने वाली घोड़ी ; (राज) ।
थाण देखो ठाण ; (हे४, १६ ; विसे३८६६ ; उप पृ३३२)।
थाणय न [स्थानक] मालवाल, क्यारी ; (दे५,२७) ।
थाणय न [दे] १ चौकी, पहरा; "अयाणया अहवि तिं निविट्ठाई थाणयाई", "तमो बहुवेलियाए स्यणीए थाणयनिविट्ठा तुरियमुग्गया सवरपुरिसा" (स ५३७ ; ५४६) । २ पुं चौकीदार, चौकी करने वाला आदमी; "पहायसमए य विसंसरिस्सुं थाणएसुं" (स ५३७) ।
थाणिज्ज वि [दे] गौरवित, सम्मानित ; (दे ४, ६) ।
थाणीय वि [स्थानीय] स्थानाह्न; (स ६६७) ।
थाणु पुं [स्थाणु] १ महादेव, शिव ; (हे २, ७ ; कुमा ; पाअ) । २ ठूठा वृक्ष ; (गा २३२; पाअ), "दवदड्ढथाणुसरिसं" (कुप्र १०२) । ३ खीला ; ४ स्तम्भ ; (राज) ।
थाणेसर न [स्थानेश्वर] समुद्र के किनारे पर का एक शहर; (उप ७२८ टी ; स १४८) ।
थाम वि [दे] विस्तीर्ण ; (दे ५, २५) ।
थाम न [स्थामन्] १ बल, पौरुष, पराक्रम ; (हे४, २६७; टी ३, १) । २ वि बल-युक्त ; (निचू ११) । °य वि [°वत्] बलवान् ; (उत्त २) ।
थाम न [दे.ठाण] स्थान, जगह ; (उत्ति ४७ ; स ४६ ; ४४१) । °केसरिसमूसियउड सिलुच्चयाण य थामसमंसि" (सुर ३, १०६) ।

थार पु [दे] घन, मेघ ; (दे ६, २०)।
थारक्कण वि [थारक्किन] देश-विशेष में उत्पन्न । स्त्री—°णिया ; (औप) । देना थरुगिण ।
थाल पुन [स्थाल] बड़ी थरिया, भोजन करने का पात्र ; (दे १, १२ ; अंत ५ , उत्त पृ २६७)।
थालइल्ल वि [स्थालकिन्] १ थाल वाला । २ पु. वानप्रस्थ का एक भेद , (औप)।
थाला स्त्री [दे] थाला ; (षड्) ।
थाली स्त्री [स्थाली] पाक-पात्र, हाँडी, बटलोही ; (ठा ३, १ , सुख ४८७)। °पाग वि [°पाक] हाँडी में पकाया हुआ , (ठा ३, १)।
थावच्चा स्त्री [स्थापत्या] द्वारका-निवासी एक गृहस्थ स्त्री , (नाया १, ५)। °पुत्त पु [°पुत्र] स्थापत्या का पुत्र, एक जैन मुनि ; (नाया १, ५ ; अंत)।
थावण न [स्थापन] न्यास, आधार , (स २१३)।
थावय पु [स्थापक] स्थापने हेतु, स्थापन-साधक हेतु ; (ठा ४, ३—पत्र २६८)।
थावर वि [स्थावर] १ स्थिर रहने वाला । २ पुं. एकेन्द्रिय जन्तु, एक स्पर्शेन्द्रिय वाला पृथिवी, पानी और वनस्पति आदि का जीव , (ठा ३, १ , जी १)। ३ एक विशेष-नाम, एक श्रेष्ठि का नाम , (उप ६४७ टी)। °काय पु [°काय] एकेन्द्रिय जीव, (ठा १, १)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, स्थावरत्व-प्राप्ति का कारण-भूत कर्म; (पंच ३, सत्त ६०)।
थावस्स) पु [स्थापक] १ दर्शक, आदर्श, शीशा, (विपा
थावच्च) १, १—पत्र २४)। २ दर्शक के आकार का पात्र-विशेष , (औप , भग ; नाया १, १ टी)। ३ अंध का अन्धत्व-विशेष , (राज)।
थास पु [दे] १ स्थान जगह , २ वि, अल्पाक्ष, गंभीर अक्ष-वाला , ३ विस्तीर्ण, ४ दीर्घ, लम्बा ; (दे ८, १०)।
थासग पु [स्थासक] बड़ा घड़ा, स्थासक का अन्त , (पव ; पिंड ११३ , कप्प १, ८ , १४ ; स ८, ८०)।
थासित्त पु [दे] अन्धता, नेत्र-विशेष, (सुख १६)।
थिइय वि [स्तिमित] स्थिर शून्य, (सम १०; पिंड १०३८, ओघ)। थिर अक [स्था] ठहरना , (भग १०, १८ , भग)।
थिक्क अक [स्था] ठहरना, स्थिर होना । संयम ; (उत्त)। कर्म—°क्किज्जइ, (उत्त ८, ३१ टी)। संकृ—थिक्किअ , (उत्त ८, ३१ टी)।
थिग्गल न [दे] १ भित्ति-द्वार, भीत में किया हुआ दरवाजा, (दस ५, १, १६)। २ फटे-टूटे वस्त्र में किया हुआ संधान, वस्त्र आदि के खंडित भाग में लगाई जाती कोर; (पण्ह १७ ; पिंड १४१६ टी)।
थिण्ण वि [स्त्यान] कठिन, जमा हुआ ; (हे १, ७४ ; १९९ ; से २, ३०)। देखो थीण।
थिण्ण वि [दे] १ स्नेह-रहित दया वाला ; २ अभिमानी, गर्व-युक्त ; (दे ६, ३०)।
थिन्न वि [दे] गर्वित, अभिमानी ; (पाम)।
थिप्प देखो थिंप । थिप्पइ ; (हे ४, ११८)।
थिप्प अक [वि+गल्] गल जाना । थिप्पइ ; (हे ४, १७१)।
थिम सक [स्तिम्] आर्द्र करना, गीला करना । वकृ—थिमिउं ; (राज)।
थिमिअ वि [दे, स्तिमित] स्थिर, निश्चल; (हे १, २१, से २, ४३ ; ८, ६१; नाया १, १ ; विपा १, १, सम १, ४; २, ६; औप ; सुज्ज १; सूय १, ३, ४) । २ अल्प, थोड़ा ; (पाम)।
थिमिअ पु [स्तिमित] राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम ; (अंत ३)।
थिर वि [स्थिर] १ निश्चल, निष्कम्प । (ठा १, १; सम ११६ , नाया १, ८)। २ नित्यत्व, शाश्वत, (ठा ७, ३६)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके उदय से दन्त, हड्डी आदि अवयवों की स्थिरता होती है, (कम्म १, ४६; सम ६७) । °यलिया स्त्री [°तरिका] जन्तु-विशेष, घुन की एक जाति ; (औप ३)।
थिरणाम वि [दे]चल चित्त, चंचल-मनस्क ; (हे १, १७)
थिरथेल्ल वि [दे] अस्थिर, चंचल ; (षड्)।
थिरवीस वि [दे] १ निर्भीक, निडर ; २ निर्धन, ३ स्थिर पैर वाला हो वह , (दे ६, ३१)।
थिरिमा पुस्त्री [स्थैर्य] स्थिरता , (ठा)।
थिरीकरण न [स्थिरीकरण] स्थिर करना, दृढ़ करना, जमाना , (ठा ६ ; पंचव ६६)।
थिल्लि स्त्री [दे] चमड़ा विशेष, —१ दो घड़ों को जोड़ने, २ लकड़ी आदि में कसने का चमड़ा , (सुख २, ३, ६, बृह १ टी पत्र ४१, औप)।
थिविथिविय अक [थिवथिवायइ] थिर थिर आवाज करना। वकृ—°थिविथिवंत , (विपा १, ७)।

थुड ३ क [तिष्ठ] ... ...

थेअ वि [स्थेय] १ रहने योग्य, २ जो रह सकता हो; ३ पु. फैसला करने वाला, न्यायाधीश; (हे ४, २६७)।
थेग पु [दे] कन्द-विशेष, (था २०; जी ६)।
थेज्ज न [स्थैर्य] स्थिरता; (विसे १४)।
थेज्ज देखो थेअ, (वव ३)।
थेण पु [स्तेन] चोर, तस्कर; (हे १, १४७)।
थेणिल्लिअ वि [दे] १ हृत, छीना हुआ; २ भीत, डरा हुआ; (दे ५, ३२)।
थेप्प देखो थिप्प। थेप्पइ; (पि २०७, सत्ति ३४)।
थेर वि [स्थविर] १ वृद्ध, बूढ़ा, (हे १, १६६; २, ८६; भग ६, ३३)। २ पु जैन साधु, (ओघ १७; कप्प)। °कप्प पु [°कल्प] १ जैन मुनियों का आचार-विशेष, गच्छ में रहने वाले जैन मुनियों का अनुष्ठान; २ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ, (ठा ३, ४, ओघ ६७०)। °कप्पिय पुं [°कल्पिक] आचार विशेष का आश्रय करने वाला, गच्छ में रहने वाला जैन मुनि; (पव ७०)। °भूमि स्त्री [°भूमि] स्थविर का पद; (ठा ३, २)। °यलि पु [°वलि] १ जैन मुनियों का समूह, २ क्रम से जैन मुनि-गण के चरित्र का प्रतिपादक ग्रन्थ-विशेष; (णंदि; कप्प)।
थेर पुं [दे, स्थविर] ब्रह्मा, विधाता; (दे ५, २६; पाम)।
थेरासण न [दे] पद्म, कमल, (दे ५, २६)।
थेरित्त न [स्थैर्य] स्थिरता; (कुमा)।
थेरिया } स्त्री [स्थविरा] १ वृद्धा, बूढ़िया; (पाम;
थेरी } ओघ २१ टी)। २ जैन साध्वी; (कप्प)।
थेरोसण न [दे] अम्बुज, कमल, पद्म, (षड्)।
थेव पु [दे] बिन्दु, (दे ५, २६; पाम, षड्)।
थेय देखो थोय; (हे २, १२५; पाम, सुर १, १८१)। °कालिय वि [°कालिक] अल्प काल तक रहने वाला; (सुपा ३७६)।
थेयरिअ न [दे] जन्म-समय में बजाया जाता वाद्य; (दे ५, २६)।
थोअ देखो थोय; (हे २, १२५; गा ४६; गउड; सत्ति १)।
थोअ पुं [दे] १ रजक, धोबी; २ मूलक, मूला, कन्द-विशेष, (दे ५, ३२)।
थोअअ } देखो थुण।
थोऊण }
थोअक } देखो थोय; (हे २, १२५; जी १)।
थोग }
थोडेरय देखो थाडेरय; (उत्त ७१८ टी)।
थोणा देखो थूणा; (हे १, १२५)।
थोत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तव; (हे २, ९५; सुर
थोत्तु देखो थुण।
थोम } पुं [स्तोम, °क] 'च', 'वे' आदि निरर्थक अ
थोमय } प्रयोग; "उय-सद्दाणं हवि य अत्थाणं दुनि" (बृह १; विसे ६६६ टी)।
थोर देखो थुल्ल; (हे १, २५५; २, ६६, पउम ८ १०, ४२)।
थोर वि [दे] क्रम से विस्तीर्ण अथ च गोल, (दे वज्जा ३६)।
थोल पुं [दे] वस्त्र का एक देश; (दे ५, १०)।
थोव } वि [स्तोक] १ अल्प, थोड़ा; (हे २,
थोवाग } ३७; था २७; ओघ २५६; विसे १०
२ पु. समय का एक परिमाण; (ठा २, ३; भग)
थोह न [दे] वज्र, पराक्रम; (दे ५, २०)।
थोहर पुंस्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, थूहर का पेड़, सेंहुड़; २०३)। स्त्री—°री; (उत्त १०३१ टी; जी १०;

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि थयाराइसद्दरयणो चउव्वीसइमो तरंगो समत्तो।

—०—

द

द पुं [दे] दन्त स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष; (प्रप,
दअच्छर पु [दे] ग्राम स्वामी, गाँव का अधिपति; ५, ३६)।
दअरी स्त्री [दे] सुरा, मदिरा, दारू; (दे ५, ३४)।
दइ स्त्री [दृति] मशक, चर्म-निर्मित जल-पात्र; (ओघ ८)।
दइअ वि [दे] रक्षित; (दे ५, ३५)।
दइअ वि [दयित] १ प्रिय, प्रेम-पात्र; "आमो वरकामिणी-दइओ" (सुर १, १८३)। २ अभीष्ट, वाञ्छित, "अइदइयं दंसणमवि दुल्लहं मन्ने" (सुर ३, २१८)। पुं. पति, स्वामी, भर्ता; (पाम; कुमा)। °यम वि [°द]

१ कारण-विशेष ; ३ पु. पक्षी, कौवा (पण्ण १७ : ३१)। दाढा स्त्री [दंष्ट्रिका] वही, दिखा, पक्षी-विशेष का अग्र-भाग, (उ ४, १११)। दाढाय पु [दैत्य] दानव, असुर (ठा २, १।१ टीक पत्र)। दाढी पु [दाढिन्] पक्षी (पण्ण १)। दाढ न [दैत्य] दीनता, कातरता (ठा २, १।१)। दाढय पुं [दैत्य] देव, असुर, दानव, दुर्दान्त धर्म, (ठा २, १।१ ; सुपा ; अभि, पाअ १२, ३०)। "दाढय दुक्किय दाढ दुम्मि कि हत्थ लग्गइ" (सुपा ८, ३४)। °दर, °धर पु [°धर] दाढीवाला, उपरि शब्द का विवरण, (ठा २, ८३ ; ७६)। देखो दाढिअ। दाढाय न [दैवत] देव, देवता, (पण्ण १, १, ठा २, १।१, १।३, इस)। दाढिंगि वि [दैविक] देव-संबन्धी, दिव्य, (सुर १०)। दाढ्य देखो दाढय ; (ठा २, १।३ ; ३, ४४ ; सुपा, पाअ ८३, ४)। दाढर (?) [दाढोदर] मेघ-विशेष, उपरोक्त, पानी के घेर का दाढोदर) वृत्तान्त ; (सूत्र १, १३ ; विपा १, १)। दाढोभास पुं [दाढाभास] लवण-समुद्र में स्थित देवाधिष्ठित पर्वत का एक आवास-पर्वत ; (इक)। दाढा देखो दाढा ; (नाट—मालती ६६)। दाढि वि [दाढिन्] बड़ी दाढ़ वाला, हिंसक जन्तु, (नाट — वेणी २४)। दाढि सक [दण्डय्] सजा करना, निग्रह करना। कवह—दाढिज्जंते; (प्राकृ ६६)। दाढि पुं [दण्ड] १ जीव-हिंसा, प्राण-नाश, (सम १ ; ठाणा १, १ ; ३१)। २ अपराधी को अपराध के अनुसार शारीरिक या आर्थिक दण्ड, सजा, निग्रह, दमन, (उ ३, ३ ; प्राकृ ६३ ; ठ १, १२७)। ३ लाठी, यष्टि ; (उप ६३० टी ; प्राकृ ७४)। ४ दुःख-जनक, पीड़ाप्रद-जनक ; (आचा)। ५ मन, वचन और शरीर का अशुभ व्यापार ; (उत्त १६ ; ठ ४६)। ६ छन्द-विशेष ; (पिंग)। ७ एक जैन दासक का नाम ; (संघा ६१)। ८ परिमाण-विशेष, १६२ अंगुल का एक दण्ड ; (ठा ८) । ९ अद्धा ; (ठा ६, ३)। १० पुंस्त्व, क्लैव्य, नपुंसकता ; (पण्ह १, ४ ; ठ ६, ३)। दाढ पुं [कल] छन्द-विशेष ; (पिंग)। दाढजुद्ध न [युद्ध] यष्टि-युद्ध, (आचा)। दाढायग पुं [नायक] १ दण्ड-दाता, अपराध-विधान-कर्ता। २ सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सैन्य का नायक, (ठा ४, ४ ; औप, कप्प ; सूत्र १, १)। दाढि स्त्री [नीति] दण्ड-विधि, अनुशासन ; (उ ६)। दाढपह पु [पथ] कर्म-विशेष, संघात मार्ग ; (सूत्र १, १३)। दाढि पु (दाढिन् , दाढिन्] १ दण्ड-धारी, २ कोतवाल, (राज, भग २१)। दाढुणय न [प्रोच्छनक] दण्डासन-साधु ; (जं ३)। दाढी वि [दाढी] दण्ड से डराने वाला, दण्ड-धारी ; (आचा)। दाढिय वि [लात] दण्ड लेने वाला ; (ठा १)। दाढ पु [पति] सेनापति, सेना-पति, (सुपा ३२३)। दाढिग, दाढिय पु [दण्डपाशिक] कोतवाल, (कुप्र १६६ ; ग २६६ ; उप १०३१ टी)। दाढिरिय पु [वीर्य] राजा भरत के वंश का एक राजा, जिसको आवश्यक-चूर्णि में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था; (ठ ८)। दाढिस पु [दास] एक प्रकार का नाप, (कप्प)। दाढिय वि [यत्तिन] दण्ड की तरह लम्बा; (कप्प; औप)। दाढियय वि [यतिक] पैर को दण्ड की तरह लम्बा फैलाने वाला, (औप; कप्प; ठ ६, १)। दाढिरक्खिग पुं [रक्षिक] दण्ड-धारी प्रतीहार ; (निचू ६)। दाढिवण न [रण्य] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल ; (पउम ४१, १ ; ७६, ६)। दाढिसिय वि [सैनिक] दण्ड की तरह पैर फैला कर बैठने वाला ; (कप्प)। देखो दंडग, दडय।

दंडग) पुं [दण्डक] १ कर्ण-कुण्डल नगर का एक राजा;
दंडय) (पउम १, १८)। २ दण्डाकार वायव्यपदवि, अन्तर्गत-विशेष; (राज)। ३ वनस्पति आदि चौबीस दण्डक, पद-विशेष ; (सं १)। ४ न. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल ; (पउम ३१, २५)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष (पउम ४२, १४)। देखो दंड ; (उप ८८१ ; बृह १ ; सूत्र २, २ ; पउम ४०, १३)।

दंडावण न [दण्डन] सजा कराना, निग्रह कराना ; (श्रा १४)।

दंडाविय वि [दण्डित] जिसको दण्ड दिलाया गया हो वह ; (ओघ ६६७ टी)।

दंडि वि [दण्डिन्] १ दण्ड-युक्त। २ पुं. दण्ड-धारी प्रतीहार; (कुमा; जं ३)।

दंडि देखो दंडी; (कुप्र ४४)।

दंडिअ वि [दण्डित] जिसको सजा दी गई हो वह ; (सुपा ४१३)।

दंडिअ वि [दण्डिक] १ दण्ड करता। २ पुं. राजा, नृप ;

दग न [दक] १ पानी, जल ; (सं ५१ ; द ३४ ; कप्प)। २ पु ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष ; (ठा २, ३)। ३ लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत ; (सम ६८)। °गब्भ पुं [°गर्भ] अभ्र, बादल; (ठा ४, ४)। °तुंड पुं [°तुण्ड] पक्षि-विशेष ; (पण्ह १, १)। °पंचवन्न पुं [°पञ्चवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक ग्रह का नाम; (ठा २, ३)। °पासाय पु [°प्रासाद] स्फटिक रत्न का बना हुआ महल, (जं १)। °पिप्पली स्त्री [°पिप्पली] वनस्पति-विशेष, (पण्ण १)। °भास पुं [°भास] वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत, (सम ७३)। °मंचग पुं [°मञ्चक] स्फटिक रत्न का मञ्च ; (जं १)। °मंडव पुं [°मण्डप]। १ मण्डप-विशेष, जिसमें पानी टपकता हो ; (पण्ह २, ५)। २ स्फटिक रत्न का बनाया हुआ मण्डप, (जं १)। °मट्टिया, °मट्टी स्त्री [°मृत्तिका] १ पानी वाली मिट्टी ; (बृह ४ ; पडि)। २ कला-विशेष ; (जं २)। °रक्खस पु [°राक्षस] जल-मानुष के के आकार का जंतु-विशेष ; (सूम १, ७)। °रय पुंन [°रजस्] उदक-बिन्दु, जल-कणिका; (कप्प)। °वण्ण पुं [°वर्ण] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ; (सुज्ज २०)। °धारग, °धारय पुं [°धारक] पानी का छोटा घड़ा ; (राय ; आया १, २)। °सीम पुं [°सीमन्] वेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत ; (राज)।

दग्घा देखो दा।

दच्छ देखो दक्ख=दृश्। भवि—दच्छं, दच्छसि, दच्छिहिसि; (प्राप्र; उत्त २२, ४४; गा ८१६)।

दच्छ देखो दक्ख=दक्ष ; "रोगस्समदच्छं ओसहं" (उप ७२८ टी ; पण्ह १, ३—पत्र ४६ ; हे २, १७)।

दच्छ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज ; (दे ६, ३३)।

दज्झंत } देखो दह=दह्।
दज्झमाण }

दट्ठ वि [दष्ट] जिसको दाँत से काटा गया हो वह ; (पड् ; महा)।

दट्ठ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित ; (राज)।

दट्ठंतिय वि [दार्ष्टान्तिक] जिस पर दृष्टान्त दिया गया हो वह अर्थ ; (उत्त ६ १४१)।

दट्ठव्व } देखो दक्ख=दृश्।
दट्ठु }

दट्ठु वि [द्रष्टृ] देखने वाला, प्रेक्षक; (विसे १८६५)।

दट्ठुआण }
दट्ठु }
दट्ठूण } देखो दक्ख=दृश्।
दट्ठूणं }

दड्डवड पुं [दे] १ घाटी, अवस्कन्द ; (दे ६, ३१ ; ३५ ४२२ ; भवि)। २ शीघ्र, जल्दी ; (चंद)।

दड्डि स्त्री [दे] वाद्य-विशेष ; (भवि)।

दड्ढ वि [दग्ध] जला हुआ ; (हे १, २१० ; मग)।

दड्ढालि स्त्री [दे] दव-मार्ग ; (षड्)।

दढ वि [दृढ] १ मजबूत, बलवान्, पक्का ; (औप ; हे ६०)। २ निश्चल, स्थिर, निष्कम्प ; (सूअ १, ४, १ आ २८)। ३ समर्थ, क्षम ; (सूअ १, ३, १)। ४ अति-निबिड, प्रगाढ; (राय)। ५ कठोर, कठिन, (४)। ६ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त ; (पंचा १ ; °केउ पुं [°केतु] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव नाम ; (पव ७)। °णेमि देखो °नेमि ; (पव °धणु पुं [°धनुष्] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर नाम ; (सम १५३)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुल का नाम ; (राज)। °धम्म वि [°धर्मन्] धर्म में निश्चल हो ; (बृह १)। २ देव-विशेष का (आवम)। °धिईय वि (°धृतिक]। अतिशय धै वाला ; (पउम २६, २२)। °नेमि पुं [°नेमि] समुद्रविजय का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के दीक्षा ली थी और सिद्धावल पर्वत पर मुक्ति पाई थी, (१४)। °पइण्ण वि [°प्रतिज्ञ] १ स्थिर-प्रतिज्ञ, सत्य-प्र २ पुं. सूर्याभ देव का आगामी जन्म में होने वाला (राय)। °प्पहारि वि [°प्रहारिन्] १ प्रहार करने वाला ; २ पुं. जैन मुनि-विशेष, जो पहले का नायक था और पीछे से दीक्षा लेकर मुक्त हुआ था, (१, १८ ; महा)। °भूमि स्त्री [°भूमि] गाँव का नाम ; (आवम)। °मूढ वि [°मूढ] नन्त मूर्ख ; (दे १, ४)। °रह पु [°रथ] १ एक पुरुष का नाम ; (सम १५०)। २ भगवान् श्री नाभजी के पिता का नाम; (सम १५१)। °रहा [°रथा] लोकपाल आदि देवों के अग्र महिषियों की परिषद्, (ठा ३, १—पत्र १२७)। °उ पु [°युष्] भगवान् महावीर के समय में तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जन करने

अन्त का अनुप्रास , (सण १३३) । २ अन्त देने के लिये अन्तों का प्रयोग करने का काम , (सण १३४) ।

दक्षिण वि [दक्षिण] दान किया हुआ , (कुमा) ।

दक्खु पु [दक्षु] देखा हुआ , (सण १३) ।

दक्खु पु [दक्षु] देव , देवता , (हे १, २६ ; षड् , दक्षुभू) पद) । देखो दक्ख पु [दक्ष] । २ दक्षता का करने वाला , (हे १, २) । ३ दक्षता , तत्परता , (पाअ ६६, १०) । देखो दक्ख पु [दक्षि] देखा हुआ , (पाअ १, १७, ६० , सण ४१) ।

दक्ख वि [दक्ष] १ दिया हुआ , दान किया हुआ , निर्दोष , (हे १, २६) । २ समर्थ , समर्पित , (अभि १) । ३ पु. एक प्रजापति का नाम , (भवि) । ४ अन्त कर्म के एक आचार्य का नाम , (सण १३३) । ५ चतुर्थ कल्पदेव के पूर्व इन्द्र का नाम , (सण १३३) । ६ भारतवर्ष में उत्पन्न एक अर्ध-चक्रवर्ती राजा , एक वासुदेव , (सण ६३) । ७ भारतवर्ष में अयोध्या नगरी में उत्पन्न एक जिन-देव ; (पव ४) । ८ एक जैन मुनि , (भवि) । ९ वृत्त-विशेष ; (पिंग १, ७) । १० एक जैन आचार्य ; (कुप्र ९) । ११ न. दान , उत्सर्ग , (उत्त १) ।

दक्ख न [दात्र] दाँती , घास काटने का हँसिया , (हे १, १४) ।

दक्खि स्त्री [दक्षि] एक बार में जितना दान दिया जाय वह , अविच्छिन्न रूप से जितनी भिक्षा दी जाय वह , (ठा ४, १ ; पंचा १८) ।

दक्खिय पुस्त्री [दक्षिक] ऊन देखो ; " संता दक्खियस्स " (सुर ६) ।

दक्खिय पुं [दक्षिक] वायु-पूर्व धर्म , (राज) ।

दक्खिया स्त्री [दात्रिका] १ छोटी दाँती , घास काटने का शस्त्र-विशेष ; (राज) । २ देने वाली स्त्री , दान करने वाली स्त्री ; (कप्र २) ।

दक्खुर पुं [दे] हल-आठक , कर-आठक ; (दे ६, ३९) । देखो देखो दक्खा ।

दक्खर वि [दे दक्षर] १ घना , प्रचुर , अत्यन्त , " गोलीकयसम-स्तबंधदक्खरदक्खिन्नबंधुनिरिक्खा " (सण १३७) । २ पुं. फरसा , हल-तंत्र का आयात , (सण १३७ ; औप ; पाया १, ८) । ३ आघात , प्रहार , " फालदक्खरणए कंपयंतेव मेइणि-तलं " (पाया १, १) । ४ वचनादेश , (पड्ड १, ३—पत्र ४४) । ५ अत्यन्त-दीप्ति , कीर्ति ; (सण १३७) । ६ काम-विशेष , (अंत १) ।

दक्खिया स्त्री [दे दक्षिका] १ प्रहार , आघात ; (पाया १, १६) । २ काम-विशेष ; (सण) ।

दक्ख पु [दक्षु] काक , कुल-कुलीनक ; (भग ७, ६) ।

दक्खर पु [दक्षुर] १ मेरु , मेरुक ; (सुर १०, १८७ ; प्राप्र ४४) । २ आर्द्र से आगत मुँह वाला कलश ; (पड्ड २, ६) । ३ देव-विशेष ; (पाया १, १३) । ४ साधु , मुनि-विशेष ; (सूत्र १६) । ५ पर्वत-विशेष ; (पाया १, १६) । ६ काम-विशेष ; (हे २, ६१ ; गउड) । ७ न. दक्षर देव का निवासस्थान ; (पाया १, १३) । [दक्षिणेश्वर न [दक्षरेश्वर] देव विमान विशेष , सौधर्म देवलोक का एक विमान ; (पाया १, १३) ।

दक्खरी स्त्री [दक्षुरी] स्त्री-मेरुक , मेरी ; (पाया १, १३) ।

दधि देखो दहि ; (सम ७७ ; ठि ३७६) ।

दक्ख देखो दक्षु ; (सुर ३, ११२ ; ठि ३३३) ।

दप्प पुं [दर्प] १ अहंकार , अभिमान , गर्व ; (प्राप्र ३३३) । २ बल , पराक्रम , जोर ; (से ४, ३) । ३ घृष्टता , निर्दयता ; (भग १२, ६) । ४ अतिशय से काम का आसेवन ; (निचू १) ।

दप्पण पुं [दर्पण] १ काच , शीशा , आरसी ; (पाया १, १ ; प्राप्र ३९१) । २ वि. दर्प-जनक ; (पड्ड २, ४) ।

दप्पणिज्ज वि [दर्पणीय] बल-जनक , पुष्टि-कारक ; (पाया १, १ ; पण्ण १७ ; औप ; कप्प) ।

दप्पि वि [दर्पिन्] अभिमानी , गर्विष्ठ ; (कप्प) ।

दप्पिअ वि [दर्पिक] दर्प-जनित ; (उत्त १३१) ।

दप्पिअ वि [दर्पित] अभिमानी , गर्वित ; (सुर ७, २०० ; पड्ड १, ४) ।

दप्पिट्ठ वि [दर्पिष्ठ] अत्यन्त अहंकारी ; (सुपा २२) ।

दप्पुल्ल वि [दर्पवत्] अहंकार वाला ; (हे २, १६६ ; षड्) ।

दब्भ पुं [दर्भ] तृण-विशेष , डाभ , कुशा , कुत्ता ; (हे १, २१७) । पुप्फ पुं [पुष्प] सौंप की एक जाति ; (पड्ड १, १—पत्र ८) ।

दब्भायण } दब्भियायण } न [दार्भायन, दार्भ्यायन] चित्रा-नक्षत्र का गोत्र ; (इक ; सुज्ज १०) ।

दम्म सक [दमय्] निग्रह करना । दमेइ ; (स २८६) । कर्म—दम्मइ ; (उव) । वकृ—दम्मंत ; (उव) ।

संक—दमिऊण ; (कुप्र ३६३)। कृ—दमियव्व, दम्म, दमेयव्व ; (काल ; आचा १, ४, २ ; उत्त)।

दम पुं [दम] १ दमन, निग्रह; २ इन्द्रिय-निग्रह, बाह्य वृत्ति का निरोध ; (पाअ २, ४ ; चंदि)। °घोस पुं [°घोष] चेदि देश के एक राजा का नाम; (आया १, १६)। °दंत पुं [°दन्त] १ हस्तिशीर्षक नगर के एक राजा का नाम ; (उप ६४८ टी)। २ एक जैन मुनि, (सिरि २७६६)। °धर पुं [°धर] एक जैन मुनि का नाम ; (पउम २०, १६३)।

दमग देखो दमय; (णाया १, १६ ; सुपा ३८६ ; सण १ ; निचू १६ ; बृह १ ; उव)।

दमग वि [दमक] दमन करने वाला ; (निचू ६)।

दमण न [दमन] १ निग्रह, दान्ति, २ वश में करना, काबू में करना ; "पंचिंदियदमणपरा" (आचा०)। ३ उत्पात, पीड़ा ; (पाअ १, ३)। ४ पशुओं को दी जाती शिक्षा ; (पउम १०३, ७१)।

दमणक } पुन [दमनक] १ दौना, सुगन्धित पत्र वाली
दमणग } वनस्पति-विशेष ; (पाअ २, ६ ; पण्ण १ ;
दमणय } गाउड)। २ छन्द-विशेष , (पिंग)। ३ गन्ध-द्रव्य-विशेष , (राज)।

दमदमा सक [दमदमाय्] आडम्बर करना। दमदमाय, दमदमामइ ; (हे ३, १३८)।

दमय वि [दे.दमक] दरिद्र, रङ्क, गरीब ; (दे १, ३४ ; विसे २८४६)।

दमयंती स्त्री [दमयन्ती] राजा नल की पत्नी का नाम; (पउ; कुप्र ६४; ६६)।

दमि वि [दमिन्] जितेन्द्रिय ; (उत्त १२)।

दामअ वि [दमित] निगृहीत; (गा ८२३, कुप्र ४८)।

दमिल पुं [द्रविड] १ एक भारतीय देश ; २ पुत्री, उसके निवासी मनुष्य, (कुप्र १७२; इक; मौर्य)। स्त्री—°ली ; (आया १, १ ; इक ; मौर्य)।

दमेय-य } देखो दम=दमय्।
दम्म }

दम्म पुं [दम्म] सोने का सिक्का, सोना-मोहर, (उप पृ १८७; हे ४, ४१२)।

दम्मन देखो दम=दमय्।

दय सक [दय्] १ रक्षण करना। २ दया करना। ३ चाहना। ४ देना। दयइ ; (आचा)। वकृ—दयंत, दयमाण।

(से ११, १४ ; ३, ११ ; अभि १२)।

दय न [दे.दक] जल, पानी ; (दे १, ३१ ; कुप्र)। °सीम पुं [°सीमन्] समुद्र में स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत ; इस (८)।

दय न [दे] शोक, अफसोस, दिलगीरी ; (दे १, ३१)।

दय देखो दय=दया ; (स १, ११ ; ११, ६६)।

°दय वि [°दय] देने वाला; (कप्र ; पंचा)।

दया स्त्री [दया] करुणा, अनुकम्पा, कृपा, (दस ६, १)। °पर वि [°पर] दयालु ; (पउम २६, ४० ; उप पृ ३१५)।

दयाइअ वि [दे] रक्षित ; (दे ६, ३६)।

दयालु वि [दयालु] दया वाला, करुण ; (हे १, १७७, १८० ; पउम १६, ३१ ; सुपा १४० ; श्रा १६)।

दयायण } वि [दे] दीन, गरीब, रंक; (दे १, ३६ ;
दयायन्न } भवि ; पउम ३१, ८६)।

दर सक [दृ] आदर करना। दरइ ; (षड्)।

दर पुं [दर] भय, डर, (कुमा)। २ अल्प, थोड़ा अल्प ; (हे २, २१६)।

दर न [दे] घर्म, आधा ; (दे १, ३३ ; भवि ; हे २, ११ बृह १)।

दरंदर पुं [दे] उल्लास ; (दे १, ३७)।

दरमत्ता स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती, (दे १, ३०)।

दरमल सक [मर्दय्] १ चूर्ण करना, विदारना। २ अप करना। दरमलइ ; (भवि)। वकृ—दरमलंत ; (भवि)।

दरमलिय वि [मर्दित] आहत, चर्षित ; (भवि)।

दरवलिअ वि [दे] उपयुक्त ; (कुमा)।

दरवल्ल पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का मुखिया ; (दे १, ३६)। °णिहेल्लण न [दे] अन्य गृह, साली घर, (दे १, ३७)। °वइ पुं [दे] १ दक्षिण, नियम, (दे १, ३७)। २ कुबेर, यक्ष (षड्)। °विंदर वि [दे] १ हीन, तुच्छ ; २ निर्धन (दे १, ५२)।

दरि° देखो दरी। °अर पुं [°चर] किन्नर, (हे १, ६७)।

दरिअ वि [दृप्त] गर्वित, अभिमानी ; (हे १, १४५ ; पाअ)।

दरिअ वि [दीर्ण] १ डरा हुआ, भीत ; (कुमा ; सुर १, १४६)। २ फाड़ा हुआ, विदारित ; (अंत ७)।

दरिअ (अप) पुं [दरिद्र] छन्द विशेष ; (पिंग)।

दरिआ स्त्री [दरिका] कन्दरा, गुफा, (नाट—विक्र ८१)।

दरिद्द वि [दरिद्र] १ निर्धन, निःस्व, धन-रहित ; २ गरीब ; (पाअ ; प्राप्र २३ , कप्पू)।

दलिद्दे) वि [दरिद्रिन्, क] फटा देखा ' अम्हे दलिद्दे) दरिद्रेमो, कुं विक्कावेसइ रम्मं व तुं केत्तं" (सण ; सम ; वि २६७)।

दलिद्दिअ वि [दरिद्रित] दरिद्र, जो धनहीन दुखी हो ; (सण ; वि २६७)।

दलिद्दीहूअ वि [दरिद्रीभूत] जो निर्धन दुखी हो . (उप ३, १)।

दलिय सक [दलय्] विदारण, फाड़ना । दलिआ, दलिए. (हे ४, ३१ ; कुमा ; सण)। कर्म—दलिज्जंत ; (कुप्र ४४)। कृ—दलिअव्व, दलिअव्वय , (भवि , वि २३६; कुप्र १०, ८)।

दलिय देखो दलिअ=दारित ; (हे २, १०५)। 'पुर न [पुर] नगर-पत्तन; (हे)। 'आवरणी सर्व [सवरणी] लिङ्गभेद ; (पाअ ३८, ४०)।

दलिअिल्लिअ) देखो दलिअ । २ न. भेद, विदारण; "दलिअिल्ल दलिअिल्लय) दलिअिल्लसंसए रायणो दूए" (कुप्र १०,८)।

दलिआव देखो दलिअ । कर्म—दलिआविज्जंत, (कुप्र १०८)।

दलिआव वि [दर्शित] दर्शन, साक्षात्कार; "लोएण महया कय-मणेहु दलिआवं दाअा पडिनिवत्त" (सण) . "दलिअव दुवं सवरीए दलिअव पुलिंदी अंगपोरुस " (कुप्र ११६)।

दलिआवण न [दर्शन] १ दर्शन, साक्षात्कार; (भवि १)। २ वि, दर्शक, दिखानेवाला ; (भवि)।

दलिक्ख वि [दक्षिण] देखने वाला; (सण; वि २३६); न ७२७)।

दलिक्खिअ वि [दर्शित] दिखाया हुआ ; (कुप्र ; हम)।

दलिद्दी को [दर्दी] दुष्ट, कपटी ; (कप्र १, १ ; हे २, ४८ ; कुप्र २६८ ; उप ४७३)।

दलिद्दिअ वि [दे] फटा, विदीर्ण ; (हे ६, ३०)।

दलिद्द सक [दा] देना, दान करना, अर्पण करना । दलइ; (कम, कप्र)। " जं तस्स जोग्गं तयं दलामि " (उप २११ टी) कर्म—दलिज्जइ, दलिज्जए; (कम, कप्र १, १६; — पि ३०४ ; उ ४, २—पव २१६)। संकृ—दलिउं ; (कम)।

दलिद्द सक [दल्] १ विकसना । २ फटना, स्फोटित होना, खिल होना। "अंतेउरमज्झगओ दलिअइ कंसस्स हियय-मेक्कं" (सण ४६६), "कुसुमं दलइ" (कम)। कर्म—दलिज्जइ ; (हे ४, २५८)।

दलिद्द सक [दलय्] दूर करना, हटाना २ करना, विदारना। कर्म—"तिण्हं दलयामो सयलमवि दुक्खजालं" (उप ८६)। संकृ—दलिऊण ; (हे ४, ४२)। संकृ—दलिऊणं . (कुप्र)।

दलिद्द न [द्रुम] १ वेत्र, तरवार; (कुप्र)। २ पत्र, पत्ती; "दुरु-वरुहहर गाढमेल्लि मालि महरा सिहाणलहरा" (हेम ४१ ; पा ४ ; १८० ; २६२ ; ३३६ ; ४६२ ; ६८१ ; कुप्र ६३८)। ३ पत्र, वाहन; ४ वृक्ष, वनस्पति ; (कुप्र ६३८)। ५ राज, मान, मंगल ; (हे ६, ६२)

दलिद्दण न [दलन] १ पीसना, चूर्णन ; (कुप्र १४, ६१६)। २ वि, दूर करने वाला; (कुप्र २३६, ४६७, कुप्र ३१२,३८३)।

दलिद्दाम देखो दलिअम

दलिद्दाम देखो दलिअव्व ।

दलिद्दम देखो दलिअम। कर्म—दलिद्दमीअंत ; (भवि)।

दलिद्दय देखो दलिअय। दलिअ; (भवि)। भवि—दलिअंति ; (भवि)। कर्म—दलिअमाण ; (पाअ १, १—पव ३७ ; उ ३, १—पव ११७)। संकृ—दलिअ्ता , (भवि)।

दलिय सक [दारय्] विदारना । दलयइ ; (कम)।

दलियट्ठ देखो दलिअट्ठ।

दलियढिढ देखो दलिअढिढ ; (भवि)।

दलियाव सक [दारय्] विदारना । दलावेइ ; (वि ३११)। कर्म—दलाविज्जइ ; (उ ४, २)।

दलिद्द वि [दलित] १ विकसित; (हे १२, १)। २ पीसा हुआ ; (पाअ)। "दलिअस्स तलिअस्स य कलमाणं मज्झ एक्कं" (सण १६१)। ३ विदलित, खंडित ; (हे १, १६६ ; कुप्र ४, १६२)।

दलिद्द न [दलिक] चीज, वस्तु, द्रव्य ; (भवि ११), "जइ जेणमिमिणि दलिए कयमिमि न होइए पीडा" (विसे १६३४)।

दलिद्द वि [दे] १ निर्मुक्तिक, बिलकुल देहाती नकल की हो वह ; २ न. टंकशी; (हे ६, ११)। ३ कच्चा, नवशी ; (हे ६, ११;षम)

दलिद्दअ देखो दलिअय।

दलिद्द देखो दरिद्द ; (हे १, २६४ ; कप्र २६०)।

दलिद्दा सक [दरिद्रा] दुर्धन होना, दरिद्र होना । दलिद्दइ ; (हे ४, २६४)। भूत—दलिद्दाहि ; (पंचि ११)।

दलिद्दिअ वि [दलयत्] दल-युक्त, दल वाला ; (सण)।

दलेमाण देखो दलिअमाण।

दव सक [द्रु] १ गति करना। २ छोड़ना। दवए, (विसे २८)।

दव पुं [दव] १ जंगल का अग्नि, वन का वह्नि ; (दे ५, ३३)। २ वन, जंगल। °ग्गि पु [°ग्नि] जंगल का अग्नि, (हे १, १७७ ; प्राप्र)।

दव पु [द्रव] १ परिहास ; (दे ५, ३३)। २ पानी, जल ; (पंचव २)। ३ पनीली वस्तु, रसीली चीज ; (विसे १७०७)। ४ वेग ; "दवदवचारी" (सम३७)। ५ संयम, विरति ; (आचा)। °कर वि [°कार] परिहास-कारक ; (भग६, ३३)। °कारी, °गारी स्त्री [°कारी] एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-जनक बातें कर जी बहलाना होता है ; (भग ११, ११ ; णाया१, १ टी—पत्र ४३)।

दवण न [दवन] यान, वाहन ; (सुम १, १)।

दवणय देखो दमणय ; (भवि)।

दवदवा स्त्री [द्रवद्रवा] वेग वाली गति ; "नाऊण गयं सुहियं नयरजणो धाविओ दवदवाए" (पउम ८, १७१)।

दवर पु [दे] १ तन्तु, डोरा, धागा ; (दे५, ३५ ; आवम)। २ रज्जु, रस्सी ; (णाया १, ८)।

दवरिया स्त्री [दे] छोटी रस्सी ; (विसे)।

दवहुत्त न [दे] ग्रीष्म-मुख, ग्रीष्म काल का प्रारम्भ ; (दे ५, ३६)।

दवाव सक [दापय्] दिलाना। दवावेइ ; (महा)। वकृ—दवावेमाण ; (णाया१, १४)। संकृ—दवावेऊण; (महा)। हेकृ—दवावेत्तए ; (कस)।

दवावण न [दापन] दिलाना ; (निचू २)।

दवाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ ; (सुपा ११० ; स १६३ ; महा ; उप पृ ३८५ ; ७२८ टी)।

दविअ पुंन [द्रव्य] १ अन्वयी वस्तु, जीव आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु ; (सम्म ६ ; विसे २०३१)। २ वस्तु, गुणाधार पदार्थ, (आचा५, आक्षे ; आव)। ३ वि भव्य, मुक्ति के योग्य ; (सूम १, २, १)। ४ भव्य, सुन्दर, शुद्ध ; (सूम १, १६)। ५ राग-द्वेष से विरहित, वीतराग ; (सूम १, ८)। °णुओग पु [°नुयोग] पदार्थ-विचार, वस्तु की मीमांसा ; (ठा १०)। देखो दव्व।

दविअ वि [द्रविक] संयम वाला, संयम-युक्त ; (आचा)।

दविअ वि [द्रुपित] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु, (ओघ)।

दविड देखो दविल ; (सुपा १८०)।

दविडी स्त्री [द्राविडी] लिपि-विशेष ; (विसे ४(४ टी)।

दविण न [द्रविण] धन, पैसा, संपत्ति ; (पाअ ; कप्र ; सुर ३, १२१)। °त्थय पु [°स्तव] जैन स्तोत्र-विशेष, (पव २७)।

दविल पुं [द्रविड] १ देश विशेष, द्रविड देश-विशेष, २ पुंस्त्री. द्रविड देश का निवासी मनुष्य ; (पण्ह १, १—१४)।

दव्व देखो दविअ=द्रव्य ; (सम्म १२ ; भग ; विसे १ ; मनु ; उत्त २८)। ६ धन, पैसा, संपत्ति ; (पाअ ; १२१)। ७ भूत या भविष्य पदार्थ का कारण ; (विसे १ ; पंचा ६)। ८ गौण, अ-प्रधान ; ९ काल, अ-तत्त्व, (४ ; ६)। °ट्ठिय पुं [°र्थिक, °स्थित, °स्तिक] जो ही प्रधान मानने वाला पक्ष, नय-विशेष; "दव्वट्ठिय मव्वं सया अणुप्पन्नमविणट्ठं" (सम्म ११ ; विसे ४१० °लिंग न [°लिङ्ग] बाह्य वेष, (पंचा ४)। °लिं वि [°लिङ्गिन्] भेष धारी साधु ; (पु १० °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] शरीर आदि पौद्गलिक का रंग, रूप, (भग)। °वेय पुं [°वेद] पुरुष आदि बाह्य आकार ; (राज)। °यरिय पुं [°चार अ-प्रधान आचार्य, आचार्य के गुणों से रहित आचार्य, (६)।

दव्वहलिया स्त्री [द्रव्यहलिका] वनस्पति-विशेष (प १—पत्र ३६)।

दव्वि° देखो दव्वी ; (पउ)।

दव्विंदिअ न [द्रव्येन्द्रिय] स्थूल इन्द्रिय ; (भग)।

दव्वी स्त्री [दर्वी] १ कर्छी, चमची, डोई ; (पाअ)। सींप की फल ; (दे ५, ३७)। °अर, °कर पु [°कर सींप, सर्प ; (दे ५, ३७ ; पण्ण १)।

दव्वी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष ; (पण्ण १—पत्र ३४

दस वि ब. [दशन्] दस, नव और एक ; (हे १, ११३ ; १, १—पत्र ११६ ; सुपा २६७)। °उर न [°पुर] नगर विशेष ; (विसे २१०२)। °कंठ पुं [°कण्ठ] राक्षस एक लंका-पति, (से १५, ६१)। °कंधर पुं [°कन्धर राजा रावण ; (गउड)। °कालिय न [°कालिक] जैन आगम-ग्रन्थ ; (दसनि १)। °ग न [°क] दस समूह ; (दं ३८ ; नव १२)। °गुण वि [°गुण] दस गुना ; (ठा १०)। °गुणिअ वि [°गुणित] दस-गुना (भग ; श्रा १०)। °गीव पुं [°ग्रीव] रावण ; (७३, ८)। °दसमिया स्त्री [°दशमिका] जैन काल

एक वार्षिक उत्सव, इन्द्रोत्सव-विशेष ; (णाया १००)। 'दिवसिय वि ['दिवसिक] दस दिन का, (सूत्र १, १—पृ ३४)। 'दस पुं ['दस] पैर, (सम १०, पउम १, १)। 'दसु पुं ['दसु] राक्षस जैसे एक मनुष्येतर मनुष्य, (सम १६३)। 'दसेसिय वि ['दशेशिक] दस अध्यक्ष वाला ; (ठा १०)। 'पुर देखो पुर ; (महा)। 'पुत्तिय वि ['पूर्विन्] दस पूर्व-ग्रन्थों का अभ्यासी ; (ओघ १)। 'बल पुं ['बल] भगवान् ऋषभ ; (पउम ; हे १, २६२)। 'भ वि ['भ] दस दिनों का (सूत्र)। २ पक्ष दिनों का समाहार उपवास ; (आचा ; पउम १, १ ; सुर ४, ११)। 'भत्तिय वि ['भक्तिक] पक्ष दिनों का समाहार उपवास करने वाला ; (पउम १, १)। 'भागिय वि ['भागिक] दस भाग का लेने वाला, दस भाग का परिमाण वाला ; (कप्प)। 'भी स्त्री ['भी] १ दसों ; २ दिशि-विशेष, (सम २६)। 'मुद्दियाणंतग न ['मुद्रिकानन्तक] हाथ के अंगुलियों की दस अंगूठियाँ ; (औप)। 'मुह पुं ['मुख] राक्षस, राक्षस-पति ; (हे १, २६२ ; प्राप्र ; हेका ३३४)। 'मुहसुय पुं ['मुखसुत] राक्षस का पुत्र, मेघनाद आदि ; (से १३, ६०)। 'य देखो 'गो ; (ठा १०)। 'रत्त न ['रात्र] दस रात ; (विसा १, २)। 'रह पुं ['रथ] १ एक कल्पवृक्ष के पिता का नाम ; (सम १६२ ; पउम ३०, १८३)। २ अर्वाक् उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक शलाका पुरुष ; (ठा ९—पत्र ४४७)। 'रहसुय पुं ['रथसुत] राजा दशरथ का पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न ; (पउम ६८, ८०)। 'वयण पुं ['वदन] राक्षस राक्षस ; (से १०, ६)। 'वल देखो 'बल ; (प्राप्र)। 'विह वि ['विध] दस प्रकार का ; (इसा)। 'वेआलिय न ['वैकालिक] जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (दसनि १ ; णंदि)। 'हा अ ['धा] दस प्रकार से ; (जी २४)। 'हाण पुं ['नन] राक्षसेश्वर राक्षस ; (से ३, ६२)। 'हिया स्त्री ['हिका] पुत्र-जन्म के उत्सवरूप में किया जाता दस दिनों का एक उत्सव ; (कप्प)।

दसण पुं [दशन] १ दाँत, दन्त ; (भग ; इसा)। २ न. दंश, काटना ; (पव ३८)। 'च्छय पुं ['च्छद] होठ, ओष्ठ ; (सुर १२, २३४)।

दसण्ण पुं [दशार्ण] देश-विशेष ; (ठा २११ टी ; इसा)। 'कूड न ['कूट] शिखर-विशेष ; (आवम)। 'पुर न ['पुर] नगर-विशेष ; (ठा १०)। 'भद्द पुं ['भद्र] दशार्णपुर का एक विख्यात राजा, जो महावीर भगवान् के भगवान् महावीर को वन्दन करने गया था और जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी ; (पडि)। 'वइ पुं ['पति] दशार्ण देश का राजा ; (इसा)।

दसणीय न [दे] वास्तु-विशेष ; (कप्प १—पत्र ३४)।

दसण्ह देखो दसण्ण ; (सम ६७ टी)।

दसा स्त्री [दशा] १ स्थिति, अवस्था ; (ठा २।४ ; २।४ ; प्रासू ११०)। २ सौ वर्ष के प्राणी की दस २ वर्ष की अवस्था ; (दसनि १)। ३ सूता का अन्त का छोटा और पतला धागा ; (ओघ २१६)। ४ ब. जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (भनु)।

दसार पुं [दशार्ह] १ समुद्रविजय आदि दस यादव ; (सम १२६ ; हे १, ८६ ; भंव २ ; ठाया १, ४—पत्र ६६)। २ वसुदेव, श्रीकृष्ण ; (ठाया १, १६)। ३ बलदेव ; (आवम)। ४ वसुदेव की संतति ; (राज)। 'चीड पुं ['चेष्ट] श्रीकृष्ण ; (उत्त)। 'णाह पुं ['नाथ] श्रीकृष्ण ; (पाअ)। 'वर पुं ['पति] श्रीकृष्ण ; (इसा)।

दसिया देखो दसा ; (सुत्र ६४१)।

दसु पुं [दे] शंख, दिलगोरी ; (दे ६, ३४)।

दसुत्तरसय न [दशोत्तरशत] १ एक सौ दस। २ वि. एक सौ दसवाँ, ११० वाँ ; (पउम ११०, ४६)।

दसेर पुं [दे] सूत-कनक ; (दे ६, ३३)।

दस्स देखो दंस=दर्शय। क—दस्सणीय ; (स्वप्न६६)।

दस्सण देखो दंसण ; (मे २१)।

दस्सु पुं [दस्यु] चोर, तस्कर ; (आ २७)।

दह सक [दह्] जलना, भस्म करना। दहइ ; (महा)। कर्म—दहिअइ ; (हे४, २६६)। दाव्य ; (भाषा)। वक—दहंत ; (आरु८)। कृव—दज्झंत, दज्झमाण ; (नाट—मालती ३०; वि २२२)।

दह पुं [द्रह] द्रह, बड़ा जलाशय, सरोवर, सरोवर ; (भंग ; उवा ; ठाया १, ४—पत्र ६६ ; सुत्र १३७)। 'फुल्लिया स्त्री ['फुल्लिका] वल्ली-विशेष ; (पण्ण १)। 'वई, 'वई स्त्री ['वती] नदी-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८० ; जं ४)।

दह देखो दस ; (हे १, २६२ ; दे १२ ; वि २६२ ; पउम ७८, २६ ; से १३, ६४ ; प्राप्र ; से १४, १६ ; ३, ११ ; १०, ४ ; पउम ८, ४४ ; प्राप्र)।

दय सक [दु] १ गति करना। २ छोड़ना। दएइ; (विसे २८)।

दय पुं [दय] १ जंगल का अग्नि, वन का वह्नि; (दे ६, ३३)। २ वन, जंगल। °ग्गि पुं [°ग्नि] जंगल का अग्नि, (दे १, १७७; प्राप्र)।

दय पुं [द्रय] १ परिहास; (दे ६, ३२)। २ पानी, जल, (पंचा २)। ३ फलोली वस्तु, रसोली चीज; (विसे १०००)। ४ वेग, "दयदवयारी" (सम३७)। ५ संयम, रिती; (आचा)। °कर वि [°कर] परिहास-कारक; (भग ६, ३३)। °कारी, °गारी स्त्री [°कारी] एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-जनक बातें कर जी बहलाना होता है; (भग ११, ११; णाया १, १ टी—पत्र ४१)।

दयण न [दयन] यान, वाहन; (सुअ १, १)।

दयणवह देखो दमणय; (भवि)।

दयदया स्त्री [द्रुतद्रुता] वेग वाली गति; "नाऊणं गयं मुद्धिं वयरायसो धरविमा दयदयाए" (पउम ८, १७१)।

दयर पु [दे] १ स्तंभ, खंभा, खंभा, (दे ६, ३६; आचूम)। २ रज्जु, रस्सी; (आचा १, ८)।

दयरिया स्त्री [दे] छोटी रस्सी; (विसे)।

दयवुल्ल न [दे] ग्रीष्म-सुख, ग्रीष्म काल का प्रारम्भ; (दे ६, ३६)।

दयाव सक [दारय्] दिलाना। दयावेइ; (महा)। कर्म—दयावेमाण; (आचा १, १०)। संकृ—दयावेऊण, (महा)। हेकृ—दयावेत्तए, (कप्प)।

दयावण न [दापन] दिलाना; (निचू २)।

दयावित्र वि [दापित] दिलाया हुआ; (सुपा ३३०; श ३६३, महा; उप पृ २८६, ७२८ टी)।

दयिअ पुन [द्रव्य] १ अन्नादी वस्तु, मोती आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु; (सम्म ६; विसे २०३१)। २ वस्तु, मूलभूत पदार्थ, (सम्म, आचा; कप्प)। ३ वि. भव्य, मुक्ति के योग्य; (सूअ १, २, १)। ४ भव्य, सुन्दर, सुंदर; (सूअ १, ११)। ५ राग-द्वेष से विरहित, वीतराग; (सूअ १, ८)। °अणुओग पु [°अनुयोग] पदार्थ-विचार, वस्तु की मीमांसा; (ठा १०)। देखो दव्य।

दयिअ वि [दयित] वंद्य वाक्य, वचन-कुशल; (कप्पा)।

दयिअ वि [दयित] वचन-कुशल, वाग्मी वक्ता; (संथ)।

दयिड देखो दविल; (सुपा ६८०)।

दयिडी स्त्री [द्राविडी] लिपि-विशेष; (विसे ४६४ टी)।

दयिण न [द्रविण] धन, पैसा, संपत्ति; (पाम; कप्पू)।

दयिल पुं [द्रविड] १ देश-विशेष, दक्षिण देश-विशेष, १ पुंभी, द्रविड देश का निवासी मनुष्य; (पण्ह १, १—पत्र १४)।

दव्व देखो दविअ=द्रव्य; (सम्म १२; भग; विसे १८, अणु; उत्त २८)। ६ धन, पैसा, संपत्ति; (पाम; सुर १३१)। ७ भूत या भविष्य पदार्थ का कारण; (विसे १८; पंचा ६)। ८ गौण, अ-प्रधान; ९ काष्ठ, अ-तथ्य, (पंचा ४; १)। °ट्ठिय पुं [°र्थिक, °स्थित, °स्तिक] द्रव्य को ही प्रधान मानने वाला पक्ष, नय-विशेष, "दव्वट्ठियस्स सव्वं सया अणुप्पन्नमविणट्ठं" (सम्म ११; विसे ४१०)। °लिंग न [°लिङ्ग] बाह्य वेष, (पंचा ४)। °लिंगि वि [°लिङ्गिन्] भेष-धारी साधु; (उप १०)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] शरीर आदि पौद्गलिक द्रव्य का रंग, रूप, (भग)। °वेय पु [°वेद] पुरुष आदि बाह्य आकार; (राज)। °यरिय पु [°चार्य] अ-प्रधान आचार्य, आचार्य के गुणों से रहित आचार्य, (पंचा ६)।

दव्वहलिया स्त्री [द्रव्यहलिका] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र ३६)।

दव्वि देखो दव्वी; (पउ)।

दव्विंदिअ न [द्रव्येन्द्रिय] स्थूल इन्द्रिय; (भग)।

दव्वी स्त्री [दर्वी] १ कर्छी, चमची, डोई; (पाम)। २ गाय की पूंछ; (दे ६, ३७)। °अर, °यर पु [°कर] नाई, हजाम; (दे ६, ३७; पव्व १)।

दव्वी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष; (पण्ण १—पत्र १८)।

दस वि न [दशन्] दश, नव और एक; (दे १, १११; ३, १—पत्र ११६; सुपा २६७)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष; (विसे २२०३)। °कंठ पु [°कण्ठ] रावण, एक लंका-पति, (से १४, ६१)। °कंधर पु [°कन्धर] राजा रावण; (पउच)। °कालिय न [°कालिक] जैन आगम-ग्रन्थ, (दसनि १)। °ग न [°क] दश का समूह; (ठा १८; अणु ११)। °गुण वि [°गुण] दश गुना; (ठा १०)। °गुणिअ वि [°गुणित] दश-गुना, (ठा; पंचा १०)। °जीव पु [°जीव] राजा, (पउ ७१, ८)। °दासिया स्त्री [°दासिका] जैन दीक्षा

[पुर] नगर-विशेष ; (ठा १०)। °भद्द पुं [भद्र] इसी नाम का एक विख्यात राजा, जो अट्ठारहवें आरक्षर में भगवान् मल्लिनाथ की वन्दना करने गया था और जिसने भगवान् मल्लिनाथ के पास दीक्षा ली थी ; (पडि)। °वइ पुं [पति] इसी नाम का राजा ; (कुमा)।

दसणिज्ज न [दे] चाक्ष्य-विशेष ; (पव्व १—पत्र ३४)।

दसण्ण देखो दसण्ण ; (स्त्र ६ टी)।

दसा स्त्री [दशा] १ स्थिति, अवस्था ; (सार्ध ; २८४, प्रासू ११०)। २ सौ वर्ष के प्राणी की दस २ वर्ष की अवस्था ; (हम्मीर)। ३ सूता का ऊन का छोटा और पतला धागा ; (ओघ ४१६)। ४ पु. जैन आगम-ग्रन्थ विशेष ; (भग)।

दसार पुं [दशार्ह] १ समुद्रविजय आदि दस यादव ; (स्त्र १३६ ; हे १, ८६ ; अंत २ ; ठाया १, ४—पत्र ६६)। २ वसुदेव, श्रीकृष्ण ; (ठाया १, १६)। ३ वसुदेव ; (आवम)। ४ वसुदेव की संतति ; (राज)। °वीड पुं [वेद] श्रीकृष्ण ; (उव)। °वाह पुं [नाथ] श्रीकृष्ण ; (पाअ)। °वइ पुं [पति] श्रीकृष्ण ; (कुमा)।

दसिया देखो दसा ; (सुख १४१)।

दसु पुं [दे] शोक, निर्वेदी ; (दे ६, ३४)।

दसुत्तरसय न [दशोत्तरशत] १ एक सौ दस। २ वि. एक सौ दसवाँ, ११० वाँ ; (पउम ११०, ४६)।

दसेर पुं [दे] सूत-कलह ; (दे ६, ३३)।

दस्स देखो दंस=दर्शय्। °दस्सणीअ ; (स्वप्न६६)।

दस्सण देखो दंसण ; (मै २१)।

दस्सु पुं [दस्यु] चोर, तस्कर ; (आ २७)।

दह सक [दह्] जलना, भस्म करना। दहइ ; (महा)। कर्म—दहिज्जइ ; (हे४, २६६), दज्झइ ; (आचा)। वकृ—दहंत ; (आर३८)। कृवह—दज्झंत, दज्झमाण ; (नाट—मालती ३०; वि २२२)।

दह पुं [ह्रद] ह्रद, बड़ा जलाशय, झील, सरोवर ; (सण ; उवा ; ठाया १, ४—पत्र ६६ ; सुख १३७)। °पुप्फिया स्त्री [°पुष्पिका] वल्ली विशेष ; (पण्ण १)। °वई, °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष ; (ठा २, ३—पत्र ८० ; जं ४)।

दह देखो दस ; (हे १, २६ ; २६२ ; पउम ७८, २४ ; से १३, ६४ ; १६ ; ३, ११ ; १०, ४ ; पउम ८,

[...ादि विशेष, (ठा १००)। ...दिसिय वि [°दिशिक] दस दिशा का ... (ठा १०, ... ३०)। °दिसि [°दिश्] दस, ६ ... ८०, ... १, १)। °दिसु पुं [°दिश्] देवता देव के एक ... कुमार पुराण ; (स्त्र १६३)। °दिसिय वि [°दिशिक] दस आयम धारण ; (ठ १०)। °पुर देखो ... ; (महा)। °पुरिस वि [°पुरुष] दस पुरुष-प्रमाणी ; (ओघ १)। °बल पुं [°बल] भगवान् ... ; (पाअ ; हे १, २६२)। °भ वि [°भ] १ दसगुना ...)। २ दस दिनों का सम्पादन उपवास ; (आचा ; ... १, १ ; सुर ४, ६४)। °भत्तिय वि [°भक्तिक] दस दिनों का सम्पादन उपवास करने वाला ; (पव ३)। °भाइय वि [°भागिक] दस भाग का भोग, दस भाग का परिमाण वाला ; (कम्म)। °भूमी स्त्री] १ दसवीं ; २ तिथि-विशेष, (स्त्र २६)। °दियावंतग न [°मुद्रिकानन्तक] हाथ के अंगुलियों का आभूषण ; (औप)। °मुद पुं [°मुख] राजा, ...पति ; (हे १, २६२ ; प्रभ ; हेका ३३४)। °दसमुत्त पुं [°मुखसुत] राजा का पुत्र, मेघनाद आदि ; (से १३, ८०)। °य देखो °म ; (ठ १०)। °रह न [°रथ] दस रात ; (विपा १, ३)। °रह पुं [°रथ] राजकुलों के पिता का नाम ; (स्त्र १६२ ; पउम ..., १८१)। २ भावि उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक ... पुराण ; (ठ ६—पत्र ४४७)। °रहसुय पुं [°रथसुत] राजा दशरथ का पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और ... ; (पउम ६८, ८७)। °वयण पुं [°वदन] ... राक्षस ; (से १०, ६)। °वल देखो °बल ; (प्राप्र)। °वह वि [°विध] दस प्रकार का ; (कुमा)। °वेआलिय [°वैकालिक] जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, ; (इसि १ ; ...)। °हा अ [°धा] दस प्रकार से ; (जी २४)। °हिअ पुं [°नन] राक्षसेश्वर राक्षस ; (से ३, ६३)। °हिया स्त्री [°हिका] पुत्र-जन्म के उत्सव में किया ... दस दिनों का एक उत्सव ; (कप्प)।

दह पुं [दशन] १ दाँत, दन्त ; (भग ; कुमा)। २ ..., काटना ; (पव ३८)। °च्छय पुं [°च्छद] होंठ, ... ; (सुर १३, १३४)।

°दसण्ण पुं [दशार्ण] देश-विशेष, (उप १११ टी ; कुमा)। °दसुण्ण न [°कूट] शिखर-विशेष ; (आवम)। न

दहण न [दहन] १ दाह, भस्मीकरण ; २ पुं. अग्नि, वह्नि ; (पाह १, १ ; उप पृ २२ , सुपा ४७४ ; श्रा २८)।
दहणी स्त्री [दहनी] विद्या विशेष ; (पउम ७ ११८)।
दहवोल्ली स्त्री [दे] म्याजो, थनिया ; (दे ५, ३६)।
दहावण वि [दाहक] जलाने वाला ; (सण)।
दहि न [दधि] दही, दूध का विकार ; (ठा ३, १ ; आचा १, १ , प्राप्र)। °घण पुं [°घन] दधि जिम, अतिशय जमा हुआ दही; (पणह १७—पत्र ५२६)। °मुह पुं [°मुख] १ द्वीप-विशेष; (पउम ५१, १)। २ एक नगर ; (पउम ५१, २)। ३ पर्वत-विशेष ; (राज)। °वण्ण, °वन्न पुं [°वर्ण] १ एक राजा, नृप-विशेष ; (कुप्र ६६)। २ वृक्ष-विशेष , (औप ; सम १५२ ; पणह १—पत्र ३१)। °वासुया स्त्री [°वासुका] वनस्पति-विशेष ; (जीव ३)। °वाहण पु [°वाहन] नृप-विशेष ; (महा)। °सर पु [°सर] खाद्य-द्रव्य-विशेष ; (दे ३, २६ ; ५, ३६)।
दहिउप्फ न [दे] नवनीत, मक्खन ; (दे ५, ३५)।
दहिड्ढ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, कपित्थ , (दे ५, ३५)।
दहिण देखो दाहिण ; (नाट—वेणी ६७)।
दहित्थर } पुं [दे] दधिसर, खाद्य-विशेष, (दे ५, ३६)।
दहिल्थार }
दहिमुह पु [दे] कपि, वानर ; (दे ५, ४४)।
दहिय पुं [दे] पक्षि-विशेष; "जं लावयतित्तिरिदहियमोरं मारंति अहोय वि के वि घोरं" (कुप्र ४१७)।
दा सक [दा] देना, उत्सर्ग करना। दाइ, देइ ; (भवि ; हे ३, २०६ ; आचा; महा ; कप्र)। भवि—दाहं; दाहामि, दाहिमि, (हे ३, १७१ ; आचा)। कर्म—दिज्जइ ; (हे ४, ४३८)। वकृ—दित, देंत, ददंत, देयमाण; (सुर १, २१२ ; गा २२ ; ४६४ ; हे ४, ३७६ ; कुप्र १ ; आचा १, १४—पत्र १८६)। कवकृ—दिज्जंत, दिज्जमाण, दीअमाण ; (गा १०१ ; सुर ३, ७६ ; १६, ६; सम ३६; सुपा ६०२ ; मा ३३)। संकृ—दच्चा, दाउं, दाऊण ; (विपा १, १ ; पि ६८७ ; कुमा ; उव)। हेकृ—दाउं ; (उवा)। कृ—दायव्व, देय ; (सुर १, ११०; सुपा २३३; ४४४ ; ६३२)। हेकृ—देउं (अप); (हे ४, ४४१)।
दा देखो ता = तावत् ; (हे ३, १८)।
दाम देखो दाय=दातृ। दाण, (विसे ८४४)। कर्म—दायव्व ; (सिरि ४६०)। कवकृ—दाइज्जमाण, (कम्म)।
दाअ पुं [दे] प्रकृति, जातीयता; (दे ६, १८)।
दाअ पुं [दाय] दान, उत्सर्ग ; (आचा १, १—पत्र ८)
दाइ वि [दायिन्] दाता, देने वाला ; (उप पृ ११६)।
दाइअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ; (सिरि १०११)।
दाइअ पुं [दायिक] १ पैतृक संपत्ति का हिस्सेदार; (ठा ४७, महा)। २ गोत्रिक, समान-गोत्रीय, (कम्म)।
दाइज्जमाण देखो दाअ=दातृ।
दाउ वि [दातृ] दाता, देने वाला, (महा; सं १, सुपा १६१)।
दाउं देखो दा = दा।
दाओयरिय वि [दाकोदरिक] जलोदर रोग वाला, (विपा १, ७)।
दाग देखो दाह ; (हे १, २६४)।
दाडिम न [दाडिम) फल-विशेष; अनार ; (महा)।
दाडिमी स्त्री [दाडिमी] अनार का पेड़ ; (सि २१०)।
दाढा स्त्री [दंष्ट्रा] बड़ा दाँत, दन्त-विशेष; (हे १, १३० ; गउड)।
दाढि वि [दंष्ट्रिन्] १ दाढ़ वाला , २ पुं. सिंह, शेर, (वेणी ४६)। ३ सूअर, वराह ; "किं इमेणं निसुं केसरी रियइ" (पउम ७, १८)।
दाढिआ स्त्री [दे] दाढ़ी, मुख के नीचे का बाल, ठुड्डी के नीचे के बाल ; (दे २, १०१)।
दाढियालि } स्त्री [दंष्ट्रिकावलि] १ दाढ़ों की पंक्ति,
दाढिगालि } २ वस्त्र-विशेष ; (बृह १ ; ओघ)।
दाण पुंन [दान] १ दान, उत्सर्ग, त्याग ; "एए हुंति दाणा" (पउम १४, ६४; कप्र ; प्रासु ४८; ६७; १०१)। २ हाथी का मद ; (पाम ; षड्; गउड)। ३ जो दिया जाय वह ; (गउड)। °घिरय पुं [°विरत] दान से दूर, (सुपा १००)। °साला स्त्री [°शाला] सदावार ; (पंचा)।
दाणंतराय न [दानान्तराय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दान देने की इच्छा नहीं होती है ; (राय)।
दाणव पुं [दानव] दैत्य, असुर, दनुज ; (हे १, १०१ ; प्रच्चु ४१ ; प्रासु ८६)।
दाणविंद पुं [दानवेन्द्र] असुरों का स्वामी ; (कप्र १, ८ ; पउम ६२, ३६ ; प्रासु १०७)।
दाणि स्त्री [दे] शुल्क, चुंगी ; (सुपा ३६० ; ६४८)।
दाणि } अ [इदानीम्] इस समय, अभी ; (प्रति ६, स्वप्न २० ; हे १, २६ ; ४, ३७७ ; कुमा ४, दाणीं } स्वप्न ३१)।

दाय वि [दायक] १ दान का विधाता। २ दे, दायिन्, दायी; (दे ६, १२)।

दायलिआ स्त्री [दे] कंघुली, कंघी (दे ६, ३८)।

दायव्व न [दायव्य] विभाग, " अन्नुप्पाइं अंसिविसमं सो दायव्वाइं " (सम्म ३८ टी)।

दाय न [दामन्] १ बन्धन, रस्सा; (पाअ १, ४, कुमा)। २ रस्सा, लगाम; (सण १४१, ४ १, १२)। ३ पु. देवलोक निवासक का एक आभियोगिक देव, (राज)। °चंत वि [°वत्] रस्सा वाला; (कुमा)।

दामड्ढि पुं [दामर्द्धि] सौधर्म देवलोक के इन्द्र के दामसेवक का अधिपति देव; (इक)।

दामड्ढि पुं [दामर्द्धि] उक्त देव, (इक ३,१—पत्र ३०३)।

दामय न [दे] बन्धन, पशुओं का रस्सी से नियन्त्रण; (पव ३८)।

दामणी स्त्री [दामनी] १ पशुओं का बाँधने की रस्सी, (भग १६, ६)। २ भगवान् कुन्थुनाथ की शासन देवता; (तित्थ)। ३ सौ फल वाले वस्तु के आकार वाला एक शुभ लक्षण, (पव २७ टी—पत्र ८४; पाअ ३, ४—पत्र ६८; जं २)।

दामणी स्त्री [दे] १ प्रभा, प्रभुति, २ सवत, सौत; (दे ६, ६२)।

दामिय वि [दामित] संयमित, नियन्त्रित; (सण)।

दामिली स्त्री [द्राविडी] द्रविड देश की लिपि में लिखा एक ग्रन्थ-विशेष; (सुम २, २)।

दामी स्त्री [दामन्] लिपि-विशेष; (सम ३५)।

दामोयर पु [दामोदर] १ श्रीकृष्ण वासुदेव; (ती ४)। २ आगे उत्सर्पिणी काल में भारत-क्षेत्र में उत्पन्न नववाँ जिनदेव; (पव ७)।

दायग वि [दायक] दाता, देने वाला; (उव ७२८ टी; महा; सुर २, ७४; सुपा ३७८)।

दायण न [दान] देना; "दायणे य निहए य अन्नुप्पाएति कम्मे" (सम २१)। "दक्खिविहायं तह दायहार (? व) मं" (सम २६)।

दायणा स्त्री [दापना] पूर्व अर्थ की व्याख्या; (विसे २६३३)।

दायव्व देखो दायग; "अहिमंसतिपयया हुंती मे सिद्धदायव्वा" (अजि ३४)।

दायव्व देखो दा = दा।

दायाद पु [दायाद] पैतृक संपत्ति का अधिकारी; (आचा)।

दायार वि [दायार] दायक, दाता; (कप्प)।

दार सक [दारय्] विदारना, तोड़ना, चूर्ण करना। वह—दारेइ; (कुमा)।

दार पु [दे] कटी-भाग, कौंची; (दे ६, ३८)।

दार पुंन [दार] कलत्र, स्त्री, महिला; (स्वप्न ६०; स ६३०; सुर ७, २०१; प्रासू ६६), "देवेण अन्नदारं गहिया वेतालिं होइ पत्ताणं" (सुपा २८०)।

दार न [द्वार] दरवाजा, निकलने का मार्ग; (औप; सुपा ३६०)। °गाला स्त्री [°र्गला] दरवाजे का आगल; (सा ३२१)। °ट्ठ, °त्थ वि [°स्थ] १ द्वार में स्थित। २ पु. दरबान, प्रतीहार; (कुप्र १; दे १, ५२)। °पाल, °पाल पु [°पाल] दरबान, द्वार-रक्षक; (उव ६३० टी; सुर १०, १३६; महा)। °पालय, °पालिय पु [°पालक, °पालिक] दरबान, प्रतीहार; (पउम १७, १६; सुपा ४६६)।

दार) पु [दारक] शिशु, बालक, बच्चा; (उव पृ ३०८;
दारग) सुर १५, १३६; कप्प)। देखो दारय।

दारद्धेरा स्त्री [दे] वेश्या, रंडुआ; (दे ६, ३८)।

दारय वि [दारक] १ विदारण करने वाला, विध्वंसक; (कुप्र १३०)। २ देखो दारग; (कप्प)।

दारिअ वि [दारित] विदारित, फाड़ा हुआ; (पाअ)।

दारिआ स्त्री [दारिका] लड़की; (स्वप्न १६; पाअ १, १६; महा)।

दारिआ स्त्री [दे] वेश्या, वारांगना; (दे ६, ३८)।

दारिद्द न [दारिद्र्य] १ निर्धनता; २ दीनता; (गा६७१; महा; प्रासू १७३)। ३ आलस्य; (प्राकृ)।

दारिद्दिय वि [दारिद्रित] दरिद्रता-ग्रस्त, दरिद्र; (पउम ६६, २६)।

दारु न [दारु] काष्ठ, लकड़ी; (स्वप्न ३६; सुर १०४; स्वप्न ७०)। °गाम पु [°ग्राम] ग्राम-विशेष; (पउम ३०, ६०)। °दंड पुंन [°दण्डक] काष्ठ-दण्ड, साधुओं का एक उपकरण; (कप्प)। °पव्वय पु [°पर्वत] पर्वत-विशेष; (इक)। °पाय न [°पात्र] काष्ठ का बना हुआ भाजन; (ठा ३, ३)। °पुत्तय पु [°पुत्रक] कठपुतला; (अच्चु ८२)। °मंड पु [°मंड] भारत-क्षेत्र के एक मामी जिन-देव के पूर्व जन्म

दहण न [दहन] १ दाह, भस्मीकरण; २ पुं अग्नि, वह्नि; (पाअ १, १; उप्र ११, सुपा ४७४; श्रा २८)।
दहणी स्त्री [दहनी] विद्या-विशेष; (पउम ७ ११८)।
दहणोल्ली स्त्री [दे] नाली, पनिया; (दे ५, ३६)।
दहावण वि [दाहक] जलाने वाला, (सण)।
दहि न [दधि] दही, दूध का विकार; (ठा ३, १; आया १, १, प्रश्न)। °मंथ पुं [°मन्थ] दधि विशेष, अतिशय जमा हुआ दही, (कप्प १७—पत्र ५२३)। °मुह पुं [°मुख] १ द्वीप-विशेष; (पउम ५१, १)। २ एक नगर; (पउम ५१, २)। ३ पर्वत-विशेष; (राज)। °वण्ण, °वन्न पुं [°वर्ण] १ एक राजा, वृत्त-विशेष, (सुर १६)। २ वृक्ष-विशेष; (औप; सम १५२, पण्ण १—पत्र ३१)। °वासुया स्त्री [°वासुका] वनस्पति-विशेष; (जीव १)। °वाहण पुं [°वाहन] वृक्ष-विशेष; (महा)। °सर पुं [°सर] खाद्य-द्रव्य-विशेष; (दे ३, ४१; ५, ३६)।
दहिउप्फड न [दे] नवनीत, मक्खन, (दे ५, ३५)।
दहिड्ढ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, कपित्थ, (दे ५, ३५)।
दहिम देखो दाहिण; (भवि —केवी १७)।
दहिस्सर पुं [दे] दधिसार, क्षार विशेष, (दे ५, ३६)।
दहिस्सार
दहिसुह पुं [दे] कपि, बानर; (दे ५, ४४)।
दहिह पुं [दे] वह्नि-विशेष, "जे लावयनिलिंदिहिमार मारदि अट्ठ वि क वि चोर" (कुप्र ४२७)।
दा सक [दा] देना, उत्सर्ग करना। दाइ, देइ; (भवि; हे ३, १०६; प्रारू; महा; कुप्र)। भवि—दाहं, दाइहि, दाहिंचि, (हे ३, १७०, भवि)। कर्म—दिज्जइ; (हे ४, ४१८)। कृ—दिअ, देअ, दइअ, देयमाण, (सुर १, २१२; सण ४१; ४१४; हे ४, ३७६; कुमा १; आया १, १८—पत्र १८६)। कृह—दिज्जंत, दिज्जमाण, दीअमाण; (कप्प १७१; सुर ३, ७६; १०, ६; स्यू १६; कुप्र ६०२; सण ३३)। संकृ—दच्चा, दाउं, दाऊण; (विसे १, १; वि ६८०; हम्म; उव)। हेकृ—दाउं; (उव)। कृ—दायव्व, देय; (सुर १, ११०, कुमा २११; ४७४, ६१७)। हेकृ—देउं (अप), (हे ४, ४४१)।
दा देखो धा=धारय्; (हे १, १०)।
दाअ देखो दाय=दायिन्। दाय, (सिरि ८४४)। कर्म—दायव्व; (सिरि ४१०)। कृह—दायरूवाण, (कप्प)।
दाअ पुं [दे] प्रतिभू, जामीनदार; (दे ५, ३८)।
दाअ पुं [दाय] दान, उत्सर्ग; (आया १, १—पत्र ६; दाइ वि [दायिन्] दाता, देने वाला; (उव; सुर ११
दाइअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ, (सिरि १०१
दाइअ पुं [दायिक] १ पैतृक संपत्ति का हिस्सेदार, (४७; महा)। २ गोत्रिक, समान-गोत्रीय, (कप्प)।
दाइज्जमाण देखो दाअ=दायिन्।
दाउ वि [दातृ] दाता, देने वाला; (महा, सं १; सुर १
दाउं देखो दा=दा।
दाओवरिय वि [दाकोदरिक] अजोदर पोषक, (विपा १, ७)।
दाय देखो दाह; (हे १, २१४)।
दाडिम न [दाडिम] फल-विशेष, अनार; (महा)।
दाडिमी स्त्री [दाडिमी] अनार का पेड़; (वि २१
दाढा स्त्री [दंष्ट्रा] बड़ा दाँत, दन्त-विशेष; (१ ११०; गउड)।
दाढि वि [दंष्ट्रिन्] १ दाढ़ा वाला; २ पुं सिंह; (वेणी ४६)। ३ सूअर, वराह; "दि दाढीहिं नियय गुरुं केसरी रिसा" (पउम ७, १८)।
दाढिआ स्त्री [दे] दाढ़ी, मुख के नीचे का बाल, ठुड्डी के नीचे के बाल; (दे २, १०१)।
दाढिआलि } स्त्री [दंष्ट्रिकावलि] १ दाढ़ी की
दाढिगालि } २ वस्त्र-विशेष; (कुप्र २; औप)।
दाण पुंन [दान] १ दान, उत्सर्ग, त्याग। "एए दाणा" (पउम १४, ६४; कप्प; प्रारू ४८, ६०; १०
२ हाथी का मद; (पाम; षड्; गउड)। ३ जो दे
जाय वह; (गउड)। °विरय पुं [°विरत] स
(सुपा १००)। °साला स्त्री [°शाला] सदावर्त; (
दाणंतराय न [दानान्तराय] कर्म विशेष, जिसके
दान देने की इच्छा नहीं होती है; (राय
दाणव पुं [दानव] दैत्य, असुर, राक्षस; (हे १, १
प्रारू ४१; प्रारू ८६)।
दाणविंद पुं [दानवेन्द्र] असुरों का स्वामी; (
८; पउम ६२, ३६; प्रारू १०)।
दाणि } स्त्री [इदानीम्] इस समय, अभी; (
दाणिं } पउम १०; हे १, २३; ४, १००; कुमा
दाणीं } पउम २१)।

दाहिणा—दिसिंदा]

दाहिणा देखो दक्षिणा ; (हे १, ६४ ; गउड १०)।

दाहिणिल्ल देखो दक्षिणिल्ल ; (पउम ७, १७ ; विपा १, ७)।

दाहिणी स्त्री [दक्षिणी] दक्षिण दिशा ; (कुमा)।

दि वि.र. (द्वि) दो, दो की संख्या वाला; (हे १, ६४; से ६, ६३)।

दिं देखो दिसा ; (गा ८८६)। °करि पुं [°करिन्] दिग्-हस्ती; (कुमा)। °गइंद पुं [°गजेन्द्र] दिग्-हस्ती; (गउड)। °गय पुं [°गज] दिग्-हस्ती ; (से ११३)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] विश्वभागों का एक नगर; (इक)। °मोह पुं [°मोह] दिशा-भ्रम ; (गा ८८६)। देखो दिसा।

दिअ पुं न [द्वि] दिवस, दिन; (दे ६, ३६), "राइंदिआइं" (कप्प)।

दिअ पुं [द्विज] १ ब्राह्मण, विप्र; (कुमा; पाम; उप ७६८ टी)। २ दन्त, दाँत ; ३ ब्राह्मण आदि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य; ४ अण्डज, अण्डे से उत्पन्न होने वाला प्राणी ; ५ पक्षी ; ६ वृक्ष-विशेष, टिंबरु का पेड़ ; (हे १, ६४)। °राय पुं [°राज] १ उत्तम द्विज ; २ चन्द्रमा; (सुपा ४१२; कुप्र १६)।

दिअ पुं [द्विक] काक, कौआ ; (उप ७६८ टी)।

दिअ पुं [द्विप] हस्ती, हाथी; (हे २, ७६)।

दिअ न [दिव] स्वर्ग, देवलोक, (पिंग)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] स्वर्ग, देवलोक ; (पउम २२, ४५; सुर ७, १)।

दिअ वि [हृत] हत, मार डाला हुआ ; "चंदेण व दियराएण जेव आणंदियं भुवणं" (कुप्र १६)।

दिअंत पुं [दिगन्त] दिशा का प्रान्त भाग; (महा)।

दिअंबर वि [दिगम्बर] १ नग्न, वस्त्र-रहित ; २ पुं. एक जैन संप्रदाय; (भवि ; उवर १२२; कुप्र ४४३)।

दिअड्ढ पुं [दे] सुवर्णकार, सोनार ; (दे ६, ३६)।

दिअड्ढुत्त पुं [दे] काक, कौआ ; (दे ६, ४१)।

दिअर पुं [देवर] पति का छोटा भाई ; (गा ३६ ; प्राप्र ; पाम ; हे १, १४६ ; सुपा ४८७)।

दिअलिअ वि [दे] मूर्ख, अज्ञानी ; (दे ६, ३६)।

दिअली स्त्री [दे] स्त्रुषा, संभा, गौंटी ; (पाम)।

दिअस पुंन [दिवस] दिन, दिवस ; (गउड ; पि २६४)। °कर पुं [°कर] सूर्य, रवि ; (से १, ६३)। °नाह पुं [°नाथ] सूर्य, सूरज ; (पउम १४, ८३)। °यर देखो °कर; (पाम)। देखो दिवस।

दिअसिअ न [दे] १ सदा-भोजन ; (दे ६, ४०)। २ अनुदिन, प्रतिदिन ; (दे ६, ४० ; पाम)।

दिअह देखो दिअस ; (प्राप्र ; पाम)।

दिअहुत्त न [दि] पूर्वाह्ण का भोजन, दुपहर का भोजन; (दे ६, ४०)।

दिआ म [दिवा] दिन, दिवस ; (पाम ; गा ६६ ; सम १६ ; पउम २६, ३६)। °णिस न [°निश] दिन-रात, सदा; (पिंग)। °राअ न [°रात्र] दिन-रात, सर्वदा; (सुपा ३१८)। देखो दिवा।

दिआहम पुं [दे] भास पक्षी ; (दे ६, ३६)।

दिआइ देखो दुआइ ; (पाम)।

दिइ स्त्री [हृति] मसक, चमड़े का जल-पात्र ; (अनु ६; कुप्र १४६)।

दिउण वि [द्विगुण] दूना, दुगुना; (पि २६८)।

दिंत देखो दा=दा।

दिक्काण पुं [द्रेष्काण] मेष आदि लग्नों का दसवाँ हिस्सा; (राज)।

दिक्ख सक [दीक्ष्] दीक्षा देना, प्रव्रज्या देना, संन्यास देना, शिष्य करना। दिक्खे ; (उव)। वकृ—दिक्खंत ; (सुपा ५२६)।

दिक्खव देखो देक्खव। दिक्खइ ; (पि ६६)।

दिक्खा स्त्री [दीक्षा] १ प्रव्रज्या देना, दीक्षण; (भोष ७ भा)। २ प्रव्रज्या, संन्यास ; (धर्म २)।

दिक्खिअ वि [दीक्षित] जिसको प्रव्रज्या दी गई हो वह, जो साधु बनाया गया हो वह ; (उव)।

दिगंछा देखो दिगिंछा; (पि ७४)।

दिगंबर देखो दिअंबर; (इक ; भावम)।

दिगिंछा स्त्री [जिघत्सा] बुभुक्षा, भूख ; (सम ४० ; विसे २५६४ ; उत्त २ ; आचू)।

का नाम ; (सम१६४)। °संकम पुं [°संक्रम] काष्ठ का बना हुआ पूल, सेतु , (आचा)।

दारुअ पु [दारुक] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर उत्तम गति प्राप्त की थी ; (अंत ३)। २ श्रीकृष्ण का एक सारथि ; (आव. १, १६)। ३ न. काष्ठ, लकड़ी ; (पउम २६, ६)।

दारुण वि [दारुण] १ विषम, भयंकर, भीषण ; (आचा १, २ ; पाम ; गउड)। २ क्रोध-युक्त, रौद्र ; (उत्त१)। ३ न. कष्ट, दुःख ; (स ३१२)। ४ दुर्भिक्ष, अकाल ; (उप १३६ टी)।

दारुणी स्त्री [दारुणी] विद्या-देवी विशेष, (पउम ७, १४०)।

दालण न [दारण] विदारण, खण्डन ; (पण्ह १, १)।

दालि स्त्री [दे दालि] १ दाल, दला हुआ चना, अरहर, मूँग आदि अन्न ; (सुपा ११ ; सण)। २ राजि, रेखा ; (ओघ ३१३)।

दालिअ न [दे] नेत्र, आँख ; (दे ६, ३८)।

दालिद्द देखो दारिद्द ; (हे १, २६४ ; प्राप्र ७०)।

दालिद्दिय देखो दारिद्दिय ; (सुर१३, ११६ ; वज्जा१३८)।

दालिम देखो दाडिम ; (प्राप्र)।

°दालियंब न [दालिकाम्ल] दाल का बना हुआ खाद्य-विशेष, (पण्ह २, ५)।

दालिया स्त्री [दालिका] देखो दालि ; (उत्त)।

दाली देखो दालि ; (ओघ ३१३)।

दाव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दावइ, दावेइ ; (हे४, ३१ ; गा३१६)। वकृ—दावंत, (गा ६२०)।

दाव सक [दापय्] दिलाना, दान करवाना। दावेइ ; (कप्प)। वकृ—दावेंत ; (पउम११७, २६; सुपा ६१८)। हेकृ—दावेत्तए ; (कप्प)।

दाव देखो साय=शाक ; (से ३, २६ ; स्वप्न१२ ; अभि३६)।

दाव पुं [दाय] १ वन, जंगल ; २ देश, देवता ; (से ६, ४३)। ३ जंगल का अग्नि ; (पाम)। °ग्गि पुं [°ग्नि] जंगल की आग ; (हे१, ६७)। °णल, °नल पुं [°नल] जंगल की आग ; (सण ; सुपा१६७ ; पडि)।

दावण न [दे] छान, पशुओं को पैर में बाँधने की रस्सी, (कुप्र ४३६)।

दावण न [दापन] दिलाना ; (सुपा ४२६)।

दावणया स्त्री [दापना] दिलाना ; (स ५१ ; पडि)।

दावद्दव पुं [दावद्रव] देश-विशेष ; (आचा १, ११–पत्र १७१)।

दावर पुं [द्वापर] १ युग-विशेष, तीसरा युग। २ न. जुआ, दाँव, "नो निरं नो चेव दावरं" (सूअ१, २, १, २३)। °जुग पुं [°युग्म] राशि-विशेष ; (ठा ४, १—पत्र २१०)।

दावाव सक [दापय्] दिलाना। सक—दावावेउं, (सट्ठ)।

दाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ, प्रदर्शित ; (पउम ३ १, ५२ ; ५, ८०)।

दाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ ; (सुपा २४१)।

दाविअ वि [द्रावित] १ भगाया हुआ, टकाया हुआ, २ नरम किया हुआ ; (मन्नु ८८)।

दावेंत देखो दाव=दापय्।

दास पुं [दर्श] दर्शन, अमावास्या ; (षड्)।

दास पुं [दास] १ नौकर, कर्मकर, (हे १, २०१ ; उप १२१ ; प्राप्र १०५ ; सं१८; कप्पू)। २ धीवर, "दासो धीवरो दासो" (पाम)। °चेड, °चेटग पु [°चेट] छोटी उम्र का नौकर ; २ नौकर का लड़का ; (मृच्छ ; कप्र १, २)। °सच्च पुं [°सत्य] श्रीकृष्ण ; (मन्नु १)।

दासरहि पु [दाशरथि] राजा दशरथ का पुत्र, रामचन्द्र, (से १, १४)।

दासी स्त्री [दासी] नौकरानी ; (औप ; महा)।

दासीखंडिया स्त्री [दासीकर्पटिका] जैन मुनियों की एक शाखा ; (कप्प)।

दाह पुं [दाह] १ ताप, जलन, गरमी ; २ दहन, भस्मीकरण, (हे १, २६४ ; प्राप्र१८)। ३ रोग-विशेष ; (विपा१,१)। °जर पु [°ज्वर] ज्वर-विशेष, (सुपा३११)। °वक्कंतिय वि [°व्युत्क्रान्तिक] जिसको दाह उत्पन्न हुआ हो वह ; (आचा १, १—पत्र ६४)।

दाहं देखो दा=दा।

दाहग वि [दाहक] जलाने वाला ; (उत्त ८१)।

दाहण न [दाहन] जलाना, भस्म कराना ; (पउम १०५, १६१)।

दाहिण देखो दक्खिण, (भग; कप्प ; हे १, ४६, २, ७२, गा ४३३ ; ८१६)। °दारिय वि [°द्वारिक] दक्षिण दिशा में जिसका द्वार हो वह। २ न. अश्विनी-प्रमुख छठा नक्षत्र ; (ठा ७)। °पच्चत्थिम वि [°पश्चिम] दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच का भाग, नैर्ऋत कोण, (भग)। °पह पु [°पथ] १ दक्षिण देश की ओर का

र, ३)। ४ गोक-मस्त, गोकातुर; (विपा १, २. भग)।
ार पुं [दीनार] सोने का एक सिक्का; (कम; उप पृ ४; ६६७ टी)।
क) (भग) पुंन [दीपक] छन्द-विशेष;
क] (पिंग)।
व देखो दिव=दिव्। वह—"अक्खेहिं कुद्धेहिं दीवयं; (सुम १, २, २,२३)।
व सक [दीपय्] १ दीपाना, गोमाना। २ जलाना। ३ प्रज्वलित करना। ४ प्रकट करना। ५ निवेदन करना। दीवइ; (भवि ४३४)। दीवेइ; (महा)। वह—दीवयंत; (कम)। संकृ—दीवेत्ता; (भवि ४३४; कप्र)।
ह—दीवणिज्ज; (कम)।
व पुं [दीप] १ प्रदीप, दिया, आलोक; (पाअ १६; राया १, १)। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, प्रदीप का कार्य करने वाला कल्पवृक्ष; (सम १७)। ३ चंपय न [चम्पक] दिया का टुकड़ा, दीप-निर्वाण; (भग ८, ६)। ४ ली स्त्री [ली] १ दीप-पंक्ति; २ दीवाली, पर्व-विशेष, कार्तिक वदि अमास; (दे ३, ४३)। ५ यली स्त्री [यली] श्रेणि की अर्थ; (ती १६)।
दीव पुं [द्वीप] १ जिसके चारों ओर जल भाग हो ऐसा भूमि-भाग; (सम ६१; उप१०)। २ भवनपति देवों की एक जाति, द्वीपकुमार देव; (पण्ण १, ४; औप)। ३ व्याघ्र; (जीव१)। ४कुमार पुं [कुमार] एक देव-जाति; (भग १६, १३)। ५पयु वि [प्र] द्वीप के वर्ण का अलंकार; (उप ६६६)। ६सागरपन्नत्ति स्त्री [सागरप्रज्ञप्ति] जैन-अन्य-विशेष, जिसमें द्वीपों और समुद्रों का वर्णन है; (उप ३, २—पत्र १३६)।
दीवय पुं [दे] कुक्कुलास, गिरगिट; (दे ६, ४१)।
दीवय पुं [दीपक] १ प्रदीप, दिया, आलोक; (सण१२२; महा)। २ वि. दीपक, प्रकाशक, गाना-बजाने वाला; (कुमा)। ३ न. छन्द-विशेष; (अजि २६)।
दीवंग पुं [दीपाङ्ग] प्रदीप का काम देने वाले कल्पवृक्ष की एक जाति; (इ १०)।
दीवण देखो दीपअ=दीपक; (भा ६; अभय)।
दीवड पुं [दे] जल-जन्तु विशेष; "दुवेदीविडसंदुवे अन्नेसंसोसगा" (सुर १०, १——)।
दीवण न [दीपन] प्रकाशन; (भवि ४४)।
दीवणा स्त्री [दीपना] प्रकाश; "तुमं संतपुरदीवणाहिं" (स ६७६)।
दीवणिज्ज वि [दीपनीय] १ जठराग्नि को बढ़ाने वाला; (णाया १, १—पत्र १६)। २ शामाचमान, देदीप्यमान; (पण्ण १७)।
दीवयं देखो दीव=दिव्।
दीवयंत देखो दीव=दीपय्।
दीवायण पुं [द्वीपायन, द्वैपायन] एक प्राचीन ऋषि, जिसने द्वारका नगरी जलाने का निदान किया था, और जो आगामी उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में एक तीर्थंकर होगा; (भवि १६; सम १६४; कुप्र ८३)।
दीवि) पुं [द्वीपिन्] व्याघ्र की एक जाति, चिता; (गा
दीविय) ७६१; राया १, १—पत्र ६६; पण्ण १, १)।
दीविय वि [दीपित] १ जलाया हुआ; (पउम २२, १७)। २ प्रकाशित; (भवि)।
दीविअंग पुं [दीपिकाङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो अन्धकार को दूर करता है; (पउम १०२, १२६)।
दीविआ स्त्री [दे] १ उदरेदिया, क्षुद्र कीट-विशेष; २ व्याघ्र की हथिनी, जो दूसरे हाथियों के आकर्षण करने के लिए रखी जाती है; (दे ६, ६३)। ३ व्याघ्र-सम्बन्धी पिंजड़े में रखा हुआ निर्दिष्ट पक्षी; (राया १, १७—पत्र २३२)।
दीविआ स्त्री [दीपिका] छोटा दिया, लघु प्रदीप; (जीव३)।
दीविअय वि [द्वैप्य] द्वीप में उत्पन्न; (राया १, ११—पत्र १७१)।
दीवी (भग) देखो देवी; (हंसा)।
दीवी स्त्री [दीपिका] लघु प्रदीप; "दीवि व्व दीव हुदी" (श्रा १६)।
दीवुसव पुं [दीपोत्सव] कार्तिक वदि अमास, दीवाली; (ती १६)।
दीसंत) देखो दीसमाण।
दीसमाण)
दीह वि [दीर्घ] १ लम्बा, लम्बा; (उप ६, २; प्रास; कुमा)। २ पुं वह मात्रा जिसका मात्रा-वर्ण; (पिंग)। ३ कोशल देश का एक राजा; (उप पृ ६८)। कालिअी स्त्री [कालिकी] संज्ञा-विशेष, बुद्धि-विशेष, जिसमें सुदीर्घ भूतकाल की बातों का स्मरण और सुदीर्घ भविष्य का विचार किया जा सकता है; (ठा ३, सि ६०८)। कालिय वि [कालिक] १ दीर्घ काल से उत्पन्न, चिरंतन; "दीहका-

दिव्व वि [दिव्य] १ स्वर्ग-सम्बन्धी, स्वर्गीय ; (स २ ; ठा ३, ३)। २ उत्तम, सुन्दर, मनोहर ; (पउम ८, २६१ ; सुर २, १४१ ; प्राप्र ११८)। ३ प्रधान, मुख्य ; (औप)। ४ देव-सम्बन्धी ; (ठा ४, ४ ; सूअ १, २, २)। ५ न. शपथ विशेष, आगम की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि, (ठा ८-४)। ६ प्राचीन काल में, अमुक राजा की मृत्यु हो जाने पर जिस चमत्कार-जनक घटना से राज-गद्दी के लिए किसी मनुष्य का निर्वाचन होता था वह हस्ति-गर्जन, रूप-देखा आदि अलौकिक प्रमाण, (उत्त १०-३१ टी)। °मणुस्स न [°मानुष] देव और मनुष्य संबन्धी हकीकतों का जिसमें वर्णन हो ऐसी कथा-वस्तु ; (स २)।

दिव्व देखो दद्दव, (सुपा १६१)।

दिव्व देखो देव, "अमोह दिव्वदंसणंति" (कुप्र १११)।

दिव्वाग पु [दिव्याक] सर्प की एक जाति ; (पण्ण १)।

दिव्वागया स्त्री [दे] चमुण्डा, देवी विशेष ; (दे १, ३६)।

दिस अक [दिश्] १ कहना। २ प्रतिपादन करना। दिसइ ; (भवि)। कृ—दिस्समाण ; (राज)।

दिस वि [दिश] दिशा में उत्पन्न, (से ६, ६०)।

दिसंधा स्त्री [दृग्धु] कन्या, पार्वती ; (पड्)।

दिसा
दिसि
दिसी
स्त्री [दिश्] १ दिशा, पूर्व आदि दश दिशाएँ ; (गउड ; प्राप्र १११ . महा ; सुपा २६७ ; कप्र १, ४, ४२१, भग)। २ प्रौढ़ा स्त्री ; (दे १, १६)। °अक्कंत न [°आक्रान्त] दिशाओं का समूह, (ना ३१०)। °कुमरी स्त्री [°कुमारी] देवी-विशेष ; (सुपा ४०)। °कुमार पु [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति, (कप्प १, औप)। °कुमारी देखो °कुमरी, (महा ; सुपा ४१)। °गय पु [°गज] दिग्-हस्ती ; (ह ९, १, १०, ४६)। °गयंद पु [°गजेन्द्र] दिग्-हस्ती, (सि ११६)। °चक्क देखो °अक्क ; (सुपा ३१३, सट्ठ)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] १ दिशाओं का समूह, २ एक विशेष, (सिरि १, ३)। °चार पु [°चर] देशाटन करने वाला मनुष्य, (भग १६)। °चारिया देखो °चरिया, (दा ७१-टी)। °चारिय देखो °चरिय ; (ठा)। °दाह पु [°दाह] दिशाओं में होने वाला एक तरह का प्रकाश, जिसमें कभी अन्धकार और कभी प्रकाश दिखाई देता है, यह बड़ी आपत्तियों का सूचक है ; (ठा ३, ४)। °पुरोवाय पु [°पुरोवात] दिशा का अनुकूल वायु, (पाअ २)। °मुत्ति पु [°हस्तिन्] दिग्-हस्ती, (सुर ८)। °दाह देखो °डाह ; (भग ३, ७)। °वि पु [°गिरि] मेरु पर्वत, (सुज्ज १)। °देवया स्त्री [°देवता] दिशा की अधिष्ठात्री देवी; (रंभा)। °पोक्खिय पु [°प्रोक्षित] एक तरह का वानप्रस्थ ; (औप)। °भाअ पु [°भाग] दिग्-भाग (भग, औप ; कप्प ; विपा १, १)। °मत्त न [°मात्र] अल्पत्व, सन्निम ; (उत्त ४७६)। °मोह पु [°मोह] दिशा का भ्रम ; (निचू १६)। °यत्ता स्त्री [°यात्रा] देशाटन, मुसाफिरी ; (स ३६६)। °यत्तिय [°यात्रिक] दिशाओं में फिरने वाला ; (उत्त)। °लोय पु [°आलोक] दिशा का प्रकाश ; (विपा १, १)। °वह पु [°पथ] दिशा-रूप मार्ग ; (पउम ३, १००)। °वाल पु [°पाल] दिक्पाल, दिशा का अधिपति (स ३६६)। °विरमण न [°विरमण] जैन साधु को पालने का एक नियम—दिशा में जाने आने का परिमाण करना ; (धर्म्म २)। °व्वय न [°व्रत] °विरमण, (औप)। °सोत्थिय पु [°स्वस्तिक] स्वस्तिक विशेष ; (औप)। सोवत्थिय पु [सौवस्तिक] १ स्वस्तिक विशेष दक्षिणावर्त स्वस्तिक ; (कप्प १, ४) २ न. एक देव विमान ; (सम ३८)। ३ एक जैन एक शिखर; (ठा ८)। °हत्थि पु [°हस्तिन्] दिग्-हस्ती ; दिशाओं में स्थित ऐरावत आदि आठ हस्ती। °हत्थिकूड [°हस्तिकूट] दिशा में स्थित हस्ती के आकार वाला पर्वत विशेष, वे आठ हैं—वामनक, नीलवन्त, सुहस्ती, अञ्जनगिरि, कुमुद, पलाश, अवतंस और रोचनगिरि ; (जं ४)।

दिसेभ पु [दिग्गिभ] दिग्गज, दिग्-हस्ती, (गउड)।

दिस्स
दिस्सं
दिस्समाण
देखो दृश=दृग्।

दिस्समाण देखो दिस।

दिस्सा देखो दृश=दृग्।

दिहा अ [दिष्टया] हर्ष का प्रकार ; (हे १, ६०)।

दिहि स्त्री [धृति] धैर्य, धीरज ; (हे २, १११ ; कुमा)। °मइ वि [°मत्] धैर्य-शाली, धीर ; (कुमा)।

दीअ देखो दीय=दीप ; (ना ११६ ; ३८०)।

दीअय देखो दीयय ; (ना ११६)।

दीअयाण देखो दीवय=दीपक।

दीण वि [दीन] १ रंक, गरीब ; (प्रासू ११)। २ खिन्न, दुःखित ; (आया १, १)। ३ हीन,

लिएण रोगातंकेण" (टा ३, १)। २ दीर्घकाल-संबन्धी ; (आवम)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] १ लंबी सफर; २ मरण, मौत, (स ७२६)। °डक्क वि [°दष्ट] जिस-को साँप ने काटा हो वह, (निचू १)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] मरण, मौत , (राज)। °दंत पुं [°दन्त] १ भारतवर्ष के एक भावी चक्रवर्ती राजा ; (सम १५४)। २ एक जैन मुनि , (अंत)। °दंसि वि [°दर्शिन्] दूरदर्शी, दूरन्देशी , (सुर ३, ३, सं ३२)। °दसा स्त्री ब [°दशा] जैन अन्य-विशेष ; (ठा १०)। °दिट्ठि वि [°दृष्टि] १ दूरदर्शी, दूरन्देशी। २ स्त्री दीर्घ-दर्शिता, (धर्म १)। °पट्ठ पु [°पृष्ठ] १ सर्प, साँप, (उप पृ २२)। २ युवराज का एक मन्त्री, (बृह १)। °पास पुं [°पार्श्व] ऐरवत क्षेत्र के सोलहवें भावी जिन-देव, (पव ७)। °पेहि वि [°प्रेक्षिन्] दूर-दर्शी , (पउम २६, २२ ; ३१, १०६)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भरत-क्षेत्र में होने वाला तीसरा वासुदेव ; (सम १५४)। २ भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व-जन्मीय नाम ; (सम १५१)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि ; (कप्प)। °मद्ध वि [°ध्वन्] लम्बा रास्ता वाला ; (णाया १, १८; ठा २, १; ६, २—पत्र २४०)। °मद्ध वि [°मद्ध] दीर्घ काल से गम्य, (ठा ६,२—पत्र २४०)। °माउ न [°युस्] लम्बा आयुष्य; (ठा १०)। °रत्त, °राय पुन [°रात्र] १ लम्बी रात, २ बहु रात्रि वाला चिर-काल ; (सत्ति १७ ; राज)। °राय पु [°राज] एक राजा; (महा)। °लोग पुं [°लोक] वनस्पति का जीव ; (आचा)। °लोगसत्थ न [°लोकशास्त्र] अग्नि, वह्नि ; (आचा)। °वेयड्ढ पु [°वैताढ्य] स्वनाम-ख्यात पर्वत, (ठा २, ३—पत्र ६६)। °सुत्त न [°सूत्र] १ बड़ा सूता ; (निचू ६)। २ आलस्य, "मा कुणसु दीहसुत्तं पक्कज्ज सीयलं परिगणंतो" (पउम३०,६)। °सेण पु [°सेन] १ अनुत्तर-देवलोक-गामी मुनि विशेष; (अनु २)। २ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न ऐरवत क्षेत्र के आठवें जिन-देव ; (पव ७)। °उ, °उय वि [°आयुस्, °आयुष्क] लम्बी उम्र वाला, बड़ी आयु वाला, चिर-जीवी ; (हे १, २०; ठा ३, १ ; पउम १४, ३०)। °सयण न [°शयन] शय्या ; (जं १)।

दीह देखो दिअह ; (कुमा)।

दीहंध वि [दिवसान्ध] दिन को देखने में अनभिज्ञ; "रत्ति-धा दीहधा" (प्रभू १७६)।

दीहज्जाह पु [दे] बांस ; (दे ६, ४१)।

दीहर देखो दीह = दीर्घ ; (हे १, १७१ ; सुर १, १६; प्राप्रू ११२)। °च्छ वि [°अक्ष] लम्बी आँख वाला, दीर्घ नेत्र वाला ; (सुपा १४७)।

दीहइय वि [दीर्घित] लम्बा किया हुआ ; (राज)।

दीहिया स्त्री [दीर्घिका] वापी, जलाशय-विशेष ; (सुर १ ६३ ; कप्पू)।

दीहीकर सक [दीर्घी+कृ] लम्बा करना । दीहीकरेइ (भवि)।

दु देखो दय=द्रु । कम्म=द्रुकर ; (विसे २८)।

दु वि ब [द्वि] दो, संख्या-विशेष वाला, (हे १, ६१, सम १ ; उवा)।

दु पुं [द्रु] १ वृक्ष, पेड़, गाछ ; (उत्त ६)। २ सामान्य ; (विसे २८)।

दु अ [द्विस्] दो बार, दो दफा; (सुर १६,११)।

दु अ [दुर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय ;—१ अल्प, २ दुष्टता, खराबी, ३ मुश्किली, कठिनाई, ४ निन्दा, (हे २, २१७ ; प्राप्रू १६८ ; सुपा १४३ ; आचा १, १ ; उवा)।

दुअ न [द्विक] युग्म, युगल ; (स ६२१)।

दुअ वि [द्रुत] १ त्वरित, हैरान किया हुआ ; (ठा १० टी)। २ वेग-युक्त, ३ त्वरि, शीघ्र, जल्दी, (सुर १०,१०६; अणु)। °विलंबिअ न [°विलम्बित] १ छन्द-विशेष। २ अभिनय-विशेष ; (राय)।

दुअक्खर पुं [द्वे] वर्ण, नपुंसक ; (दे ६, ४७)।

दुअक्खर वि [द्व्यक्षर] १ अज्ञान, मूर्ख, अल्प, (ठा १२६ टी)। २ पुत्री, दास, नौकर ; (पिंड)। °रिया; (आवम)।

दुअणुअ पुं [द्व्यणुक] दो परमाणुओं का स्कन्ध ; (विसे २१६२)।

दुअल्ल न [दुकूल] १ वस्त्र, कपड़ा ; २ महिन वस्त्र, सूक्ष्म वस्त्र ; (हे १, ११६; प्राप्र)। देखो दुकूल।

दुआइ पु [द्विजाति] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण ; (हे १, ६४ ; २, ७६)।

दुआइक्ख वि [दुराख्येय] दुःख से कहने योग्य, (ठा १—पत्र २६६)।

दुआर न [द्वार] दरवाजा, प्रवेश-मार्ग ; (हे १,७८)।

दुआराह वि [दुराराध्य] जिसका आराधन कठिनता से हो सके वह, (पण्ह १,४)।

दुआरिआ स्त्री [द्वारिका] १ छोटा द्वार ; २ पुत्र द्वार, मझला द्वार ; (णाया १, १)।

दुक्खिगिच्छ]

न [दे] १ दुःख, कष्ट (दे १, ५३, ७६ ; पाअ १, ३) । २ दही, दधि ; (दे १, ५३) । ३ अन्न, धान्य, "आदरे च नैरन्तर्ये दुक्खं" (स ६३१) ।

वि [दुक्ख] १ दुःख का कारण, दुःख जो सह कर, दुःख को सहन ; (आचा १, ६, ; ठाणं ३, १, १) । २ न. दुःख का सहन ; (सूत्र १, ६, १) । ३ पुंनि. किंण, व्रण, घाव ; (सुपा ३४०) । नायग पु [नायक] पति, वर ; (सुपा १४८) । नायय पु [नायक] वही का अधिपति ; (सुपा ४६०) ।

दुग्गइ स्त्री [दुर्गति] १ दुःखी, अधम गति, दुःखित योनि ; (ठा ३, ३; ६, १; सत्त ७, १८, आचा १, १) । २ दरिद्रता, दरिद्रता, (पाअ १, १ ; महा ; ठा ३, ४ ; गच्छ २) ।

दुग्गंधि स्त्री [दुर्गन्धि] दुष्ट गन्ध ; (पि ३३३) ।

दुग्गंध पुं [दुर्गन्ध] १ खराब गन्ध, २ वि. खराब गन्ध वाला, दुर्गन्धि ; (ठा ८ —पत्र ४१८, सुपा ४१ ; महा) ।

दुग्गम } वि [दुर्गम] १ जहाँ दुःख से प्रवेश किया जा
दुग्गम्म } सके वह ; (पउम ४०, १३ ; आचा ७६ मा) । "दिसाकरीदुग्गम्मं" (सुर ६, १३६) । २ न. कठिन स्थान, मुश्किलों ; (ठा ६, १) ।

दुग्गय वि [दुर्गत] १ दरिद्र, धन-हीन ; (ठा ३, ३ ; सा १८) । २ दुःखी, विपत्ति-ग्रस्त ; (पाअ ; ठा ४, १—पत्र २०२) ।

दुग्गह वि [दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह ; (ठा पृ ३८०) ।

दुग्गा स्त्री [दुर्गा] १ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी ; (पाअ; सुपा १४८) । २ देवी-विशेष; (चंड) । ३ पत्नि-विशेष; (आ १६) ।

दुग्गाई
दुग्गाएवी
दुग्गादेई
दुग्गावी } स्त्री [दुर्गादेवी] १ पार्वती, शिव-पत्नी, गौरी ; २ देवी-विशेष ; (पउ ; दे १,२७०; सुपा) । रमण पुं [रमण] नारदेव, शिव ; (पउ) ।

दुग्गिच्च वि [दुर्ग्राह्य,दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह ; (सुपा २५६) ।

दुग्गुंछ वि [दुर्गुञ्छ] अत्यन्त घृणा, अति प्रकृष्ण ;(उत्त ७)।

दुग्गेज्ज देखो दुग्गिच्च ; (ठा १, ३) ।

दुग्घट्ट वि [दुर्घट्ट] जिसका आच्छादन दुःख से हो सके वह ; "पाउग्घोडगदुग्घट्टवेमणदुग्घट्टहीया" (पउ १,३—पत्र ५४)।

दुग्घड वि [दुर्घट] जो दुःख से हो सके वह, कष्ट-साध्य ; (सुर ८३ ; ३६६) ।

दुग्घडिअ वि [दुर्घटित] १ दुःख से संयुक्त । २ खराब रीति से बना हुआ; "दुग्घडिअमंचमल्लय व गले सारे पामउडे" (गा ६१०) ।

दुग्घर न [दुर्गृह] दुष्ट घर ; (भवि) ।

दुग्घाण पुं [दुर्घ्राण] दुर्गन्ध, भभाका ; (हे १, ४४ ; दु घुट्ट) पुं [दे] हत्थी, हाथी, करी ; (दे ६, ४४ ; घोट्ट) पद ; भवि) ।

दुग्घण पुं [दुर्घण] एक प्रकार का मुद्गर, मोंगरी, मुँगरा ; (पउ १, ३—पत्र ४४) ।

दुग्घरक न [द्विचक्र] गाड़ी, शकट ; (ओघ ३=३ भा) । वह पुं [पति] गाड़ी का अधिपति ; (ओघ ३=३भा)।

दुच्चिण्ण देखो दुच्चिण्ण ; (पि ३४० ; भौप) ।

दुच्चिण्ण देखो दुच्चिण्ण ; (पि ३४० ; भौप) । दुच्चिण्णा देखो दुच्चिण्ण ; (पि ३४० ; भौप) । दुच्चेय न [दौत्य] दूत-कर्म, समाचार पहुँचाने का कार्य ; (पाम) ।

दुच्च देखो दोच्च=द्वितीय, दूसरा ; (कम्म) ।

दुच्चंडिअ वि [दे] १ दुर्दान्त ; २ दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित ; (दे ६, ६६ ; पाम) ।

दुच्चरिअ वि [दे] १ कलङ्क-रहित, कलङ्कातीत ; २ दुश्चरित, दुष्ट आचरण वाला ; ३ पाप-भीरु ; (दे ६,६४)।

दुच्चज्ज } वि [दुश्चर्य] दुःख से त्यागने योग्य; (कुमा;
दुच्चय } उत ७६८ टी) ।

दुच्चर } वि [दुश्चर] १ जिसमें दुःख से जाया जाय वह;
दुच्चरिय) (आचा) । २ दुःख से जो किया जाय वह ; ऐसा आचरण या वेश जिसमें दुःख से जाया जा सके ; (आचा ; उत ६४८ टी ; पउम २२, २०) । ल्लाड पुं [ल्लाड] दुश्चरित्र न [दुश्चरित] १ खराब आचरण, दुष्ट वर्तन ; (पउम ३८, १२ ; उत पृ १११) । २ वि. दुराचारी ; (६, ४६) ।

दुच्चार वि [दुश्चार] दुराचारी ; (भवि) ।

दुच्चारि वि [दुश्चारिन्] दुराचारी, दुष्ट आचरण वाला ; (सम्म २३) । त्ती —त्वी ; (महा) ।

दुच्चिंतिय वि [दुश्चिन्तित] १ दुष्ट चिन्तित ; (पडि ; ११८, ६७) । २ न. खराब चिन्तन ; (पडि) ।

दुच्चिगिच्छ वि [दुश्चिकित्स] जिसका प्रतीकार मे हो सके वह ; (सुर ७६१) ।

दुक्खय न [दे] जघन, स्त्री के कमर के पीछे का भाग, (दे ५, ४२)।

दुक्खव सक [दुःखयति] १ दुखाना, दर्द करना। २ सक. दुःखी करना। "सिरं मे दुक्खइ" (स ३०४)। दुक्खामि ; (मे ११, १२७)। दुक्खवि, (सुम २, २, ५५)।

दुक्खड देखो दुक्कर, (चारु २३)।

दुक्खण न [दुःखन] दुखना, दर्द होना ; (उप ७५१, सुम २, २, ५५)।

दुक्खम वि [दुःक्षम] १ असमर्थ ; २ अशक्य, (उत्त २०, ३१)।

दुक्खर देखो दुक्कर ; (स्वप्न ६६)।

दुक्खरिय पु [दुष्करिक] दास, नौकर, (निचू १६)।

दुक्खरिया स्त्री [दुष्करिका] १ दासी, नौकरानी, (निचू १६)। २ वेश्या, वारांगना ; (निचू १)।

दुक्खत्तिय (आर्ष) वि [दुःखित] दुःख-युक्त, (भवि)।

दुक्खविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ, (उप ६३४, भवि)।

दुक्खाव सक [दुःखयति] दुःख उपजाना, दुःखी करना। दुक्खावेइ, (पि ५१६)। वकृ—दुक्खावेंत ; (पउम ५८, १८)। कवकृ—दुक्खाविज्जंत, (आवम)।

दुक्खावणया स्त्री [दुःखना] दुःखी करना, दर्द उपजाना ; (भग ३, ३)।

दुक्खिय वि [दुःखिन्] दुःखी, दुःख-युक्त, (भाषा)।

दुक्खिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त, दुखिया ; (हे २, ७२ ; प्राप्र ; प्राप्र ६३ ; महा ; सुर ३, १६१)।

दुक्खुत्तर वि [दुःखोत्तार] जो दुःख से पार किया जाय, जिसको पार करने में कठिनाई हो ; (पाह १, १)।

दुक्खुत्तो अ [द्विस्] दो बार, दो दफा ; (ठा ५, २—पत्र ३०८)।

दुक्खुर देखो दुरुर ; (पि ४३६)।

दुक्खुल्ल देखो दुक्कुल्ल, (भवि २१)।

दुक्खोह पु [दुःखौघ] दुःख-राशि ; (पउम १०३, १५५ ; सुपा १६१)।

दुक्खोह वि [दुःक्षोभ] क्षुब्ध-क्षोभ्य, अस्थिर ; (सुपा १६१ ; ६३६)।

दुगंड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़े वाला ; (उप ६८६ टी, भवि)।

दुगुत्तो देखो दुक्खुत्तो ; (कप्प)।

दुगुर पु [द्विपुर] दो शहर का राजा यानी, बलि, मेघनाद (पाअ १)।

दुग न [द्विक] दो, युग्म, युगल ; (सत्त १० ; सुर १, १७, जी ३३)।

दुगंछ देखो दुगुंछ। वकृ—दुगंछमाण ; (उप १३)। कृ—दुगंछणिज्ज ; (उप १३, १६, पि ७४)।

दुगंछणा स्त्री [जुगुप्सना] घृणा, निन्दा ; (पाअ ६६)।

दुगंछा स्त्री [जुगुप्सा] घृणा, निन्दा ; (प्रासू कुप ४०७)। देखो दुगुंछा।

दुगंध देखो दुग्गंध ; (पउम ४१, १७)।

दुगच्छ } सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना।
दुगुंछ } दुगच्छइ, दुगुंछइ ; (पड् ; हे ४, ४)। कृ—दुगुंछंत, दुगुंछमाण ; (कुमा ; पि ७४, ३१६)। सक—दुगुंछिउं, (धर्म २)। कृ—दुगुंछणीय, (उप ४६, ६२)।

दुगुंछग वि [जुगुप्सक] घृणा करने वाला, (आचा)।

दुगुंछण न [जुगुप्सन] घृणा, निन्दा ; (पि ७४)।

दुगुंछणा देखो दुगंछणा, (आचा)।

दुगुंछा देखो दुगंछा ; (भग)। °कम्म न [°कर्मन्] देखो पीछे का अर्थ ; (ठा १०)। °मोहणीय [°मोहनीय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव को वस्तु पर घृणा होती है ; (कम्म १)।

दुगुंछिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित, (आचा)।

दुगुंदुग पु [दौगुन्दुक] एक समृद्धि-शाली देव, (१२८)।

दुगुच्छ देखो दुगुंछ। दुगुच्छइ ; (हे ४, ४ ; षड्)। वकृ—दुगुच्छंत ; (पउम १०५, ७५)। कृ—दुगुच्छणीय ; (पउम ८०, २०)।

दुगुण देखो दुउण ; (ठा २, ४ ; आया १, १, ६ सुर ३, २१६)।

दुगुण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना। दुगुणेइ (कुप्र १८५)।

दुगुणिअ देखो दुउणिअ ; (कुमा)।

दुगुल्ल } देखो दुअल्ल ; (हे १, ११६ ; कुमा ; षड्
दुगूल } ८० ; जं २)।

दुगोला स्त्री [द्विगोला] बल्ली-विशेष ; (पण्ण १

दुण्णय न [दुर्नय] अन्याय, अनीति; (उप ७६८) ।

दुण्णह वि [दुर्नह] दुःसह, जो दुःख से सहा जा सके वह; (उप ६, १) ।

दुण्णार वि [दुस्तार] दुरुत्तीर्ण, दुर्लंघ्य; (स्वप्न ४१; उप ६६ ; सार्ध ६१) ।

दुण्णारी स्त्री [दुस्तरी] लवण समुद्र, समुद्र, दुःख से करने लायक; (धर्मवि १७) ।

दुण्णिवार वि [दुर्निवार] दुःख से पार करने योग्य, दुस्तर; (धर्मवि १७) ।

दुण्णिसार वि [दुस्तार] दुःख से पार करने योग्य, दुस्तर; (सुपा ३२५ ; ६, १०) ।

दुत्ति म [देश] शीघ्र, जल्दी; (दे ५, ४१ , पाम) ।

दुत्तिरूवय } देखो दुतिरिक्क; (भवि) ।

दुतिरिक्क }

दुतुंड पुं [दुस्तुण्ड] दुर्जन, दुर्मुख; (सुपा २७८) ।

दुत्तोस वि [दुस्तोष] जिसको संतुष्ट करना कठिन हो वह; (उप ६) ।

दुत्थ न [दे] जघन, स्त्री की कमर के नीचे का भाग; (दे ५, ४२) ।

दुत्थ वि [दुःस्थ] दुर्गत, दुःखित; (आ ३, ३ ; भवि) ।

दुत्थ न [दौःस्थ्य] दुर्गति, दुःखपना; (सुपा २४४) । °कंदि विसुप्पहवा हुंति दुत्थिरि धीरा" (कुप ५४) ।

दुत्थिय वि [दुस्थित] १ दुर्गत, विपत्ति-ग्रस्त; (स्वप्न७५; सुर ; सए) । २ निर्धन, गरीब; (कुप १४८) ।

दुत्थुहंड पुं [दे] मनुष्याकार, कदाकार; (दे ५, ४७) । °डा—डी स्त्री ; (दे ५, ४७) ।

दुत्थोत्र पुं [दे] दुर्जन, अभागा; (दे ५, ४३) ।

दुद्दंत वि [दुर्दान्त] उद्धत, दमन करने का अशक्य, दुर्दम; "विसयपसत्ता दुद्दंतदिया देहिणं वहंत" (सुर ८, १३८ ; पाअ १, ५ ; सुपा ३८० ; महा) ।

दुद्दंस वि [दुर्दृश] दुरुत्तीर्ण, जो कठिनाई से देखा जा सके; (उप ६४१) ।

दुद्दंसण वि [दुर्दर्शन] जिसका दर्शन दुर्लभ हो वह; (आ ३०) ।

दुद्दम वि [दुर्दम] १ दुर्जय, दुर्निवार; (सुपा २४) । "दुमदद्दमे" (आ १२) । २ पुं. राजा मघवंश का एक पुत्र; (भाद) ।

दुद्दम पुं [दे] देवर, पति का छोटा भाई; (दे ५, ४४) ।

दुद्दिट्ठ वि [दुर्दृष्ट] १ दुरी तरह न देखा हुआ । २ वि दुष्ट दर्शन वाला; (कप्र १, १ ; उप २१) ।

दुद्दिण न [दुर्दिन] बादलों से भरा दिन; (भवि ११०) ।

दुद्दिय वि [दुर्दित] दुःख से देने योग्य; (उप ६२४) ।

दुद्धोल्लना स्त्री [दे] गौ, भैंस; (षड्) ।

दुद्धोली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति; (दे ५, ४३ ; पाम) ।

दुद्ध न [दुग्ध] दूध, क्षीर, (विपा १, ३) । °जाइ स्त्री [°जाति] मदिरा-विशेष, जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है, (जीव ३) । °समुद्द पुं [°समुद्र] क्षीर समुद्र, जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है; (गा ३८८) ।

दुद्धंस वि [दुर्धर्ष] जिसका नाश मुश्किली से हो सके; (सुर १, १२) ।

दुद्धंधिअमुद्द पुं [दे] बाल, शिशु, छोटा लड़का; (दे ५, ४०) ।

दुद्धंधिअमुद्दी स्त्री [दे] छोटी लड़की; (पाम) ।

दुद्धट्ठी } स्त्री [दे] १ प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-

दुद्धट्ठी } दुग्ध ; (पभा ३२) । २ सही छठ से लिया हुआ दूध ; (पभा ४—गा २२८) ।

दुद्धर वि [दुर्धर] १ दुर्वह, जिसका निर्वाह मुश्किली से हो सके वह; (पाअ १—पउ ४ ; सुर १२, ५१) । २ गहन, विषम; (ठा ६ ; भवि) । ३ दुर्जय ; (कुमा) । ४ पुं. राक्षस का एक कुलेट ; (पउम ५६, ३०) ।

दुद्धरिस वि [दुर्धर्ष] १ जिसका सामना कठिनता से हो सके, जीतने को अशक्य ; (पाअ २, ५ ; कप्र) ।

दुद्धयलेही स्त्री [दे] बालक का माता द्वारा कर पकाया जाता दूध ; (पव ४—गाथा २२८) ।

दुद्धसाडी स्त्री [दे] द्राक्षा जिसे बार पकाया जाता दूध ; (पव ४—गाथा २२८) ।

दुद्दिअ न [दे] कद्दू, तोरई; गुजराती में 'दूधी'; (पाम) ।

दुद्दिणिआ } स्त्री [दे] १ तैल आदि रखने का भाजन ;

दुद्दिणी } २ तुम्बी; (दे ५, ५४) ।

दुद्दोयहि } पुं [दुग्धोदधि] समुद्र-विशेष, जिसका पानी

दुद्दोहहि } दूध की तरह स्वादिष्ट है, क्षीर-समुद्र ; (४७५; ठा २११ टी) ।

दुद्धोलणी स्त्री [दे] गो-विशेष, जिसको एक बार दोहने पर नौ दोहन किया जा सके ऐसी गाय; (दे ५, ४६) ।

दुधा देखो दुहा ; (भवि १६१) ।

दुनिमित्त देखो दुण्णिमित्त ; (आ २७) ।

दुन्नय पुं [दुर्नय] १ दुष्ट नीति, कुनीति । २ अन्य वस्तु में किसी एक ही धर्म के साथ का अन्य [illegible] निषेध करने वाला पक्ष (स्याद्वा [illegible] ; वि दु

दुच्चिण्ण न [दुश्चीर्ण] १ दुष्ट आचरण, दुश्चरित ; २ दुष्ट कर्म – हिंसा आदि; ३ वि दुष्ट संचित, एकत्रित की हुई दुष्ट वस्तु , (निचा १, १ , पाया १,११) ।

दुच्चेट्ठिय न [दुश्चेष्टित] खराब चेष्टा; शारीरिक दुष्ट आचरण , (पंचा, पृ ६, २३३) ।

दुच्चोअग वि [द्विपूक] बारह प्रकार का ;

"सूई हारं पलासं, मद्दासो मायण निद्दो।
दुच्चोअगस्स एक्कस्स, नामाणं परिकित्तियं " (श्रा ६) ।

दुच्छेअग वि [दुश्छेद] जिसका छेदन दुःख से हो सके वह, (पाम ११, ६६) ।

दुछक देखो दुच्चोअग , (धर्म २) ।

दुजद्दि पु [द्विजर्षभ] ब्राह्मणों का देव-विशेष, एक महापद; (इक १, १) ।

दुजय देखो दुज्जय ; (महा) ।

दुजोण पु [द्विजिह्व] १ सर्प, साँप ; २ दुर्जन, खल पुरुष ; (पंचा ६ ३ , कुमा) ।

दुज्जअ देखो दुज्जिअ , (सण) ।

दुज्जण पु [दुर्जन] खल, दुष्ट मनुष्य, (प्रासू १० ; ४०, कुमा) ।

दुज्जय वि [दुर्जय] जो कष्ट से जीता जा सके ; (उत्त १०१२ टी , पउ ११, ११८ , कुमा १२) ।

दुज्जाय न [दे] व्यसन, कष्ट, दुःख, उपद्रव ; (दे ६, ४० , से १२, ६१ , पाअ) ।

दुज्जाय वि [दुर्जात] दुःख से निकलने योग्य ; (से १२, ६१) ।

दुज्जाय न [दुर्याव] दुष्ट गमन, कुत्सित गति, (आचा) ।

दुज्जिअंत पु [दुर्जयन्त] एक प्रत्येक जैन मुनि ; (कप्प) ।

दुज्जीव न [दुर्जीव] अत्यन्त निंद्य का भव, (निचू १०६२) ।

दुज्जीव देखो दुज्जिअ ; (कप्प १४०) ।

दुज्जेअ वि [दुर्जेय] कष्ट से जीतने योग्य, (कुमा १८८, कप्प) ।

दुज्जोहण पु [दुर्योधन] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र ; (उप ६, १) ।

दुज्झ वि [दोष्य] दूषने योग्य ; (दे १, ७) ।

दुज्झवण न [दुर्ध्यान] दुष्ट चिन्तन ; (धर्म २) ।

दुज्झवाय वि [दुर्ध्यायत्] जिसके चित्त में दुष्ट चिन्तन किया गया है वह, (धर्म २) ।

दुज्झोसय वि [दुर्जोष] जिसकी सेवा कष्ट से हो सके ऐसा, (आचा) ।

दुज्झोसय वि [दुःक्षप] जिसका नाश कष्ट-साध्य है वह (आचा) ।

दुज्झोसिअ वि [दुर्जोषित] कष्ट से सेवित, (आचा) ।

दुज्झोसिअ वि [दुःक्षपित] कष्ट से नाशित, (आचा) ।

दुट्ठ वि [दुष्ट] दोष-युक्त, दूषित, (भग ११२; पाअ, हम्मीर) ।

°प्प पु [°त्मन्] दुष्ट जीव, पापी प्राणी ; (पउ ११६ ; ७६, १२) ।

दुट्ठ वि [द्वेष्टि] द्वेष-युक्त, (ओघ ७४७ ; सुर ३ ७१) ।

दुट्ठाण न [दुःस्थान] दुष्ट जगह ; (भग १६, १) ।

दुट्ठु अ [दुष्ठु] खराब, असुन्दर ; (उप ३१० टी, कुप्र १, १ ; सुपा ३१८ ; हे ४, ४०१) ।

दुण्णय देखो दुन्नय ; (सिरि ३७ ; भवन) ।

दुण्णाम न [दुर्नामन्] १ अपकीर्ति, अयश। २ दुष्ट नाम आख्या ; ३ एक प्रकार का गर्व ; (भग १२, १) ।

दुण्णिअ वि [दून] पीड़ित, दुःखित ; (भा ११) ।

दुण्णिअल देखो दुन्नियल ; (राज) ।

दुण्णिअल्लत्थ न [दे] १ जघन पर दिया जाय ; २ स्त्री के कमर के नीचे का भाग ; (दे ६, ६१) ।

दुण्णिअल्लय वि [दे] दुश्चरित्र, दुराचारी, (दे ६, ६१) ।

दुण्णिक्कम वि [दुर्निष्क्रम] जहाँ से निकलना कष्ट-साध्य हो वह ; (भग ७, १) ।

दुण्णिक्खित्त वि [दे] १ दुराचारी, २ कष्ट से जो स्थिर रह सके; (दे ६, ४६) ।

दुण्णिग्गेय वि [दुर्निगेय] दुःख से स्वरूप कहने योग्य (ठा १६४) ।

दुण्णिग्गोह देखो दुन्निग्गोह, (राज) ।

दुण्णिमिअ वि [दुर्निमोचित] दुःख से छोड़ा हुआ, (उप ११, ३६) ।

दुण्णिमित्त न [दुर्निमित्त] खराब शकुन, अपशकुन, (उप ७७, ६) ।

दुण्णिविट्ठ वि [दुर्निविष्ट] दुराग्रही ; (निचू ११) ।

दुण्णिसीहिया स्त्री [दुर्निषद्या] कष्ट-साध्य स्वाध्याय-भूमि (पव्व ३, ६) ।

दुण्णेय वि [दुर्ज्ञेय] जिसका ज्ञान कष्ट-साध्य है वह, (आचा ११८ ; उत्त ३६८) ।

दुप्पसह वि [दुष्प्रसह] — प्रसंग ; (औप) ।

दुप्पसह पु [दुष्प्रसह] — नाम ; (कप्प) ।

दुप्पसाह वि [दुष्प्रसाध] जो कठिनाई से साधा जा सके ; (पंचा) ।

दुप्पसुत्त वि [दुष्प्रसुप्त] बहुत कठिन से जागने में होने वाला ; (भग ८८८) ।

दुप्पहंसअ वि [दुष्प्रहंसक] दूसरों को कष्ट देने वाला ; (भग ८८८) ।

दुप्पहंसय वि [दुष्प्रहंसक] — दुष्टियों से तिरस्कार का संभव (उप ६ ३३ ; — मग ७६६) ।

दुप्पहार वि [दुष्प्रहार] कठिनाई से प्रहार करने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पहारि वि [दुष्प्रहारिन्] — दुष्टियों से तिरस्कार का संभव (उप ६ ३३ ; — मग ७६६) ।

दुप्पहीण वि [दुष्प्रहीण] कठिनाई से छोड़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाअ वि [दुष्प्राय] प्रायः कठिन ; (भग ८८८) ।

दुप्पाअ वि [दुष्प्राय] प्रायः कठिन ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरण वि [दुष्प्रावरण] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरण वि [दुष्प्रावरण] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणिअ वि [दुष्प्रावरणिक] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणिअ वि [दुष्प्रावरणिक] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणिआ स्त्री [दुष्प्रावरणिका] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणिआ स्त्री [दुष्प्रावरणिका] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणी स्त्री [दुष्प्रावरणी] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणी स्त्री [दुष्प्रावरणी] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणीअ वि [दुष्प्रावरणीय] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणीअ वि [दुष्प्रावरणीय] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणीआ स्त्री [दुष्प्रावरणीया] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणीआ स्त्री [दुष्प्रावरणीया] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणीय वि [दुष्प्रावरणीय] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणीय वि [दुष्प्रावरणीय] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणीया स्त्री [दुष्प्रावरणीया] कठिनाई से ओढ़ने योग्य ; (भग ८८८) ।

दुप्पाउरणीया स्त्री [दुष्प्रावरणीया

दुप्पडिलेह वि [दुष्प्रतिलेख] जो ठीक १ न देखा जा सके वह, (पव ८४)।

दुप्पडिलेहण न [दुष्प्रतिलेखन] ठीक १ नहीं देखना ; (आव ४)।

वाला, अन्याय-कारी , (उप ७१८ टी)। °कारि वि [°कारिन्] अन्याय करने वाला , (सुपा ३४६)।

दुन्निग्गह वि [दुर्निग्रह] जिसका निग्रह दुःख से हो सके वह, अनिवार्य , (उप पृ १६३)।

दुन्निबोह वि [दुर्निबोध] १ दुःख से जानने योग्य ; २ दुर्लभ , (सुम १, १६, २६)।

दुन्निमित्त देखो दुण्णिमित्त, (श्रा २७)।

दुन्नियत्थ वि [दुर्नीत] दुष्ट कर्म, दुष्कृत, "वंचणि वेरंति य दुन्नियाणि" (सुम १, ७, ४)।

दुन्नियत्थ वि [दे] निंद्य का भेष वाला, निन्दनीय वेष को धारण करने वाला, केवल जीवन पर ही वस्त्र-पहिना हुआ ; "लोए वि कुसंसग्गीपि जण दुन्नियत्थमइरायं निंदइ" (उव)।

दुन्निरिक्ख वि [दुर्निरीक्ष] जो कठिनाई से देखा जा सके वह, (कप्प ; भवि)।

दुन्निवार वि [दुर्निवार] रोकने के लिए अशक्य, जिसका निवारण मुश्किली से हो सके वह ; (सुपा ११३ ; महा)।

दुन्निवारणीअ वि [दुर्निवारणीय, दुर्निवार] ऊपर देखो; (स ३४३ ; ७४१)।

दुन्निसण्ण वि [दुर्निषण्ण] खराब रीति से बैठा हुआ ; (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुप देखो दिअ = द्विप ; (राज)

दुपएस वि [द्विप्रदेश] १ दो अवयव वाला ; २ पुं. द्वयणुक ; (उत्त १)।

दुपएसिय वि [द्विप्रदेशिक] दो प्रदेश वाला , (भग ५, ७)।

दुपक्ख पु [दुष्पक्ष] दुष्ट पक्ष ; (सुम १, ३, २)।

दुपक्ख न [द्विपक्ष] १ दो पक्ष ; (सुम १, ३, २)। २ वि. दो पक्ष वाला ; (सुम १, १२, ५)।

दुपडिग्गह न [द्विप्रतिग्रह] दृष्टिवाद का एक सूत्र ; (सम १४७)।

दुपडोआर वि [द्विपदावतार] दो स्थानों में जिसका समावेश हो सके वह ; (ठा २, १)।

दुपडोआर वि [द्विप्रत्यवतार] ऊपर देखो (ठा २,१)।

दुपमसिजय देखो दुप्पसहिजय , (पुप्फ १२०)।

दुपय वि [द्विपद] १ दो पैर वाला, २ पुं. मनुष्य, (ठा १, ८, सुपा ४०१)। ३ न. मात्रा, गण, (ओघ २०१ भा)

दुपय पुं [द्रुपद] कांपिल्यपुर का एक राजा, (कप्प १,११)

दुपरिच्चय वि [दुष्परित्यज] दुस्त्याज्य, दुःख से छोड़ने योग्य ; (ठा ७,८ टी ; सुपा ३४)।

दुपरिच्चयणीय वि [दुष्परित्यजनीय, दुष्परित्यज] ऊपर देखो ; (कप्प)।

दुपरिच्च देखो दुप्परिच्च ; (ठा ६, १—पत्र ३३६)।

दुपुत्त पुं [दुष्पुत्र] कुपुत्र, बुरा ; (पउम २६, ३१)।

दुपेक्ख वि [दुष्प्रेक्ष] दुर्दर्श, अदर्शनीय, (भवि)।

दुप्पअ पुं [दुष्पद] दुष्ट शब्द ; (भवि)।

दुप्पउत्त वि [दुष्प्रयुक्त] १ दुरुपयोग करने वाला, (ठा ३, १—पत्र १६)। २ जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह, (भग ३, १)।

दुप्पउलिय } वि [दुष्प्रकटित] ठीक २ नहीं खिला हुआ,
दुप्पउल्ल } अधखिला ; (उत्त ; पंचा १)।

दुप्पओग पुं [दुष्प्रयोग] दुरुपयोग ; (दस ४)।

दुप्पओगि वि [दुष्प्रयोगिन्] दुरुपयोग करने वाला ; (पाअ १, १—पत्र ७)।

दुप्पक्क वि [दुष्पक्व] देखो दुप्पउल्ल, (सुपा ४७१)।

दुप्पक्खाल वि [दुष्प्रक्षाल] जिसका प्रक्षालन कठिनाई से साध्य हो वह , (सुपा ६०८)।

दुप्पच्चुप्पेक्खिय वि [दुष्प्रत्युत्प्रेक्षित] ठीक १ नहीं देखा हुआ , (पव १)।

दुप्पजीवि वि [दुष्प्रजीविन्] दुःख से जीने वाला; (दस

दुप्पडिक्कंत वि [दुष्प्रतिक्रान्त] जिसका प्रायश्चित्त २ न किया गया हो वह , (विसे १, १)।

दुप्पडिगर वि [दुष्प्रतिकर] जिसका प्रतीकार दुःख किया जा सके ; (सूत्र १)।

दुप्पडिपूर वि [दुष्प्रतिपूर] पूरने के लिए अशक्य (दे
दुप्पडियाणंद वि [दुष्प्रत्यानन्द] १ जो किसी से संतुष्ट न किया जा सके ; २ अति क्रूर से तीव्र ; (१, १—पत्र ११ ; ठा ४, २)।

दुप्पडियार वि [दुष्प्रतिकार] जिसका प्रतीकार दुःख हो सके वह (ठा ३,१—पत्र ११७, ११६, स १८४, ठा

दुमुह देखो दुम्मुह=दुर्मुख ; (पि ३४०)।

दुमुहुत्त पुं [दुर्मुहूर्त] खराब मुहूर्त, दुष्ट समय ; (सुर ३३७)।

दुमोक्ख वि [दुर्मोक्ष] जो दुःख से छोड़ा जा सके ; (सुपा १, १२)।

दुम्म देखो दूम=दावृ। दुम्मइ ; (भवि)। दुम्मेहि, दुम्मेसि ; (सा १७७ ; ३४०)। कर्म—दुम्मिज्जइ ; (सा ३२०)।

दुम्मइ वि [दुर्मति] दुर्बुद्धि, दुष्ट बुद्धि वाला ; (श्रा२७ ; सुर २६१)।

दुम्मणी स्त्री [दे] मनोदोष स्त्री ; (दे ५, ४७ ; पउ)।

दुम्मण वि [दुर्मनस्] १ दुर्मन, खिन्न-मनस्क, दुःखित-चित्त, उदास ; (विपा १, १; सुर ३, १४७)। २ दीन, दीनता-युक्त ; ३ द्विष्ट, द्वेष-युक्त ; (उप ३, २—पत्र १३०)।

दुम्मय सक [दुर्मनाय्] दुःखित होना, उदास होना। वह—दुम्मणायंत, दुम्मणायमाण ; (गउड—महाकै ६६, कप्पू १२५ ; स्वप्न ७६)।

दुम्मणिय न [दौर्मनस्य] उदासी, उद्वेग ; (उत्त ८, ३)।

दुम्महिला स्त्री [दुर्महिला] दुष्ट स्त्री ; (श्रप ४६४ टी)।

दुम्माण पुं [दुर्मान] मूढ़ अभिमान, मिथ्या गर्व ; (अच्चु ६४)।

दुम्मार पुं [दुर्मार] विना मरा, मरदुकर लड़ाव ; "दुम्मारेण मरंते वारेवि" (श्रा १२)।

दुम्मारय पुं [दुर्मारक] दुष्ट पक्ष ; (भवि)।

दुम्मिअ वि [दूत] उपवासित, पीड़ित ; (सा ७४ ; ३३४ ; ४१३ ; भवि ; कम ३०)।

दुम्मिल सक [दुर्मील] छन्द-विशेष। स्त्री—ला ; (पिंग)।

दुम्मुह देखो दुम्मुह=दुर्मुख ; (महा)।

दुम्मुह पुं [दुर्मुख] बलदेव का पक्षपाती-योद्धा जो उल्मुक एक तुक, जिसके मस्तक में लोहे के पत्र दीला देकर मुक्के मारे थे, (अंत ३ ; पउ ७१, ४)।

दुम्मुह पुं [दे] मर्कट, बन्दर, बन्दर ; (दे ५, ४४)।

दुम्मेह वि [दुर्मेधस्] दुर्बुद्धि, दुर्मति ; (पउ १, ३)।

दुम्मोक्ख वि [दुर्मोक्ष] दुःख से छोड़ने योग्य ; (सम्मि १४४)।

दुरक्कम वि [दुरतिक्रम] दुर्लङ्घ्य, जिसका उल्लंघन दुःख-साध्य हो वह ; (आचा)।

दुरक्कमणिज्ज वि [दुरतिक्रमणीय] ऊपर देखो ; (आचा १, ६)।

दुरंत वि [दुरन्त] १ जिसका परिणाम—विपाक खराब हो वह, जिसका पर्यन्त दुष्ट हो वह ; (आचा १, ८ ; पउ १, ४—पत्र ६६ ; स ७६० ; उवा)। २ जिसका विनाश कष्ट-साध्य हो वह ; (तंदु)।

दुरंदर वि [दे] दुःख से दलित ; (दे ५, ४६)।

दुरक्ख वि [दुरक्ष] जिसकी रक्षा करना कठिन हो वह ; (सुपा १४१)।

दुरक्खर वि [दुरक्षर] परुष, कठोर (वचन) ; (भवि)।

दुरग्गह पुं [दुराग्रह] कदाग्रह ; (कुप्र ३७६)।

दुरज्झवसिय न [दुरध्यवसित] दुष्ट चिन्तन ; (सुपा ३७७)।

दुरणुचर वि [दुरनुचर] जिसका अनुष्ठान कठिनता से हो सके वह, दुष्कर ; "एसो जईण धम्मो दुरणुचरो संवरप्पाय" (सुर १४, ७६ ; उप ६, १—पत्र २६६ ; पाचा १, १)।

दुरणुपाल वि [दुरनुपाल] जिसका पालन कष्ट-साध्य हो वह ; (उत्त २३)।

दुरप्प पुं [दुरात्मन्] दुष्ट आत्मा, दुर्जन ; (उत्त ; महा)।

दुरब्भास पुं [दुरभ्यास] खराब आदत ; (सुपा १६७)।

दुरभि देखो दुब्भि ; (भग ; पउम २६,६०; १०३, ४४ ; पव २, ६ ; आचा)।

दुरभिगम वि [दुरभिगम] १ जहाँ दुःख से गमन हो सके वह, कष्ट-साध्य ; (उप ३, ४)। २ दुर्बोध, कष्ट से जो जाना जा सके ; (गच्छ)।

दुरमच्च पुं [दुरमात्य] दुष्ट मंत्री ; (कुप्र २६१)।

दुरवगम वि [दुरवगम] दुर्बोध ; (कुप्र ४८)।

दुरवगाह वि [दुरवगाह] दुरवगम, जहाँ प्रवेश करना कठिन हो वह ; (दे १, २६ ; सम १४६)।

दुरस वि [दूरस] खराब स्वाद वाला ; (सम ; पाचा १, १२ ; उप ८)।

दुरसण पुं [दुर्दर्शन] १ सर्प, साँप ; २ दुर्दर्श, दुष्ट मनुष्य ; (सुपा १६७)।

दुरहि देखो दुरभि ; (ठा ७२८ टी ; तंदु)।

दुरहिगम देखो दुरभिगम ; (सम १४६; विसे २०६)।

दुब्बल वि [दुर्बल] निर्बल, बल हीन, (निचि १, ७; सुपा ६०२, प्राप्र २३)। °पच्चयमित्त पुन [प्रत्ययमित्र] दुर्बल को मदद करने वाला ; (ठा ६)।

दुब्बलिय वि [दुर्बलिक] दुर्बल, निर्बल , (भग १२, २)। °पूसमित्त पु [°पुष्यमित्र] स्थविर-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य, (ठा ७ , ती ७)।

दुब्बुद्धि वि [दुर्बुद्धि] १ दुष्ट बुद्धि वाला, खराब विचार वाला , (उप ७२८ , सुपा ४४ , ३७६)। २ स्त्री. खराब बुद्धि, दुष्ट नियत , (श्रा १४)।

दुब्भोल्ल पु [दे] उपालम्भ, उलहना , (दे ६, ४१)।

दुब्भ देखो दुह=दुह् ।

दुब्भग वि [दुर्भग] १ कमनसीब, अभागा , २ अप्रिय, अनिष्ट , (पण्ह १, २ , प्राप्र १४३)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से उपकार करने वाला भी लोगों को अप्रिय होता है , (कम्म १ , सम ६७) । °करा स्त्री [°करा] दुर्भग बनाने वाली विद्या-विशेष ; (सम २, २)।

दुब्भरणि स्त्री [दुर्भरणि] दु ख से निर्वाह , "होउ अजत्तणी तेसि दुब्भरणी पडउ तदुदरस्सावि" (सुपा ३७०)।

दुब्भाव पु [दुर्भाव] १ हेय पदार्थ ; (पउम ८६, ६६)। २ अशुद्ध भाव, खराब अभिप्राय, "विसुद्धेण व जेण कया दुब्भावो" (सुर ३, १६)।

दुब्भाव पुं [द्विभाव] विभाग, जुदाई ; (सुर ३, १६)।

दुब्भासिय न [दुर्भाषित] खराब वचन , (पउम ११८, ६७ , पडि)।

दुब्भि पुन [दुरभि] १ खराब गन्ध , (सम ४१)। २ अशुभ, खराब, अ-सुन्दर ; (ठा १)। ३ वि. खराब गन्ध वाला, दुर्गन्धि , (आचा)। °गंध [°गन्ध] पूर्वोक्त ही अर्थ ; (ठा १ , आचा ; णाया १, १२)। °सद्द पु [°शब्द] खराब शब्द ; (णाया १, १२)।

दुब्भिक्ख पुन [दुर्भिक्ष] १ दुष्काल, अकाल, वृष्टि का अभाव, (सम ६०, सुपा ३५८),

"आमन्ने रणरंगे, मुहे खंते तहेव दुब्भिक्खे ।
जस्स मुहं जोइज्जइ, सो पुरिसो महीयले विरलो" (रयण ३२)।

२ भिक्षा का अभाव, (ठा ६, २)। ३ वि. जहाँ पर भिक्षा न मिल सके वह देश आदि ; (ठा ३, १—पत्र ११८)।

दुब्भिज्ज देखो दुब्भोज्ज ; (पउम ८०, ६)।

दुब्भूय स्त्री [दुर्भूति] अ-शिव, अ-मंगल ; (सूत्र १)।

दुब्भूय पुन [दुर्भूत] १ दुष्काल करने वाला जन्तु-कीड़ा, (भग ३, १)। २ न. अशिव, अमंगल , (संथा)

दुब्भोज्ज वि [दुर्भेद्य] तोड़ने को अशक्य ; (वि ८१, १८ नाट—मृच्छ १११)।

दुब्भेय वि [दुर्भेद] जान देखो ; (राय)।

दुभग देखो दुब्भग , (भग १५)।

दुभय न [द्विभय] वर्तमान और आगामी जन्म, "दुभय सज्जो" (श्रा १७)।

दुभाग पु [द्विभाग] आधा, अर्ध ; (भग ७, १)।

दुम सक [धावय्] १ साफ करना । २ धुलवा लेना । दुमइ ; (हे ४, २४)। दुमउ ; (कुमा) । दुमंत—दुर्मत ; (कुमा)।

दुम पुं [द्रुम] १ वृक्ष, पेड़, गाछ ; (कुमा ; प्राप्र ६ ; प्रा २ चमरेन्द्र के पदाति-सैन्य का एक अधिपति ; (ठा ५, १ पव ३०२ ; इक)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जि भगवान् महावीर के पास दीक्षा ले अनुत्तर देवलोक की प्राप्त की थी ; (अनु१)। ४ न एक देव विमान ; (३६)। °वंत न [°वान्त] एक विद्याधर-नगर , (इ °पत्त न [°पत्र] १ वृक्ष की पत्ती ; २ उत्तराध्ययन सू एक अध्ययन ; (उत्त १०)। °पुप्फिया स्त्री [पुष्पित दशवैकालिक सूत्र का पहला अध्ययन ; (दस १)। °र पु [°राज] उत्तम वृक्ष ; (ठा४, ४)। °सेण पु [से १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान महावीर के दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में गति प्राप्त की थी , (अनु २ नववें बलदेव और वासुदेव के पूर्व-जन्म के धर्म-गु ११२ ; पउम२०, १७७)।

दुमंतय पुं [दे] केश-बन्ध, धम्मिल्ल ; (दे ६, ४७)

दुमण न [धावन] धूना आदि से लेपन, संस्कार क (पण्ह २, १)।

दुमणी स्त्री [दे] सुरा, मद्यान आदि पीने का बर्तन वि विशेष ; (दे ६, ४४)।

दुमत्त वि [द्विमात्र] दो मात्रा वाला स्वर-वर्ण; (ठा१,६

दुमासिय वि [द्वैमासिक] दो मास का, दो मास सम्ब (सण)।

दुमिअ वि [धावित] धूना आदि से पोंछा हुआ, संस्का हुआ ; (गा ७४७ ; सुज्ज २०)।

दुमिल देखो दुम्मिल , (पिंग)।

दुमुह पु [द्विमुख] एक राजर्षि ; (उत्त ६)।

ो दुल्लंघ ; (भवि) ।
ो दुल्लंघ ; (भवि) ।
[दुर्लभ] १ जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह ;
; गउड ; प्रासू १३४) । २ पुं. एक कीर्तिस्तुंभ ;
६१७) । देखो दुल्लह ।
पुंसी [दे] कन्धा, कछुआ ; (दे ६, ४२ ; उप
३६) ।
न [दे] वस्त्र, कपड़ा ; (दे ६, ४१) ।
लंघ वि [दुर्लङ्घ] जिसका उल्लंघन कठिनाई से हो
क वह, अनतिक्रमणीय ; (पउम १२, ३८ ; ४१ ; हेका
६१ ; सुर २, ७८) ।
लंभ वि [दुर्लभ] दुष्कर, दुष्प्राप्य ; (उप पृ १३६ ;
सुपा १६३ ; सण) ।
दुल्लक्ख वि [दुर्लक्ष] १ दुर्विज्ञेय, जो दुःख से जाना
ा सके, अदृश्य ; (से ८, ६ ; ग ६६ ; वज्जा १३६ ;
श्र ३८) । २ जो कठिनाई से देखा जा सके ;
(कम) ।
दुल्लग्ग वि [दे] अपचनन, अभुक्त ; (दे ६, ४३) ।
दुल्लग्ग न [दुर्लग्न] दुष्ट लग्न, दुष्ट मुहूर्त ; (सुपा २१६) ।
दुल्लम } देखो दुल्लह ; "हिं दुल्लम्भं जणो सुलभाहीं"
दुल्लभ } (गा ६७५ ; निचू ११) ।
दुल्ललिअ वि [दुर्ललित] १ दुष्ट आदत वाला ; २ दुष्ट
इच्छा वाला ; "विउसइ वेसाय सिंह विविहविलासेहिं दुल्ल-
लिओ", "कीलइ दुल्ललियबालकीलाए" (सुपा ४८५ ;
३१८) । ३ व्यर्थ, अहेतु वाला ;
"पल्ला सा पुत्तइच्छरिसलिम्मिया तिदुयपेसि दुह जणरी ।
जेर फप्पो सि तुमं दीहुदारुणिक्कदुल्ललिओ" (सुपा २१६) ।
४ दुर्विदग्ध, दुर्विलिख ; (पाम) । ५ न. दुगला,
दुर्लभ वस्तु की अभिलाषा ; (नचानि ६) ।
दुल्लसिआ स्त्री [दे] दाढ़ी, मोंछालो ; (दे ६, ४६) ।
दुल्लह वि [दुर्लभ] १ दुर्लभ, जिसकी प्राप्ति कठिनाई से हो
वह ; (स्वप्न ४६ ; उमा ; जी ५० ; प्रासू ११ ; ४६ ;
४७) । २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी का गुजरात का
एक प्रसिद्ध राजा ; (गु १०) । °राय पुं [राज]
वही अर्थ ; (सण ६६ ; कुप ४) । °लंभ वि [°लम्भ]
जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह ; (पउम ३६, ४७ ;
सुर ४, २३६ ; वै ६८) ।
दुल्लहा स्त्री [द्रुपदी] छन्द-विशेष ; (म ७१) ।
दुल्लण न [दावन] उत्क्रम, पीड़न ; (पव १, २) ।
दुल्लण्ण } वि [दुर्वर्ण] खराब रूप वाला ; (भग ; ठा ८) ।
दुल्लन्न }
दुल्लय पुं [द्रुपद] एक राजा, द्रौपदी का पिता ; (थाया १,
१६ ; उप ६४८ टी) । °सुया स्त्री [°सुता] पाण्डव-पत्नी,
द्रौपदी ; (उप ६४८ टी) ।
दुल्लयंगया स्त्री [द्रुपदाङ्गजा] राजा द्रुपद की लड़की, द्रौपदी,
पाण्डवों की पत्नी ; (उप ६४८ टी) ।
दुल्लयंगरुहा स्त्री [द्रुपदाङ्गरुहा] ऊपर देखो; (उप ६४८ टी)।
दुल्लयण न [दुर्वचन] खराब वचन, दुष्ट उक्ति; (पउम ३५,
११) ।
दुल्लयण न [द्विवचन] दो का बोधक व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय,
दो संख्या की वाचक विभक्ति ; (हे १, ८४ ; ३ ३, ४—
पप १४८) ।
दुल्लर } देखो दुआर ; (हे २, ११२ ; प्रति ४१ ; सुपा
दुल्लाय } ४८७) । °राएस " (कम) । °पाल पुं
[°पाल] दरवान, प्रतिहार ; (सुर १, १३४ ; ३, १४८) ।
°वाहा स्त्री [°वाहा] द्वार-भाग; (आचा २, १, ६) ।
दुल्लारि वि [द्वारिन्] १ द्वार वाला । २ पुं. दरवान, प्रतीहार;
" बहुगिवाडे पल्ले रामदुवारी तहिं वरुणो " (सुपा २६६) ।
दुवारिअ वि [द्वारिक] दरवाजा वाला; " अवंगुदुवारिए"
(कम) ।
दुवारिअ पुं [द्वौवारिक] दरवान, द्वारपाल; (हे १, १६०;
षड् ६ ; सुपा २६०) ।
दुवालस वि [द्वादशन्] बारह, १२; (कम ; कुप) ।
°मुहुत्तिअ वि [मुहूर्तिक] बारह मुहूर्तों का परिमाण वाला;
(सम २२) । °विह वि [°विध] बारह प्रकार का ;
(सम २१) । °हा अ [°धा] बारह प्रकार ; (सुर
१४, ६१) । °यंत न [°यन्त] बारह आवर्त वाला वन्दन,
प्रत्याख्यान ; (सम २१) ।
दुवालसंग वि [द्वादशाङ्ग] बारह जैन आगम-ग्रन्थ,
आचारांग आदि बारह सूत्र-ग्रन्थ ; (सम १; हे १, २६४) ।
सी—°गी ; (राज) ।
दुवालसंगि वि [द्वादशाङ्गिन्] बारह अंग-ग्रन्थों का ज्ञा-
ता ; (कम) ।
दुवालसम वि [द्वादश] १ बारहवाँ ; २ बारह दिनों का उत्सव ; (आचा १, १; ठा ६; सम्
सी—°मी; (पच्चा १, ६) ।

दुरहिगम्म वि [दुरभिगम्य] दुःख से जानने योग्य, दुर्बोध, "मन्नाई वि अ नयवायगहणलीणा दुरहिगम्मा" (सम्म १६१)।

दुरहियास वि [दुरध्यास, दुरधिसह] दुस्सह, जो कष्ट से सहन किया जा सके, (णाया १, १ ; आचा ; उप १०३१ टी ; स ६६७)।

दुराणण पु [दुरानन] विद्याधर वंश का एक राजा ; (पउम ५, ४६)।

दुरणुचर वि [दुरनुचर] जिसका अनुचरन कष्ट-साध्य हो वह ; (पव २)।

दुराय न [द्विरात्र] दो रात, (ठा ६, २ ; कप्प)।

दुरायार वि [दुराचार] १ दुराचारी, दुष्ट आचरण वाला, (सुर २, १६३, १२, २२६, वेणी १७१)। २ पु. दुष्ट आचरण ; (भवि)।

दुरायारि वि [दुराचारिन्] ऊपर देखो ; (भवि)।

दुराराह वि [दुराराध] जिसका आराधन दुःख से हो सके वह, (कप्प)।

दुरारोह वि [दुरारोह] जिस पर दुःख से चढ़ा जा सके वह, दुरध्यास ; (उत्त ११ ; गा ४६८)।

दुरालोअ पु [दे] तिमिर, अन्धकार ; (दे ५, ४६)।

दुरालोअ वि [दुरालोक] जो दुःख से देखा जा सके, देखने को अशक्य ; (से ४, ८ ; कुमा)।

दुरालोयण वि [दुरालोकन] ऊपर देखो ; "दुरालोयणो दुम्मुहो रक्खसेसो" (भवि)।

दुरावह वि [दुरावह] दुर्धर, दुर्वह ; (पउम ६८, ६)।

दुरास वि [दुराश] १ दुष्ट आशा वाला। २ खराब इच्छा वाला, (भवि ; संति १६)।

दुरासय वि [दुराशय] दुष्ट आशय वाला ; (सुपा १३१)।

दुरासय वि [दुराश्रय] दुःख से जिसका आश्रय किया जा सके वह, आश्रय करने को अशक्य ; (पव्व १, २ ; उत्त १)।

दुरासय वि [दुरासद] १ दुष्प्राप, दुर्लभ ; २ दुर्जय ; ३ दुःसह ; (पव २, १ ; उत्त)।

दुरिअ न [दुरित] पाप ; (पाअ ; सुपा १४३)।

दुरिअ न [दे] दुःख, शोक, अन्धेरा ; (षड्)।

दुरिआरि वि [दुरितारि] भगवान् धर्मनाथ की स्तवना-देखो ; (भवि ६)।

दुरिक्ख वि [दुरीक्ष] देखने को अशक्य ; (हम्मीर)।

दुरुअक वि [दे] थोड़ा पीसा हुआ, ठीक १ नहीं हुआ, (आचा २, १, ८)।

दुरुद्धुल्ल सक [भ्रम्] १ भ्रमण करना, घूमना। २ हुई चीज की खोज में घूमना। वकृ—दुरुद्धुल्लंत (सुर १५, २१२)।

दुरुत्त न [दुरुक्त] दुष्टोक्ति, दुष्ट वचन ; (सार्ध १०१)।

दुरुत्त वि [द्विरुक्त] १ दो बार कहा हुआ, पुनरुक्त, दो बार कहने योग्य ; (रंभा)।

दुरुत्तर वि [दुरुत्तर] १ दुस्तर, दुर्लंघ्य ; (सूअ १, २)। २ दुष्ट उत्तर, अयोग्य जवाब ; (ठा १, १४)।

दुरुत्तर वि [द्वि-उत्तर] दो से अधिक। °सय [°शतम] एक सौ दो वाँ, १०२ वाँ; (पउम १०१,१०

दुरुत्तार वि [दुरुत्तार] दुःख से पार करने योग्य, (२६७)।

दुरुद्धर वि [दुरुद्धर] जिसका उद्धार कठिनाई से हो ; (सूअ १, २, २)।

दुरुवणीय वि [दुरुपनीत] जिसका उपनय दूषित हो (उदाहरण), (दसनि १)।

दुरुवयार वि [दुरुपचार] जिसका उपचार कष्ट-साध्य वह ; (तंदु)।

दुरुव्वा स्त्री [दूर्वा] तृण-विशेष, दूब, (स ११४, ११८)।

दुरुह सक [आ+रुह्] आरूढ होना, चढ़ना। दुरुहइ (पि ११८, ११६)। वकृ—दुरुहमाण ; (ठा २, ३, १)। संकृ—दुरुहित्ता, दुरुहित्ताणं, दुरुहे (भग ; महा, पि ६८३ ; ४८२)।

दुरुढ वि [आरूढ] अधिरूढ, ऊपर चढ़ा हुआ ; (ठा १, १ ; २, १; औप)।

दुरुव वि [दुरूप] खराब रूप वाला, कुरूप, (ठा ४ श्रा ११)।

दुरुह देखो दुरुह। संकृ—दुरूहिउ, दुरूहिया, (ठा १, ६,२,१६), "जइ आमाविहिं नाव जइमंथा दुरू (सूम १, ११, २०)।

दुरुहण न [आरोहण] अधिरोहण, ऊपर का हि (ठा ५१)।

दुरेह पु [द्विरेफ] भ्रमर, भ्रमर ; (पउम, हे १, ४

दुरोअर न [दुरोदर] जूआ, द्यूत, (पाअ)।

-णाह]

देसी दुस्सह ; (ई १, १११ ; रंभा ११, १३७ ,

ल वि [दुःसाध्य] दुःसाध्य, कष्टसाध्य , (पउम ८६,

२)।

लिंगिय वि [दुःशिक्षित] दुर्विनीत , (पउम २४,

२१)।

दुसुमिण देखो दुस्सुमिण, (पंचा)।

दुस्सद्दण न [दुः] शब्द का अच्छारण-विशेष, (ग ३६)।

दुस्सद्द [शिष्] दुष्ट करना । पर—दुस्सद्दमाण , (गम

१, ११, ११)।

दुस्सद्दण न [दुःशब्दन] आगमन , (ठाणं २०)।

दुस्संचर वि [दुस्संचार] जहाँ दुःख से जाया जा सके, दुर्गम,

(ग २११ ; मति १७)।

दुस्संचार वि [दुस्संचार] ऊपर देखो (सुर १, ८८)।

दुस्संत पुं [दुष्यन्त] चन्द्रवंशीय एक राजा, शकुन्तला

का पति ; (पि ३२८)।

दुस्संयोग वि [दुस्संयोग] दुर्योग, (आचा)।

दुस्सज्झ वि [दुस्साध्य] दुष्कर ; (सुपा ८ ; ६६६)।

दुस्सणण देखो दुस्सन्नप्प , (हे ४)।

दुस्सत्त वि [दुःसत्त्व] दुरात्मा, दुष्ट जीव ,(पउम ८७,

६)।

दुस्सन्नप्प देखो दुस्सन्नप्प ; (कम)।

दुस्समदुस्समा स्त्री [दुष्षमदुष्षमा] काल-विशेष, सर्वा-

धम काल , अवसर्पिणी काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी काल

का पहला आरा, इसमें सब पदार्थों के गुणों की सर्वोत्कृष्ट हानि

होती है, इसका परिमाण एक्कीस हजार वर्षों का है; (ठा १,

६; इक)।

दुस्समसुसमा स्त्री [दुष्षमसुषमा] बयालीस हजार कम

एक कोटाकोटि सागरोपम का परिमाण वाला काल-विशेष,

अवसर्पिणी काल का चतुर्थ और उत्सर्पिणी काल का तीसरा

आरा ; (कम ; इक)।

दुस्समा स्त्री [दुष्षमा] १ दुष्ट काल । २ एक्कीस हजार

वर्षों के परिमाण वाला काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का

पाँचवाँ और उत्सर्पिणी काल का दूसरा आरा; (उत्त ४८; इक)।

दुस्समाण देखो दुस्सद्द ।

दुस्सर पुं [दुःस्वर] १ खराब आवाज, कुत्सित काठ ; २

कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्वर कर्ण-कटु होता है ; (कम

१, २२, सम ६६) । °णाम, °नाम न [°नामन्] दुःस्वर

का दुःख-भूत कर्म , (पंच ; सम ६७)।

दुस्सल वि [दुःशल] दुर्विनीत, अविनीत ; (दुप्र १)।

दुस्सह वि [दुस्सह] जो दुःख से सहन हो सके, असह्य ;

(सम ७३ ; ई १, ११, १११ ; पड्)।

दुस्सहिय वि [दुस्सह] दुःख से सहन किया हुआ ;(सुम

१, ३, १)।

दुस्सासण पुं [दुःशासन] दुर्योधन का एक छोटा भाई,

कौरव-वीर ; (चारु ११, वेणी १०७)।

दुस्साहड वि [दुस्संहृत] दूसरे से एकत्रित किया हुआ ;

" दुस्साहडं धर्म हिच्चा बहु संचिणिया रयं" (उत्त ७, ८)।

दुस्साहस वि [दौःसाहसिक] दुःसाध्य कार्य को करने

वाला ; (पि ८४)।

दुस्सिक्खग वि [दुःशिक्ष] दुष्ट शिक्षा वाला, दुःशिक्षित,

दुर्विनीत, (उप १४६ टी ; कम २८३)।

दुस्सिक्खिय वि [दुःशिक्षित] ऊपर देखो (गा ६०३)।

दुस्सिज्जा स्त्री [दुःशय्या] खराब शय्या ; (दस ८)।

दुस्सिट्ठ वि [दुःशिष्ट] कुत्सित शैक्ष वाला; (पि १३६)।

दुस्सील वि [दुःशील] १ दुष्ट स्वभाव वाला ; २ अभि-

चारी ; (पंचा १, १ ; सुपा ११०)। स्त्री—°ला ;

(पाम)।

दुस्सुमिण पुं [दुःस्वप्न] दुष्ट स्वप्न, खराब स्वप्न ; (पंचा

१, २)।

दुस्सुय न [दुःश्रुत] १ दुष्ट शास्त्र । २ वि. श्रुति-कटु ;

(पंचा १, २)।

दुस्सेज्जा देखो दुस्सिज्जा ; (उत्त)।

दुह सक [दुह्] दूहना, दूध निकालना । दुहेज्जइ

(महा)। कर्म—दुहिज्जइ, दुम्मइ; (हे ४, २४५)।

भवि—दुहिहिइ, दुल्हिहिइ; (हे ४, २४५)।

दुह देखो दोह = दोह ; (राज)।

दुह देखो दुक्ख=दुःख ; (हे २, ७२ ; प्राप्र २६ ;

१६२)। °अ वि [°द] दुःख देने वाला, दुःख-

(सुपा ४३४)। °ट्ठ वि [°र्त्त] दुःख से पीड़ित ;

१, १ ; सुपा ३१८)। °ट्ठि पुं [°र्थि] नरक-स्थान

पीड़ित ; (औप)। °ट्ठ पुं [°र्थ] देखो ट्ठ; (उप पृ ७६ ; ७२

१, ६, १)। °त्त देखो ट्ठ; (उप पृ ७६ ; ७२

°फास पुं [°स्पर्श] दुःख-जनक स्पर्श; (पाया १

°भागि वि [°भागिन्] दुःख में भागीदार; (सु

दुविह) वि [द्विविध, द्विविधिन्] १ भरत-क्षेत्र में इस
दुविहिअ) अवसर्पिणी काल में उत्पन्न दूसरा अर्ध-चक्री राजा,
(सम १५८ टी, पउम ४, १५१)। २ भरत क्षेत्र में उत्पन्न
इस काल का आठवाँ अर्ध-चक्री राजा, एक वासुदेव, (सम १५४)।
दुविभज्ज वि [दुर्विभज्य] जिसका विभाग करना कठिन हो
वह, (ठा ३, १ —पत्र १२६)।
दुविभत्त देखो दुविभज्ज, (ठा ३, १ टी)।
दुविभिज्ज वि [दुर्विज्ञेय] दुर्विज्ञेय, जानकारी का झूठा
अभिमान करने वाला ; (ठा ८, १ टी)।
दुविरुद्ध) [दुर्विदग्ध] दुष्ट विद्वान् ; (भवि)।
दुविलद्ध) [दुर्विलब्ध] एक अनार्य देश, " दुं (दु)
विलद्धाओ तुरुक्का —" (पउ २७४)।
दुविह वि [द्विविध] दो प्रकार का, (हे १, ३४, ठा २)।
दुविहण अक [अदुर्विधायति] कहना, २२, (नव २०, पड्)।
दुविहत्त) देखो दुविहत्त, (पउम ४१, १०; पण्ह १, ४)।
दुविहत्त)
दुविहत्त न [दुर्विहत्त] १ दुष्ट विभाग। २ वि. दुष्ट प्रकार करने
वाला, ३ बाधा-युक्त, विषम-विभाग, (ठा ४, ३, विपा १, १)।
दुविहत्तण न [दुर्विभक्त] दुष्ट विभाग, खराब बंटवारा ; (पउम
३१, १०६, विपा १, २० ; ठा ३, ३ टी)।
दुविहत्तय देखो दुविहत्त ; (भवि)।
दुविहत्तिय न [दुर्विहर्तृक] खराब आदमी, बुरी आदत,
(पुप्फ १७०, ३८६, भवि)।
दुविहन्तु वि [दुर्विहन्तृ] अनर्थ, खराब हत्या ; (आचा)।
दुविहा स्त्री [दुर्विधा] दुष्ट विधि, खराब प्रकार का अन्न आदि, (आचा)।
दुविहाय वि [दुर्विधाय] दुष्ट, जिसका कहना कठिनाई से हो सके
वह, (ठा १०, पुप्फ १, १८)।
दुविहार देखो दुविहत्त, (उत्त, पुप्फ १, १३८)।
दुविहारिय वि [दुर्विहारिन्] अनर्थ करने वाला, (दसनि ७)।
दुविहास) [दुर्विधाय] दुर्विधि, दुष्ट कल्पना, अनर्थकारी
दुविहासय) कल्पना वगैरह करना चाहिये।" (पउम १०३,
१०६)।
दुविहासय) [दुर्विधि] दुष्ट विधि, (सूत्रनि ७)।
दुविहिअ वि [दुर्विहित] अनर्थ करने वाला, अनर्थ, अयोग्य
आचरण करने वाला ; (ठा ४, ४ टी, उवा, सुपा ४०, ४०१, सम्म ११६)।
दुविहिअत्त न देखो दुविहिअत्तण (उप)।
दुविहिअत्तण न [दे] दुष्ट विधि, (उत्त)।
दुविहिअत्तय न [दुर्विहितत्व] दुष्ट विधि, (सूत्र १, ३)।
दुविहिअभड वि [दुर्विनीत] परिणाम-वर्जित, अज्ञ, (ठा
२—पत्र ३१२)।
दुविहिअभड) वि [दुर्विदग्ध] दुष्ट का कुछ अभिमान
दुविहिअभद्द) वाला, दुर्विलिप्त ; (पउम ; ठा १)।
दुविहिजाणय वि [दुर्विज्ञेय] दुःख से जानने योग्य का
जानने का अभिमान ; "अमुणअपरिक्खमणं दुविहिजाणए" (पण्ह १, १)।
दुविहिदरय वि [दुर्दर्श] दुःख से अर्जन करने वाला, दुःख
से कमाने योग्य, (कुप्र २३८)।
दुविहिणीअ वि [दुर्विनीत] अविनीत, उद्धत ; (पव
३६, काल)।
दुविहिण्णाय वि [दुर्विज्ञात] अयोग्य रीति से जाना हुआ
(आचा)।
दुविहिभज देखो दुविभज्ज, (राज)।
दुविहिभज्ज वि [दुर्विभाज्य] दुष्कर, दुःख से विभाग
होने का हो सके वह, (ठा ६, १ टी —पत्र ३४१)।
दुविहिभाय वि [दुर्विभाग] खराब बंटा, (सिरि)।
दुविहिलसिय न [दुर्विलसित] १ स्वच्छन्दी विलास,
निंद्य कार्य, अनिष्ट काम ; (उप ३१३ टी)।
दुविहिसह वि [दुर्विसह] अत्यन्त दुःसह, असह्य, (
१८८, सुर ३, १४८, १८, २१०)।
दुविहिसोझ्झ वि [दुर्विशाध्य] दुष्ट करने से शुद्ध होने योग्य
(पंचा १६)।
दुविहिहिय वि [दुर्विहित] १ अनर्थ करने में तत्पर हुआ
"दुविहिहियाणिलिय विहिय," (सुर ४, १८, ११, १
२ अनिष्ट, अयोग्य ; (आचा १)।
दुविहीसज्झ वि [दुर्विधेय] दुर्विध, दुःख से करने योग्य,
३, ६ ; ४, ८८, १३, ६१, कप्पू १८)।
दुविहीसज्झ वि [दे] दुर्विध्य, दुःख से मारने योग्य, (दे
६)।
दुवीकड न [दुर्विकट] विषम विधि ; (भवि)।
दुवीकय देखो दुवीकड, (भवि)।
दुवीयड्ढ वि [दुर्विदग्ध] दुर्विदग्ध, (ठा ३, ४ —
पत्र १६२)।
दुवीयदुवीया देखो दुवीयड्ढ दुवीया, (भवि)।
दुवीयड्ढुवीया देखो दुवीयड्ढ दुवीया, (ठा ३, ४ —
दुवीया देखो दुवीयड्ढ, (ठा ३, ४ —

[दिट्ठ]

दि] दर्शन, देखना, (हे १, ४४ षड्०)।
दंस] डाँस, मच्छड़, (सिरि)।
दु दि [दि] १ आकाश ; २ स्वर्ग, देवलोक ; (हे १,)।
दुअ [द्विज] द्विज, ब्राह्मण ; (सुपा ११)।
दुअ [द्वितीय] १ दूसरा ; (सुपा ११)।
दुअ देखो दुगुण ; (स्वप्न १, १६ - पत्र १२६)।
दुआ न [दीर्घायुस्] लम्बी आयु, सकल आयुष्य ; (उप पृ ३१)।
दुइ स्त्र [दृ, दायय्] दर्शित करना, बताना। दुइअ, दुइंत ; (स्वप्न ८ ; प्राप्त, हे ४, २३)। कर्म—दुइअइ ; (भवि)। कृ—दुमिज्जंत ; (सुपा ३६६)।
दुमिज्जंत ; (सुपा ३६६)।
दुम देखो दुम=द्रुमतरु ; (हे ४, २८)।
दुमअ } वि [दायक] देनेवाला, दाता ; (पाअ १, १)।
दुमया }
दुमण न [दमन, दायन] दर्शित करना, बताना ; (कर ४)।
दुमण न [धमन] संकेत करना ; (कर ४)।
दुमण देखो दुम्मण=दुर्मनस् ; (सुपा १, २, २)।
दुमणाइअ वि [दुर्मनायित] जो उदास हुआ हो, दुर्मनस्क ; (नाट—मालती ६६)।
दुमिअ वि [दून, दावित] संतापित, पीड़ित ; (सुपा १०, १३३ ; २३०)।
दुमिअ वि [धमित] संकेत किया हुआ ; (हे ४, २४ ; कप्र)।
दुआर न [द्वि] कला विशेष ; (स ६०३)।
दूर न [दूर] १ अनिकट, अ-समीप ; "होत्थ अस्स किंची गया दूरं" (कुमा)। २ अतिशय, अत्यन्त ; "दूरमहं दमंतं" (कुमा)। ३ वि. दूर-स्थित, असमीप-वर्ती ; (सुपा १, २, २)। ४ व्यवहित, अन्तरित ; (गउड)। °ग वि [°ग] दूर-वर्ती, अ-समीपस्थ ; (उप ६४८ टी ; कुमा)। °गइ, °गइअ वि [°गतिक] १ दूर जाने वाला ; २ सौधर्म आदि देवलोक में उत्पन्न होने वाला ; (ठा ८)। °तराग वि [°तर] अत्यन्त दूर ; (पणण १७)। °त्थ वि [°स्थ] दूर-स्थित, दूरवर्ती ; (कुमा)। °भविय पुं [°भव्य] दीर्घ काल में मुक्ति को प्राप्त करने की योग्यता वाला जीव ; (उप ७२८ टी)। °य देखो °ग ; (सुपा १, ६, २)। °यंति वि [°यन्तिन्] दूर में रहने वाला ; (वि ६४)। °लक्ख वि [°लक्ष्य] सुदीर्घ-लक्ष्यी, (आचा)। °लक्ख पुं [°लक्ष्य] १ दूरस्थित आशय ; २ मोक्ष ; ३ मुक्ति का मार्ग ; (आचा)।
दूरंगय देखो दूर-गइअ ; (औप)।
दूरंतरिअ वि [दूरान्तरित] अन्तर्धान-व्यवहित, (णाया८)।
दूराय स्त्र [दूराय्] दूर-स्थित की तरह आचरण होना, दूरवर्ती मालूम पड़ना। कृ—दूरायमाण ; (गउड)।
दूरीकय वि [दूरीकृत] दूर किया हुआ ; (आ २८)।
दूरीहूअ वि [दूरीभूत] जो दूर हुआ हो ; (सुपा १६८)।
दूरुज्झ देखो दुज्झ ; (संक्षि १७)।
दूरुज्झ स्त्र [दूरुह्] दूषित होना, विकृत होना। दूरुज्झ ; (हे ४, २३५ ; संक्षि ३६)।
दूरुह स्त्र [दूरुह्] दूषित करना, दोष लगाना। दूरुह ; (भवि), देखो ; (दुह ४)।
दूस न [दूष्य] १ वस्त्र, कपड़ा ; (सम १४१ ; कप्प)। २ तंबू, पट-कुटी ; (ठा, २८)। °गणि पुं [°गणिन्] एक जैन आचार्य ; (संदि)। °मित्त पुं [°मित्र] मौर्यवंश के नाश होने पर पाटलिपुत्र में अभिषिक्त एक राजा ; (राज)। °हर न [°गृह] तंबू, पट-कुटी ; (म २६७)।
दूसअ वि [दूषक] दोष प्रकट करने वाला ; (वज्जा ६८)।
दूसग वि [दूषक] दूषित करने वाला ; (सुपा२७५ ; सं१२४)।
दूसण न [दूषण] १ दोष, अपगुण ; २ कलङ्क, दाग ; (तंदु)। ३ पुं. रावण की मौसी का लड़का ; (पउम१६, २६)। ४ वि. दूषित करने वाला ; (म ६२८)।
दूसम वि [दुःषम] १ खराब, दुष्ट ; २ पुं. काल-विशेष, पाँचवाँ आरा ; "दूसमे काले" (संक्षि १६६)। °दूसमा देखो दुस्समदुस्समा ; (सम ३६ ; ठा १ ; ६)। °सुसमा देखो दुस्समसुसमा ; (ठा २, ३ ; सम ८४)।
दूसमा देखो दुस्समा ; (सम३६ ; उप८३३टी ; सं३४)।
दूसर देखो दुस्सर ; (राज)।
दूसल वि [दि] दुर्भग, अभागा ; (द ६, ४३; पड्)।
दूसह देखो दुस्सह ; (हे १, १३ ; ११६)।
दूसहणीअ वि [दुस्सहनीय] दुःसह, असह्य ; (पिंड५
दूसासण देखो दुस्सासण ; (हे १, ४३)।
दूसि पुं [दूषिन्] नपुंसक का एक भेद ; "दोसुप्प सज्जए दूसी" (दृढ ४)।

°मच्चु पु [°मृत्यु] अपमृत्यु, अकाल मौत; (सुर ८, ६३)। °विवाग पु [°विपाक] दुःख रूप कर्म-फल, (विपा १, १)। °सिज्जा, °सेज्जा स्त्री [°शय्या] दुःख-जनक शय्या; (ठा ४, ३)। °यह वि [°यह] दुःख-जनक; (पउम ८२, ६१; सुर ८, १६२; प्राप्र १६६)।

दुह° देखो दुहा, (भग ८, ८)।

दुहअ वि [दे] चूर्णित, चूर चूर किया हुआ; (दे ६, ४६)।

दुहअ वि [दुर्हत] खराब रीति से मारा हुआ, (आचा)।

दुहअ वि [द्विहत] दो से मारा हुआ; (आचा)।

दुहअ देखो दुब्भग; (षड्)।

दुहओ अ [द्विधातस्] दोनों तरफ से, उभय प्रकार से; (आचा; ठा ६, ३; कम्म भग; पुप्फ ४७०; श्रा २७)।

दुहंड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़े वाला; "किच्चेव विहं (? णो) दुहंडं" (रंभा)।

दुहग देखो दुब्भग; (कम्म ३, ३)।

दुहट्ट वि [दुर्धृष्ट] दुर्निरोध, दुर्वार; (आचा १, ८)।

दुहण देखो दुघण, (पण्ह १, १—पत्र १८)।

दुहण पुं [द्रुहण] प्रहरण विशेष, "चम्मेट्ठदुघणमोद्दियमोग्गरवरफलिहजंतपत्थरदुहणतोणकुवेणी—" (पण्ह १, ३—पत्र ४४)

दुहण न [दोहन] दोह, दोहना, (पण्ह १, २)।

दुहव देखो दूहव; (पि ३४०, हे १, १११ टी)। स्त्री—°वी; (पि २३१)।

दुहा अ [द्विधा] दो प्रकार, दो तरफ, उभयथा; (जी ८; प्राप्र १४४)। °इअ वि [°कृत] जिसके दो खण्ड किये गये हों वह; (प्राप्र; कुमा)।

दुहाकर सक [द्विधा+कृ] दो खण्ड करना। कर्म—दुहाकज्जइ, दुहाकिज्जइ; (प्राप्र; हे १, ६७)। वकृ—°कज्जमाण, °किज्जमाण; (पि ६४७; ४३६)। संकृ—°काउं; (महा)।

दुहाव सक [द्रुह्] द्रोह करना, द्वेष करना, खण्डित करना। दुहवइ; (हे ४, ११४)।

दुहाव सक [दु-स्नप्] दुःखी करना, दुखाना; (प्राप्र)।

दुहावण वि [दु-स्नपन] दुःखी करने वाला; (भग)।

दुहाविअ वि [छिन्न] खण्डित; (पाअ; कुमा)।

दुहाविअ वि [दु स्नपित] दुःखी किया हुआ; (गउड)।

दुहि वि [दुःखिन्] दुःखी, व्यथित, पीड़ित; (उत्त २ टी)। स्त्री—°णी; (कुमा)।

दुहिअ वि [दुःखित] पीड़ित, दुःख-युक्त; (हे १, १६; कुमा; महा)।

दुहिअ वि [दुग्ध] जिसका दोहन किया गया है वह; (दे १, ७)। °दुज्झ वि [°दोह्य] एक बार दोहने पर फिर भी दोहने योग्य; फिर फिर दोहने योग्य; (दे १, ६, ४६)।

दुहिआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री; (सुर १६, ३, ३६)। °दइअ पुं [°दयित] जमाता; (उप ४५७)

दुहिण पुं [द्रुहिण] ब्रह्मा, चतुर्मुख; "अवि दुहिणस्सो आसणी मुद्द मलयविज्जयहावा" (मच्छु १६)।

दुहित्त पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का, (उप पृ ७४)।

दुहित्तिया स्त्री [दौहित्रिका] लड़की की लड़की; (उप पृ ७४)।

दुहिल वि [दुहिल] द्रोही, द्रोह करने वाला; (हे ६६६ टी)।

दू सक [दू] १ उपताप करना। २ कहना। कर्म—"दुज्जंतु उच्चइ" (पण्ह १, २)।

दूअ पुं [दूत] दूत, संदेश-हारक; (पाअ; सुर १३, ४३; ४६)।

दूआ देखो धूआ; (षड्)।

दूर° देखो दूर। °पलासय न [°पलाशक] एक जैन तीर्थ; (उप)।

दूइज्ज सक [द्रु] गमन करना, विहरना, जाना। दूइज्जइ; (आचा)। वकृ—दूइज्जंत, दूइज्जमाण, (ठा, आचा १, १; भग; आचा; महा)। हेकृ—दूइज्जित्तए; (कप)।

दूइत्त न [दूतीत्व] दूती का कार्य, दूतीपन, (सुर ११, ४६)।

दूई स्त्री [दूती] १ दूत के काम में नियुक्त की हुई स्त्री, समाचार-हारिणी, कुटनी; (हे ४, ३६७)। २ जैन साधु के लिये भिक्षा का एक दोष; (ठा ३, ४—पत्र १६८) °पिंड पुं [°पिण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई भिक्षा; (आचा २, १, ६)। देखो दूई।

दूण वि [दून] हैरान किया हुआ, "हा पियवयस दूणे (? मए तुमं" (स ७६१)।

-]

...दर्शिका ; (रंभा ७३ , ३०८) । °सुत पु [°सुत] ... (सुर ३ , ३) । ° ... ...

दुसिम वि [दुःषित] १ दूषण-युक्त, कलङ्क-युक्त, (महा; कप्पू)। २ पुं एक प्रकार का नपुंसक; (पव ४)।

दुसिमा स्त्री [दूषिका] आँख का मैल; (कुमा)।

दुसुमिण देखो दुस्सुमिण, (कुमा)।

दुसुह वि [दुःसह] दुःख-जनक; "माईणं दुसुमो चंदो" (वज्जा ६८)।

दुहड वि [दे] लज्जा से दूषित; (दे ५, ४८)।

दुहव वि [दे] दुर्भग, मन्द-भाग्य; (दे ५, ४३)।

दुहव देखो दुब्भग; (हे १, ११६, १६२; कुमा, सुपा १६०, कप्पू)।

दुहविय वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ, सताया हुआ; "हि कम्मं दुहविया" (कुम्मा १२)।

दुहिय वि [दुःखित] दुःख-युक्त; (हे १, १२; संक्षि १०)।

दे अ इस अर्थ का सूचक अव्यय, १ संभ्रम-करण; २ लज्जा का अभिव्यक्त, (हे २, १६२)।

देअ देखो देव, (सुपा १६१, चंद)।

देअर देखो दिअर, (कुमा, काप्र १२४, महा)।

देअरजाया स्त्री [देवरजाया] देवरानी, पति के छोटे भाई की स्त्री; (उप ६४ ४१)।

देई देखो देवी, (कप्प—उप १८)।

देउल न [देवकुल] देव-मन्दिर; (हे १, २७१; कुमा)। °आरु पुं [°आगार] मन्दिर का स्वामी; (कप्पू)। °वाडय पुं [°पाटक] मेवाड़ का एक गाँव; "देउलवाडयपमुहं पुरवरमिव च अमरावई" (कुमा ११६)।

देउलिय वि [देवकुलिक] देव-स्थान का परिचालक; (श्रा १४ भा)।

देउलिया स्त्री [देवकुलिका] छोटा देव-स्थान; (उप पृ १२६, ३१० टी)।

देक्ख देखो दक्ख।

देक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। देक्खइ; (हे ४, १८१)। कर्म—देक्खंत; (सण १०१)। भवि—देक्खिस्सं, (सण ११६)।

देक्खविय वि [दर्शित] दिखाया हुआ, बतलाया हुआ; (सुर १, १४९)।

देक्ख (अप) सक देखना। देक्खइ; (भवि)।

देक्खु देखो दिट्ठ=दृष्ट; (भवि ४०)।

देक्खेव्वअ देखो दक्खव्व, (कप्र १, १—अभि ३१)।

देपाल पुं [देवपाल] एक मंत्री का नाम; (ती २)।

देप्प देखो दिप्प=दीप्। वकृ—देप्पमाण, (सुर १४९)।

देय } देखो दा=दा।
देयमाण }

देर देखो दार=द्वार; (हे १, ७६; २, १७१; ४, ११०)।

देव उम [दिव्] १ जीतने की इच्छा करना। २ क्रीड़ा करना। ३ व्यवहार करना। ४ चमकना। ५ स्तुति करना। ६ अभ्यर्थना शब्द करना। ७ हिंसा करना। देव, (संक्षि ३३)।

देव पुंन [देव] १ अमर, सुर, देवता, "देवाहि, देवा" (हे १, १४; जी १६; प्रासू ८६)। २ मेघ; ३ आदर, राजा, नरपति; "तहेव मेडं व नई व माणवं न देव त्ति गिरं वएज्जा" (दस ७, ५२; भग ५६)। ४ पुं सूर्य, मेघर, देवाधिदेव; (भग १२, ६; दस ६, सुपा ११)। ६ साधु, मुनि, ऋषि; (भग १२, ६)। ७ हंस विशेष। ८ समुद्र विशेष; (पणण १६)। ९ स्वामी, वर, (आचा १)। १० पूज्य, पूजनीय; (पंचा १)। °उत्त वि [°उप्त] देव से बोया हुआ; २ देव-कृत; "देवउत्तं अयं लोए" (सूअ १, १, २)। °उत्त वि [°पुत्र] १ देव से रक्षित, (सूअ १, १, ३)। २ देवका देवकी का भावी जिनदेव; (ठा १६४)। °उत्त पुं [°पुत्र] देव-पुत्र; (सूअ १, १, ३)। °उल न [°कुल] देव-गृह, देव-मन्दिर; (हे १, २७१; सुपा २०१)। °उलिया स्त्री [°कुटिका] देहरी, छोटा देव-मन्दिर, (कुप्र १११)। °कन्ना स्त्री [°कन्या] देव-पुत्री, (आचा १,८)। °कहकहय पुं [°कहकहक] देवताओं का कोलाहल, (औप)। °किब्बिस न [°किल्बिष] चाण्डाल-स्थानीय देव की, (ठा ४, ४)। °किब्बिसिय पुं [°किल्बिषिक] अधम देव-जाति; (भग ६, ३३)। °किब्बिसिया स्त्री [°किल्बिषिकी] वही देवकिल्बिषिका, (ठा १)। °कुरा स्त्री [°कुरु] देव विशेष, वही विशेष, (ठा)। °कुल पुं [°कुल] वही अर्थ; (पव १, ६ ३६)। °कुल देखो °उल; (सि ३५८, कुमा)। °कुलिय पुं [°कुलिक] पुजारी, (आचा) देखो °उलिया; (सुर १४४)। °गइ स्त्री [°गति] देव-गति; (ठा ६, ३)। °गिया स्त्री [°गिका] देवर, भाभा; (कप्पा १, ११)। °गिर [°गृह]

[°अति] अदक, डकाइत, जैन गृहस्थ ; ' कम्म २ टी; कप्प)। °पभु वि [°प्रभु] देश की स्थिति को जानने वाला ; (उप ७६८ टी)। °भासा स्त्री [°भाषा] देश की बोली ; (हे १, ४)। °भूसण पुं [°भूषण] एक केवलज्ञानी मुनि; (पउम ३६, १२१)। °माल पुं [°काल] अवसर, समय, योग्य समय; (पउम ११, ८३)। °राय पुं [राज] देश का राजा; (उप ३६२)। °वगासिअ देखो °वगासिय ; (सुख ६६८)। °विरइ स्त्री [°विरति] अणुव्रत धर्म, जैन गृहस्थ का व्रत, मद्यत्याग, हिंसा आदि का आंशिक त्याग ; (पंच १०)। °विरय वि [विरत] आंशिक त्याग करने वाला ; २ न. पाँचवाँ गुणस्थानक ; (पंच २२)। °विरायहर वि [°विरायक] राज आदि में आंशिक दूषण बताने वाला; (भग ८, ६)। °विरुद्ध वि [°विरुद्ध] देश के विरुद्ध कार्य करने वाला; (ठाणा १, ११—पत्र ७१)। °वगास न [°वकाश] अणुव्रत का एक व्रत ; (कुप ६६२)। °वगासिय न [°वकाशिक] अणुव्रत का एक व्रत ; (भग ; कुप ६६२)। °हिव पुं [°धिप] राजा ; (पउम ६८, ६३)। °हिवइ पुं [°धिपति] राजा ; (हे ४)।

देसंतरिअ वि [देशान्तरिक] भिन्न देश का, विदेशी ; (उप १०३१ टी; कुप ४१३)।

देसण देखो देसय ; (हे २६)।

देसण न [देशन] कथन, उपदेश, प्रवचन ; (हे १६)।

देसण न. वि. उपदेशक, प्रवचन । सी—°णी ; (उव)।

देसणा स्त्री [देशना] उपदेश, प्रवचन; (राज)।

देसय वि [देशक] १ उपदेशक, प्रवचन । २ दिखलाने वाला, बतलाने वाला ; (कुप १८६)।

देसि वि [द्वेषिन्] द्वेष करने वाला ; (स्वप ३६)।

देसि) वि [देशिन्] १ भंगी, मातंग, मांग वगैरा । देसिअ) २ दिखलाने वाला; ३ उपदेशक; (विसे २२४७)। ४ प्रविष्ट, प्रवृत्त में गया हुआ; (सुर १०, १६२)। °महा स्त्री [°सभा] धर्मसभा; (उप पृ ११६)।

देसिअ देखो देसिय. "भवइक्कते देसिअं सव्वं" (पि ; भा ६)।

देसिअल्ल देखो देसिअ = देशज ; (षड् ३)।

देसिआ स्त्री [देशी] मागध विशेष, मध्यदेश प्रचलित प्राकृत भाषा का एक भेद ; (हे १, ४)। °भासा स्त्री [°भाषा] वही अर्थ; (कप्पा १, १; औप)।

देसिअ न [देशज] कुछ कम, मंथ की कमी बढ़ी ; (जम्ब १, १०३; हे २८)।

देसिअ वि [दृश्य] १ देखने योग्य ; २ देखने को शक्य; (ठा १६८)।

देह देखो देहअ। देहई, देहए ; (उत्त १६, ६; वि ६६)।

देह—देहमाण ; (भग ६, ३३)।

देह पुं [देह] १ शरीर, काय ; (जी २८; कुप १६३; प्रासू ६६)। २ त्रिशाकविशेष; (इक; पत्र १)। °रय न [°रत] मैथुन ; (बृह्व १०८)।

देहंधलिया स्त्री [देहयष्टिका] निद्रा-टेवि, मीत्त ; (आउ; ठाणा १, १६—पत्र १६६)।

देहणी स्त्री [दे] पंक, कर्दम, कादा ; (हे १, ४८)।

देहरय (प्रा) न [देवगृहक] देव-मन्दिर; (वज्जा १०८)।

देहली स्त्री [देहली] चौखट, द्वार के नीचे की लकड़ी (ग्रा १२६ ; हे १, ६६; कुप १८३)।

देहि पुं [देहिन्] आत्मा, जीव ; (सम १६६)।

देहुर (प्रा) न [देवकुल] देव-स्थान, मन्दिर ; (सुख २, २१२)।

दो म [द्विधा] दो प्रकार से, दो तरह ; (कुप २१२)।

दो वि वि [द्वि] दो, उभय, युग्म ; (हे १, ८४; प्रासू ६६)।

दो पुं [दोस्] हाथ, बाहु ; (सिक ११३ ; रंभा; प्रासू ६६)।

दोअर स्त्री [दिअर] छोटा देवर ; (सिरि)।

दोआल पुं [दे] दान, देवर ; (हे ६, ४८)।

दोर देखो दोरिआ ; (कुप ३)।

दोरुर [दे] देखो दोहुर ; (षड्)।

दोरिकिरिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो क्रिया करने वाला ; (ठा ७)।

दोल्लर को करने वाला ; (भवि)।

दोक्खर पुं [द्वि-अक्षर] दल, लकुच ; (कुप ४

के छठवें भावी जिन-देव ; (सम १५३)। °हर न [°गृह] देव-मन्दिर ; (उप ४११)। °इदेव पुं [°तिदेव] अर्हन देव, जिन भगवान् ; (भग १२, ६)। °णंद पुं [°नन्द] ऐरवत क्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न होने वाले चौवीसवें जिनदेव ; (सम १५४)। °णंदा स्त्री [°नन्दा] १ भगवान् महावीर की प्रथम माता ; (आचा २, १५, १)। २ पक्ष की पन्द्रहवीं रात्रि का नाम ; (कप्प)। °णुप्पिय पुं [°नुप्रिय] भद्र, महाशय, महानुभाव, सरल-प्रकृति, (ओप, विपा १,१; महा)। °यज्जि पुं [°चार्य] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य, (गु ७)। °रण्ण देखो °रण्ण ; (भग ६, ६)। २ देवों का क्रीड़ा-स्थान , (जी ६)। °लय पुंन [°लय] स्वर्ग, (उप २६४ टी)। °हिदेव पुं [°धिदेव] परमेश्वर, परमात्मा, जिनदेव ; (सम ४२, सं ६)। °हिवइ पु [°धिपति] इन्द्र, देव-नायक ;(सूअ १, ६)।

देव देखो दइव ; (उप ३१६ टी ; महा; हे १, १५३ टि)। °न्नु वि [°ज्ञ] ज्योतिष-शास्त्र का जानकार, (सुपा २०१)। °पर वि [°पर] भाग्य पर ही श्रद्धा रखने वाला , (षड्)।

देवई स्त्री [देवकी] श्रीकृष्ण की माता, आगामी उत्सर्पिणी काल में होने वाले एक तीर्थंकर-देव का पूर्व भव ; (पउम २०, १८६ ; सम १५२ ; १५४)। देखो देवकी।

देवउप्फ न [दे] पक्व पुष्प, पका हुआ फल , (दे ६, ४६)।

देवं देखो दा=दा।

देवंग न [दे.दिव्याङ्ग] देवताओं का वस्त्र ; (उप ७३८)।

देवंधयार पु [देवान्धकार] तिमिर-निकर ; (ठा ४, २)।

देवकिब्बिस पुं [देवकिल्बिष] एक अधम देव जाति, (ठा ४, ४—पत्र २७४)।

देवकिब्बिसिया स्त्री [देवकिल्बिषिकी] भावना-विशेष, जो अधम देव-योनि में उत्पत्ति का कारण है ; (ठा ४, ४)।

देवकी देखो देवई। °णंदण पुं [°नन्दन] श्रीकृष्ण, (विसे १८१)।

देवगय न [देवगत] देव, देवता ; (सुपा १६७)।

देवय देखो देव=देव ; (महा, कुमा १, १८)।

देवया स्त्री [देवता] १ देव, अमर ; (अभि ११७ ; अजि)। २ परमेश्वर, परमात्मा ; (पंचा १)।

देवर देखो दिअर; (हे १, १८६ , कुमा ४८१)।

देवराणी देखो देअराणी, (दे १, ४१)।

देवसिअ वि [दैवसिक] दिवस-संबन्धी, (ओघ १, ६३६ ; सुपा ४१६)।

देवसिआ स्त्री [दैवसिका] एक पतिव्रता स्त्री, जिस नाम देवसेना था ; (पुप्फ ६७)।

देविंद पु [देवेन्द्र] १ देवों का स्वामी, इन्द्र ; (१६२ ; णाया १, ८ ; आचा १०७)। २ एक जैनाचार्य और ग्रन्थकार; (भाव २१)। °सूरि पु [° एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार ; (कम्म ३, १ देविड्ढि स्त्री [देवर्द्धि] १ देव का वैभव, २ पुं एक जैन आचार्य और ग्रन्थकार ; (कप्प)।

देविय वि [दैविक] देव-संबन्धी ; (सुर ४, ११

देवी स्त्री [देवी] १ देव-स्त्री ; (पंचा २)। २ राज-पत्नी ; (विपा १, १ ; ६)। ३ दुर्गा, (कप्प)। ४ सातवें चक्रवर्ती और अठारहवें जिन-दे माता ; (सम १५१ ; १५२)। ५ दसवीं वक्ष अग्र-महिषी ; (सम १५२)। ६ एक विद्याधर-क (पउम ६, ४)।

देवीकय वि [देवीकृत] देव बनाया हुआ, "इहेव णो समत्तो जीए देवीकओ लोओ" (गा ६६२)।

देवुक्कलिआ स्त्री [देवोत्कलिका] देवों की ऊ भीड़ ; (ठा ४, ३)।

देवेसर पुं [देवेश्वर] इन्द्र, देवों का राजा ; (कुम

देवोद पु [देवोद] समुद्र-विशेष , (जीव ३ ; ४७)

देवोववाय पु [देवोपपात] भरतक्षेत्र में आगामी णी काल में होने वाले तेईसवें जिन-देव , (सम १

देव्व देखो दिव्व=दिव्य , (उप ६८६ टी)।

देस्स देखो दस्स , (गा १३२ ; महा ; सुर ११, ४ ११७) , "एसो य देव्वो आम अणाराहओ ति (स ११८)। °ज्ज, °ण्ण, °ण्णु वि [°ज्ञ] ज्योतिष-शास्त्र को जानने वाला , (षड् ; कप्पू)।

देस सक [देशय्] १ कहना, उपदेश देना। २ बक—देसयंत , (सुपा ४८१ , सुर १३, १ संकृ—देसित्ता ; (हे १, ८८)।

देस पुं [देश] १ अंश, भाग ; (ठा १, २ ; कप्प देश, जनपद ; (ठा ५, ३ , कप्प , प्रभू ४१) अवसर ; (विसे २०६३)। ४ स्थान, जगह , (ठा ३, °कहा स्त्री [°कथा] जनपद-कथा , (ठा ४, °काल देखो °याल , (विसे २०६२)।

दोसन्तिय] १ दिन सुबह ; २ संबंधित.
दोसन्तिय] वि [दैवसिक] दिन संबंधी ; (कप्प ३, ६)।
दोसिणा [दे] रात्रि के समय ; (उप ९८ टी)। °मा [मात्र] रात्रि के एक प्रहर में ; (उप ९८ टी)।
दोसिणी स्त्री [दे. दोसिणी] उपरिभाग, ऊर्ध्वभाग ; (दस ७)।
दोसिणी स्त्री [दे. दोसिणी] "कौमुदी-चन्द्रिका" (कुप्र ४३८)।
दोसियपरम न [दोसिकपरम] रात्रि प्रधान ; (कप्प)।
दोसियसयण न [दोसिकशयन] रात्रि-शयन ; (पिण्ड ११ टी)।
दोसिल्ल वि [दोषवत्] दोष-युक्त, दोषी ; (पिण्ड ११०)।
दोसिल्ल वि [दे] दुष्ट-युक्त, दोषी ; (पिण्ड ११०)।
दोसीण न [दे] सन्ध्याकाल संबंध ; (कप्प २, ६ ; पि १४४)।
दोसोल्लिय वि. ब. [द्विगोदग्रात] उत्पन्न, (कप्प)।
दोह पुं [दोह] दोहन, (ठा २, ३४)।
दोह वि [दोग्ध] दोहने योग्य ; (भग ८८)।
दोह पुं [दोह] दुहना, दूहना ; (कप्प ; सूत्र)।
दोहलय न [दौर्मनस्य] दुष्ट मनस्व, दुष्टता, कलुषितता ; (कप्प १, ४, सुर ३, १३४ ; गा २११)।
दोहलिय वि [दौर्मनसिक] दुष्ट मनस्व वाला, कलुषित, मनस्वी ; (आचा १६)।
दोहल न [दोहन] दोहना, दूध निकालना ; (पण्ह १, १)।
दोहल न [दोहन] दोहद-स्थान ; (सिरि २)।
दोहलपाउग्ग न [पाउग्य] दोहद-स्थान में ; (सिरि १०८ ; दे ६, ६६)। २ दोहदों, दोहदों संबंधी ; (दे ६, ६६)।
दोहलिणी स्त्री [दे] १ दोहने वाली स्त्री ; (दे ६, ६६)।
दोहलिय वि [दोहक] दोहने वाला, दुहने वाला ; (सा ४६३)।
दोहलिय वि [दोहक] दोहद संबंधी ; (उप ३६ टी ; सिरि)।
दोहल पुं [दोहद] मनोरथों का अनेरेक ; (हेम, २१३३ ; कप्प)।
दोहा स्त्री [क्रिया] दो प्रकार ; (हे ३, ८७)।
दोहाइअ वि [क्रियावत्] क्रियाएँ दो प्रकार क्रिया से युक्त ; (हे ३, ८७ ; कुमा)।
दोहासद्द न [दे] अर्थ-शब्द, अन्त ; (दे ६, ६०)।
दोहि वि [दोहिन्] दूहने वाला, दोहने वाला ; (गा ३३६)।
दोहित्त पुं [दौहित्र] लड़की के लड़का, (दे ६, १०८ ; सुर ३६४)।

दोसंड देखो दुसंड ; (भवि)।
दोसंडिअ वि [द्विसण्डित] जिसके दो टुकड़े किये गये हों वह , (भवि)।
दोसंडि वि [दुःखण्डिन्] दूषण करने वाला ; (वि ७४)।
दोसत्त न [दौःस्थ्य] १ दुर्गति, दुर्दशा ; (पउम ४)। २ दरिद्रता, निर्धनता , (सुपा २३०)।
दोसंधि देखो दोसंधि , (वि २१५)।
दोसंधुअ वि [दौःसन्धुक] उक्त जातीय देव विशेष ; (सुपा ३३)।
दोसग्ग न [दे] सुख, सुकृत ; (दे ६, ४६ ; षड्)।
दोसग्ग देखो दुग्गइ , (सुर ८, १११)। °कर वि [°कर] दुर्गति करने , (पउम ७१, १०)।
दोसग्गय देखो दोग्गय , (सुर १६)।
दोसग्ग } दोसग्गु } दोसग्गू } वि [दे] हर्षी, हर्षी ; (वि ४३६ ; षड् ; पाअ ; भवि ; सुपा ६, ग १२१)।
दोसंकुर पुं [द्विशङ्कुर] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम ; (पउम ५, ४२)।
दोसंख वि [द्विशत] दो सौ ; (पउम २, ८ ; सिरि १,२)।
दोसंझा न [दौःसन्ध्य] दुष्ट-कर्म , (आचा १, ८ ; सूअ ८०)।
दोसंत्त अ [द्विस्] दो बार, दो बात, "एवं च दिणाभिप्पा दोसंत्तं चलणवंदणयं" (सुर २, २६)।
दोसंधाडु वि [द्विसन्धाटु] १ दुष्ट अटन। २ पराया दूषण करने , (सूअ १)। ३ निन्दक, चुगली , (ओघ २६० भा)।
दोसंधि पुं [द्विसन्धि] १ दुर्जन, २ नीच; (सूअ १,२०)।
दोसंधि वि [दोषज्ञ] दोष जानने , (आचा २, ८, २)।
दोसंधु पुं [द्रौण्य] १ भारद्वाज के एक सुप्रसिद्ध आचार्य, जो पाण्डव और कौरव के गुरु थे , (आचा १, ११ ; कप्पू ; महा)। २ अट्ठ प्रकार का सुगन्धित द्रव्य ; (ओघ ९)।
दोसंधुअ न [द्रौण्य] अगर, अट्ठ और सुगन्ध के अर्थी बनाने का काम , (पाअ १, १, कप्प, कप्पू)। °सिंह पुं [°सिंह] द्रोण, भैक्षवाद करने के बड़ी दक्षिणा का अर्थ वह कर्म ; (पाअ १०८)। °सुआ स्त्री [°सुता] द्रोणाचार्य की पुत्री अश्वत्थामा, जिनदत्त , (पउम ८१, ८१)।
दोसंधुअ पुं [दे] १ अगुरु, अगर का सुगन्धित, २ सुगन्धित द्रव्य, इत्र आदि बनाने , (दे ६, ४१)।
दोसंधुआ स्त्री [दे] सन्ध्या, सायंकाल (दे ६, ४१)।
दोसंधी स्त्री [द्रोणी] १ नीचा, छोटा जहाज ; (आचा १ ; दे २, ४७; धम्म १२ टी)। २ पानी का कुंडा, (भगु ; कुप्र ४४१)।
दोसंडी स्त्री (दुस्तटी) दुष्ट नदी ; "एगाए महाणईए दोसंडी नियडा" (उत्त ६३० टी ; सुपा ४११)।
दोसंथ न [दौःस्थ्य] दुःस्थता, दुर्दशा, दुर्गति, (४, ७)।
दोसंदण वि [दुर्दान्त] दुःख से देने योग्य, (भवि)।
दोसंदिअ पुं [दे] चर्म-कूप, चमड़े का बना हुआ बर्तन ; (दे ६, ४६)।
दोसंधअ } न [दोषक] छन्द विशेष ; (पिंग)।
दोसंधक }
दोसंधार पुं [द्विधाकार] द्विधाकरण, दो भाग (ठा ६, ३—पत्र ३४६)।
दोसंधुर पुं [दे] सुन्दर, स्वर्ग-नायक, (षड्)।
दोसंथल्लन [दौर्बल्य] दुर्बलता ; (वि २८१ ; ८६)।
दोसंभाय वि [द्विभाग] दो भाग वाला, दो भाग का (उत्त १०० टी)।
दोसंभागिय वि [द्वैभागिक] विभक्त, दो हिस्से का , (६, ३—पत्र ३११)।
दोसंमासिअ वि [द्वैमासिक] दो मास का , (ओघ, ११८)। स्त्री—°आ, (पंच ३१)।
दोसंमिअ (अप) देखो दुसंमिअ=दुःसम्मित , (भवि)।
दोसंमिली स्त्री [दोसंमिली] स्त्री-विशेष , (राज)।
दोसंमुह वि [द्विमुख] १ दो मुँह वाला, २ पु. दुर्जन (सण)। ३ दुर्बल ; (पउम २५३)।
दोसंय पुं [दे] १ बाण, बाण, सूत्र (पउम ८,८० सूत्र १, १०१)। २ छोटी नदी, (आचा २,१, ३ कटि-सूत्र ; (४ ६, १८)।
दोसंरी स्त्री [दे] छोटी नदी ; (आ ३१)।
दोसंल अक [दोस्यते] १ दिखना , २ दूषण देना (४, ४८)। दोसंणी, (कप्पू)।
दोसंलअ न [दोस्यक] दूषण, अवगुण, (ओघ ६ भा)।
दोसंला स्त्री [दोस्या] दूषण, दोषारोपण, (ओघ ६ भा)।
दोसंल } दूषण)।
दोसंस्स }

र्थक अर्थान्तर का एक पुद्ग; (धर्म १, १८) ।
र्थ] वि. (वि १, १) ।
र्थ] वि. [°अर्थ] (वि १, १) ।
र्थी ; (आक) । °आलय पुं [°आलय] धर्म-
का एक पुद्ग. (धर्म १, १८) । °कित्ति [°कीर्ति] धर्म-
[°कथा] कुमारपाल द्वीप की राजधानी, (विचि, है १, १५६,
त, °काम वि [°काम] धर्म-कामना, (वि १, १५६, धर्म १०,१११)।
ह)। °किच्च पुं [°कृत्य] एक देव मुनि, (धर्म १०१) । २ एक विमान
य पुं [°केतु] १ एक तीर्थंकर, (सम १०१) । २ एक विमान
कर, जो स्वर्ग अथवा मोक्ष की सीढ़ी का काम दे, (पउम ८,
१७) । ३ कुबेर; (सद्द) । ४ वि. धन देने वाला; °धम्मो
१७४) । ३ कुबेर; (सद्द) । ४ वि. धन देने वाला; °धम्मो
दरिद्दधम्मो " (पउम १८८) । °दिन्नाचरिय पुं [°दिन्नाचार्य]
धर्म-सम्बन्ध का एक पुद्ग. (धर्म १, १८—धर्म ६६ ;
°धर पुं [°धर] १ कुबेर. (धर्म १, ४—धर्म ६६ ;
धर पुं १८०; सुर ३८) । २ एक तत्त्व-प्रणेता, (विचि ३,
६) । °धिई स्त्री [°धृति] एक सम्बन्धबुद्धि, (ठाम २, १) । °धेणु
धेनु, °धेल देखो 'धेनु, (है १, १५८, धर्म) । °धेय पुं
[°धेय] १ एक हिमवंत (ठाम १) । २ एक राजा, (विचि २,२)।
°पाल देखो 'पाल' । ३ राजा मेरुत के समकालिक एक जैन
आचार्य; (पव ६०) । °मइया स्त्री [°मयिका] एक
आचार्य; (पव ६०) । °मइया स्त्री [°मयिका] एक
देवी-कथित; (आक) । °मण्ण पुं [°मान्य] एक वर्तमान
(स्था २) । °मित्ती स्त्री [°मित्री] एक आर्या; (ठाम ४) ।
(भग ४) । °सेण पुं [°सेन] एक राजा; (ठाम ४) ।
°हिल वि [°धर] धनी, (धर्म) । °हिल वि [°धवल]
१ धन को धारण करने वाला, धनी । २ पुं एक श्रेष्ठी; (ठाम
४) । ३ एक राजा; (विचि १, २) ।
धणंजय पुं [धनञ्जय] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव, (वेणी
११०) । २ वह्नि, अग्नि; ३ सर्प-विशेष; ४ वनु-विशेष;
हिरण्यके पक्ष; ५ वृक्ष-विशेष; (है १, १७७; २,१८६;
२) । ६ उक्त नामवाला व्यक्ति का गोत्र; (कुक) । ७
राव का सर्वत्र दिन; (जो ४) । ८ प्रेतोद्धि-विशेष; (आव
४) । ९ एक राजा; (आवम) ।
धणि पुं [धनिन्] राजा, भूपाल; (विचि १५०) ।
धणिआ स्त्री [धनिका] १ दूती, सन्देश; (कौमु) । २
स्त्री द्वारा प्रेषित करने की वस्तु; " मणिमंडिअकंकणाइ "
(विचि १६६) ।
धणिट्ठ वि [धनिष्ठ] धनिक, धनवान्; (है २, १६८) ।
धणिम वि [धनिक] १ वैश्य, धनी, धनी; (दे १, १४८)।
२ पुं मल्लिक, हलवा; (आ १४) ।

धणिस्सर = [दे] धनवान्, धनी, श्रीमान्; (दे १, ४८; कौमु,
भग, हम्मीर-मद ; कुप्र १, १७४ , मन ७३; पव ८२ ;
सुर ३, ७४ १, ७८ २ ; स १६७) ।
धणिस्सर वि [धनवत्] धनवान् के समान, श्रीमन्त, समृद्धि-
वान् ; " कुल धणिस्सरा पुरओ निवसंति रायमि अहियया "
(पउम ४६, २६ ; प्रभा ४२) ।
धणिआ स्त्री [दे] १ सिर, माथा, चन्दी ; (दे १, ४८;
ना ४८ ; मही) । २ धन्य, सुनिश्चय की; (षड्) ।
धणिट्ठा स्त्री [धनिष्ठा] नक्षत्र-विशेष; (सम १० ; १३;
सुर १६ १४८ ; इक) ।
धणी स्त्री [दे] १ माथा, चन्दी ; २ पंक्ति; ३ जो बैंधा
हुआ होने पर भी अन्य सहित हो वह ; (दे १, ६२),
" मत्तेह मंकेवरि पवरि तं कंकरी वद्धा" (कुप्र १८४) ।
धणु पुं [धनुस्] १ धनुष, धनु, शरासन ; (षड् ; हे १,
२२) । २ धनु हाथ का परिमाण; (अनु ; जी २६) ।
३ पुं एक कुलकर देवों की एक जाति ; (सम २८) ।
°कुडिल न [कुटिलधनुस्] वक्र धनुष ; (राय) । °गाह
पुं [ग्रह] धनुर्विद्या में
कुशलता ; (उप ८) । °धर वि [°धर] धनुर्विद्या में
निपुण, धनुर्धर ; (राय ; पउम ६, ८७) । °पिट्ठ न
[°पृष्ठ] १ धनुष का पृष्ठभाग; २ धनुष के पीठ के आकार
का क्षेत्र; (सम ७३) । °पुहुत्तिया स्त्री [°पृथक्त्विका
का] क्षेत्र, गल्लुर ; (पण्ण १) । °वेय, °वेय पुं
[°वेद] धनुर्विद्या-बोधक शास्त्र, धनुर्वेद ; (उप ६८६
टी ; उप २७० ; जं २) । °हर देखो 'धर' ; (भवि) ।
धणुक्क) देखो ; (सण; भउ; हे १, २२ ; कुमा)
धणुह)
धणुही स्त्री [धनुस्] कार्मुक; "बिलासो व धणुहीसो सुरम्म
कंदिपयट्ठिआसो" (कुप्र१४४ ; स ३८१) ।
धणेसर पुं [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैन मुनि और ग्रन्थ-
(सुर १, २४८ ; १६, २६०) ।
धण्ण पुं [धान्य] १ एक जैन मुनि; २ 'अनुकोमाणि
सूत्र का एक अध्ययन ; (अनु १) । ३ धन-
(ठाम २, २) । ४ वि. कृतार्थ; ५ धन-धान्य के
६ सुनिश्चय, प्रशंसनीय, ७ भाग्यशाली, भाग्यवान्;
१; कप्प ; कौमु) ।
धण्ण देखो धन्न-धान्य ; (आ १८; उ ६, ३; क

दोहित्ती स्त्री [दौहित्री] लड़की की लड़की ; (महा)।
दोहूअ पु [दे] राव, पराक, मुरदा ; (दे ५, ४६)।
*दोस देखो दोस = (दे) , "वीयरागदोसो" (कुप्र २०)।
द्रुयरुक (मग) न [द्रु. भय] भय, डर, भीति, (हे ४, ४२१)।
द्रुह पु [द्रुह्] बड़ा जलाशय , (हे २, ८० ; कुमा)।
द्रेहि (मग) स्त्री [दृष्टि] नजर , (हे ४, ४२२)।
द्रोह देखो दोह=द्रोह , (पि २६८)।

इस तिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि दसमाइसद्दसंकलणो पंचवीसइमो तरंगो समत्तो।

ध

ध पुं [ध] दन्त स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप्त ; प्राप्त)।
धअ देखो धय ; (गा २०)।
धंख पु [ध्याङ्क्ष] काक, कौआ ; (उप ८२१ ; पंचा १२)।
धंग पुं [दे] भ्रमर, भमरा, (दे ६, ६७)।
धंत न [ध्वान्त] अन्धकार , (सुर १, १२ ; कुप्र ११)।
धंत न [दे] अति, अतिशय, अत्यन्त , "धंतंपि सुमओमिद्दा" (पव २६ ; सिरि १०१६ , सुर १)।
धंत वि [ध्मात] १ अग्नि में तपाया हुआ ; (आचा १, १ ; औप ; पाअ १ ; १० ; सिरि १०२६ , अभि १४)। २ कृश-दुबला, शक्तिहीन , (सिरि)।
धंधा स्त्री [दे] खटका, शब्द , (दे ६, ६७)।
धंधुक्कय न [धन्धुक्कृत] दुकान का एक प्रकार, जो आज कल 'धन्धूका' नाम से प्रसिद्ध है, (सुपा ६१८; कुप्र २०)।
धंधेल्लिय (मग) वि [धमित] धुमाया हुआ ; (मृच्छ)।
धंस अक [ध्वंस्] नष्ट होना। धंसइ, धंसए ; (भवि)।
धंस सक [ध्वंसय्] १ नाश करना। २ दूर करना। धंसइ ; (कुप्र १, २, १)। धंसेइ ; (सम्म ३०)।
धंसाव सक [मुच्] त्याग करना, छोड़ना। धंसावइ ; (हे ४, ६१)।
धंसाडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त ; (कुमा)।
धंसाडिअ वि [दे] व्याकुल, नष्ट , (दे ६, १६)।
धगधग अक [धगधगाय्] १ धग् धग् आवाज करना। जलना, अतिशय जलना। वकृ—धगधगंत ; (कप्प ; पउम ११, ६१ ; भवि)।
धगधगाइअ वि [धगधगायित] धग् धग् आवाज करता (कप्प)।
धगधगग देखो धगधग। वकृ—धगधगगंत (पि ६६८)।
धाणीकय वि [दे] जलाया हुआ अग्नि में प्रक्षिप्त ; "क धाणीकयो व्व परणेण" (आचा १४)।
धज्ज देखो धय=ध्वज, (कुमा)।
धट्ठ देखो धिट्ठ , (हे १, १२० ; पउम ४६, २१ ; १, ८२)
धट्ठज्जुण } पु [धृष्टद्युम्न] राजा द्रुपद का एक
धट्ठज्जुण्ण } पुत्र (हे २, ६४ ; आचा १, १६ ; कुमा ; पि २७८)।
धड न [दे] धड़, गले से नीचे का शरीर, (सुपा १११)।
धडहडिय न [दे] गर्जना, गर्जारव , (सुपा १११)।
धण न [धन] १ गिनती, गिनना, व्यापार-जनित लाभ (ठा ६; सूत्र २, १ ; प्रासू ६१ ; ७६ ; कुमा)। २ गणिम, धरिम, मेय, या परिच्छेद्य द्रव्य—गिनती से होने वाला आदि से क्रय-विक्रय-योग्य पदार्थ; (कप्प)। ३ धन-पति; "सुय सो सिट्ठी धणोत्ति धणसिरीमं" (सुपा ३१०) ४ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी; (उप ६६२)। ५ धन्यकुमार का एक पुत्र; (आचा १, १८)। °इत्त, °दत्त वि [धन] धनी, धन वाला; (कुप्र २४६, सि ६६६, सण्णि १०)। °गिरि [°गिरि] एक जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के शिष्य थे, (कप्प, उप १४२ टी)। °गुत्त पु [°गुप्त] एक मुनि ; (आवम)। °गोव पु [°गोप] धन्य-कुमार का एक पुत्र ; (आचा १, १८)। °ड्ढ पु [°राज] एक मुनि; (कप्प)। °नंदि पुत्रो [°नन्दि] द्रुपद राजा की " देवदत्ता दुपुयं भत्तारं ते भावइ " (वेणी १)। °निहि पु[°निधि] खजाना, भाण्डार, (उप ६, ३)। °पति [°पति] धन का अधिष्ठाता, (रयण १८)। °पाल [°पाल] १ एक सार्थवाह; २ तुलोय बाहुबलि के पुत्र का नाम ; (सम १२३ , सुपा ; आवम)। °देव पु[°देव] एक सार्थवाह, मल्लिनाथ-भगवान का पिता, (कप्प

१)। २ अन्य सम्बन्धक का एक सुर; (कुमा १, १८)। 'पेय देखो 'पेअ, (विपा १, १)। 'पेयड पुं [प्रेयर] एक श्रेष्ठी; (महा)। 'पेाल पुं [पोल] धान्य सार-वह का एक पुत्र, (कप्प १, १८)। 'केाल 'केाल [कोल] की [प्रभा] कुवलयप्रभ द्वीप की राजधानी; (जीव)। 'मेत्त, 'मेय वि [मात्र] प्रमाण, परिमाण; (सिरि ३, १६६; पिंड ६६)। 'मित्त पुं [मित्र] एक जैन मुनि, (पउम २०, १७१)। 'ये पुं [दे] १ एक सार्थवाह, (सुर ४, ८०)। २ एक विख्यात राजा, जो राजा सगर की मौसी का लड़का था; (पउम ५, १२४)। २ कुबेर; (सट्ठ)। ४ वि. धन देने वाला; "धणयमो धणएहिं" (स्वप्न ३८)। 'धणिय पुं [धनिक] धनवान्; "धणियस्स पुत्तो" (स्वप्न ३८)। 'धणिया स्त्री [धन्या] एक सार्थवाह-पत्नी; (कुमा १, ८)। 'धर पुं [धनद] १ कुबेर. (कुमा १, ४—पत्र ६६ ; दे ६ १८०; सुर ३८)। २ एक राज-कुमार; (विपा २, १)। 'धरी स्त्री [धनी] एक सार्थवाह-पत्नी; (सुर १)। 'धवह पुं [धवह] १ एक श्रेष्ठी (सुर १)। २ राजा मोल के समकालिक एक जैन श्रावक; (धर्म ३०)। 'धवाया स्त्री [धात्री] एक धाय; (विपा २, १)। 'धवी स्त्री [धात्री] एक धाय; (सुर ३, २)। 'धंत, 'धंत देखो 'धम, (हे २, १६६; पंड)। 'धह पुं [धह] १ एक श्रेष्ठी (सुर १)। २ राजा मोल के समकालिक एक जैन श्रावक; (धर्म ३०)। 'धंजया स्त्री [धंजया] एक राजकन्या; (धर्म ३०)। 'धम्म पुं [धर्म्म] एक बलिष्ठ; (गच्छ २)। 'धिरी स्त्री [श्री] एक बलिष्ठ-महिला; (गच्छ २)। 'सेण पुं [सेन] एक राजा; (सुर ४)। 'धार वि [धार] धनी; (प्राप्र)। 'धारय वि [धारक] १ धन को धारण करने वाला, धनी। २ पुं. एक श्रेष्ठी; (सुर ४)। ३ एक राजा; (विपा २, २)। 'धंजय पुं [धनञ्जय] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव, (वेणी ११०)। २ वह्नि, अग्नि; ३ सर्प-विशेष; ४ वायु-विशेष, गरुड़-व्यापी पवन; ५ वृक्ष-विशेष, (हे १, १७७; २,१८५; षड्)। ६ उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र; (इक)। ७ पक्ष का नवमी दिन; (जो ४)। ८ एक राजा; (आवम)। ४)। ६ एक राजा; (आवम)। 'धणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज; (विसे १६०)। 'धणि स्त्री [धारणि] १ भूमि, सन्ताप; (भौप)। २ स्मृति उत्पन्न करने की शक्ति; "मलिअधणिकिइवाई" (विसे १६६३)। 'धणिअ वि [धनिन्] धनिक, धनवान्; (हे २, १६६)। 'धणिअ वि [धनिक] १ पैदावार, धनी; (दे १, १४८)। २ पुं. माणिक, हत्थी; (आ १४)।

'धणिअ न [दे] अवश्य, शर्त, अनिवार्य; (दे ६, ६८; भौप; भग; सुर ३, ७४; सम ७३; पव्व ८२; जीव ३, उत्त १, सा २ : स ६८७)। 'धणिअ वि [धन्य] धन्यवाद के योग्य, प्रशंसनीय, स्तुति-पात्र; " जाव धणियस्स पुत्तो तिहडंसि रज्जम्मि अभिसित्तो " पव; " जाव धणियस्स पुत्तो " (पउम ४६, २६ ; अनु ४२)। 'धणिआ स्त्री [दे] १ प्रिया, भार्या, पत्नी; (दे ६, ६८; सा ६८२ ; भवि)। २ धन्या, स्तुति-पात्र स्त्री; (षड्)। 'धणिट्ठा स्त्री [धनिष्ठा] नक्षत्र-विशेष; (सम १० ; १३; सुर १६ २४६ ; इक)। 'धणी स्त्री [दे] १ भार्या, पत्नी; २ पार्वती; ३ जो बँधा हुआ होने पर भी मय रहित हो वह; (दे ६, ६२), "मत्तेभकुंभदलने भुवि सन्ति शूरा" (कुम १८६)। 'धणु पुं [धनुस्] १ धनुष, चाप, कार्मक; (षड् ; हे १, २२)। २ चार हाथ का परिमाण; (अनु ; जी २६)। ३ एक प्रकार के देवों की एक जाति; (सम २६)। ४ पुं. पलाण्डुकन्द; (राय)। 'धणुकुडिल न [कुटिलधनुष्] वक्र धनुष; (राय)। 'धणुग्ग पुं [ग्रह] बालु-विशेष; (हे १, १७)। 'धणुद्धर वि [धर] धनुर्विद्या-वृत्ति-विशेष; (ठा ८)। 'धणुद्धर वि [धर] धनुर्विद्या-निपुण, धानुष्क; (राज; पउम ६, ८७)। 'धणुपट्ठ [पृष्ठ] १ धनुष का पृष्ठ-भाग; २ धनुष के पीठ के बराबर का क्षेत्र; (सम ७३)। 'धणुपट्ठिया स्त्री [पृष्ठिका] क्षेत्र, सस्थान; (पव्व १)। 'धणुव्वेअ [वेद] धनुर्विद्या-बोधक शास्त्र, इषु-शास्त्र; (ठा ४ टी ; सुपा २७८ ; उव २)। 'धणुसय देखो 'धर ; (धणुक्क) अर देखो ; (चंदि; अनु; हे १, २२ धणुह)
'धणुही स्त्री [धनुष्] कार्मुक; "धिसामो व धणुहीए" (कुप्र७४; स ३८१)। 'धणेसर पुं [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैन मुनि (सुर १, २४६ ; १६, २६०)।
'धण्ण पुं [धन्य] १ एक जैन मुनि; २ 'अनुयोगद्वार सूत्र का एक अध्ययन; (अनु २)। ४ वि. कृतार्थ; ५ धन्यवाद के योग्य, प्रशंसनीय, ७ सत्यशाली, सत्य-वादी; ८ पुण्यशाली; (विपा २, २)। 'धण्ण देखो धन्न=धान्य; (आ १८; ठा

दोहित्ती स्त्री [दौहित्री] लड़की की लड़की ; (भग)।
दोहूअ पुं [दे] शव, शाक, मुर्दा ; (दे ५, ४६)।
°दोस देखो दोस = (दे) , "रत्तिअगणदोसो" (कुप्र २०)।
द्वयक्क (अप) न [द्व. अय] मय, भर, मोटी; (हे ४, ४२२)।
द्रह पुं [ह्रद] बड़ा जलाशय ; (हे २, ८० , कुमा)।
द्रेहि (मा) स्त्री [दृष्टि] नजर ; (हे ४, ४२२)।
द्रोह देखो दोह=द्रोह ; (ति २६८)।

इय तिसट्ठिपाइअसद्दमहण्णवसंकलिए दसाराइगणंकलक्खो पंचवीसइमो तरंगो समत्तो।

——०——

ध

ध पुं [ध] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष ; (प्राप ; प्राप्रा)।
धअ देखो धव ; (गा २०)।
धंख पुं [ध्याङ्क्ष] काक, कौआ ; (उत्त ८२१ ; पंचा १२)।
धंग पुं [दे] भ्रमर, भमरा, (दे ५, ५७)।
धंत न [ध्वान्त] अन्धकार ; (सुर १, १२ ; कप्र ११)।
धंत न [दे] अति, अतिशय, अत्यन्त , "धंतंपि सुमरसमिद्धा" (पच २६ ; विसे ३०१६ ; सुह १)।
धंत वि [ध्मात] १ अग्नि में तपाया हुआ ; (आया १, १ ; ओप ; पणण १ ; १७ ; विसे ३०२६ ; अजि १४)। २ शब्द-युक्त, शब्दित , (पिंड)।
धंधा स्त्री [दे] लज्जा, शरम , (दे ५, ५७)।
धंधुक्कय न [धन्धुक्कय] गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'धंधूका' नाम से प्रसिद्ध है, (सुपा ६१८, उप २०)।
धंधोलिय (अप) वि [घमित] घुमाया हुआ , (सण)।
धंस अक [ध्वंस्] नष्ट होना। धंसइ, धंसए ; (षड्)।
धंस सक [ध्वंसय्] १ नाश करना। २ दूर करना। धसइ ; (सम १, २, १)। धंसेइ ; (सम ५०)।
धंसाव सक [मुच्] त्याग करना, छोड़ना। धंसावइ ; (हे ४, ६१)।
धंसाविअ वि [मुक्त] परित्यक्त ; (कुमा)।
धंसाविअ वि [दे] नष्ट, ना ; (दे ५, ६२)।
धगधग अक [धगधगाय्] १ धग् धग् आवाज करना जलना, अग्नि का जलना। वकृ—धगधगंत , (कप्र १ ; पउम ११, ५१ ; भवि)।
धगधगाइअ वि [धगधगायित] धग् धग् आवाज किया (कुप्र)।
धगधगा देखो धगधग। वकृ—धगधगायंत (वि ५६८)।
धगीकय वि [दे] जलाया हुआ मनुष्य का शरीर ; "धगीकया व पावेण" आ १४)।
धज्ज देखो धव=धव्य, (कुमा)।
धट्ठ देखो विट्ठ , (हे १, ११० , पउम ४६, २६ ; १, ८२)
धट्ठद्युण } पुं [धृष्टद्युम्न] राजा द्रुपद का एक
धट्ठज्जुण } (हे २, ६४ ; आया १, १६ ; कुमा , वि १७८)।
धड न [दे] धड़, गले से नीचे का शरीर, (सुपा १०१
धड्डहडिय न [दे] गर्जना, गर्जारव , (सुपा १०१)।
धण न [धन] १ वित्त, विभव, व्यापार-जनित लाभ ; ६; सूत्र २, १। प्राप्र ६१ ; ७६ ; कुमा) २ गणिम, धरिम, मेय, या परिच्छेद्य द्रव्य—जिनको से और आदि से क्रय-विक्रय-योग्य पदार्थ; (कप्र)। १६ धन-पति; "सुए सो सिट्ठी धणोत्ति धणवइत्ति" (सुपा ११ ४ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी; (उप ६११)। ६ धन्यकु का एक पुत्र; (आया १, १८)। °इत्त, °दत्त वि [धनी, धन वाला; (कुप्र २४६, वि ६६६, सट्ठि १०)। [°गिरि] एक जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के पिता (कप्प, उप १४१ टी)। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक मुनि ; (आवम)। °गोव पु [°गोप] धन्य-सार्थवा एक पुत्र ; (आया १, १८)। °ड पुं [°ड्य] एक मुनि; (कप्प)। °णंदि पुंस्त्री [°नन्दि] दुसमा देख "देवड्ढि दुसुहं धणवंतो भवइ " (सम १)। °नि पुं[°निधि]खजाना, भण्डार; (ठा ६, ३)। °त्थि [°र्थिन्] धन का अभिलाषी, (रयण १८)। °द [°दत्त] १ एक सार्थवाह, २ तृतीय वासुदेव के पूर्व जन्म नाम , (सम १५१ , चंदि ; आवम)। °देव पु[°देव एक सार्थवाह, मल्लिजिन-गणधर का पिता ; (आ

[धन्वन्तरि] १ राजा वनराय का एक स्व-
नाम-ख्यात वैद्य, (विपा १, ८) । २ देव वैद्य,
(भग २) ।

धण्णाउस वि [दे] १ जिसको आशीर्वाद दिया जाता हो
वह ; २ पुं. आशीर्वाद, (दे ६, ६८) ।

धत्त वि [दे] १ निहित, स्थापित ; (आचार) । २ पु.
वनस्पति-विशेष ; (जीव १) ।

धत्त वि [धात्त] निहित, स्थापित, (राज) ।

धत्तारट्ठ पु [धार्तराष्ट्रक] हंस की एक जाति, जिसके
मुँह और पाँव काले होते हैं, (पण्ह १, १) ।

धत्ती स्त्री [धात्री] १ धाई, उपमाता, (स्वप्न १११) ।
पृथ्वी, भूमि, २ आमलकी-वृक्ष, (हे २, ८१) ।
ात्री धाई ।

धत्तूर पु [धत्तूर] १ वृक्ष-विशेष, धतूरा ; २ न धतूरा
पुष्प, (सुपा १२८) ।

धत्तूरिम वि [धात्तूरिक] जिसने धतूरा का नशा किया हो
(सुपा १६४, १७६) ।

धत्थ वि [ध्वस्त] ध्वंस-प्राप्त, नष्ट, (हे २, ७६,
देखो धण्ण=ध्वस्त. (कुमा, प्राप ६३ ; ८४,
, उवा) ।

धन्न [धान्य] १ धान, अनाज, अन्न, (उवा, सुर
) । २ धान्य-विशेष, "दुइ-ध नद धन्नय कलाया"
१६) । ३ धनिया, (वर्षा ६) । कोड पु
] काम में होने वाला कीड़ा, घुन-विशेष, (जी
सिरि पुंखी [निधि] धान्य रखने का घर,
(उप ६, ३) । धन्यय पु [धान्यक]
क नाम, (भग १) । रिट्ठग न [रिष्टक]
क नाम, (भग १) । पुंजिय न [पुञ्जित-
ढेर किया हुआ अनाज, उप ६, ६) । विविधधन्न
धान्य] विविध अनाज, (उप ६ ६) ।
न [विनिष्टधान्य] बहुत से इकट्ठे हुआ
६) । सकीरिय न [सकीर्णधान्य]
ाज में अनाज मिला हुआ धान्य, (उप ६, ६) ।
ागार] घर, जिस स्थान में धान्य

धन्ना स्त्री [धन्या] एक स्त्री का नाम, (उवा
धम सक [ध्मा] १ धमना, आग में तपाना । २ शब्द
३ वायु पूरना ; धमइ, (महा) । धमेइ, (कुमा
वकृ—धमंत, (निचू १) । कवकृ—धम्ममाण,
णाया १, ६) ।

धमग वि [धमायक] धमने वाला, (औप) ।

धमण न [धमन] १ आग में तपाना, (भक्त
१, ७) । २ वायु-पूरण, (पण्ह १, १) । ३ वि.
धमनी, (राज) ।

धमणि } स्त्री [धमनि, नी] १ शिरा, धमनी, २ न
धमणी } शिरा, (विपा १, १, उवा, भग २०) ।

धमधम अक [धमधमाय्] धम् धम् आवाज करना
"धमधमा सिर धणियं जाया सुहमि भवए तिं
(सुपा ६०३) । वकृ—धमधमंत, धमधमाअंत,
धमधमेंत, (सुपा ११४, नाट—मालती ११६; णाया १,८)

धमास पु [धमास] वस्त्र-विशेष, (पण्ह १०) ।

धमिअ वि [ध्मात] जिसमें वायु भर दिया गया हो वह ;
"धमिआ सखा" (सुपा १०६) ।

धम्म पुन [धर्म] १ शुभ कर्म, कुशल-जनक अनुष्ठान, सदाचार,
(उप १; सम १, २; आचा; सुअ १, ६, प्रासू ६२, ११४; भ
६०) । २ पुण्य, सुकृत, (सुर १, ६४, आचा ४
प्रकृति, (निचू १०) । ४ गुण, पर्याय, (ठा
अन्यों पदार्थ, जो जीव की गति-क्रिया में सहाय
है, (भग ६) । ६ वर्तमान अवसर्पिणी का
पन्द्रहवाँ जिन देव, (सम ८१, पडि) । ७
(उप ७२८ टी) । ८ स्थिति, मर्यादा, (आचा
धनुर, कामदेव, (सुर १, ६४, पाअ) । १०
मुनि, (कप्प) । ११ 'सूयगडाङ्ग' सूत्र का तेरहवाँ
(सम ८२) । १२ आचार, रीति, व्यवस्था, (
धुअ पु [धुत] शिव, (प्राकृ) । उर न [पु
हृदय, (भग १) । कंखिअ वि [कांक्षित
धर्म का आचरण करने, अनु । कहा स्त्री [कथा
धर्म-संबन्धी कथा, भग, सम ११, पाअ) ।
वि [कथिन्] धर्म कहने वाला, सि ।
काम वि [कामक
काय [काय] न
[कारिन्]

-]

पाति] धर्म में सहायता करना, धर्मोपग्रह; (सिरि) । °गुरु पुं [गुरु] धर्म-प्रदायक गुरु, धर्माचार्य ; (हे १) । °गुरु [गुरु] धर्म-प्रदायक ; (पउ) । °घोस पुं [घोष] जैन मुनि और आचार्यों का नाम ; (कप्प ; भाव ४ ; सम ११, ११) । °चक्क न [चक्र] धर्म-प्रवर्तक चक्र ; (पव ४० , सुर ६१) । °चक्कवट्टि पुं [°चक्रवर्तिन्] जिन-देव, (भाव १) । °चक्किय पुं [°चक्रिक] जिन भगवान् , (कुमा ३०) । °जणणी स्त्री [जननी] धर्म की प्राप्ति कराने वाली स्त्री, धर्म-देशिका ; (पंचा १६) । °जस पुं [यशस्] जैन मुनि-विशेष का नाम; (भाव ४) । °जागरिया स्त्री [जागर्या] १ धर्म-चिन्तन के लिए किया जाता जागरण, (सम १२, १) । २ जन्म से छठवें दिन में किया जाता एक उत्सव ; (कप्प) । °ज्झय पुं [ध्वज] १ धर्म-द्योतक ध्वज, इन्द्र-ध्वज, (राय) । २ ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें भावी जिन-देव ; (सम १५४) । °ज्झाण न [ध्यान] धर्म-चिन्तन, शुभ ध्यान-विशेष ; (सम ६) । °ज्झाणि वि [°ध्यानिन्] धर्म ध्यान में मुस्तैद ; (भाव ४) । °ट्ठि वि [°र्थिन्] धर्म का अभिलाषी ; (सुम १, २, २) । °णायग वि [नायक] १ धर्म का नेता; (सम १ ; दंस ४) । °णयु पुं [°नय] धर्म का ज्ञाता ; (दंस २३ ; पंचा १) । °तित्थयर पुं [°तीर्थकर] जिन भगवान् ; (उत्त २३ ; पउ) । °त्थ न [°स्त्र] धर्म-विषय, एक प्रकार का ईश्वर; (पउ ७१, ६३) । °दिय देखो °ट्ठि ; (पंचा ४) । °दियकाय पुं [°स्तिकाय] गति-क्रिया में सहायता पहुँचने वाला एक अरूपी पदार्थ; (सम) । °दुय वि [°द्रुत] धर्म की प्राप्ति कराने वाला, धर्म-देशक ; (सम) । °दार न [°द्वार] धर्म का द्वार ; (हे ४, ४) । °दार पुंन. [°द्वार] धर्म-पत्नी; (कप्पू) । °दास पुं [°दास] भगवान् महावीर का एक शिष्य, और उवएसमाला का कर्ता ; (उत्त) । °देव पुं [°देव] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य ; (सार्ध ७८) । °देसग, °देसय वि [°देशक] धर्म का उपदेश करने वाला ; (राज ; सम ; पडि) । °धुरा स्त्री [°धुरा] धर्म रूप धुरा ; (राया १, ८) । °नायग देखो °णायग, (सम) । °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] १ धर्म की प्रतिमा ; २ धर्म का साधन-रूप शरीर ; (हे १) । °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] धर्म की प्ररूपणा, (उव) । °पडिणी (णी) स्त्री [°प्रत्यनीक] धर्म-पत्नी, स्त्री, आर्या (अभि २२२) । °पियालय वि [°पियालक] धर्म के लिए व्यासु ; (सम) । °पियासिय वि [°पियासित] धर्म की प्यास वाला, (संदे) । °पुरिस पु [°पुरुष] धर्म-प्रवर्तक पुरुष ; (ठा ३, ३) । °पलक्खण वि [°प्रलक्षण] धर्म में मालक्ष ; (णाया १, १८) । °पवाइ वि [°प्रवादिन्] धर्मोपदेशक ; (आचा १, ४, २) । °पवि पुं [°प्रभ] एक जैन आचार्य ; (स्थान ६८) । °पावाउय वि [°प्रावादुक] धर्म-प्रवादी धर्मोपदेशक ; (आचा १, १४, १) । °बुद्धि वि [°बुद्धि] धार्मिक, धर्म-नीति ; २ पुं. एक राजा का नाम ; (ठा ७२८ टी) । °मित्त पुं [°मित्र] भगवान् पद्मप्रभ का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५१) । °य वि [°द] धर्म-दाता, धर्म-देशक ; (सम १) । °रुइ स्त्री [°रुचि] १धर्म-प्रीति; (धर्म २) । २ वि. धर्म में रुचि वाला ; (ठा १०) । ३ पुं. एक जैन मुनि; (विपा १, १; उत्त ६४८ टी)।४ बारहवीं का एक राजा; (आवम)। °लाभ पुं [°लाभ] १ धर्म की प्राप्ति ; २ जैन साधु द्वारा दिया जाता आशीर्वाद ; ' धर्मलाभ ' रूप आशीर्वाद दिया गया हो वह; (सुर ८, १०६) । °लाभिय वि [°लाभित] जिसको धर्मलाभ-रूप आशीर्वाद देना; " कयं धम्मलाहियं " (म ६६६) । °लाहिअ देखो °लाभिय ; (म १४८) । °वंत वि [°वत्] धर्म वाला; (आचा) । °वय पुं [°पय] धर्मार्थ दान, धर्मार्थ; (सुपा ६१७) । °वि, °विउ वि [°विद्] धर्म का जानकार ; (आचा) । °वियड्ढ वि [°विदग्ध] धर्म-विषयक चतुराई वाला ; (पंचव १) । °वेय देखो °वय [°वैद्य] धर्माचार्य ; (पंचव १) । °सद्धा स्त्री [°श्रद्धा] धर्म-विषयक श्रद्धा ; (सुपा ६१७) । °सड्ढा स्त्री [°श्रद्धा] धर्म-विषयक श्रद्धा ; (सुपा ६१७) । °सण्णा देखो °सन्ना; (भग ७, ८) । °सन्ना स्त्री [°संज्ञा] धर्म-विषयक ज्ञान ; (दंस ४) । °सत्थ न [°शास्त्र] धर्म-विषयक शास्त्र ; २ धर्म-बुद्धि ; (पंचा ३) । °सारहि पुं [°सारथि] धर्मरूप का प्रवर्तक, देशक; (पउ २७, टि) । °सार्ल स्त्री [°शाला] धर्म-स्थान; (कप्प ३३) । °सील वि [°शील] धर्म-परायण ; (सुपा २, २) । °सीह पुं [°सिंह] १ भगवान् नन्दन का पूर्वभवीय नाम ; (सम १५१) । २ एक मुनि ; (स्थ ६६) । °सेण पुं [°सेन] एक भावी पूर्वभवीय नाम, (सम १५३) । °हर वि [°धर] धर्म का प्रथम प्रवर्तक, २ पुं. जिन-देव, (धर्म २) ।

न [°नुष्ठान] धर्म का आचरण, (धर्म १)। °णुण्ण वि [°नुज्ञ] धर्म का अनुमोदन करने वाला ; (सूम १, १ ; दसा १, १८)। °णुय वि [°नुग] धर्म का अनुसरण करने वाला ; (औप)। °यरिय पु [°चार्य] धर्म-दाता गुरु, (सम ११०) । °याय पु [°वाद] १ धर्म-चर्चा, २ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद; (ठा १०)। °हिगरणिय पुं [°धिकरणिक] न्यायाधीश, न्याय-कर्ता, (सुपा ११७)। °हिगारि वि [°धिकारिन्] धर्म-ग्रन्थ के योग्य, (धर्म १)।

धम्म वि [धर्म्य] धर्म-युक्त धर्म-संगत, " जं पुण तुमं बेंति तत्थ धम्मं " (महानि ४, द ४१)।

धम्मण पु [दे] इन्द्र-विशेष, (उप १०३१ टी ; पउम ४१, ६)।

धम्मण देखो धम।

धम्मय पु [दे] १ चार अंगुल का हस्त-मान, २ धाड़ी देने का लकड़ी ; (दे ६, ११)।

धम्मि वि [धर्मिन्] १ धर्म-युक्त, द्रव्य, पदार्थ । २ धार्मिक, धर्म-परायण। (सुपा २६, ३३६, ६०६, कप्पा १०६)।

धम्मिअ } वि [धार्मिक] १ धर्म-कर्ता, धर्म-परायण, (गा धम्मिग } १६० ; उप ८६२, पंच २, ८)। २ धर्म-सम्बन्धी। (उप २६४, पंचा ६) । ३ धार्मिक-संबन्धी ,(ठा ३, ८)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मिष्ठ] अतिशय धार्मिक , (औप , सुपा १४०)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मेष्ट] धर्म-प्रिय, (औप)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मौष्ठ] धर्मिष्ठ जन का प्रिय ; (औप)।

धम्मिल्ल (शौ) पुं [धम्मिल्ल] १ संयत केश, बाँधा हुआ बाल, जूड़ा (पाअ, पउ, मालवि ३) । २ पुं. एक जैन मुनि, (अंत १)।

धम्मेसर पु [धर्मेश्वर] अवसर्पिणी-काल में भरत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिन-देव , (सम ०)।

धम्मोयर वि [धर्मोदर] १ पुण्य, पुण्यों से पेट , (आचा १ ४ धर्म का प्रकाश, "धम्मुज्जोयकरेहिं" (दंडि)। धम्मोवएसय वि [धर्मोपदेशक] धर्म का उपदेश देने वाला, (दसा १, ११, सुपा १०१, धर्म २)। धय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका; (हे २, १७, १६ ; पाअ १, ४; गा ३४)। स्त्री—°या ; (पि ४७)। पु [°पट] ध्वजा का वस्त्र ; (सुपा)।

धय पु [दे] नर, पुरुष; (दे ६, ६७)।

धयण न [दे] गृह, घर ; (दे ६, ६७)।

धयरट्ठ पुं [धृतराष्ट्र] हंस पक्षी, (पाअ)।

धर सक [धृ] १ धारण करना। २ पढ़ना। धर, संधु, ४, ३३४; ३३६) । कर्म—धरिज्जइ, (पि ५३७)। कृ—धरंत, धरमाण, (सण, भवि, गा ७३१)। कवा—धरेंत, धरिज्जंत, धरिज्जमाण, (से ११, ११०; १५, ८१; राज , पाअ १, ४ , औप)। संकृ—धरिउं, (हा ७)। कृ—धरियव्व , (सुपा २७२)।

धर सक [धरय्] पृथिवी का पालन करना । वकृ-(सुर १, १३०)।

धर न [दे] तृण, घास , (दे ६, ६७)।

धर पु [धर] १ भगवान् पद्मप्रभ का पिता, (सम १५ २ मथुरा नगरी का एक राजा , (दसा

पर्वत, पहाड , (से ८, ६३ , पाअ)।

°धर वि [°धर] धारण करने वाला , (

धरण पु [दे] कलश , (दे ६, ६८)।

धरण पु [धरण] १ नाग-कुमार देवों का इन्द्र , (ठा २, ३ , औप) । २ यदुवंशीय वृष्णि का एक पुत्र , (अंत १)। ३ अंति ७१८ टी , सुपा ६६६)। ४ न धारण क १ , पार्श्व ६ , कप्पा ८८)। ५ सोउद्द परिमाण , (जी २)। ६ धारना इना, उपेक्षण , (पंचा २)। ७ जानने का साधन, ८ वि धारण करने वाला , (हेमा)। एयम पु धरणेन्द्र का उत्पात पर्वत , (ठा १०)।

धरणा स्त्री [धरणा] इच्छा धारणा, बुद्धि)।

धरणि स्त्री [धरणि] १ भूमि, पृथिवी, (औप, हेम भगवान् मल्लिनाथ की शासन देवी , (पव्व १०)। २ कन् वासुदेव की प्रथम स्त्री , (सम १२१, पा ६, भील पु [कील] मद्य पान , सुपा ४ , धर [धर] मनुष्य (पउम १०१, ८८ धर , [°धर] १ सर्प, पहाड , भवि १०) । ३ अरब वर्ष का एक पूर्वोत्तर संख्या (सम , ८०)। धरणोयर पु [°धरोदर] मद्य पान , (पाअ ,

–धा]

ई पुं [°धरणिधर] मेरु पर्वत ; (अभि १७) । °धरा [°धरा] माधवी विमलनाथ की प्रथम शिष्या ; १५२) । °धल न [°तल] भूमि-तल, भूतल ; धा १, २) । °धर पुं [°धृत्] सर्प-नाग, भूमि-तल; ह ३३४) । °धव पुं [°धृत्] सर्प-नाग, भूमि-तल; हा) । °हर देखो °धर ; (से ६, ३६) ।

निंद पुं [धरणीन्द्र] नाग-कुमारों का दक्षिण-दिशा का द्र ; (पउम ४, ३८) ।

णी देखो धरणि ; (आचा २३ ; नि ६३ ; से २, २४, कुप्र २३) ।

धरा स्त्री [धरा] पृथिवी, भूमि ; (गउड ; सुपा २०१) । °धर, °हर पुं [°धर] पर्वत, पहाड ; (से ६, ३६ ; ३८ ; स २६६ ; ७०३ ; उप ७६८ टी) ।

धरावित्र वि [धारित] पकड़ा हुआ ; (स २०६ ; सुपा ३२६ ; संबि ३४) । २ स्वामित्व ; " धरावित्र मरवं "

(कुप्र १४०) ।

धरिअ वि [धृत] १ धारण किया हुआ ; (गा १०१ , सुपा १२६) । २ रोका हुआ ; (स २०६) ।

धरिउंत } देखो धरन्त ।
धरिउंताण }

धरिणी स्त्री [धरिणी] पृथिवी, भूमि ; (पाअ) ।

धरिम न [धरिम] १ जो तराजू में तौल कर बेचा जाय वह ; (आ १८ ; पाचा १, ८) । २ ऋण, कर्जा ; (पाचा १, १) । ३ एक तरह का नाप, तौल ; (जो २) ।

धरिअव्व देखो धरन्त ।

धरिस अक [धृष्] संहत होना, एकत्रित होना । २ प्रगल्भता करना, ढीठाई करना । ३ तिरस्कार, संभव होना । ४ सक. हिंसा करना, मारना । ५ अनादर करना, सहन नहीं करना । धरिसइ ; (गउड) ।

धरिसण न [धर्षण] १ परिभव, अभिभव ; २ संहति, एकत्र ३ अनादर, अवज्ञा ; ४ हिंसा ; ५ कम्पन, वेपथु ; (नि १ ; गउड) । ६ प्रगल्भता, धृष्टता, ढीठाई ; (औप) ।

धरेंत देखो धरन्त ।

धव पुं [धव] १ पति, स्वामी ; (पाचा १, १ ; धर्म) । २ वृक्ष-विशेष ; (पाअ १ ; उप १०३११ टी ; औप) ।

धवक्क अक [दे] धड़कना, मन से अस्थिर होना, घबड़ाना । धवइ ; (स्फु) ।

धवक्किय वि [दे] धड़का हुआ, मन से अस्थिर बना हुआ ; (स्फु

धवण न [धावन] दौड़, धावा आदि का थकान-जन्य (सूक्त ८६) ।

धवल पुं [दे] अन्न-जाति में उत्तम ; (दे ६, ६७) ।

धवल पुं [धवल] १ संकर, शेत ; (पउम ; सुपा २८६) । २ पुं. उत्तम बैल ; (गा ६३८) । ३ पुं. छन्द-विशेष ; (पिंग) ।

°गिरि पुं [°गिरि] कैलास पर्वत ; (ती ४६) । °हर न [°गृह] प्रासाद, महल ; (आ १२ ; महा) ।

धवल अक [धवलय्] संकेत करना । धवलए ; (नि ६६७) ।

धवल—धवलिज्जंत ; (गउड) ।

धवलक्क न [धवलार्क] ग्राम-विशेष, जो आजकल ' धोलका ' नाम से गुजरात में प्रसिद्ध है ; (ती ३) ।

धवलण न [धवलन] संकेत करना, श्वेती-करण ; (कुमा) ।

धवलसउण पुं [दे] हंस ; (दे ६, ६८ ; पाम) ।

धवला स्त्री [धवला] गौ, गैया ; (गा ६३८) ।

धवलाय अक [धवलाय्] संकेत होना । वकृ—धवलाअंत ; (गा ६) ।

धवलाइअ वि [धवलायित] १ उत्तम बैल की तरह जिसने कर्ष किया हो वह ; २ न. उत्तम बैल की तरह आचरण ; (कार्प ६) ।

धवलिम पुंस्त्री [धवलिमन्] संकेतन, शुक्लता ; (सुपा ७४) ।

धवलिय वि [धवलित] संकेत किया हुआ ; (भवि) ।

धवली स्त्री [धवली] उत्तम गौ, अच्छी गैया ; (गउड) ।

धव्व पुं [दे] वेग ; (दे ६, ६७) ।

धस अक [धस्] १ फंसना । २ नीचे जाना । ३ प्रवेश करना । धसइ, धसउ ; (पिंग) ।

धस पुं [धस्] ' धस् ' ऐसा आवाज, गिरने का आवाज " धसत्ति नरिंदेणं पडिओ " (महा ; पाचा १, १—

४७) ।

धसक्क पुं [दे] वस्त्र की घसघसाट का आवाज, गुज में ' धमधमो ', " जो कप्पडिआसक्को " (आ १४ ; कुप्र ३) ।

धसक्किय वि [दे] खूब घसघसा हुआ ; (आ १४) ।

धसल वि [दे] विलासी ; (दे ६, ६८) ।

धा अक [धा] दौड़ करना । धइ, धअइ, ध (षड्) । कर्म—धीअइ ; (पिंड) ।

[ध्य] ध्यान करना, चिन्तन करना। धामति; (संक्षि ७६)।

धा सक [धावृ] १ दौड़ना। २ शुद्ध करना, धोना। धाय, धायइ, (हे ४, २४०)। भवि—धाहिइ, (पड्)। धाइअ वि [धावित] दौड़ा हुआ; (से ८, ६८, भवि)।

धाइअसंड देखो धायइ-संड, (महा)।

धाई देखो धत्ती; (हे २, ८१, पव ६७)। ४ धाई का काम करने से प्राप्त की हुई भिक्षा, (ठा ३, ४)। ५ छन्द-विशेष, (पिंग)। °पिंड पु [°पिण्ड] धाई का काम कर प्राप्त की हुई भिक्षा, (पव ६७)।

धाउ पु [धातु] १ सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा, राँगा, सीसा और जस्ता ये सात वस्तु, (जी ३)। २ गेरु, मनसिल आदि पदार्थ, (सम ४, पण्ह १,२)। ३ शरीर-धारक वस्तु—रस, वात, पित्त, रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र, (औप, कुप्र १६८)। ४ पृथिवी, जल, तेज और वायु ये चार महाभूत, (सूअ १,१,१)। ५ व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-धातु, 'भू' 'पच्' आदि; (अणु)। ६ स्वभाव, प्रकृति, (स २४१)। ७ नाट्य-शास्त्र-प्रसिद्ध आलतिका-विशेष; (कुमा २, ६६)। °य वि [°ज] १ धातु से उत्पन्न; २ वस्त्र-विशेष; (पचमा)। °वाइअ वि [°वादिक] औषधि आदि के योग से ताम्र आदि का सोना वगैर बनाने वाला, किमियागर; (कुप्र ३६७)।

धाउ पु [धातृ] पण्णत्ति-नामक व्यन्तर देवों का एक इन्द्र, (ठा २, ३)।

धाड अक [निर्+सृ] बाहर निकलना। धाडइ, (हे ४, ७६)।

धाड सक [निर्+सारय्] बाहर निकालना। संकृ—धाडिऊण; (कुप्र ८३)। कवकृ—धाडिज्जंत; (पउम १७, ८, ११, ११६)।

धाड सक [धाड्] प्रेरणा करना। २ नाश करना। धाडेंति, (पउम १, ४, २)। कवकृ—धाडीयंत; (कप्प १, ४)।

धाडण [धाडन] १ प्रेरणा २ नाश, (औप)।

धाडिअ वि [निस्सारित] बाहर निकाला हुआ, निर्वासित, (पउम २१, ८)।

धाडिअ पु [दे] निरम्न, निराकृत, (दे ५, ५६)।

धाडिअ वि [नि सृत] बाहर निकला हुआ, (दे ५, ५६)।

धाडिअ पु [दे] आगम, बगीचा; (दे ५, ५६)।

धाडिअ वि [निस्सारित] निर्वासित, बाहर निकाला हुआ, (पउम १०१, १०३; स २६८; उप ७१८ टी)।

धाडी स्त्री [धाटी]। १ डाकुओं का दल; (प्राक)। २ हमला, आक्रमण, धावा; (कम्)।

धाण देखो धण्ण=धान्य, (कप्पू)।

धाणा स्त्री [धाना] धनेरा, एक जाति का मत्स्य, (दे ७, ६६, प्राक)।

धाणुक्क वि [धानुष्क] धनुर्धर, धनुर्विद्या में निपुण, (उप पृ ८६, सुर १३, १६२; वेणी ११४, कुप्र ४६)।

धाणूरिअ न [दे] कटु-भेद, (दे ५, ६०)।

धाम न [धामन्] बल, पराक्रम, (आचा ६३; सूअ १, ६, ७)। २ न सुभिक्ष, सुकाल, (दुर ६)।

धायइ°} स्त्री [धातकी] वृक्ष-विशेष, धाय का पेड़; (पउम
धायई } ३, ५७, ७६, ठा २, ३, सम १५२)। °संड पु [°खण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप, (ठा ३, ३, °संड पु [°षण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप, (जं ठा ८, इक)।

धार सक [धारय्] १ धारण करना। २ करना। ३ (महा)। वकृ—धारंत, धारअंत, धारेमाण, धारयत धारिंत, (सुर ३, १८६, नाट—विक्र १०६; मृच्छ (पि ४७३, कप्र, ठा ४, ३)। कृ—धारणिज्ज, धारणी- धारेयव्व, (णाया १, १, भग ७, ६, सुर १४, ७७, ६ ४८२)।

धार न [धार] १ धारा-सम्बन्धी जल, २ वि, धारण करने वाला, (राज)।

धार वि [दे] लघु, छोटा, (दे ५, ५६)।

धारग वि [धारक] धारण करने वाला, (कप्प, उप ७६; सुपा २६८)।

धारण न [धारण] १ धारने की क्रिया, २ प्रत्यय, ३ रक्षण, रक्षना, ४ परिधान करना, ५ अवलम्बन, (औप, ठा ३, ३)।

धिक्कार पुं [धिक्कार] १ धिक्कार, तिरस्कार ; (पद्म १, २, ६ २६) । २ पुराणोक्त मनुष्यों के समय की एक दण्ड-नीति ; (इक ७—पत्र ३६८) ।

धिक्कार सक [धिक्+कारय्] धिक्कारना, तिरस्कार करना । कवृ—धिक्कारिज्जमाण, (सि ५११) ।

धिज्ज न [धैर्य] धीरज, धृति, (हे १, ६४) ।

धिज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य, (णाया १, १) ।

धिज्ज वि [धैर्य] ध्यान-योग्य, चिन्तनीय ; (णाया १, १) ।

धिज्जाइ पुंस्त्री [द्विजाति, विगजाति] ब्राह्मण, द्विज । स्त्री "धिज्ज भद्दा धिज्जाइणी" (आचा) ।

धिज्जाइय) पुंस्त्री [द्विजातिक, विजातीय] ब्राह्मण,
धिज्जाईय) द्विज, (भग, उवा ११६, आचा १) ।

धिज्जीविय न [विगुज्जीवित] निन्दनीय जीवन, (सूम १, २) ।

धिट्ठ वि [धृष्ट] धीठ, प्रगल्भ, २ निर्लज्ज, बेशरम, (हे १, ११० , कुप्र २, ६ , सा ६१० , आ १४) ।

धिट्ठत्तण देखो धट्ठत्तण ; (सि ३७८) ।

धिट्ठिय पुंस्त्री [धृष्टत्व] धृष्टता, धीठाई, (सुपा ११०) ।

धिड्डी) स्त्री [धिक् धिक्] धी धी, (उत्त, वे ६१, ४म) ।
धिग्धी ।

धिप्प सक [दीप्] दीपना, चमकना । धिप्पइ, (हे ४, ११३) ।

धिप्पिर वि [दीप्र] देदीप्यमान, चमकीला, (कुमा) ।

धिर क [धिक्] धिक्कार, छि, "धिर मिर धिग मुद्धिए" (उत्त ६१०) ।

धिरत्थु अ [धिगस्तु] धिक्कार हो, (आचा १, १६, कप्र, प्रक) ।

धिरत्थु वि [धिरस्तु] कुत्सित कुत्सित, (काम) ।

धिरि अ [धिक्] धिक्कार, छि, (सुपा ३३६, मच) ।

धिरी क [धी] बुद्धि, मति, (कम, कप्पा १, ११, कुप्र ११६, प्रक १० । धिरीमं वि [धृतिमत्] १ धृतिवान्, धैर्यवान्, (उप ६८८ टी) । २ पुण्यवान्, (उत्त ६) । धिरु वि [धीर] १ धैर्यवान्, धीर, (उप ७६८ टी ; धर्म २) । २ बुद्धिमान्, विद्वान्, (उप ७६८ टी ; धर्म २) । ३ स्थिर, परमात्मा, जिन-देव, ४ गणधर-देव, (आचा, सूम १, ७) । ५ सहिष्णु ; (सूम १, ३, ४) ।

धीर न [धैर्य] धीरज, धीरता, (हे १, ६४, कुप्र २७१) ।

धीरय सक [धीरय्] सान्त्वन करना, दिलासा देना । धीरयिज्जंति, (कुप्र २७१) ।

धीरवण न [धीरण] धीरज देना, सान्त्वन ; (सुपा ४०४) ।

धीरविय वि [धीरित] जिसको सान्त्वन दिया गया हो, आश्वासित, (ग ६०४) ।

धीराअ सक [धीरायू] धीर होना, धीरज धरना । धीराअंत, (हे १२, ७०) ।

धीरावि अ देखो धीरविय, (सि ४६६) ।

धीरिअ देखो धीर=धैर्य, (हे १, १०७) ।

धीरिम देखो धीरविय, (भवि) ।

धीरिम पुंस्त्री [धीरत्व] धैर्य, धीरज, (उप ६८ पुपा १०६ , भवि, कुप्र १६०) ।

धीवर पु [धीवर] १ मल्लाह, मछोआ, (हम्मीर १८) । २ वि उत्तम बुद्धि वाला, (उप ७६८ टी ; कुप्र १४४) ।

धुअ देखो धुव=ध्रुव । धुअं, (ठा ३३०) ।

धुअ सक [धू] १ कँपाना । २ फेंकना । ३ दूर करना । कवृ—धुअमाण, (ग १८, ११) ।

धुअ देखो धुव=ध्रुव, (भवि) । धुअ वि [धुत] १ कम्पित, (ठा ८, हे १, १८) । २ त्यक्त, (औप) । ३ उच्छृङ्खलित, (हे ४, ४) । ४ कर्म, (सूम १, ७) । ५ मान, ६ त्याग, मन-त्याग, संयम ; (१, २, २, आचा) । धुयाय) [वाद] कर्मक्षय,
धुयाय) दलन, (पञ्च) ।

धुअमाय पु [दे] भ्रमर, भमरा, (३ ८, १०, पञ्च) ।

धुअराय पु [दे] दास दासी, (षड्) ।

धुअधुआर पु [धूमधूमार] दुःखित (सुर ११) ।

धुअधुआरा कीं [दे] दुःखित, दुखी (३, १०) ।

धुअरायुअ अक [धूत] कँपना, डरना (३, १८८) ।
धुन्धुल (ग ६८१) ।

धुक्कुधुभ } वि [दे] उल्लसित, उल्लास-युक्त ; (दे
धुक्कुधुमिअ } ४, ६०)।
धुक्कुधुभ देखो धुक्काधुक्क। वह—धुक्कुधुभंत ; (भवि)।

धुक्कोडिअ न [दे] संशय, संदेह ; (वज्जा ६०)।

धुगधुग सक [धुगधुगाय्] धुग् धुग् आवाज करना। वह — धुगधुगंत ; (पव ९, ३—पत्र ४६)।

धुगधुग देखो धुद्धुभ। धुगधुगइ ; (हे ४, ३६६)।

धुण सक [धू] १ कँपना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ शब्द करना। धुणइ, धुणाइ ; (हे ४, ६६ ; माचा ; वि १२०)। कर्म—धुव्वइ, धुणिज्जइ ; (हे४, २४१)। वह — धुणंत ; (सुर १०६)। संह—धुणिऊण, धुणिया, धुणेऊण ; (पट् ; दस ६, ३)। हेक—धुणिउं ; (हे १, ६, २)। कृ—धुणेज्ज ; (आचू १)।

धुणण न [धूनन] १ कम्पन ; २ परित्याग ; (राज)।

धुणणा स्त्री [धूनन] कम्पन ; (ओघ १६६ भा)।

धुणाव सक [धूनय्] कँपाना, हिलाना। धुणावइ ; (वज्जा६)।

धुणाविय वि [धूनित] कँपाया हुआ ; (उत्त ७१८ टी)।

धुणि देखो धुणी ; (पट्)।

धुणिऊण } देखो धुण।
धुणित्तए }

धुणिय वि [धूत] कम्पित, हिलाया हुआ ; "मन्दर धुणिव" (सुर ३३०, २०१)।

धुणिया } देखो धुण।
धुणेज्ज }

धुत्त वि [धात्य] १ दूर करने योग्य ; २ न. पाप ; ३ कर्म ; (उत्त ६, १ ; दसा ६)।

धुत्त वि [धूर्त] १ ठग, वञ्चक, प्रतारक ; (प्राप्र ४० ; भा १२)। २ धतूरा खेलने वाला; ३ पुं. धतूरे का पेड़ ; ४ नदी का कूड़ा; ५ लवण-विशेष, एक प्रकार का नोन ; (हे २, ३०)।

धुत्त वि [दे] १ विस्तीर्ण ; (दे ५, ५८) । २ आक्रान्त; (षट्)।

धुन } सक [धूर्तय्] ठगना। धुत्तारसि ; (सुपा११४)।
धुनाए } वह—धुत्तयंत ; (भा १२)।

धुत्तारिअ वि [धूर्तित] ठगा हुआ, वञ्चित; (उत्त २७ स्त्री)।

धुत्ति स्त्री [धूर्त्ति] ठग, धुतारा ; (राज)।

धुत्तिअ वि [धूर्तित] वञ्चित, प्रतारित ; (सुपा ३२४ ; भा १२)।

धुत्तिम पुंस्त्री [धूर्तत्व] धूर्तता, धूर्तपन, ठगाई, (हे१, ३५; कुमा ; भा १२)।

धुत्ती स्त्री [धूर्ता] धूर्त स्त्री, (वज्जा १०६)।

धुत्तोरय न [धत्तूरक] धतूरे का फल; (वज्जा १०६)।

धुद्धुभ (भा) सक [शब्दाय्] आवाज करना। धुद्धुभइ; (हे ४, ३६६)।

धुम्म पुं [धूम्र] १ धूम, धुआँ। २ वर्ण-विशेष, कपोत-वर्ण; ३ वि कपोत वर्ण वाला। स्त्री धुम्मी [दिक्षा] एक राजधानी ; (ती १२, ६०)।

धुर न. देखो धुरा ; (उत्त ६ ६३)।

धुर पुं [धुर] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष ; (ठा २, ३)। २ कर्णधार, खेवा; 'जस्स कतत्तम्मि वहियत्तवेडाइं तस्स धुरवत्तं तव्वं, पुणरवि देउं धुरावं" (सुपा ४२६)।

धुरंधर वि [धुरन्धर] १ भार को वहन करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान्, भार-वाहक; (से ३, ३६)। २ नेता, मुखिया, अगुआ ; (सण ; उत्तर२०)। ३ पुं. गाड़ी, हल आदि खींचने वाला बैल ; (दि ८, ४४)।

धुरा स्त्री [धुर्] १ गाड़ी वगैरः का अग्र भाग, धुरी ; (उव)। २ भार, बोझ ; ३ चिन्ता ; (हे १, १६)। °धार वि [°धार] धुरा को वहन करने वाला, धुरन्धर ; (पउम ७, १७१)।

धुरी स्त्री [धुरी] अग्र, धुरा, गाड़ी का जुआ ; (अणु)।

धुव सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना। धुवइ, धुवंति ; (हे ४, २३८ ; गा ४३३ ; सिद्धह८)। वह—धुवंत ; (सि ८, १०२)। कवह—धुव्वंत, धुव्वमाण ; (गा ६६३ ; से ६, ४६ ; वज्जा २४ ; वि ४३८)।

धुव सक [धू] कँपाना, हिलाना। धुवइ ; (हे४, ६६ ; षट्)। कर्म—धुव्वइ; (कुमा)। कवह—धुव्वंत; (कुमा)।

धुव वि [ध्रुव] १ निश्चल, स्थिर ; (जीव३)। २ नित्य, शाश्वत, सर्वदा-स्थायी ; (ठा१, ३; सुम२, ४)। ३ भाग्यशाली ; (सुम २, १)। ४ निश्चित, नियत ; (भाचा)। ५ पुं. मेरु के शरीर का आवर्त ; (कुमा)। ६ मोक्ष, मुक्ति ; ७ संयम, इन्द्रियादि-निग्रह; (सुम १, ४, १)। ८ संसार; (अणु)। ९ न. मुक्ति का कारण, मोक्ष-मार्ग ; (भग)। १० कर्म ; (अणु)। ११ अत्यन्त, अक्लिष्ट, "धुवलोहियट्ठ"

धूअ सक [धूपय्] धूप देना । धूवेउ, धूवेज्ज ; (आचा २, १३)। वकृ—धूवेंत ; (ति ३६७)।

धूअ पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धुआं ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देवपूजा आदि में जलाया जाता है ; (राजा १, १ ; सूत्र २, ६६)। °घड़ा स्त्री [°घटी] धूप-पात्र, धूप से भरी हुई कलसी ; (जं १)। °जंत न [°यन्त्र] धूप-पात्र ; (दे ३, ३६)।

धूअण न [धूपन] १ धूप देना ; २ धूप-पात्र, गंध की निवृत्ति के लिए किया जाता धूप का पात्र ; "धूवणे तिविहे व कम्मी-वक्खिवणे" (ठा ३, ३)। °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई बत्तिका, अगरबत्ती ; (कप्प)।

धूविय वि [धूपित] १ तापित, गरम किया हुआ ; २ दिया आदि से ढीला हुआ ; (चारु ६)। ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; पंचव १)।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, हैयर् पाण्डु वर्ण ; २ वि. धूसर रंग वाला, हैयर् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्राप्र ८४ ; सण ७४ ; से ६, ८२)।

धूसरिय वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पाम ; भवि)।

धे सक [धा] पान करना । धेइ ; (संक्षि ३३)। "धेदि धेनं" (प्रप्र १००)।

धेय) वि [धेय] ध्यान-योग्य ; (अजि १४ ; आचा
धेज्ज) १, १)।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य ; (आचा १, १)। धेज्जं न [धैर्य] धीरज, धीरता ; (पंच ३, ३)।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ ; २ सवत्सा गौ ; ३ दूध देने वाली ; (हे ३, २६ ; कुप्र)।

धेर देखो धीरत्थेर ; (निचू १०)।

धेवय पुं [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवयस्सरसंजोगा सव्वंति कयंतिया" (ठा ७—पत्र ३६३)।

धोअ सक [धावय्] धोना, शुद्ध करना, पखारना । धोएज्जा ; (आचा)। वकृ—धोयंत ; (कुमा ८५)।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित ; (से १, २५ ; ७, २० ; ८, ३१६)।

धोअग वि [धावक] १ धोने वाला, २ पु. धोबी, (ठा ५, ३३३)

धोअण वि [धावन] धोना, प्रक्षालन, (आचा २० ; स्वप्न १८ ; प्रभा ३४१)।

धोएज्ज देखो धोअ=धाव् ; (आचा १८)।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरीण, भार-वाहक, २ समर्थ, नेता, धुरन्धर ; (वव १)।

धोरण न [दे] गति-चातुरी ; (गौड)।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, णी] पंक्ति, कतार ; (कुमा
धोरणी) ४८ ; गउड ; पउ)।

धोरिय देखो धोज्ज ; (कुमा ४८०)।

धोरिणिणी स्त्री [धोरणिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री ; (राजा १, १—पत्र ३१)।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज ; (कुमा ६६०)।

धोव देखो धोअ=धाव् । धवइ ; (ठा १२० ; वि ७८)। धोवेज्जा ; (आचा)। वकृ—धोवंत ; (गउड)। कवकृ—धोव्वंत, धोव्वमाण, (पउम १०, ४४ ; राजा १, ८)। कृ—धोवणिय ; (राजा १, १६)।

धोवय देखो धोवग ; (दे ८, ३६)।

ध्रुव पुं (अक) प्र [ध्रुवम्] अवश्य, स्थिर ; (हे ४, ४१८)।

इअ तिरिआइअसद्दमहण्णवम्मि धमराइ-
सद्दसंकलणो छव्वीसमो तरंगो समत्तो ।

न देखो णा[1] ।

---

१ प्राकृत भाषा में नकारादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में सिद्ध का सिद्धम् के 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है ; (प्राप्र २, १२ ; दे ६, ६३ टी ; हे १, २२८ ; षड् १, १, ६३), और प्राकृत-व्याकरण-ग्रन्थों में दोनों शब्द के प्रयोग पढ़े जाते हैं। इससे ऐसे सब शब्द संकलन के प्रकरण में आ जाने से कहीं पर पुनरावृत्ति का दोष में पुस्तक का कलेवर बढ़ना उचित नहीं समझा गया है। पंचम-वर्ण संकलन के प्रकरण में आदि के 'ण' के स्थान में सर्वत्र 'न' समझ लें। यहां कारण है कि नकारादि शब्दों के भी प्रायः सभी संकलन पंचम वर्ण में ही दिये गये हैं ।

(ठा६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी, (पव१)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी; (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष; (अणु)। °मग्ग पु [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग; (सूअ १, ४, १)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष, (सम २६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति; ३ शाश्वत युग; (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२; ३४७; म २७१)। २ वि. धोने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी, (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ, (सत्ति ३६)।

धुव्वंत देखो धुव=धू।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुसम वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ=धुत; (आचा; दस ३, १३; पि ३११, ३६२, सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव=धूप, (सुपा ६६७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री; (हे २, १२६, प्राप्र ६४)।

धूण पु [दे] गज, हाथी; (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित, (कुप्र ६८)।

धूम पु [धूम] १ धूम, धूआँ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति, (पणह २, १)। °इंगाल पु ब. [°अङ्गार] द्वेष और राग, (आव २८८ भा)। °केउ पु [केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३; पणह १, ४, सूत्र)। २ वह्नि, अग्नि, आग; (उप १२२)। ३ असुर जाति का मुकुट-भूषण-चूड़ा, (गउड)। °चारण पु [चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष, (गच्छ २)। °जोणि पुं [°योनि] बादल, मेघ, (पाअ)। °द्धय देखो °द्धय, (राज)। °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना, (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वह्नि, अग्नि, (पाअ, उप १०३१ टी)। °पभा, °पहा स्त्री [°प्रभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (ठा ७ टी)। °लि वि [°लि] धूआँ वाला, (उप २६८ टी)। °वट्टअ पुंन [°पटल] धूम-समूह, (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] धूसर वर्ण वाला; (ठाणा ५, १)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का ऊर्ध्व भाग, (ठा ४, २)।

धूमंग पु [दे] भ्रमर, भ्रमरा; (दे ५, ६७)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान; (सूअ २, १)।

धूमहर न [दे] रसोई, रसोई-घर; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पु [दे] १ तड़ाग, तालाब; २ महिष, भैंसा; (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री [दे] कृत्तिका नक्षत्र; (दे ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] घर में डाल कर आग जलाने में जो कच्चा रह जाय वह; (निचू १५)।

धूमगहिसी स्त्री [दे] रसोई, कुहरा, कुहासा; (दे ६१; पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ रसोई, कुहासा; (दे ५, ६१)। तुहिन, हिम; (षड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] रसोई, कुहासा; (दे ५, ६
धूमा } ठा १०)।

धूमाअ अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। धूम की तरह आचरण करना। धूमायमाण; (ठ ८, १ गउड)। वकृ—धूमायंत; (गउड; स १, ८

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी; (ठा ७, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त; (पिंड)। २ हुआ (शाक आदि); (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] रसोई, कुहासा; (दे ५, ६१; ठा १०; भग २, ७; अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा; (दे ५, ६२)।

धूरिअयट्ट पु [दे] अश्व, घोड़ा, (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि; (हे ४, ४२२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु, (गउ
धूली } प्राप्र १८; ८४)। °कंथ, °कलंब पु [°कद
मोक्ष ऋतु में खिलने वाला कदम्ब-वृक्ष; (कुमा)।
वि [°जड्ड] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह; (
१०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से मलिन; (
७७४, ८२६)। °धोअ वि [°धौत] धूल को
करने वाला, (सुपा ३३६)। °पंथ पु [°पथ]

धूसर वर्ण; (प्रवि २४ टी)। °त्तिम पु [°र्य] धूसर वर्ण; (भग)। °रेयर न [°रेतर] धूसर से भिन्न रंग के धूसर का एक प्रकार के वस्त्र; (उत्त २६१ टी)।

धूसरीकृ पु [कृ] भस्म, धूल; (कुमा १, ६१)।

धूसर न [धूसर] धूसरता; (कुमा १, ६१)।

धूसर पु [धूसर] १ कुलिंग द्रव्य से उत्पन्न धूल; २ कुलिंग द्रव्य विशेष, जो देवकुल आदि में लगाया जाता है; (आचा १, १; कुप्र ३, ६६)। °घडा स्त्री [°घटी] धूसरक, धूल से भरी हुई कलशी; (उत्त १)। °रेयर न [°रेतर] धूसरक; (कुमा ३, ३५)।

धूसरेय न [धूसरेय] १ धूल देना; २ धूसरक, लोक की निन्दा किए जाने धूल का एक; "धूसरेयं विसज्जे य दक्खो कम्मीणो" (उत्त ३, ६)। °यट्ठि स्त्री [°यष्टि] धूल से भरी हुई यष्टिका, लाठी; (उत्त)।

धूसरेय वि [धूसरित] १ धूसरित, धूल लिप्त हुआ; २ धूल आदि से लिप्त हुआ; (आचा ६)। ३ धूल लिप्त हुआ; (सुर ३, ७१)।

धूसर पु [धूसर] १ हलका पीला रंग, हैवर् धातु वर्ण; २ वि. धूसर रंग वाला, हैवर् धातु वर्ण वाला; (कप्र ८४; स ३४४; गा ६, ८२)।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला; (पउम ८०)।

धेअ [धा] वस्तु, द्रव्य। °घर; (संक्षि ३३)। °घरिणी (प्रउ १००)।

धेअ) वि [धेय] आत्मलीन; (अभि १४; धम्म धेय) १, १)।

धेअ न [धेय] धारण करने योग्य; (धम्म १, १)।

धेअ न [धैर्य] धीरज, धीरता; (पउ २, २)।

धेणु स्त्री [धेनु] १ सवत्सा गौ; २ वत्सा गौ; ३ दूध देने वाली; (हे ३, २६; षट्)।

धेरे देखो थेरेर्य; (सिरि १७)।

धेवर पु [धैवत] स्वरविशेष; "धैवतस्तालंकाया भवति कलिका" (उप ७—मन ३६३)।

धेव्व पु [धाव्य] धोना, शुद्ध करना, पखारना। धोएजा, (आचा)। कृ—धोएंत, (उत्त ८५)।

धोअ वि [धौत] धुला हुआ, प्रक्षालित; (हे १, २६; ७, २०, कुप्र ३६८)।

धोअण वि [धावक] १ धोने वाला, २ धु. धोबी, (हे कृ ३३३)

धोअण वि [धावत] धोया, प्रक्षालित, (आ २०, स्वप्न १८; प्रभा ३४)।

धोएज देखो धोअ=धौत, (कुप्र १८)।

धोएज वि [धुर्य] १ धुरा, गाड़ी-चक्र, २ बलीवर्द, बैल, उक्षक; (पव १)।

धोरण न [दे] गति-चतुर्थ; (षड्)।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, णी] पंक्ति, श्रेणी; (कुप्र धोरणी) ४६; सुर, षट्)।

धोरिय देखो धोरेय; (कुप्र ३७१)।

धोरणिपत्ती स्त्री [धोरणिकिलिका] वेणु-विशेष में उत्पन्न लता; (राज १, १—पत्र ३१)।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोरेज्ज; (कुप्र ६६०)।

धोव देखो धोअ=धाव्। धोना; (भ १६०; सि ७८)। °वेयव्व; (भग)। कृ—धोवंत, (सुर)। कवा—धोव्वंत, धोव्वमाण; (पिंग १०, ४४; राज १, ८)। कृ—धोवणिय; (राज १, १६)।

धोवय देखो धोवग; (हे ८, ३६)।

धुव (अप) स [ध्रुवम्] अवश्य, निश्चय; (हे ४,४१८)।

इअ विरइयाइ अलद्दमहण्णवम्मि धम्मगह-
सहसंकटयो छत्तीसाओ तरंगो समत्तो।

न देखो गा[1]।

---

१ प्राकृत भाषा में नकारादि तथा णकारादि होते हैं, अर्थात् कहीं के स्थान में लिख या विकल्प से 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है; (प्राप्र २,४१; हे १, ६३ टी; हे १, २२६; षट् १, ३, ४३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में वैसी लाइ के प्रयोग पाये जाते हैं। इसके लिये सब शब्द संकलन के अवसर में उन उन शब्दों पर पुनरावृत्ति का दोष से बचने के लिये यहाँ पर पुनरावृत्ति का दोष नहीं समझा गया है। संकलन के प्रारम्भ में जहाँ के 'ण' के स्थान में सर्वत्र 'न' लिखा है। यहाँ कारण के कि नकारादि शब्दों की प्रायः णकारादि रूपों में ही सिद्धि गई है।

(ठा६)। °कम्मिय पु [°कार्मिक] लोहार आदि शिल्पी, (ठा ११)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी, (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आत्मघात, मारण करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, (भग)। °मग्ग पु [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग, (सूअ १, ८, १)। °राहु पु [°राहु] राहु-विशेष, (सम २६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति; ३ गार्धपक्ष; (आचा)। देखो धुअ=धू।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२; ३४७, स २७२)। २ वि. कँपाने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी; (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ; (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो धव्व=धू।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ=धुत; (आचा; दस ३,१३, पि ३१२; ३६२; सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव=धूप; (सुपा ६६७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री; (हे २, १२६; प्राप्र ६४)।

धूण पुं [दे] गज, हाथी; (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित; (कुप्र ६८)।

धूम पु [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति; (पणह २, १)। °इंगाल पु न [°अङ्गार] द्वेष और राग, (आव २८८ भा)। °केउ पु [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३, पणह १, ४; ओघ)। २ वह्नि, अग्नि, आग; (उत्त२२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज, (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि विशेष, (गच्छ २)। °जोणि पुं [°योनि] बादल, मेघ, (पाअ)। °द्धअ देखो °द्धय; (राज)। °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना; (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वह्नि, अग्नि; (पाअ; उप १०३१ टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवीं नरक-पृथिवी, (ठा ७; पाअ)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला, (उप २६४ टी)। °वट्ट पुं न [°पट्ट] धूम-समूह, (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] धूम्र वर्ण वाला, (आचा १, १०)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का ऊर्ध्व भाग, (ठा ४, १)।

धूमंत पुं [दे] भ्रमर, भौंरा; (दे ५, ६०)।

धूमण न [धूमन] धूम-करण, (सूअ २, १)।

धूमहर न [दे] गवाक्ष, वातायन; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पु [दे] १ नवाग, नकारा; २ महिष, भैंसा; (दे ५, ६१)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री [दे] दुन्दिभ नकारा; (दे ५, ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] गर्व में आकर के अंग झुकने से भी जो कन्धा रह जाय वह, (निचू १५)।

धूमरहिसी स्त्री [दे] नोहार, कुहरा, कुहासा; (दे ५, ६१; पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नोहार, कुहरा; (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम, (पड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१;
धूमा } ठा १०)।

धूमाय अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरण करना। धूमायमाण; (स ८, १६, गउड)। वकृ—धूमायंत, (गउड; स १, ८)।

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (पव ७५, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त; (पिंड)। २ छौंका हुआ (शाक आदि), (द ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१; पव, ठा १०, भग ३, ७, अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे ५, ६२)।

धूरिअयट्ट पु [दे] अश्व, घोड़ा, (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि, (हे ४, ४३२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु; (गउड;
धूली } प्राप्र २८; ८४)। °कंब, °कलंब पु [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु में विकसने वाला कदम्ब-वृक्ष, (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह, (स १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से मलिन, (स ७७४, ८२६)। °धोड वि [°धोत] धूल का नाश करने वाला, (सुपा ३३६)। °पंथ पु [°पथ] धूलि-

धूसर वर्ण ; (प्रति २४ टी) । °चम्मि पुं [°वर्म] धूसर वर्ण ; (आचा) । °हर न [°गृह] वर्ण धातु से पोते हुए घर जो धूसर रंग के बनते हैं वह ; (उत्त १८७ टी) ।

धूसरट्ठ [°दे] अश्व, घोड़ा ; (दे ५, ६१) ।

धूसव [धूपय] धूप करना । धूसवेज्ज ; (आचा २, १३) । वह—धूपयेत ; (ति ३६७) ।

धूअ [धूत] १ कम्पित, हिलता हुआ या उत्क्षिप्त धूल ; २ कम्पित किया हुआ, जो देव-पूजा आदि में जताया जाता है ; (आचा १, १ : सूत्र ३, ६६) । °अड्डा स्त्री [°यष्टि] धूतक, धूप में सुखे हुए कपड़ों ; (उत्त १) । °जंत न [°यन्त्र] धूप-पात्र ; (दे ३, ३६) ।

धूअण न [धूपन] १ धूप देना ; २ धूप-पात्र, गंध की निवृत्ति करना किया जाता धूप का पात्र ; "धूवणे तिन्नऽहो वच्चे सेज्जमूत्तनिवारणे" (उत्त ३, ६) । °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई बत्ती, अगरबत्ती ; (कप्प) ।

धूमिय वि [धूमित] १ तापित, गरम किया हुआ ; २ धूम से भरा हुआ ; (पउम ६) । ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; गच्छ १) ।

धूमर पुं [धूम्र] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण ; २ वि. धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्राप्र ८४ ; पि ५७८ ; से ६, ८२) ।

धूमरिय वि [धूम्रित] धूसर वर्ण वाला ; (पउम ; सुपा) ।

धूव [धाव्] धातु करना । धोवे ; (संक्षि ३३) । °धोवे" (कुप्र १००) ।

धोय) वि [धौत] स्वच्छ-शोध्य ; (अजि १४ ; राजा ६) । धोज्ज) १, १) ।

धोअव्व वि [धौतव्य] धोना करने योग्य ; (राजा १, १) ।

धोअव्व न [धौत्य] धोवन, धोवना ; (पाप्र २, २) ।

धोणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ ; २ स्वच्छा गौ ; ३ दुधारू गाय ; (हे ३, २६ ; षट्) ।

धोय देखो धौत=धौत ।

धोयण न [धावन] स्नान-विधि ; "धोयणसत्तीकाउं सवंति कल्लाणिं" (उप ७—पत्र ३८३) ।

धोव्व क [धाव्] धोना, शुद्ध करना, पखारना । धोव्वइ ; (भवि) । वह—धौयते ; (हुआ ८६) ।

धोव वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित ; (सं १, २६ ; ७, २० ; सा ३६८) ।

धोवण वि [धावक] १ धोने वाला ; २ पु. धोबी ; (उप पृ ३३३)

धोवण न [धावन] धोना, प्रक्षालन, (श्रा २० , स्वप्न १८ ; सार ३४७) ।

धोवय देखो धोअव्वीय ; (सा १८) ।

धोव्वड वि [धुर्व] १ धुरीण, भार-वाहक ; २ अनुभवी, नेता, धुरन्धर ; (वव १) ।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य ; (औप) ।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, णी] पंक्ति, कतार ; (सुपा धोरणी) ४६ ; भवि ; पउ) ।

धोरिय देखो धोव्व ; (सुपा २८२) ।

धोरणिणी स्त्री [धोरणिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री ; (राजा १, १—पत्र ३७) ;

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोव्व ; (सुपा ६२०) ।

धोव देखो धोअ=धाव् । धोवइ ; (स १२७ ; वि ७८) । धोवेज्जा ; (आचा) । वह—धावंत ; (भवि) । कृवह—धोव्वंत, धोव्वमाण ; (पउम १०, ४४ ; राजा १, ८) । कृ—धोवणिय ; (राजा १, १६) ।

धोवय देखो धोवण ; (दे ८, ३६) ।

ध्रुवु (अप) अ [ध्रुवम्] अवश्य, स्थिर; (हे ४,४१८) ।

इअ सिरिराअसहमहण्णवम्मि धम्मरायसंवण्णणो छत्तीसइमो तरंगो समत्तो ।

न देखो णा[1] ।

---

१ प्रस्तुत भाषा में नकारादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् शब्दों के नकार के स्थान में नियम से 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है ; (प्राप्र २, १२ ; हे १, ६३ दो ; हे १, २३८ ; षट् १, ३, ५३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में दोनों तरह के प्रयोग पाये जाते हैं । इससे ऐसे सब शब्द शब्दकोष के प्रकाश में आ जाने से वहाँ पर पुनरावृत्ति कर बार्ता में पुस्तक का कलेवा बढ़ना उचित नहीं समझा गया है । पाठकगण शब्दकोष के प्रकाश में शब्दों के 'न' के स्थान में सर्वत्र 'ण' समझ लें । यहाँ कारण है कि नकारादि शब्दों के भी प्रायः णकारादि शब्दों में ही दिये गये हैं ।

(ठा६)। °कम्मिय पु [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी, (उत्त१)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी, (आचा)। °णिग्गह पु [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग; (सूम १, ४, १)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष, (सम २६)। °वण्ण पु [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति; ३ साधन वर्ग; (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२; ३४७; स २७२)। २ वि कँपाने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी; (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ, (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो धव=धू।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ=धुत; (आचा, दस ३,१२, पि ३१२; ३६२; सूम १, ४, २)।

धूअ देखो धूव=धूप, (सुपा ६५७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री, (हे २, १२६, प्राप्र ६४)।

धूण पुं [दे] गज, हाथी; (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित, (कुप ६८)।

धूम पुं [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति, (पण्ह २, १)। °इंगाल पु न [°अङ्गार] द्वेष और राग, (ओघ २८८ भा)। °केउ पु [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, (ठा २, ३, पण्ह १, ४; ओप)। २ वह्नि, अग्नि, आग, (उत्त२२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज, (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष, (गच्छ २)। °जोणि पु [°योनि] बादल, मेघ, (पाम)। °द्धय देखो °द्धय, (राज)। °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना; (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वह्नि, अग्नि; (पाम; उप १०३१ टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवीं नरक-पृथिवी, (ठा ७; प्राक)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला, (उप २६४ टी)। °वट्टल पुन [°पटल] धूम-समूह, (हे १, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्ण वाला, (आचा १, १)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का ऊर्ध्व भाग, (ठा ८, ३)।

धूमंग पु [दे] भ्रमर, भौंरा; (दे ५, ५७)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान, (सूम २, १)।

धूमहार न [दे] गवाक्ष, वातायन; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पु [दे] १ तडाग, तलाव, २ महिष, भैंसा; (दे ५, ६१)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री [दे] कृत्तिका नक्षत्र; (दे ५, ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] गर्व में आकर के आग लगाने के भी जो कच्चा रह जाय वह, (निचू १५)।

धूमगहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा; (दे ५, ६१, पाम)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम, (षड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१,
धूमा } ठा १०)।

धूमाअ अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरना। धूमायमाण; (स ८, १६; गउड)। वकृ—धूमायंत, (गउड; सं १, ८)।

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (पउम ७५, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त, (पिंड)। २ क्लेश हुआ (शाक आदि), (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१; पाम, ठा १०, भग ३, ७, अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे ५, ६२)।

धूरिअवह पु [दे] अश्व, घोड़ा, (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि, (हे ४, ४३२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु; (गउड;
धूली } प्राप्र २८; ८४)। °कंब, °कलय पु [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु में विकसने वाला कदम्ब-वृक्ष, (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह, (सम १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से लिप्त (ठा ७७४, ८२६)। °धोअ वि [°धौत] मल को दूर करने वाला, (सुपा ३३६)। °पंथ पु [°पथ] रेणु-

धूलि सर्व ; (औप २४ टी) । °वरिस पु [°वर्ष] धूल की वर्षा ; (आचा) । °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लड़के लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह; (उत्त १६७ टी) ।

धूलोवट्ट पुं [दे] भट, योद्धा ; (दे ६, ६१) ।

धूव सक [धूपय] धूप करना । धूवेज्ज ; (आचा २, १३) । वकृ—धूवेंत ; (ति ३६७) ।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है ; (आचा १, १ ; सूत्र ३, ६६) । °घड़ा स्त्री [°घटी] धूप-पात्र, धूप से भरी हुई कलशी ; (जं १) । °जंत्र न [°यन्त्र] धूप-पात्र ; (दे ३, ३६) ।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना; २ धूप-पात्र, गंध की निहति के लिए किया जाता धूम का पात्र; "धूवणे तिविधे य वत्थी कम्मम्मिवे" (ठा ३, ६) । °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई बत्तीस, अगरबत्ती ; (पव्व) ।

धूवित्त वि [धूपित] १ तापित, गरम किया हुआ ; २ हिंग आदि से छौंका हुआ ; (आचा ६) । ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; गच्छ १) ।

धूसर पुं [धूसर] १ दबका पीला रंग, हैवर् पाण्डु वर्ण; २ वि. धूसर रंग वाला, हैवर् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्राप्र ८४ ; गा ७७४ ; से ६, ८३) ।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पाअ ; सुर) ।

धूसर [धा] धारण करना । धेइ ; (संक्षि ३३) । देहि धोत्तं" (उत्त १००) ।

।) वि [धौत] धोया-धोया ; (भवि १४ ; आचा) ।

र वि [धेय] धारण करने योग्य ; (आचा १, १) ।

र न [धैर्य] धीरज, धीरता ; (पंच २, १) ।

स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ ; २ सवत्सा गौ ; ३ गाय ; (हे ३, २६; चंद) ।

°धोरेय ; (सिरि १७) ।

पुं [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवइयसरसमायो सवेति धेवओ" (ठा ७—पत्र ३६१) ।

क [धाव्] धोना, शुद्ध करना, स्वच्छ करना । धोएज्जा, (कुमा) । वकृ—धोयंत ; (सुर ८,) ।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित ; (से १, २६; ७, २० ; गा ३१६) ।

धोअग वि [धावक] १ धोने वाला, २ पु. धोबी ; (उत्त पृ ३३३)

धोअण वि [धावत] धोना, प्रक्षालन, (श्रा २० ; स्वप्न १८ ; आत्म ३४) ।

धोइअ देखो धोअ=धौत ; (गा १८) ।

धोज्ज वि [धूर्य] १ धुरा, भार-वाहक ; २ अश्वादि, घोड़ा, घुरन्धर ; (वज्ज १) ।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य ; (औप) ।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, °णी] पंक्ति, कतार ; (कुमा धोरणी) ४६ ; भवि ; पट्ट) ।

धोरिय देखो धोज्ज ; (कुमा २८२) ।

धोरुणिणी स्त्री [धोरुकिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री; (आचा १, १—पत्र ३१) ।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज; (कुमा ६३०) ।

धोव देखो धोअ=धाव् । धोवइ ; (से १६१ ; वि ७८) । °वेज्जा ; (आचा) । वकृ—धोवंत ; (भवि) । कवकृ—धोव्वंत, धोव्वमाण; (पउम १०, ४४ ; आचा १, ८) । कृ—धोवणिय ; (आचा १, १६) ।

धोवय देखो धोवग , (दे ८, ३६) ।

ध्रुवु (अक) अ [ध्रुवम्] अवश्य, निश्चय; (हे ४,४१८) ।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि धकाराइ-सद्दसंकलणो छत्तीसइमो तरंगो समत्तो ।

न देखो ण[1] ।

१ प्रकृत भाषा में नकारादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में सिर्फ या विकल्प से 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है, (प्राप्र ३,४२ ; हे १, २२६ ; षड् १, ३, ४३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में दोनों रूप के प्रयोग पाये जाते हैं। इसी लिये सब शब्द कहां के प्रकरण में आ जाने से वहीं पर पुनरुक्ति कर ग्रन्थों में पूरक का कहेना बहुत उचित नहीं समझा गया है। पकार-रूप व्यञ्जन के प्रकरण में आदि के 'न' के स्थान में सर्वत्र 'ण' समझे। यही क्रम [illegible]

(ठा६)। °कम्मिय पु [°कार्मिक] लोहार आदि शिल्पी, (उत्त१)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी; (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आत्मसंयम, मनःसंयम करने योग्य अनुष्ठान-विशेष; (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग, (सूअ १, ४, १)। °राहु पु [°राहु] राहु-विशेष, (सम २६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति, ३ शाश्वत यश, (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२, ३४७; स २७२)। २ वि धोने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी, (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ; (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो धव=धू।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ=धुत; (आचा, दस ३, १२, पि ३१२, ३६२, सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव=धूप; (सुपा ६६७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री, (हे २, १२६, प्राप्र ६४)।

धूण पु [दे] गज, हाथी; (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित, (कुप्र ६८)।

धूम पुं [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति, (पणह २, १)। °इंगाल पु न [°इङ्गार] द्वेष और राग, (ओघ २८८ भा)। °केउ पु [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३; पणह १, ४; ओप)। २ वह्नि, अग्नि, आग, (उत्त२२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज, (गउड)। °चारण पु [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष, (गच्छ २)। °जोणि पुं [°योनि] बादल, मेघ, (पाअ)। °ज्झय देखो °द्धय, (राज)। °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना; (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वह्नि, अग्नि; (पाअ; उप १०३१ टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवीं नरक-पृथिवी, (ठा ७; प्राक)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला, (उप २६४ टी)। °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह, (हे २, १८८)। °वण्ण वि [°वर्ण] धूसर वर्ण वाला, (आचा १, १०)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का ऊर्ध्व भाग, (ठा ४, २)।

धूयंग पु [दे] भ्रमर, भ्रमरा; (दे ५, ५७)।

धूयण न [धूमन] धूम-पान; (सूअ २, १)।

धूयहर न [दे] गवाक्ष, वातायन, (दे ५, ६१)।

धूयद्धय पु [दे] १ तडाग, तलाव; २ महिष, भैंसा; (दे ५, ६१)।

धूयद्धयमहिसी स्त्री [दे] कृत्तिका नक्षत्र; (दे ५, ६१)।

धूयपलियाम वि [दे] गर्त में डाल कर आग जलाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह, (निचू १५)।

धूयगहिसी स्त्री [दे] लोहार, कुदार, कुदाला; (दे ५, ६१, पाअ)।

धूयरी स्त्री [दे] १ लोहार, कुदाला; (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम, (षड्)।

धूयसिहा } स्त्री [दे] लोहार, कुदाला; (दे ५, ६१,
धूया } ठा १०)।

धूयाअ अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरण करना। धूयायमाण, (स ८, १६, गउड)। वकृ—धूयायंत, (गउड, सं १, ८)।

धूयाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (पउम ७५, ४७)।

धूयिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त, (पिंड)। २ क्लेदित हुआ (शाक आदि), (दे ६, ८८)।

धूयिआ स्त्री [दे] लोहार, कुदाला, (दे ५, ६१; पाअ, ठा १०; भग ३, ७, अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे ५, ६२)।

धूरिअयट्ट पु [दे] अश्व, घोड़ा, (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि, (हे ४, ४३२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु, (गउड,
धूली } प्राप्र २८; ८४)। °कंप, °कलय पु [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु में विकसने वाला कदम्ब-वृक्ष, (कुमा)। °जल्ल वि [°जल्ल] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह, (ठा १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से लिप्त, (पाअ ७७४, ८२६)। °धोअ वि [°धौत] धूल का मार्जन करने वाला, (सुपा ३२६)। °पंथ पु [°पथ] धूलि

धूअ वर्ग ; (ओघ २४ टी) । °चरित्त पुं-[°चर्या] धूर्त की चर्या ; (आचा) । °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लुहार लोग जो धूप का घर बनाते हैं वह; (उत्त १६७ टी)।

धूलीवट्ट पुं [देश] मत्त, पोंगा ; (दे १, ६१)।

धूव सक [धूपय्] धूप करना । धूवेज्ज ; (आचा २, १३)। वकृ—धूवेंत ; (नि ३१७)।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूप ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है ; (णाया १, १ : सूत्र २, ६६)। °घडी स्त्री [°घटी] धूप-दान, धूप से भरी हुई कलशी ; (जं १)। °जंत न [°यन्त्र] धूप-दान ; (दे ३, ३६)।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना; २ धूप-दान, गंध की सिद्धि के लिए किया जाता धूप का पुंज; "धूवणे तिविधे ण कप्पति डज्झमाणे" (दश ३, ६)। °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई बत्ती, अगरबत्ती ; (कप्प)।

धूविय वि [धूपित] १ सुगंधित, गन्ध किया हुआ; २ जिन भगवान् के सामने धूप किया हुआ ; (पंच ६)। ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; पव्व १)।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण; २ वि. धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्रज्ञा ८४ ; सं ७७४ ; सं २, ८३)।

धूसरिय वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पउम ; कप्पू)।

धे सक [धा] धारण करना । धेइ ; (संक्षि ३३)। °पीणी (कुप्र १००)।

धेज्ज) वि [धेय] धारणीय ; (सूत्र १४ ; पव्व धेज्ज) १, १)।

धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धारण ; (पाअ १, २)।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ ; २ सवत्सा गौ ; ३ दूध वाली गाय ; (दे ३, २६ ; षड्०)।

धेर देखो थेर=धैर्य ; (निचू १०)।

धेवर पुं [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवतसरसमुप्पन्ना सव्वोसहिसंपन्ना" (ठा ७—पत्र ३८१)।

धोअ सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना, पखारना । धोएज्ज, धोए ।। वकृ—धोअंत, (सुर ८५)।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित ; (सं १, २६ ; ७, २० , सा ३६६)।

धोअग वि [धावक] १ धोने वाला , २ पु. धोबी, (उप ६ ३३३)

धोअण न वि [धावन] धोना, प्रक्षालन ; (ओ २० , स्वप्न १८ ; आचा ३४१)।

धोइअ देखो धोअ=धौत ; (सा १८)।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरीण, भार-वाहक ; २ समर्थ, नेता, मुखिया ; (वव १)।

धोरण न [दे] गति-चतुर्थ ; (सीता)।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, णी] पंक्ति, कतार ; (सुर धोरणी) ४६ ; मोह ; पउ)।

धोरिय देखो धोज्ज ; (सुर ३८७)।

धोरिणिया स्त्री [धोरणिका] देव-विमान में उत्पन्न रत्न; (राय १, १—पत्र ३७)।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज, (सुर ६६०)।

धोव देखो धोअ=धाव् । धवइ ; (स १६७ ; सि ४८)। °वेज्जा ; (आचा)। वकृ—धोवंत, (नंदि)। कवकृ—धोव्वंत, धोव्वमाण, (पउम १०, ४४ ; सुपा १, ८)। कृ—धोवणिय ; (सुपा १, १६)।

धोवय देखो धोवग ; (दे ८, ३६)।

धुवु (उप) न [ध्रुवम्] अवश्य, निश्चय; (हे १, ६७)।

इस प्रकार पाइअसद्दमहण्णवम्मि धकारादि-सद्दकडणी समत्ता समत्तो तदणो वंजणो ।

न देखो णा[1]।

---

[1] प्रस्तुत कोष में नकारादि शब्द अकारादि क्रम से दिये गये हैं, अर्थात् अनि के अनन्तर अनि न देकर नि के पश्चात् से 'न' इत्यादि आकारादि का सन्निवेश किया है, (उदा १, ८१ ; हे १, १३ टी ; हे १, १३६ ; षड् १, ३, ११), और प्रस्तुत-कोष-रचयिता ने ऐसा क्रम ही क्यों रखा है ? इसके लिये यह कारण बताया जा सकता है कि प्रस्तुत कोष में अन्त्य में नहीं पर पूर्वानुपूर्वी का क्रम में पुनरुक्त का दोषाभाव बताया इत्यादि अनेक कारण हैं। परन्तु यह कारण के प्रस्तुत में अनि के 'न' के स्थान में नहीं रखा गया है। यह बताना है कि अकारादि क्रम में प्रस्तुत प्रकरण में क्या है ? लिखा गया है ।

(ठा६)। °कम्मिय पु [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी, (वव १)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी; (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष; (अणु)। °मग्ग पु [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग, (सूअ १, ४, १)। °राहु पु [°राहु] राहु-विशेष, (सम २६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति; ३ गाधक योग; (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२; ३४७; स २७२)। २ वि. धोने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी; (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ; (सण्णि ३६)।

धुव्वंत देखो धव=धू।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ, (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ=धुत; (आचा; दस ३, १२; पि ३१२; ३६२; सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव=धूप; (सुपा ६५७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री; (हे २, १२६; प्राप्र ६४)।

धूण पुं [दे] गज, हाथी; (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित; (कुप्र ६८)।

धूम पु [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति, (पण्ह २, १)। °इंगाल पु न. [°अङ्गार] द्वेष और राग, (ओघ २८८ भा)। °केउ पुं [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष; (ठा २, ३; पण्ह १, ४; ओघ)। २ वह्नि, अग्नि, आग; (उप २२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज, (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष, (गच्छ २)। °जोणि पुं [°योनि] बादल, मेघ, (पाअ)। °प्पभ देखो °द्धय, (राज)। °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना; (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वह्नि, अग्नि; (पाअ; उप १०३१ टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवीं नरक-पृथिवी, (ठा ७; प्राक)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला, (उप २६४ टी)। °वट्टअ पुंन [°पटक] धूम-समूह, (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] धूसर वर्ण वाला, (आचा १, १०)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का ऊर्ध्व भाग, (ठा ४, २)।

धूमंग पुं [दे] भ्रमर, भौंरा; (दे ५, ६०)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान; (सूअ १, १)।

धूमहार न [दे] गवाक्ष, वातायन; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पु [दे] १ तडाग, तलाव; २ महिष, भैंसा (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री. [दे] कृत्तिका नक्षत्र; (दे ६२)।

धूमपलिघाम वि [दे] गर्म में डाल कर आग बुझने से जो कच्चा रह जाय वह; (निचू १५)।

धूमगहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा; (दे ६१; पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१)। तुहिन, हिम; (षड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१
धूमा } ठा १०)।

धूमाय अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। धूम की तरह आचरना। धूमायति; (स ८, १६; गउड)। वकृ—धूमायंत, (गउड; स १, ८)

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (सम ७५, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त; (पिंड)। २ धूमा हुआ (शाक आदि), (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१; पाअ ठा १०; भग ३, ७, अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे ५, ६२)।

धूरिअवट्ट पु [दे] अश्व, घोड़ा, (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि, (हे ४, ४३२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु, (गउड,
धूली } प्राप्र २८; ८४)। °कंथ, °कलय पु [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु में विकसने वाला कदम्ब-वृक्ष, (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह, (बृह १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से लिप्त, (महा ७७४, ८२६)। °धोअ वि [°धौत] धूल का नाश करने वाला; (सुपा ३३६)। °पंथ पु [°पथ] रूढ़ि

धूसर वर्ण ; (भोज २४ टी) । °वत्ति पु [°वर्ति] धूसर की वर्ति ; (आचा) । °हर न [°गृह] वर्ति आदि से तैयार होने वाले धूसर रंग को धूसर रंग में डालने के लिए ; (उत्त १८७ टी) ।

धूलीवट्ट पुं [दे] मेघ, पोला ; (दे १, ६१) ।

धूव सक [धूपय] धूप करना । धूवेज्ज ; (आचा १, ११) । वकृ—धूवेंत ; (णि ३६७) ।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-मूर्ति आदि में जलाया जाता है ; (गाथा १, १ ; सुर ३, ६६) । °घड़ा स्त्री [°घटी] धूपदान, धूप में जली हुई कलसी ; (जं १) । °वंत न [°वन्त] धूपदान ; (दे ३, ३५) ।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना, २ धूप-दान, गंध की निवृत्ति के लिए किया जाता धूम का प्रयोग ; "धूवणे तिविहे व वत्थी कम्मनिग्घाए" (ठा ३, ३) । °घडि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की जली हुई वर्त्तिका, अगरबत्ती ; (कप्प) ।

धूवित्त वि [धूपित] १ तप्त, गरम किया हुआ ; २ गंध आदि से सौंधा हुआ ; (पाअ ६) । ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; पव्व १) ।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका मैला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण ; २ वि, धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्राप्र ८४ ; गा ७४४ ; से ६, ८२) ।

धूसरित्त वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पाअ ; नाट) ।

धे सक [धा] धारण करना । धेइ ; (संक्षि ३३) । °वेत्ता "धेत्ता चेव" (उत्त १००) ।

धेअ) वि [ध्येय] ध्यान-योग्य ; (अजि १४ ; गाथा धेज्ज) १, १) ।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य ; (गाथा १, १) । धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धीरता ; (पउ २, २) ।

धेणु स्त्री [धेनु] १ गौ-प्रजाति की ; २ सवत्सा गौ ; ३ दूध देने वाली गौ ; (हे ३, २६ ; षड्) ।

धेर देखो धीर=धैर्य ; (सिक १७) ।

धेवय पुं [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवयस्सरसंजोगा नवंति बहवो गिरा" (उत्त ७—पत्र ३६३) ।

धोव सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना, पखारना । धोएज्जा ; (आचा) । वकृ—धोवंत ; (सुर ८२) ।

धोव वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित, (से १, २६ ; ७, २० , गा ३१६) ।

धोवण न [धावक] १ धोने वाला, २ पु. धोबी ; (उप पृ ३३३)

धो अक सक [धावत्] धोना, प्रक्षालन ; (श्र २० , स्वप्न १८ ; आचा ३४०) ।

धोइअ देखो धो=धौत ; (गा १८) ।

धोएज्ज वि [धुर्य] १ धुरा के योग्य, भार-वाहक, २ बलवान, तेजस्वी, पुरुषार्थी ; (वव १) ।

धोरण न [दे] गति-विशेष ; (औप) ।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, णी] पंक्ति, श्रेणि ; (कुमा धोरणी) ४६ ; गउड, पउ) ।

धोरिय देखो धोएज्ज ; (कुमा १८१) ।

धोरिणिणी स्त्री [धोरणिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न गौ ; (ठाणा १, १—पत्र ३१) ।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोएज्ज ; (कुमा १६०) ।

धोव देखो धोअ=धाव् ; धावन ; (उ १६१ ; णि ७८) । °वेएज्जा ; (आचा) । वकृ—धावंत ; (गउड) । कवकृ—धोव्वंत, धोव्वमाण ; (पउम १०, ४४ ; गाथा १, ८) । कृ—धोवणिय ; (ठाणा १, १६) ।

धोवय देखो धोवग ; (हे ८, ३६) ।

ध्रुव (ध्रव) अ [ध्रुवम्] अवश्य, निश्चय ; (हे ४, ४१८) ।

इअ हिरिसाइअसद्दमहण्णवम्मि धम्माइ-
सद्दकलणो छत्तीसइमो तरंगो समत्तो ।

न देखो ण[1] ।

---

१ प्रस्तुत भाषा में नकारादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में निय या विकल्प से 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है, (प्राप्र २,४२ ; हे १, ६३ टी ; हे १, २२८ ; षड् १, ३, ६३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में ऐसी सब जगह के प्रयोग पढ़े जाते हैं। इसके ऐसे सब शब्द आकर के प्रकाश में आ जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति कर वर्णों में पुस्तक का कलेवर बढ़ाना उचित नहीं समझा गया है। पाठक-गण आकर के प्रकाश में आदि के 'न' के स्थान में सर्वत्र 'ण' समझ लें। यही कारण है कि नकारादि शब्दों को भी प्रकाश णकारादि शब्दों में ही दिये गये हैं।

(ठा६)। °कम्मिय पुं [°कार्मिक] लोहार आदि शिल्पी; (उत्त१)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी; (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष; (अणु)। °मग्ग पु [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग, (सूअ १, ४, १)। °राहु पु [°राहु] राहु-विशेष, (सम २६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति; ३ शोभन यश; (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२, ३४७, सं २७१)। २ वि धोने वाला, धुलाने वाला। स्त्री—°णी; (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ; (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो धुव=धू।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुव्व वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

धुव्व वि [धूत] देखो धुव=धूत; (आचा, दस ३,११, पि ३११, ३६१, सूअ १, ४, २)।

धुव्व देखो धुव=ध्रुव, (सुपा ६६७)।

धुव्वा स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री; (हे २, १२६, प्राप्र ६४)।

धुस पु [दे] गज, हाथी; (दे ५, ६०)।

धूमिय वि [धूमित] कलुषित, (कुप्र १८)।

धूम पुं [धूम] १ धुआं, धूंआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति, (पण्ह १, १)। °इंगाल पु न [°अङ्गार] द्वेष और राग, (आव २८८ भा)। °केउ पु [°केतु] १ व्यन्तरिक यह विशेष, (ठा १, ३; पण्ह १, ४; संक्षि)। २ अग्नि, अग्नि, आग, (उत्त१२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज, (गउड)। °चारण पु [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष, (गउड २)। °जोणि पु [°योनि] बादल, मेघ, (पाअ)। °द्धय देखो °द्धय, (स्त्र)। °दोस पु [°दोष] निदा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना; (आचा २, १, २)। °द्धय पुं [°ध्वज] बादल, अग्नि; (पाअ; ठा १०११ टी)। °पभा, °पहा स्त्री [°प्रभा] पांचवीं नरक-पृथिवी, (ठा ७, उत्त)। °लि वि [°लि] धूंआ करने वाला, (ठा २१८ टी)। °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह, (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्ण वाला; (आचा १, १०)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूंए का ऊर्ध्व भाग, (ठा४, २)।

धूमंग पु [दे] भ्रमर, भंवरा; (दे ५, ५०)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान; (सूअ २, १)।

धूमद्दार न [दे] गवाक्ष, वातायन; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पु [दे] १ तड़ाग, तलाव; २ मंदिर, मैं (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री [दे] कृत्तिका नक्षत्र; (दे ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] गर्त में डाल कर आग जलाने से जो कच्चा रह जाय वह, (निचू १५)।

धूमसाहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा; (दे ६१, पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१) तुहिन, हिम, (षड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा; (दे ५, ६
धूमा } टी १०)।

धूमाअ अक [धूमाय्] १ धूंआ करना। २ जलाना। धूम की तरह आचरण करना। धूमायमाण, (भग ८, १ गउड)। वकृ—धूमायंत, (गउड; भ १, ८

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पांचवीं नरक-पृथिवी; (ठा ७६, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त; (सिरि)। २ हुआ (शाक आदि), (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१; ठा १०; भग ३, ७, अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे ५, ६२)।

धूरिअवट्ट पु [दे] अश्व, घोड़ा, (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि, (हे ४, ४१२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु, (गउ
धूली } प्रासु २८, ८४)। °कंय, °कडय पु [°कद
श्रोत्र आदि में चिपकने वाला कर्म-दल, (कम)।
वि [°जड्ड] जिसके पैर में धूल लगी हो वह
१०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से धूस
७७४, ८२६)। °धोअ वि [°धोत] धो
करने वाला, (सुपा ३३६)। °पय पु [°पद]

धूल वर्ण ; (भवि २४ टी) । °चरिस पु [°चर्ष] धूल की वर्षा ; (स्वप्न) । °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लकड़े लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह ; (उत्त १८७ टी) ।

धूलीवट्ट पु [वट्ट] मत्स्य, मछली ; (दे १, ६१) ।

धूवण पुन [धूपन] धूप करना । धूवेज्ज ; (स्वप्न २, १३) । वह—धूवेत्तर ; (ति ३६७) ।

धूव पु [धूप] १ सुगन्धित द्रव्य से वासित धूआं ; २ सुगन्धित द्रव्य विशेष, जो देवपूजा आदि में जलाया जाता है ; (स्वप्न १, १ ; कुप्र ३, ६६) । °घडा सी [°घटी] धूपदान, धूआं से भरी हुई कलशी ; (उत्त १) । °वेत्त न [°वेत्र] धूपदान ; (दे ३, ३६) ।

धूवण न [धूपन] १ धूआं देना; २ धूपदान, गंध की निमित्त से किया जाता धूआं का धुआं; "धूवणे तिक्खुत्तो य वन्दति नमंसति" (उत्त ३, ६) । °घडि सी [°घटि] धूआं की बनी हुई घटिका, अगालदी ; (स्वप्न) ।

धूवित्त वि [धूपित] १ तापित, गरम किया हुआ; २ जिस को ठीक धूआं दिया हुआ ; (कप्प ६) । ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; स्वप्न १) ।

धूसर पु [धूसर] १ हलका पीला रंग, जैसे धान्य का; २ धूआं जैसा काला, जैसे धान्य का; ३ धूआं जैसा काला रंग ; (स्वप्न ७४ ; सुर १, ८६) ।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला, (पाअ ; स्वप्न) ।

धे [धा] धातु का । °त्त ; (सद्धि ३३) । °घेत्तूण" (उत्त १०८) ।

धेअ) वि [धेय] धारण करने योग्य ; (सूत्र १४ ; स्वप्न
धेज्ज) १, १) ।

धेणुआ वि [धेनुक] धारण करने वाला ; (स्वप्न १, १) ।

धेणू न [धैर्य] धीरज, धारण ; (स्वप्न १, १) ।

धेणू स [धेनु] १ गाय, दूध देने वाली गौ ; २ स्त्री ; (स्वप्न ३, २१ ; कुप्र) ।

°धेय देखो °धेअ ; (ठा ३, १) ।

धेवय पु [धैवत] स्वरविशेष ; "सोलसण्हं सरा णं कयरे धेवयसरे" ; (भग ७, ७, ३११) ।

धोअ [धाव्] धातु, दूध धोना, प्रक्षालन । धोएज्जा ; (कप्प ८) ।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित, (भग ७, १०, सु ३१६) ।

धोअण वि [धावक] १ धोने वाला, २ पु. धोबी ; (सुर ३३३)

धोअण वि [धावन] धोना, प्रक्षालन, (भग १०, १८ ; सम ३४) ।

धोएज्ज देखो धो=धावति ; (सम १८) ।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरा, गाड़ी का बोझ, २ बलवान, बलवत्तर ; (सुर १) ।

धोरण न [दे] गति, चाल ; (षड्) ।

धोरणि ! सी [धोरणि, णी] पंक्ति, कतार ; (सुर ३, ६६ , सुपा) ४८ , सण, पउ) ।

धोरिय देखो धोज्ज ; (सुपा १८०) ।

धोलिणिया सी [धोरणिका] उपरोक्त से स्वार्थ में क, (सम १, १ - पत्र ३१) ;

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज, (सुपा ६८०) ।

धोव देखो धोअ=धावत् । पत्त, (उत्त १४१, वि ४८) । °वेत्तए, (आचा) । °ण—अ यंत, (सुर १, ६) । °णा—धोवणिया, (सुर १, १८) ।

धोवण देखो धोअण ; (ठा ५, ३) ।

धोवय देखो धोअण, (ठा ५, ३) ।

धुधु (अप) म [धुधुस्] अपर, दूसरा, (हे ४, ४१८) ।

इस प्रकार पाइअसद्दमहण्णवांतर्गत धकारादि शब्दसंग्रह समाप्त हुआ ।

न देश्य शब्द ।

१ अपभ्रंश भाषा में व्यवहृत होने वाले संस्कृत शब्दों से भिन्न, अर्थात् ऐसे शब्द जो संस्कृत के व्याकरण के नियमों के अनुसार सिद्ध नहीं होते, किन्तु जो अपभ्रंश भाषा में ही प्रचलित हैं, उन्हें देश्य शब्द कहते हैं । (प्राकृत प्रकाश ८, ६१ ; हे १, १७१ ; ९१ ; २, १७४ ; षड्) । इन देश्य शब्दों की संख्या बहुत अधिक है । इन शब्दों के संग्रह करने का प्रयत्न प्राचीन काल से ही होता आया है । हेमचन्द्र ने अपने देशी नाममाला नामक कोष में ऐसे ही शब्दों का संग्रह किया है । इस कोष में लगभग ७८०० शब्द संग्रहीत हैं । इनमें से लगभग ४००० शब्द ऐसे हैं जो संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश साहित्य में कहीं भी प्रयुक्त नहीं हुए हैं । इन शब्दों के संग्रह करने में हेमचन्द्र ने अपने पूर्ववर्ती कोषकारों के ग्रन्थों का उपयोग किया है । इन कोषकारों में से कुछ के नाम हेमचन्द्र ने स्वयं ही दिये हैं । ये नाम इस प्रकार हैं : द्रोण, पादलिप्त, राहुल, शालिवाहन, श्रीहर्ष, व्याडि, गोपाल, देवराज, सातवाहन, पालित्त, बालशिक्षा, गोविन्द, पाल्यकीर्ति, विद्याधर, विद्याधरी, आर्यरक्षित, आर्यखपुटाचार्य, पादलिप्तसूरि, पादलिप्तसूरिशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनी, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्य, पादलिप्तसूरिशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनीशिष्यिनी

(टा६)। °कम्मिय पु [°कार्मिक] लोहार आदि शिल्पी, (वव१)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी; (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग, (सूअ १, ४, १)। °राहु पु [°राहु] राहु-विशेष, (सम २६)। °वण्ण पु [°वर्ण] १ संयम, २ मोक्ष, मुक्ति, ३ गोत्र यश, (आचा)। देखो धुअ=धू।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२, ३४७, ण २७१)। २ वि धोने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी; (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ; (सण्णि १६)।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुइअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (पड़)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ=धुत, (आचा, दस ३, ११, पि ३१२, ३६२; सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धुव=धूप, (सुपा ६६७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री, (हे २, १२६, प्राकृ ४)।

धूउ पु [दे] गज, हाथी, (दे ५, ६०)।

धूय वि [धूनित] कम्पित, (कुप्र ६८)।

धूम पु [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ °इंगाल पु व [°अङ्गार] दोष और राग, (आव २८८ भा)। °केउ [°केतु] १ ज्योतिश्चक्र गत-विशेष, (ठा २, ३, पण्ह २, १)। २ वह्नि, अग्नि, आग, (उत्त ३३)। °चारण [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने वाला मुनि-विशेष, (गच्छ २)। °जोणि पु [°योनि] बादल, मेघ, (पाअ)। °द्धअ देखो °द्धय, °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्रव्य से [illegible] ना, (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [illegible]दि, अग्नि, (पाअ, उप १०३१ टी)। °भा स्त्री [°भा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (ठा [illegible] ल वि [°ल] धूँआ वाला, (उप २६ [illegible] टी)। °वट्टल पुन [°पटल] धूम-समूह, (हे २, १ [illegible] °वण्ण वि [°वर्ण] धूसर वर्ण वाला, (गाया १, [illegible] °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का ऊर्ध्व भाग, (ठा [illegible]

धूमंग पु [दे] भ्रमर, भौंरा; (दे ५, ६०)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान; (सूअ २, १)।

धूमहर न [दे] मकान, घर, मकान; (दे ५, ६१)।

धूमद्दय पु [दे] १ तड़ाग, तलाव; २ नदी, मैना (दे ५, ६२)।

धूमद्दयमहिमी स्त्री [दे] कुलिंगा नामक; (दे ५, ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] घर में आग कर आग बुझाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह, (निचू १५)।

धूमगहिसो स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा; (दे ५, ६१, पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा; (दे ५, ६१ तुहिन, हिम, (पड़)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५,
धूमा } टा १०)।

धूमाय अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। धूम की तरह आचरना। धूमायति, (स ८, १६ गउड)। वकृ—धूमायंत, (गउड, स १, ८)

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (पउम ७५, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त, (पिंड)। २ धूमे हुआ (शाक आदि), (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१; पा टा १०; भग ३, ७, अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे ५, ६१)।

धूरिअवट्ट पु [दे] अश्व, घोड़ा, (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि, (हे ४, ४३२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, लो] धूल, रज, रजु, (गउड;
धूली } प्राकृ २८, ८४)। °कंद, °कयंब पु [कदम्ब] मोच नामक वृक्ष में विशेष वाला कदम्ब वृक्ष, (उप [illegible] वि [°जड्ड] जिसके पाँव में धूल लगी [illegible] १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से [illegible] ४०४, ८२६)। °धोअ वि [°धावत्] [illegible] करने वाला, (सुपा ३८६)। °पह [illegible]

धूसर वर्ण ; (भवि २४ टी) । °वरिम पु [°वर्ण] धूसर का भाव ; (आचा) । °हर न [°गृह] वह घर जिसमें तपके लिए जो धूप दिया जाता है वह ; (उप ६४७ टी) ।

धूलीवट्ट पुं [दे] मेघ, पानी ; (दे ३, ६१) ।

धूव सक [धूपय] धूप करना । धूवेज्ज ; (आचा १, १६) । वकृ—धूवेंत ; (पि ३६७) ।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धित द्रव्य से उत्पन्न धूम ; २ सुगन्धित द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है ; (सूत्र १, १ ; सुर ३, ६६) । °वडा स्त्री [°वटी] धूप-घट, धूप से भरी हुई कलशी ; (जं १) । °वंत न [°वत्र] धूप-घर ; (दे ३, ३६) ।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना; २ धूप-दान, गंध की निमित्त के लिए किया जाता धूम का पान; "धूवणं तिकसेए य वन्ती वमणविरेयणे" (दस ३, ६) । °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई बत्ती, अगरबत्ती ; (कप्प) ।

धूवित्त वि [धूपित] १ वासित, गन्ध दिया हुआ; २ गंध आदि से सुवासित किया हुआ ; (पाअ ६) । ३ धूप दिया हुआ ; (सण ; गच्छ १) ।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण; २ वि. धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्राप्र ८४ ; सण ७७४ ; पि ६, ८८) ।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पाअ ; कप्पू) ।

धे सक [धा] धारण करना । धेइ ; (संक्षि ३३) । °धेत्तूण" (कुप्र १००) ।

धेज्ज) वि [धेय] धारण-योग्य ; (भवि १४ ; आचा धेज्ज) १, १) ।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य ; (आचा १, १) ।

धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धीरता ; (पउ ३, २) ।

धेणु स्त्री [धेनु] १ गाय-जाति की ; २ स्वधा की ; ३ दुधार गाय ; (हे ३, २६ ; षड्) ।

धेर देखो थोर=धैर्य ; (सिक १७) ।

धेवत्त पुं [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवत्तस्सरसंभवा मणुस्सा भवंति कक्कसिया" (ठा ७—पत्र ३८३) ।

धोअ सक [धावृ] धोना, शुद्ध करना, पखारना । धोएज्जा ; (आचा) । वकृ—धोएंत ; (कुप्र ८५) ।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित ; (सं १, २६ ; २, २० ; ग ३१६) ।

धोअग वि [धावक] १ धोने वाला, २ पु. धोबी, (उप पृ ३३३)

धोअण वि [धावन] धोना, प्रक्षालन, (श्रा २० ; स्वप्न १८ ; भवि ३४१) ।

धोएज्ज देखो धोअ=धौत ; (ग १८) ।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरा-वाहक, २ समुचा, नेता, धुरन्धर, (वर १) ।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य ; (सण) ।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, °णी] पंक्ति, कतार ; (सुपा धोरणी) ४८ ; भवि ; षड्) ।

धोरिय देखो धोज्ज ; (सुपा २८२) ।

धोलिणिया स्त्री [धोलिकिनिका] देव-विशेष में उत्पन्न स्त्री; (सत्ता १, १—पत्र ३२) ।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज; (सुपा ६२०) ।

धोव देखो धोअ=धाव् । धोवइ ; (स १६१ ; पि ७८) । धोवेज्जा ; (आचा) । वकृ—धोवंत ; (भवि) । कवकृ—धोव्वंत, धोव्वमाण; (पउम १०, ४४ ; आचा १, ८) । कृ—धोवणिय ; (आचा १, १६) ।

धोवय देखो धोवग , (हे ८, ३८) ।

धुवु (अप) अ [ध्रुवम्] अवश्य, निश्चय; (हे ४, ४१८) ।

इअ सिरिवाइवेआलसंतिसूरिविरइए महावीरचरिए पाइअसद्दमहण्णवम्मि धकारस्स पढमो उत्थओ समत्तो ।

न देखो ण[1] ।

१ प्राकृत भाषा में नकारादि शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में सदा णकार होता है, अपवाद रूप शब्दों के सम्बन्ध में विशेष ध्यान रखना चाहिये, (प्राप्र ३, ४२ ; हे १, २२६ ; षड् १, ३, ६३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में देखो तरह के प्रयोग पाये जाते हैं। इसी लिये सब शब्द शास्त्र के प्रकरण में आ जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति कर ग्रन्थों में पुस्तक का कलेवर बढ़ाना उचित नहीं समझा गया है। प्राकृत-शब्द शास्त्र के प्रकरण में आदि के 'न' के स्थान में सर्वत्र 'ण' समझ लेना चाहिये। यही कारण है कि नकारादि शब्दों के भी प्रकारान्तर शब्दों में ही लिये गये हैं।

(ठा६)। °कम्मिय पु [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी, (उत्त१)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी, (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आत्मघात, आत्म करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग, (सूअ १, ४, १)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष, (सम २६)। °वण्ण पु [°वर्ण] १ संयम, २ मोक्ष, मुक्ति, ३ साधन वश, (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (आव ७१, ३४७, ओघ २७२)। २ वि कँपाने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी, (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ, (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो धुव=धू।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुसिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ, (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ=धुत, (आचा, दस ३,११, पि ३१२, ३६२; सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव=धूप, (सुपा ६५७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री, (हे २, १२६, प्राप्र ६४)।

धूण पु [दे] गज, हाथी; (दे ४, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित, (कुप्र ६८)।

धूम पुं [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति, (पणह २, १)। °इंगाल पु [°अङ्गार] द्वेष और राग, (आव २८८ भा)। °केउ पु [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, (ठा २, ३, पणह १, ४, ओघ)। २ वह्नि, अग्नि, आग, (उत्त ११)। °चारण पु [°चारण] धूम के आलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष, (गच्छ २)। °जोणि पु [°योनि] बादल, मेघ, (पाअ)। °द्धय देखो °द्धय, भोजन करना, (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वह्नि, अग्नि, (पाअ, उप १०३१ टी)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवीं नरक-पृथिवी, (ठा ७, प्राअ)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला, (उप २६८ टी)। °वट्ट पुंन [°पट्ट] धूम-समूह, °वण्ण वि [°वर्ण] धूम्र वर्ण वाला, °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का अग्र

धूमंग पु [दे] भ्रमर, भौंरा; (दे ४, ६

धूमण न [धूमन] धूम-पान, (सूअ १,

धूमदार न [दे] गवाक्ष, वातायन, (दे ६ ६३)।

धूमद्धय पु [दे] १ तडाग, तलाव; २ (दे ६, ६३)।

धूमद्धयमहिमी स्त्री [दे] इतिहास प्रसिद्ध ६१)।

धूमपलिघाम वि [दे] गर्त में डाल कर भा भी जो कच्चा रह जाय वह, (निचू १६)।

धूमगहिसो स्त्री [दे] नादार, कुदरा, कुहासा; ६१, पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नादार, कुहासा; (दे ६, ६१ उहिन, हिम, (पड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नादार, कुहासा, (दे ६, ६
धूमा } टी १०)।

धूमाअ सक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। धूम की तरह आचरण करना। धूमायमि, (स ८, १६ गउड)। वकृ—धूमायंत, (गउड; स १, ८)।

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (पव ७६, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त; (पिंड)। २ धूमा हुआ (शाक आदि), (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नादार, कुहासा, (दे ६, ६१; पाअ, टी १०, भग ३, ७, अणु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे ६, ६२)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि, (हे ४, ४३२)

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु (
धूली } प्राप्र २८; ८४)। °कय, °कडय पु [°कृत] भोजन शुरू में निकलने वाला सदम्ब-वृक्ष, (हुआ)।

°धूसर वि [°धूसर] धूल से भरा हुआ, (आचा १०)। °धोअ वि [°धौत] धूल से भरा हुआ, (उत्त ७७८, ८२६)। °धोव वि [°धौत] करने वाला,

धूअ न० [धूपय] धूप करना । धूवेउज्ज ; (मावा २, १३)। वह—धूवेत्त ; (नि ३६७)।

धूम पुं [धूम] १ मुलिंग द्रव्य से उत्पन्न धूम ; २ मुलिंग द्रव्य विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है ; (मावा ३, १ ; सूत्र २, ६६)। °घड़ा स्त्री [°घटी] धूम-पात्र, धूप से भरी हुई कलसी ; (उत्त १)। °जोग न [°योग] धूप-पात्र ; (उ ३, ३६)।

धूमण न [धूपन] १ धूप देना; २ धूप-पात्र, सेवा की विधि के लिए किया जाता धूप का दान; "धूवणे तिविधे य वण्णिते" (दस ३, ६)। °यट्टि स्त्री [°यष्टि] धूप की बनी हुई यष्टिका, अगरबत्ती ; (पव्व)।

धूमिय वि [धूपित] १ सुगंधित, गन्ध दिया हुआ; २ जिस आदि से धोया हुआ; (पाअ ६)। २ धूप दिया हुआ ; (मोघ ; सम्म १)।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण; २ धूल रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्रभू ८४ ; पाअ ७४ ; गा ६, ८६)।

धूसरिय वि [धूसरित] धूल वर्ण वाला, (पाअ ; पउम ८८)।

धृ [धृ] धारण करना। वेद ; (संक्षि ३१)। °धरेणं (उत्त १०-१)।

धे [धेय] धारण करने योग्य ; (संक्षि १४ ; दसनि ३) ५, १)।

धेअ वि [धेय] धारण करने योग्य ; (दसनि १, १)। धेअ न [धैर्य] धैर्य, धीरज ; (पंच ५, २)।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नया ब्याई हुई ; २ दूध देने वाली, ३ दूध देने वाला, (ठा २, ४१ ; पउ)।

धेरेय [धैरेय] (दस ५, १)।

धेवय पुं [धैवत] (ठा ७, ५४ ; [illegible] ३ ; [illegible] ३३३

धो [धाव्] [illegible] ([illegible] ; [illegible] ; [illegible] ;

धुउ वर्ण ; (भवि २४ टी)। °चरिस पुं [°चर्ष] धूत की वर्ष ; (अभय)। °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लड़के खेल जो धूल का घर बनाते हैं वह; (हम १६७ टी)।

धूलीवट्ट पुं [दे] मेघ, धोरा ; (दे ५, ६१)।

धूव सक [धूपय्] धूप करना । धूवेज्ज ; (आचा २, १३)। वकृ—धूवेंत ; (पि ३६७)।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है ; (आचा १, १ ; सूत्र १, ६५)। °घडा स्त्री [°घटी] धूप-घट, धूप से भरी हुई कलशी ; (जं १)। °जंत न [°यन्त्र] धूप-पात्र ; (दे ३, ३५)।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना; २ धूप-पात्र, सोने की सिगड़ि के लिए किया जाता धूप का पात्र; "धूवणे तिक्खुत्तो वत्थी उल्लिक्खए" (दस ३, ६)। °यट्टि स्त्री [°यष्टि] धूप की बनी हुई बत्तीस, अगरबत्ती ; (कप्पू)।

धूवित्त वि [धूपित] १ तापित, गरम किया हुआ; २ तिल आदि में छोंक हुआ ; (चारु ६)। ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; सण्ह १)।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण; २ वि. धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्राप्र ८४ ; सण ७७४ ; से ६, ८२)।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पाअ ; गउड)।

धे सक [धा] धारण करना। धेह ; (संक्षि ३३)। °दि धेच्चं" (हम १००)।

धेअ) वि [धेय] धारण करने योग्य ; (कप्र १४ ; सण
धेज्ज) १, १)।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य ; (सण्ण १, १)। धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धीरता ; (पाअ २, २)।

धेणु स्त्री [धेनु] १ गाय-जाति की ; २ सवत्सा गौ ; ३ दूध देने वाली गाय ; (हे ३, २६; षड्)।

धेर देखो थेर=धैर्य ; (सिद्ध १७)।

धेवय पुं [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवयस्सरसंजोगा मणुया भवंति दारुणा" (ठा ७—पत्र ३६३)।

धोअ सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना, पखारना। धोएज्जा, भाव ।। वकृ—धोयंत, (सुर ८५)।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित ; (पि १, २५; ७, २० , गा ३१६)।

धोअग वि [धावक] १ धोने वाला, २ पु. धोबी, (उप पृ ३३३)

धोअण वि [धावत] धोना, प्रक्षालन ; (श्र २० , स्वप्न १८ ; मार ३४७)।

धोएज्ज देखो धोअ=धाव् ; (गा १८)।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरीण, भार-वाहक ; २ समुचा, नेता, कुशल ; (वर १)।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य ; (औप)।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, णी] पंक्ति, कतार ; (सुपा
धोरणी) ४८ ; मोह ; षड्)।

धोरिय देखो धोज्ज ; (कुप्र २८०)।

धोरुणिणी स्त्री [धोरुकिनिका] देव-विशेष में उत्पन्न स्त्री; (ठाणा १, १—पत्र ३१)।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज; (कुप्र ६१०)।

धोव देखो धोअ=धाव् । धोवइ ; (स १४० ; पि ७८)। धोवेज्जा ; (आचा)। वकृ—धोवंत, (मोह)। कवकृ—धोव्वंत, धोव्वमाण, (पउम १०, ४४ ; ठाणा १, ८)। कृ—धोवणिय ; (ठाणा १, १६)।

धोवय देखो धोवग , (दे ८, ३६)।

धुव पुं [ध्रुव] मेरु, मेरु; (हे ४, ४१८)।

इअ विरइए पाइअसद्दमहण्णवम्मि धम्मयाइसद्दसंकलणो तेरसीओ तरंगो समत्तो ।

न देखो ण[1]।

---

१ प्रकृत भाषा में नकारादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् शब्दों के आदि के नकार के स्थान में सिर्फ एक ही विकल्प से 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है, (प्राप्र ३, ४१ ; हे १, २२८ ; षड् १, ३, ४३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में देखो सब के प्रयोग पाये जाते हैं। इससे ऐसे सब शब्द संस्कृत के प्रकाश में आ जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति का दोष न करने के कारण बहुत इच्छित अनेक शब्द रह गये हैं। पाठकगण इसका के प्रकाश में अपने 'न' के स्थान में 'ण' को स्थान दे। यहाँ कहना है कि संस्कृत शब्दों के आदि नकारादि शब्द न हो उसका ध्यान रखे।

(ठा६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी, (ठा१)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी, (आचा)। °णिग्गह पु [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, (अणु)। °मग्ग पु [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग, (सूअ १, ४, १)। °राहु पु [°राहु] राहु-विशेष, (सम २६)। °वण्ण पु [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति, ३ साधन यज्ञ, (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन, (ओघ ७२; ३४७, ७ २७२)। २ वि कँपाने वाला, हिलाने वाला। स्त्री—°णी, (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ, (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो धव=धू।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ, (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ=धुत; (आचा, दस ३,१३, पि ३१२, ३६२, सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव=धूप; (सुपा ६५७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री, (हे २, १२६, प्राप्र, ...)।

धूम पु [दे] गज, हाथी, (दे ५, ६०)।

धूम वि [धूनित] कम्पित, (कुप्र ६८)।

धूम [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ अ-प्रीति, (पणह १, १)। °इंगाल पु व [°अङ्गार] द्वेष और राग, (आव २८८ भा)। °केउ [°केतु] १ ज्योतिश्चक्र ग्रह-विशेष, (ठा २, ३, पणह ...प)। २ वन्हि, अग्नि, आग, (उत्त ११)। °पात का सूचक तारा-पुञ्ज, (गउड)। °चारण [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने वाला मुनि-विशेष, (गच्छ २)। °जोणि पु [°योनि] बादल, मेघ, (पाम)। °द्धय देखो °द्धय, °दोस पुं [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से ..., (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] अग्नि; (पाम, उत्त १०३१ टी)। ...ा स्त्री [°प्रभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (ठा ...)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला, (उप २६ ...

टी)। °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह, (हे २, १६ ...)। °वण्ण वि [°वर्ण] धूम्र वर्ण वाला, (आया १, १ ...)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का ऊर्ध्व भाग, (ठा, २ ...)।

धूमंग पु [दे] भ्रमर, भमरा; (दे ५, ५७)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान; (सूअ १, १)।

धूमदार न [दे] गवाक्ष, वातायन; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पु [दे] १ तडाग, तलाव, २ मंदिर, मैदा; (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री ब. [दे] कृत्तिका नक्षत्र; (... ६२)।

धूमपलिघाम वि [दे] गर्व में आकर अग्नि में जो कच्चा रह जाय वह, (निचू १५)।

धूमाहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा; (... ६१, पाम)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१)। २ हिम, बर्फ, (पड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१,
धूमा } ठा १०)।

धूमाय अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलाना। धूम की तरह आचरना। धूमायति, (सं ८, १ गउड)। वकृ—धूमायंत, (गउड, स १, ८, ...)।

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी, (प ...)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त; (सिरु)। २ हुआ (शाक आदि), (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा, (दे ५, ६१; पाम ठा १०, भग ३, ७, मनु)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा, (दे ५, ६२)।

धूरिअयड पु [दे] मठ, बाड़ा, (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि, (हे ४, ४३२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु, (गउड,
धूली } प्राप्र २८; ८४)। °कय, °कयंब पु [°कदम्ब] योनि वृक्ष में विकसने वाला कदम्ब-वृक्ष, (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगा हुआ हो वह ... १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से धूसर, ... ७७६, ८२६)। °धोअ वि [धौत] धूल ... करने वाला, (सुपा ३३६)। पय पु [पथ], ...

धूसर वि [धूसर] धूसर वर्ण; (औप २४ टी)। °वरिम पुं [°वर्ण] धूसर की वर्ण; (आचा)। °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लड़के लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह; (उत्त १६७ टी)।

धूलीवट्ट पुं [दे] मेघ, धोड़ा; (दे १, ६१)।

धूव वि [धूपय] धूप-काला। °वेज्ज; (आचा २, १३)। वह—°वेयंत; (नि ३३७)।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है; (पाचा १, १; सुर ३, ६५)। °घडा स्त्री [°घटी] धूप-पात्र, धूप से भरी हुई कलसी; (जं १)। °वेंत न [°वत्र] धूप-पात्र; (दे ३, ३६)।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना; २ धूप-पात्र, सेना की निर्गति के लिए किया जाता धूम का घन; "धूवणे तिविधे य वत्थी वमणिग्गेए" (ठा ३, ६)। °यट्टि स्त्री [°यष्टि] धूप की बनी हुई बत्तीस, अगरबत्ती; (कप्पू)।

धूवित्त वि [धूपित] १ सुगंधित, गन्ध किया हुआ; २ जिस आदि में छोंक हुआ; (चरु ६)। ३ धूप दिया हुआ; (औप; गच्छ १)।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण; २ वि. धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला; (प्राप्र ८४; गा ७३४; मे ६, ८२)।

धूसरित्त वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला; (पउम; सण)।

धे सक [धा] धारण करना। धेइ; (संक्षि ३३)। °धेत्तूण" (उत्त १००)।

धेय) वि [धेय] स्थापनीय; (अभि १४; पाचा
धेज्ज) १, १)।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य; (पाचा १, १)। धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धीरता; (पउ २, २)।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ; २ सवत्सा गौ, ३ दूध गाय; (हे ३, २६; षड्ड)। °धेर देखो धीर-धैर्य; (सिक १०)।

धेयव पुं [धेयवत्] स्थापनीय; "धेयवत्थाणाए भवति कम्मविवेगो" (ठा ७—पत्र ३६३)।

धोअ वि [धावृ] धोया हुआ, प्रक्षालित; (गा ६१; सुर ३, १०, गा ३६६)।

धोअग वि [धावक] १ धोने वाला, २ पु. धोबी, (उत्त ३३३)

धोअण वि [धावत] धोना, प्रक्षालन; (श्रा १०, स्वप्न १८; भाव ३४१)।

धोअय देखो धोअ-धौत; (गा १८)।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरीण, भार-वाहक; २ अनुभवी, नेता, धुरन्धर; (वव १)।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य; (गौड)।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, णी] पंक्ति, कतार; (सुपा
धोरणी) ४६; मोह; पउ)।

धोरिय देखो धोज्ज; (सुपा २८७)।

धोरिणिणी स्त्री [धोरणिकिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न गौ; (पाचा १, १—पत्र ३०)।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज; (सुपा ६६०)।

धोव देखो धोअ-धाव्। धोवइ; (स १६० ; सि ७८)। °धोवेज्जा; (आचा)। वह—°धावंत, (मोह)। कवह—°धोव्वंत, °धोव्वमाण, (पउम १०, ४४ ; पाचा १, ८)। कृ—°धोयणिय; (पाचा १, १६)।

धोवय देखो धोवग; (दे ८, ३६)।

ध्रुवु (अक) म [ध्रुवम्] अवश्य, निश्चय; (हे ४, ४१८)।

इय सिरि-पाइअसद्दमहण्णवम्मि धम्मसाह-
सहकइणो छन्नीसइमो तरंगो समत्तो।

न देखो ण[1]।

---

१ प्रत्येक भाषा में सकारादि सब शब्द सकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के अक्षर के स्थान में नित्य या विकल्प से 'स' होनेवाले व्याकरणों का सम्बन्ध नियम है, (प्राप्र २, ४२ ; हे १, ६३ टी ; हे १, २२६ ; षड् १, ३, ६३), और प्रस्तुत-कोष-ग्रन्थों में देखा जाता है कि प्रत्येक पद आदि है। इसके सिवा अन्य शब्द-संग्रह के ग्रन्थों में भी इस ढंग से शब्दों का [illegible] शब्दों के [illegible] देखा जाता है। [illegible] [illegible] [illegible]

दुष्ट वर्ण ; (भवि २४ टी) । °चरित्त पु [°चर्य] दुष्ट की चर्या ; (आचा) । °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु लड़के लोग जो घूल का घर बनाते हैं वह (उत्त १८७ टी) । धोवट्ट पु [दे] मल्ल, योद्धा ; (दे ४, ६१) ।

धुव [ध्रुवय्] धूप करना । धूवेज्ज ; (आचा २,). वह—धूवेत्तए ; (नि ३३७) ।

धूअ [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूप ; २ सुगन्धि पदार्थ, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है ; (आचा १, १ ; सूत्र ३, ६६) । °घडी स्त्री [°घटी] धूपदान, धूप से भरी हुई कलशी ; (जं १) । °जंत न [°यन्त्र] धूपदान ; (दे ३, ३६) ।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना; २ धूप-दान, गंध की सिद्धि के लिए किया जाता धूप का पत्र; "धूवणे तिविहे व वत्थीकम्मिऐ" (ठा ३, ३) । °घट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई वर्त्तिका, अगरबत्ती ; (कप्प) ।

धूवित्त वि [धूपित] १ सुगंधित, गन्ध किया हुआ ; २ देव आदि से छोड़ा हुआ ; (चारु ६) । ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; गच्छ १) ।

धूसर वि [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण; २ वि, धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (ठा २, ४ ; पि ७७४ ; भवि ६, ८२) ।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पाम ; भवि) ।

धे सक [धा] धारण करना । धेइ ; (संक्षि ३३) । °मादि पंचमी" (इक १००) ।

धेज्ज) वि [धेय] धारण करने योग्य ; (भवि १४ ; आचा
धेज्ज) १, १) ।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य ; (आचा १, १) ।

धेज्ज न [धैर्य] धैर्यता, धीरता ; (पउम २, २) ।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूत गौ ; २ सामान्य गौ ; ३ दूध देने वाली गौ ; (हे ३, २६ पउम ।

धेय देखो धोय=धेय, (निक १७) ।

धेवर पु [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवतस्सागारा— भवति धेवतिए" ठा ७ —अव ३८३ ।

धो सक [धाव्] १ धोना, शुद्ध करना, साफ करना । धोइ । वह—धोवंति ; (आचा २,

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित ; (मे १, २६ ; ७, २० ; सा ३६६) ।

धोअग वि [धावक] १ धोने वाला, २ पु. धोबी ; (ठा ३ ३३३)

धोअण वि [धावत] धोना, प्रक्षालन ; (आ २० , स्वप्न १८ ; भग ३४७) ।

धोइअ देखो धोअ=धौत ; (ठा १८) ।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरीण, भार-वाहक ; २ समर्थ, नेता, धुरन्धर ; (वव १) ।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य ; (औप) ।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, णी] पंक्ति, कतार ; (सुपा
धोरणी) ४६ ; भवि ; पउ) ।

धोरिय देखो धोज्ज ; (सुपा २८७) ।

धोरिणिया स्त्री [धोरणिकिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री; (आचा १, १—पत्र ३७) ;

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज; (सुपा ६६०) ।

धोव देखो धोअ=धाव् । °वंत ; (सं १६७ ; वि ७८) । °वेज्जा ; (आचा) । वह—°वावंत, (भवि) । कृ—°धोवंत, °धोव्वमाण; (पउम १०, ८४ ; आचा १, ८) । कृ—°धोवणिय ; (आचा १, १६) ।

धोवव देखो धोवण ; (दे ८, ३६) ।

धुवु (अप) म [ध्रुवम्] अवश्य, निश्चय; (हे ४,४१८) ।

इय सिरि-पाइयसद्दमहण्णवम्मि धम्मासाय-
सूयडयणो उत्थोऽयमो तरंगो समत्तो ।

न देखो ण[1] ।

---

[1] प्राकृत भाषा में नकारादि शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि में नकार के स्थान में प्रायः सर्वत्र णकार होता है, [illegible] ६, ६३ ; हे १, २२८ ; [illegible] ३, ६३), और [illegible] के [illegible] रूप बनते हैं, [illegible] के [illegible] में [illegible] के [illegible] [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible]

(ठा६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी, (ठा३)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी; (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आत्मदमन, आत्म करने योग्य अनुष्ठान-विशेष; (अणु)। °मग्ग पु [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग; (सूअ १, ४, १)। °राहु पु [°राहु] राहु-विशेष; (सम २६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम; २ मोक्ष, मुक्ति; ३ साधन धन; (आचा)। देखो धुअ=ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन; (ओघ ७२; उप ७६७; सं २७१)। २ वि. धोने वाला, धिलाने वाला। स्त्री—°णी; (कुमा)।

धुव्व देखो धुव=धाव्। धुव्वइ; (सण्णि ३६)।

धुव्वंत देखो धुव=धू।

धुव्वंत } देखो धुव=धाव्।
धुव्वमाण }

धुइअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ; (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ=धुत; (आचा; दस ३,१२; पि ३१२, ३६२; सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव=धूप, (सुपा ६६७)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री, (हे २, १२६, प्राप्र ६४)।

धूण पु [दे] गज, हाथी; (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित, (कुप्र ६८)।

धूम पु [धूम] १ धूम, धूँआ, अग्नि-चिन्ह, (गउड)। २ द्वेष, अ-प्रीति, (पण्ह २, १)। °इंगाल पु ब [°इङ्गार] द्वेष और राग, (आव २८८ भा)। °केउ पु [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, (ठा २, ३, पण्ह १, ५, ओप)। २ वह्नि, अग्नि, आग, (उत्त१२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज, (गउड)। °चारण पु [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्ति वाला मुनि-विशेष, (गच्छ २)। °जोणि पु [°योनि] बादल, मेघ, (पाम)। °उअय देखो °दय, (राज)। °दोस पु [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना, (आचा २, १, ३)। °द्धय पु [°ध्वज] वह्नि, अग्नि, (पाम, उप १०३१ टी)। °पभा, °पहा स्त्री [°प्रभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी (ठा ७, प्रज्ञ)। °ल वि [°ल] धूँआ वाला, (उप २८०

टी)। °वट्ट पुं न [°वर्त्त] धूम गन्ध, (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] धूसर वर्ण वाला, (सम १, १)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धूँए का ऊर्ध्व भाग, (ठा ८, १)।

धूअंग पु [दे] भ्रमर, भौंरा; (दे ५, ५०)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान; (सूअ २, १)।

धूमद्धार न [दे] गवाक्ष, वातायन; (दे ५, ६१)।

धूमद्धय पु [दे] १ तडाग, तलाव; २ मेंढा, भेड़ (दे ५, ६१)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री [दे] दर्भिका नक्षत्र; (दे ६२)।

धूमपरिणाम वि [दे] वर्ण में धान्य का आम सूखने से जो कम्बा रह जाय वह; (निचू १५)।

धूमगहिसी स्त्री [दे] मोहार, कुहरा, कुहासा; (दे ६१; पाम)।

धूमरी स्त्री [दे] १ मोहार, कुहासा; (दे ५, ६१)। तुहिन, हिम; (षड्)।

धूमसिहा } स्त्री [दे] मोहार, कुहासा; (दे ५, ६
धूमा } टी १०)।

धूमाय अक [धूमाय्] १ धूँआ करना। २ जलना। धूम की तरह आचरना। धूमायंति; (स ८, १ गउड)। वकृ—धूमायंत; (गउड; स १, ८ धूमाया स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी; (ठा ७५, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूम-युक्त, (पिंड)। २ धुआ हुआ (शाक आदि); (दे ६, ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] मोहार, कुहासा; (दे ५, ६१; पा टी १०; भग ३, ७; मनु)।

धूरिभ वि [दे] दीर्घ, लम्बा; (दे ५, ६२)।

धूरिभवट्ट पु [दे] अश्व, घोड़ा; (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि; (हे ४, ४१२)।

धूलि } स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु; (गउड;
धूली } प्राप्र २८, ८४)। °कंप, °कलंब पु [°कदम्ब] मोक्ष हेतु में विघ्न करने वाला कदम्ब-वृक्ष, (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह, (वज्जा १०)। धूसर वि [°धूसर] धूल से लिप्त, (सुर ७, ८४, ८२६)। °धोड वि [°धोत्] धूल को दूर करने वाला, (सुपा ३३६)। °पंथ पु [पथ] धूलि

धूलि स्त्री ; (भोज २४ टी) । °चरिस पुं [°चर्ष] धूल की वर्षा ; (भगवती) । °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लड़के लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह; (उप ६६७ टी)।

धूलीवड़ पुं [दे] मल्ल, पोड़ा ; (दे ६, ६१)।

धूव सक [धूपय्] धूप करना । धूवेज्ज ; (आचा २, १३)। वह—धूवेंत ; (पि ३६७)।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम ; २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है ; (आचा १, १ ; सुर ३, ६५)। °घडी स्त्री [°घटी] धूपदान, धूप से भरी हुई कलशी ; (जं १)। °जंत न [°यन्त्र] धूप-पात्र ; (दे ३, ३५)।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना; २ धूम-पान, रोग की निवृत्ति के लिए किया जाता धूम का पान; "धूवणे तिन्नेव य वमणे-सत्तविरेयणे" (ठा ३, ६)। °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई वर्त्तिका, अगरबत्ती ; (कप्प)।

धूवित्त वि [धूपित] १ वासित, गन्ध दिया हुआ; २ धूप आदि से सेंका हुआ ; (पाक ६)। ३ धूप दिया हुआ ; (औप ; गच्छ १)।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण; २ वि. धूसर रंग वाला, ईषत् पाण्डु वर्ण वाला ; (प्राप्र ८४ ; सण ७४ ; से ६, ८२)।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्ण वाला ; (पाअ ; भवि)।

धे सक [धा] धारण करना। धेइ ; (संक्षि ३३)। °धेइ भंतेसं" (ठा १००)।

धेअ } धेज्ज } वि [धेय] ध्यान-योग्य ; (अभि १४ ; आचा १, १)।

धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धीरता ; (पाअ ३, २)।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ ; २ सवत्सा गौ ; ३ दूध देने वाली गाय ; (हे ३, २६; चंदो)।

धेर देखो थीर=धैर्य ; (सिक १७)।

धेवय पुं [धैवत] स्वर-विशेष ; "धेवयस्सणं सरस्स नवबि कदंबपुप्फा" (ठा ७—पत्र ३६३)।

धोअ सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना, पखारना। धोएज्जा , (आचा)। वह—धोयंत , (सुपा ८५)।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित ; (से १, २५; ७, २० ; गा ३६६)।

धोअण वि [धावक] १ धोने वाला ; २ पु. धोबी ; (ठा ४ ३३३)

धोअण वि [धावन] धोना, प्रक्षालन ; (श्रा २० , स्वप्न १८ ; भग ३४७)।

धोइअ देखो धोअ=धौत ; (गा १८)।

धोइज्ज वि [धुर्य] १ धुरा को, भार-वाहक ; २ अनुभव, नेता, धुरन्धर ; (वव १)।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य ; (औप)।

धोरणि) स्त्री [धोरणि, °णी] पंक्ति, कतार ; (सुपा
धोरणी } ४६ ; भवि ; पड्)।

धोरिय देखो धोइज्ज ; (सुपा ३८१)।

धोरुलिणी स्त्री [धोरुकिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री; (आचा १, १—पत्र ३७)।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोइज्ज; (सुपा ६१०)।

धोव देखो धोअ=धाव् । धोवइ ; (स १५७ ; वि ७८)। धोवेज्जा ; (आचा)। वह—धोवंत ; (भवि)। कृह—धोव्वंत, धोव्वमाण; (पउम १०, ४४ ; आचा १, ८)। कृ—धोवणिय ; (आचा १, १६)।

धोवय देखो धोवग ; (दे ८, ३६)।

धुव सक [धुवम्] अवज्ञा, त्रिपा; (हे ४,४१८)।

इअ सिरिबाइअसद्दमहण्णवम्मि धअमाइ-सद्दसंकलणो छत्तीसइमो तरंगो समत्तो ।

न देखो ण[1] ।

---

१ प्रकृत भाषा में नकारादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में नित्य ही विकल्प से 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है , (प्राप्र २,४२ ; हे ४, ६२ टी, हे १ , २३६ , षड् १ , ३ , ४३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में इस नियम के अपवाद पाये जाते हैं। इसका एक मात्र कारण लेखक के प्रमाद में आ जाता है यही है। कहीं-कहीं लेखक के प्रमाद से आगे के लेखक ने भी ऐसा ही किया है। [illegible] ऐसी अशुद्धियाँ प्रायः हस्त-लिखित ग्रन्थों में ही पाई जाती हैं।